अथग्रंथसरकारी
सीतारामनामस्नेहवा
टिकापत्राप्रथमारंभः

83

नाम

श्रीराम

१

श्रीसीतारामाभ्यांनमः ॥ अथसीतारामनेहवाटिकालिख्यते ॥ घनाक्षरीसवैयाछंदवहुभेदके ॥ कवित्त ॥
सीतारामरूपअलिअमलअनूपगुरुगहरगंभीरपदपंकजप्रकाशपर ॥ वंदौंवारवारअनुरागउमगायउरअफुरर
हस्यबोधविमलविहारधर ॥ महाराजमंगलमहलगुननामजसगावतसुजीहरीभिजातसीव्रसीपवर ॥ युगल
अनन्यप्रीतिअकथप्रतापतापसमनहंमेशावंदनीयविधिहरिहर ॥ १ ॥ नमोंनित्यनेमसेंसहसवारसतगुरुचरन
सरोजरजरहसनिवासको ॥ करुनानजरनेकनिरखिनिदेशवेशसतउपदेसदैमिटायोदुर्वासको ॥ सगुनअ
गुनपरप्रीतमपरेशापदप्रगटपरत्वपरखायोसुषषासको ॥ युगलअनन्यतमतामननासकरिअमलसुबो
धदगाहियोद्दिव्यकासको ॥ २ ॥ सरससबदस्वादस्वादअपवादहरअंतरसुतरगरगारतकरनको ॥ दरसा

१

पाहरूदरसारहितएकरससरससुगुनसरवेशविवरनको॥ उज्वलअमलजलथलहिएडारिमैलमलिनमदादिदुर
वासनाहरनको॥ युगलअनन्यनिवछावरिमेंसबपरतनमनप्रानधनचरनशरनको॥ ३॥ मेरेसतगुरूपदपदुमकी
आसहै॥ योगजपतपध्यानधारनानजानोकछुमानोनहिंअपरअनीशईशरासहैं॥ करनीनलेशसपनेहूंदरसात
परसिरताजगुरूमहाराजहींकेदासहैं॥ पावनपरमछविछावनपरागप्रियधारतेहमेशसोईखासदसुखरासहैं॥
युगलअनन्यसौंचरउभयलोकनेकनेहिंमेरेसतगुरूपदपदुमकीआसहै॥ ४॥ सतगुरूसाहेबसुज्ञानस्वामीसि
रमौरसवतौरसंकटविकटहरिलीजिए॥ ललितललामअभिरामपदकंजमंजुसेवनसनेहतनमनहूंसदीजिए॥
मैहौंमतिमंदछंददारुनदवायोराजचोजनचलतकरुनेशकृपाकीजिए॥ युगलअनन्यजानकीशकेकहायजहौं
जौंउतहौंआपहींपैरशाजूपसीजिए॥ ५॥ सवैया॥ श्रीगुरुकोमलसीलसुभाउसदाउरमैंअपनेअनभावौं॥
लौकिकवैदिकवादविधानअनेकवहायछटाछविछावौं॥ आठहूंजामसुनामरटौंसरजूतटमैंरहिशोकस
मावौं॥ युग्मअनन्यप्रसन्नसमेतदयानिधितेनितएवरपावौं॥ ६॥ शोकसमनकृपाकलकेतनमोपदपंकजहेतसजाई॥

श्रीगुरुदेवविनानिजभवलहैनहीकोटिनकल्पकमाई॥ आपभुलायसमायरहोगुरुवागसुरागहींवीजसहाई॥ पुमत्र
नन्यउपासनाआनविहायभजेगुरुभावबढाई॥ ७ ॥ श्रीगुरुमूरतिध्यानधरोनिसिवासरप्रीतिप्रतीतिजमाई॥ श्रीगु
रुदेवनसेवनसुनोभववासनावृंदविशेषनसाई काहुसेलेननदेनरपोकछुश्रीगुरुआसहमेशसहाई॥ पुमत्रअनन्य
छकेरहिएगुरुपायप्रसादउछाँवढाई॥ ८ ॥ अन्यरीति॥ वंदौवागविसदसमेतश्रीसमीरसुतविधिहरिहरवंदनीयसु
प्रतापपर॥ जाकोजससागरसमूहसुखसारसरिसरससुनाथजीहगावतविनोदवर॥ सीतारामलषनभरतशत्रुसा
लप्रेमिप्रानहूँतेप्रियगुनअमलविचित्रतर॥ पुगलत्रअनन्यजानकीशनामरूपरसचाहिएजोचित्ततोहरीशपद
प्यारकर॥ ९ ॥ महादेवमंडनमंडनमुनीशमाहतावशीशमानसमलीनमदमदनकदनकंत॥ शंभुसुखसौंपन
सहजसुंदरनसानुकूलश्रमसमनरमनचित्तचारुध्यंत॥ सीतारामसुजससरूपनामधामगुनतारकेशचतुरचकोर
भवभारहंत॥ पुगलत्रअनन्यपदपंकजपरागरागसहितहमेशप्रनमतसतभायप्रत॥ १० ॥ सारदासुदेविशिवा
बुद्धिवरबोधप्रदगनपतिचरनसरोजभावधामिके॥ वंदौवारवारयसमरसउदाररुचिदीजिएदयालतावढायदुखहारिके॥

॥श्रीराम॥

सीतारामसुभगस्वरूपगुननामकलकीरतिउछाहउरहोयलतमतारिके॥ युगलअनन्यसवसंतरसवंतऐसोहिजेवर
हानमोहमानसप्रचारिके॥११॥ सवैया॥ स्वामिनीसीयसेमतसियावरकेगुनरूपसुनामनमामी॥ धाममहामुद
दामप्रदायकलीलाललामनमोअभिरामी॥ वासनावंदविहायभलीविधिदीजिएप्रीतिप्रतीतिमोदामी॥ युग्मअनन्य
सुकीरतिशोकसजायकेगावैसदाअनुगामी॥१२॥ घनाक्षरी॥ सीतारामनाममोदमंगलमुफादधामअमलअदागरा
गवागहरसावहीं॥ पारावारप्रवलप्रवाहग्राहहहाहविनपावनपरमप्रेमपटपरसावहीं॥ करुनानिधानजीवजानप्रा
नहूँकेप्रानस्वादसुखखानरामरामहरसावहीं॥ युगलअनन्यअविलोकनीकेनहनिजविमलविचित्रवरवूँदवरसा
वहीं॥१३॥ सीतारामनामअभिरामअनुरागवीजवीजअद्भुतदुतिहारदेनहारहैं॥ जौनजनजीहजकलायकेजपततौनप
वतपरश्यामरूपदेप्रेमप्यारहैं॥ आनअभिलासमासहौंसरसहीनपेखिपीजिएपीयूषनामस्वच्छस्वादुसारहैं॥ युगल
अनन्यआलवालचित्तसालविनकीजिएसुनाममोदसुतरुविहारहै॥१४॥ नाहकहौंहिरसहरामहमतुमतमततरक्षतमा
मग्रामहेतमरकतजन॥ चाहकहींचैनचारुपूरननहोतपललालचचचावतावववावसैंरहतसन॥ नाहकहींदूरनि

॥निरुवा॥

॥श्रीराम॥

३

कपमिजैनेनलखुचखुचिरध्यैनरसनामवरवागमन॥जुगलअनन्यअनकूलश्रीसुधेशस्वछ्छसरजसुकूलयी
चवसिएविहारवन॥१५॥सीतारामनामबिनाहिनाहिनहीनदुखहारिहदुकालहाहहररहहराजहर॥पावपलकलनलह
तलाअचलमांझमोरसांझवांझकेसमानखेहरवाततखर॥आवछ्छविछ्छावहावबहलसुभावचावनांवमोहनिधिकीच
वोडतेवकूफनर॥जुगलअनन्यधनमानमन्यसंतवरवागसुचिम्रवनकरतनउमेगभर॥१६॥सीतारामनामकरेनेशाकी
नजरेनेकचाहिएहमशविशऔरकौनकामको॥वाल्मीकिजमनकिरातगनिकाहिकोटिओटिनामशरनसुपापेपरधा
मको॥चारियुगजाहिरजहानजगामगाजससरससुनामवेरबहतअरामको॥जुगलअनन्यचितचाहिएप्रतीतिप्रीति
नामसुमिरनमांझकामनहिरामको॥१७॥सीतारामनामेनेहनित्यनिर्मोलधामधरमधुरीनध्येयधारनाधेरशाधन॥
रिध्यबुतिहानेहेतहहरदुकानहलिहारनहरारदुखहरनप्रमोदह्येन॥मूलअनकूलप्रतिकूलशूलहूलहरहावि
महकीमहरमायतहजरजन॥जुगलअनन्यअन्यआसवासभासवखासरसरासनामसुखरसुभागवन॥१८॥
सीतारामनामकीयौंकलितकलामकोटकारनकवूलथूलसूछमसरूपपर॥चारुचतुरेशाचाहचौंरहनीचमकविधौं

३

॥ सीताराम ॥

चामीकरचैनअनैमैनमोहमानहर ॥ साधनसुसाध्यसीलसागरसुजानसजसोहेवसुरूपसर्वेशनित्यमुक्त
वर ॥ युगलअनन्यअवधेशअविसेषरूपअमलअनूपप्रेमपारनपरत्वतर ॥ १९ ॥ मालिमकानलामकानसु
खखाननामसीतारामविदितविसेषदृगहेतलो ॥ लायलोभलगनमगनमहवूवप्रीतखूवकरामातप्रीति
पारखीसुपरखलो ॥ उछवउज्वलेशसुविशेषअविशेषवेशविसदविहारवरनेशलाहलेखलो ॥ युगलअनन्
अनुभवितविचित्रवैनहैनैअनमननसजतसुषशेषलो ॥ २० ॥ सवैया ॥ सियरामसुनामसशोकजपोहिय
होकरहेनहिनेककभी ॥ हियहामहितेहरवारिमेलतमतोममिटेभ्रमहीनसभी ॥ जियजीवननामसुपा
नकरोनजरोनमरोमुरपायअभी ॥ पियस्याममिलेखिलकंजसहीनहिवातअसांचप्रमाननभी ॥ २१ ॥
॥ अन्यरीति ॥ सीतारामगुननितनेहसैंसमेतगानकीजिएप्रधानपनपावननिहारिके ॥ दीजिएदुरायदुचिताई
व्यवहारवाजलीजिएललामलाहलालनविचारिके ॥ हूजिएहेमशहोसियारइस्कदारचाटपीजिएपियूषम
यभावनासुधारिके ॥ युगलअनन्यव्योमवासनावितानमतत्यागिएविशेषसीयस्याममनसारिके ॥ २२ ॥

॥श्रीराम॥

४

नाम
सीतारामै धाम मांझ मन लीन नित कीजे वर वस्त्र भवि विचित्र भूति भाय के॥ षाहि सषरा वे खेह हेरे हेगा हहे नेह छोड़ि छा
रि एहमे राचि नचां रनी सचाय के॥ आपनो अनूप रूप वूझि ए विहाय देह षेफेर पर रूप धिय धारि एसमाय के॥ युगल
अनन्य अलि द्वितीय सी परा मरस रहित जहान हान ना निए जु डाय के॥ ३३॥ सवैया॥ आलस हीं नित मीच विचारि
ए शांत त संत समाज सु मांहीं॥ द्वसे रो औरन हीं सिय स्याम स्वरूप विषे व्यवधान कहांहीं॥ जीतिए जीवन जान वि
नास कज्ञानि महान मकी परछांहीं॥ युग्म अनन्य उछाह सहास रसे गत आलस सोक सदा हीं॥ ३४॥ अनरीति
सीताराम नाम रूप गुन धाम जानत हैं मानैं हैं एक रस द्वसरी न आस है॥ सीताराम चारु चित चेरन चरित्र नि
त गावत उमंग संग विगलित त्रास है॥ सीताराम धाम मैं निवास व्यवधान विना सीताराम भक्त जन संग सुखरा
स है॥ युगल अनन्य सीताराम मोर धाम हिय सरस सुभाव मन मनन सुवास है॥ ३५॥ मेरो मन कहं स्याम सुंद
र सैं लागि है॥ प्रेम मकरंद पूर सुपर विलोकि जानु जंघ कमनीय कटि आभरन लागि है॥ नेह निधि नाभि नैन
निरषि अनूप उर त्रिवली तरंग वीच जानि अनुरागि है॥ कंठ कमनीय कल चिवुक कपोल द्विज वसन विचित्र विधु
हरिताप त्यागि है॥

४

॥ श्रीराम ॥

॥ ५ ॥

ध्यान की युक्ति कृपाल गुरु सन सीषि मली विधि मानस भीजे ॥ मानि कै मौज मैं नाहि न फाक छु कल्वस फा अपमौं सें
कीजे ॥ युग्म अनन्य अजान की संगति भूलि हूँ चित्त मे वासन दीजे ॥ ३० ॥ जानकीनाथ अनाथ सहायक हाथ लिए
धनु तीर मनोरम ॥ सुंदर रूप अनूप सदा अवलोकिये भाव समेत विना गम ॥ राग विराग स्वरूप है हेतु निसाजिए मा
न समौं भ्रम जा सम ॥ युग्म अनन्य सुनाम प्रताप सें आठहूँ जाम सु वाजत है बम ॥ ३१ ॥ नाम सुधा घन स्याम निरंतर
जा पिए पाजिए चाव चढाए ॥ नाम महाधन पाए विभव वलपाइए प्रेम प्रवीन पढाए ॥ औरसैं काम न नात कछू कलपा
तलौ वासना हाग करोए ॥ युग्म अनन्य ~~अभी~~ अभीत अजपा हिय हाय गो नाम सनेह वढाए ॥ ३२ ॥ जानकी जीव
न नाम सनेह सुधा सुचि सागर सार सोहावन ॥ प्रीति प्रतीति सुनीति समेत सदा सुमिरे सुष स्वाद सुभावन ॥ वाद
विवाद वितर्क विहाय विदेस विवास उदास अपावन ॥ युग्म अनन्य सुमन्य वही जन जो न लग्यो निज नाम के दा
वन ॥ ३३ ॥ श्रीगुरुदेव ~~ह्या~~ दयाल दया दृग देखि हैं मोहि कहूँ यहि भाँती ॥ आठहूँ जाम सुनाम पियूष कौ पान क
रै मन मौं भ्रम शांती ॥ भूलि हे भाव भरे रस कौं रस हूँ हूलि हे हा पन ही पविजाती ॥ युग्म अनन्य सु फूलि ए कामिल कंज
कलंक विहीन सकांती ॥ ३४ ॥

॥ ५ ॥

॥श्रीराम॥

युगलअनन्यचामरामसुसनेहसुमेमेरोमनकहूंस्यामसुंदरसोलागिहै॥२६॥सोईसीतारामसौंसनेहसांचोकि
एहै॥जिन्हेंजगजाहिरजहरज्वालमाललेगपगेप्रियपावनपरत्वप्रेमपिएहैं॥सीयस्यामसेवासानकूलशूलमूल
विनाविविधिविकारव्यवहारपीठिदिएहै॥जानकीजीवनजूकोकलितगुनानवारगावतउमंगसजवायला
हलीजिए॥युगलअनन्यस्वच्छसारसंहितादिमतसोईसीतारामसैंसनेहसांचोकिएहै॥२७॥सीतारामना
मसैंसनेहमननमेरोनित्यकीजिएसचेतसावधानजगजालतजि॥ऐसोअभिरामस्वच्छमानुषवपुषपायकी
जेवरवादमतअसतसमाजभजि॥संतरसवंतसुभसंगतिसदैवकरिपारषप्रबोधअविरोधसमसाजसजि॥युगल
अनन्यलोकसोकसैंनकामकछुदिव्यगनग्रामनामसेरएसुजापजजि॥२८॥नाममहाराजकेशरनभएजोन
जनतौनतीनगुनतेअतीतदृगदेषिए॥सत्यशांतिसीलसतसुद्धतासनेहसोकसाजनसमीपतासुभागअव
रेषिए॥ऐसोदिव्यभव्यकौनसुगुनरतननामहोयअपरोक्षनाहिभलीभांतिलेखिए॥युगलअनन्यसंतसे
गआरसीसवीचसहजस्वरूपअवलोकनोविशेषिए॥२९॥जानकीजीवननामपियूषपरारतिस्वादुसमेतसुपीजे॥

सवैया

॥नेह वा०॥

॥श्रीराम॥

॥६॥

के
तारकलत्गुननमतारतारकेशनामजपतनजोनतोननीचकीचमीचगर॥ पगलअनन्यवाकोकुमुखप्र
मा२वसस्वप्रवीचजोहिकेकलेशकरनीपतर॥ ३९ ॥सवैया॥ नामकृपालअआसरेहूजिएकूजिएवागविनाद
विलच्छन॥ कामकलालकीशक्तिचलेनहिकाहकेरकीरकालकुलच्छन॥ जागिएरैनसुचैनसुधानिधिना
मैंसचित्तरमापग्रनुच्छन॥ पग्मअनन्यनिशानअभेवजवायशोकसमेतविच्छन॥ ४० ॥अन्यरीति॥
नामतोअनंततामेरामनामभूपहैं॥ नारायनआदिनामकहेकोटिवारतऊतुल्यतानहोतनामवारकअनू
पहैं॥ औनामेंइतमुक्तिमुक्तिविष्णुलोकलगिरेरामनामहैशपावैसरूपहैं॥ कीजिएनहठसठपनछो
डिदीजेनामपरमपियूषअओरमतअंधकूपहैं॥ पगलअनन्यसांचवहतवजायवातनामतोअनंततामेराम
नामभूपहैं॥ ४१॥ औनामदीपकमशालतारासमसमरामनामसूरसतसहससमानेरे॥ औरनाँसिता
केहमधुमीठमीमिसरीसोंरामनामस्वच्छसुधासाररसखानेरे॥ औरनामतनधनसहससोहायमानराम
नामप्रवलप्रधानपंचप्रानरे॥ पगलअनन्यऔरनामहैंवरातीसमरामनामहैपतीविचारतागमानेरे॥ ४२

॥श्री०॥

॥६॥

॥श्रीराम॥

नके २

नाममहामनिमानसमाँझछिपायकेराषिएसाँझसवेरे॥ कामकलंकविहाएभलीविधिरिद्धिहूँसिद्धिविचारि
वषेरे॥ शांतनितांतसुकांतसमेततनिकैंअंतरषायउजेरे॥ युग्मअनन्यप्रमोदपरायनप्रीतमनामसहायकमेरे॥
३५॥ श्रीसरजूतरतीरसुवाससजायहौंहोयअनन्यअदागी॥ पावनपाथप्रवाहविलोकिहौंचारुतरंगसुरंग
नरागी॥ होयकेमस्तअमस्तनिहायतनीकअपीककअठीकविरागी॥ युग्मअनन्यअसेषअभंगलजंगलराहिहौं
आहकीआगी॥ ३६॥ पूषनकोटिकलाकरनामप्रकासविलासवरावनवारे॥ भूषनवैनअमैनहिएनिजैन
नसैचैनप्रदायकप्यारे॥ दूषनदामकलामकजाकिएाकाटिकैकाजसुराजसवारे॥ युग्मअनन्यनभूलिएतूष
नपंथअयोगविलोकिविकारे॥ ३७॥ श्रीसतसंगसुरंगरगैंजननजानतनामस्वरूपपरेस्वर॥ वाकिफकारन
होइतियाकोउवातसुख्यातप्रमानमहेस्वर॥ जानकीजीवनकीकरुनाकलपाएलेहरसमिछसुरेस्वर
युग्मअनन्यसदाघनधमारल्योजिननामअकामवरेस्वर॥ ३८॥ अन्यरीति॥ ऐसोकोटिलोकमेदखातन
अपूतनररवरवरतरजाहितारतननामपर॥ एकवारकैसेहूँविचारैंव्यभिचारसैंसमेतकेहगएपरमेशवर॥

अविचार १

य

॥नेहप्र०॥

॥श्रीराम॥

हू

औरनामअपरमनीनकेसमानस्वच्छरामनामचिंतचिंतामनीचाहिचाहरे॥ औरनांमैरयतहिवान
औवजीरसमरामनामअचलअखंडवारसाहरे॥ औरनामसिष्यसरसमतासजोएसदारामनाम
गुरुगुनअगमअथाहरे॥ युगलअनन्यऔरनामदिनचारप्याररामनामएकरसनित्यनिर्वाहरे॥
४३॥ सपनेमांहजोजनरामनामकहैंलहैफलचारिचाहसुभगसवेगहीं॥ तौनजनचरनसरोजर
जभालनिजधारहींसुजनछाडिउरउद्वेगहीं॥ महीमाअनंतनामभगवंतसंतस्वच्छसममेसचेतनि
जेकतनेहनेगहीं॥ युगलअनन्यमोमालिकसुनामवहीद्वाहीजोवरतऔरवातसमतेगहीं॥४४॥सी
तारामनामधनजोकेसोईसाहूकारराजैकोराजसुरनायकनिशंकहै॥ चौदहूंभुवनवीचऊंचनीचही
यमोंमेफैलिरह्योसुजसअनूपममयंकहै॥ ताकेवरवरनाविलोकव्यवधानविनाहिव्यगुनमानकुल
करतकलंकहै॥ युगलअनन्यश्रुतिसंवतसेदवस्वच्छसंतसमुदायवदैंवेनहिएडंकहैं॥४५॥रामना
मधनकेसमानसुखखानआनलोकवेदवीचव्याननकानहूंनपसोहै॥ जाकेभएमव्यनेहनव्यअपसव्य

॥नाम०॥
॥चा०॥

सबसद्दसस्वरूपबोधहीयभावमसोहै॥ जानकीरमनपरमेशवसीभूतहोतघातरामेराममानोसूरशशी
असोहै॥ युगलअनन्यअनायासचारिपांचपरपावनप्रतक्षपटुप्रेमफरफसोहै॥४६॥ रामनामैंनिमि
त्तगननाथरमानाथगिरिनाथकिएकोटिकउपायतम॥ पायोसिंधुसीकरसमानसर्वेशसुखकेहींमुख
एककहासमहिमाअथाहरम॥ नामकेप्रतापसेंप्रकाशकईलोकमाहछोंहएकरसहींविचारिएविहाय
गम॥ युगलअनन्यरामनामकीविभूतिपायदुसोदुखदाहमोहमारममतादिस्तम॥४७॥ वारवारसंतन
प्रकारसुखसारनामसुधनविचारनित्यकीजिएवहारवन॥ कोहकोअचेतप्रेतसद्दसनिकेतगातफिरतअने
तखेतहेतहिरवायमन॥ बैठिएएकांतशांतस्वांतश्रांतभ्रांतत्यागिपागिएभवेशसीतारामनामरूपस
न॥ युगलअनन्यकलीकालकोकरालधामसीतलकरनकानध्यारएसुस्यामघन॥४८॥ चारोफल
प्रबलप्रकासरसरासरवासअभिलासपूरनकरननाममित्रहै॥ भारोभवविषमविकारोव्यवहारोहरउ
रहागआगगरगारतअमित्रहै॥ प्यारोपरमेसुविसेसपत्रविसेषसारपारदुखधारगुलनारसुविचित्रहै॥

श्री

सुधन२

॥श्रीराम॥

पुगलअनन्यप्यारोसहजसम्हारोस्वच्छभावनाविचारोननिहारोअपवित्रहै॥४९॥सीतारामनामजपकि
एकोटिकालकोटरटतनिशंकवाररंचहूंनलागिहै॥जेतेअंतरायमध्यवध्यताकेवीजेतेतेहोयकेसंभीतवे
गिआनदेशभागिहैं॥संतशास्त्रसंहितासुपूजनीयदिव्यगुनआइहैंअवसप्रेमप्रीतिप्यारपागिहै॥जुगल
अनन्तीनोलोकमेंअशोकजससरससैदवजैनोननामरंगरागिहैं॥५०॥सीतारामसुगुनपुनीतगिरगाइए
जूपाइएप्रमोदनित्तअविचलवित्तवर॥रखोहिएवाहनहीभूपतिमिलनरंचजानोपरपंचसवअसतविका
रघर॥काव्यगुनदोषकोविवेककिएकोनगुनउचितहमेशाजसकथनउदारतर॥जुगलअनन्यलोक
वासनाविकल्पविनवाधअविरोधधीयधारिएविहायउर॥५१॥सवैया॥जानकीवल्लभनामपियूषमयू ॥नेहवा·॥
षमजामनमाहिमिलावो॥आनकीआसहरासकुवासनसैंहोयउदाससुकंजखिलावो॥जानकीवातवि
लाससवकोमतमन्नरहोरससिंधुमिलावो॥जुग्मअनन्यसुप्रानकीप्रापतिपायप्रपंचप्रलापगिलावो॥५२
नाममहामधुमोदकस्वादप्रमादविषादविहायविचारो॥कामकलंककषायनिकायवहायअमायरहोमननारो॥

रामकेरारनकीकलकांतिसुनामपरेशकेपांयपैवारो ॥ युग्मअनन्यसुनामपियोरसएकजियोमदमोहनिवारो ॥ ५३ ॥
जौनैनिसादुखदोखमयीतेहिअंतरसोपरस्योजगसारो ॥ तासुमैंजागतहैंजगजीवनसंतमहंतविवेकविचारो ॥
जीवजहानसैंभिन्नदसापरप्रीतिरसालहिकेमतवारो ॥ युग्मअनन्यसुनामहुपावलप्रीतमप्रेमपरत्वपसारो ॥ ५४ ॥
॥ अनन्यरीति ॥ वीरवरवल्लभविहाररागवागकीधौंकीधौंसौंजसुषमासोहागकोसदनहै ॥ कीधौंमीनकेतकेजनकहीको
वेदीपनोअतिसरसानोरूपसुरसनदनहै ॥ सुंदरीरसीलीरसरसनारसिकसंगरंगनउमंगनसमेतधौंवदनहै ॥ युग
लअनन्यसबउपमासहितैतोनजोनअनुरागीकेसुनामहीकोधनहै ॥ ५५ ॥ जौनअनुरागीवडभागीप्रेमपनपागीराम
नामरंगरससागीएकतारहैं ॥ तौनहींश्रीमतिमोहरैनहूंसैंजागीत्यागीतृगनततलासआससमलविकारहै ॥ रोमरोमशोभस्व
च्छसहससुधासमानविमलवितानानामरसनासहारहै ॥ युगलअनन्यरूपरहसरसाललालललीमदमालालिख्यो
ललितललितारहै ॥ ५६ ॥ जानकीशईशागननायकविचित्रवेशासरसमुधेशकेशकलितकवूलहै ॥ ललितललाम
मालवीचवरविन्दुरेखयुगलविशेषलेतमोरमनमूलै ॥ मंदमुसक्यानिसुखानिचितवनिवंकअंकसंकहरनकरनदुतितूलहै ॥

॥ श्रीराम ॥

युगलअनन्यचित्तचोरतनिचोलपीतचटकचमकयुतजोहत्तअमूलहै ॥ ५७ ॥ कुंचितकुटिलकलितकेशारसिकेश
सीससोहतसुरभिस्वच्छसहितसमेतहीं ॥ मधुरमनोजमद्दमनरमनमनसमनवियोगज्वरजाहिरजनेतहीं ॥ सुमनस
मूहसानहारगुच्छगूंथिरहेगोहेगुनगहरगंभीररसकेतहीं ॥ युगलअनन्यमततवारेमधुकरवृंदआसपासछकेंमदपी
वतअचेतहीं ॥ ५८ ॥ रामनामरटतपटतपटप्रेमहेमफूलकपलकपुनिलागतननेकहूं ॥ ग्रामग्रामकूटतफटततम
तोमरोमरोमरसरटतघटतअविवेकहूं ॥ कामवामहटतनटतइतउतसेनसवलप्रपंचवृन्दशेषनहींएकहूं ॥
युगलअनन्यअभिरामधामवीथीवीचअटतलटतफेरनाहींभ्रमसेंकहूं ॥ ५९ ॥ निराकारअगुनअधारसुखसार
नामललितललामआठजामममप्रानहै ॥ अगमअपारगुनअमलउदाररसर्वौपरविचारकोअगारजीवजानहै

॥ श्रीराम ॥

अखिलउधारकरकारनसुतारतरसुगुनविहारगुलजाररसखानहै ॥ युगलअनन्यअलवेलेरंगमेलेसन्तरशिक
सुहेलेगरवीलनकोशानहै ॥ ६० ॥ चारोयुगवीचमीचमदकोमलनहारनामसुखसारतरवारधारधाकहै ॥ या
मजोमरमधुरधरमधुरीनजनजानतसुजानजौनहिअहिलपाकहै ॥ मायामलमदमांझमोह्योजाकोचित्ततौनलषि

॥श्रीराम॥

॥१०॥

वार

नाशकतनाममहिमाअचाकैहै॥ पुगलअनन्यजाहिरूचतनरामनाममताहिपरवारैंकोटिनतलाकैहै॥ ६१॥ रामना
महीनमुखकवहूंदेषिए॥ चाहेचारोंओरपूजनीयवंदनीयतऊमहामूढमोहितसुचिनअवरेखिए॥ वेदसंहितापु
रानवकाविशेषगुननिकरचतुरपरमसुखविसेषिए॥ काहूभाँतिकीजिएनकैसेहूंसनेहभूलिशूलिसमसमुझिसुहृ
रिहींअवरेखिए॥ पुगलअनन्यकीजेसांचसुप्रतिज्ञादृढरामनामहीनमुखकवहूंनदेषिए॥ ६२॥ नामकेरटनविन
घटतनरागहै॥ चाहेचारोंओरदेरदेखोगोरज्ञानहीनदीनतानछीनहोयभीनअघआगहै॥ जहांतकसाध
नसुराधनविलोकिएजूवाधनउपाधनसहितनरवागहै॥ तीरथकीआसमांतोनाहकूंउपास्यहेतुएकवारनाम
कहेकोटिनप्रयागहै॥ पुगलअनन्यरतउत्तमअधमश्रमरामनामकेरटनविनुघटतनरागहै॥ ६३॥ रटैनाहीनाम
ताकेमुखमांभस्यकिए॥ कीजिएनशंकरकरावकोसमानमानितानिवैनवानल[illegible]चालतनचूकिए॥ मानअ
पमानहिमेंहषिएनभूलिकहूंप्रवलप्रतापउपदेसहीनमूकिए॥ नाममहाराजसामराजसुषदेनगुनदेवनर
नागकानचिन्तवीचफूंकिए॥ पुगलअनन्यजोनसंतसतगुरुकहेरटैनाहीनामताकेमुखमांभस्यकिए॥ ६४॥

॥१०॥

॥ श्रीराम ॥

रटैनहीनामसोविशेषिवीरकीरहैं ॥ जीवतमतकत्तातेजानिनपरतपीरअंतकसहनजाय़अंतसिरपीरहैं ॥
केहहमपंडितप्रवीनसभाजीततबहुरटैविनानामपेटपाथरआईरहैं ॥ हानअभिमानसोतोअतिहीनहानपननग
केसमाननन्पहानीगिरगीरहैं ॥ पुगलअनन्यसवफोकटधरमलखुरटैनाहीनामसोविशेषवीरकीरहैं ॥ ६५ ॥
रटैनाहीनामताकेमुखहीमैंनर्कहै ॥ सुनिएनवानघातकठिनविचारिचित्तमहाम्लेच्छमूढनिसिचरसैंनफके
है ॥ नानामतवारव्योमसुमनसुगंधमांझमोहिरहेमूढकैसेसमझेनामअर्कहै ॥ सीतारामलोकअभिरामभक्तपा
समरजातसकुचातैरैनअनगेहगर्कहै ॥ पुगलअनन्यवातविहितपुरानवीचरटैनाहीनामताकेमुखहीमन

॥ नेहवा० ॥

र्कहै ॥ ६६ ॥ रटैनाहीनामसोहरामखोरगोरहै ॥ केसहूंप्रमादवसछूटएनछांहताहिजोहिएअपाकताकरवाकअ
बखोरहै ॥ हजिएहमसहूरिभूरिअसेहेचहेरिफेरिमतिआपनीनिसंककालकोरहै ॥ कीजिएविचारस्वच्छसा
रसंतपासवैठिअैठिपनत्यागिमाननीय़मतमारहै ॥ पुगलअनन्यसांचसगुनसुसंतजनरटैनहीनामसोहराम
खोरगोरहै ॥ ६७ ॥ रटैनहीनामसोउपासकनरामको ॥ होतकहाविविधिवनाएवातव्याधव्रतआधनमिरतविनाध्याएसुखधामको ॥

प्रवलउपासकसिरोमनीरहस्यनिधिनिरखिएनैननिजवीरअभिरामको ॥ ऐसोजप्योनामएकरसवसुजाम
रोमरोमअंकरामवालविदितमोरामको ॥ युगलअनन्यसकसकलविहायकेहेरेनहींनामसोउपासकनरामको
६८ ॥ नाममहाराजमेरोसवविधिसिरमोरगोरक्षारिहेसोहिएपूछिसंतगुरमैं ॥ दूसरीतोआसकालकूटनेमफा
ससमसांचहींवरतवैनवैठिरामपुरमैं ॥ नरकसरगअपवरगविलगमतमेरोतौनजानिहैजोरहधामपुरमैं ॥
युगलअनन्यनामरहितअसुरसुरजानोजुरजालिमजहाननिजउरमैं ॥ ६९ ॥ चाहेकोईकछुकैसेवाहेअवि
नीतिअतिविविधिविकारविपरीतिनैनवैनमैं ॥ टोहेचित्तओरकोउछाहेउरआपनेमैंसापनेनमोहेअवि
नोहेरेनअनमैं ॥ नाहेनेहनहीउमाहेनसुरंगगुनअंगभंगामएगाएचारुचित्तचैनमैं ॥ युगलअनन्यधम
सोईसंतसिरताजजाकेनाममहाराजसुखशोकैसेनमैं ॥ ७० ॥ वातकेवढूंसमहोयगयोमदमनअतनरतन
मानिमोख्योमतिमंदहै ॥ हरिपावतरलतरंगकेसमानपलपललोभलालचउठावतविलंदहै ॥ लोकशोकर
पकपतोमतममांमगिसोभिस्योभरकपरनिपटसाथहूंदहै ॥ युगलअनन्यसवफोरकेधरमकियालियोलेसअमित
नरम्योरामचन्द्रहै ॥ ७१ ॥

॥श्रीराम॥

निंदानिजपरमपियुषसैंमधुरतरअतरतरावैनेनिमित्तप्रियपोतहै॥ लषैंमेदरसिकचुनिंदअरविंदपदमएजेमिलि
दपायअविचलजोतहै॥ कहांमेरारूपअतिअधिकअधिकअनूपकहांलौकिकप्रपंचपंचभीज्योगनगातहै॥ युगलअ
नन्यलेशखपकानचित्तवीचविचित्तवरपायसुखसावतनिसांतहै॥७२॥ नाममहौषधपानकिएकुलकापिकमापिकरो
गरैहैना॥ प्रीतिप्रतीतिसिमेमतरेरसराहतअंगनदाहदहैना॥ वामविकारविलाशविहायविनोदविचित्रसुचित्तज
हैना॥ युगमअनन्यउमंगउछाहअखंडितस्वासजहानवहैना॥७३॥ पीजिएचित्तसिमेमिलीविधिनामपियूष
कुरोगनसावन॥ दीजिएलाहअदाहहिएसियरामस्वरूपहींध्यायसोहावन॥ कीजिएकायरताकलिदूरिसुधाम ॥नेहवा॰॥
निवासकरोप्रियपावन॥ भीजिएयुगमअनन्यसदागनकीरतिगायउछाहसजावन॥७४॥ अन्यरीति॥ चारिषट
आठदिव्यद्वादससिंगारयुगमुदलकमलकमनीयध्यानधारिए॥ नामअभिरामजसजाहिरजेनेशजापजपत
हमेशाछोडिपारपगधारिए॥ सातवोंसुकंजमंजुसहससुपानभानुसहससमानतौनसदनसम्हारिए॥ युगलअ
नन्यनामरसनारटनलायलगानलगायमोहमारमदमारिए॥७५॥ जेतेजलजातवीचवीजविलखातवोधविमलविचारिए
ननामसेंअलगहै॥

परमपरात्परयुगलवरनमुनिमानसहरनमांझगयेघोरगरगैहै॥ सावधानसंतरसवंतबुधिसंतनामरमतहमेशजाहि
जानिआगजगैहै॥ युगलअनन्यजानकीशखिव्यधामस्वच्छसुभगपयानहितअनुपममगैहै॥ ७६॥ जोतजगमग
जीवजानहूंजहानवीचनामहींकोप्रवलपरात्परेपषिए॥ सहसरस्ननमांझभोरसांझसव्वसतमारप्रगपतअर्द्ध
नामरूपलेषिए॥ मारतंडकांतिकलाकरकोटिश्यामद्युतिवारिएसैबनामरूपविशेषिए॥ युगलअनन्यनैनिषिल
निवासथलअगनअनंतधीयंव्यापछविपेषिए॥ ७७॥ जेतीविरवीचवरीनाडिकाप्रवीनतेतीमांझसतसार
तामैंतीनपुनिएकहीं॥ ताहीकेसुयोगपायभोगाव्यवधानपरपरमपरेशनामरूपद्दरैकहीं॥ चंदसूरअनलसुवी
जचित्तवीचनितमननकरतकाजसरतअनेकहीं॥ युगलअनन्यसिद्धिसाधकसमूहऊहव्यूहविरचिततऊ
तारअविवेकहीं॥ ७८॥ कुंडलनीशक्तिकेजगाइवेनिमित्तनित्तजतनजमातकरामातऊत्पाततर॥ तऊनहींजा
गतीगरुरगुनमयीतीनसीमहींपरकिमीचविवसविलाहिंनर॥ ऐसीवलवीरजनिकेतरामनामसोरसरसमसने
हमैंसुमतअकुलानघर॥ युगलअनन्यनामजपिएअरेउजीहसरजसुधारितुपावसविसारिडर॥ ७९॥

॥श्रीराम॥

॥सवैया॥ योगीवहीसवभांतिविचारतजोनसुनामसुधारसस्वादत॥ रोगीसमानसभीभ्रमसंकुलनामसनेहविही
नविवादत॥ रागीहमेंसरहेंवहेसाधनभारपसूनवरावरआदत॥ प्रेमअनन्यसुभोगीपरारतिनामसुवासहिं
सेंचितछादत॥ २०॥ नामसनेहसन्योहियरेंजेहिताहितमामविभासमसोहै॥ योगसुरूढनिगूढहमाहिलसै
यमसोजउछाहधसोहै॥ वातनआनकीकानकेरकछुकीमनलालललामछसोहै॥ प्रेमअनन्यसोहारवनेया न
गऔरागसुसीमसजोविहसोहै॥ २१॥ कौनकहैंमहिमानिजनामकीकोटिनकूरकलंकहिंकादत॥ जौपद
रथ्यथ्ययधियाकहेंतोनहींवस्तुप्रतच्छसुचादत॥ औनअगोनअहैनउमंगसुरंगअरागविशेषहींवादत॥
प्रेमअनन्यसुनामप्रभाअनयासमिलोसततसंगकेआदत॥ २२॥ सोईसततसंगजामलगेरामरंगजू॥ कथ ॥नेहवा॰॥
नवकनवैनचैनविनगाननाननविविधिविधानउपखानहूंकुसंगजू॥ मेरेमतमांझहियसंगअविकारउहजाके
किएहोयअनायासभवभंगजू॥ रहेनहींरेखरागद्वेषकोकहापिकहूंवाटेअनुदिनउररहसउमंगजू॥ प्रेमल
अनन्यओसंगवहेरंगअंगसोईसततसंगजामलगेरामरंगजू॥ २३॥ संतनसुरीतिचलीआईहैहमेशतें॥

२

आवैजौनपासरावरंकेछोटेवडेकोईताहितुपंहेसैंनामविमलविशेशोते॥ छावैंछविछावनीवहावैंहाय
जायज्वरजीवनवतावैंरूपरमनरसेससते॥ लावैंनिजठौरभौरविषमैतकादितताहिदैवैंदिव्यज्ञानद्युतिअधिकहिने
शोते॥ युगलअनन्यसांचवसिषसिषलावैंस्वच्छसंतनसुप्रीतिचलीआईहैहेमशोते॥ २४॥ रेजौननामतामआ
वैंगुनरामके॥ करुनाकलितकृपासरससुसीलशमदायादीनहितचित्तदायकश्रीरामके॥ अधिकअमानमान
प्रदमदमारगुनग्राहीदुखदाहीमददाताईखासआमके॥ कोमलवचनमनतनमैंकठोरताकोलेसहूंनमिलेसांचे
रांचेसुखधामके॥ युगलअनन्यउरधरकोनजानेनेकरैजौननामतामैंआवैंगुनरामके॥ २५॥ नामिनकेपास
सुषरासरहैंछायकै॥ जैसेधनवानेदनवारेकेसमीपजनरहेसदाठौरसुधिआपनीभुलायकै॥ जैसेसुतसिसुहीं
नछोउपावपलमातुजैसेसदसिष्यगुरुसेवैसरसायकै॥ जैसेदिव्यथलनकेवीचवसैंपुन्यपूतउतमभक्तनामसननि
मित्तभावभायकै॥ युगलअनन्यनेहनिधीनिजनामरतनामिनकेपाससुखरासरहेछायकै॥ २६॥ रेहोप्यारे
नामजामेलगेनहींदामहूं॥ अहोगरुसंतसउंचयनसुमगामध्यछोडिवधसंगगुनगालितगुलामहूं॥ ॥

॥ श्रीराम ॥

हटोनामहीननरपाससैंहमेशपैरकीजेहीयहारनामनेहअभिरामहूं ॥ पटोमुहमोहरसअमलविनोहखूव
लाहएनसंकरंकरीतिदुखधामहूं ॥ पुगलअनन्यवडभागिनेसैंजोरेकररटेप्यारेनामजामेलगेनहींदामहूं ॥ ८७ ॥
औरधनधूमकेसोधौरहरहेरिए ॥ भूपतसकरआगआहिकअनेकभांतिरहेतनमनस्याहआहपैंनिवेरिए
महाराजनामधनअछितीयजोहीजनजामेकाहूभांतिसैंनकहूंसंकहेरिए ॥ वाढेदिनदिनदियेदुगुनअसंखगुन
नातेसवत्यागकरुनामवित्तटेरिए ॥ पुगलअनन्यसमुझावैंसवसंतस्रुतिऔरधनधूमकेसोधौरहरहेरिए ॥ ८८ ॥
जौनथलसम्पककलेशकोनिवासनित्ततौनथलनामहींकीकृपापायवोंचिहैं ॥ तहांनसहायकोउमातपिता
वंधुमीतदारासुतभूठपातइनमैंनराचिहैं ॥ आपनेईस्वारथसमेतसजेनेहसवतेराहितकारीनामयाहीमध्यमा ॥ निरुवा० ॥
चिहैं ॥ पुगलअनन्यसांचकहैंसवसंतगुरुरामनामजेपेफेरजगमेनमाचिहैं ॥ ८९ ॥ हायवपुमानुषहूंपायनउ
धास्योआपतातेवारवारसहेतापदापदामहै ॥ प्रानपरतच्छप्रेमसिंधुश्रीभरतखंडताहूमैसुरंगसंतसंगअभिराम
है ॥ सुलभउपायनामरटनवतावैंसंतवडेदयावंततउमानततनवमहै ॥ पुगलअनन्यअंतहोयगीखरावीखलरहैगीन
आवीदुखघोरपरिनामहै ॥ ९० ॥

छोडिएवडाईलघुताईउरलाइए॥ वडेवडेभूपनकोकठिनकलंकजेंगाजगतजवालचाहदाहदुखदाईहै॥
॥श्रीराम॥ छोटेछोटेजीवधारेचीजमप्रमोदमनपावैसुखछावैंसोवैंमोजउमगाइए॥ वडाईमतंगवांधोसीकरनखेद
अतिछोटीछोटीचीटीचवैमुदितलखाइए॥ पुगलअनन्यसरसमिउडगनदेखिछोडिएवडाईलघुताईउरलाइए॥ २१॥
॥१३॥ जौलौअभिमानतौलौमोहकोनडरहै॥ चाहेकोटिभांतिजपतपयोगज्ञानगेटचढेनउमंगरंगअंगवरतरहै॥
भावैंनहींरंचहूंपरेशअवधेशउरपुरवातजानोअभिमानमहागरहै॥ सोसंतधन्यजिनजीत्योअभिमाननीचउन
कोनमीचकीचसहावैअडरहैं॥ पुगलअनन्यलघुताईधारमेरेमनजौलौअभिमानतौलौमोहकोनडरहै॥ ॥१३॥
२२॥ नामअनुरागिनकीरीतिमनपारहै॥ रहैंसंकतेकविनअचलअडोलनित्तचित्तमेप्रतापनामछायोअवि
कारहै॥ वेहवरवातउनचासहूंसमुंदसातहोयजायएकतउखेहनविकारहै॥ सरसमतउहितकेमएमेंनलेशडर
सावधानवृत्तिनामलीनएकतारहैं॥ पुगलअनन्यमेरीमतिनापरुविसकेनामअनुरागिनकीरीतिमनपारहै॥
२३॥ सवैया॥ नामकेआसरहैंसवहींगतिज्ञानीगुनीवुधयोगीजहांलौ॥ देखिएमोहमहीपविसारिकेसूक्षमभावकिरे
रतहांलौ॥

॥ श्री राम ॥

औसभी करनी छिन चार की चांदनी और कहौं मैं कहां लौ ॥ एसम अनन्य सु संतन की प्रिय प्रीतम प्रीति हमेशा रहौं
लौ ॥ २४ ॥ प्रात हीं पाव़न प्रेम प्रेम प्रदाय़क नाम सिय़ा रघुनाय़क ध्याव़ो ॥ आत हीं हीय़ हमेश धरो धन ध्यात हीं
दूरि दुराय़न ल्याव़ो ॥ व्रात हीं संग कुरंग वामा य़के संत सुवाग पियूष हीं प्याव़ो ॥ एसम अनन्य सिय़ावर भ्रात हीं
भाव़ सवाऱन चित्त सैं ध्याव़ो ॥ २५ ॥ जानकी जान सु माधुरता मन मोहनी मानस मांझ निहारो ॥ मौज महा मु
दमानि मजाहि शिहू सरीरहु दूरहु विचारो ॥ अंग सुरंग सजाय़ सुभूषन पूषन कोटि विधून को व़ारो ॥ एसम अ
नन्य जहान जलाय के जानकी नाथ के हाय सुधारो ॥ २६ ॥ नाम निशा निज नैनन मैं छाय़ो ॥ कौन के काल के
राल करे वल नेकु निमेष नहीं उतराय़ो ॥ और हीं और दसा दृग देखिए लेखिए लाल लला ई समाय़ो ॥ कौन क ॥ श्री राम ॥
हो महि मैं सजनी रजनी छिन मोद प्रमोद बधाय़ो ॥ एसम अनन्य उमंग सुरंग सुनाम निसा निज नैनन मैं छाय़ो
२७ ॥ राम रमती ति रूप रहित बदंत वेन चैन चित्त अनेन कु नाहीं नैन हेरिए ॥ नाम अभिराम रूप अमल अनूप
वाच्य वाचक अभेद मानि मोह हीं निवेरिए ॥ एक के विय़ोग एक होत न त्रिकाल सिद्धि संत समुदाय़ श्रुति संवत सु टेरिए ॥

पुगलअनन्यनामजापिएजगायजियजालिमजमातकरामातगुनेगरिए॥ ९८ ॥अन्यरीति॥नामीमिलापलिएतरसे
परेमनकरचितनामविना॥वामीविनोरहिहिएसरसेभरसेनहिवासरवीजभिना॥स्वामीसुसंतहिएढरसेदुतिरामे
उरहिसिछामछिना॥पुगमअनन्यअकामीमएमलभावप्रकासविलासलिना॥ ९९ ॥जानकीजीवननामअमीप
रिपूरनपांचहूंअंगविचारो॥एकहीएकमेंलीनकेरामनसंतसमागमपायविहारो॥नामसमर्थसर्थकर्थेनिवा
रकैननिनित्तनिहारो॥पुगमअनन्यउजासउदयउरउज्वलतारमनीयसुमारो॥ १०० ॥अन्यरीति ऐसेमासमैपाय
नामरटतनजौननरनरकनिकेततनसहितनलेशशाक॥षटपुगमाससुखरासतामेंलीनशतसाठदिनहोतघातक
रसुविहाववक॥रोजरोजआठजाममहामोरधामपुनिद्रिष्टिकासुतीसतीनिछीनतासमानतक॥पुगलअनन्यए
तीसावकासस्वांसपाहीनउसठस्वांसकोनसाएरतमोहभक॥ १०१ ॥रटेमनलायनामजामएककामत्यागिपावेप
रमेंशापरानेंरधामजीवजउ॥सीतवातआतपातमातसुतनातवामवीचहूंवितावेतउमिरगोउपाधिवउ॥एकहूंमें
हायखायमाननतअपायहेतुऐसोमतिमंदअंधअधमअयोगगउ॥पुगलअनन्यसंतनामीमतसीवसुनिकैसक्रोधमदमानै
वैनअतिअउवउ॥ १०२ ॥

आवैनहीपासस्वासविमलविनोदरंगरहमनिवाससंतहेरिपीठिदेभगे॥ कहहकोनजायतहांहोतहैभजनभायअधिकअपायहोय
मेंविरागहींजगे॥ फेरघेरघेरेमरेटेरनासुनतकानध्यानउनवहनसमीपहींमेंजालगे॥ पुगलअनन्यकोनकहौंमूढकूसीभि
महामलमूलगेहकीचहीमेंसोपगे॥१०३॥ चारिवासचारियोनिकोटिनजनमजउभोग्योफिरिभोगिहैनलाजअर्थमेंशको॥
वारवारकहतपुकारसंतसारकारत्यागतनतदपिअसाररवेहेंसको॥ करुनानिधाननामसहासुखपानताहिसनमुखहोतफ
टछूटतीपापपेशको॥ पुगलअनन्यनित्य निंदैनिर्वानध्यानदायकदयालमौमालदरवेशको॥१०४॥ पदेपाठआठदश
रसचारिकाठसमविशामविलीनदीनछीनहूमलीननित॥ केदेअंधकूपदेहगेहमेंनचिनेनकवाहीमेंउरभिपंचमूढपगि
वीजीवन्त॥ गेटज्ञानध्याननअनुमानसेंअनेकभांतिकांतिविरहिततहितहेरतननीचचिन्त॥ पुगलअनन्यकहौंकौनसेंविपत्तिह
पेऐसेपांवरनसाथहोतदोषदहमित्त॥१०५॥ सवैया॥ जौनअभागीकुदागीकेअंतरवाहरजानकीजानिनराज॥ तौनकोकै
सेहूंस्वप्न मभारनिहारिएनैननहूंतेनअकाज वैनसमाननिरादरहींकरिएधरिएमतसीषसुछाज॥ पुग्मअनन्यनिशंक
सहारहिएरटिनामसभीमिरताज॥१०६॥ अनन्यरीति॥ सीतारामनामगुनधा नासुधामरूपअमलअनूपलीलाललितसुवीचमें॥

॥श्रीराम॥

महामोहमानिपहिचानिजाकीप्रीतिनाहिप्रगटपैसाचसमसोईकलिकीचवैं॥कीजीएनसंगऐसअधमकुरंगअंगछूई
एनभलिभएपरमसुसींचवैं॥युगलअनन्यप्रायश्चितश्रीसुरजजलनामनेहलायेकरएनसुवगीचवैं॥१०७॥सवैया॥
इष्टअभिष्टप्रदायकनातनिहारिनिलयमधिवासविसेषी॥शिष्टनकीप्रियप्रीतपुनीतप्रतीतहटायउछाहअसेषीलौकि
कवैदिकवागविलासविहायउदासतजेतमदेखी॥युग्मअनन्यलहेललिताकल्पद्रुमसखछसुजापिनिमषी॥१०८॥
॥अन्परीत॥रामनामअमलअसंकअंकपंकतंकशंकरंककठिनकलंककोटिकाटिहै॥कामदामवामआमछामताम
धामचषचलनकलामपावपलकउचाटिहै॥भक्तिभावमालमलभोजनभवेशभीतिभासअभिलाशभेदभावनासुपा
टिहै॥युगलअनन्यजगजीवनजलूसजसजाहिरजमातजीवजानजनजाटिहै॥१०९॥नैनऐनवैनवीचवैनऐन
चैनदैननामरूपगैनसैनजैनऐननाशिहै॥मैनफैनतरफैनपैनलैनलोकलाजलोभखोभखाजखेदखाहिसीन
भासिहै॥इष्टमिष्टसिष्टस्वाददृष्टदिव्यवष्टिवादपादसीमशाहस्वादुनादहूंप्रकासिहै॥युग्मजामकीशध्यानधा
रनाधुरीप्रानपालनप्रधानप्रेमपानअभिलासिहै॥११०॥सवैया॥जानकीजीवनजानियेजानसुजानपनोसवहीविधिनीकी॥

॥१५॥

॥१५॥

न

॥श्रीराम॥

आनकीवाननकानकरोञ्जनध्यानमहाउत्पातसुफीकी॥ प्राननिछावरकीजिएहैएतनोसत्तसंगतिरंगसुधी
की॥ युगलअनन्यप्रकाशपरावरपाइएप्रेमप्रमोदअमीकी॥१११॥ अन्यच०॥ सीतारामनामअभिराममहामोद
धामहरितहमेशहेरिहोतहेशहामहीं॥ कहाकहूंकंटककलेशसोमिलितलोकसोकवारवीचचित्तदी
जिएद्वामहीं॥ कीजिएकबूलथूलसमननसुनामगुनपीजिएपपूषवृत्तिवांधिवशुजामहीं॥ युगलअनन्
स्वासमालिकमकानमांझवसोभोरसांझतजितीनगुनग्रामहीं॥११२॥ वानीव्यवहारसुभअसुभविकारभा
रभरीभुलवायभव्यभावनामसाजिए॥ वारवारहोयगर्कनामस्वच्छसुधासिंधुदीनवंधुविनाआनअंजनन
आंजिए॥ काहूसेंनहालखुदकीजिएप्रकाशदिव्यधारनाविलासखुसवासछजछाजिए॥ युगलअनन्यचा
हदूकदूकहोयवपुतऊएकपावकाहूकैसैंहूंनभाजिए॥११३॥ होउदिव्यविमलविहारसुखसारवागभूषनउ
दोवरनाधिपविचारिए॥ होउदुतिहारमोजमानससमायध्यायरामरोमछायछविअकथनिहारिए॥ होउ
मनभिन्नपावपलककदापिभूलिहूजिएविशेषटेकवेदवीचधारिए॥ युगलअनन्यहोउप्रीतमप्रधानप्रान

॥सीता॥
॥राम०॥

॥श्रीराम॥

॥२६॥

हूसेरोहराजदुखदासताविहारिए॥११४॥सीतारामपरमपरात्पररूपसुठिसरसअनूपनामपरमपरेशहै॥
जानोनहीजायतामेंवोरमतनानाभाँतिकोतिअवधानवरविहितविशेशहै॥रायरोयहोतहैहैरानहसोदि
शिमूटनिकटनेहरैंहरदेपशद्वेशहैं॥युगलअनन्यघेरघामेंनमोदरंचकेवलप्रपंचआंचनित्यरूपशहै
११५॥प्रेमपगावरईशसहीनहिवादविवादविषादकोगेलहै पारसस्वच्छप्रतच्छविराजतमानत[illegible]
मूटनमानसमेलहै॥नामनिसातसनेहसमेततरेटएकतारलखेसतसैलहै॥युगमअनन्यसुजानभलेपरभाव
विहीनवरावरवेलहै॥११६॥धोषाधरावरनीपतिधामसलोकिकनामअरामहूंधोषा॥धोषाधुरंधरतागुनहू
धुनहूहसभाँतिविशेषविनचोषा॥चोषाव्रपारसकेविनउपकोलेशपियूषजहाँनसंजोषा॥जोषाविवेकतुला
जवहीतवहीविननामलेगसवधोषा॥११७॥जानकीवल्लभनामसुधासतसारसवाहलियोजिनजानी॥भासभप्रीति
नकेहियमेंसुरलोकसुधाहूसुधादुषषानी॥पायपरारतिरीतिरसारसमूलिगईजगजालगलानी॥युगमअनन्यअ
संककसहासुषसाजनवीचसुवुद्धिसमानी॥११८॥जानकीजानमहामदुताछविछाईप्रमोदविनोदप्रहाकी॥ ॥

॥सीता॥
॥राम०॥
॥२६॥

कौनकथाकहिएकेहिसेरहिएमनमांझविनोदअहाकी॥गौनगरीयगुमानजहांनहिंरंचसमायसकेप्रमदाकी॥प्रेमअन
न्यसनेहसमागमसावितचाहिएनाहगहाकी॥११९॥चंदचकोरचरित्रसुचित्तसचाहनिहारिएनाहहमेसे॥मीनमहा
मुदपीनसुनीरसुलीनताहेरिएहीयविशेशे॥कंजरसज्ञमगाजउमोहनओरहूंहेतविलोकिएवेशे॥प्रेमअनन्यन
कीनेकसमैहेसतेधिकजीवनऐसे॥१२०॥आठहूंसात्विकीवीचविलाशविहारवहारविभूतिविलछ्छन॥जाके
भएभवभाननहींतिलमोदमहानचढेचितअछ्छन॥आपपरेशवसीतिनकेमितनेहसुपासनहेतिरक्षन॥
प्रेमअनन्यसुनामसनेह~~सहायक~~सहांयकसावितसानसमछ्छन॥१२१॥नामनिरंकुसनेहनहेनवहेनदहेन
गेहहलकाई॥आमअगारअजारलहेसपनेहूंनहीजगजालललाई॥ग्रामगरीयगुनेशगुनेगुनज्ञानगुमानन
नेककलाई॥प्रेमअनन्यसुनामसुधासरपैठिप्रपंचप्रचारघलाई॥१२२॥रस्कअजूवअनूपअलौकिकनाममहा
महवूवविहारी॥साजिपैशोकसनेहअहोनिशिजोहिएमध्यस्वरूपखरारी॥होयहमेशहुलासहिएहरसायतपूजि
येपीयपियारी॥प्रेमअनन्यवियोगविथावहुवासरवीतिहैवानिविचारी॥१२३॥सीतारामनामअभिराममहामोर

जो
धामचाहेकोईकरेआचरनकौनपावहीं ॥ नीरवीचपावकनिवासत्यौंअकासमध्यविविधिविहारवागफूलेसरसावहीं
राईमांझमेरुकोसमोइवोसमुंदरवूंदसुईवेधहींसेंगजजूथनसमावहीं ॥ युगलअनन्यपरमेशकीकृपाकटाच्छएकरसआ
शऔरचित्तमेंनभावहीं ॥ १२४ ॥ औरमनमूढकूदकायर~~कायर~~कुसंगत्यागिपागिकोनरहेजानकीशनामधाममें ॥ नाहक
हींलौकिकीकथानकेव्यथानवीचविमलविचित्रवैशवीतोजातवामेंमें ॥ हायहेसियारसंतसाहेवपियपयपरपीजिएसुना
मवैठिस्वच्छशोकग्राममें ॥ युगलअनन्यअन्यवासनाकुपासगरवूझिएविशेषद्वेषछोडिखासग्राममें ॥ १२५ ॥ सीतारामना
मकीविभूतिकईकोटिअंडअचलअखंडव्यापिरह्योजियजोहिए ॥ सीतारामनाममोहसिंधुसीकराशअंशईशवताकरं
वअवलंवमोजटोहिए ॥ कोहकोकलेशसठसहेइतउतजायभजेक्यौंनरामअभिराममनमोहिए ॥ युगलअनन्यचित्त
ताअनुरागवीचवरननरेशभक्तमालपनपोहिए ॥ १२६ ॥ रामनामसुजससुजीहसेउचारिराजअनायाससोजआज
हीजिएजलायके ॥ हायकेकृपालकोशलेशहासहासखासहूसरीदुरासकद्वारएमलायके ॥ काहसैंनहालशोकमो
हकोप्रकाशकरकोउनसहायहैसोविपुललालायके ॥ युगलअनन्यवीजवूझिएसुवैनचैनदायकविशेषखेहखोहिसखलायके ॥
१२७ ॥

॥श्रीराम॥

नाममहाराजसामराजसुषहैनहुतचाहेजौनचीजमागिलीजिएनिसंकहीं॥ होइहैनवारदुखदारुनप्रहारवीचली
जिएवहारसुषसारअकलंकहीं॥ कौनहेत[illegible]हरतहरामखोरऔरऔरपाहीलिएनित्तरहेकेकरंकपंकहीं॥ पुगल
अनन्यदूजीआसविसराय़हियेहरषअमायपवैंविज्ञहिएडकहीं॥ १२८॥ नामीसिरमौरकोशलेशापरमेशवशकि
योचाहेजौनतौनजपनामरागसें॥ संजमसजापसावधानअवधानविनाराचेरहेप्रमज्ञानध्यानहूंविरागसें॥ नीचपनआप
नेसुचिन्ततजवीजकरिकीजिंसुसंगद्भहीनगतरागसें॥ पुगलअनन्यधन्यमाननमन्यसोईजनजाकीप्रीतिप्रवलहैमेशा
नामवागसें॥ १२९॥ लग्योलागनामसैंसुजाननतयजानिए॥ हलाहलकहरकठोरदुखघोरसमसकलजहानसनमान
मन[illegible]मानिए॥ आठोजामशब्दसारसुधुनिसुनायदृष्टादिसिसरसाय़वातदूसरीनआनिए॥ सावधानसंतरसवेत्तछवि ॥नेहवा०॥
बेंतसंघअमलउमंगसेंसमेतहेतठानिए॥ पुगलअनन्यऐसीभांतिकेभरासेंचित्तलग्योलागनामसेंसुजाननतवजा
निए॥ १३०॥ सीतारामनामहींसेंआदिअंतकामहै॥ चोजचतुराईचटकाईचपलाईचारिराजहींकिचांदनीअंधेरप
रिनामहै॥ देखिएइराजइगाधजधेय़संगत्यागिपागिप्रेमरंगरसरासमेंगोरस्यामहै॥ केतोकरोकौलहौलहीय़कोकुडोलतौल
नाकिएतलासतीनखेहरखेहरधामहै॥

युगलअनन्यमूढमध्यमैंमलीनमदसीतारामनामहींसेंआदिअंतकामहै ॥ ९३१ ॥ सवैया ॥ स्वच्छउपासकज्ञाननिधा
नप्रधानसुजानमहानवहीहै ॥ अच्छसमच्छप्रतच्छपरावरप्रेमप्रकासनिवासमहीहै ॥ कौनकहैंतिनकीमहिमा
गरिमागुनहिअसुलाहलहीहै ॥ युगमअनन्यअसारहियपजैप्याजिननामप्रमोदमहीहै ॥ ९३२ ॥ अन्य० ॥ नामकीरम
ननामजापिएसनेहसाथहाथमववोरहीसैंधोयरामरंगिए ॥ छोडिएछलीनमदमानममलीनपासखासरसरासअ
ससाजिएसुसंगिए ॥ थापिएजहानजसजिकररहितचित्तवित्तव्यर्थफिकरविहायएकअंगिए ॥ युगलअनन्यतारतोडि
एतगुनतमअगमहेमशाहीयहूजिएसुचंगिए ॥ ९३३ ॥ रामनामहीननरनीचमीचवीचहै ॥ काहूभाँतिशांतिभ्रांतिहो
तनतकालमोंभभोरसोंभदारुनदवारखैरवीचहै ॥ मानततनमूढगूढगीरपलपीरहरहेरतहजारहोंहरफकुरगीच
है ॥ नाहकहींहोतवारवाहकवपलविज्ञविमलविचारनाहनिपटनगीचहै ॥ युगलअनन्यऔरएअंदरंनिहारने
कुरामनामहीननरनीचमीचवीचहै ॥ ९३४ ॥ सावधानसीतारामनामजपेरोजओनअनुपमप्रेमपावैसंततपरमे
शक्षन ॥ होयकेअभीतमीतमाहिरमेहशासब्यशोवैंवागविसदहविचारिकैकलेशावन ॥ जोहेजगजीवनप्रकाश

॥श्रीराम॥

मनमोहछविअनूपविलोकिकेमुलावैभवभानतन॥युगलअनन्यसीयवहन्नमसनेहविनाजीवनअकाजमहा
मूढअतिआत्महन॥२५॥जपैंजौननामतैंनसाँचेरामदासहैं॥तिनहींकिकलिनकवूलकँ[illegible]तिभूतितीनलो
रहत
कवीचपूजनीयप्रतिकाशहै॥जानकीरमनशोकशमनचमनचारुचरितसुधाहहिएवीचअभिलासहै॥वडे
भागहागसैंविहीनपीनरागनाहिजाहिनामनिरतसुजनपरप्यासहै॥युगलअनन्यऔरतौरमूढजानुंजपैंजौन सब
नामतैंसाँचेरामदासहैं॥२६॥सोईस्वच्छसारसीमपायोजौननामहै॥तिंहीकीमहिमाअपारभवधारपार
वेदभेदविदुखवखानतनिकामहैं॥जौंहरीजमातकरामातवंदनीयव्योमसदसअलेपछेपविषमविरामहै॥
जानकीरसिकपदपदुमसमीपदीपदेषतहमेशहगहियअभिरामहैं॥युगलअनन्यधन्यमानमन्यशीशमनि ॥नामनै०॥
सोईस्वच्छसारसीमपायोजिननामहै॥२७॥जपैविनानामकामएकहूंनहोयगो॥लोकपरलोकमध्यशो
कओकथोकमूढशीशपीरपीरमारकीनसाधरोयगो॥परमप्रकाशकलकारनसुमन्त्रवपुनाहकविकार
वैनसैनमांझखोयगो॥हायसरमायपलपावहूँननीचमनविरहाविलासवीजहियेनहीवोयगो॥॥॥

युगलअनन्यवारवारहींपुकारिकहेजेपविनानामकामएकहूंनहोयगो॥१३८॥सवैया॥निशिवासरनामअ
॥श्रीराम॥ कामसहाजपिएसुखस्वादुसहस्त्रनकारन॥ग्रंथनिकायनमेंलखिएऽनकेविनकौनकलेकनिवारन॥कोल
किरातमलेछपरवानअजानननहानकुवारनतारन॥युगलअनन्यअधीशसहीतऊनामकृपालकुजीवउधारन
॥१९॥ १३९॥जीहअनीहसवीहसोहावन~~नामहमेश~~नामहमेशहिएलखुप्यारी॥आठहूंजामलगापरकारकिशो
कसजायसम्हारिएवारी॥रंगअनेकअनंगनिवारकजोहिएजालजवालनिकारी॥युगलअनन्यसहीस
जनीधनधन्यतिलोकतुहींरुचिवारी॥१४०॥नाममनोहरचूंदरीचारसुचाहसैंहेरसनेनितधारो॥कैसे
हूंकायकलेसपडेपरपावखडीसपनेनउतारो॥हियअरशाहुलिहनीहशोधिशिहामसुधामनवीननिहारो ३८
युगलअनन्यकरोरनभूषनचूंदरीरंगकेऊपरवारो॥१४१॥मरकेनितहींरहनाइतहींचितहींविचनामधेग्रा ॥१९॥
यकेप्यारे॥जरकेविरहीमुहलेतसहीनहिवातहुरीसववीचउज्यारे॥उरकेगुरुमेंरसरागरमोसमोशोकक
लंककुलोककतारें॥युगलअनन्यरहोअरकेनितनामहींमेसहासोंभसकोर॥१४२॥करुनामुहितोउर

१८२

॥श्रीराम॥

धौरहेगहेसुद्धउपेक्षाविचित्रमपत्री॥रागनद्वेषकरोकवहींसवहीमहनामविभूतिजयत्री॥समतासवमैंरमतारमुअर्थवि
चारिकेत्यागिएकाजकुपत्री॥युगमअनन्यसुनाममेंअनयासमुचिन्तनसेसवसत्री॥१४३॥नामहींकेवलतेजप्रतापतेकोटि
नलोकनकोप्रतिपालन॥होतहेमसमानहींतिलहूशकोवेसुवाकप्रमानउजालन॥सेषसहस्त्रसमानविभवपलवीचहीं
सोपतनाममहालन॥युगमअनन्यकृपालकृपाहितेनामसुपंथमेंचित्तहीचालन॥१४४॥वालकुमारकिशोरजुवाजठरा
पनदोषरवानेंरच्यो॥काहूसमसुषलेशनहींकहुंकीजिएनेकविवेकसलाह्यो॥जानकीजीवननामविनापलपावप्रेमार
कोभानलेह्यो॥युगमअनन्यसोईसुखियासवतोरसोनामसनेहहीचाह्यो॥१४५॥नैंसवापउपायजहांतकजायअपाय
अव्यापकुमायक॥वेदविरंचिविवेकविलासितव्यासवैहैंवरवैनसुलायक॥आठहूंनामलगायललामसुलागअखंडितमा
नसोवायक॥युगमअनन्यनहींतिलेदरकेराढराजातहैस्वासमुसायक॥१४६॥काहूकोसंवतज्ञानविरागअदागअराग
क्रियातिहुंभांती॥मानतयागसुरोगनिवारककोउकहेपरिएस्मृतिपांती॥ऐसहींनानाविधानवषानतपैकलिकालकि
एनहिशांती॥युगमअनन्यसियावरनामररेरसनाचमकेकलकांती॥१४७॥अनारीत॥नामकेरटनविनपांवरीषसाचैह

॥नाममें०॥

॥श्रीराम॥ ३ विन

॥२०॥

दशोदिशिपैरतदरिदृदावदाहदहि हायहरदमसमैनकहैंनआँचहै॥ अधिकअपूतपाँचभूतनकोदूतहोयखोयखुदखावि
दखरावखरखाँचहै॥ संततसत्तगुरुसदाशास्त्रनसुसीषसुनिमाननतनमूढ़ताहिहितनरनाचहै॥ युगलअनन्यआठजामवर
नामनरनामकेरटैंनैपाँवरपिसाचहै॥ १४८॥ नामकेअधारज्ञानध्यानभक्तिभावचावविरतिविचित्रप्रयोगहैंविचारिए
कर्मसर्मधर्मसुखादनादखिवासुखरनामहींकेआसेरसुनैननननिहारिए॥ लोकपरलोकअविशोकैसोदथोकविसदकिनो
दनामतेंअवधारिए॥ युगलअनन्यसबसाधनसुसाध्यसारनाममहाराजध्यानधीपमध्यधारिए॥ १४९॥ सीतारामना
मकीविभूतिअविचिंत्यचारुव्यापिरहीनिखिलनिकेतनमझारहै॥ तातेंभिन्नतिहूँलोकनजरदखातनाहिसमुझिसुहीयह
रषातएकतारहै॥ कौनसाधरागद्वेषकीजिएविचारुनेकुएकुरघुनाथकोविलासअविकारहै॥ युगलअनन्यनामपूरनप
रखेपषिपायोप्रेमप्रवलप्रसारदस्वच्छसारहै॥ १५०॥ सवैया॥ नामकेआसविलासहुलासप्रकाशनिवासविभासठिकाने
धामकोवासविनासउदासहराससहीसबभाँतिविकाने॥ वामकेऊपरवामविभववरवभिहैंसंतअनेतसमाने॥ युग्मअन
न्यअनामसुनामरमैंसुदमंगलमानसमाने॥ १५१॥ नामउजागरनागरप्रानअधारसजीवनजीवनमेरो॥ आठहूँजामविसो

ग्रो॰ ४

॥२०॥

॥श्रीराम॥

तिनकेकरआकरंगउमंगनिहेरो॥ औरकोकौनगुलामवनेअवछायरहीइतिनामहेरो॥ पुगअनन्यकलामअरा
अतिजानिहैंनामकेनेहीअरेरो॥ १५२॥ घनाक्षरी॥ रामनामपरमपियूषपानकियेजिनतिनकोनभूषदूषहारूनद
वावहीं॥ जैसेमृगराजकेशारनशारनलघुजीवहोतफरिताकोशोकअकेनेकहूंनआवहीं॥ जैसरावनिकटनिवासीनीच
नरनरतऊरेपदरहितउमंगउपजावहीं॥ पुगलअनन्यएकअंसउपमाननामप्रवलप्रतापसमकहतंभावहीं॥ १५३॥ महा
राजमुकुटसिरोमनीसुधेशनामपरमपरत्वजौनजननजान्योजीयहै॥ नाकेभागअमलअघागसुरनरमुनिनायकप्रसंशत
हेमशेशशाधीयहै॥ जित्योजिनजालिममहानमनएकरसअतसकततलकारिपायोप्रानपीयहै॥ पुगलअनन्यखेहखर
कावहायोमातसागरकेपारप्यारधारनाअमीयहै॥ १५४॥ जाकेचित्तवीचसियारामअभिरामवरवचनपियूषप्रिय
ध्यानएकतारहै॥ भूलतनवैसहूंभुलाएभोरसोभमामकमननअखंडजैसेंसिंधुसिंधुधारहै॥ ऐसोसंतअमलअनंतग
नसंकुलितवागरागवागसुनिपाहनहूंपारहै॥ पुगलअनन्यसवसहसजिवायहेतसकृतसुभायशब्दसुधासारपारहै॥ १५५॥
सीतारामनामकेप्रतापसेंसमूहसुखसुलभसवैक्षसानकूलसमसेरंए॥ जानिकप्रमोदमोदमोदमंजमुकुतानखानप्रानधनवारि
सुधास्वादुसारजेरंए॥

॥नामनें॥

॥श्रीराम॥

जैतेकछुसाश्रुतीनोतनमेंविराजमानतेतेसवनामकेउमंगमेंभ्रमेरए ॥ जुगलअनन्यअमहानिधिचरचाहिकीजिनभू
लिहूंप्रमाहवसध्येरए ॥ १५६ ॥ हायरैनरोजनामरूपमाधुरीमगनगगनसमानसुभज्ञानकोसमारए ॥ रोयवनविकलपुका
रिपरेमसप्रानप्रीतमप्रवीनछविछावनीछवारए ॥ मूलतलतीनविपरीतभावपीनहीनरहसनिहारिनैनहूरहींमवारए ॥
॥२१॥ जुगलअनन्यलोकजुगलविनोहतुच्छछायासममानिसीसनामहीनवारए ॥ १५७ ॥ नामहींकोवलव्यवधानविनाध्यावे
गावेलोकनवतावोसिषलावेचित्तचारुको ॥ औरविस्वासवहवावोदुपदेषज्ञानिमानिकेप्रतीतिहैउतारभावभारुको ॥
वासनामलीनपापपीनेमनफंसोगसोरसोवसोनामज्ञामग्रामवीचहारुको ॥ जुगलअनन्यचाहेकोउवेकभेकेतउउ
रमैंनभूलिअकुलारएविचारुको ॥ १५८ ॥ सवैया ॥ अपनेमनमेंछकिकेरहिएरहिएसहिएकहिएनकभी ॥ टपनेमठपा ॥२१॥
पेकेप्रेममनीरखिएतवहींसुखछेमअभी ॥ वपनेसैनसीससुसिद्धकोउजवनौंलखेसपनेसोसभी ॥ तपनेमैंमज्ञास
हीयुगमभैनपरनामसमेतहमेससभी ॥ १५९ ॥ उजागरराहअहाहअचाहसुसाहनसाहनकोनिजनामैं ॥ नागरनाहनवी
ननिगाहउछाहवटेजेहिवीचललामैं ॥ आहरगाहअपासरसैनरआगरपैठिगुहेमनिदामैं ॥ जुगलअनन्यसुकागरकीरकोना
गुजहानहींत्यागिअरामैं ॥ १६० ॥

॥ श्रीराम ॥

चिंतामनिहूंकोचिंतामनीनामकामधेनुदेवद्रुमअमितसमानगुनवेदवद॥ चिद्घनरूपमनमतिगतिपारपरिपूरनउदाराहरहा
रसेवेद्यासद॥ करुनानिधानसुषानप्रानैकेप्रानवारकवैनवरतहरैंकोटिगद॥ प्रगलअनन्यस्वच्छसहजस्वतंत्रसद्ज्ञानयो
गभक्तिभावरसजसस्वादुहद॥१६१॥ सवैया॥ नामहींकेरंगरासिकीछीटलषेपापसरीसवलोकअलोकन॥ जानिहैंभेदविवे
कीकोउजेमरमनिजनाममेंलीनविशोकन॥ देखियेदेषिउघारिमलाखिलावागविचित्रसुयोगविलोकन॥ प्रेमअनन्यनखो
वोवथारिनफेरिमिलैनसमप्रसुषपोकन॥१६२॥ चित्तलगायकेनामरटानअटामवांधयकराचितभूले॥ चित्तविसारिकेखट
सहेविनावास्तआसंतहिर्सकवूले॥ हित्तअनूपमआपनोवूझिएछाडिकेज्ञानगरूरविसूले॥ प्रेमअनन्यअसोचरहारसनानि
तनामवसिषजाकूले॥१६३॥ देखीसुनीसववातभलीविधिनामसनैंविनाछलछानी॥ देखीप्रपंचपनोजितहींतितसत्यकीरीति
नेनकुलरवानी॥ देखीहसाहिलधारिकेहैंसववातनेतवनिकेवडज्ञानी॥ प्रेमअनन्यउपाधिसभीसुषदायकनामसनेहसुवानी॥
१६४॥ पठनालिखनाव्यवहारवजारविकारविहारअसारविचारत॥ चढनाजवहारकेउपरैहतवसीससोंचकोकोननिहारत॥
गठनागुनभूषनहियसहीरतउक्तिवातविनोदनधारत॥ प्रेमअनन्यजहानकिकोठरीसेंकढनाजोहेमसहींजारत॥१६५॥

॥ नामने० ॥

अन्यरीत ॥ चटकिचटकिचितचोरनचौस्त्रचारु छूटकिछूटकिछकिछाकतसुरंगहै ॥ खटकिखटकिखतछाउतनैनकुमनमट
किमटकिमीतमोहतउमंगहै ॥ रटकिरटकिचैनचातकचवारुचारुभटकिभटकिजकिनागतसुरंगहै ॥ घटकिघटकिरसपी
वतसुनामरूपअटकिअटकिरिझ्योप्रीतमउमंगहै ॥ ९६ ॥ देखतदेखतदेखिदुस्पादुखद्वेषहुरंगकुरंगगुमानी ॥ पषतपषत
पेषिपिप्रापदेप्रेमप्रकाशप्रवाहसमानी ॥ लेषतलेषतलेषकियासवसारसुनामहिएरुचिठानी ॥ छैकतछैंकतछैंकिलि
प्योचितपायपराचितरस्कैकहानी ॥ ९७ ॥ अन्य० ॥ रामनामअवलम्बखेऊध्यानधारिधीप्रपिप्रपागपरसप्रतस्सप्रेमपागिए ॥ सो
वतचितापावहुजननमहितापाहितअहितवनापातातसावधाननजागिए ॥ लोकलाजसाजदगावाजखहलाजसबजानिभूठकू
टमूटमदमारत्यागिए ॥ युगलअनन्यनामव्यापकेसनेहसाथहाथसबवारहींतेधोपरामरागिए ॥ ९८ ॥ ऊठतबैठतनामर
रामतमूटमरोमरोखदहजारों ॥ हेरहउत्तमरीतिपुनीतप्रतीतिसमेतहिएदृढधारो ॥ जामतसोवतभूलोनहींनिजनामहींतें
नितआतमतारो ॥ युग्मअनन्यवसोसरजूतटहैवरवातनकीजिएमारो ॥ ९९ ॥ हरिएनामनरेशकिवांपेरशात्रसषजनह
नकोजानी ॥ जानीजलसजरूरहैमदमाननमरोरगवारगमानी ॥ मानीगरूरगरेपलमैंजलमेंपलमेंनहिमोहप्रमानी ॥ ॥

॥श्रीराम॥

को
२ग

मानीअनन्यहिएमैसहासुषदायकरामउदारसुहानी ॥ १७० ॥ जारिएजालजवालजमातकोकालकरालकसालवि
लोको ॥ लोकोससोकसमूहसभीसुषसंपतिस्वादविषादकोथोको ॥ थोकोउपाधिअवाधविचारिकेकभिएसंतस्वभा
वैनोको ॥ मोकोनिहायतनीकोलगैनिजनाँमसुराममहामुदओको ॥ १७१ ॥ भींजीसजींउरभींसुरभींजुलसैंअतिऔंडसु
रसैंसोहैं ॥ सोहैंललामुखचंदवपोलकहैंछिटकीकलकंठलोमोहैं ॥ मोहैंमनोहरतामनकोतनकोनहिमानअमानलसो
हैं ॥ सोहैंअनन्यनकेदृगमैंहिलमैंअनुरागमहारसहौं ॥ १७२ ॥ हालीमोहालीकहैंकछहूंपरप्रीतिपुनीतवधीवनमाली
मालीभिसालफिरोवरवागसुसीवनेहहुसुगंधसुमाली ॥ मालीमिलापविनासजनीउरतायकलामकसोहनलाली ॥
लालीललामललाकीभलाजवचित्तचढेतवहींखुशहाली ॥ १७३ ॥ गारीगोहारगँवारसुनीमनमोहकोअंतनआवतबा
री ॥ वारीगईसतसंगतिकीजिनकेमिलनसुहसामतवारी ॥ वारीसियावरकीसजनीरजनीदिनशोकसुनेहसम्हारी ॥ हारीन
जापशकेकतहूंवरुलाषनवारप्रचारिदैगारी ॥ १७४ ॥ जानकीनाथअनाथसहायकहाथलिएधनुतीरमनोरम ॥ सुंदर
रूपअनूपसहाअवलोकिएभावसमेतविनागम ॥ रागविरागस्वरूपहैदृगनिसाजिएमानसमांभमजासम ॥ पुगमअनन्य

॥नामप्र०॥

म

सुनामप्रतापपैसँत्र्याठहूजामसुवाजतहैवँम॥१७५॥ नामसुधाछवनामनिरंतरजापिएपीजिएचावचढाए॥ नामम
हाथनपायविभववलपाइएप्रेमप्रवीनपढाए॥ औरसैंकामननातकछूकलपांतलैवासनाबीजकढाए॥ युगमत्र्यनन्यपत्र
भीतत्र्यजयाहिपहायगोनामसनेहवढाए॥१७६॥ साधनसिद्धसमूहसहीपरत्र्यापतत्र्यागसमेतसम्हारन॥ दूषिएद
षिपैमारिभलाजगकोनउधारकियोवरवारन॥ नामप्रतापहिएगहिकैदृढसंतत्र्यनंतभएतमतारन॥ युगमत्र्यनन्यप्रप
न्नसहासोइजोनजेपनिजनामत्र्यवारन॥१७७॥ मोहमहापावविषवहूकूडजोवहविचारविसारद॥ पारनपाय[illegible]सकेवु
धिवंतवकेवहुवारविनारुचिहारद॥ जानत्र्यजानसुमध्यसुधातेहिचाषिएभाषिएरागनीनारद॥ युगमत्र्यनन्यसुध
धन्यसहासुखप्रीतिपगीजेहिकीपदपारद॥१७८॥ त्र्यनं०॥ रामनामतारकप्रकाशनिधिकोटिभानुकलाकरत्र्यमित
रूसानुवलिजाइए॥ रोगसोगभोगभवविषमवियोगज्वरजेरवेरेवातहीमेंसांचपहिचानिए॥ नामहीकेरटतकटततमपुं
जमेंजुमूरतिमधुरमनत्र्यनायासत्र्यानिए॥ युगलत्र्यनन्यजपिजीहमुदमोदनितवढतविशेषसवप्रसंकहूंनरांगिए॥
१७९॥ रतरकाररसराहसरेसमरागरमनरंगीलीरीतितरंगरसपाइए॥ रूपछविभूपदगाहरसपरतप्रियपलकहरतहोशकोश
विसराइए॥

मधुरमकारकेउचारहीसेमोहमहुमरमनरममीतप्रीतपनछाइए ॥ पुगलअनन्यपुगावरनयिहारवरसहनविचित्रैरनग्रैनगन
गाइए ॥ १२० ॥ शोकजोकसहितरहितलोकहैलोकहिएहिरसहजारखारिनामप्यारधारिए ॥ चौकचित्तवीचमीतविगतअकीचरस
सहजस्वतंत्रतामेंवैठिकेविचारिए ॥ लोकिकीप्रपंचमेंचरंचहूनउचनीचवूभिएविमेषनेनआपनेनिहारिए ॥ पुगलअनन्य
धोकनामकोलगाएराजचोजषोजजिकरनेनकहूंविसारिए ॥ १२१ ॥ सीतारामसोहनसुषेननामनेहकिएकारककलेश
वाकमानसनरहैगो ॥ सांचोश्रुतिसंतवरवेनअैनचैननामहैसोदुखदारुनदवारवनदहेगो ॥ लोकपरलोकमेंविशोक
मोहथोकपायहैवतामुनीशकोउफंदकोनगहैगो ॥ पुगलअनन्यकाहूचीजकीनकमीकछुलाखनललामलाहअ
नायासलहैगो ॥ १२२ ॥ एकछनरतनसमहूहैसेविशेषवूझिएविमलविचारविनकैसहूनषोइए ॥ दुखुदि
व्यनेनसेंखजानास्वच्छस्वांससुभदैवहुछत्रेभमावीजवरवोइए ॥ महासावधाननामपरमपियूषपानकीजिएविहाय
व्यवधानसुखसोइए ॥ पुगलअनन्यभक्तितिगुनतमामतमत्यागिकेउछारउरउज्वलसेजोइए ॥ १२३ ॥ कासकेहोंको
दिनकलेशहरुपसेराजसोजकोनअंतसंतहीजिएसुहाइमम ॥ जहांजहांजाउहोततहांतहांदाहछोहकारनकोउकहू
धूरकेरेकौनगम ॥

चौदहूँभुवनबीचभीबनीचखींबकीचकेटेवडभागीकाउएकरामरागीसम॥युगलअनन्यजानकीशभक्तिपायप्रीति
॥श्रीराम॥ निखिलनिकाईकोनिधानहिदेख्येंनहम॥१२४॥अरेमनमूढारूढतत्वपरहूँतेपररामअभिरामनामजपतनआलसी॥गोरे
कटुकठिनकरालकालफांसपरैप्यारेरोजवाहतधीरोमेरोमहालसी॥डरेनकुचैनचैननासननिकासिवेसेंअरेविष
॥२४॥ बीजवाइरवहनकोलालसी॥युगलअनन्यअसीमतिपैधिकारसंतकहतपुकारतउनामसनटारसी॥१२५॥रामना
मकोकहायकैरेआसफांसतीनगुननसमेतसुरनागनरसिद्धकी॥पाइहैप्रमोदनाविनोदतिहूंलोकबीचउडतअकास
भूमिपरैरीतिगिद्धकी॥कोटिनकलेशकरिकिंचितसरेजोसुखतउतुखउषसमबूझिएनिषिद्धकी॥युगलअनन्य
नाममहामोदधामगुनसुधासारसीमस्वच्छसकलसमिद्धकी॥१२६॥नाममहरूववसायसजिएसनेहगायमांपहां
पलायपापपूजिएप्रवीनको॥आमखाम[illegible]हासरसरासमहींकोजानिमानिठानिएसुप्रीतिरीतिदिषदुरवीनको॥ ॥२४॥
तामरससरसविकासिहैविलासबागभालभलभागपरकासिहैछवीनको॥युगलअनन्यकामस्यामकीकुगंधबंध
भूलिएननेहरचिरहफनतीनको॥१२७॥सवैया॥नामकीडोरीतनापमलीविधिध्याइएरूपअनूपरंगीलो॥ ॥ ॥

॥श्रीराम॥

वांमकोपंथप्रपंचपग्योसवजोहिएनेकहूंनांहिकसीलो॥ रामकेरारनकीकलकांतिनिहारिएनैनैंवीचवसीलो॥
युग्मअनन्यसुधामवसेसुषआपहींआपमिलेचटकीलो॥१२८॥अन्य॥रामनामअभिरामरसनाउचारिरस
धारिचित्तवारिमोजमोहमांझमानिहै॥ प्रेमनेम[illegible]संगरंगलागिकेउमंगकंठमध्यमाअनूपरूपराव्हस्वादुजानि
है॥ परानंदद्वंदतेविहानलीनहोयवीचकीचमीचलेशहूंननामध्यानठानिहै॥ कालकलिकालेसैंरहितनामिधाम
पापयुगलअनन्यधन्यनाहनेहमानिए॥१२९॥सीतारामनामपोतपरमप्रतापपरपावनअलोलमजबूतसिरताज
तर॥ अनायासअघमअसमगामतमरूपकूपसेनिकासिपलपावमांझपारकर॥ चाहिएसुचित्तहोयचटिवोचला
कपनछोडिकेछलीनआसमानिकेअधिकडर॥ युगलअनन्यऐसोअबलजहाजपायचढतनजौनतौनसूके ॥नामने०॥
रसोआनखर॥१३०॥रामनामधामहिलमिंवीवमध्यबारिएजूहारिएननेकुआकअखिलसमाजमें॥ महामुनिगु
नीगननीयगीर्वानगुरुगावतगुनेशगाननामरंगराजमें॥ जानकीरमनरीझिरहतनिहारिनैननचैनचितपायउमं
गायरसराजमें॥ युगलअनन्यवातविसद्दविचारयागवद्दतभद्दसहोतजगतकुसाजमें॥१३१॥मेरीमतिमलिन

महाहिमलमलमिलिमानतमधुरमोहमाउरमनायके॥ हरीहिरएवीचकीचकालिमाकषायकुलेछरिरहीसंतत
नफेरीफिरीधायके॥ चेरीकहवायआयजगतेननेरीनकुरहतवेहरीहिसिवहतअघायके॥ जुगलअनन्यनामते
रीहैंशरनअवचाहेंजवतवअपनावोहगलायके॥१२०॥ जेतेलोकवेदवीचसाधनवहुतवुधकियोमैंभलीप्र
कारत्यागतिन्हेंसरकार॥ सपनेहूंमाहिंलायलोचननहेरवोंभलिफूलिरह्योचित्तनामसुगुनपरत्वप्यार॥ काहूकी
नसंकलेशकरिएकहापिहटनाममहाराजकोभरोसनिरदोसयार॥ जुगलअनन्यअविलोकठीकनीकमतमा
निकेनहोतअवऔरपासनीचनार॥१२३॥ नामहींकीप्रीतिपरतीतिपटुनामहींकीपरीउभयभांतिनहींछूटी
हैजतनजाल॥ नामकरुनेशआसअचलसुचित्तहोयसोयरह्योखोयविषवासनाविकलवाल॥ चाहउत्साह
वाहनामहींकोकृपालसंगरंगमनअंगअंगहूसरोकलंककाल॥ जुगलअनन्यअंकसीससततग्रहसंततहियोलियोभाल
धारिविभिकेप्रमोहमाल॥१२४॥ धोषेंहीमेंधसतखसतखलखेहखायलायहेरखलायनअघायमूढएकवार॥
रोषेंहीमेंरहतनगहतगुनेशगुरुगहरगंभीरज्ञानउगारिकेविषयविकार॥ कोषेंहींमेंकियोप्रतिपालकोशलेशतोनवात
हीविसारिदियोअधमनिलज्जख्वार॥

॥श्रीराम॥

युगलअनन्यननेआपकोअनोखेहीमेंमनरखमिजाजजुतमोहिरह्योमोहमार॥१२५॥विषयपवसकिएकुलकरननिरोधको
नकरननिरोधहींतेंमानसनिरोधहै॥मानसनिरोधहींतेंसुबुधिनिरोधश्रुतिसंमतअनएमतिआतमसुबोधहै॥अहंरूप
आतमतेंप्रकृतिसुकार्य्येंरहतातेंपुरुषपरीतिअविरोधहै॥युगलअनन्ययामेंभावयुगजानिलेहुधारनापरत्वस्वच्छ
सारसप्रबोधहै॥१२६॥सवैया॥हायविषयविषपापपछ्यायपचायसकोनहिंमूढमलायन॥घमत्तछापलछोरनिसा
मधिमोहनिसादुखबीजबलायन॥साधनऔषधमंत्रकिएहिएओरहूंआधिबढ्योविषलायन॥युग्मअनन्यअसा
धकुरोगनसेजबचाखिएरामरसायन॥१२७॥साधनसिद्धसमूहसहीपरनामविनासबभूपसारो॥नामसमाश्रय
जीवनकोनहिंभावतलोकअशोकविहारो॥आठहूंजामरहेमदमस्तविलोकतनामछटाअनिपारो॥युग्मअनन्य ॥नामनें०॥
सुनामप्रतापसेंबाजिरह्योउरव्योमनगारो॥१२८॥अन्य०॥सीतारामनामसेंसनेहमनमेरोनित्तकीजिएसनेहसा चेन
वधानजगजालतजि॥ऐसोअभिरामस्वच्छमानुषबपुषपापकीजबरवारमतअसतसमाजमजि॥संतरसवंत
सुभसंगतिसेंदेवकरिवारएप्रबोधअविरोधसमसाजसजि॥युगलअनन्यलोकशोकसेंनकामकछुहिव्यगनग्रामधाम
सरएसुजापजजि॥ पि

१९९॥ नाम महाराज के शरन भए जौन जन तौन तीन गुन तें अतीत दृग देषिए॥ सत्य शांति सील सत्व सुधता सनेह शौच
साजन समीपता सुभाग अवरेषिए॥ ऐसे मोह विभ्रम को न मग न विचित्र नाम रत्न नैं अपरोक्ष लाह लेषिए॥ युगल अन
न्य संत संग आरसी सवीच सहज स्वरूप अवलोकनो विसेषिए॥ २००॥ सवैया॥ जानकी जीवन नाम पियूष परा रति स्वाद स
मेत सुपीजे॥ ध्यान की युक्ति कृपाल गुरू सन सीषि भली विधि मान समीजे॥ मान की मौज मैं नाहि न फाक छु कल्व सफा
अपमान मैं कीजे॥ युग्म अनन्य अजानकी संगति भूलि हूं चित्त मैं आसन दीजे॥ २०१॥ अन्य०॥ जानकी रमन जू की कीर
ति कलाप ताप दाप दलिवे को कोटि कालाकर सम है॥ ताहि को हमेश सासा जु सरस अवेश जियगारसौं अखंड एकरस त्या
गित महै॥ सीताराम नाम मोद धाम ही को आसपास धारि के सदैव छोडि है हौं मन गम है॥ युगल अनन्य धाम वास अ
विचलक रि परिहरि है मन को समुझि अधम है॥ २०२॥ रात दिन वात उत्पात घात पात त्यागि पागि राम नाम प्रेम नेम छवि छा
कि हौं॥ तात मात भ्रात कुल गात सें सनेह तोडि जोडि जग जीवन सु प्रेम प्रन पाकि हौं॥ प्रात सांझ नाम अनुराग राग रागा गाए
हाए हर साहिताए हिसि दूसरी नताकि हौं॥ युगल अनन्य करा मात सब विस्व आतपारु ए सुनाम हीं रत्न छवि भ्रांकि हौं॥ २०३॥

॥श्रीराम॥

नाममहामसचाखिमहाउरराषिकृपालकोआसहेमेस॥ कामकलंकविहायभलीविधिगाइहैनामसुकीरतिवेस॥
आठहूंजामप्रकासनिरंतरनेहनिहारिहौंस्वच्छसुदेस॥ युग्मअनन्यनशोकरतीहाउलोककेआसकोत्यागिविसेशे
२०४॥ काहूकिसंगतिस्वप्नहूंमांहिनकीजिएहैकुसमौदुखदायक॥ होयएकांतमजोमियकांतसमर्पिकेसीससुस्वामिसहा
यक॥ कामनाकोशाकटायसदावसिएपदपंकजवीचसुभायक॥ युग्मअनन्यसुनामबिनासबसाधनवाधनजानिएमाय
क॥२०५॥ नामबिनावकवादसमानसुज्ञानऔयोगविवेककीगाथा॥ होतनहीभ्रमहानकदाचितरीझतहैंनकभूरघु
नाथा॥ होयसचेतनिकेतनिरंतरवासकरो~~स~~अपनेसुषसाथा॥ युग्मअनन्यसियावरकीकरुनातेपियोसरजूप्रियपाथ ॥नामने०॥
२०६॥अन्यग॥ मालाकेफिरावतमेंआलसविसेषउरलावतअभागवसमहामनमूढहै॥ कालाभसुखहोयताकोलोकप
रलोकमांझवांझकेसमानवाकोखेदकलिकूटहै॥ तालाताकेभालमेंउपाधिव्याधिआधिनकोजडोरसएकजोन
खुलतनगूढहै॥ युगलअनन्यरामनामअभिरामआलाहोलतरसालसेंविमुखवैलचूढहैं॥२०७॥ महाराजनाम
केप्रभावहीतेकाजकुलराजसुभसरससमाजसतसिद्धिहै॥ सीतारामनामसोइधामप्रतिकासपायपावनपरमपातकीशलव्यैरिद्धिहै॥

सीताराम नाम काम भूरुह सुधेनु सुर चिंतामनि चारु रंक सौंपत सुनिद्धि है ॥ युगलअनन्य ऐसो नाम सीताराम
हिय भव्य नाम भंडार विना कौन को समिद्धि है ॥ १०८ ॥ मेरो मन नीच कीच सानत सुजोर जुत हाय ऐचर जनामीसिं
धुनानि हारई ॥ फिरि फिरि घायल घरीक नाम सुचैन ऐन मैन सैं सनेह संत शारन विसारई ॥ सीताराम परम परेश प्रभु
ताई सुनि धारत न धीय ग्राम ज्ञान गुन गारई ॥ युगलअनन्य ऐहे हाय कककेल म पाँच आँच सेव चाय निज आतमा
नतारई ॥ १०९ ॥ संतन सुवाक सुनि मानत न मूढ है ॥ स्वान पूँछ गाँठि सन न सहस सुद्दढ क्रूर कायर कुबैन धीय धारत
न गूढ है ॥ जायो चाहै पार पोत आश्रुत नेलत नेकु विगत विवेक टेक आपनी निरूढ है ॥ गेट गीत ज्ञान लोभ लालच
निधान कस्व के आन तान कृत्य हीन वै लवूट है ॥ युगलअनन्य मानै नाम नरतीकगन संतन सुवाक सुनि मानत
न मूढ है ॥ ११० ॥ अवध अचिंत्य नाम रूप अनवधि प्रीति कासी शी कमनीय कल कीरति कृपाल की ॥ मथुरा मनो ज
मदूर ललन महल सुचिह्ल अवंतिका अनूपम रसाल की ॥ द्वारिका दुरस्त हिल कांत कांति कौ बीचारु हरित
हेम सहरि द्वार मोह माल की ॥ युगलअनन्य संत सरस सनेही संग रंग गैस कै मैं तसातो परीर छुलाल की ॥ १११ ॥

॥श्रीराम॥

गंगागुनगारुवग़ररसैंसमेतगानगंऽकीगुलावज्ञानआवदृदधारहैं॥गिरागतिभीनलीनरामरूपरागरविततनपार.गु
नतारहितसुतारहै॥सरजूसनेहस्वादमंदाकिनीपाइदिलदिलदारविरजाविचित्रप्रेमप्यारहै॥युगलअनन्यसुचि
सरितसमूहसंतसंततसमीपमैंनिवासवारवारहै॥२१२॥जानकीजीवनजूकीमधुररहस्यरंगअमलउमंगसंगअंगअं
गध्यानहै॥कहूंवागविमलविहाररसकेलिकलरासरासिसुनसनिवासप्रीतिप्रानहै॥कतहूंसुकुंजमनमोहनसुकूलना
दिगाननानविसदविनोदसदसानहै॥युगलअनन्यचित्तअचलसुथलकरिध्याइएसुधीपरसरहसप्रधानहै॥२१३
सीतारामनाममहाराजभुवनेशभलसचिवअगुनगुनखानदगदिखिए॥विमलविवेकवोधदमकदिवानसमसुभग ॥नामने०॥
सुगुनकामदारगुनपेषिए॥नेमधर्मतीरथव्रतादिकसमूहप्रजापावनप्रपंचसैंविलगलीनलेखिए॥युगलअनन्य
आसकीजिएनरूपेशामनिरंकगनिकारनकृतज्ञअवरेखिए॥२१४॥सवैया॥भीतिभुलायभुलायमहामनिमानससा
मसनेहिनकेकर॥प्रीतिभुलायँप्रियाकुलसायहमेशविसेषवहीघर॥चीतिनिलायसरीतिगहोअविनीतसुपंथम
योनविनाजर॥युगमअनन्यसनेहसमाधिसोलायकेआपकोमौजलहोवर॥२१५॥अलवलवकतछकतछलहलचल
चलदलपरनकरनकजसलघले॥

२ प्रवीन

॥श्रीराम॥

॥२५॥

कलमलकहरकनककरतवखलखललअललसमसुगमअकलबल॥ तलफलरहतगहतनअचलपलअफल
अनलपहूंचहतअजलहल॥ युगलव़सललसनअसलभगलगलगरललसगतजवअजवसमकलभल॥ २९६॥ रैनरंग
रूपचैनचयमैंविचित्रहैनव़ाहीअंतरैननैनलागिगयोस्यामसैं॥ मैनगैनमाझमनगव़नकियोविसेषिपापदूराविश्राद
सुवससुषधामसैं॥ पैनवैनसंतसुचिश्रव़नसुनायस्वादसतसरसायकामभिस्योखरखामसैं॥ युगलअनन्यसैनस
ज्योसुसमाधिव्याधिविगौविषादयादसादगुनग्रामसैं॥ २९७॥ परमपियूषपदप्रागटपुरानप्रियपाव़नप्रमानपूज्यदि
व्यहरसायके॥ पलपलपरप्रेमपूरनपरत्वपनपाराव़ारप्रबलप्रतीतपरसायके॥ पानिपप्रचुरप्रातपांव़सप्रसिद्धसिद्ध
पारसतैंविहीनपांतिकांतिसरसायके॥ युगलअनन्यपागपरमप्रबोधप्रौढसद्गुरुसाहेबसुसौंप्योहरसायके॥ २९८॥
वामासैंसनेहसाजिसामासुषधामाभजितजिरामनामाअभिरामाअसोमंदहै॥ निमकहरामाचामजामाकोपहि
रितमतामसतमामामाझमगनसुछंदहै॥ अगुनअकामखरखामावसुजामाजामैंतामैंविसरामामानिमोद्योफंसि
फंदहै॥ युगलअनन्यगुनग्रामास्यामास्यामामांहकियोनसुरतिपतिसस्योहुलदुंदहै॥ २९९॥ सीतारामनामआठजाम

॥२८॥

॥श्रीराम॥

मोहधामकामकोहनिसुरामहैनहारजापमाधिए॥सुरूपअसनवरवचनअमनकरिहोयकेएकांतशांतनामहींअरा
धिए॥छांडिकेकुटेवनेवमेवलेवदेवलोकशोकसैंविहीनराजगारनेहनाधिए॥युगलअनन्यसावधानअवधानवि
नाहजिएअपासगतमोहवाधवाधिए॥२२०॥रामनामविमलहविनाहवीजध्येयधुनिश्रवनसुजापसुनिसुधासास्वादि
ए॥वारवारउरउमगायशब्दस्वादसुखलीजिएललामआमवासनासुनाखिए॥जागिएविसेषदेषपेषहूंनिमेषमेष
अधिकविहायहायकायममभाषिए॥युगलअनन्यसुविशारनसुहागसुभपाइएप्रकाशआसखासदृढराखिए॥२२१
होनोहींनमांझपीनसुमतसमूहसुषसाधकसुधेसनामरटनअखंडहीं॥सोनोज्योंसुगंधबुधविद्याविज्ञबूझवीच
अंधनैंलखतभेदखेदहेहहेडहीं॥होनोतीनो[illegible]कालनावराटिकासुलाहनेकटेकअविवेकबधावारनछमंडहीं ॥नामने॰॥
युगलअनन्यरोनोकोटिनकलपलगिहोतनाउधारफिरैंमूढअंडखंडहीं॥२२२॥फेंकोफलअफलसमानकालकूट
रूपछैकोछलकुपथंकलंकपंकतंकहीं॥टेकोनाकुटेकअविवेकिनमिलापकरिहोयवाहसाहचित्तकीजिएनरं
कहीं॥एकोचीजकिएतजवीजमोहवीजनाहिजानकीरमननामसांचोअविशंकहीं॥युगलअनन्यनेकोसाजिएसनेहस्यच्छ

अच्छमेप्रतच्छभानहोयऽसामत्रंअकहीं ॥ २२३ ॥ वोरएनपावपलनामसुमिरनमलऔसरविचारिमलनासिएसु
वेगहीं ॥ जोहिएनकालविकरालभालाजिरह्योसोरएअचेतकहाकौनभौननेगहीं ॥ धोरएसुचित्तपरसंतसंगसा
धुनायनेहनीरसाथहींरकादिएससेगहीं ॥ पुगलअनन्यानित्यवोरएविचारवीजहोयवीचलाफिएमुलाह~~प्रद~~फलपैंगहीं ॥
२२४ ॥ ज्ञानभक्तिविरतिप्रतापतापहारीसोचओचसेंसहितकलीकालकूरकैहियो ॥ दंभवादविविधिविधानमानदनलोभ
रोगसोगलायकेसुयेगसक्तिलैलियो ॥ पेषिएप्रतच्छसारनेकहूंकटतनाहिकेवलकलेसदरपेशहोयहेहियो ॥ पुगलअ
नन्यकृपाकलितअपारनिधिनामअवलंवविनाकतहुनजपवियो ॥ २२५ ॥ रसनासुतंत्रपायमंत्रतंत्रयंत्रत्यागिकाहे
नरटतअभिरामनामप्रेमसें ॥ पूंछिएसुसंतसंगसरससमीपजायजीवनमुदितदीपमेदनितनेमसें ॥ होयकेअचाहना
हचाहचित्तवीचलायतारएसदैक्षमनआपनोसुहेमसें ॥ पुगलअनन्यअनुरागवागविलेलवमिलेमहवूवएकरस र
योगछेमसें ॥ २२६ ॥ सीतारामसरससुध्यानलसितस्वच्छमानसीसमेतनामकीजिएउमंगसें ॥ काहूहैतजानेजानि
हीजिएहिवानोहिलपिलकेहमसअसपारएसुरंगसें ॥ नानामतवादकेविवादवीचचैनननेककैसहूंनहोयइहजानिएसुसंगसें ॥

ॐ

युगल अनन्य नेह निधी अंग अंग मांहि डुबि एवि हाय पहाय पर चित कुदे गहैं ॥ २२७ ॥ जानि बूझि काल कराल भाल फेरि मूढ सो वृत अचिंत्य ता
श्रीराम॥ के बुद्धि वीच खाके है ॥ स्वान सूकर राह जगत ते कीट वीट भुक्त तिन हूं सें कोटि भांति सान पाके है ॥ रूप कहौं का सेख इरवालिक विमुख रूप पावे जौन प
लपल ले पर हूं न चाके है ॥ युगल अनन्य सुधा सिंधु सर्वेश नाम रटे न अभागव स आल सत लाके है ॥ २२८ ॥ व्यास वाल्मीकि कि कल कल सखुव नेश शासन क
उमेश राम नाम के प्रभावते ॥ पापी काल व्याल सें विहीन पीन प्रेम पद परम प्रवीन पय ध्ये परि व्यभावते ॥ सोई सत नाम कलिकाल में सुसंत सव गोप गुह्य
प्रगट वतापी अनुभावते ॥ युगल अनन्य वात दूसरी समान ब्रात मानिए अखंड नाम जापि एसु भावते ॥ २२९ ॥ हा पवका नो अजूवगं वावत गाव
त गीत अलाप कताई ॥ खाप्रम हाम इमोह कुमोह कछ्ठाय रहयो विष आतमताई ॥ जाय जवाल सनेह स जावत छोडत वोध विहार मताई ॥ युगम
अनन्य भजो जिय जानकी जीवन नाम सहा सुख हाई ॥ २३० ॥ नाम सजीवनि मूरि मनोहर खाए विनाम्रत प्रान न जागे ॥ संत सुसंग सजाय वि ॥नामने·
नाम्रम भाव नाम्रतम प्रान न भोगे ॥ धाम सिरोमनि सेए विना सिय वल्लभ रूप सुपागन पागे ॥ युगम अनन्य निचोरि सुपोथिन वेन भन्यो कछु से षन
आगे ॥ २३१ ॥ भोग अशेष सुसोक स हास मुभे विन स्वाद सराहत मूरख ॥ योग वियोग व टावत वेसक है दुखदारु नरूप कुपूरख ॥ जानकी जीवन ना
म सुधा घन छांह उछाह विधायक सूरख ॥ युगम अनन्य उदार सिरोमनि संत मिले मुद मानस तूरख ॥ २३२ ॥ राजिव लोचन सोच विमोचन नाम उचारत
मो जह जारे ॥

प्रीतिप्रतीतिसजाएभलीविधिपाइएप्रेमप्रवाहसजारो ॥ फेरिनहींखटकातिलहूंभरिवासवनेवरवीचवजारो ॥ युग्मअनन्यसुनामकृपावस
आकसमातनशापअजारो ॥ २३३ ॥ कोटिनग्रंथसुपंथकोसुनसंमतसारसुनामउचारन ॥ देषिएदेषिछबूझिरसोहिधिहेतमरूपसमानउ
जारन ॥ मानिएकाहूकोरंचकवातनठानिएआपनीरीतिसुचारन ॥ युग्मअनन्यजहानजलाएकेलीजिएलाहगुनाहगुजारन ॥ २३४ ॥ प्रेममईम
हिएनिसिवासरपीजिएप्राननिछावरिकीन्हें ॥ छेमछईभलीभूमिप्रभापतिपोषनीपाइएलोभसुलीन्हें ॥ हेमहदीपटपीतमनोहरहेरिएहोशशि
राएप्रवीने ॥ युग्मअनन्यअनेमइसाहुतिहियदसानिजनेननवीने ॥ २३४ ॥ अन्यरीत ॥ महाराजमुकुटमनीन्द्रअवधेशनामललितललामको
दिवंशभानुधामसम ॥ मंत्रनकोईशछत्रमकुटसमानशीशसोहैसर्वोपरनरारैलेशोइशागम ॥ जाकीसत्तापापरस्वरहीनहूंवरनमालच
टतविश्रामवर्रमनित्यनाहरम ॥ युगलअनन्यअवलोकिएसुनामगनमहिमाअनंतरटलाइएवहरहम ॥ २३५ ॥ महाराजनामहीकीकलित
कृपाकटाक्षपाएप्रेमछेमहेमभफलकसमानतन ॥ होतहैविसेषरागद्वेषवेषसषपरपावनपरममोहलीनभींपीनमन ॥ अनायासआसदुर्वो
सरासिभासभवनासचहूंपासफेरिरहेनहीएछन ॥ युगलअनन्यकहाकीजिएनमीचचित्तवारवारताकोभरमाइहैविषाइवन ॥ २३६ ॥ पांच
तत्वप्रकृतिपचीसतीनगुनषटऊरमीविकारषटऔरजेतेदोषगन ॥ आंचनहींहेयसकैंतकैंसनमुखनाहिचित्तबुद्धिअहंकारचौथामहावीरमन ॥

कांचकेकिरिचवीचकैकानतोकोमिलीनफाइफाकरिहीजोहिव्यलीजेअनमोलधन॥युगलअनन्यपरानेइनामजापहींसेंमिटेहायमिलेआ
श्रीराम॥ पआयसतचितघन॥२३७॥शब्दसारनामधुनिधारिएगगनघननतनमनवुद्धिवत्तिइयकेविवेकयुत॥झीनहूंतेझीननाइसरससवार
मुनिआइचारपीछिलीविसारिएछलीनछुत॥अंतरंगरंगाहीमेंछाकिएविहायभ्रमवाहीरंगअंगसंगसाजिएसरीतिनुत॥युगलअनन्यराम
नामकेरटनकिएहोतहैसकलसुषसुलभनेररहुत॥२३८॥आसदुर्वासनाननराषिएकहापिनेकचाषिएसुनामसुधासारजोहस्वासमिल॥
ह्राससोसमस्तइवनरभूपजानोजियमानोनविशाषद्वेषहीनहोयमौजकिल॥चातुरीचलाकीरतउतकीहलाकीखाकीखाहिसखिराजकरिवा
कीअनुचितितिल॥युगलअनन्यछोडिकायरीकुचालकालसोंचोसरहोपरनसनमुखजाखोपिल॥२३९॥कीजिएकेवलनामहींकोसु
चिआसरोवासरोरैनसुधामम//दीजिएदाहइराजडुनीहिशिपीउसुहैछिखुलेनरहेगाम॥पीजिएप्रेमपियूषसुनामसनेहिनकेमुखसें ॥नामने०
भलहींरम॥युगमअनन्यपतीजिएवैननभूलिएनामसुधामकभीइम॥२४०॥नामसुधाकरसागरकोटिसमानप्रमानसुजानवषानत
ताहिकोसीकरकेलवलेससेंलोककइवप्रमोइप्रमानत॥शेशामहेशारमेशालखैंगतिदूसरोजीवअजानजानत॥युगमअनन्यविसा न
रिविभववलनामहींसेंनिजनातोपछानत॥२४१॥नामहींकीकरुनालवलेससेंहोतहजारकरोरमहामुद॥कामकषायरहेनकहींफिरि

श्रीराम॥
३१॥

मोहरूकोहकेरनजरातुर॥ आठहूंजामसुद्दामहींफेरिएसिघ्रनशविषवासनाकोछुर॥ पुग्मअनन्यअकामभएपरजानकीजी
वनआयमिलेखुर॥ १४२॥ नाकिएनामहींकोदिशिमेंदिसाहूसरीकोटि[illegible]रूसानुसोंआंकिए॥ आंकिएवैनसुसंततसिरोमनि
वेदपुरानप्रमानहुमांकिए॥ मांकिएचित्तलगापहिएनितसांवरी[illegible]स्मरतिवाचहींछांकिए॥ छांकिएलोभभुलायउभयमलने
हनिसोतसुपंथकोंनाकिए॥ १४३॥ मा~~नि~~रिएमानमनोजकोखोजकेओजसुनामहमेशविचारिए॥ चारिएश्रीसरजूतटमेंरतउत्तकी
वासनाबीजविदारिए॥ दारिएदामदगोहिलिठीकेरैनामसुजापविषेनहारिए॥ हारिएपुग्मअनन्यजहांनसेंआपनीमोत्तमलेच्छको
मारिए॥ १४४॥ जानकीजीवननामउदारसिरोमनिआसकिपाचहिए॥ दूसरोईशअनीशजहांलगिदीनकीआसनकोदहिए॥ छो
डिकेनीकेजहानजरूसस्वरूपमेंलीनमजाचहिए॥ पुग्मअनन्यसुकथपडेतउहीपकीबातनहीकहिए॥ १४५॥ चांदनीचौकअचौक
सहातितहींरहिएगहिएद्युतिदूनो॥ नाजनीनेहमईमदुमरतिमोहनीनाहलखेससिपूनो॥ डारिएधंधकवंधकवाहतमारिएमारकु
भावनामूनो॥ पुग्मअनन्यासिपारघुवीरसनेहविहीनदसोहिसूनो॥ १४६॥ रागअरागअरागसुरागविमांसहीपरभीनमहाहै॥
संतसहायसुहित्यलहेमलभासिहेप्रसपरेससहाहै॥ शांतनितांतएकांतबसोसियकांतसुभावसुभायसमाहै॥ पुग्मअनन्यअशोक

॥३१॥

श्रीराम॥ अभयपदपाइहैराजतीरंगरमाहै॥२४७॥ नामगुनाकरगीतपुनीतसुरीतिसमेतहमेसहींगाइए॥ धामप्रभाकरमैंवसिएसपनेहूंनहींदुख
दसिवाइए॥ वामविलासप्रकासनिवासउदयउरमेंसुमिरेसरसाइए॥ युग्मअनन्यअकामसियावरहाथविकेपियहींपरसाइए॥२४८॥ वा
हरभीतरनाममहामहिमापरिपूरनहींदृगदेखो॥ ठाहरआनकलेकखजानसहीसदाकहहैअवरेखो॥ जाहरहीनदुनीदुनीदुगुनीदुतिना
हकदूसरीरीतिपरेखो॥ युग्मअनन्यवपाहरजानकीजानिसनेहसजायसुलेखो॥२४९॥ सुद्धप्रवुद्धनिरुद्धविनाअविरुद्धसुनामउपासन
कीजे॥ वुद्धअवुद्धकुपंथविहायकेनामअमीरसहींनितपीजे॥ शुद्धअयोगससोगसभीसियरामविभूतिविचारितजीजे॥ युग्मअनन्यअकु
द्धमएअनपासहिंयारसभावसभीजे॥२५०॥ सामनेनैननिहारिएनूरजहूरहजूरसियावरसुंदर॥ वामनेवेननिकारिएनासतेंपारएप्री
तिप्रकासपुरंदर॥ दामनेश्रीसुखदैनअहोनिशिलागिएकाटिकलेशकलंदर॥ युग्मअनन्यअकामनेनैनवसेरहिएधवधर्मधुरंधर
२५१॥ ज्ञानप्रधानसुजानसहीनिजनौमप्रतापहिएअवलोकन॥ ध्यानविधान[illegible]विचित्रवहीवरनाधिपध्यानधराएंप्रोकन॥ वीजवि ॥नामने०
राग॥ वीजविरागअदागएहीतजिकेसववातसुनामविलोकन॥ युग्मअनन्यविहारिनीभक्तिअखंडितजापअतापअशोकन॥२५२॥ वी
तिगएवहुवासरव्यर्थहींनामकृपालसनेहविहीने॥ जीतिलएमदनादिमहामदमस्तमलीविधिहींदुखदीने॥ मीतनएजितनेजगमें

तितनेहिएपीछिकुहीठहींकीने॥ युगमअनन्यअभीतअवसभजेजोपेनामरसामृतभीने॥ २५३॥ नामकृपाल~~सौंहत~~ सेवाय पसोहावनसीलनि
धानसोहेवरूजो॥ नीचसनेकलिकीचघनेअनयासनिवारनहारसुपूजो॥ लेतनहींअपराधअसाधहूंहेतमहामहकोकिलाकूजो॥
युगमअनन्यअनममहाव्रतधारिकेवासनासासनामेंजो॥ २५४॥ तौनपुरानपुरानिचोलसमानप्रमाननमानिविलायक॥ संहितासारवि
हीनहिताविनआगमआगअयोगअलायक॥ हेरतिहासहरासउहासनिवासैंहीसुसमृतिहूंकायक॥ युगमअनन्यसियावरनामस्वरूप
गुनादिवियोगअमायक॥ २५५॥ वेदहूंभेदसुखेदसमेतजोजानकीनाहनिकेतनभासे॥ औरजितेजगतीतलशब्दकहेंवतितेदुखदा
हनिवासे॥ श्रीअवधेशसुनामसनेहितप्रेमपरत्वविनामवपासें युगमअनन्यसियावरस्व[illegible]सनातननातगहेप्रतिकासें॥ २५६॥
तौनसभाप्रतिभासविहीनमहामलमूलमलीननिहारो॥ जीहअजीहसवीहसमानमहाअहिदादुरकेसमधारो॥ औरहूंअंगअ
नेगजितेतिनकोदुखदोखदवारविचारो॥ युगमअनन्यसियारघुनायकनामसुयोगविनासवखारो॥ २५७॥ चंचलताअरुलोलु
पता~~निसिवासर~~निसिवासरत्यागिसुरागरंगीले॥ लोकउभयसहसोकविचारुनिहारुसुमूरतिप्रेमपगीले॥ स्वादुरहस्यअनादि
लहोगहोवस्तुअनूपमनैननछकीले॥ युगमअनन्यप्रपन्नभनेजगजोहिकेमूलिनहींअटकीले॥ २५८॥ स्वामिनीसीयसनेहसजो

॥श्रीराम॥

तजो वासना व्योम विलास विवादन॥ कामिनी कोटि [illegible] कला कमनीय खड़ीं चहुं पास रिझावती सादन॥ दामिनी दाम
सुदीप्रभ महा लघु भामिनी विद्युच्छटा अनुवादन॥ प्रभ अनन्य विहाय विभव सब सेइए जानकी पांय विथादन॥ १५९॥
जानकी जीवन नाम सुधा प्रिय पान किए कृत काम करेगो॥ मोद विनोद विहार विभव कल कांति अनूपम चित्त चढेगो
आकस्मात प्रभात परारति राहत श्रीमुख पाठ पढेगो॥ प्रभ अनन्य अजूब रसा उपवास किए प्रिय प्यास बढेगो॥ १६०॥
जानकी वल्लभ नाम सनेह समेत सुतोषहि एहर षावै॥ रोम हीं रोम मैं प्रेम महा मुद दाम नितै रस ही वरसावै॥ वासना
वंद विलाय प्रमली विधि दिव्य सुप्रीति हिए परषावै॥ प्रभ अनन्य निसि पाव रधाम वसे अनुराग हिए तर षावै॥ १६१॥
कौन पढै अव वेद पुरान कुरान किताव अनेक कहानी॥ चित्तमैं छाय या छवी लो सुनाम हमे सरसी लोरंगी लो गुमानी ॥नामने॰॥
होइ हैं मस्त अवस्त अभय अनुराग अदाग हिं सै मन मानी॥ प्रभ अनन्य विकार विवाद भरी लखिए सब वासना वानी
१६२॥ चाह चढ्यो चित्तमैं नित ही कवहूं सिय स्याम सनेह सनेगो॥ राह निहारत हैं करुना गुन आय कदा मुद मोहि
तनेगो॥ हाय हियं हरसाय तहां तन काहू समीप कलेश मनेगो॥ प्रभ अनन्य अथाह उछाह विलास क स्वाद समह जनेगो॥ ६३॥

तितनेहिरुपीछिकुहीठहींकीने॥ जुगमअनन्यअभीतअवस्यभजेजौपैनामरसामृतभीने॥२५३॥ नामकृपाल~~सौंहा~~ सेवाय पसोहावनसीलनि
न धानसोहेवरूजो॥ नीचसनेकलिकीचघनेअनपासनिवारनहारसुपूजो॥ लेतनहींअपराधअसाधहूंहेतमहामहकोकिलाकूजो॥
जुगमअनन्यअनन्यमहाव्रतधारिकेवासनासासनामेंजो॥२५४॥ तौनपुरानपुराननिचोलसमानप्रमानननमानिविलायक॥ संहितासारवि
हीनहितीविनआगमआगअयोगअलायक॥ हेरतिहासहरासउहासनिवासहीसुसमृतिहूंकायक॥ जुगमअनन्यसियावरनामस्वरूप
गुनादिवियोगअमायक॥२५५॥ वेदहूंभेदसुखेदसमेतजोजाननकीनाहनिकेतनभासे॥ औरजितेजगतीतलशब्दकदंबतितेउखरा
हनिवासे॥ श्रीअवधेशसुनामसहेहितप्रेमपरत्वविनामवपासें जुगमअनन्यसियावरस्व[illegible]सनातननातगहेप्रतिकासें॥२५६॥
तौनसभाप्रतिभासविहीनमहामलमूलमलीननिहारो॥ जीहअजीहसवीहसमानमहाअहिदादुरकेसमधारो॥ औरहूंअंगअ
नेगजितेतिनकोदुखहोखहवारविचारो॥ जुगमअनन्यसियारघुनायकनामसुयोगविनासवखारो॥२५७॥ चंचलताअरुलोलु
पता~~निसिवासर~~निसिवासरत्यागिसुरागरंगीले॥ लोकउभयसहसोकविचारनिहारसुमूरतिप्रेमपगीले॥ स्वादुरहस्यअनादि
लहोगहोवसुअनूपमनैनछकीले॥ जुगमअनन्यप्रपन्नभनेजगजाहिकेमूलिनहींअटकीले॥२५८॥ स्वामिनीसीयसनेहसजो

तजो वासना व्योम विलास विवाहन॥ कामिनी कोटि [illegible] कला कमनीय खडीं चहुं पास रिझावती साहन॥ दामिनी दाम
॥श्रीराम॥ सुदीप्त महा लघु भामिनी विद्युछटा अनुवाहन॥ प्रेम अनन्य विहाय विभव सब सेइए जानकी पांय विथाहन॥२५९॥
जानकी जीवन नाम सुधा प्रिय पान किए छकत काम करेगो॥ मोद विनोद विहार विभव कल कांति अनूपम चित्त चढेगो
आकस्मात प्रभात परारति राहत श्रीमुख पाठ पढेगो॥ प्रेम अनन्य अनूप रसा उपवास किए प्रिय प्यास बढेगो॥२६०॥
जानकी वल्लभ नाम सनेह समेत सुतोष हिए हरषावै॥ रोमहीं रोम मैं प्रेम महा मुद दाम नितै रस ही वरसावै॥ वासना
वंद विलाय प्रमली विधि दिव्य सुप्रीति हिए परषावै॥ प्रेम अनन्य सिया वर धाम वसे अनुरागहिए तरषावै॥२६१॥
कौन पढे अब वेद पुरान कुरान किताब अनेक कहानी॥ चित्त मैं छायायो छबीलो सुनाम हमे सरसीलो रंगीलो गुमानी ॥नामने॥
हौरहैं हौं मस्त अवस्त अमप अनुराग अघागहिं सैं मन मानी॥ प्रेम अनन्य विकार विवाद भरी लखिए सब वासना वानी
२६२॥ चाह चढ्यो चित मैं नित ही कबहूं सिय स्याम सनेह सनेगो॥ राह निहारत हौं करुना गुन आय कहा मुद मोहि
तनेगो॥ हाय हिएं हर सायत होत न काहू समीप कलेश मनेगो॥ प्रेम अनन्य अथाह उछाह विलास कस्वाद समहजनेगो॥ ६३॥

॥श्रीराम॥

॥३३॥

रैनसचैनजगेजपिनाममहामुदधामउपाधिविसारी॥ वैनसुषैनवदैसुखमयमङुकीरतिकांतसमेतसुधारी॥ नैनश्रवैन
सनेहदसासवभांतिलखेउत्साहसँचारी॥ युग्मअनन्यअमैनरहेनिजप्रीतमचैनविलासवहारी॥ १६४॥ नामसुधानिधिधार
वहेरसनाउरअंतरभावविचारी॥ आमकलामहरामविलोकिएजानकीजानिनिजेशनिहारी॥ चामकेनामसेंआठ
हूंजामकिएउपरामउमंगविहारी॥ युग्मअनन्यमोकाममनोहरपाइएप्रेमपरेशप्रचारी॥ १६५॥ खोइएखाहिसखारखरावको
बोइएवीजसुनामसुधाकर॥ धोइएचित्तचलाकमलीनमहामलरूपकुसंगमुधाकर॥ पोइएप्रेमपवामनमोजसेंरोइएरा
गरसेसप्रभाकर॥ युग्मअनन्यसुपांवपसारिकेसोइएजोइएरामरसाकर॥ १६६॥ अन्य०॥ रूपरतिरीतिरसपारषीपछा
नेप्रेमपरमप्रधानसुपुनीततनवीजके॥ अंधकूपसदृसमुनानेभवतीनभूपधूपसमअखिलविभूतिकरमीजके॥ रूपसमवृत्तिव
रधारतसुचित्तवीचचालनीसुभावविसरायअनगींजके॥ युगलअनन्यनामहीननरसाथमीतभूलिहूनकीजिएसुसंगतिपसीजे
के॥ १६७॥ सवैया॥ चित्तचलाकहलाककिएनिजनामकलाहियआपहींभासें॥ हित्तवलाकमुवंदवनीवरषायकुतापअसेष
निकासें वित्ततलाकछलाककेदेसववाधविचित्रसुकंजविकासे॥ युग्मअनन्यअनित्यअपाकविवाककरोमदमानविनास॥ १६८॥

॥३३॥

समान

नामसहीसरकारउहारहमारोमनोरथपूरनवारो॥ आनअकामसैंकामकरावहनामविचारिकेनेहनिवारो॥ ताननगारएदूसरी
जानसुमानप्रभान[illegible]वहावनहारो॥ युग्मअनन्यसुनामप्रतापसैंकामकलंककुपंकनिकारो॥ २६९॥ झूलना॥ धिरकारधिक्का
रधिकजन्मकोपायजिनरामकेनामकोनहिजाना॥ पाँचकीआँचमेनाचनाचतरह्योसाँचसतशब्दकोनहिमाना॥ स्वच्छ
सतसंगसैंसुरुचिकीन्हीनहीलौकिकीकथनउत्साहआना॥ युग्मआनन्यसियरामसुमिरनविनाव्यापावसुजामभवभान
पाना॥ २७०॥ गरभकीवातविसरायनरमूढमनमोहवसविषयरसकियेपाना॥ अरेवेहाथतैंहोसकरतानहींदोषतैंदेयगाका
हिआना॥ विश्वकारंगवहरंगतैंदेषिकेउरभिक्यारहावहवरव्नसाना॥ युग्मआनन्यभजुजानकीनाहउत्साह[illegible]
चितचाहनितवेदजाना॥ २७१॥ अरेचितचेततैंचेतगुरुशब्दकोकालनगिचानततन[illegible]गोनकारे॥ होयकेमस्तसवअस्तस
मविस्वलखुचाखुरसस्वादमनमौनकारे॥ कीजिएवासअभिलाससरजसुतटैंजिरएदाननिजभौनकारे॥ युग्मआनन्यसि
यरामसुमिरनविनाखानअरूपानविषवौनकारे॥ २७२॥ जानकीनाथनिजनाथभूलोफिरेफांसेफरसाहकेवीचवौरे॥
आनकीहल्लेमेंजहलल्लागावपापावतोखहनहिकरतगोरे॥ लोककीलाजकुलकाजनाशाकनिपुनयरतनरनीचपरिविषमभौरे॥

॥श्रीराम॥

॥३४॥

प्रेमआनन्यविननामसुमिरनवृथाहायबदवायदसदिसोहैरे॥ १७३॥ कामनाकालकरवालकरमेगेहशीशछेदतसदाम
दअपना॥ सामनासंतसतगुरुकरतानहीपटभरतारयनिसोयसपना॥ नामनाहेतनिसिदिवसपचताअधमसदमसुखनामको
छोडिजपना॥ प्रेमआनन्यतिलपामनाचित्तकोचाहिएतनकफिरिकोनटपना॥ १७४॥ कंजकमनीयरमनीयनिजनामजपिलि
लेगोसंकनारतीलावो॥ मंजुमनधारनाधारिकेनखसिखीलिखीजगअंककोदूरिहावो॥ रंजमुदएकरससमुझिकेभावबपुवीच
बसिएसदारंगरावो॥ प्रेमआनन्यआनंदहरदमहिएसंतसोहवतसुधासुचितप्यावो॥ १७५॥ सवैया॥ नामसनेहसनेसजनी
रजनीतमतोममपीनरहावै॥ आकस्मातसुरातसहीसबभांतिसुकोतिसमेतसुहावै॥ लोकिककामकलेककदूरतकाससमान
विशेषनलावै॥ प्रेमअनन्यसुनाममहामुदवारिधिवीचसुपैठिनहावै॥ १७६॥ नामसहीसरकारउदारहमारोमनोरथपू
रनवारो॥ आममकानसेकामकहावदनामविचारिकेनेहनिवारो॥ तानननगारइएदमदूसरीजानसुमानसियावरप्रेमप्रकारो
प्रेमअनन्यविहायविषयसबआपकोस्वामिउमंगपेवारो॥ १७७॥ अन्यरीत॥ सरजूसरितसुचितीरमेकुटीररचिरागिएरसाल
नामरूपमेंहमेमाहीं॥ विविधिविकारविसराइएविवादस्वादस्वच्छसरसाइएसमाइएसुदयाहीं॥ लीजिएललितलाहलोचनलगाय

॥३४॥

॥ श्रीराम ॥

लाग स्याम अंक माधुरी सु पीजिए विशेशाहीं ॥ युगल अनन्य आस अभिलाष वास जानि के हरास त्रास त्यागिए कुवेशहीं ॥ २७९ ॥
सवैया ॥ श्रीसरजू सरित तेसि समीप सदा वसिए रसिए लसिए जू ॥ पीजिए प्रेम पियूष समान सुनीरस हादिल में हसिए जू ॥ जानकी जीव
न नाम महाधन धोल अतोल जपे जसिए जू ॥ युग्म अनन्य सिया वर रूप प्रतच्छ लिए कहीं हों कसिए जू ॥ २८० ॥ पाइए प्रीति प्रतीति निष
भाकर श्री दृग जातर वासस जाइए ॥ धाइए धूर निमित्त नहीं अलसाइए तुच्छ तमा मत जाइए ॥ गाइए गीत विगीत विनाद मखाइए नी
रसु लाज लजाइए ॥ युग्म अनन्य समाइए शोक समुंद्र सहा वर वाघ वजाइए ॥ २८१ ॥ अव तो सव वैस संवंध विहाय विकाय के गाइहैं हो
रूप गुनाकर ॥ जानि लियो जग जाल स्वरूप कुरूप असार प्रधार को चाकर ॥ धाम निवास हुलास समेत सजाइहो श्री गुरु के गुन ॥ नामने० ॥
गाकर ॥ युग्म अनन्य प्रपन्न सिया वर कौन की आस करै दुचिताहर ॥ २८२ ॥ धाँम सुधा सुख सिंधु वसो मन मीन प्रवीन कहा
कित जावै ॥ वाम सुधा दुर्गंध समान लख्यो कुल नीरस पीर लजावै ॥ साम सकार छु धार सरूप हीं दूसरी प्यास न स्वप्न सतावै ॥
युग्म अनन्य सुनाम प्रताप सें वीन प्रवोध विचित्र वजावै ॥ २८३ ॥ धाम में मौज अनंतँ ज्ञाय ववाय वगाय वहाय न पावै ॥ प्रीतम
प्रीति प्रभा सत संग समाइ सहूँ दिशि छावनी छावै ॥ आगस आध अगाध मिटै मन भूत अपूत नए करहावै ॥ युग्म अनन्य

सुधामद्भुपाकमनीयगेहमुदमंगलगावै ॥२८४॥ वादिविवादिवहाएकहाकमनीयसुधामवसेसुखसाजन ॥ आदिअनादिअनेककवि
वेकविचारतमैाजनहीतितताजन ॥ स्वादप्रसेंदवहावनपाइएनामरटेतिराजन ॥ युगमअनन्यमुनाइसुनकईकोटविनोदल
हासुखभाजन ॥२८५॥ पांचहूंमुक्तिविहायपरसारसरागअदागसुधामवसेसें ॥ पाइएगाइएगीतसुधाकरकोसलानामउचाररसे
सें ॥ सोचहूंऔरनवातरचौचितचारुविचैरिएवेननेमसें ॥ युगमअनन्यकोगुरुनसोदविनोदलहोजगजीवनसेंसें ॥२८६॥
जानकीरसिकधामअमलमोकाममनकीजिएहेमसजनसलीजिएललामपर ॥ सावधानहोयचित्तपीजिएपपूषरससरज
सुनीरपीरहरनप्रमोदकर ॥ वारवारउरउमगायगायगानावादविगतप्रमादनित्तरमिएपुलिनतर ॥ युगलअनन्यनामर
गसेंसमतसुचिसुमिरिप्रमोदवन [illegible] दिषिएविनोदद्वार ॥२८७॥ कोशलानिवासीनेहनिरतनरनपरवारिकईवदेवरा
जविधिहरिहर ॥ हैंशलाहमेशचित्तवीचचिंतामनीचारुचरितहरितनामरूपसीलयूपपर ॥ लोकवेदवंधनविहायपायप्रेमप
थपरमप्रधानपदपागिरहोरंगसर ॥ युगलअनन्यशोकसागरसुषायसवसावधानसीवसुखमांभप्रेमछेमतर ॥२८८॥ ज्ञानसे
पएकारसमासरहितध्यान। ध्येएहिअधारनामसुधाममेंवसतहीं ॥ प्रानप्रेयप्रीतिप्रतिकासभासभव्यमननमवेशसुषसारफलसतहीं ॥

॥श्रीराम॥

ज्ञानकीरमनगुनमननसजातीसेगरंगानुगाजीवनउछ्छाहैंरसतहैं॥युगलअनन्यज्ञानकीसईंसशीशशुभसदनसमीपसेंसोह
गमरसतहैं॥१२९॥पावपलधामसेंवियोगअनुचितरागसोगसंकुलितसकुचितचितचाहसें॥भावअमलविकलअफलकुलका
जसाजसफलननेककअविवेककोकहाहसें॥आवअलअवलअसखदखरखहीयहोतहै[illegible]उघातमातमलिनकुराहसें॥युग
लअनन्यवासविपुलविलासवीनचीजअद्भुततजवीजिएसलाहसें॥१२०॥चौपैया॥धामसहायकहैजनकोकलिकालकराल
मेंदूसरोनाहीं॥सामसकारसुमारसोहावनकीजिएवैठिसुसंगतिमाही॥श्रीविमलामिथिलाकलकामदश्रीगिरिराजलताद्रुम
छाहीं॥युगमअनन्यसुवातसजोगवलेशनधाममिलेगलवांही॥१२१॥धामसुनामसनेहसजेजसुषसावितशानसिकोहस
होहे॥कामकमानचढीनरहेपुनिधामहिमागसुरागमहीहै॥छामकलामनहोपकहूंअभिरामपरत्वप्रवाहसहीहै॥युगमअन
न्यतमामकुवासनाआपहीआपविलायवहीहै॥१२२॥अन्य०॥स्वच्छसीमसुरभिसमूहसावकाशौघसहरसमिध्दसिध्दसो
मनीकनीरहै॥सीतारामसानसजसजनसुजननीयजाहिरजहानजसजोततनरतीरहै॥सानुकूलसंतसीलमंतसीयकंतप्रेम
प्रवलप्रवाहआहदाहनीयधीरहै॥युगलअनन्यसुचिसरितभरितरसस्वामिनीसरजूपरपूजितअमीरहै॥१२३॥

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥

॥३६॥

श्रीसरजूसरितासुचिस्वामिनीभामिनीभावविहारभरीहै॥ लोकिकहीहरजूननज्ञानजलावनीपावनीप्रीतिफरीहै॥ प्रीतमध्यानधुरंधर
धीधियधारिनीसारिनीशोकहरीहै॥ युग्मअनन्यअमोलमहामनिमरीसुजीवनिजानजरीहै॥ २८४॥ ह्वैंसरिताजितनीजगतीतल
दिव्यसुधाभरिता अन अनमूली॥ ह्वैनसकेमहिमागुनकीछिनछोंहउछाहसजायसुफूली॥ किंकरीहोयप्रभुकानकेरगुनगर्वगरू
रगवायपअत्तली॥ युग्मअनन्यविहायविषयभ्रमसरएश्रीसरजूसहिसूली॥ २८५॥ श्रीसरजूतरतीरसैंथीरनिवाससजायवजायवधारैं
लोककहेंवबुचाहकवाहतकामकलामविसेषवहाई॥ होयमहामदमस्तखुसीखुदखातिरखामखजानखसाईं॥ युग्मअनन्यप्रियाव
[illegible]मिलागिकैसुचिशोकसनेहसगाई॥ २८६॥ देवधुनीजमुनाअसमकीनिधिपापपहारवहावनहारी॥ ज्ञानस्वरूपगिरागरूवीगुनजेतीन
देहुतिदिव्यदिवारी॥ जानकीजानिसुधारसखानिप्रवानप्रमानवसिष्ठजाप्यारी॥ युग्मअनन्यगरूरगवायकैसेवतीश्रीसरजूवलिहारी
२८७॥ अनुप्रीत॥ सीतारामसरससनेहरसरूपनीरसरजूसरितसुचिस्वामिनीनिहारिए॥ भागीरथीगावगुननर्मदानिहारैनैनचै
नचैनैदैनकृष्णवक्त्रभाविचारिए॥ कावेरीसुकंजकरलीनेपानदानचंद्रभागास्वच्छसुरभिसुभाजनसुधारिए॥ युगलअनन्यलोक
निखिलसरितसिंधुसेवैपदपंकजअमलवलिहारिए॥ २८८॥ सवैया॥ श्रीसरजूविमलाकमलामिथिलानितनामसप्रेमउचारे॥ ॥

॥३६॥

कमल

श्रीराम

मोदविनोदखवदायहिएहरसायतवीजविलासविचारे॥ जानकीजीवनरूपपियूषसुपानकिएमदवमखविदारे॥ युगमअनन्यसिपावरकेतकु
टुंबसमेतविशेषपधारे॥२९९॥ श्रीसरजूसरितासियस्वामिनीनेहनिवासिनीनीरनहीहै॥ वारकपानप्रधानकियरहिएपातकपुंजप
लातसहीहै॥ जानकीवल्लभप्रानसमानसदासुचिसोसजिमोदमहीहै॥ युगमअनन्यभजोविमलासरजूकमलावरवातएहीहै॥३००॥
प्रातसमैसुमिरोसुषमानिधिश्रीसरजूनिजनामनिरालस॥ घातकलेककटेकटुताकलिकालकरालमिटेव~~लि~~मतिवालस॥ औरविका
रविहायभलीविधिकीजियगौरसनाइयलालस॥ युगमअनन्यअभयरहिएसरजूजलमेंकरिएवपुमालस॥३०१॥ श्रीसरजूतटवा
समसनाइयखासनिवासविचारिएप्यारे॥ लोककलंकवनकोअवलंबवविसारिएव्योमसमानसहारे॥ चारुहमेससुदेससदापरिपूरन
तरनेहातहजारे॥ युगमअनन्यरमापतिलोककरोरनरेनुकेऊपरवारे॥३०२॥ चाहिएचारुएहीहियमेंनिसिवासरश्रीसरजूतरती
रे॥ होयनिवासभलीविधिहींरसनारटलागिरहेरघुवीरे तुंगतरंगसुरंअनंगनिवारनहेरिएनीरगंभीरे॥ युगमअनन्यप्रवाहपराव
रेप्रेमप्रकासमिलेमनमीरे॥३०३॥ अन्यच॥२७ धाममांझतनपतनप्रजंतवाससहितभरोसआसकीजिएसचेतचित॥ आनदेश
अभिलासमानिकालकूटसमजावत्तजहानवीचपलजानिखेदहित॥ योगज्ञानध्यानसवसाधनसमाजहूंसेंनेहनातातोडिजोडिधामसें
सनेहनित॥

युगलअनन्याह्निपोरहींमेंमिलैंतोहिमहारसरासिरामरशिकअजववित॥३०४॥सीतारामपुरवाससुरअभिलासआसवौरंतउअ
मसुगमनहिंजानुमन॥जांचेविधिविष्णुशिववसेषसारदागनेशधामरसेद्रप्रवेशवसनअखंडपन॥औरजेतेसिद्धमुनिनायकसुविज्ञ
वरतेउधामनजरनिहारेगावैंगीतगुन॥युगलअनन्यसोईकरुनाविवसताकोमिल्योहैश्रमहागउद्धारिकैविलोकुधन॥३०५॥सवै०॥
रसनारटिएनिजनामसदाअटिएसरजूतटकुंजगलीनमें॥हटनानहिनैंकुटेकहिएकसनाकटिकारनप्रेमपलीनमें॥पटनाहिंर
हैंतोहिरंचहुंफेरसुमेरविशेषकहींहोयअलीनमें॥छटनाहिंउपाधिअनन्यरतीरसएकउमंगविकासकलीनमें॥३०६॥श्रीसर
जूसुषमानिधिधारविलोकिनैनपसारिभलीविधि॥नैनजोप्रेमप्रवाहनिहारततहोतहजारनहर्षसुधासिधि॥औकुवासनादूरि
वहायउछाहअराहनितसुनवानिधि॥युगलअनन्यप्रकासपरावरनाथमिलैरसएकअपारारिधि॥३०७॥अन्य०॥जानकीजीवनजू
केसरससनेहरसजससुधासिंधुवीचवूडोनहींजोनजन॥ताकीकरतूतिभक्तिज्ञानध्यानयोगसवफलेसेंविहीनजैसेंनीचवच्छ
वेसवन॥वाकीफेरिसुगतिसोहारनीतिलोकनाहिंभीमकेसोकरीव्योमघूमतकलेशघनन॥युगलअनन्यतातेकीजैप्रीतिसामगौ
रचरनसरोजमांहिंएकरसधारिपन॥३०८॥सवैया॥नामरटेरसरंगविसेषी॥पावतप्रेमपरेशपरागतिनेहनिशातलेहअविशेषी॥

वस्तुविचित्रविकासतैहेतुनिरंचरहैनहिकाहूकोद्वेषी॥आवृतनित्यस्वरूपअनूपमजाहिसदाश्रुतिभाषतसेषी॥युगमअनन्यसदा
[illegible]सतसंवतनामरटैरसरंगविशेषी॥३०९॥रामसुनामसदासुचिसाईं॥जापकभेदलहेअनभावितबोधविहारवहासअथाई॥कारन
सूक्ष्मअथूलहुतेनिजनामअनामविचित्रसोहाई॥पोतपरेकछुहूंनहिहैश्रुतिसारहैसबसंतनगाई॥युगमअनन्यअधारहैमएकराम
सुनामसदासुचिसांई॥३१०॥अमन॥रामरसरंगमेंरंगारहेएहमेशामनअतनवतनविसराएविषादसम॥दिव्यदुतिंदामदेगोदेषिएप्रत
क्षप्रीतिप्रागटपराबरेशविस्वबासनादिकम॥धामअभिरामरूचिराषिएउपाधिबिनद्विनद्विनबोधबजवाएविचित्रबम॥युगलअनन्य
वामवीजव्यवहारवदेहीजिएवहायसमुदितविरहितनाम॥३११॥कूपपंकसाधकविहंगपतिपारापरमानिचकाव्यूहपोतमिरिचप्रमानि
ए॥नीहवेदचुंमकसुखंडसेतुआवरतकारनमिरोधदशातीनअनुमानिए॥छायागजपोननागमूसकअनंगअभिमनुकाककलितक
पूरजियजानिए॥मानुषसुरेशाअस्वनालखगभांतिचित्रनामकेप्रतापसेंसुधीरवहिचानिए॥३१२॥इंदुकंजदीपकसमुंदव्योमभू
मिभौनमकुरसुपाथचारुचैंनविचारिए॥कुसुमदवकारभौंरदेषिएपतंगसरिधूमधामकौतुकपटननागधारिए॥जैसेचंद्रमादिकन
वाहतकुमादआदिआवृतसमीपशोकसाजतसम्हारिए॥युगलअनन्यऐसेरामनामजापीपासभुक्तिमुक्तिशक्तिशिष्यसुजननिहारिए॥३१३॥

तुविकासुनावमुनिपविचित्रिकासुमेत्रीढिम्रसंखिपाअनूपचापगटिकाप्रतसुहै॥ अतरपषानअहिविहंगप्रेवसपुरवपषसुपा
नितागवावनननरच्छैहै॥ याहीभांतिकांतिनिधिनामसुमिरतमनमलिनअयोगगतिअगमसुद्रच्छैहै॥ पुगलअनमसंतसतगुरुने
कैनेनकलितकटाक्षपापपावतसुलच्छैहै॥ ३०४॥ भोगीवारमुखीसमअंधरोसरोगअपअतरसमौतधनहीनअज्ञजोनजन॥ या
गप्रतीवृतधर्मदानअरगहैंहायनाडिकाविचारतोरकैसकरिआवेधन॥ अमरकरावैगनीऔरहौं वनोवेवुधजानिएअसतपुरुषा
रथसहासतन॥ पुगलअनमअेसेरामनामज्ञानहीनसीषसिषलावेमानपावेहैपेरशधन॥ ३०५॥ व्यासुतनृपतिपरीक्षतसुप्रह
लाहपद्रुमनिर्वसिनीछितीशपपुपेषिए॥ क्रूरताविहीनक्रूरमहावीरपार्थवलीमहाराजकोस्वरूपअवेरेषिए॥ याहीभांतिनामको
उचारनश्रवनस्वच्छसुमिरनसेवनसपूजनपेरषिए॥ पुगलअनमवरवंदनसुदासासरव्यआत्मानिवेदनविवेकसैंविशेषिए
३०६॥ मधुपमरालमतिचुंमकसुहेमईश्रासुकसमरीतिप्रीतिथापिकाउहारहै॥ वेदमरजीवन्पारोरजकसमानगतिदेतनामसु
मतिअनूपएकतारहै॥ जानकीरमननाममहामोदधामहीनपीनपरपंचकहांपावेगनसारहै॥ पुगलअनन्यसुभसरनसजावोवर
वरनहेमशअैसअेनप्रभप्यारहै॥ ३०७॥ नैनंवेनश्रवनविशेषमैं इकरिध्यानप्रथमप्रकासहींकोभलीभांतिकीजिए॥ ॥

॥श्रीराम॥

नामकीरतनमुखअष्टपहरनपंथआनविछोघसजिसुधारसपीजिए॥ कछुक्षिनबीतेसमसुद्धसत्वभएपरस्परससाग
रकेवीचजायभीजिए॥ युगलअनन्यह्वैहोयतवमीतमनवयुगलचरनसंतसतगुरुमींजिए॥ ३१८॥ असनअलपसुद्धस
तोगनलिएमितवचनविचित्रमहुमधुरउचारिए॥ रैनदिनजागरनसपनसुभायभूलिभूलिधनधामधराजुवतीनिहारि
ए॥ सावधानहोयमनोराजखाजखेहगनिधुनिमांभमानसमाननितधारिए॥ युगलअनन्यऔरकथनवकनव्यर्थ
होयकअनर्थताकोमूलजुतजारिए॥ ३१९॥ रतउतगमनरमनकौतुकाहिकुलकारजकेघरकेलिरीतिप्रीतित्यागिए
ध्याननहींकरतएकरसदृढआसविस्वाससुखवासअभिरामपनपागिए॥ आलसअयोगभोगसोगहुवीसगांसफांस
शांतत्यागिरैनऔनजपिजागिए॥ युगलअनन्यअभिमानमानलेशनाहिनाधेसोईरीतिप्रीतिसेतनसेंमागिए॥ ३२०॥

सवैया॥ चौविसतत्वकोथूलसरीरमहादुखपीरअधीरकोभाजन॥ पांचहुभूतमनादिकचारिएकादशकर्नविषयपछ
नछाजन॥ पंचीसुतत्तसेंसंभवदेहहसहासुविहीनससोकअराजन॥ युग्मअनन्यहैअधिआसप्रकासपरेअरुआवर्न
केकाजन॥ ३२१॥ सूक्ष्मलिंगसरीरसुनोदशसातसमेतनिकेतउपाधी॥ पांचहुप्रानमनोबुधितोदसइन्द्रिनकोगनहोष
अ साधी॥

॥नामने०॥

पंचीसुकर्नविहीनलसेतनभीनसुछीनविषयरसबाधी॥पुगमअनन्यसहेबहुसंकटयाहीकेसंगउठिगनआधी॥३२२
भूलिस्वरूपअनूपपरेसदहैकटुकारनकायकहोवै॥सूलसहस्त्रसेमतसदाभववासनाबीजविवेकबहोवै॥सोउनकोइहेहे
तसरोतहितेश्रुतिकारनयाहिबतावै॥पुगमअनन्यकृपाबलतेतननतीनछुटेतबमोजसमावै॥३२३॥कोउअचारजवर्ण्य
कहेंवपुषष्टअरिष्टनिवारनहारे॥केवलऔरतुरीयमिलापकेहंससरीररहस्यविचारे चारिकेमध्यप्रमानलसेबहु
तातिउभयेतहिंअंतरधारे॥पुगमअनन्यअनूपमअंगलहेगुरुकेपदध्यानसंवारे॥३२४॥वदसिरोमनिवाक्यविचारकरै
समआदिकसाधनसाधे॥कंचनकामिनीकाललखेनिजनामपियूषचखेअवराधे॥पापप्रकाशरहेमुरझैंछिनधारे
हीमांझविलीनैंपाधैं॥पुगमअनन्यहमेसशा[illegible]असंककलंकविहीनरहेबिनबांधे॥३२५॥जेमतिमेंदमलीनपगेप
सुपावरप्रेतसमानजहानी॥संगकुरंगकषायकरेंभववासनाभीभरैंदुखखानी॥मस्तअवस्तरहेनिसिवासरपुस्तपना
हसुसारंगपानी॥पुगमअनन्यसुमौनगहेनहिंवादविवादवेकेबहुवानी॥३२६॥अन्यरीत॥हंसतनसुद्धरसघनअवि
कारहै॥केवलकृपालरघुलालसियास्वामिनीकीकरुनातेमिलतनऔरपरकारहै॥साधनसैंसुगमनसहसकोरपुग

श्रीयुगलानन्यसोउ कारन रहित प्रभु श्रम लग्य नृप के पाहीतप्रथि कारहै

॥श्रीराम॥

जनमसुसांचवरविमलविचारहै॥ सोधनअनूपएकरसिकअनन्यसंगनामअर्थमननरमनएकतारहै॥ पहजसवतंत्रपरतं
त्रतासुसंधिमीतहंसतनमुद्रामछबनअकारहै॥३२७॥ आपहीं उपायनिजमिलनकेमध्यश्रुतिसज्जनसमूहसबमों
तितवषानहीं॥ कोनअैसोसाधनपरेशाकेप्रतछ्छहैतननरनआवतनमनअनुमानहीं॥ तातेसावधानसर्वेशौरनागतहौंलौ
जैसतगुरकेवचनसुनिमानहीं॥ युगलअनन्यमतिमलिनकुसंगतजुभजुरघुवीरासियजीवनअमानहीं॥३२८॥ षटविधि
शरनवहततेवेदविदवोधसोधताकेकिएमुदमाचमिलेहालहै॥ युगलसनेहअनकूलकततकेरसवजोनप्रतिकूलप्रेमपंथगुनै
कालहै॥ उभैलोकमांहदवरवांहछांहदेयनिजराषिएकपालकोशलेशसबकालहैं॥ युगलअनन्यपूर्वरक्षित्तनिरूपेनितगावै
गुनगनकुलवारिहीनतालहै॥३२९॥ सवैया॥ मायरसिंधुअगाधतेरेअनयासनहींकछुहैप्रभुताई॥ देशाहरीदुर्गेमयमही
धरहूंतरिवोसुखमांहिलषाई॥ औरहूंनानाविकलपविहारप्रहारसमेततरेहरषाई॥ युगमअनन्यसरन्यमनेपरनापिकारवाढी
तरोनहिजाई॥३३०॥ जोलौंजगामगजोवनराजततौलौंलगौअतिहींप्रियनारी॥ जोरजराविनद्यामभएपरदेषतहूंललना
दुषकारी॥ मदनहींगुनगूढविचारतहोतअरूदविषपज्वररारी॥ युगमअनन्यषरावभयोरवतराअरूखोफकोपंथसम्हारी॥३१

॥नामेनः॥

लोकहुंवेदकेवीचविलोकिकेऔगुनषानिलख्योजउनारी॥ ताहिसोंत्यागकरौतिहिकोहिनरैंनसमैंनमहाभ्रमकारी॥ पायो
किआगहिमागऔलोकिकतुच्छविरंचिविभवसुनिहारी॥ प्रेमअनन्यरसामत्तजन्यभजोसियरामसुनामसुधारी॥३३२॥ भूतिनि
हैकैपिसाचिनिहारुनिजानीनजातविशेषविचारी॥ हैविषवेलिकीनागिनिवाघिनिभीतकीज्वालदवानलभारी॥ मानोसि
मटिकेशोकसमूहरचीविधिनानिजहाथसवांरी॥ प्रेमअनन्यमेंनेमहिराअपवातरवारकीधारहैनारी॥३३३॥ हैसरिताभ
रिताभ्रमनीरअमीरफकीरडुवावनवारी॥ नैनभ्रुवाहकभौंरभयंकरजायपडेतेहिवीचअनारी॥ दामिनीपोनमनोगतिचंच
लतौव्रसुभावसदादुखकारी॥ प्रेमअनन्यप्रपन्नमनेएहिहेतुनाहिवेजोगहैनारी॥३३४॥ अन्य०॥ कालीकरुकठिनकराली
कालव्यालीसममानोविस्वग्रसिवेकोविधिनावनाईहै॥ देषतेहींजाकेरोमरोमदाहव्यापिजातगातहूमेंप्रवलसुकंपभंप
छाईहै॥ कोमललगतपरसाअसहीरहेंकोध्वंसनकरतवाधसोधमोधदुखदाईहै॥ प्रगलअनन्यतातेत्यागिकेसुरीति
प्रीतिसहजसनेहसीयस्यामसौंलगाईहै॥३३५॥ नारीकिधौंखारीनीरपूरनकुरूपकूपजामेलेसप्यासतीनकालहूंनना
सेगो॥ केवलकलेशपेषावेशसवभांतिनसेंभीतरऔवारहुंअंततोकोभासेगो॥ दारमववासनामकानकोविलोकुपाहिऔरिखरखनाना
ह
वोटहामकोनिकासेगो॥

युगलअनन्यप्रीतिभलीभांतितर्ककीजेनामरसरूपसंगरंगहींप्रकाशेगो॥ ३३६॥ जानकीजीवनजेकेसरसनेहरसस
श्रीराम हजसचावनित्तचित्तहींपिवाइए॥ सीतारामपरतेपरात्परपरमेशअमलअनूपजसहींसेजानन्याइए॥ कोशलाधरजूधा
मशरनहमेशागाहिरामेराममंगलअखंडउमगाइए॥ युगलअनन्यजानकीशप्रतिकूलकृतकरतहमेशभलीभांतिसरमा
इए॥ ३३७॥ जानकीवल्लभनामभजेविनामानुषहूंखरस्वानसैंनीचैहैं॥ देखिएभूलिनहोतेहिकोमुखसंगकिएग्रासि
हैकलिकीचैहै॥ आपकोमेहूलखोसवसैंमिलिहैप्रभुराहसुधारससींचैहै॥ युगलअनन्यसुनामप्रतापसैंकोनप्रभावक
रैमनमीचैहै॥ ३३८॥ जेसेदिव्यरूपमांहिअमलअनूपरामस्यामछ्वनमुनिमनचोरनललामहैं॥ जेसैंग्रंथवेदसंहिता ॥ नामने० ॥
पुरानवीचवरवचनविचित्रजामैंपग्योरामनामहै॥ जैसेसुचिसरितसुभछविसरजूविराजैजेसेसवधाममांझअवध
सुधामहै॥ युगलअनन्यतैसेंतीनलोकग्राममध्यविसेंविनोदभरेधवलसुग्रामहै॥ ३३९॥ रामनामतारककृपाल
मँ कँनीयकलाकामदकलंकअंकसंककोकदनहैं॥ ईशसिरताजेसवनीयसानकूलस्वच्छसाहेवसरजूसेव्यसहस
वदनहैं॥ जापकजनेशधन्यमानमन्यअगनगन्यपापोराजिनस्वादसारमोहनमदनहै॥ युगलअनन्यनामसहितसफलसव

॥श्रीराम॥

॥४१॥

नामविरहितवादसाधनअदनहै॥ ३४०॥ सहसपचीससेलोजपतजोननजोहनामरामअभिरामताहिमंगलअवे
सैहै॥ जोकेनमअचलपचासमसहसाधिकहैसोतोदवेदविनतेपूजितविशेसैहैं॥ जोनअनुरागीवडभागीकेसुनेम
लच्छसोतोपरतच्छस्वच्छरहितअंद्रदसैंहै॥ युगलअनन्यताकीमहिमाअपारनित्तजाकेसुषसागरकीरदनहेम
सैंहै॥ ३४१॥ सवैया॥ धिकजीवनजोनहिनामउचारे॥ पापपयोनिधिपावरपीलपषानप्रपंचप्रयोगप्रहारे॥ पाजी
प्रभापतिहीनप्रजापदुपातककीघातकीप्रानपियारे॥ पीरप्रवाहअथाहहिएतेहिसंमतसास्त्रसुसंतसवारे॥ युग्म
अनन्यअधन्यदसाधिकजीवनजोनहिनामउचारे॥ ३४२॥ तनमानुषपायविकायनजोनिजनाममनोहरहाय
सवेरे॥ कौनकहैतिहिकोअधमाधमकोटिनमीचररोमेमहेरे॥ हायअघायअपायविषंभ्रमभावसमेतमन्योचित
वैरे॥ युग्मअनन्यजोषोवैवपापलएकसुनामविनाधिकतेरे॥ ३४३॥ श्रीगुरुदेवकृपालसोहावनसीलहमेश
हिएअवलोको॥ दानवदेवकुसेवतजोछिनरैनअभीतरहस्यविशोको॥ आपनोऔपररूपअनूपमभेदलहेदु
विधाजगझौंको॥ युग्मअनन्यसुदेवधरोसियरामसुनामजपोसुषथोको॥ ३४४॥ स्वामिनीसीयसहासुषसौंपन

॥४१॥

॥श्रीराम॥

स्वच्छसुवेनविसेषविचारो॥ स्वामिनीतर्ककुतर्कतजोअपराधअसाधननेकुनिहारो॥ कामिनीआपनीपीरकरोमनलभा
व़मेरोहियहर्षहजारो॥ जामिनीयुग्मअनन्यमनेमव़मानमनेघनेरंगफुहारो॥ ३४५॥ श्रीमिथिलेससुपुन्यपियूषअज
वसवारविवाहनहीहै॥ हैंतिनकेपदपंकजकीरजजानजहानजमातजहीहै॥ वूझिहैंविज्ञविशेषविभव़जिनकीम
तिमारनीभूमिगहीहै॥ युग्मअनन्यप्रपन्नसदासियस्वामिनीचारुचरित्रचहीहै॥ ३४६॥ जानकीजानिसुजानसनेह
समेतनिकेतवसेकुसली॥ उररूपसुजीहसुधाधननामविषादविरामरमेअसली॥ श्रुतिसंतसराहतभागविभव़जेहि
जीव़नधामसदातसली॥ तेहिवंदतयुग्मअनन्यसहीसोपाउँसकभूपनहीधसली॥ ३४७॥ अनन्यरीत॥ कपिनिकुमानुषक
ठोरकरतूतिहै॥ कठिनकलंककंकतंकलाकेचढ़नितचढतवढतअविवेककीविभूतिहै॥ साधनसमूहवुद्धिव्यूहवल
व्यर्थअर्थीवितरनविनासव़समसवसूतिहै॥ जीव़तजहानमानमोहविरहितवपुसागपरकल्पतकलागजमजूति
है॥ युगलअनन्यशास्त्रसंमतसदैव़किलकपिनिकुमानुषकठोरकरतूतिहै॥ ३४८॥ चूकेवेदविज्ञवेदपढतप्र
वीनरागचूकेयोगीयोगज्ञानीचूकेज्ञानध्यानमें॥ चूकेमालदारसाहूकारहूँवजारवीचचूकेसूररनमेंगुमानीसानमानमें॥

॥नामनेम०॥

चूकेचारुचाकरसुचाकरीसवारुचूकेकविगनचूकेकाव्यरचनाविधानमें॥युगलअनन्यदेवज्ञानवसमहचूकेचूकेनहीं
रामदासनामगुनगानमें॥३४९॥संतरसवंतछविवंतगुनपारगुनअगमअपारकैसैंपावरनिहारिहैं॥जैसेसूरसहसम
यूषदुतिदामवलखरवषद्योतकहाकिमतविचारिहैं॥जैसेमहाराजसिरताजसुषमाजराजरसजसरीतिरंककोनविधिसा
रिहै॥युगलअनन्यपरमेशासमसंतरूपअधिकअनूपकथेशेषमतिहारिहै॥३५०॥कहाहोतपावरकेरारनकेरारजोरजलु
मकिएतेजोपैनेहनामसंगहै॥महाघनघोरवरवूंदनकेभएकहाछूटतअजवरषूवपुरवन्नजोनरंगहै॥मलिनअशेषवस
वसकृतसमानवकुडारतनलेशलघुताईजलगंगहै॥युगलअनन्यशंकसपनेनमेरेमनचाहेंजगवीचकोटिहोवैरा
जंजंगहै॥३५१॥सीतारामनामधामअतिअवलेवगाहिसहिहोअनेकजगजुलुमअनीतहै॥कोईदिनवीतेअनपास
नाममहावीरवलतेप्रवलहोयमेरीहूंसुजीतिहै॥जहांतहांकायरकपूतकलिकालकोहकामदनामताकीचाविदिनगी
तहै॥युगलअनन्यमनमस्तसववतोरगोरगहरगंभीरकरिपुनीविनाभीतहै॥३५२॥पापकोपहारसविकाररुचि~~चा~~रसठकरत धार
परंतुपापपरीपाकमूलहीं॥रतिहूंकुकर्मजोनजीवकहूंकियोताकोफलपरिनामनरकादिककुसूलहीं॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीराम॥

ल

सुकृत करत असानत ललचात फल पावनके हेत वात आगम अमल हीं॥ युगल अनन्य ताते सावधान होय सदा सेइए सुजा-
न सुख सुकृत कवू लहीं॥३५३॥ पाप पुन्य गति अति झीन हूं ते झीन मति सुरति प्रवीन भेद पावत अहीन है॥ रस अनकूल
[illegible] प्रतिकूल मांझ होउ रूप प्रगाढ अघट लषे नेही लाल लीन है॥ कीजे सत संग रस रूप छवि अंग अंग पाइए अभंग
मोद खेद के विहीन है॥ युगल अनन्य नाम परम [illegible] परखे परखि अनायास नास दुख हार न कमी न है॥३५४॥ जे तपरीवा-
रे ते ते कलिका कराल धार तीव्र तरवार पार सुदृग विलोकिए॥ तेरे हीं संहार हेत तम जे हति पार मोह ममता प सो ताते होसि-
यार रोकिए॥ करें कोटि कपट कलाम कतलाम हित अहित हजार सम मानि मद मोकिए॥ युगल अनन्य सीष संतन सिषा-
यो ताहि होयके सचेत चित्त वासनादि झोंकिए॥३५५॥ आयो कौन कारन सवार न सुकाज कौन मौन धरि वैठो लै न वा-
तहीं हिरायके॥ वडाई लगत अचरज रीत नीति देषि कैहै कौन हाल वाल जलधि झिरायके॥ स्वारथ न नेक परमारथ
कटत जामें तामें रुचि रहत हमेसहीं थिरायके॥ युगल अनन्य पछिताइहै विशेष सठ हठ वस सुभग सुजीवन सिरायके
३५६॥ मोह धन धाम गुन ग्राम खास ग्राम मोह मोह कुलौं काम मना करवाय मोह है॥ मोह विद्या वाद अपवाद गमी सादी

काम

॥नामने॰॥

मोहलोककीवडाईमहामोहदिलद्रोहहै॥ मोहलोकलाजराजसाजमनमानमोंहअविवेकविहारविषयमोहगतछोहहै॥युग
लअनन्यज्ञानध्यानअभिमानमोहमिटजवमोहतवस्यारसुषमोहहै॥३५७॥मोहमयीमदिराकोपानकरिमातनरअमरअ
जरदेवासुधीविसरायके॥लोककेसमानकेंकरतवकलिकालमोनेमनमोरदव्यावातनहिरायके॥नौदहिनदिनद
नवटतविमोहवसहवसहिसावबीचमल्लोहैहितायके॥युगलअनन्यनहीजागिकेरटतनामजदपिसुसंतसदाकहे
समझायके॥३५८॥ अरेमतिमंदरतिअनितकेकिएकहामिलेलाभतोकोतनरतननशायके॥भरेमांवविभवविका
रभवसवसमदसासरटतेरीतऊतेजनकोहायके॥गरेबीचफांसीमहामोहकीपडीहैहापहिरसहजारौंचाहेसुमति
समायके॥युगलअनन्यधरेध्यानसुकृपालरामनामअभिरामस्यामसुंदरसुभायके॥३५९॥मोहकीकठिनतरवा
रदुखधारमूढममतामलीनतामेंआवमजवूतहै॥विविधविकारवासनादिवहूसाजताकेसंगमेंकुरंगछलछूत
धूमधूतहै॥चपलासीवामतामेंचमकदमकहामपलकेमेंभूतसमकरेअवधूतहै॥युगलअनन्यमोरविमलविराग
बोधवचेताकोभागगाहेनामसतसूतहै॥३६०॥सीतारामनामहीसेंकीजिएसनेहस्वच्छमारपतिव्रतधर्मधारिएहमेशामन॥

॥श्रीराम॥

झूलिहूं प्रमाद वसताकि एन तर्क ओर रहफविर्फ सर्फ संग साजिए मुशो कच्छन ॥ हू जिए अचिंत पाँय पूजिए प्रवीन नाम नेहि न प्रस
द प्रेम पारिए प्रमादवन ॥ युगलअनन्य ओर गोरहेर भौं रवीच वूडिए नैके सहूं उमाहिए उछाह धन ॥ ३६१ ॥ नाम अ
भिराम मैं झूरमत जमत जो कैतो कतीन तारत तूटि जात एक पल मैं ॥ वाँझ सुत जनत फूल तब्योम बीच फूल बीज हूं परखान बी
च सुदप प्रवलैमैं ॥ सिकता सैं तेल वारि मथत कढत छीउ ससहूं मैं शृंग दरसात अविचलैमैं ॥ युगलअनन्य नाम करुना प्रता
प पाय अखिल अयोग योग होवत सुपलैमैं ॥ ३६२ ॥ चाहै जौन करैं नाम अचरज कौन है ॥ नीरवीच अनल प्रवल कौ वसावै
पुनि तौ महिम मूरति दवावै कुतदान है ॥ पुरुषविहीन सुत वाँझ उपजावै वीज विना निपजावै खेत सौंच वात तौ न है ॥ प्रान
कै प्रवेश विना देह हूं चलावै तिमि पाहन तरावै सुमिकौ जेम खेमा न है ॥ युगलअनन्य सव भाँति समरथ तम चाहै जौन क
रैं नाम अचरज कौन है ॥ ३६३ ॥ कोटि कोटि योगी जती यज्ञ दान तप वाले जेते मतवाले जग जाहिर निहारिए ॥ अमित अ
संख्य ज्ञान ध्यान मान सान संग रहित उमंग कौन गनना विचारिए ॥ तीर्थ वरत नेम धर्म सर्म मर्म मोद हीन सपनेहूं माँहि
शान्ति अस तन धारिए ॥ युगलअनन्य सव साधन समेत साध्य नाम महाराज पाँय पावन पै वारिए ॥ ३६४ ॥ ॥

॥नामन॰॥

॥श्रीराम॥

॥४४॥

॥सवैया॥ तौलौंनमोहप्रमोहविनोहूकीछोरकहूंभूलेकहिएभूली॥ प्रीतमप्यारप्रवाहअथाहमेंमोहनीचित्तकीवृत्तिनभूली॥ साधनसुद्धसमूहहजारनलागिहैतवहूंतौसमसूली॥ युगमअनन्यअनर्थसभीजबलौंनसुप्रीतिकलीउरफूली॥ ३६५॥

॥अन्यरीत॥ चित्तहैकैपाराहैकैप्रवलपारावाराकैधौंपापकौपहाराअकिआतमकौआराहै॥ कैधौंफनिकाराकैसुदेसासैनिकारावरपारामतवाराकैधौंमोहमतिमाराहै॥ कैधौंभौभारासैनसहसहजारायुतजुलुमअजारासाधुरहितविकाराहै॥ कैधौंकलिकहरकरारागुलजाराविनयुगलअनन्यवंकवंचकविचाराहै॥ ३६६॥ बारहूंछडायोजातिपांतिहूवहायोमानसमनकरायोअंगधूरहूंलगायोमैं॥ भीषहूंमगायोद्वारद्वारहूंभ्रमायोकूरवचनसुनायोलाजलोकहूंनमायोमैं॥ तीरथहूंधायोव्रतकष्टहूंसहायोवाहविपुलवढायोवासकेसराकरायोंमैं॥ एतेहूंयतनकसोसमसोनहींतऊकाजयाहीतेअनन्यसंतसंगमरसायोमैं॥ ३६७॥ चित्तवित्तचाहचारुचरकविसेषअंगएकरसरंगसंतसंगसोईसारहै॥ याहीकोपरत्वसत्वसाधनसुभावमित्रसहजविचित्रदृढसुभगसुदारहै॥ मानसमिलापविनकठिनकलापकरुकेंरकप्रपंचतीनकालनाप्रहारहै॥ युगलअनन्यअग्रगन्यसोईसर्वभांतिजोकहिएवीचसंतसुवचविचारहै॥ ३६८॥ ॥ ॥ ॥

॥४४॥

प्रवलप्रतापरघुवीरधीरध्यानधरिपथिहरिविधिहरीहरकीउपासना॥ मोहनिधितरिअनायाससवकाजकरिभरिभाव
भव्यनामरूपगुनवासना॥ अगुनसगुनमतवादसविषादलषिसहजसुभावहीं तेत्यागिसतसासना॥ युगलअनन्यसं
तसंगहीं विचित्रमित्रयांहीमैंस्वरूपरूपरहसप्रकासना॥ ३ ६९॥ हव्यासजंत्रपचौरपयोवहुभांतिपंथसंतपरमधा
एरामहींकोगायोहै॥ अतिहीं अचिंत्यनामरूपगुनधाममदुमधुरमुनीशईशशीशामनभायोहै॥ सरलअमलकलकीर
तिअखंडवरअमितविधानव्रह्मांडनमेंछायोहै॥ युगलअनन्यसोईसाहवसुजाननित्तअवधसहरवीचमैंमोजसरसा
योहै॥ ३ ७०॥ कायक्लेशकिएकरुनाकरकीकरुनालघुताईलहेगी॥ ज्ञानविरागसुध्यानधरेमुद्दमाभिकेवृत्तिनि
रासरहेगी॥ जोसवसाधनहीनह्वैममतोसुहृद्यावरवांहगहेगी॥ युग्मअनन्यअनेकनजन्मकीवासनावीजक्रुपा
हीरहेगी॥ ३ ७१॥ आलसआसअसत्यसमाजनिवाससजायसुमोहहियोहै॥ वालिसवर्षविभववलचाहलहोत
नतापसुलाहलियोहै॥ चालिसवर्षअनूपवैसजहांतहंवैठिवितायदियोहै॥ युग्मअनन्यकरेविनतीकिमिआप
समीपविहायजियोहै॥ ३ ७२॥ अन्य०॥ मेरीमतिमारमईकीकिएक्रुपालहालविपुलविहालपनधारिरहीहेरिए॥

पेरीपरपंचिनप्रतीतिप्रीतिरीतिराहरीहतहेमशायाहिभलीभांतिजेरिए॥ महाराजभवनविभूसनअहे बगनअगुननिवाजिवे
कीवानिरंवैरिए॥ पुगलअनन्यमोहसिंधुमेनिकासिवेगिनगिनिजजानिमुखमाहमतेफेरिए॥३७३॥ हायेकअनन्यवरविर
हउचारिउरप्रेमपुरवासखासकीजिएमुएकरस॥ धोयेकेविकारबीजवासनाविकल्पमूर वोयखोयखातिरमिपारएसेनहवस॥
सोयेकसरसस्वारसागरसमाधिमाभमोसांभरूपरसचाखिएरहसाजस॥ पुगलअनन्यवस्तुगायेकगरीपगनगौंहरसमानप्रानप्री
तमप्रसादरस॥३७४॥ नामरूपअमलअनूपध्यानध्यायहरजापजगजीवनवितारएनएकपल॥ कामकोहकातिलकेचोरमोह
द्रोहछोहछोडिएसंचेतहेतहीएसनेहथल॥ आपनोस्वरूपस्वछसावधानसंगरंगबूभिकेविशेषदैषत्यागिएमनोज
मल॥ पुगलअनन्यऔरहैरंगारतोरविनाहायेकेअचिंतपानकीजिएअबुधजल॥३७५॥ अबधविभूषनअदूषनअधार
धारिपूषनसमानतरतेजतनताकिए॥ निरवधिबोधवरवल्लभविनोदभजितनितारतगुनअगनभुकिमेंकिए॥ वारवार
विरहअनलमनमांहनितबारिगिरहतनकारननपाकिए॥ पुगलअनन्यगोरस्यामअभिरामछविअकथअपाररोमरोम
छकिछकिए॥३७६॥ हायमहेहासहेमकोसवहवायसवहैसअफसोसओमकनसममानिए॥ सतगुरुसंतपायपास

॥सीताराम॥

तोसप्रहेहोयजोयजगजीवनसुराहसुखखानिए॥ साअससुचिसखुनसुगोससेश्रवनकरिनोप्रानिजैनेहजोसजीवजानजा
निए॥ युगलअनन्यख्यालफरामोसफर्ककरिपाइएप्रकासप्रेमपूरनप्रमानिए॥ ३७७॥ भजनविगैरकारहीगारसुहचैहै॥
भजनसैंरंगराजकाजसाजनामसबभजनप्रभावहींसैंकटैकलिपंचहै॥ भजनविनाइखलपायसरसायसुखसोगनसुगम
गनअगमउहैचैहै॥ भजनसजनसुभसजतसोहागभाग[illegible]हागसैंरहितजनवैठमुहमंचहै॥ युगलअनन्यसारसखुन
सुसांचमनेभजनविगैरकारहीगारसुहचैहै॥ ३७८॥ ऐसेसुचिसूरतिलगावैनामरूपमें॥ जैसेमनहोयफनीमनीमछ्याए
कारसहोतहीविछोहप्रानतजतमकूपमें॥ जैसेनिजअंडकोजिवावतकमठचारुचित्तदेतिसहितहेमसछोंहधूपमें॥
जैसेहामकपिनिनिहारेवामकामीनरलोकलाजगाजसममानिकअनूपमें॥ युगलअनन्यमिलेमोहननपेश्रामनि

॥नामने॥

ऐसेसुचिसूरतिलगावैनामरूपमें॥ ३७९॥ सुरतिलगाएपियपाएसबसंतहैं॥ जौलौजगजालवीचवंधीहैसुरति
नीचतौलौलालमिलनअगमकल्पअंतहै॥ वातनवनाएकहांवनैवरवैनचैनरैननमिटतरविभाषतअनंतहै॥
सूक्षमस्वरूपसारसूरतिविचारोभलेसंतसतगुरुसनपूछिछविमंतहै॥ युगलअनन्यनामध्यानहींमेंरमैरंगसूरतिलगाएपियपाए
सबसंतहैं॥ ३८०॥

पराजैानप्रतिभापरत्वेप्रेममईतौनस्मरतिकहावैछविछावैमनवांहिरे॥मनमतिचित्तअभिमानसुधसारपुनिसावितवहारह्ना
रशक्तिजानुजाहिरे॥जानकीजीवनरतिरहसस्वरूपीवामवंचनकेहेतुहैव्यक्तिकाजवाहिरे॥युगलअनन्यमतिमंदद्वंद्वरत
गतिस्मरतिसोहागिनीकीअगमअथाहिरे॥३८१॥औरेहैसजापधामताजितापेछारहे॥ताकेसमअधमअसममगवालाअ
ननजरमेंमेरेनहिपरतविचारहै॥छोईछलछाहसिधताईदुखहाहताकोउरउत्साहदृढलाखोविकारहै॥वैहिदृढधामगु
नग्रामनामरतोनित्तमतोमतअसतकुवासनाकुतारहै॥युगलअनन्यसवतोरमोजमोहमनऔरेहेसजापधामत्तजितापेछार
है॥३८२॥जेतेरिषिराजसाेऊवसैंधामवीचहैं॥होयगुप्तसुप्तसमसहजसमाधिसाजिलौकिकउपाधितेरहितविनमीचहै॥
एकवपुमुखतातवसैंश्रीअवधमध्यऔरतनसनआनदेशासुखसीचहै॥औरहूरसिकअनुरागीवडभागीतोनवासकेप्रग
टतमतोरैंतपनीचहैं॥युगलअनन्यतागहीजिएकथनआनजेतेरिषिराजसाेऊवसैधामवीचहै॥३८३॥धामकोनिवास
सुखरासनासवरीतिसें॥कोटिनकलपपुन्यपरीपाककेहहानआगमअलभ्यलाभधामविनभीतिसें॥योगयज्ञसाधनकरं
वकईवारकेरतऊनहीतेरमवसिंधविनाप्रीतिसें॥परमप्रकासपरधाममिलताकोजोनवसतहमेशाइतरीतिअनरीतिसें॥

॥श्रीराम॥

युगल अनन्य अति अचल अनूपा के फल धाम को निवास सुखरास सव रीति सें ॥ ३८४ ॥ आज हूं अवध में अमंद मोद रंग है ॥ रसिक अनन्य मान्य गुन अगन्य धन्य रमैं एकरस नित्त गर्क छवि अंग है ॥ मानसर सुतार सरूपा प्रीति नीर मांझ मज्जन हमेश ठौर ठौर सतसंग है ॥ जेते पुरवासी सुखरासी तेते नाम गुन सुनत सनेह सैं वढावत उमंग है ॥ युगल अनन्य अनमोल मनि षोवो जनि आज हूं अवध में अमंद मोद रंग है ॥ ३८५ ॥ सूक्ष्म विचार जो विचारि भली प्रकार छोडि व्यभिचार तौ गलीन हूं मे मुक्ति है ॥ पूछत न कोउ सीताराम नाम रूप पागि चाह वरवै के हित रचति सुयुक्ति है ॥ वागमन पार महिमा अपार धाम लखि होत हिए हरष हजार न सदुक्ति है ॥ युगल अनन्य नाम पास सुधारस पाने सेत हूं न छुवै कोउ कुरस विमुक्ति है ॥ ३८६ ॥ वसे धाम मांझ सो हमारे पुज्य पतन मे हैं ॥ तिनको पदुमपद प्राकन पराग पाथ माथे मेरे चढै छीन हिए तामतम है उन्हीं के सहन सोहावन सुरूक पाय गाय गुन उन्हीं के मीत है हो असम है ॥ मांगो वरदान वारवार कर जोरि जग छूटै नहीं तौलौं जौलौं तन न भसम है ॥ युगल अनन्य वपु त्यागि कर हौं वलि वसैं धाम मांझ सो हमारे पुज्य पतन मे हैं ॥ ३८७ ॥ सहज सोहायमान कोसला निवास प्रिय पावन प्रकास रास नैन मैं निहारिए ॥ आस पास खास सुभ हिम लोक शोक विन तीर पथ अनंत पद ध्यावत विचारिए ॥

॥नामने०॥

होयएकेसुपंगुचषंहीनमकडोरतिमित्रअवधसुवाससुचिसहजसम्हारिए॥युगलअनन्यधामत्यागनकीकेहेवातघातसममानि
ताकोमानमहमारिए॥३२८॥तौननरखरवरतरजौनधामवासकरतसुजन[illegible]कोउहासकरेहांससें॥जानिएअवम
सिरताजवेहमानराजअमितकुसाजघरकुतरुकुवाससें॥धामअनुरागसेंविहीनदीनखीननरहीनमूढमोहमीनवंध्योजमफांस
सें॥युगलअनन्यजमराजपुरवासकरैकलपकरैगोंमूढसंगकपटरासमें॥३२९॥कहेकोनेहमन्हायसरजूसरितसुचिरामघा
टजानकीसुघाटमेंनहाइए॥कनकभवनजानजीवनसुजन्मथलदरसपरससंतसरससोहाइए॥अवधअनूपद्रुमवेलि
गुल्मसअसुषस्वच्छअवलोकनहूंकतहूंकहाइए॥युगलअनन्यप्रानप्रीतमपयानलगिपायकेकुसंगचित्तवनिना
वहाइए॥३३०॥जानकीशधामअभिरामैमनिवासपनपालिहैंपुनीतगौरस्यामगुनगायके॥आनअभिलाषआस
धेनुपलपासमानिरहिहैंहमेप्रासरकारकेकहायके॥मानअपमानभानभावनावितानविनाध्यानछविध्यावनीछटा
इहैंगहायके॥युगलअनन्यसुखखानिरसिकनावपायखावैमेंनखेहवरवासनावहायके॥३३१॥राखिएहमेसअलमस्त
धामवीचवलिवूझिएविवेकटेकएकआसलायके॥चाहिएचवाँसिस्त्रचाहचिंतनसुचारुचवलेहेरिएहरितदुतिमनमांझधायके॥

कहिएकलामस्यामसुंदरसुभावसजिलहिएललामरतिसुमतिसुधायके ॥ पगालक्षनन्यविस्वबननिधिवीचजनि
वहियकहूपिस्वच्छसरजूनहायके ॥ ३२२ ॥ मोहँमलमूलसूलप्रतिकूलप्रदहूलहिएमधारेनवारोएकरसेर ॥ काम
कोहद्रोहसवसेनएसहायसंगकरतसुसंगमेंकुसंगवरवसेर ॥ वडाइगावाजपाकोसचिवमलीनमननामजाकोकठिनकुरंगक
टिकसेर ॥ पगालक्षनमत्र्योरकोउनवच्चेगोयोतरहेंगाविलगजोकनामसरवसेर ॥ ३२३ ॥ बुधताविगारीमोहममतावढायके
वेउवेउपंडितप्रवीननपचारठाटेरेहेअलपहामनेककारनहहायके ॥ गौनेनहोतवहूंनिराहरनिरासपनहायएहहालश्रुति
संगितापटायके ॥ वेउवाहवीचनिम्मालतमौनेकाहूकोनखाहिसखरावध्यानधारनासजायके ॥ पगालक्षनन्यसुचिसमतासेनाम
रटुबुधताविगारीमोहममतावढायके ॥ ३२४ ॥ परानंदद्वंदसेंविहीनतीनछीनपीनपरमप्रकाशनामेंनेरहेसुगमहे ॥ एकपलर
टनविहायजोवितीतहोयसोतोकोटिकुलिससमाननहींसुगमहे ॥ मधुरपिपूषसेंसहसगुनकेहहानवचनविलासवेरवानीहूं
अगमहे ॥ पगालक्षनन्यभालक्ष्येककोमिटायेहेतकरुनानिकेतयोंवखानतनिगामहे ॥ ३२५ ॥ धामनिवासेंप्रकाशहुलास
उछाहकोकारनपेखो ॥ कामकुवासहुलासहुतासमेंहोयउहासमुपासपेखो ॥ स्यामसुहासखुलासपचासेंसोयहुलासवनास
विसेखो ॥

विलास २

प्रेमअनन्यसुनामविश्वासहिएअभिलाषसुवासअसेखो॥३९६॥जानकीजीवननामसनेहविहीनविभवसमसूलसुचाउ
औरअनेकनईशउपासनाधारिकेजन्मकदेवकमाउ॥देखिलियोभवकोसुखहूसवलेशनमोदसुखेदअगाउ॥प्रेमअन
न्यभिरयोमनकोभ्रमनागुडथाउनकानछिराउ॥३९७॥कोशलेशकोपंथनिरालो॥केवलकामदरामकृपावलहेरिस
केकोउएकविरालो॥ज्ञानविरागसुयोगउपायथकेतहिठौरसुचित्तनगिरालो॥प्रेमप्रतापप्रकाशतहैजियजागतज्योतिप्रभातिहि
रालो॥प्रेमअनन्यनजानिसकेकोउकोशलेशकोपंथनिरालो॥३९८॥हेडगरोनिजनेहजुदाहीं॥चालप्रपंचननेकच
लैतहँताकततीरउपायतदाहीं॥सीससमर्पनशोकसमेतकिएपथपावनरंचकदाहीं॥कौनकहौंफललाभसुमारगपाय
परेशअधीनसदाहीं॥प्रेमअनन्यअयोगकेहेमुखहेडगरोनिजनेहजुदाहीं॥३९९॥नेहकेराहचलैमतकोई॥धारतहीं
पगएकव्यथाबहुवीचविषादवपावनहोई॥लोकहूँवेदकोवंधनलेशरहैनकहूँतनमानसखोई॥चाहउछाहउजारिकेर
मनमांझधरेदुखदारुनदोई॥प्रेमअनन्यउपाधिवडोनितनेहकेराहचलैमतकोई॥४००॥अन्पारी०॥प्रथमशावदसुचिस्र
वनसुनतगुरुवचनविलासवेदनादप्रेमप्यारसें॥देखपुनिनैनरूपअमलअनूपरामलोकअभिरामरहेमोजरसधारसें॥

॥श्रीराम॥

अमलविरागबोधसंतसमेतजनसुनैजससास्त्रहूंलगायमीननारसैं॥ ग्वालअनन्यनैनअक्षनविचारवरकह्योमनमन
नविचारिएसुतारसैं॥४०१॥ रसनावहत्तवैनगंधदुर्गंधगुनभलोबुरोराहरसपरतसवतोरहै॥ सूंघिकेसुमतिनिजनासिका
सैंरीतिप्रीतिअनरीतिवोलोवरवाकलिएगोरहै॥ कारतसुत्यागमलमीचद्वारसाथतवहोतहैअमनरुचिसोंचहींनहोरहै॥
ग्वालअनन्ययाहीभांतिसिक्षपीपैजलअमलकरतनहींजानैमतिवोरहै॥४०२॥ हाडचामसंहतरहितवरबोधकरतौल्यो
चित्तसाथमैंरूमैलिकविचारको॥ उरधप्रकाशपरमेशकोनिवासतहांकियोपांवपांवरचपलमनछारको॥ नीचओकता
मसनरकरजतमलीनतामेडारिदियोभालआपनोअजारको॥ ग्वालअनन्यनीचमनहींकोखलसवकीजिएविवेकत
वपावोलाभपारको॥४०३॥ मूंदेहगमीतविस्वावरसविकारसाथदेखतीनोलोकलोकपतिहूंविश्राषहीं॥ लौकिककुवा
कखाकमानिकेवधिरहोयसुनैशब्दसारभीतिभांतिनसुवषहीं॥ त्यागअवजगतकुवासतवखासवाससरससुवासकं
जसूंघेविनरेखहीं॥ ग्वालअनन्यमौनकिएपरमेशगुनगावैरसएकरहैनाहीअविसषहीं॥४०४॥ मोहवामवामनावि
वेकनिधिविश्वनाथयाज्ञवल्ककादिमहामुनिहूंवखानहीं॥ सोहैसानकूलसूलहूलभूलहीनहोयखोयवासनाविकल्पविषविधानहीं॥
म

जोहैजगईशरामरसिकमयंकमुषसुमुखसैंदवपासवसेसुषखानहीं॥ युगलअनन्यछोरहैंअमितप्रकारदषरहितअनिमिष
भावसंतछानहीं॥४०५॥ सहचरीभावकेसमानआनभावना॥ जामेंजीवजानभानहोतगलतानहानहिरसहिसावआव
नैनवैनछावना॥ परहानहोयएकछनगौरस्यामछविनअतनवतनविसरायगुनगावना॥ जानकीजीवनजूकीरहसरसाल
सुषउदयउरहोयअनायासप्रेमपावना॥ युगलअनन्यनीकैनैननिमिहासोनित्यसहचरीभावकेसमानआनभावना॥४०६॥
सीतारामधाममांझअचलमोकामकरियुगलकिशोरजसजोरनितगाइए॥ सांचीरीतिप्रीतिकीदसाअनूपकोनकेहकोपि
कविमतिदविजातमतमाइए॥ लोकअभिरामरीझिवेनिमित्तदूसरीनवीनअद्भुतकोउधामविनापाइए॥ युगलअनन्य
जगजालसैंउदासहोयएकरसनामधाममैमोजमेंसमाइए॥४०७॥ चित्तचिंतनसुखप्रथममईजीवारकिलकिंकिनीकलित
कोअवाजमुददेतहै॥ मंखमरूनादस्वच्छनवलनिसानधुनिवांसुरीविचित्रमित्रचित्तचोरलेतहै॥ भौंवरगुंजारखन
सिंधुसुखसारनादसुनतश्रवनअपरोच्छवोधहेतहै॥ युगलअनन्यइभांतिअनहददिव्यविपुलविधानमतभेद
भवसेतहै॥४०८॥ नादमैमिलायमनअमनअतनहीनहोतसुमनसेसेसहससभांतिउचहैं॥ पाइदलसाइकरनामरस

॥श्रीराम॥

एकसाथकीजिएविवेकविलसायआविगछ्चहीं॥ वाढ़िविषवीजवढ़वायआयवायहायहिरसहिरापरसपीजिएसमूच
हीं॥ पगलअनन्यनामप्रवलप्रतापपायअमविरहितआपहोयकालकूंचहीं॥४०८॥ सवैया॥ चश्ममेंनामहिंकोचश
मानितशौकसेमतलगाएआतुर॥ भस्ममेंछन्नप्रकाशपरावरपावकेपरिखिएनामेंसंसातुर॥ रस्मीरफाकतसंतसजार
एछोडिएछौंहछलीपथपातुर॥ पगमअनन्यसहायकसाजनसोहेवसीमसुभागमहातुर॥४१०॥ डाकिनीसाकिनी
काकिनीसीकटुकामिनीपापिनीसांपनीसांची॥ नेकुदयानमयामनलावतीगावतीगीतकुमीचनीकोंची॥ टकविवेक
कुषीकरनाहिकनासनेहतमेहोपलमाची॥ पगमअनन्यवचेविरलेजनचौदहूंलोककेभालमेंनाची॥४११॥ कौनक
हौंउपमाउनकीस्नेकसमरएईनदूसरीसामा॥ मौनभयानकभारभरोविषभूजतीमावमवेशमोहामा॥ तौनकीगौनस
भीकरनीजिनकेघरछालनीभीलनीभामा॥ पगमअनन्यसिपावरजहेरखलाइएनैननहींवरवामा॥४१२॥ जेतज
हानपुराननमेंवरनेदुरवहागविरागविनासन॥ तेतसवैसमयोसुमहीनकोपायप्रतापकरेभवभासन॥ सांचीकहौंन
वथोंतिलहूंभरिनायकानीचसहादुखदायन॥ पगमअनन्यठकोनोनहीपलपावमिलेहियहायप्रवदायन॥४१३॥

॥नामने०॥

मृषा

नामसैंरहितसवसमटूटीखाटको॥ सूकरस्वकालस्वानअसनअपूतसठसेगोरेजेरमेरवेरदूकपाटको॥ लोकपर
लोकवीचवाकोलेशमाननाहिंघोवीकैसोकूकरोनघरकोनघाटको॥ कोटिनकलेशकोरिमेंचपैचनामविनान
फानकहापिफूटीआंधहूंवराटको॥ पगलअनन्यनातानेकहूंननातासोमेरोनामसेंरहितसवसमटूटीखाटको॥४१४
सीतारामनामगुनरूपधामलीलाविनासुनैआनध्यानतापैनालतहूजारहै॥ गीताभागवतहूंकोसंवतविसेषसुचिजा
नैवुद्धिविमलरहस्यसुषसारहै॥ परमपियूषमतसद्दसमधुरजसछोडिऔरसुनैव्यर्थवचनविकारहै॥ पगलअन
न्यतानविटभुजनरनाहिंचाहतपुरीषपामेंआननाविचारहै॥४१५॥ जीविकाकेहेतकौनरचेफेरफंदमंदमतिनसें
असद्दमनोरथसुनायके॥ पाल्योजिनेपेटमोंहढेअसोसीतानाहआसचारुचितव्हेहादहोवासनावनायके॥ रहिएहम
समस्तअस्तउदयदेखिजगभानुससिउपमाविचारिएअघायके॥ पगलअनन्यअनमोलतनधनपायवसिएवि
शेषधामनामगुनगायके॥४१६॥ खटकानिजनामहिकोमनमेंपटकासववातहिएहटका॥ हटकानहिमानेमना
उतउसिखलायकेसंतनकोलटका॥ लटकारहेरोजनचोजलेखभरवमारिकेदसनमेंभटका॥ भटकामननीच

॥श्रीराम॥

वदेस्योभेलतवयुग्मअनन्यनहीरवटको ॥ ४१७ ॥ रटिकेसुखलीजिएनामभलाकलाधारिकेकुंजननेमअटिके ॥ अटि
केफिरिमोहमनोजकभीसवनासिहैआपहिसेंलटिके ॥ लटिकैतेंगवायोगवाँरवधातनमानुखवाहनेमेंवटिके ॥
वटिकेनकहूंमुरयुग्मअनन्यप्रमोरलहोरसनारटिके ॥ ४१८ ॥ रसनेनिजनामसेंनेहनहीकरतीपस्योकोनसुभावति
होरी ॥ हूंसनेनेससहोउरिएगुरसंतकेभावविचित्रविचारिकेधारी ॥ धसनेनेसेंनफाकहेंरक्तनहीवहीछोडिकेसत्यसुसी
लसम्हारी ॥ कसनेनेंसनेहरकरीकटिकोसमासोहनाखूवअनन्यविचारी ॥ ४१९ ॥ हापउनपांचनकेमिलेपरपंचमेंवच
ह्योमेअचेचतरंचहोशहूंनपारको ॥ खायविषवलितमनोजमुहमोदकहींमात्योरात्योताहीकेखुमारीमेअगारको ॥
गायआयवायधायधायनिमाहींकेवीचमीचआइगईअतितिनिकटअवारको ॥ पुगलअनन्यरघुरायनामहीसहा
यकरेतोउपाधिपरिहरेभवभारको ॥ ४२० ॥ लागिरहेउरमेहमेसाधकधकीजापजीवनजलायोमेंजहानजालफंसि
के ॥ रागीरह्योराजनविरागीभयोकहूंमनअतनकेकरमेंविकायोकटिकसिके ॥ भागीप्रीतिरीतिपरतीतितिनीतिपथलैंपथ
सवसाजभएरनहीसेंरसिके ॥ पुगलअनन्यअनुरागीनामरूपसंगकिपानसनेहतीरसरजूसुवसिके ॥ ॥ ४२१ ॥ ॥

॥सीताराम॥
॥नामने०॥

मेरोस्यामसुंदरसनेहीसीयसंगरंगरमतहमेशामध्यमहलउमंगमें॥ पावपलविलगाननहोततैहेविहारसनकिएहिएहारप्यारीरमो
रसरंगसें॥ रतउतजानकीनवरचाचलावारंचपंचपरपंचमतहूजिएकुसंगसें॥ युगलअनन्यअलवेलीआलीचित्तचष
चटतरहस्यव्योमवीचचारूचंगसें॥ ४२२॥ सखीसुखीदूखीवातहमकोसुनावोमतेमेरीमतिरतिरहीरहस्यसेशमें॥ भूखीभाव
वल्लभसनेहसुधासारसखीपरमपियूषप्रीतिछाईअंगदेशमें॥ लोकवेदवंधनभुलाईसुघराईमानमानहूंनसाईरंगवा
ईखिवेशमें॥ युगलअनन्यअलीकलीसीविकासीदृगलागेरसरासीवरवदननिशेशमें॥ ४२३॥ कोटिकोटिब्रह्मांडव्या
पकअखंडजसजाहिरसुछंदस्वेदनीयछविछनवागावर॥ किरनिकतारकमनीयरमनीयचंदअमलअमंदछत्रराजतसु
सीसपर॥ श्रीगोविंदमिलितकलिंदनंदिनीकेलालमृगमदकीवपुतरन्दुनीलमनीवर॥ युगलअनन्यतातेसंभचित्त
कंजस्यामसदसस्वरूपरामकहतकलंकउर॥ ४२४॥ प्रातसेमसुभगासुभागरागरमनीयनामअभिरामसीतारामहीउचा
रिए॥ प्रीतमप्रकासअंगाअमलअनंगकोटिसमनाअयोगचित्तवीचहींविचारिए॥ पावनपुनीतप्यारमहितसुगाय
गुनअगनअघारमोजमानससंचारिए॥ युगलअनन्यकामकालिमाकषायकुलकारनकलंककोहकतलप्रचारिए॥ ४२५॥

कृप२

महामोहमानसनिवासनिर्विलीकहंसवंसअवतंसनामरमनरसालहीं॥ ध्याइएसुप्रातवातविसदविचारिचित्तहित्त
वित्तपाइएअनूपरूपलालहीं॥ दीजिएभुलायलायलागपेलोकसोकैंतिमिरविरूपधूपजाहिरजवालहीं॥ युगलअ
नन्यलीजेलाभआवधावैवेगिविलंवनेनकेटककीजिएकमालहीं॥ ४२६॥ सोवेसांझप्रातताकेमुखमांझधूरहै॥ मानु
षवपुखप्रियपाउनेप्रभानपायपूजतनजौनतौनतिहूंतोरकूरहैं॥ कयेकोटिकथनीकपोलकल्पितकडुकायरकलंककैंसेसमेत
खेतभूरहैं॥ संतसंगसरससुरंगअंगहीनदीनपीनपरपंचवीचचारोचीजचूरहै॥ युगलअनन्यवातविसदविचारनीयसोवेसा
वेसांझप्रातताकेमुखमांझधूरहै॥ ४२७॥ सुधासिंधुनामरूपगुनसुमिरननीककारनविषादवीजवारनविमोहहै॥ अमलअ
नूपलोकसोकविरहितहेतुहेरिएहमेशाअसमसीमअवरोहहै॥ संतसीयकंतकेसनेहीवैदवैनवरवैनचैनऐनरूपछाकेछकि
छोहहै॥ युगलअनन्यसावधानचितचेतुसठनाममुसुमिरनविनाजानदुरखेहोहहै॥ ४२८॥ युगपरमानुहींकोअणुवरनतवुधतो
नअनूसमत्रसरेनुनिर्द्धारिए॥ हिगातसरेनुकोसुवधतासुतीनलवतासुतीननिमिषसुचित्तहींविचारिए॥ प्रगटनिमेषग
नछनपांचकष्टासुपंचदसलघुपंचहिगानाडीधारिए॥ युगलअनन्ययुगनाडिकामुहूर्ततीसरैनअनपंचदसपछअवधारिए॥
४२९॥

पुगलसुपक्षमाससुरितुउभयप्रतक्षषटवत्सरनीकैंनैंननिहारिए॥ याहीभांतिचारोयुगलासवनहिसावकीरहोतफेरकलपहूंहजा
रयुगधारिए॥ ऐसेहींसुरैनफेरभोरनिसितीनसतसाठसुवरषकमलासनविचारिए॥ युगलअनन्यपक्षजआयुएकसतअंतना
समानधीरनामहींसम्हारिए॥४३०॥ जानकीजीवनकेगुनस्वच्छसुधासतस्वादसनेहसेंपीवो॥ आयुषहोतवितीतवृथावि
षवासनावीजनहिपसवीवो॥ छंछुछसमानवितानसभीमतउज्वलनामअनूपमधीवो॥ युग्मअनन्यसियावरधामनिवाससनो
कुललोकनछीवो॥४३१॥ जानकीजीवननेहनहावो॥ नाहकहींहसहूंदिशिहोरतपोरतरागनहसापयहावो॥ वोधविचित्रनबूझि
परेकछुज्ञाननगरीपगरूरगवावो॥ कानकरोनकहूंकथनीकलिकूरविकारिविचारविहावो॥ युग्मअनन्यपियूषपगेपनजानकी
जीवननेहनहावो॥४३२॥ जानकीजीवनआससजावो॥ लोकपलोकससोकलखोटिसिद्धसरीहोतविसेषलजावो॥ श्रीअवधेश
किशोरविभूतिविलासविचारिविवाहतजावो॥ आपनेमोजमेंमातिरह्योघरसोहनींनेहनिसानवजावो॥ युग्मअनन्यअमोलविभ
वहितजानकीजीवनआससजावो॥४३३॥ सदाचारसारप्रातप्रथमसुसैनतजिनामरूपध्यानजीहसुजपसम्हारिए॥ अष्टका
लमरससुमालसेवासानकुलयुगलकिशोरतीनोभांतिनसुधारिए॥ एकपलविलगनकैसेहूंकरनभृत्यकीजिएकदापिस्वच्छशौकसत
सारिए॥

२

× महीहै

युगलअनन्यधामसुदृढनिवाससजिसावधानजानकीशसुजसउचारिए॥४३४॥जानकीरामरहस्यरंगेजननजानतजान महीहै
॥श्रीराम॥ जहाननहीहै॥ आनकीकीरतिकानसुनेनगुनेसपनेपनसांचसहीहै॥ वानकीभूतिअनित्यतकेदृगहेरहेहारिष्टविहारसुचाही
युग्मअनन्यअजानकीगैलनमैलकरैकलिमेलसमाहीं॥३५॥ ओरेनरनीचबुरतेकोनलगतनेकटकअविवेकजडताग
तनमूलिहूं॥ केकाजकटुककरालकाल्लव्यालविषचढिविनिमित्तरागावाजमीससूलहूं॥ वालुकासुभीतिधूमधौरहरहामस
मअथिरसरीरसोअनीतिप्रतिकूलहूं॥ युगलअनन्यरामनामअभिराममूढभजतछरीकअलसातअनकूलहूं॥४३६॥
वपुख वारवारमानुषकहांपाइहै॥ जैसेभूमिरूहपातपरतसुभूमिफेरिकोटिनउपायसाखलागतनलाइए॥ जेसेसूरप्रवलपरायो
स देषरायपीठपांचनकेवीचफेरवीरतानआइए॥ जैपरपतिसंगरंगसतीएकवारकियापतिव्रतफेरिकैसहनछाइए॥ युगल ॥नामनेह०॥
अनन्यफलकदलीविचारमनवारवारमानुषवपुखकहांपाइए॥४३७॥ सीतारामसरनसुधेशसिरताजराजवैरऋषि
राजमहाराजजंगजीतिके॥ जानिहैयश्रीशामलमेरभावखेरछेरसमननिशंककअंककरनविभीतिके॥ धर्ममानमन्य
अग्रगन्यजौनननित्यनेहनिरतविकारनविहायमीठनीतिके॥ युगलअनन्यआमकामवरनामविनतेरैतीनतमपारपागेप्रीतिरीतिके॥३८॥

कोषोलिषशारनसेनेहकरकैजवीचविकेमवहारखीजवासनाविनिंदिकै ॥ महामोहमांहमनमगनपगनेप्रेमस्त्रगानललामलग
वायअविनिंदिकै ॥ विमलविकासकलकमलकुलासहिएहोयअनायासचित्तचमनसुछंदिए ॥ युगलअनन्यअवधेश
नामधामगुनविगतकुसाधननमांभमतफंदिए ॥ ४३९ ॥ पांचोमनवाहसविषारहढषिदिव्येहखुलेखुललचायनामधाम
मोहमंहिरै ॥ कठिनकरालकालकीजिएविचारवरअपरअसाररंगछोडिएकुछंहिरै ॥ कलितकरारकोनिवाहिएनिमेरव
नेकटेकसमरंगधीयधारिएसुचंहिरै ॥ युगलअनन्यलोकरीतिविसरायअवसुभिरसुनामगुनग्रामचित्तकीहिरै ॥ ४४० ॥
सवैया ॥ नाहकवाहकवेलसमानफिरेचहुंओरतकेनहिहाहक ॥ हाहकरेजेसमायसहातउमूरहोयरघोचलचाहक
चाहकठोरघनोघनघोरअथोरप्रमोदसुप्रानकोगांहक ॥ गाहकजीवकोऔरनहीसियरामविनासवनेहहींनाहक ॥
४४१ ॥ नाममनीषामुनीषागुनीषाअनीषाखवीषासमीपावनावै ॥ सांचअनांवअकाचमनोहरनामविभूतिसोहागसना
वै ॥ आठहुंजामकषोकहिकोकलपेममहायलवासजनावै ॥ युगमअननमनअनूपअहाअलवेलीसनेनसनैविचततनावै
४४२ ॥ आठजामअहामामिलेनिजनाममहामुदमूलमनोहर ॥ संतसिरोमनिस्वच्छवजारविहारविचित्रविषसुचिसोहर

श्रीराम

चाहिएचाहनआनकछुगपपंथपुनीतअनापवभोहर॥ युग्मअनन्यविलंबविनविहायकेवेगिविसाहिएज्ञानसेंजै
हर॥ ४४३॥ मैलतनआईननीकेमेरमहवूवमनोहरहूँनहिआयो॥ प्रीतमरूपनभेंटभयोनतौजायमिल्योछविछावनीछायो॥ चा
हअथाहहिएहमेरेहोउवातमेएकहूँनाहिनपायो॥ युग्मअनन्यपियामिलेनोहितकोटिनकामकमानतोरायो॥ ४४४॥ जानकीजी
वनजूकीकलाकलकेंमुदहोअगनेफैलिरहेगी॥ चित्तमेंचांदनीचारुचहूँदिसिहेरिविकेतापकलापनसेगी॥ नाममहामुदरैहैनस
चैनसुनैननिहारिविकलावहेगी॥ युग्मअनन्यअमानवतारतिआकस्मातउमंगजगेगी॥ ४४५॥ धन्यसोईसततसंतसरू
सियकंतसमेतवितावतवासर॥ अनन्यअधारअभावकिएप्रियप्रेमपियूषपिएपनपासर॥ जन्यजहानविहानतिन्हैगनतीन
हूँछीनअहीनअनासर॥ युग्मअनन्यनशोकअतंकअरंकअपंकसुमज्जितसुधासर॥ ४४६॥ अनन्यरीति॥ परमपरात्परप्रेम
परमेससमयुगलस्वरूपगुनआगननिहारिए॥ अद्वितीयअगुनसमरूविस्वव्यापीवरवपुखविचित्रयुगरूपपामधारि ॥नामने०॥
ए॥ विघाविपरीतिवुधिपायकेसंकोचपुनिविमलविकाशविभुधीयअवधारिए॥ युगलअनन्यएकरसस्वादसादसीम
सहजस्वरूपमानप्रेमहीविचारिए॥ ४४७॥ सीतारामसरसस्वरूपसेंअभेदप्रेमहेममनिरविकोविसुद्धतिसमूहहै॥ भाववर

॥श्रीराम॥

॥५४॥

वच्छभक्तपाहींमेंसुलभसुद्धिसानकूलसुमनसमीपवल्लव्यूहहै॥ रामरोमरागरंगअमलअभंगगतिसुरतिप्रतच्छप्रागटातजसन्नह
है॥ युगलअनन्यनित्यनवलनिशंकनेहकेसहूंनेनकेघ्टकपारपरत्यूहहै॥ ४४८॥ माईसारसच्छसर्वेशसानकूलफूलहूल
शूलभूलसमनेनकऔषधीशहै॥ जामेंजातियुगलजसीनजगमगपीनघ्टीनताविहीनलीनमीनगतिवासहै॥ सीताराममम
हामाद्यधाममधुरेशप्रेमयागाछमसिंधुदीनबंधुअवनीशहै॥ युगलअनन्यअनमोलतोलपोलपारपार्षदप्रपंचप्रविलाप
कुलतीसहै॥ ४४९॥ प्रेमप्रतिकासप्रतिबिंबहूंपरेतेनेकविविधिविकारविनसातव्यवधानविन॥ जानिहैंजसीसमुखसरस
सनेहीसंतदूसरोनभावभेदपाइहैंप्रभावरुन॥ छोडिएछलानमतअमतविलीनवादजोहिएजहानजनतागविलगायकिन॥
युगलअनन्यऐसीअतुलअनंगगतिकोउकोटिमांझलहेलालचीललामघिन॥ ४५०॥ प्रेमदीपवीचवासकीजिएक
पापकामकालिमाविहायमोजआठजामनूरहै॥ जामेमहामोदसीयरामसुविनोदसिंधुविसदविलासवीचिमध्यमसहूर
है॥ प्रीतिपागपेगपरिकरजीवजूहव्यूहपरत्यूहदरिहतविशेषिसस्वच्छसूरहै॥ युगलअनन्यअनहदिवसमुचाहचित्तसोऊ
दिव्यदिनमेहूंहोदहैंहुजूरहै॥ ४५१॥ अथभेदसरसीसिंगारमेमनोजमददमनकरनगनसुमननिहारिए॥ नैननैवैनऔनचैन

।

॥५४॥

॥श्रीराम॥

त्रिमुख
३

संगआठअंगपुनिउज्वलरससमेनरीतिहिंविचारिए॥ समैअनुसारभोगनागभांतिकांतिनिधिकुंजकमनीयपाहीरीतिअ
वधारिए॥ युगलअनन्यबागरागअरुस्वादजानिहै ~~जानिहै~~ सुभेदरसरषिकसुपाछिए॥ ४५२॥ रामनामहीनकौलकाफि
रकसावहै॥ जोहिवनजोगमुखैविमेषमेषभावनाविपेतप्रेतपावरगतावहै॥ सांचोसतसंगरंगअंगमेननेकचहैसोवहैसोले
कवोचतउखारिजरखरावहै॥ महामोहमंगलनिवासीअवधेशनामअमलअनूपआफतावमाहतावहै॥ युगलअनन्य
वैनविसदविचारनीयरामनामहीनकौलकाफिरकसावहै॥ ४५३॥ रामनामहीनहरसायतहलाकहै॥ चोहचितचाहक
रिकेराकरतवकोटितउनअरामपावपलकसुवाकैहै॥ तीनोलोकशोकसैंसमेतव्यवधानविनाछिनछिनछीनकिनकै
मितविपाकहै॥ जेतीकछूसीखाचतुराईनिपुनाईतौनदुर्वावैनिमित्तभववारिनिधिधाकहै॥ युगलअनन्यछोडिदीजिए
विवादमनरामनामहीनहरसायतहलाकहैं॥ ४५४॥ रामनामरटेरिद्धिसिद्धिसुखस्वच्छशुभसुकृतसमूहपरत्यूहपारमा ॥नामने०॥
निए॥ जेतेजगईशतेतेनामममहाराजवलमएवरविहितरतीकसंकनानिए॥ पांचोमुक्तिशक्तिभावभक्तिरामनामतंत्र
संतश्रुतिसंवतसुरएकरसजानिए॥ युगलअनन्यजानकीशमेंसनेहसेंजसजिएसहैवयाहीमांझमौजआनिए॥ ४५५॥

॥श्रीराम॥

॥५५॥

॥सवैया॥ ब्योमविहारबहारविलोकनकीकुलकीमतनामैंतप्यारे॥ संतसिरोमनिजानतैंहैंतजिकेतमत्तारअजारअगारे
फूलतफूलअजूबजहांरसलंपटलोभलिएललकारे॥ युग्मअनन्यकेहैनबैनमनमाहउमाहउदोतअपारे॥ ४५६॥
नामगरीबनिवाजगुलामगरीयगरीयगुनाकरवेदबखाने॥ आमअबाजअकाजनहींसुभसाजसमाजसुधासुखसाने
वामभिजाजकुराजखपेखलखाहिसखेहछोपडरपाने॥ युग्मअनन्यसुनामसनेहहैंसंतमुमुक्षुस्वरूपसमाने॥ ४५७॥
सरजूसरितातटछायकुटीकलकीरतिगायगरूरअमानैंसैं॥ भायविभवजगजायलखेचखचोगुनस्वादचखेजियजानैंसैं
पायपरोसोप्रमोदमहारसरासविलासहुलाससुजानैंसैं॥ युग्मअनन्यअसीसरसायविहायविषयभववासनाप्रान
मैं॥ ४५८॥ त्यागविरागसमेतभएपरसीलसकोचभलीविधिछोडे॥ जेतसनेहीमैंस्यामसुचिसेवकसंतसहायतिनैंसमु
खमोडे॥ नामललामस्वरूपअनूपमैंचित्तकीवृत्तिसुप्रेमसेजोडे॥ युग्मअनन्यविचारलिएजनहैजगमेंकोरथोरे
ईथोडे॥ ४५९॥ जगजनमनहींकोरंजनविकारभवग्रंजनविषयगनमेंजनकुसीलहै॥ नेहरसकेंजनकोगंजनकर
नहिताहिसकनजनुचित्तवासनावकीलहै॥ खंजनकेसमकरिडारतचपलपलअग्रमलविनासनकोमान्योमनतपीलहै

॥५५॥

॥श्रीराम॥

दिव्यगुनवारिदकोप्रवलप्रभंजनसुसज्जनसनेहिनकेसीसमध्यकीलहै ॥४६०॥ विरहवीजवावैंउरकीधौंवरुनकेनमं
जुजीयजोवैंअकिसोवैंसुजानमैं ॥ रोवावैंकिधौंजोवनसघनवनमांझमीतरावाआकिवैठिकेएकांतकांतप्रानमैं ॥ धोवैं
किधौंचाहरचमत्कारचाहविनअथवाआकासआसनिचवैंआमानमैं ॥ जुगलअनन्यकहीकीजिएविचारसारहीजे
रसगोयपानअमलप्रमानमैं ॥४६१॥ सवया ॥ मंगलमोदमहोदधिहैशोकहीनप्रवीनजोनामहिध्यावै ॥ मानमहा
नगुमानवितानविहायपियप्रपचहूनकोप्पावै ॥ धीरजध्यानधरेशधिपाधरिधौलसुधामवसोछविछावै ॥ जुगलअ
नन्यअनेकअटेकअमंगलमलीविकारवहावै ॥४६२॥ हैवुधवासरवुद्धिविधानसदासुमिरोसुखसंगसनेही ॥
वादविवादविषादसवादविषयवहवारएनेहनचेही ॥ वासनावीजअवीजलखोचितचाहचदायचरित्रनि ॥नामने॰॥
रही ॥ जुगलअनन्यविनोदविभववरहोयहमशावसेगनगेही ॥४६३॥ श्रीगुरुवासरस्वच्छसहासमुझेवुधवोध
विहारवदाए ॥ स्वामिनीसीयसमेतसिरोमनिप्रीतमरूपसुचिंतचदाए ॥ स्वानमसानसमानअपावनदूसरीवास
नाकानकालकदाए ॥ जुगलअनन्यसुभालसोहागलिख्यौतिनकेमनिनाममदाए ॥४६४॥ हैकविवारउदारसही

उरउज्वलहोयसिपावरगावो॥ कामकखायकलेककवाहतुक्रूरकलानहूंसिंधुवहावो॥ काहूसेंसंगसहायसजोमतत
त्वविवेकिनेकोठगजावो॥ पुग्मअनन्यकनायतकायमधीरहियनिधिनेहनहावो॥४६५॥ सूरजसूजसुवारसोहाव
नशोकसमेतसुधाछविपीजे॥ स्यामसलोनेसेमाफसनेहसजायसभीमुखवारनेकीजे॥ मामसुवूहसुरूहवहीदिसिलू
वलगायलहालुरिलीजे॥ पुग्मअनन्यसमागमसंतसिरोमनिस्वासरहेलगिभीजे॥४६६॥ द्विआद्विवाकरवारप्रभाकरआ
करमोरसुधामवसीजे॥ रागकुरागसमागमियायेकेधामसिरोमनिस्वाहरसीजे॥ दारुनदाहदुरावनसंतसभासदवी
चविशामलसीजे॥ पुग्मअनन्यरमाहिनहीहिनदूनीवदेसियरामपसीजे॥४६७॥ सोमसोहावनवासरमांझसुभो
रहुंमांझसजोसतसंगै॥ शोकसमूहदुरूहदुरेहिलहिव्यताछायरहेरसरंगे॥ स्यामसवीहनिगाहनिहायतहोय
समाधिमसोयसुरंगे॥ पुग्मअनन्यसुधीशमझेंसुखसातहूंवारविहारउमंगे॥४६८॥अनन्यगा॥ सोतोवारवीचमी
चमलनललननामरूपरसकूपधूपराहितविचारिए॥ नातोप्यारप्रीतिदृढअचलसजायजीयवीयवातब्रातसम
मानिनिन्नटारिए॥ रातोरंगमैनमोरअैनमैननानमरमथननिहारिसर्वसमुपवारिए॥ पुगलअनन्यतातो

॥श्रीराम॥

सीरोसमहोयसबजीवनमुकतिपरएकरसंधारिए ॥४६९॥ धन्यसोईमरसंतसदाजिनकेचितछायोसनेहसुधाकर
कौनकहैंतिनकीमहिमागरिमाश्रुतिशास्त्रप्रसंसतमाकर ॥ नामनिरंतरगानकरैंभवभानविहानहरैसुखमाकर ॥
पुमअनन्यसुसंगसजोतजोवासनावीजमहाभ्रमरूपाकर ॥४७०॥ कालकरालकुलालकिपावकभाजनकौंतुक
हौंपुनिफोरे ॥ वालविलाससमानसदासबभांतिहुलासरहेंगवारे ॥ ऐसेहूंजानिकेजालनवालपग्योमन
मूरखवित्तवटोरे ॥ पुमअनन्यअसीलवहीपलपावनप्रीतमसैंमुखमोरे ॥४७१॥ रामहासविमल्लविचारकेवि
हीनविस्वविरसविवारिएनशंकरंचजानिए ॥ संतसंगसुरससजाइएसुसोकसाजित्यागिएतमामतममानसप्रमा
निए ॥ प्रीतिपनराहतरसैसरागारूपरीतपरमपुनीतधीयधोवतसुवारिए ॥ युगलअनन्यधामअचलनिवासराम ॥नामने॰॥
नामप्रतिकासप्रेमप्रवलप्रधानिए ॥४७२॥ सत्यकेविहीनहीनहानवसमाननरनीचकीचरूपमीचमिलितह
मेसहीं ॥ सत्यकेअधारधराधरतधरेशाधर्मकरतसुन्यावबेदविहित्तविसेषहीं ॥ सत्यहींपरमपुरुषपावनप्रतच्छ
प्रियजानतसुजानसुखखानसाँचरेसहीं ॥ युगलअनन्यसत्यसवदसुखासपरसत्यलोकवाससियरामअवधेशहीं ७३॥

हापरतउतवारवारहींमैंजातदिनछिनछिनछीनदीनताईद्रवहानिहै॥लायलोकलाजदगाबाजखरखाजसाजकरतअकाज
मनमेंरोगविषवानिहै॥संतरसवंतनसमीपजातसकुचैंतकायरकुपूतनकुसंगसुखखानिहै॥युगलअनन्यआसअसतसमा
जरुचिसुचिसीतारामप्रेमपगेहितहानिहै॥४७४॥सीतारामविमलविहारसुखसाररूपनामसुमिरनआठजामकलकामहै
नैनजाविचित्रतीसवासरसरासरलासगावैगनगीरपीरविगतविरामहै॥काहूसनलेनदेनरररखांविवादछलछंदगनहेम
शत्रुसमहेरोवसुजामहै॥युगलअनन्यअनन्यग्रासकालफांससमस्वामिनीशरननहींमेंसवछूटअभिरामहै॥४७५॥
चित्तचलचालमेंविहालवुधवालहै॥चामीकरचमकचरित्रअपवित्रपलपावैवीचकेरहैरमोहमदमालहैं॥वीती
वीतीवातैंनातैंघातैंघनमोतताकोपाइअनुवादसजिसेवसततमालहै॥तीतीतीतीरीतिअनरीतिअपुनीतिप्रियताहिंमम
गनमुख्यमानतनिहालहै॥युगलअनन्यनामसेंनहोनरवचेकोईचित्तचलचालमेंविहालवुधवालहै॥४७६॥चित्त
हीकोअखिलजहानचमत्कातहै॥वेदसंहितापुरानतंत्रनैंमख्यातसंतसुमतिनिरूपेभेदभाषासेरहातहै॥याकीपांच
ऊत्तितामेंपायपीनहीनछीनकैंवेगतेगतेजतरमतहै॥चिंतामनिसमयामेंगनसंततसुधीकेंजानीनहीजाततौनकौन
तीनि
भावहतहै॥

॥श्रीराम॥
रहे

पगालग्र नन्यत्र्यारवाद्मतवालनकोचिनहीकोत्र्यविलजहानचमत्कृतेहे॥४७७॥ चित्तचलत्र्यचलकरतमोहम

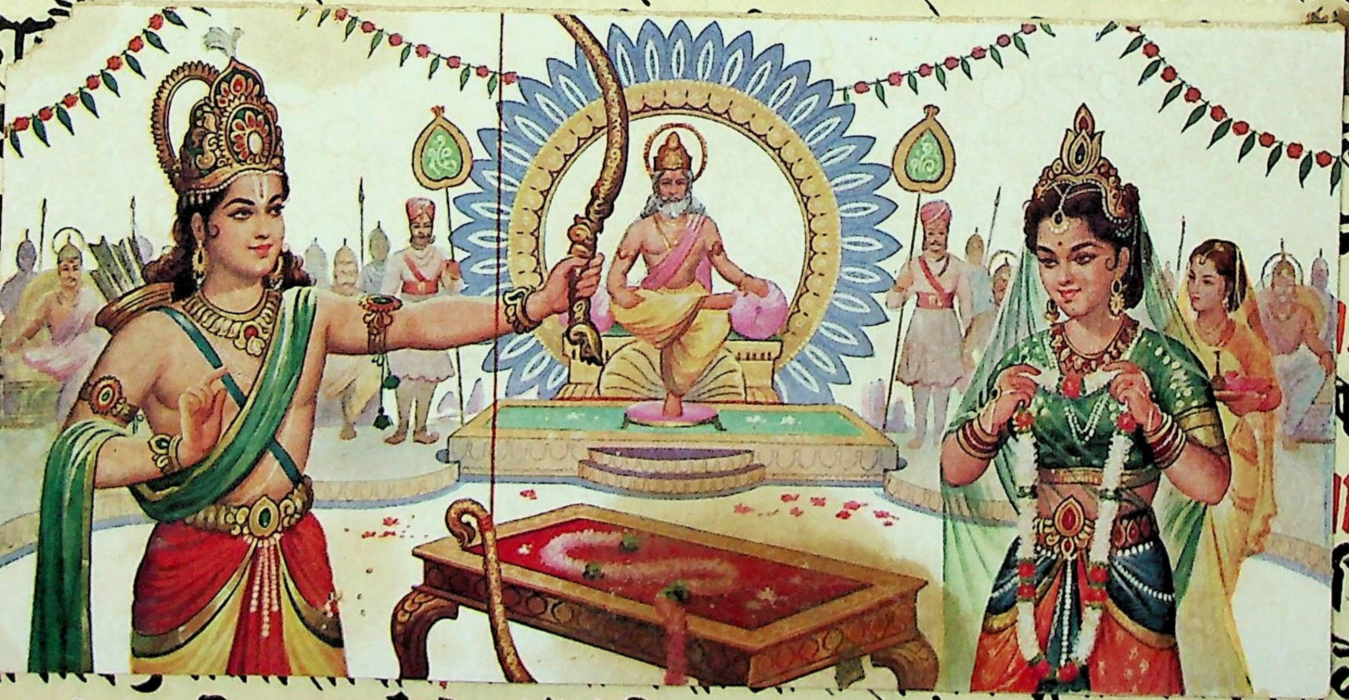

लमनसकलहलधलविनाहो छितिलख्यमें
भैविनाजुर॥हजिरणकोत लत्र्यनन्यत्र्यानपंथ
मेनचलोकहेंछावनीछव ननितहितत्र्यनहित
तनखैंचतकलानेत॥जीवेत ॥चोजचतुराईभल
वावैविषणावैछलत्र्यछ पाजिनतिनसैंसुसंत
जनहारिरहेंभानेत॥४७८॥ ॥डरसैंनडरोपकरो
रिपुकोनिजपासहोंहेविषवे जिहलाकी॥प्रमत्र्य
नन्यत्र्यमंदविनादनपावाव करनमेंचितवैरिहौंत्री
तो॥मलोमानमोराहविषाहवुरीमय्योहवहायकेरोगसैंवीतो॥ चलोसंतसुपंथसुग्रंथलिएहिएवासनासुढसजायसुनीतो॥

॥नाम०॥

||श्रीराम||

||५७||

हापस्तउतवारवारहौंमैंजातछिनछिनछिनछीनशीनताईहवहानिहै॥लायलोकलाजरगावाजखरखाजसाजकरतअकाज
मनमेरोविषवानिहै॥संतर … अननपआसअसतसमा
जरुचिसुचिसीतारामप्रेम … नआठजामकलकामैहै
नैनजाविचित्रतीरवासर … ववाहहिलदगनहेम
शत्रैअसहेरोवसुजामैहै॥पु … भिरामहै॥४७५॥
चित्तचलचालमेविहाल … हमरमालहैं॥वीती
वीतीवातैंनातैंछ्रातैंछनमें … अपुनीतिप्रियताहिमैंम
गनमुखमाननिहालहै … वालहै॥४७६॥चित्त
हीकोअखिलजहानव्हमल … रहतहै॥पाकीपांच
व्हत्तिनामैंपायपीनहीनछीनकैंवेगतेगतेजतरमतहै॥चिंतामनिसमयामैंगनसंततसुधीकैंजानीनहीजाततेनकौन
तीनि
भावहतहै॥

||५७||

### ❋ कार्य-क्रम ❋

१--मार्गशीर्ष ४ मंगलवार संवत् २०२४ तदानुसार ता० ५-१२-६७ को ११ बजे दिन तेल, हरिद्रा, मण्डपाच्छादन ।

२--मार्गशीर्ष ५ बुधवार संवत् २०२४ तदनुसार ता० ६-१२-६७ सायंकाल ६ बजे बारात, द्वारचार ८ बजे तक, १० बजे रात्रि से ३ बजे रात्रि तक पाणिग्रहण संस्कार व पाद प्रक्षालन आदि ।

३--मार्गशीर्ष ७ शुक्रवार संवत् २०२४ तदानुसार ता० ८-१२-६७ रात्रि को श्री राम कलेवा ८ बजे से ११ बजे तक व प्रसाद वितरण ।

युगल अनन्य और वाद मत वालन कौ चिन्ह ही कौ अखिल जहान चमत्कृत है॥ ४७७॥ चित्त चल अचल करत मोद म-
ल मन सकल हलचल विना होत हैं उदित उर॥ योग ज्ञानी विरति सुरति भाव सार मिति थिति चित्त [illegible] छिति लक्ष्य मां-
हैं विना जुर॥ हूजिए एकांत शांत भ्रांत राव चाव तजि भजिए सुनाम जात पहुचिए जाय धुर॥ युगल अनन्य आन पंथ
मैं न चले लोक हैं छावनी छवाय वसो रसो राम प्रेम पुर॥ ४७८॥ चित्त चक्र वक्र नक्र कोटि न समान नित हित अनहित
तनु खैंचत कलानंत॥ जीवें तन छोर मुवे पर भख झोरें सांझ भोरें छोरें विखम विकार वीर जानत॥ वो जन चतुराई भल-
वावै विषप्यावै छल अछल छलावै वहकावै हो षदानत॥ युगल अनन्य ऐसो अधम मन जीतो जिन तिनसैं सुसंत
जन हरि रहैं मानत॥ ४७९॥ सवैया॥ करसैं कर कौ रदसैं रद कौ नित पीसके जीतिए चित्त चलाकी॥ डरसैं न डरो पकरो
रिपु कौ निज पासहीं है विष वेंद वलाकी॥ गुरु सैं सुनि कै निज युक्ति भलो करिए अति चंचल वाजि हलाकी॥ युग्म अ-
नन्य अमंद विनोद न पावो कभी विनु जीवत लाकी॥ ४८०॥ मन लो औसर पायन चूकौ कभीं पिल के रन में चित वैरि हीं जी-
तो॥ मलो मान मोराद विषाद वुरी मर्याद वहाय के रोगसैं वीतो॥ चलो संत सुपंथ सुगंध लिए हिए वास नाम सुद्ध सजाय सुनीतो॥

॥श्रीराम॥

॥५८॥

मानी ५

हलोयुगलअनन्यननामकीडोरसैंभूलिहैकेद्दढवालपनीतो ॥ ४८१ ॥ हेमनभूतपिसाचकीअंतककालकरालकिव्यालख
रोविष ॥ हैधौंअसीस्तवाजोकुपंथमेंजातहमेशकिधौंसरहैतिष ॥ हैअकिमोहमेहारधिमीनकुलीनकिधौंमहपीनगहे
सिष ॥ युगलअनन्यकलंककीमूरतिजानिनजायधौंकौनलिख्योलिष ॥ ४८२ ॥ मनहींकेपैंचपरपंचमेंकुसंचहै ॥ जो
लोमननमूढमतहोतननिसोततोलौजोतजगमगातनमानसअवंचहै ॥ जीवतमरतपलअंतरकपटकोरियाकी [illegible]
गतिभीनीजानौमतरंचहै ॥ वडेवडेवीरधीरहिप्योहेहरापरनवैठजोमरैवमोरमानिमहामंचहै ॥ युगलअनन्य
नामरटिएसचेतचित्तमनहींकेपैंचपरपंचमेंकुसंचहै ॥ ४८३ ॥ मनहींकेमारमस्योनिखिलजहानहै ॥ वारवा
रनरकमरगरोगसोगसतसंकुलसहितरहेखेदआनजानहै ॥ देवीदेवसेवकिएवटतविशेषवलजैसेछूतनाए
वृच्छकाठिनकृसानुहै ॥ कोईअनुरागीवडभागीयाकोवसकियोलियोनामरूपकोटआरसुखखानहै ॥ युगल
अनन्यसारनागतकीआसएकमनहींकेमारेमस्योनिखिलजहानहै ॥ ४८४ ॥ संकलपविविधिविकलप
उठावैछनअचलनरहेजैसेकीष्टावातवसनर ॥ चंचलचलाकचलरलचपलाकेसमकमलापवनहूंतेवेगपाकोतेज ॥
तर ॥

॥५८॥

॥श्रीराम॥

औरजेतेलोलेतेतेतुलेनकलोलवीचखोलैनेनअंतरनिहारसोमैंविसारिडर॥ प्रगालअननसीताकांतनामकौश
रनसोवतहूंजागतमेंगहीछोडिझूठफुर॥४८५॥याकेकिएयोगीजतीजंगमविबुधबुधसुधिविसरावैंगावैंगी
तअपनीतहै॥विपुलविगोएपटरहितखरावापैरंकिचितनशांतभ्रांतअधिकअनीतहै॥कोईफूलवैठपुछचां
ममैंमगनहोयवनेवडेहंसकंससहंसकुरीतहै॥प्रगालअनन्यसवमनहींकीकरामातजैजगावेषरागद्वेषधू
पसीतहै॥४८६॥जान्योनहींजाययाकेवडेवडेदांतहै॥सुरपतिअस्लहूतेकठिनकठोररंचकिएसेंपरसनि
कसतआयआंतहै॥खायोयोगजपतपधीरजविचारवलअतिहींप्रवलमानोसांचोनहींभ्रांतहै॥याके
तोडवेकेलिएकिएहैंजतनजहवेदसुपुराननमेंतऊनहींशांतहै॥प्रगालअनन्यनामकरूनातेतूटेसहीजा
न्योनहींजाययाकेवडेवडेदांतहै॥४८७॥हैतोमहाव्यभिचारीसदामननेकहूंयाहिनसीषमोहावत॥
हासोहजारनवारसिषायकेमोहिपैवारहीवारकोहावत॥मारिवेहेतहमारेसदाखलकामकलंककीफोज
जोहावत॥प्रमअनन्यअकेलोलखैसठनामप्रतापसमीपटोहावत॥४८८॥जानकीजीवनसेंलगवाइएजातोप्रपंच
अनंतवहाई॥

॥नामने॰॥

॥श्रीराम॥

॥५२॥

सांचोसगोसनवंधीसियावरँ ओरसभीधरस्तैहठगाव़ाई॥ संतसनेहिनपामसुपूछिकेभाव़विनोदवढायौएभाई॥ युगमअ
नन्यसियारघुवीरभजेचितलायपरत्वसजाई॥ ४२८॥ बुद्धिवामविषमविकारव्यभिचाररतछोडिसुखखानपति
परमपरेशको॥ नानाखरसहेवहेवहनानदीनवीचकोचमीचगहेदहेपावकप्रेदशको॥ जोनजोनअसतअलीन
छीनवस्तुमांहसुदृढसनेहकियोतोनअद्येवशको॥ युगलअनन्यपलआधहूंविरामनहींआदिमध्यपारनामवि
मुखपरेशको॥ ४२०॥ बुद्धिहींकेसंगजीव़अमलअसंगतउउरझ्योविशेषरागद्वेषठहराय़उर॥ प्रगटसुगाथभा
गव़तमेंविचारोभलेकघोजोपुरंजनीपुरंजनविचित्रतर॥ त्यागीइनसहजस्वरूपदृष्टरूपनिजकरमेंविकाप़ोताके
जान्योनहींझूठफुर॥ युगलअनन्ययाअभागिनीकीव्रत्तिविनाजीतेसुषसारत्तीनिकालहूंनधामधुर॥ ४२१॥

॥५२॥

बुद्धिहींमेमलिनकुवासनाहजाररोगसोगचिरकालसेंसुधापिहैंअडोलतर॥ देहवासनादिकविकारकोअगा
रदुखधामसविकारजाकेसमतानदूजोगर॥ वाहरकेकोटिनकुवस्तुसत्यजानिमानिसत्यरूपआवरनदियोहै
करायउर॥ युगलअनन्यपरमेशहींकोकृपावलपाय़होय़सुद्धपरबुद्धिछोडिद्वैतउर॥ बुद्धिहैकीडाकिनीकेसंकिनी॥

४॥२५॥

॥श्रीराम॥

असंकिनीधौं रंकनासपंकनीसुभंखनीकुवामहै॥ कीधौंकालकूटकीप्रसूतिभूतिऊतिकीधौंमोहमईमंदिराउपा
धिहैं कौगनामहै॥ कीधौंदुखदेहाहनीकोमोहनीधौंआसुरीहैजानीनहीजाततर्कथाकितकलामहै॥ पुगलअ
नन्यकीधौं धारभारभारीलोकनासिवेकेकारनकुरीतिनकोधामहै॥ ४२३॥ सीतारामनामरूपतरफनजातिउर
अडवडपंथमांझपाकीरुचिहैछनी॥ संस्कारअसितसचायकेअमितनीचबोधबरविरतिसुध्यानभानहूंहनी॥
रघुप्रतिकूलभूलरूपतागतानानितभीतरअनेकभांतिकहौंकहांजोतनी॥ पुगलअनन्यशृंगारनागतकीआसअ
वऔरनउपायहरसातरंकहूंगनी॥ ४२४॥ अहंकारभारसीसलादिकेलादिकेसमस्तविस्वविस्वनाथरूपसु
धासारकोभुलादियो॥ देहगेहकुलपरिवारदारममतामेंफांसिकेहमेशखेददारनभुलालियो॥ सुद्धसतचित
घनआनंदविहायहायपापीहीकेविवसवहुवासनाबियाबियो॥ पुगलअनन्यमहावैरीअभिमानरहभूलशूल
महसउपाधिपाहीकीतियो॥ ४२५॥ अहंकारभटअतिविकटकपटकोटिकलितकषायदायजानतहजारहै॥
जभेरनवीचबडेबडेबलीधारोपुगप्रगटपुरानगाथकरोरनवारहै॥ आवरनपरमपरेशरूपआपनेमेंजानो

॥नामने॰॥

एकहीओरदूसरोनखारहै॥जुगलअनन्यअहंकारहारेधारिउरख्वारकेतहुवेवातयोगनविसारेहै॥४८६॥
अहंकारकारागहकौसिवकोटिनसमानमोहममतामलीनारियोवेंडीडारिपांवमें॥छूटेनहीजनमकईवअवले
वविनुरोपेसीसपीटिपीटिकोठिनकुठावमें॥मोचननिमित्तनानारीतिउपदेसेंसवतऊमहातमवीचसूझेनकुरा
वमें॥जुगलअनन्यमहाराजअवधेशपदहूजिएशरनइहमुख्यहेउपावमें॥४८७॥अहंकारनीचकीधौंरोग
मोगमूलकीचकीधौंमीचमारकअपूतधूतसिरताज॥कीधौंकोटमोहकोहसेनकेरहनाह्वितहेधौंचोटलोकपरलो
ककीधौंरंकुगाज॥कीधौंकीलम्भीलरवेनीरभरिपूरकीधौंदिव्यभावजलजसमनहितहिमराज॥जुगलअनन्यकी
धौंमुक्तिपंथप्रतिकूलशूलहूलहितराहलूटरीतिप्रीतिसाज॥४८८॥अंतहकरनचारोजीतिएलगायनामरूपगु
नज्ञानध्यानधारनासमाधिमें॥रक्षअनुकूलरागकीजिएउथानवृत्तिसंकलपसुभगानछुवेवीजव्याधिमें॥सोई
सुमिरनहटप्रीतिपरतीतिपटुअहंकारताहीकोअखंडितअनाधिमें॥जुगलअनन्याचारोकठिनकलेकींहोरेसत्य
माहकेसमाएसेंअवाधिमें॥४८९॥ललितकलितछबिछलितछलावेंहाररामसुकुमारसिरताजताजजगमग॥

नउ

॥श्रीराम॥

चारोवाररतनहरितपीतस्यामस्वेतलेतचित्तचोरचोररंगरागरागरगा॥ फैलीअलबेलीकांतिकलाकोटिकलाक
रजाकीजोतिजोहिंमोहिराएजीवअगाजगा॥ युगलअनन्यमनमोहनसमातअहाकहतलजातकविचलतन
सगवगा॥ ५०० ॥समलामबुजमुखरंगसेरंगीसीसीमसोहतसवीहवांकीकांतिहूंनपाइए॥ वांकीजुलफनिपैच
बीचअद्भुतछविकविमतिहूविरविउपमानभाइए॥ नानारंगमानिकअजूबखूबमोजहारहेरतहिहारहिल
हारछटाछाइए॥ युगलअनन्यछविकिरहिएसनेहसुखओरवातवीथचिनआपनैनलाइए॥ ५०१ ॥ चैतचार
चीत
चिंतवनयोगजानकीधानामलोकअभिरामकामकामतरुवरहीं॥ चाहचलचमनचषापचितचैनमेंपरागद्वषलो
किकीविहाय़हाय़जरहीं॥ चांदनीचारिअचषचोगुनीहमेशहिय़ाहिरसाहिराय़तमतोममानिडरहीं॥ युगलअन
न्यचामीकरचोकहोकहरहेहारिएहुजूरकेसमीपस्वच्छसरहीं॥ ५०२ ॥ मोहमनहैनमासमाधवमहानमीतमालि
कसोकामसामसरसमकारहीं॥ नामसीसुप्रीतिसहसजगासजापजिय़ध्याइएधुरीनध्यानध्येयअविकारहीं॥
मान
माहिरमनोजमहमथनस्वरूपएलछ्छोपाहिरप्रतछ्छालछ्छलाय़प्रेमप्यारहीं॥ युगलअनन्यमाननीय़मुरसिहकल

॥नाम८०॥

कह्मसरमसुषस्वारहोशयारहीं॥५०३॥ वेदविचारविवेकविलच्छनवीजविसाषविशेषहींहेरो॥ वावनवोधवि
राधनसेसवआकस्मातसुनामहींटेरो॥ मासमनोहरमाधवमाँझभलीविधिवाँझविवादनिवेरो॥ युगमअनन्य
विभूतिविरंचिप्रपंचपहारसमानसुगेरो॥५०४॥ जेठजगजीवननवीननखसिखध्याननेहनितनूतनसमेतव
वकीजिए॥ जाहिरीजमीनजानजालिमजलायजल्रजेगहिएजमानन[illegible]सजीवयुगजीजिए॥ कालीविकरालव्या
लनाममहामंत्रहींसैंनासिभलीविधिउत्साहलाहलीजिए॥ युगलअनन्यजामआठहूंअकामहोयसोइएस
माधिसुखसुधाप्रेमपीजिए॥५०५॥ आशाकीराहअशाश्वतावनहारोअसाटसुनैननिहारो॥ आलसआ
सउहासविहायकैनामनामअखंडरचोरविधारो॥ आमअनेकनदृष्टिपेरपुनिप्रीतमप्रीतिसुवोधसंवारो॥
युगमअनन्यअतापहिएहरीसायतस्यामसवीहसुधारो॥५०६॥ सानद्दारमाससुचिसावनसरसंगअंगअ
गवीचवरवससौंपिहरतहै॥ रसहृदिसानसुखखानगानताननमोजभूलनवितानमैनमनहीलेतहै॥ महामोह
हनघनस्यामचहूंओरछविअमलअनारनसमारकलकेतहै॥ युगलअनन्यआनधर्महिनेहरखोदृगजानकीरमन
चिहनूस्वच्छसेतहै॥५०७॥

॥श्रीराम॥

भाद्रभाद्रववल्लभविहारश्रीसरजुतटनिपटउमंगकेतरंगनसमेतहीं॥भामिनीअनेकएकएकनसेंएकनाजसाजसव
भांतिकांतिकलनउपतहीं॥मिथिलेशनंदिनीनिहारिवारवारआपअवधकिशोरीचित्तचोरनेहहेतहीं॥युगलअ
नन्यरामारामअभिरामकेलिकलितअजूवखूवमोह्योभरपेकेतहीं॥५०८॥कलितकुंवारसुकुमारीसुकुमाररंग
रागपरिपूरनूरजाहिरजहूरहै॥प्रेमासक्तभक्तत्यक्तवासनाविकारवनव्योममनमांहस्वच्छचंद्रमासरूरहै॥गुनाग
नचावभावचहलपहलनितजाकीद्युतिदेषिलोकचौदहूंसुपूरहै॥युगलअनन्यधन्यसोईजोनभीजिरहेओ
रवैरमैरकूरवडेवेशउरहैं॥५०९॥कातिककांतिकलाकरमासविलासहुलासअजूवदेखायो॥दीपकदिव्य
सुपांतिमनोहरछायरहीद्युतिहारहुरायो॥षेलतअच्छप्रतच्छमहामुददैनललीलखिलालसोभायो॥युग्मअ
नन्यअलीललनागनगानसुतानसुधाशरमायो॥५१०॥दानविधानअनेकवखानकहेकविकोनअगोचरमा
नो॥विष्णुविरंचिविभूतिअनादरहोतखदोतसमानप्रमानो॥श्रीरघुराजसिरोमनिमाझअजायवभांतिसहर
सरसानो॥युग्मअनन्यपुनीतसुमासविलोकिमिसपावरहाथविकानो॥५११॥प्यारोअगहनमाससुभागसुवाससमाज

॥नाम०॥

सजितसदैवसेवनीयमासभूपहै॥ विविधिविधानव्याहच्याहपरिपूरकैरआहदाहसमनकरनरसरूपहै॥ युगलकिशोर
॥श्रीराम॥ चितचारमासदैतनितकीजिएविचारकईभांतिननिरूपहै॥ युगलअनन्यधनमंगलायतनधामकरतमोकामपारहे
ततमकूपहै॥ पू१२॥ पूसमासस्वच्छौरनैसनअनैरैनभलअमलअनूपअंगसुपरसेहतहै॥ ललीलालललितरसालक
॥६१॥ ईकोटिरखालरंगरसजालकोनिदानमोजरैतहै॥ नानामनिमानिमानिकविचित्रभषनादिदानविप्रसनमानिभ
लीभांतिस्यामरैतहैं॥ युगलअनन्यपावनशनामआठजामलीजिएललामछाडिधामकामकेतहै॥ पू१३॥ माघमा
सरासमुखपंचमीवसंतप्रियपीतपटनिपटविचित्ररंगअंगहै॥ महामोरमंजरीसंवारिवांमद्दामदुतिजानकीरसि ॥६१॥
कजूजाहारैंशोकसंगहै॥ गानतानवेंघवीनवाजनवजतस्वरसुनतसुरेशसचीअपमररंगहै॥ युगलअनन्यफूले
ललितललामतरुताकैतेहीकामभररसमितसुरंगहै॥ पू१४॥ फागनमाहभरोउत्साहहैहजारनहोतहमेस॥ गावतीगी सुचाह
तसुप्रीतिपगीललनागनडारतीरंगरसेस॥ लाडलीलालगलालअवीरलिएपिचकाकरकंजसुरेसें॥ युगमअन ३
न्यउमंगसजायभिंजायकेभीजिरहवरवेस॥ पू१५॥ जानकीजीवनकेलिकलानकेहकविकोनअगोचरवानी॥॥!!

॥ श्रीराम ॥

वारहूंमासविलासहुलासमेंबीततहैनितहीसुखसानी॥ हेरिएहीयसपीयासियापदपंकजपावनप्रेमसुधानी॥ युगमअ
नन्यअनेककुमारगऔरविहारएजालहीजानी॥ पू१६॥ अस्परीत॥ कीटकमनीयपंचखंडचंड[illegible]करहुतिरामको
स्वापेंहतललितमनमालहै॥ हीरनजीउतमहामनिनखचितचारुरचितमनोजचोजसहितअतालहै॥ वारकविलो
किसुधिबुधिगतिरोकिजातभलकलरवतचहूंआरचितलालहै॥ पगलअनन्यजाकेउरनावसतछविसाईसठज
नमजनमडमांडेलहै॥ पू१७॥ चीरपंचरंगसौसईशतासहितचारुचमकचलाकचेहचारुनीचमनेहै॥ हीरानखव
रनविचित्रमित्रमानमहसमनसोहायोआनभांतिछनछनेहै॥ धीरानरहतकहूंनेकहूंनिहारिनैननचैननपरतव
रपरचितमनहै॥ पगलअनन्यपरपीरामुखवीराकरसोहैधनुतीरोहेराजानकीरमनहै॥ पू१८॥ लटकीलीलटल ॥ नाम० ॥
खिलाउलीललितलाललोनेलोनेलोयननिलागअनुरागवाग॥ चटकीलीचलनचलाकचमकनचारुचकु
रचीरितचहिरामेरामरससाग॥ मटकीलीमौजमनमोललितमोहसधुमधुरपिवायमुलवायपोगजपजाग॥ भ
टकीलीयुगलअनन्यअलीभलीभांतिकांतिकमनीयकेलिसहितसोहागभाग॥ पू१९॥ मोतीमनमोहनमेरोरसार

माहमुखझलकसमेतस्वच्छश्रवनसोहावनो॥ जोतीजसजोसफेलिरहीअलवेलीअलीजोहिमोहिमधुरउमंगउमगावनो॥
होतीछनछनवीचछटारंगरंगनित्तहितअनहित्तवित्तहेतछविछावनो॥ युगलअनन्यअलीधोतीहिलहासआहअनु
पमआवउरलायभवभावनो॥ ५२०॥ नखसिखयुगलकिशोरहोररहोराजचोजचतुराईचारुचलनचोरायके॥ मधुरम
नोजमदमथनचरनचारुचंदमंदकरहिऐंछपायके॥ जांघजगमगकटिकलितसुनाभिथलउरबाहुबलछविराहिएलाभा
यके॥ युगलअनन्यमुखमाधुरीमधुरमंदमंदमुसक्यानध्यानधारोधीयपायके॥ ५२१॥ जानकीजीवनरूपसुधासरमीनभ
एविनमोदमिलेना॥ कीजिएसाधनकोटितउउरकंजसुमंजकहापिखिलेना॥ छोडिएरुच्छनकेसंगकोअनुरागि
नसंगउमंगमिलेना॥ युगलअनन्यविलंबवृथासिरसौपिकेरसिककेपंथमिलेना॥ ५२२॥ जाहिजाहिजुलुफजंजीर
नकोटाहिटाहिहासजोसत्तोसेरामकोशविसरायके॥ पाहिपाहिचित्तचाहचटकमटकचखचारुछविवीचएकरस
नियरायके॥ मोहिमोहिमोहमुखमिलितनिहारिनैनरैनऐनकेशवेशदेशाटकलायके॥ युगलअनन्यअलीआ
हिआहिदशोदिसऔरनदेखातसुधासायरसमायके॥ ५२३॥ जननीजनकसुतगुरुसिष्यराजप्रजासाहेवहूंसेवकोविरोध
कलीकालमें॥

वेदविधिविलगविचारविरहितव्योमसुमनज्योंसनवीचमोहहरहालमैं॥अखिलअनीतिरीतिअतिविपरीति
सवभीतिरिपुमांझनहींभेदखेदख्यालमैं॥युगलअनन्यऐसेसांसेमेंमेअधारनामआनकीरमनजूकोधाममोर
मालमैं॥५२४॥दंभीदगावाजद्रोहछलनसजाएजोनतैानकलीकालमांझसंतसिरताजहैं॥जिनकेनज्ञानध्या
नवचनविवेककछसोईवडेविज्ञगनसुभगनराजहैं॥वाहिरवनाएवेषरागद्वेषहिएलिएलालचप्रपंचपनसे
ईभक्तभ्राजहैं॥युगलअनन्यकोनसुनेसुवचनममनाममहाराजहींकीशरनसुराजहैं॥५२५॥रामरूपअमलअ
नूपमैंमगनहोयधोयवीजवासनाविकारव्यवहारमल॥आपनोस्वरूपपरप्रीतमपछानिपटुप्रेमउमगायहोय
अमलअमानजल॥हेतमगरगसेअगाधधारिध्येयध्यानसुभगसुधारिनितयाहजिएअचलथल॥युगलअनन्य
रस्करहसरसेससाजकीजिएनिरूपछोडिछांहछलवलगल॥५२६॥अवधकिशोरसेसनेहसाजसाजिसु
खसरससमेतमीनकेतकोनिवारिए॥एकटेककौंधारिउरवारिनखसिखपरअधरसुवासरंगरामकोसम्हारिए॥
चाहचित्तचायचारुचमनचरित्रचखिचांदनीचमकिनहैनैनसैंनिहारिए॥युगलअनन्यप्रीतिपावससुचित्त

॥श्रीराम॥ छाय़वरासिसुवूँहतापतरगनविथारिए॥५२७॥नामरूपमांझभेदवेदनवदतनेककहतअभेदवाच्यवाचकविवेक
वल॥तातेसावधानहोय़जोय़जगएकरसअरसकुपंथकोविहाय़मालिमोहमल॥मिथ्याअनरथव्यर्थवचनकरथेत
जिभजिएसुनामगुनगाइएसुधामथल॥पुगलअननमेरेनजागिएसचेतचित्तवित्तवरवारमतकीजिएसुपलमल॥५२८॥
॥६४॥ नामकेआसरेव्योमविहारविलोकतविस्वविचित्रविलासी॥देहदसाविसराय़रहेनिततेनहनिसाद्दगछाकिसुवासी
वादविवादविकल्पतजेंतमतेतामसमीपनजायप्रकासी॥उगमअननमनचाहकछुहरवारउछाहमेंदाहखलासी॥५२९॥
अहोजगरीतिविपरीतअनरीतहै॥मानेनहींसंतरसवंतनामनेहरतदंभखभगाडेचितातिनसनप्रीतहै॥वदअविहित
हितहरनहेमपाहाय़देनहारपंथतामेंचलतअनीतहै॥वांधवरविरतिविचारवान्संतमवहारिवैठेगप्रवलखामिनकी
जीतहै॥पुगलअननन्यअैसीसमैमेंसहायनामअहोजगरीतविपरीतअनरीतहै॥५३०॥जगतभलाईदुचिताईदुखमू ॥६४॥
लहै॥वाहवाहद्दाहसमसमुझेसुजानसंतमहामोदभारमानिमदासहेंसिरसूलहै॥निंदानिजनवलविनोदउत्साह
हिएगनेधुनेमाथमएप्रेमअनकूलहै॥लेनदेनद्दावानलद्दारूनदरदद्दलमहामलथलधनधामवुंधधूलहै॥ ॥ ॥

॥श्रीराम॥

युगलअनन्यछरीछकीरहुनामरसजगतभलाईहूचिताईदुखमूलहै॥पु३१॥मोंससंमिलनमोंभ्रमोहकोनलेशहै
चेतनासमर्थप्रीतिकासभासलेसपायहरखउहोतनहीवृभेदुतिदैसहै॥विषयाविकारवीचवह्योविनूंबाधजड
जानतसुजानमोहममायिकअवशहै॥युगलअनन्यसतचित्तघनरूपतवनामनेहप्रीतिकरिपाइएपरशहै॥वारवार
संतजनवेदहूंप्रकारिकहैंमोंससंमिलिनमोंभ्रमोहकोनलेशहै॥पु३२॥न्यायमतवादीईशकरतानिरूपिनिजकाल
सर्वदेशसुवैशेषिकविचारोहै॥प्रकृतिपुरुषयुगवादसांख्यसास्त्रमतपातंजलिवीचयोगस्वच्छनिर्धारहै॥कर्मकांड
कहतमीमांसिकसमेतयुक्तिब्रह्मअद्वितीयउपनिषतप्रकारहै॥युगलअनन्यवेदभालमेंअमितमतरामनामरटन
कहूंकमतसारहै॥पू३३॥खानपानमानसनमानदुखखानप्रानप्रीतमसनेहसुखसमनसदाहहै॥भावचावचारुचष
मूदतमनोजमदकुमुदकलापपुंजविकसतआहहै॥चाहचितचंदमंदद्वंदअकलंकमुदमाधिकमदाहिमलमहतप्रवा
हहै॥युगलअनन्यअतिअमलविरागयुततपोनिजनामतवनेहनिर्वाहहै॥पू३४॥मनगतिक्षीनहीनपरपलपार
पीनपावनप्रवीनछीनहोयअनायासते॥विषयवनवीनभीनरहतअलीनलीनमीनसातलीनविनसतअधिआसते॥

॥नामने०

॥श्रीराम॥

॥६५॥

अकलअकीनअविछीनछामखामकामभजिलमलीनमुरस्वअसस्वअवासते॥ पुग्गलअनन्तनामकरूनाअधीनहेपरहो
रसएकतवछ्रोछलफांसते॥ ५३५॥ अरठगाकरनकलेककोटिआटविनविरच्योविसेषिरपाहिलेमैंनलाउरए॥ तामेका
महामवऊहिसहरामवहुवामनाविकामवहवाएछानछाउरए॥ पलपलपरपीरहोरहरेरसतेलनधीरधुरध्यानधुनिधा
रनानसाउरए॥ पुग्गलअनन्तनामअवंधसअासगहिरस्योभाववेतोहिअवेतानरागगाउरए॥ ५३६॥ प्रेमप्रकासकनामस
हेपरप्रीति[illegible]समेतहेमशाउचारो॥ वासनावंदरविलंदविषयाद्दिलहुंदविहायविकारपवारो॥ लौकिकतानत
नोनगनोगुनहायहजारहुनोमुषधारो॥ पुग्गलअनन्तअशाकरटोनहेटोपलआधस्वरूपसम्हारो॥ ५३७॥ जीहजान
जपतपुग्गलवंनशनामआठजामआलसविकलपविहायवस॥ होपकेअनीहअेारसाधनअलीहजानिमानिमत
सारध्यारररचतसुकंजपद॥ जेतेतपतीव्रवेदविमलवषानेतेतेनामकेअधारफलेदत्तसोचशाब्सद॥ पुग्गलअनन्तआ
सअपरजहरसमसमुभसचततवअनायासनछगद॥ वाल्मीकिमुनिअविलीकहीकनीकमतकस्योअवंधशोकेस
मीपनामगाथ्यपर॥ सुन्योसुचिमरससमभावसेंसनेहनिधिमधुरापि.पू.वा.प्रियवचनउमंगउर॥ नामीनामचरितसुनतसुचि

॥६५॥

॥श्रीराम॥

नाइसंगरंगवरवैनरीतिकीजिएमननतर॥ पुगलअनन्यनाममहिमाअमोलतोलरहितसहितसुषजानिए
विसारिडर॥ ५३९॥ रामनामरसपायअमरअजरजनहोतजातजिगरमझारझलकतहै॥ रहैनाहीनेकशोकओक
उरवीचमीचमरतउरतेदवदामदहलकतहै॥ प्रेमापरारहसरसालभक्तिभावभेदखेदद्वैसविहीनलीनलाभललक
तहै॥ पुगलअनन्यरषअनकूलमूलसूलरहितसहितरंगरूपछलकतहै॥ ५४०॥ रामनामहीकोएककेलजलथ
लवीचरमोरोमेरामसामसूरनूरमध्यहै॥ विविधविधानपुतजेपविधिहरीहर॥ अमलअखंडध्यानधारिकेअव
ध्यहै॥ कोटिकलाकलितललितनामअभिराममहिमाअनंतकहाजानेजीरववध्यहै॥ पुगलअनन्यलोकवार्त्तावि
कारभरीसुनिएनभलिहूंविचारिएअवध्यहै॥ ५४१॥ रामनामविनाऔरकहेजोपरत्वकोउअज्ञमतिमंदसोअ
लायकअधूरमत॥ ताकीजेतीकथनीकपोलकल्पितकटुकूरनरमोहमानिमुनैहै तोऊ ऊहाषरत॥ पंडितविवेकीसं
तसावधानजैानजनतोननिहारैनेनवदनसदाअसत॥ पुगलअनन्यनामब्याजएप्रपंचपथवाहिनविहायमौन
पाइएपरमतत॥ ५४२॥ होयरहोअलमस्तसदानिजनामपियूषपरारसपीके॥ घोइकेहाथसनेहतरंगिनीरंगउमंगचढाइए
नीके॥

काम धाम धाम स्याम नाम देव काम धाम श्रीरेहें सजार श्रीऊ कोकुसुरपतै है

॥श्रीराम॥

॥६६॥

श्रीसरजूतटछायकुटीकलनित्यकराइएस्वामिनीसीके॥पुगमअनन्यकांजनकष्टफलकौनकहावहुवामरजीके॥५४३
अवधअनूपधूरकीधौंनवनेहनूरसुभगसजीवनसुमूरमूरभावहै॥कीधौंकमनीयकरपूरचारुचूरकीधौंवासनाहुजू
रभूलकावनप्रभावहै॥कीधौंप्रेमपूरमनपावनकरनकीधौंपरानंदपावसपियूषवनचावहै॥पुगलअनन्यअभिलाषला
षभांतिनकोपूरकअमलआभरनअनुभावहै॥ ५४४॥अवधपरात्परेनुकामधेनुशतसहससमानकविकहतकलेकैहै
कोसलानिवासीसुखरासीजीवजंतसमभनेजागाहीशतऊताकीमतिरंकहै॥जेतजगजाहिरसुलोकउर्द्धअर्धतेतेप्र
गटप्रतापीसियसत्यापहूपंकहै॥पुगलअनन्यधामअचलपरत्वपषिवारिएअनंतदुतिवंतारिएडंकहै॥ ५४५॥धाम
श्रीअवधअनवधअविलीकसुखसारसबभांतिशांतिकांतिअरपतहै॥गावैंओनकौनकीकथानकोवपानवे
रलोकमप्रसिद्धप्रेतकेतडरपतहै॥पुगलअनन्यज्ञानध्यानधारनासमाधिव्याधिसैंविहीनभक्तिभावपरपतहै॥५४६
संतसिरताजमहाराजनकेग्रंथपंथपेख्योभलीभांतिनिर्द्धारसारएकहीं॥कीजिएसुजापनामधाममांझवास
स्वाससततअजापजीतजानिएविवेकहीं॥चाहोरहोजहांतहां[illegible]नामकोसनेहदृढजीवलोनिवाहेगहोहिएसां
चटेकहीं॥

रव

॥६६॥

॥श्रीराम॥

युगलअनन्यवानीखेरखरखारखानीसुनिएनजानीअनहितीहाहसेंकहीं ॥ ५४७ ॥ सोईवडभागीजाकेधाम
मेनिवासहै ॥ कियोकोटिकलपकंदवनपतपध्यानसाधनासमूहजेतेकोघोवेदव्यासहै ॥ लोकपालईशासमुदाय
पायपूजेपामलअमलसनेहसेंसमेतस्वच्छस्वासहै ॥ औरकोनकथाकेहोंजानकीजीवनआपताकोंफकेताकोए
करसप्रीतिकासहै ॥ युगलअनन्यमानमन्यअगगन्यधन्यसोईवडभागीजाकेधाममेमेनिवासहै ॥ ५४८ ॥ धौल
धारनैनजानिहारेतेईधन्यहै ॥ छापकेछवीलीभावभरीकुटीतीरटलापररघुवीरपीरहरनप्रसन्यहै ॥ लोकवे
दनानामतखेदकोवहायजापवासनाजलायभएप्रवलप्रपन्यहै ॥ मानसरनेहिनीनिवासीमीनपीनप्रेमविहंग
विचित्रवैनसुनतअनन्यहै ॥ संतसास्त्रसंवतसदैवसकेलसनाहिधौलधारनैनजानिहारेतेईधन्यहै ॥ ५४९ ॥
जानकीरासिकेप्रेमवसिकसुपासनित्तयोंछिएसुधाममेमेंनिवासएकरसराज ॥ वारवारवंदनासजेपिएलजा ॥नाम०॥
उएनसंतगरनिकटसुचाहशौकधामआज ॥ भुक्तिमुक्तिसुक्तिकासमानपाहिचानचित्तवित्तअनमोलपायहू
जिएविहीनसाज ॥ युगलअनन्यरषछषमिषताहीपररहेभेदनाहीकछप्रवलप्रतापआज ॥ ५५० ॥

॥श्रीराम॥

॥६७॥

सीतारामधामकेसुपांयपूजिवेनिमित्तआवतअनेकवारजेतेलोकलोकपाल॥ संहितापुरानमेवखानव्यंधानविनाजानिहैंसुजानजोनमएहैनिहालहाल॥ महाविष्णुछीरनिधिवासीमहासंभुधामेमुक्तासुशीशमेचटावैमानिमोजमाल॥ युगलअनन्यऐसोअधमअभागीकोनजाकेधामवासचित्तरुचतनछोडिजाल॥ ५५१॥ नानारसतीरथसुपुन्यथलवीचवसैंखसनहीनीवनेवासनाविकारवन॥ साधेजपयोगअवराधेदेवीदेवपुंजहोतनहीलुंजतउत्तामसप्रचारपन॥ ज्ञानध्यानतानमितगावैंमानमानसंगचढेनहीरंगपरमेशपुन्यईशगान॥ युगलअनन्यसवसाधननिपीठिदेयसेःएअवधजोनमोपतसुघेशछन॥ ५५२॥ कोहूकोवथाहींवागोफिरतफेरवफंसिपाइएनेनकुफलअकलविचारतो॥ कलीकालपायकेपरायगएपुंजगंजनकेसमानभयेजोहानिहारतो॥ हायएकअमानसंतसरससुजानपासपूंछिएविसेषहोतकोनेतउधारतो॥ युगलअनन्यसीतारामधामऔधवासकारकप्रकासताहिवेगहींसम्हारतो॥ ५५३॥ जैसेव्योमवीचकीचलेसहूंनपाइयतैसेऔधधामवीचकर्मकोअभावहै॥ नीचऊंचपापपुंन्यनिरतसमानभानकोसलासमीपमोहभेदकोनभावहै॥ परंब्रह्मरूपअतिअकथअनूपधामवहैवेदव्यासशिवजूनेकियोगावहै॥ युगलअनन्यजाकीधाममेप्रतीतिप्रीतिसोईसांचेसंतऔरवेषकोवनावहै॥ ५५४॥

पुन्य ६

॥६७॥

॥ श्रीराम ॥

सेइएसुधामअभिरामआठजामतनपतनप्रयंतसंतयेनेकनभांतिसैं ॥ दीजिएरघुरायभलवायअनेरशाचाहली
जिएअथाहउत्साहधामकीर्तिसैं ॥ पीजिएपियूषप्रियपाथसीयनाथगाथउज्वलसमानकहाकाजचित्तभ्रांतिसैं ॥ यु
गलअनन्यअनुरागपरह्वैंसपरहायकसुधामजियजानोजनसांतिसैं ॥ ५५५ ॥ सीतारामधामश्रीअवधअभिराम
नामपूरेकोटिकामदिव्यव्हामपहिरायउर ॥ वारकसुनामकेउचारतप्रयासबिनाहिपरेउजासअरिजातकोहमोहपुर
जौलौलाभलपोनहीलोयनसुधामहिततौलौंसोचसागरमैंडूबतसुव्याप्तजुर ॥ युगलअनन्यतीररैनैनजानिवा
सनित्यकीजिएअनित्यदेशवासनाविहायधुर ॥ ५५६ ॥ तैलधारसदृसनिशागतआतपातहोयरटैरामनाममोद
धामशोकजोकसैं ॥ खैंचिचित्तवृत्तिव्यवहारहेउआरछोरहीरहिएहरसहिसावहरहोकसैं ॥ पैठिप्रेमपारावारमें
भरखुख्यालखोपरवाहिसविहीनताडितारतीनलोकसैं ॥ युगलअनन्यअनायासप्रतिकासपटुपारस्परशविस्ववीच ॥ नामनेम० ॥
अंकनैकसैं ॥ ५५७ ॥ सवैया ॥ कालकोकालदुकालनिवारकसंतसदासुचिवेदबखानत ॥ कोशलपालपरेशभद्दनरं स२
चकवंचकजीवननजानत ॥ कायकलेशनहेसतितेजलजातसमाननिलेपप्रमानत ॥ युग्मअनन्यउपासकेप्रेमपगे

पनपूरनतीननतानत॥५५८॥नामनिरीहनिरंकुसनित्यनिवाहननेहसुगेहसमाए॥कामकलंकनअंतकतंकअप्रपंकमोका
मन्त्रामसजाए॥रूपरसायनरागिरेहपलपावनहीनिर्वेदभजाए॥प्रेमअनन्यसौंहिसुषसागरसेसमतासबभांतिसजाए॥५५९॥
हैबडभागसहीतिनकोजिनकोमनसंततसुसेवसनेही॥साधनसाध्यस्वरूपपरावरपाइहैंसोश्रमहीनसचाहीं॥वासनाबीज
जलायभलीविधिहोइहैंलीनस्वरूपसमेमहीं॥प्रेमअनन्यअशोकसदासरसायनिरंतरनेहनवेही॥५६०॥कामदधेनुमनी
षासुभूरुहसंतसुभावसुनेसकुचाने॥मानिगलानिवराकवरावरिनैनअगोचरजायछपाने॥वारकअंबककोरविलो
किकेईशसमानकरेभ्रमभाने॥प्रेमअनन्यसुधीससोईसबबात्तविहायसुपायप्रमाने॥५६१॥संततसुधासरकीमहि
मामुनिनारदपासपरेशावलोनी॥हौंतिनकेकरकंजविक्यानतक्याप्रभताश्रुतिबीचविधानी॥प्रेमअनन्यविचारत
वैनवटेचितचैनविकारविहानी॥हेगनहिम्बहिवाकातौननजानतजोनसोईसठप्रानी॥५६२॥जानकीजीवनजू
कीमहामंजुमाधुरीनैननिहारतनीके॥भूतंलभानजहानमहानविनाश्रमसुषुसुधासनप्रेमसेपीके॥नूतनहौंहर
सातछनेछनकोनकहौंउपमाअविलीके॥प्रेमअनन्यअनूपममूरतिमोहनीमोहनरूपबहीठीके॥५६३॥॥

जानकीजीवन की कल कांति कला कमनीय निहारत नैननि ॥ प्रेम पयोधि प्रवाह वहे हियए होस हवास समाय न ऐननि
वारहिं वार विलोकत चाह चंद चख चित्त कहौं किमि वैननि ॥ युग्म अनन्य अडोल सनेह निचोल सुधारि न काज अधेननि
५६४ ॥ जानकी प्रीतम मोह महोदधि मोहन मोह सुखेन्दु निहारो ॥ ध्यान की रीति पुनीत पियूष सु सीखि गहनै के पास विचा-
रो ॥ हान की गैलन सैल सजो मन मैल कदायक लैक निवारो ॥ युग्म अनन्य अजान की भाँति वसो वसुवाधि य ध्यान हीं
वारो ॥ ५६५ ॥ प्रीतम प्रेम पियूष पियए पल पावन पास तजो तिन भूलै ॥ मीनन मनोहर पाय प्रभा पद पूजिए पंकज स्तान सुफू-
लै ॥ गीतन सौ उर स्वच्छ सुखी गिर वीच गाँवाइहै हूलन हूलै ॥ युग्म अनन्य अभीति प्रतीति सजाइए श्री सरजू कलकूलै
५६६ ॥ सुंदर स्याम स्वरूप सरोरुह नैनन अमी वर वैन विचारो ॥ नासिका लोल कपोल मनोहर दंतन की प्रिय पाँति निहारो ।
मेचक कुंचित केश सुगंधित कुंडल कांति लहो चख चारो ॥ युग्म अनन्य अनूप अहा अखियान के वीच से नेक न टारो
५६७ ॥ जानकीजीवन नैनन महा मृदु ऐन निहारत नेह निरंतर ॥ खंजन मीन मधूप मृगालि नहीं उपमान समान दुरंतर
प्रेम प्रवीन प्रकाश परत्व प्रभा सैं नित्य समंत सुतंतर ॥ युग्म अनन्य विहाय प्रव्यथा व्यवधान विना जपिए दृग मंतर ॥ ५६८ ॥
कै

॥श्रीराम॥

॥६९॥

छवीन १

नैननवीनँविलोकिएवासनावंह्विसेखिविसारी॥ चंद्चकोरसेनेहसुवाउरधारिएधारनाहिंव्यविचारी॥ काहूसेकाजनही
राखिएचाखिएरसअंवकप्रीतिप्रचारी॥ धृगमतअनन्यऔधवसिएसरजूतटछाडिउपाधिविकारी॥ ५६९॥ जानकीनाथ[illegible]
सेस्वामिअनूपमपायपगीजिनकीमतिनाही॥ तसछस्वच्छसुधारसपागि लोललचायवपावनमांही॥ जापजहानजि
एविनकाजकुसाजसमाजसनेहसजाई॥ धृगमतअनन्यअरधिककायरऐसहुमोहवसैंविलगाई॥ ५७०॥ श्रीमि[illegible]लधि
विम
पवैनविनयसुनिएअतिआरतहैंकरुनाकर॥ मारतमोहमनोजमनोरथमोहिंविचित्रनिवारतआकर॥ कोटिनक्लेशकषा
यकदूरतखानिकिपाममहीयसुधाकर॥ धृगमतअनन्यकेआरविलोकिएजानकीजीवननहिंव्यदिवाकर॥ ५७१॥ हायवपा
वहुवासरवीजविकारविराहतजातचलोहै॥ एकहूवेरनप्रीतिप्रतीतिसैंनामउचारतमोहमलोहै॥ संततसंतसुधावरवै
नकेहतउचैननचिन्तकलोहै॥ धृगमतअनन्यअनेकअभीतिभएजपिजीवनरामललोहै॥ ५७२॥ हेसवभूठविकल्पज
हांलगितीनहूंचौदहूंलोकउपाधी॥ पारहैखेहमलीविधिसोंजेहिमूरखपासोसनेहसुसाधी॥ सत्यसिरोमनिनामभ
जोसुचिसांचसहासुखसंगसमाधी॥ धृगमतअनन्यविवेकलिएविचरेसवठांवनएकउवाधी॥ ५७३॥ श्री ०॥ ०॥

॥६९॥

॥श्रीराम॥

स्वादिसोईसुखसारसवादविवादविहायलहैरतिनायक॥पाईववहीहरसायतहीयेमेपाइस्वरूपसुभावसुभायक॥नाही
नवीनप्रवीनसहीनिजनामसुनाइसुनैसुभदायक॥युगमअनन्यअवाईअजूवउजारविहीनसनेहसहायक॥५७४
प्रेमवहीरसएककरेहैनितनेमनिवारिनिहायतनीको॥हमममहीमुदमोदमईअवलोकिएकामकलाकरिफीको॥छमस
हीस्तहिएललनारसरागहिमागविहायअनीको॥युगमअनन्यसुटेमसोहावनदीपकदिव्यवरेइतिहीको॥५७५॥
प्रीतिप्रतच्छसराहिवेलायकचारुचकोरकिशोरविचारो॥प्रीतमरूपसमागमवास्तपावकहूंभषिलेतनिहारो॥
कांतकलाकरहेरेअगारमेंआपनीहोप्राननेकसम्हारो॥युगमअनन्यसनेहसमूहचकोरकलानकेऊपरवारो॥५७६
॥धनाक्षरी॥सोईस्वच्छसारसतसंगरंगरंग्योजोनमोनसववारतविशेषधारिधीयेमे॥छोरईकेसमानस्वानवोनउपमा ॥नाम०॥
नमतअमितविधानजाननपाग्योप्रेमपीयेमें॥कोईकहालाषैपेनआंखमेंचटतरंचनिखिलप्रपंचमीचमूलमानिही
येमें॥युगलअनन्यओईपाईहैपरेशपुरअफुरविका[illegible]वहवायकेकुनीयेमें॥५७७॥महाराजमनूवदविज्ञव्यासपारास
रधर्मराजप्रमुखजितकीरषिभूपहैं॥भाख्योतिनवरनसुआसरमधर्मनानाभांतिप्रायश्चितपूतकारकसधूपहै॥ ॥

आयोकलिकालविकरालनसंधनकछुकेवलकृपालरामनामहीनिरूपहै॥ युगलअनन्यपरिनाममैंमनआनवस्तुपरिरए
प्रतच्छनामतारकअनूपहै॥पू७८॥ कोटिधेनुविप्रवालभूपमित्रवामआपदेवताहननजोनकियोमतिमंदहै॥ छूटतनतौन
किएनानाविधिनेस्कृतिवरहैंविहितहौतौनभोगहाहहुंदहै॥ अैसरूपनितहितअहितकरनसहनकरपूरहोतनामध्यायेमुरकें
दहै॥ युगलअनन्यसीतारामसेंउधारपारअपरअजारहारहेजुहींविनिंदहै॥पू७९॥ पंचदसीवीसाअंकभरतसुचितरंक
संकतेकरूपविनुपावेकाहूभांतिसें॥ ताहूमांभअमितउपाधिव्याधिआधिभवशवकेसमानकरेदेनहारतौतिसें॥ ओ
रहूंअनेकमंत्रतंत्रनमेंख्यातकरामातदेरसाइवेनिमित्तगतभांतिसें॥ युगलअनन्यधोखावाजिहींविचारोसवजान
कीरमननामध्याइएसुकांतिसें॥पू८०॥सवैया॥ रागहूद्वेषकुवेषविहायविसेषविचारविचित्रपदारथ॥ लागललाम
श्रीरामगेहगिरकेवलप्रेममईपरमारथ॥ जानकीजानिसुधामसुधारसेंवाससदेरवसहीसुषस्वारथ॥ युगमअनन्यनसे
करतीजगाजीवकदेवकिएसुकृतारथ॥पू८१॥ स्वामिनीसीयसिंगारसजेसुभस्यामसमेतसहेतसहाई॥ वारहीवारवि
कायरहेछविहेरतहींभरभानभुलाई॥ हायकेलीनप्रवीनहिएकलकीरतिमाधुरीश्रौकसेंगाई॥ युगमअननउछाह

॥श्रीराम॥

छके नत के तिहुं लोक विभूति वडाई ॥ ५८२ ॥ प्रीति प्रतीति पुनीत परावर पूजित पाद पराग सजाई ॥ नीति अनीति उभय वि
सराय हराय रहे तिन हीं वलि जाई ॥ मीत अमीत न हीं तिन को कोउ अंतर वाहर राम रजाई ॥ प्रेम अनन्य सु धन्य सोई गए धा
म निकाम निशान वजाई ॥ ५८३ ॥ जीह जपै जगजीवन नाम कलंकित काम कषाय कढाई ॥ स्याम सवीह निगा कौं हरत फ
उमंग विचित्र वढाई ॥ तीन हुं भांति अनीह रहे हर साय तताय त चित्त चढाई ॥ प्रेम अनन्य वहीह शाही हमैं पार हैं मोह प्रमो
ह दढाई ॥ ५८४ ॥ चाह चितावन चिंत चलाक को औरके साध्य नहीं कछु कारज ॥ हाह दुराव न है तु ह हेहिल आठहूं
जाम अकाम हीं आरज ॥ नाह निहारन वास्ते आहह मैं सस नायव जाय कै तारज ॥ प्रेम अनन्य महाल ह शाकि सही
विधि सैं न लखे जन जारज ॥ ५८५ ॥ स्याम मिलाप की चाह हिए दढ तौ नित नाम अकाम कै ध्यावो ॥ वासना वाम विहा
य मली विधि वैठिए कांत सुभावना ल्यावो ॥ शासना पंथ अनेकन की वहवाय मना हि अजीव हिं ल्यावो ॥ प्रेम अन
न्य पियूष परा रति प्रीतम रूप अनूप हिं ध्यावो ॥ ५८६ ॥ मीन मयूर मनोहर चातक चारु चकोर सुभाव सनेही ॥ लीन
रहे धुनि पीन गहे वर बूंद लहे लखि रूप वनेही ॥ आपने आपने देस सुदेस मैं पेष सदा सुचि सुष सवेही ॥ प्रेम अनन

॥नाम०॥

उमंगसुरंगसुप्रीतिपगेपहिचानिहैएही॥ ५८७॥जोलौसरीरसम्हारवनीनिजतौलौसनेहहूसाउतिदूरी॥पावकहूंपियपाव
सप्रीतिकोजेनवेटारतपंथकीधूरी॥ खासकेवागउजारसम्हारमेखोजकहूंमिलजीवनमूरी॥ युगमअनन्यविसारविनातनखा
कीनपायसकेवपुनूरी॥ ५८८॥सीसउतारिउमंगसमेतधरेकरआपनेजौनसुभागी॥प्रेमसुपंथपयानकेरवहुवासनावं
दविहायविरागी॥काहूकेसाधनकाजरखेकछुकेवलकांतकथाअनुरागी॥ युगमअनन्यअमोलमहामनिलाललहेहरहि
केविरहागी॥ ५८९॥जानकीजानिजगामगजेतिसनेहसजेविनहायहजारे॥ संतसमागमजायविचारिएवेनमहामुरहै
वनहारे उज्वलशोकसुनीरसनाहींसेवांधिएवीजविचित्रविहारे॥ युगमअनन्यअनेककुपंथतजेपरकाजअजस्रवति
हारे॥ ५९०॥प्रेमपुनीतपरायनवांचिएराचिएरागरहस्यरसायन॥ छेमसुरीतिहिएभलेकेललकेरिललालनेवा
रलसायन॥हेमप्रतीतिप्रभाप्रगटैनिछोरमहामोहमनोजमलायन॥ युगमअनन्यअनेमअभैसुखस्वादमिलैमहवू
वकलायन॥ ५९१॥जानकीजीवनरूपपिपूषहजारनभूषकुहूखनिवारन॥पीजिएप्रेमसनेमसहासजिएसुख
सोगनोशोकसंवारन॥लाहकहालहिएकुनीरसचाहकिएरिलहाहहरारन॥ युगमअनन्यसुसंगसनाइएपाइएमोज
उछाहअवारन॥ ५९२॥

॥श्रीराम॥

घनाछरी॥ एक एक अंग रस रंग हिलि हैं गकर कीजिए मनन मनन तन गुन गारि के॥ बारबार चित्त उर झाय पवहू लायति
तहू जिए मगन मोह मार मद मारि के॥ संत वर वाग अनुराग भाग लाग निधि सुफल सदैव सींच सुनिए सुधारि के
युगल अनन्य रीति विमल विनीति युत यतन विहीन नरोतीन लोक तारि के॥ ५२३॥ नाम रूप सुगुन से चेत से सम्हा
रिही पाहिय हिल वारि वारि आपने करन कुल॥ महा मोह मान मद असद पतंग सम जारिए निसंक मन के होय पनाक घा
पि गल॥ चाहो जो न चीज चित्त विसद तमी ज वीज पावो अनयास आस पेश शाहू न रहे खुल॥ युगल अनन्य वात अ
धिक सो हात कोटि कोटि करामात नित्य जप तप्रधान पुल॥ ५२४॥ कंवु कल कंठ कमनी परमनीय चारु चिवुक
अधर दुति मधुर अनूप है॥ विंवफल आदि उपमान न समान अंग अखिल सुरंग अनुपम रस रूप है॥ नासिका नवी
न नेह निधि अनमोल मनि सोहित रहित रस नायक स्वरूप है॥ युगल अनन्य आभरन अंग अंग मीके राजत विचि
त्रनी के अपर कुरूप है॥ ५२५॥ सवैया॥ अलकै झलकै कलखि के पलकै न परै ललके मन नेन हमेसे॥ चलके वसि
ए तित हीं सजनी रजनी दिन संग उमंग विसेसे॥ मुक्ता जलके समस्वच्छ सहार सधार भिजोए अजूव अदैसे॥

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥

॥७२॥

दृगमअनन्यमिटैंकलवैंउसआवतचखमैंममानोनिशासैं॥पू॰ ६॥कौनकहैंसुखमाकरकंजसुमंजुमनोहरताईअनूठी॥राग
भरीअँगुरीनकेमध्यमहामनिमंडितसोहीअँगूठी॥लालनकेकरमैंमेहदीवरचित्रअजबसेमतअजूठी॥दृगमअनन्यसहीअ
नुरागकीरेखपरीपियकेनिजमूठी॥पू॰ ७॥अन्य॰॥हेमअननमोलमनिमंजुलमेरोरहाररंगजेवहारकरकटकखटककर
प्रेमप्रतिबिंबपडेतापएकबारजोनजोहेमोहेरगकटकलायकेलटकतर॥पहुँचीबिचित्रआभरनअनुपमओरललितउछा
हप्रहूअटकहटकहर॥दृगलअनन्यनेमधारिकेनिहारोनैननचैनचितचटेवटेरहससरितवर॥पू॰ ८॥सवैया॥अखि
याँपियकेलखियांजवसेतवसैंसखियांनपरीपलकैं॥रखियांकुलकानगुमानवडीभखियांवकियांतकियाभलकैं॥चखि
यांरसस्वादनभावेकछूमधुकीमखियांसीकहूंकुलकैं॥पखियांकेसमानउडातसदाहगहेरप[illegible]नकोनितहींललकैं॥पू॰ ९
भक्किपियपषपिवाइएनाहनिरंतरनेहनिदाननिहारी॥हीजिएहीनदयालरसालउछाहविभूतिनिहारनिकारी॥भूम
६००
तघायलपायलपांवप्रपंचवेंध्योहियहायहजारी॥दृगमअनन्यविकारवहारउजारसनीतउनापतिहारी॥स्वाससरी
खपायप्रभसत्रसमानसुजानसुसाहेवहेरो॥ढूंढासहहासहरासनसायवसोंपियएआपनेनेरो॥तीनहूंलोकसशोक
दास

॥[illegible]॥

॥श्रीराम॥

कृपानिधिजोउकहांहितकोऊनमेरो॥युगमअनन्यनिवाजिएनाथअनाथसनाथकिएजसतेरो॥६०१॥जानकीजीवनजा
नजिवावननामजपोलखिउत्तममाघेहै॥होयहमेशहिएहुसयारविलोकिएशीशमेंकालकुवाघेहै॥नामसनेहसुदेव
तरुविनकैसेहूंनासनमोहनिदाघेहै॥युगमअनन्यवसोसरजूतटहोतउधारजहांसठसाघेहै॥६०२॥रंगउछाहवल्योदिल
अदेहरश्रीगुरुदेवदयालदयाते॥अंगअनंगप्रवाहगयोछुतसूखिसुधासरग्रापमयोते॥ईशअनेकउपासनाछोडि
छकेयासियस्यामसनेहदयाते॥युगमअनन्यनसोचरतीरसपीवततेप्रेमकृपालकृपाते॥६०३॥जानकीसुजानिसममानु
गुरुदेवको॥वातरुहठीकनिजनीकफलफीकविनवूझिसतसूझिनिनकीजिएसुसेवको॥औरउसातवनव्रातन
कोटेरुछोडिमातुपितुभ्रातसुतनातप्रदेछेवको॥सांचसतगुरुसनमानसुखखानहींसेंपाइएप्रकासरसरासभवभेव
को॥युगलअनन्यसवतैतारसेसुवंदनीयजानकीसुजानिसममानुगुरुदेवको॥६०४॥विमलविचारअविकारसेंसमे
तस्वच्छसाधनासमूहसुखसारप्रदेपेखिए॥लोकपरलोकवीचशोककोनलेशहेसपरमपरेशकोमिलापदृष्टिदेखि
ए॥संतरसवंतदुखवंतनरमांझमनभरमरहेतेकुनेकुहूसरानलेखिए॥युगलअनन्यकीजेकारजविवेकटेकधारिकेअखंड

नाम २

वंउचाहनोपैरेरखिए॥छं०५॥सारासारबोधवानसारसमुझानजननपावेंपरमेशरसखानशोककोकहै॥हाराहारभेरखेरभयोहैविहीन
मनअमनअडोलमोहलैवासवीजहींगहै॥धाराधारमोरमंगलसुसारसरसोहेवसुताररूपकेतचिन्तहीचहै॥युगलअनन्यपा
रावारकोतरनतुच्छजानकीशधामकोप्रतच्छहेरहैसलहै॥छं०६॥मेरेमननमांझभोरसांझशौकजौकरएकमिलापामहबूबखूबखाहि
समसजापकेहेरहरतोरगौरद्वसरोननैनकैननअपायाकाहूभांतिकांतिकलितसजायके॥प्रेरप्रीतिप्रवलप्रतीतिप्रीतिभिन्नहोपथोय
हाथअखिलकुवासनाभजायके॥युगलअनन्यसंतसतगुरूकृपापायपथोरहिनवीचपिलानोवतवजायके॥छं०७॥मानेकैनकाहूकी
नेह
नरहैऔनरेनऔनमोहहैनशोकसरससमीपसें॥जानेजगजावतनलसद्यासफूससममहामोहतमकोमिटावेजपदीपसें॥छोने
सारासारपरमारथविचारवरद्वसरोनकारमानोकियाचोपनीपहै॥युगलअनन्यस्वातीसीकरसमाननामरूपअभिरामद्वैसाम
मतिसीपहै॥छं०८॥चलीचित्तवृत्तिसुधासिंधुनामरूपमांझपूतरीसुनोनकेसमानलीनतालही॥पाईपरितोषपोषचोषघोष
जोषविनाभ्रमकिभरोषागोषवैठीआयसोरही॥जानकीजीवनजूकोसुजसअजूवगायपायप्यारपरमकेहाजूसेषकारही॥यु
गलअनन्यसीताराममहींकोहियाहिव्यमव्यताभंडाररामरोमचाहनाचहीं[illegible]॥छं०९॥नाहकेंगेहकहोतहरामकोशहकेलोक
होउहगहरेवा॥

॥श्रीराम॥

वाहकैवलसमानमहामनमेलकमायसुनैननहिंपरेवा॥ चाहकैराजसुनाममनोहररहोयरहोमुदमोहपरेषो॥ युगमअनन्यअदाहकमै
जैमेंजापकेलीनसुरंगहिंलेखा॥ ६१०॥ नाममहामुदमंगलसीमअनीशअभीमअफीमविनाशक॥ दामहिमागअदागदवीरल
अंदररूपविलोकुविलाशक॥ नामपगलाममैंकौनकथाकहिएवहिएछविसारसुभासक॥ युगमअनन्यविचारकिएपरकेवल
कोशलनाथप्रकाशक॥ ६११॥ श्रीसियराममनोहरमाधुरीमोदप्रमोदविनोदविलास॥ प्राननिछावरिकीजिएशोकसैंकामक
लंककदायकिलासैं॥ वारहिंवारविलोकिअलोकिकरूपअनूपपरावप्रकाश॥ युगमअनन्यअमोदनहींतिलकैसहूँहीयरहे
अभिलासैं॥ ६१२॥ घनाक्षरी॥ कामनीअधीनकाममानिएसचेतआमभावनाविरामकेकिएसेंअभिरामहै॥ दामिनीदमक
दामवामदोषदुखधामजानिएजहरकालकूटरागग्रामहै॥ भामिनीविलासग्रासत्यागिएविशदवासनासिनीप्रकाशरवा
सहासताअरामहै॥ युगलअनन्यसततसंगरंगरागरंगोभगोमोहनींदकोविहायभोरशामहै॥ ६१३॥ सवैया॥ कामकथा
यकेरजेवसेजवलोतवलौरसप्रेमसुदूरै॥ बूझिएविज्ञसमीपमेजायकेभेदबतायकरैंचितचूरै॥ स्वादजहानअनादमहारि
पुजानिकेछाडिएजोहिएनूरै॥ युगमअनन्यसुनामरटोसवसाधनआसविचारिकेघूरै॥ ६१४॥ कामकलंककेखोएविना

॥सीताराम॥
॥नामने७॥

॥श्रीराम॥

॥७४॥

खुसीखेरसलाहअहंनहोनी॥ दोषद्वारारिवाजएहीएककहूसेरोयाकेसमाननछोनी॥ कैसेंहूंपासोवचोउसियारहोछायपहिएछ
विछावनीसोनी॥ युगमअनन्यमनोजव्यथासवेरागनमेंसरहरकुयोनी॥ ६१५॥ संतनकेसंगसेदुखदारुनयाकोनेशसुन्याकान
भलीविधि॥ पैअससंतसमागमहूंअतिदुर्लभपाइएजोनकिएसिधि॥ नामप्रतापसेंहानवरेबुधसोसतबातसमातसहीबुधि॥
युगमअनन्यउपायनहींकछुकेवलआसमियावरकोनिधि॥ ६१६॥ घनाक्षरी॥ महामोहहारीमनसिजसविकारीसहारखा
रीरुचिभारीप्यारीनारीव्यभिचारीहै॥ कोटिकलाकारीगांववसतउजारीधारीसेनदोषवारीकोहद्रोहमतवारीहै॥ कठिनकुमा
रीमोहहराहूसेंखुमारीभारीजीवनविमारीकालजालकोपसारीहै॥ युगलअनन्यपासेहोयछुटकारीजवअवधविहारीयारीभा
वेएकसारीहै॥ ६१७॥ विषयवसकिएकुलकरननिरोधहोतकरननिरोधहोतेमानसनिरोधहै॥ मानसनिरोधहोतेंसुबुधिनि
रोधसेतिसंवत्तअनूपमतआतमसुवोधहै॥ अहंरूपआतमतेप्रकृतिसुकार्य्यदेहताहूतेपुरुषपरीतिअविरोधहै॥ युगलअ
नन्यपासेभावयुगजानिलेहुधारनापरत्वस्वच्छसरसप्रवोधहै॥ ६१८॥ काहेकोकलंककल्पकीजिएकलेशवशछावनीछ
लीनचित्तछाइएहुलाससें॥ पाइहेप्रपंचवीचरंचहूनमोरमूढहोरहै [illegible] हलाकविसवासनाविलाससें॥ होयसावधान

॥७४॥

॥श्रीराम॥

अवधानवहवायनामकीजिएउचारसुखसारअभिलाससें॥ युगलअनन्यसीतारामकेकहायदासखासपेरिउचितनआसहा
सहासैं॥ छ१९॥ मैनजामअधिककिएसैंसुखसारवीचपरतविशेषतातेजागनाईसारहै॥ सीतारामनामविनावैनव्यवहार
वीजवोलततउपाधिनाममध्यारकसारहै॥ लैकिकीकलामखामवामवहनामसंगत्यागिएतमामतमअसमअसारहै॥
युगलअनन्यअलसायहिसिदूमरीसैंशोकसजवायनामजपोसुखसारहै॥ छ२०॥ लोभछोभसंगरंगसमलअनंगजग
जीतिएजमायजियज्ञाहिरीजलापके॥ उदयउरहोयप्रेमगाभशोभसानकूलभूलशूलसमनमनोजहूंमलायके॥ संतसं
गसुजससुनतवीजवासनाकोभुनतहुनतहिसैहोंसलासमायके॥ युगलअनन्यक्रोधधामअनुरागनामकीजिएअ
खंडधूमधामलागलायके॥ छ२१॥ वारवारप्रवलप्रकारकहैंसंततजनअरेमनमूढगूढवैनअनमोहको॥ कीजिएविचार
मारकारभारदेयपीठिहेपलोकतीनछीनविगतविनोदको॥ तेरईकहैतकुलकातिलकलंककतकारकरनकुलमन्या
मैसैंरोहको॥ युगलअनन्यचेतचेतनचमत्कारजानकीरसिकप्रेमप्यारनित्यनोदको॥ छ२२॥ चाहैजोनहोयपैरटेगे
वसुजामनामएकताररोकिकेअखंडवृत्तिआयनी॥ काहूसेंकहेंगेंभेदरखदेसैंविहीननाहिनेकुरकुनामकोनछोडिहौंहितायनी॥

॥नाम०॥

प्रवलप्रतापगुनमननम्रखंडकरित्यागिहैं विशेषित्र प्रतीतिदुषदायनी ॥ युगलअनन्यविस्ववासनाविहायप्रवरहोयकेआगरसहृपा
डहैंरसायनी ॥ ६२३ ॥ जानकीरसिकनामरूपलीलाधाममग्गनअगनअधारप्रानेपयपावैनेशपर ॥ प्यारएहमेशदिलगारएसनेहसाज
साजिकेविशेशभावनीयभावैनेशावर ॥ स्याइएललामलागवागआगदागाहीनहीयप्रेमउमंगअंगअंगछावैनेशातर ॥ युगलअनन्यहु बा
लसाइएउछाहनाहनैननिनिहारिवारिचित्तचावैनेशडर ॥ ६२४ ॥ नाममहानरमांझमनोहरमीनप्रवीनभएमुरपावो ॥ कामकबा
हतकोलविलोकिकेवानविरागविशेषचलावो ॥ आमअरामविरामसमानसदाअवलोकिकेहोशनसावो ॥ युगमअनन्यसुसंतस
मानकेअंतरवैठिविशेषलसावो ॥ ६२५ ॥ भूलिएभांतिविभूतिविलयवरवारविलोकिसुनैननमेंभूलिए ॥ भूलिएसावनमाससो
हावनसाजनसंगउछाहअनूलिए ॥ तूलिएआपनीइष्टअनिष्टअभिष्टस्वरूपसनेहकबूलिए ॥ बूलिएइष्टअनूपममानसीभाव
नायुगमअनन्यनभूलिए ॥ ६२६ ॥ आजसेंस्वारविहायकेभोजननेसेनअरुलौकिकवैनकहेंगे ॥ सोउकहैंमैनमहामतवारीइसा
व्यवहारनिशाहुजेहैगो ॥ चित्तसेवाइवितर्कविलयकरिशांतिस्वभावसुचाहचहेंगे ॥ युगमअनन्यसिपावरकीकरुनासेसोहाव
नशीकलहेंगे ॥ ६२७ ॥ कैसेहूंकामकषायकदाइहैंकायकलेशकलानकोदायक ॥ वैसेंहूवीततवाधिविनावरवोधविशोधनिरोध
अमायक ॥

ऐसहूंहोशाहिरापहिराममसंतसमाजस्वरूपसहायक॥ प्रगमअनन्यऐनेसहूंहागअभागकुलागनघरीहैहायक ६२८
॥श्रीराम॥ नामहींमातपित्तापरिवारविहारवहारअगाररहप्तारे॥ राजसुसाजसमाजसुधीसर्वस्वसुधानिधिनामसुधारे॥ साधनसिद्धसुसिद्ध
सुखाकरनामहींहीनहृपालसम्हारे॥ प्रगमअनन्यअज्ञानसुजानसियावरनामपरेशविचारे॥ ६२९॥ चारिअठारहओषट
नौवरवावनवोधसुनाममेपायो॥ वीजविहायननायकहूंतरुताकिएनैननहीषालिसोहायो॥ चौदहपांचसुसातनवोविसुतीन
हूंनामसमीपलषायो॥ प्रगमअनन्यविवेककिएविनपायमहामनिमूढवहायो॥ ६३०॥ अवधसुधामकेस्वपचपूततताईपरवारि
एअनंतमुनिमहतअचारको॥ अवधहलालखोरऊपरअनेकहवखिवारिडारिएनलाउएविचारको॥ अवधनिवासी
कीटपतंगपरत्वपरकीजिएनिछावरगारुडवलसारको॥ प्रगलैं अनन्य अपराजिताप्रतापपरवारिएहमेशाईशाईशानाअपारको॥ ६३१ ॥नामने०॥
अवधपषानकेकराहिकप्रकाशपरवारिएअनंतसूरससिउतिदारको॥ अवधकषायपरवारिएसमाधिवोधअवधवि
रोधपरवारोसमसारको॥ विमलवैकुंठवनकल्पतरुवागवरवारोओधसूपलनऊपरविहारको॥ प्रगलअनन्यसीतारामधा
मवासपरवारिएअनंतसाम्यसाधनविचारको॥ ६३२॥ ऐसश्रीअवधमेंनिवासकीयाचाहिए॥ जैसजगजालवीचवालवुद्धि॥

वूडि रहे कष्ट तन को टेकि किए जतन अथाहिए॥ जैसे वुध विद्या वादह छुटि नेसकत वैसवधताहू भए और जन्म अवगाहिए॥ जैसे विन
वासना कदै ध्यै मन मांझ दृढ भोर सांझ वाही संग अंग हिलहा हिए॥ युगल अनन्य कटिकासि के अखंड नित्य ऐसे श्री अवध मैं नि
वास किये चाहिए॥ ६३३॥ वाहि नव नित वही जिन की तिन की कछु संगति नीच निहारो॥ कैसहूं लोभ परे सिर पै तउ नैकु नहीं दि
सिहुषर्पधारो जानकीजी वननाम पियूष लगी उर भूषन रंत निवारो॥ युगम अनन्य असो चरे हरति संगम जातिन संग सुप्यारो
६३४॥ पातकी पाप पहार सिखा न खला दहै मे पार हैं अधमाधम॥ जानकी वल्लभ नेह सुधारस भीनन साधन जाए नहीं रम
वाद विवाद विषाद खपा बहु बोलि के वालिस छांडि दिए सम॥ युगम अनन्य कोई रिनि मे मसठ संकट कोटि से हमिलि केपम॥
६३५॥ सांझ सकार सिया सुकुमार सुनाम अधार विकार किराए॥ वांझ समान सुपूत लहै मुद मोद विमोर सुदाम फिराए॥ झां
झ अज ववजाय भली विधि लाल रिझाए हमेशा पिराए॥ युगम अनन्य प्रपंच पलाय के प्रीतम पीर सें प्रान पिराए॥ ६३६॥ वात
विचित्र विनोद विहार वनाए वेद वलबोध विलासी॥ जातिरूप पांति सुनात स्वास मभे सिय स्याम हीं स्वच्छ सुपासी॥ घात
संघात मिटाय समी सपने न नहीं वासनावृंद विनासी॥ युगम अनन्य अतात वही करामात के भाजन प्रेम प्रकासी॥ ६३७॥ ॥

॥श्रीराम॥

जौनकेजीयमैंजोकसुजोतिजगीनिसिवासररहैकहिराए॥ कौनकहैतिनकीगतिकोसबतौसत्रलेखप्रपंचगिराए॥ तौनसमैईसअभे
दसहागतखेदमुनीसकहेनियराए॥ युग्मअनन्यअपोनकेरीपककीसमताचितवनिथिराए॥ ६३८॥ सषीसहासुचिसार
सियावरनामस्वरूपअनूपविचारत॥ वसीविवेकविहीनलखैकिमिजौनसरीरहीबोरनिहारत॥ सखीसजायनहाथलगैकछु
केवलकामकलेससंचारत॥ युग्मअनन्यअमेसखीकेरा[illegible]नमांझकोउपड्मानमेभारत॥ ६३९॥ आपकोखूबभुलायरह्यो
चितवीचतुहीयताझीनविलोको॥ छापअतापहिएनितहींदृढकीजिएमोजेमहोयविशोको॥ द्वापरराजदुरायपरशाहि
शिदेखिएयुग्मरहस्यसुलोको॥ प्रेमप्रकाशअलापनिहायतनामकिएतमतारहीझौको॥ ६४०॥ नामप्रेमोहविहारविलो
किकेछाकिरहेजनसौकसजाए॥ अंगहीअंगमेमातिरहेवरबुद्धिविभासितवैतिरमाए॥ कामकलेकसपंकनिहारिनिरंजन
ननैनकलेशकमाए॥ युग्मअनन्यजहानजमीनजलायुजगामगनोतितमाए॥ ६४१॥ नामअनामअजूबअहाहिलला ॥नाम०॥
यफहाजनजौनसुभागी॥ धाममेंकामसुधामसोईरसनानिसिघोसवहीरटलागी॥ हामकुवामकलामनहीअभिराम
मनोहरताजियजागी॥ युग्मअनन्यअभिन्नहमाहिलहारसवीहपगेगनत्यागी॥ ६४२॥ नामसैंविहीनसबसाधनअसत्यसम

॥श्रीराम॥

॥७७॥ को

मैंनुहूंकेभएऐसीभांतिअनुमानिए॥ जैसेव्योमनीलताविभासगंधरवगनामनानारंगफटिकसुमांमजिपजानिए॥ जैसेनावैवैठोन
रतीरतलवरगतिचलतसुठूठवच्छमाजुषपछानिए॥ पगलअनन्यरविकिरनविभांतिनीरऐसहींविचारिनामरूपछविछानिए
६४३॥ नामकलकनकसुलोहभूमिनीरसमआभरनसुघटतरंगशास्त्रऔरफन॥ वेदविज्ञानतजेनेसाधननिरूपिकेहैंमूलसव
हींनामकिएगुनगोरषधन॥ नानामतवादिनिविवादविषवीजवोयभोयदियोचित्तमनवुद्धिसमहारछुन॥ पगलअनन्यरामनामअ
भिरामरतिरहितअहितहाथविवेकेगोविहारवन॥ ६४४॥ नामअखंडप्रचंडविभववस्तभूतिविभासविसेषविचारो॥ वामविभंडअमे
उअजागुनदंडविसारिकेशोकसम्हारो॥ आमएरंडनसामसनोजिपेदेवधुनीननदीनिर्धारो॥ पगमअनन्यअरामरसारसरागस
हागसमागनिहारो॥ ६४५॥ नामउचारनपोगजमीनप्रवीनउपासकभक्तप्रसंसै॥ भारतवर्षअधर्षअभयप्रदकोटिनहर्षको
हेतुअसंसै॥ पाहकोपापनप्रानपतीपरप्यारवदावतजेननिरंसै॥ पगमअनन्यसुसंतसुधीधिकभांतिअनेककहैंतेहिवंसै॥ ६४६
नाममनोहरप्रीतमप्रानप्रधानप्रमानपुरानवषानत॥ आमकलामहरामतमामभजेविननामजसीजनजानत॥ ग्रामप्रपंचप
लालमलालरवालसेवालकुवालपछानत॥ पगमअनन्यहमेशासुदेशाविशेशानिवाससदासुखमानत॥ ६४७॥ हापहिरएहर

॥७७॥

सायत्त होत लषे विन कुंड अजोतन गा भग ॥ धाय द्रादिशि मां भ्रफिरों विरहाकुल जो हि वे हेतु सगा वग ॥ छाय सुधा निधि श्री
सरजू तर तीर कुटीरी नाम लगालग ॥ युगल अनन्य अछाय भली विधि आन उपाय सैं नित्य भगाभग ॥ ६४८ ॥ काहू सें काज नहीं
हमेरकछु केवल नाम कृपाल के किंकर ॥ सेवौं सदास्तुति संवत सार विचारि प्रचारि सोई अभयंकर ॥ लोक अशोक समीप सदा
दिलत्रे दरदैदिपरे प्रभ शंकर ॥ युगल अनन्य विहाय विभव वदवाद प्रमाद अनाद भयंकर ॥ ६४९ ॥ पांच हूं प्रेत प्रपंच धगो न भगो
छिनैरैन ठगे दुषदाता ॥ सांच अकांच न चाय जहां तहं आपनी वार अमा पविधाता ॥ आंच अनेक लगाय हिए अति व्याकुलता
हित कीरि विधाता ॥ युगल अनन्य सुवाच वदे नित नाम कृपाल सही जन त्राता ॥ ६५० ॥ पावन पाथ पुनीत प्रभा पल पाव प्रताप क
पेषिए प्यारे ॥ श्री सरजू सुचि नीर नहीं निज नाह सनेह स्वरूप सुधारे ॥ वार कै नैन निहारत हीं जन आरत दाह दुरे दुति धारे ॥
युगल अनन्य सजाय महा व्रत सेइए श्री दृग जानित प्यारे ॥ ६५१ ॥ जैसी प्रीति हाड चाम मांस मे लगावै नर लागे सीय राम मे प्रतछ
मोह माल है ॥ नैन बैन प्रान मन करन कुंड वतो न नेकु उलटाए छवि छावत रसाल है ॥ श्री गोसाई गाथ विल्वमंगल प्रसिद्ध
पुनि पषिए सुचारु चष षालिक कमाल है ॥ युगल अनन्य चित्त राषिए निरोध बोध सरस से मत पाहीतन मे निहाल है ॥ ६५२

चं.के

व्यावारविपुलवहाएआवभावह्वावहोतविह्लितनैकसोंकैआनिए॥ मषाहसोहिसीधावचावतावमैंसमावकरतसुसंतसंग
रहितप्रमानिए॥ जानकीजीवनजूसैंसोकजेकसाजेविनानानारेवहमहदेहतीनोलोकजानिए॥ प्रगलअनन्यचिंतामनीनाम
नेहनिधिप्रमहीहिरापहायजन्मजन्ममानिए॥ ६५३॥ घूमतघूमतघायघस्योघरघूरहूँसैंमर्प्योहगईहै॥ भूमतभूमततमो
हनिसानितहापहजासनहारभईहै॥ तूमततूमततूलतंधातनसीकरसेअतितुच्छछईहै॥ चूमतचूमतचाममईतनआपसेतो
नप्रमाहछईहै॥ ६५४॥ भाषतभाषतभावभनमोमलभावनाभीतिभईशभुलाई॥ चाषतचाषतचाषिलियोरसनामपियूषअदूष
भुलाई॥ राषतराषतराषिलियोपतिप्रीतमप्रानप्रधानबुलाई॥ नाषतनाषतनाषिविषयभ्रमपुंगमअनन्यनिसानघुलाई॥
६५५॥ सीतारामनामरूपमाधुरीमगनमनकरनकरैंवसैंसेमतानित्यकीजिए॥ आलजालजगतजलापहालसाहलेहहिरस
हमेसखेदहेततजवीजिए॥ रामाकारवृत्तिविनावीजवासनाहिहरहहोततनकौछनेकौहूआपकोरछीजिए॥ प्रगलअन
न्यचितचपलचलाकचाहचौकवीचल्यायकेपियूषप्रेमपीजिए॥ ६५६॥ भूलतभूलतभविष्यकृपाकुलमध्यसेमतसुप्रेतहूं
पांचो॥ पायपरेश्रौंपरानैंदलेशरहेनहिवासनाआंचो॥ कौनकहैतिनकीगतिकीरतिप्रीतममलीनभएस्रुठिसांचो॥ ॥ ॥

प्रकाश

॥श्रीराम॥

युगमअनन्यकृपालकृपाविनअैसीइसानहिहोतसुवांचो॥६५७॥जानकीजीवनरूपअनूपसुनामभैलीनभएजननजोई॥होतअज
वइसातिनकीसवभांतिसुरागअनुरागसमोई॥जीवतशवनलखाएएरेकरनाहिकरैहसुषोहिनिकोई॥युगमअनन्यविहीनप्रभंजनहि
पकज्योंचलतातजिहोर॥६५८॥कारनकरनकामकइनमहनमानमथनमोराइमनहायकइपालहै।।मारनमरनजराजनभजरनहायहि
रसहतनएकसायतकृपालहै॥तारनतरनहिपहरनहजारहेसजोसवितरनआभरनईशामालहै॥युगलअनन्यसुकमारनशरनसानकू
लताधरनगनगाहककमालहै॥६५९॥वइतत्वसारसिरताजमहाराजराजअवधसमाजमेंविराजमानमोरइछवनं॥नेहरेवहमननि
हारिएनजीकनैनेननहनिजलायछविहेरिएप्रेमोरवन॥गैहगनगननगावाय [illegible] ग्रामअमनतेअसतडुरायशोकसाजिएसुना
मसन॥युगलअनन्यछइस्यइसेविहीनहीनपाइएप्रवीनधामममोंभनिजनितातन॥६६०॥कोटिनभानुगमानहरेतमतोमअनंतप्रका ॥नामनेम॥
रविनासी॥संतसनेहिनप्रानसहस्त्रसमानसुभाविकभावप्रकासी॥रूपनेरवसहीसवैहैपरवातवनाएनहींप्रतिकासी॥युगमअनन्य
अतर्कविभवनहिजानिएयाहिकहाचितहोंसी॥६६१इष्टमईसवभांतिलेषकवहूंनाहिद्वेषकोरेषविचारे॥हानवइरवसुईप्रानकोकरुना
निधितेनहिभिन्ननिहारे॥त्रासनकाहिकिनेकरेवउरउज्वलसेवसुस्वामिसवारे॥युगमअनन्यविहायकुवासनाहिव्यउपासनाप्रामसुधारे॥

वि
६६२॥सीतारामनामअभिरामकोउचारकरेएकरसैतलयारहेतसुंशेषतर॥विमलवरंतसांतसहितउचारउरधारेवृत्तिअसहविहायकेवि
वाइगार॥मइलेताषवाननाममहारसपानकिएभीषमागिपावतअसनविगलितउर॥युगलअनन्यकीकलितकोपीनरूपारोषसववीच्चमा
निरछकोविभूतिवर॥६६३॥वासनावंदभुलायमलीविधिसिद्धिनवोनिधिखाकविचार॥आसनअोरकेरकवहूंनिजनामविभवलीकिआ
तमावार॥मौनअगोनसुभोजनसुद्धएकांतनिवाससुजागतवार॥युगलअनन्यवहावेनहीमनआठहूंजामरहेमदमारे॥६६४॥पीव
नकारनपात्रनहींकरभोजनहेतनरंचकभाजन॥गदरीसीतनिवारनवास्तेएककहाचितछोडिकेकानन॥जानकीजीवनभावसु
चारभरेभवनायभुलायवजाजन॥युगलअनन्यत्रिकालअभैमुदमालेमैमातरहेसदसाजन॥६६५॥शांतिसवभांतिभवभ्रांति
कोहरनहारवहतविचारविज्ञवदविदेषिए॥रागद्वेषईर्षाकरमकामकोहमोहआपहींविलातपलपरतनपेषिए॥शांतिहींसेंव
सतविरागवोधभावभलसफलजनमशांतिसहितसुलेषिए॥युगलअनन्यसुद्धसुभागस्वरूपसुखमुकुरदेखाखेनिमित्तरतिरखि
ए॥६६६॥सीतारामनाममोदधामकोटिकामश्यामदायकप्रतछ्छप्रेमछोमहियेहेरिए॥सीतारामआमवासहांसफांसदासत्रास
छोडिएकलंककाकासनामनित्यटेरिए॥सीतारामरसचारुचरनविहीनछीनदीनहीनजानिजहानहानटेरिए॥॥ ॥
ए

युगलअनन्यनामआठजामएकरसजीहजापसुजपलगायचित्तफेरिए॥६६७॥सीतारामनामगुनगाइएगावायआपतापकोन
पाइएसमाइएसुदेससैंमें॥रागद्वेषरेषनाषैंचाइएकहीयमलिधूलिसममानिएजहानजवधेशमें॥रस्काफिस्कजाहिरविहायकाल
व्यालसमवातिनसैंनहस्वच्छसाधिकअवधेशमें॥युगलअनन्यचित्तकीजिएचकोरचारुरैनचैनलीनसुचिसुमुखनिशेशमें
६६८॥जानकीनायककेंमेंसिगारगुनहैअविधानसुशब्दमेंजेते॥संहितासारसुवेदविभवतिमिग्रपैंकोनिजअर्थउपेते॥है
सवठौरपरत्वप्रभाकरपेषिएमोहहिरायअवेते॥युगलअनन्यअपंचमएविनुहानिप्रपंचनहोयगोसिते॥६६९॥हेपर
हेअलमस्तफकीरअमीरहकीरअसीरविचारो॥श्रीसरजूतटतीरवसोविरहानलहीयमेवारिसम्हारो॥धीरधुरीनसुसंगस
जोजसजीवनज्ञानहमेससुधारो॥युगलअनन्यगंभीरहृदेहरमायतशोककेतावविचारो॥६७०॥दहदावेदनचैनरपे
दकोनिवासवपुविविधिविकारभारभवननिहारिए॥कायहायजायधायदायककेरारसोंपसदससरीरहीररहितविचा
रिए॥नामसत्तनायतनअत्तनवत्तनरूपकोठनकुरूपछांहधूपनासकारिए॥युगलअनन्यकौनकुनपनिरूपिकहौंमहा
मोहमूलशूलभूलहूलजारिए॥६७१॥हौंसरेलमेलसैलफेलमैंगवायोज्ञानध्यानरामरसिकप्रधानलाजनालगी॥

आसफांसमहिरसहवासमैंबंधाप्रेमरूढगूढप्रीतिरीतिपरतीतिहूनजीजगी॥कामकोहमोहद्रोहलोहकेनिमित्तनीचप्रानपतिपा
रसहिरायोहायनाठवी॥युगलअनन्यधाममहलमेंकामसवभांतिमोहदामवासमजोनासगावगी॥६७२॥सिष्यसोईजो
सैनहसंजेजियजाहिरवातिनवीचनरारवे॥श्रीगुरुज्ञाननिधाननिरंतरवैनविचित्रभलीविधिभाषे॥नीरमेनीरमिलेताहिभां
तिहींहोयसुनामसुधारसचाखे॥युगमअनन्यअनेककदूरितकामकषायकलंकहिंनाखे॥६७३॥स्वच्छसरासिवसोई
महीवहीवनितिवटोरिविभूतिविचारे॥अच्छमेप्रीतिप्रतच्छफवेफलचारिहूंकोदिसिसेहियहारे॥प्रच्छपुनीतगेहगुरु
कोदृढइष्टकरंवपरेनहिटोरे॥युगमअनन्यसुरच्छकश्रीसियरामसमीपवोलायदुलारे॥६७४॥पांचहूंक्लेशकुदेशनि
वासविशेषतजंतमतामप्रहारी॥नाचनाठौरहींठौरनिवारिकेधीरभएरससागसवारी॥आंचनानेकहूंलागतिन्हेवरवाध
निरोधविशेषविचारी॥युगमअनन्यधनीधनपायकेशाहनशाहदशाहिलधारी॥६७५॥नामनिराकारसुषसारअछिती
यपरअमलअगारमेंनिवासकिएएकरस॥लोकशोकवासनाविगंधअंधदूरिधरिभावभरिसगुनसनेहीरागभा
गवस॥सीतारामनामरटलायकेहमेशामनअजननिवासह्वैनमोहअविलीकजस॥युगलअनन्यरूपमाधुरीसुसिंधुमीनभावना
विहीनरोमरोममसतसोमलस॥६७६॥

सीषिए ५

॥श्रीराम॥

निरंकुसमानसनमानयोगजगबीचदूसरोप्रमाननाउरानबीचब्यानैहै॥ऐसुमानसमतमपातकप्रवाहहाहाहातऐसेषेरख
राखतनप्रानैहै॥हेतहुतिहरसहपालमुंडमालब्यालविषमविषाहविषलेतहेतत्रानैहै॥धुगलेँअनापासअभिलासआसपर
नप्रकाशपरपारएप्रधानैहै॥ ६७७॥निरंकनिकेतकेनिकटनितनेहयुतकीजिएनिवासखासपासभावचावसैं॥सुनिए
सहेवसावधानसैंवचनवरेहरिएसुहेतुभावअमलसुहावसैं॥खहमेरखंचकनिषेरअनमेथमीतमानिएनेनकहूंनिव
रिएसुभावसैं॥धुगलअनन्यसीषसमच्छस्वच्छहूजिएहमेसलच्छलीनसुप्रभावसैं॥ ६७८॥ जानकीजीवनजेसैंसरस
सनेहचाहचित्तबीचजोपैतोपैबातएकमानिए॥कोटकालकूटकरवालकालकेहरीसैं~~कठिन~~कठिनकुरोगवाममिलन
प्रमानिए॥ओरनिजनाहनामलीजिएहमेशामनचोरवचिजायखोंरखाहिसदुकानिए॥धुगलअनन्यसंतशास्त्रनसु
मततततहाप्रकेरकोतशांतनीकीविधिछानिए॥ ६७९॥ सहसपचीससलोजपतजौनजीहनामरामअभिरामताहिमंगल
अवेसहैं॥जानअनुरागीवडभागीकेसुनेमलच्छसोतोपरतच्छस्वच्छरहितअँहेसहै॥धुगलअनन्यताकीमहिमा
अथाहनित्तजाकेसुखसागरकीररनहमेसैहै॥ ६८०॥नाप्रिकानिहारैनेननासततिनिषधानिजनेहीनिर्मानहोतपोतपनप्यारसैं॥

॥नामनेः॥

२ ३८॥जाकेनेमअचलपचाससहसाधिकहैसोतोदेवहूविनसैं
पूजितविसेसहै॥ २

॥श्रीराम॥

॥८१॥

वामावहनामकामकिंकरीकेसाथ्यैवेनवहत्तविकारवहुभांतिनविमारसैं ॥ छुवतछलीनछांहवाहआहद्दाहदिलकाढतवि
सेषवारएकहींविहारसैं ॥ युगलअनन्यमहानीचमीचहूंसैंमीचनखसिकढिनकलंकभरीभारसैं ॥ ६८१ ॥ सीतारामजूकीनिजनि
खिलविभूतिवरविलगवहैहिवैनताकेमखखाकेहै ॥ संतसिरताजनितनैननिनिहारिनित्यमंगलप्रमोदपाएकियोचिन्तचाकेहै ॥
नानामतवादपभिनामसिद्धएकेदशाविसदविवेकवीचभिन्नताविवाकेहै ॥ युगलअनन्यपरमेशासुविशेषसुखसोवतसुनाम
सहसहनसुपाकेहै ॥ ६८२ ॥ संतरसवंतउपनिषतसुसिद्धमतरसनाउचारनामकीजिएसुप्रेमसजि ॥ चिन्तचखमचमकविसेषर
तिरंगअंगहरषहजारवारभावनामवेशभजि ॥ सहजसमाधिआधिव्याधिविराहितहितलायछायछविगनभावनाअरस
तजि ॥ युगलअनन्यनामधामअभिरामसियस्यामवसुजामध्यायरहिएसुहायलजि ॥ ६८३ ॥ सांवरीभौंहकमानकसी
हसीरासविलासउजाससुभावरी ॥ भांवरीसीफिरैंदेतमेरेदृगआतुरहोयभईमतिवावरी ॥ वावरीनेहमेंडूभीअलीनके
टीकवहींतिलपापउतावरी ॥ तावरीयुगमअनन्यसहावजवाएदेषिकेमूरतिसावरी ॥ ६८४ ॥ जानकीजानिकीसूरतिहे
रिकेफीररहेसुधिजानजहानकी ॥ हानकीवातकहूंमैंकहासुषजानिहैमानिहैंनेहीनिसानकी ॥ शानकीरीतिअरीतिसवैतसवीन
फिरैनवलोरखवानकी ॥

॥८१॥

सरजूकिनारे प्यारे रस मत वारे संग सखा गुन धारे [illegible] वि न व [illegible] जी को है

॥श्रीराम॥

खानकीकौनकथाहैतहांजहांप्रेमअनन्यसनेहहैजानकी॥ ६८५॥ प्यारकेगैलमेंसैलकिएमनमैलरहेनकभीमदमारकी॥
मारकीमौजअजूवतभीजवैचारलगेप्रिय़केतरवारकी॥ व़ारकीआहननेहीलेखचखेस्वादविचित्रविमोहनय़ारकी॥ य़ारकी
प्रेमअनन्यपगीसुचिसूरतिनैननमेंआसकीप्यारकी॥ ६८६॥ अलसानेसरससरोजसकुचानेसमपरतपलकपुनिउठतउमंग
सें॥ लेतमनमोललोलललितअलोलतिमिकरतकलोलकेलिकोटिनसुरंगसें॥ छायरहीआसपाससखिनसमाजखास
सहितहुलासदृगदेखतसुढंगसें॥ प्रेमअनन्यनव़नेहनाजभाव़भरेविसदविचित्रदुतिअमलअनंगसें॥ ६८७॥ वैभव़वि
हारव़ारिविविधविहारद्वारसरसहेमशोवेशुमारहारहीकोहै॥ वाटिकाविलासरासखासभासमासपरसाव़नविचित्रचित्तचो
रअफीकोहै॥ सरजूकिनारेप्यारेरसमत्तव़ारेसंगसखागनव़ारेप्यारेनव़लसुनीकोहै॥ ६८८॥ प्राननधनवारेकहूंरंगरसधारे
कहूंरूपकोनिहारेकहूंगाव़ैरागतानको। कहूंकोकिलापुकारेंचारुचातकहूं[illegible]कोरसुकसारिकासंचारेंशब्दसोहनप्रानको
अहोभागरागअतिअचलसोहागफागरंगीतदागवागविहारविधानको॥ प्रेमअनन्यओघमंगलमहानओधिजोहेजननैनो
नैतोनसुखसुखखानको॥ ६८९॥ छूटतफुहारेगलहओरेप्रेमवँद्दव़ारेमानोघनसघनसोहाग़ाशब्दजीकोहै॥ ॥

धा

॥नाम॥

॥श्रीराम॥

॥८१॥

फूलैंगुलावआवखावकेमिटाएमोजमधुरहेरयायहाहहारतअनीकोहै॥ कहरकरोरदिलदहरदरोरलखिलहत्तकत्तारकामको
तुकीसुफीकोहै॥ युगलअनन्यवीजनवलनगारेरंगरहसअरवारप्यारेलोगसियपीकोहै॥ ६९०॥ डारडारमेंरकारफूलपातमेंरकार
जातिपांतिमेंरकारप्रीतिप्यारमेंरकारहै॥ रंगसंगमेंरकारअंगअंगमेंरकारगावरंकेमेंरकारमूलफलमेंरकारहै॥ नरपूरमेंरकार
चंद्रसूरमेंरकारयोगयज्ञमेंरकारनारिविंदुमेंरकारहै॥ हर्षशोकमेंरकारसून्यपूरमेंरकारज्ञानध्यानमेंरकारपारकोरसरकारहै॥
६९१॥ नेमप्रेममेंरकारहैमछेममेंरकारस्वर्गभूमिमेंरकाररागरेसमेंरकारहै॥ तातभ्राततमेरकारवातवातमेंरकारदिवारातमे
रकारसर्वोपरविचारहै॥ मानज्ञानमेंरकारखानपानमेंरकारगानतानमेंरकारअनुरागरसधारहै॥ नामरूपमेंरकारकामधाम
मेंरकारपरब्रह्ममेंरकारपारकोरसरकारहै॥ ६९२॥ धर्मकर्ममेंरकारब्रह्मसर्ममेंरकारनर्मगर्ममेंरकारहोशहिर्समेंरकारहै॥
प्रीतिरीतिमेंरकारजीतनीतमेंरकारमीठतीतमेंरकारनीलपीतमेंरकारहै॥ रामरोममेंरकारकौमकौंमेंरकारवक्रसोममेंरकार
रामरूपस्वादसारहै॥ व्याप्यव्यापकरकारओंकारमेंरकारसुधासागररकारपारकोरसरकारहै॥ ६९३॥ रामनामजपतँचपत
कालकर्मकोहकेपतकरालकलीकामनामतेजेतो॥ परिवएप्रतछेप्रेमप्रवलप्रतीतिकरिगोपनहीनामकोप्रभावअनेमजेते॥

॥८२॥

१५८

॥नामने॥

॥श्रीराम॥

रोगीरोगहरतनलेशसंकाहूंकछुचाहिएविशेषदेवासवपरहेजेत॥युगलअनन्यनामसुरतिसमेतजपिकोटिकलपवीतेनही
उठेसुखवसेजेते॥६२४॥निंद्यनिजपरमपियूषसेमधुरतरअतरतरावनेनिमित्तप्रपपातहै॥लषभेदरसिकचुनिंदअविं
दपदमएजेमिलिंदपायअविचलजोतहैं॥कहांमेरोरूपअतिअधिकअनूपकहांलौकिकप्रपंचपंचभीन्योगनगातहै॥युग
लअनन्यलेशखटकोनचिंतवीचविनवरपायसुखसोवननिशातहै॥६२५॥निंद्यनितनेहसेसुनतसुषस्वादसारवि
गंविवादनादअमलअनादहै॥इष्टपरअसदसमनहूंमिलतमनमोहनमुरादहियहासिलप्रसादहै॥रागद्वेषपीरसेंरहित
सोईसंतस्वच्छसानकूलस्यामरामसुचित्रअहलादहै॥युगलअनन्यअनमोलछविअभव्यगनपतनविनाहींसमुहितनप्रमा
दहै॥६२६॥निंद्यनिजजीवकेसमानमुदमोददेतलेतरुजजहरजमातअवसानमैं॥चामीकरसमसुद्धकरतममसुजन
जाहिजहरस्वाददेजोनअपमानमैं॥देवधुनिधारसमपातकप्रपंचपदगारतनसायतापराषतनप्रानमैं॥युगलअनन्यअना
यासप्रतिकाशसीव्रगननाकरायदेतरसिकसुजानमैं॥६२७॥महामत्तगैराजपीठअसवारजनविपुलवनायभायचायसें
समेतहै॥आसपासअधमअज्ञानस्यानमैंकिमैंकिमरतविचारविनफोकमुखरतहै॥होतनहीनेकुनोखसानरविसिआनपन

॥नामने०॥

मानैसेंरहितहितहरतनिकेतहै ॥ युगलअनन्यकोउकोटिनप्रलापकरैतीनकालहूंमेकहींसपामहोतसतहै ॥ निंदकनिहारिकैनजी
कजाएजीवकयुतनेहसेंसहितजनकीजिएसचेतचित ॥ वेददुवोदवहुविषमविषादत्ताहिसुनतअधिकअहलादसादमानेनित ॥ आद
रवदायनिंदकनकोनिहारोमुखदानमानदीजिएविशेषसजवायचित ॥ युगलअनन्यभेदपाइहैंसुसंततगनधनधनछनछवरवनप्रियपा
यवित ॥६९९॥ सीतारामनामसुखसागरतमामतमतारनतरासतीनतापदापहीनता ॥ जाहिरजहानवेदविसदपुरानवुधवदत्तविधा
नेनेहनायकनवीनता ॥ चारिवीशप्रभुस्वजितकजगदीशदिव्यदीपतदिनेशसतसहससुपीनता ॥ युगलअनन्यनामकारनकमालका
लकदनकरालव्यालपूजिएप्रवीनता ॥७००॥ जेतेजगजीवरंकरावभावहीनपीनश्रवननयनमनगोचरसुजानहै ॥ तेतेजानकीमाना
मसहितसुभालतिलकरहितनमीतविज्ञवचनवयानहै ॥ पत्रसरनामसमवांचतनमदमनअतनग्रसितसवभांतिनअजानहै ॥ यु
गलअनन्यउपदेशहूंनमानेमलमलिनमिजाजमुदअसददलानहै ॥७०१॥ जैसेमधुमक्षिकानिकासिसारफूलननतगृहतवि
शेषवातविदितविसेषहै ॥ ऐसेहींसुसंतसुचिश्रुतिनसमूहमथिकादतसुरामनामरंगरूपवेषहै ॥ नानामतवादवदवोयेअ
सारजानिजिकरजमादयसुनामअतिसेषहै ॥ युगलअनन्यचित्तअंतकनत्रासनिलवारिएप्रमादताविहायमीनमेषहै ॥७०२॥

॥श्रीराम॥

वीतिगएदिनहायसियरघुरायसुभायसनेहनकीनी॥मीतभएभवभारविकारकेरीतिप्रतीतिसुप्रीतिनलीनी॥जीतिचलेहमहीस
वहीविधिमानसमोहकुमायामलीनी॥प्रमअनन्यअभीतिहएविनजानकीनाथकेखहनवीनी॥७०३॥नित्यहींनाहनिहार
तहैंनिजनैननिहारिएनाहकरूसे॥पाछलीआगलीवातविचारिएभूलिएश्रीमुखवैनअरूसे॥हौंतौअनाइमलीनमहाम
इमातोविषयरसरातोसहूसे॥प्रमअनन्यनआपविसारिएहैपलहीपलखेहकरूसे॥७०४॥नानायेनिजनीभिजनमिजगजाल
जीवपीवविमुषनसंगविरच्योविहारहम॥वानावरविमलवपुषवहुवारधारिकियोकामकलिलकमायखेइखोइखम॥जाना
जानीजिकरजमीनजतवापजोरजाहिरजहरजोतवायहरहरतम॥प्रगलअनन्यतानातननतनायेतोमसोमसेविहीनस्या
मसुजनविहायसम॥७०५॥देखिएदीनदयालदयादिलदागदहाइएआपनोजानी॥पेखिएआपनीवारकृपाकीरवा
गविचित्रविचारिएवानी॥शाषियरीतिविभववललेखिएराषिएदूरिदुरायदुकानी॥प्रमअनन्यनिवाजिएआज
सियारघुराजजुजानहैपानी॥७०६॥श्रीअवधेशविनोदविहारीसदासुखकारीसुनामहींध्याइए॥आसअनेकवहा
यभलीविधिप्रीतमनामहींकोगुनगाइए॥होयहेमशानिरालसहीहियलालसालाललामलगाइए॥प्रमअनन्यसुसंत
समागमस्वच्छविनारितिरामनपाइए ७०७॥

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥

॥८४॥

जानकीवेद्दौंमावप्रभावलखेविनपंडितमूढसमानहै॥ आपमेंतापनिवारननामलखेसोचेंषमुखसारसमानहै॥ लोकसशोकसे
संगविहायविराजिरहेपदपंकजप्रानहैं॥ युगमअनन्यासिपावरप्रीतिप्रतीतिमहामुदमोदरसजानहै॥७०८॥ साजिएसमहसुषसाज
नमुसमभनकीजिएनिरोधवोधविशारदवतायेके॥ लोकरंजनाहिहिंसिहीजिएनज्ञानभूलिलीजिएलगायलाललालित्तरतायेके
जेतेहिव्यभव्यगनसुगनविधानकहेंतेतेआपआवेश्रमहीनेरवद्दतायेके॥ युगलअनन्यसंतसांचेसारईश्रासमजोमसमवस्याद्
षद्दूषनसतायेके॥७०९॥ कठिनकलंकअतकारनकरनकुलकीजिएहमेशवेद्दकालव्यालमानिके॥ रमकरिमाकरारहांमहुतिवं
तसंगसमचित्तशांततविशेषसुषमानिके॥ जेतेरिषिराजतेतेपाएहैंअकाजसाजअच्छगनप्रीतियुतद्दोषदुखतानिके॥ युगलअनन्य
जीतिमोजमजेहारौंखूबमिलिखूबभोगवासनाविहानिके॥७१०॥ व्यर्थवातैपधिकारलोकलाजैपधिकारराजनसाजैपधिकारवाम
हामैपधिकारहै॥ विस्वहर्षैपधिकारकारवारैपधिकारखानपानैपधिकारशानमानैपधिकारहै॥ फर्सफोजैपधिकारीरिद्धिसि
द्धिपैधिकारपोलहरपैधिकारवेदप्रागपकारहै॥ जीवज्ञानैपधिकारग्रामसंपद्धधिकारजोपैकीयोनउचाररामनामसुखसा
रहै॥७११॥ ज्ञानध्यानैपधिकारयोगयज्ञैपधिकारनेमधर्मैपधिकारस्यानपनैपधिकारहै॥ काव्यकोशैपधिकारवुद्धिवागैपधिकरलोक
रंजनामिलितकरतवैपधिकारहै॥

॥२४॥

स्वर्गनकेपैधिकारतीव्रतकेपैधिकारतेनग्रर्कपैधिकारविद्यावाइपैधिकारहै॥ हैंपैसबसौंचस्वच्छरामनामैप्रेमपच्छसहित
॥श्रीराम॥ रहितसाधननैपैधिकारहै॥ ७१२॥ जानकीरमन[illegible]शोकसमनकृपालमोहिकरतबिहालकलीकालघेरिघेरिकै॥ कोऊनसहाय
हायविमल[illegible]हीनेश्रावशस्वच्छअवतंसश्राकहौंवैनटेरिटेरिकै॥ घैजिएदृपालहारसारसुषसीमभीमवासनामलीनहूरिकै
मैपरिपेरिकै॥ पगलअनन्यकेौरआसवरबोयवासभोग्योमैंअनंतयगबीचफेरिफेरिकै॥ ७१३॥ तीनोलोकमाँमसैंनिहारो
नैननीकेभरिहूसरोहपालसालसामकनआनैहै॥ एकेअधिकतीपत्रापतापपापसापहरप्रगटपुरानवेदविमलवयानैहै॥ हों
तोमहामदगरुमुग्नविचारविनपावतअपारखरखातिरखजानैहै॥ पगलअनन्यनामधामकोअनूपअलसजेअव फरन
लेवैरनऔरनहिव्यआनैहै॥ ७१४॥ होउलोकमाभसनप्रमुदप्रमोदप्रदरखोगरूसंतसीतारामनामधामछन॥ परेवपदप्री
तिरीतिविपरीतिपमिजनहीनअपराधहिमिनेकहूंनलावैमन॥ स्वारथविहीनपरमारथप्रवीनपडुनिपटनिहालहित ॥नामने०॥
हैंरैनऔरनक्षन॥ पगलअनन्यअनरागवउभागगनतीनोचित्तचरनसरोजरसएकधन॥ ७१५॥ स्वादसुखसुखमासो
गसर्वससिंधसरससुतोषसानकूलनामकानैहैं॥ रागद्वेषदर्षादिरखकोनसेषकहूपावैपरमेश्वरबोधरसयानहै॥ ।॥

॥श्रीराम॥ देषीदेषवेहित्तविशेषरसवंतसंतसोईजासुजीयमैंसबूरीशोकतानेहै॥युगलअनन्यवातविहित्तविभ्रंतिलोकवेदहूँपुरानहूँकुरान
हूँमैंव्यानेहै॥७१६॥परतियप्रताकतअनोलमोलजातहै॥जितजितविसवीचचारचाचलतनितनिंदावहूँभाँतिअपजसअपवातहै॥सुखको
॥८५॥ नेलमाजामैंसंकितरहतचित्तविनवरवाइसाइहामिलनताहै॥विविधिविषादअपवादवकवादनानाछनपलपीरनाचपलछिनरात
है॥युगलअनन्यचौथवेंदेससहसगनपरतियप्रताकतअनोलमोलजातहै॥७१७॥परतियनीचमीचकीचकलिकालहै॥वारकविलोकि
वपुपरसिपुनीलपनअमितजनमएकवारहींविहालहै॥ऊपरवानप्रगटपुरानरिषिअंगअंगछुवतचपलचित्ततपजपजालहै॥कौनला
भमासमईमूरतिकेमध्यमीतमिलतविवेककरिहूँजखुसहालहै॥युगलअनन्यसीतारामनामसैंसनेहपरतियनीचमीचकीचकेलिका
लहै॥७१८॥निजपरवामहैहाऊदुखखानजानते॥जैसेसमसेरआपनोपराईकाटतनअनलजलावैविषकेरविनाप्रानते॥तैसहींविचा ॥८५॥
रिहैजेपीठिदीठदियेपोलिखहसमभमानिछूटिरहेअभिमानसैं॥संतसतगुरस्रुतिवचनविचित्रवरहरनकलेशकिएएकछनध्यान
ते॥युगलअनन्यपारपंथिनकोवैनतजुनिजपरवामहेहाऊदुखखानजानतै॥७१९॥मधुरवचनवामआमरसहीनदीनकरनअलीनली
नछीनछनछामहीं॥सरललगततैपकठोरकातुतीषतरतारवारवरछीविसिषजमजामहीं॥चारोंजोपैधारनपरेशनामधामरूपधारनाविशेषवाम
त्यागोवसुजामहीं॥

॥श्रीराम॥

युगलअनन्यअनायाससुखमीतनिन्नसंतसंगरंगलाहलाहिएअकामहीं ॥७२०॥ कोटिनकलंकपंकतंकरंकवंकशंककामिनी
कुसंगअंगारंगभंगमीतहै ॥ वीरजविचित्रतरधीरजजलसततनीरजसमाननीयहिमविनाभीतहै ॥ महारुजशोकओकअविशोक
लोकहरहिहरसहजारहियहैं कतअजीतहै ॥ युगलअनन्यसन्निपातसमवामदमदमदुखधामकामसौंपतअरीतहै ॥७२१॥ जेतेमहा
मुनीज्ञानीधुनीध्यानज्ञानवानसदासावधानतीनकालमध्यहेरिए तेतेसबवामाविषसामामानैनअनैनदरिदुखितअचैनखो
यहियातेंटरिए ॥ नीरतनपवनअसनकेकरतदहहालसुखशालऔरकहांलौनिवेरिए ॥ युगलअनन्यजैसेबनैतैसेसाजि
भ्रमकामिनीकेदग्रासेसेदवमनफेरिए ॥७२२॥ परधाममपंथमांहिंषातोअपारपरनापिकानिगाडीसरहारतामेंसोंचहीं ॥नामने०॥
पलमेंहरतविनप्रानअनायासहायअदयअमानअतिअमैअवाचहीं ॥ कौनधौंउपाययाकेकीजिएअपायहेतु[illegible]भिर
नपरतपूछ्योजायप्रियपांचहीं ॥ युगलअनन्यतिनकेह्वारुनामसततसंगतिहमेंशास्त्रआठजामरखवाराचहीं ॥७२३॥ वामाके
विलोकिवेमवारवारडरिए ॥ चितवतमात्रगात्रमदनमदशमदअसदसगदरोमरोममांझभरिए ॥ ज्ञानध्यानधारनासमा
धिकासहायसबटिकनसकतसनमुखएकघरिए ॥ सबलसहायसावधानसततसंगपोतधारिअवलंबसरितेशतीयातरिए ॥

वदत

॥श्रीराम॥

पुगलअनन्यनप्रमाइछनकीजेकहूंवामाकेविलोकिवेमेबारवारडीए॥७२४॥रामनामरटनसमस्तसारसारहै॥वारकवर
नैतेकोईरीतिप्रीतिविगतप्रतीतितउकेटेग्रछभारहै॥अहोअद्भुतनामप्रवलप्रतापपनप्रनेमसमातनहींकरतविचारहैं॥कहांज्ञा
नध्यानतपआदिकमेशक्तिरहसांचीमतिसहितनिहारिएसुतारहै॥पुगलअनन्यमेरोजीवनअधारयाररामनामरटतसम
स्तसारसारहै॥७२५॥कहांलंकपापीपापकेरविनावलेके॥सहसमुमेरसमतूलएककनग्रागहाहततअहेररहउपमासु
पलके॥कोटिनवरषतकजोसोधनरंकभूपपलकखेरचकेसमाननहीभलके॥अमितश्रृंगारपमुहेहिएकछांहीतउभि
रिनशाकतसिंहसनमुखचलेके॥पुगलअनन्यरामनामजोरेपापतापकहांलंकपापीपापकेरविनावलेके॥७२६॥जानकी
जीवनजूकेकहायसहींहिपहायअनूवसोवातहै॥सूरसिरोमनिनेहिनकोलीविकेलघुकायरकायनिपातहै लाजलेगसुनि
केवहुधाहरिसेवककूभिकोरतमघातहै॥पुगमअनन्यसमहारिएसीवुसुसीहतजन्मअकाजसिरातहै॥७२७॥दीनदयाल
उदारउदयपउरकीजिएआपनीओरनिहारी॥वेहनवोझवह्योनपरेसिरहेहरिएहोशासमेतखरारी॥हेपरिहांसहरासवडोक
रुनानिधिहूंतउमोहिविसारी॥पुगमअनन्यअभीतकेरासुखसागरनागरश्रीधनुधारी॥७२८॥कोनसहायकरेरहतओसरआपतो
खीझिरहेलखिआरत॥

॥श्रीराम॥

मेरनऔरसेकाजकछूकरुनाकरअंतरजामिनिहारत॥हौंअधमाधमनीचसहीपरतेरोईऔरकीआसपेनारत॥पुमअ
नन्यनलेसहमेवलआपप्रभावसैंजीतिहौंभारत॥७२९॥श्रीसरजूतेरतीरहौंवपुपातप्रयंतविकारवहाई॥काहकिवारनैनन
करौंकवहूंपदपंकजआसगवाई॥नाममहाअभिरामरटोसुखसाध्यसनेहसुजोकनगाई॥पुमअनन्यकुहाससहीतऊधा
मनिवासअखंडसजाई॥७३०॥हायरहजिंदगीअकाजचलीजायहै॥पारसअमरतरूहूंतेसतकोटिभाँतिउत्तमफलदस्वांस
नाहकसिरायहै॥कहाभूलिवेठ्योसठसावधानहूजेअजौंदेहगेहसुखसवमारगसरायहै॥सुधासमस्वादअविवादनामरस
त्यागिहठवसंवधाहिंविषपायहै॥पुगलअनन्यचितचेतनसम्हारकरुहायरहजिंदगीअकाजचलीजायहै॥७३१॥वार

वालिस
६

वारमानुखवपुखअतिदूरहै॥करैकल्पपीछेतीछेतुरूसकर्मकिएदच्छहूंअनीछेदुखदारुननपूरहै॥कोशलेशक
रुनाकरादच्छसेअगमसुरसुतनमनुजमहामनीसमनूरहै॥हूजेसावधानएकरसअविलंवअवविषपीकुसंगठगमो
हकसूरहै॥पुगलअनन्यआठपहरसुमिरूनामवारवारमानुषवपुखअतिदूरहै॥७३२॥कालचोप्रवलपरतपलप
लहै॥सुरराजआदिसिरवृह्मलोकहूंलौंडरतेरीकौनकेहवडेवडेकौनकलहै॥चौदहूंभुवनवीचअमितप्रकारजीवपीवतेविमुख
नहिंअचलचपलहै॥

॥नामम०॥

कहामनिवैरयोंतें अचेतचषहानहोयकीजिएभजनेपलिकामकोहद्दलैहै॥ युगलअनन्यश्रीशस्वामीप्यारनगहुकालचोटप्र
वलपरतपलपलैहै॥७३३॥ सीतारामनामरससागरउदारमनिचिंतामनिदामदुत्तदायकपरमपद॥ ब्रह्मव्योमविरजविकल्प
विनुवीजवरविसद विहरवनवारिदविगतगद॥ आरतहरनजीयजरनसमच्छसीतकरनतरुनतमतरनीसुसेव्यसद॥ युग
लअनन्यमनमानसमरालसालसमनरमनउत्साहचाहनेहनद॥७३४॥ जीवनजहानसर्वससुखखानप्रानप्रीतमप्रधा
नपवनेशपुत्रप्रीतिकर॥ रंगरूपरागरतिराहतरसेसजनसस्ववसमदनअनुरागवागवोधघर॥ अगनसगनधुनध्यानज्ञा
नकोनिधानप्रवलपरत्वपथप्रेरकप्रकाशपर॥ युगलअनन्यसुचि शरनसरोजदिननायकप्रतच्छस्वच्छकारकमलीनत
र॥७३५॥ सीतारामपरमप्रेमोदप्रीतिकासस्वच्छसुरससुवासनामजोकजतजेपिए॥ रैनअैनमंदमुदअसददुरायदिव्य
भव्यभावनीयरूपचिंतवीचषापिए॥ जेतेमतवादसविषादस्वादसाद गतवूझिकेविशेषनामनेहझांपझांपिए॥ युग
लअनन्यवैठिवैगमसहर मधवव्यतविसारिकालव्यालसैंनकांपिए॥७३६॥ होतेनमत्तामकोनिवासकामकोह
मोहचोरसांभभोरवैसेमरैअंधारेहै॥ राक्षसीप्रमादमईतैसेहींदुराशानीचगाजरहीसेनसजितिवृत्ताअपारहै॥ ॥

॥श्रीराम॥

औरहूअनेकनिसिचरनप्रवीनआपशोकसरसायरहैनानोप्रेमपयारहै॥ पगालअनन्यकोसकहैंकापैक्लेशएकनामहैं
विशेषमेरोहाहाहूदुखहारहै॥ ७३७॥ महामोहसबलसिपाहनसमेतसेनहैषतदुरूहह्गहामनसमायगो॥ कामकोहलो
भमहदंभअधमबीरवामासुतसहितविलोकिखैबोफखायगो॥ विमलविवेकभूपअजितअनूपदलनिकरनेनेकुतोत
अधिकसकायगो॥ पगालअनन्यऔरठौरनानिचिंत्यवासबूभिकेविशेषधामशरनसमायगो॥ ७३८॥ सीतारामम्हा
मोदधामनामऔरदिव्यचारकेबचाइवेनिमित्तमनमानिगो॥ संतसद्शास्त्रश्रुतिसेवतसुभागद्वारविमलविनोदरूप
ररूपरससानिगो॥ योगयज्ञज्ञानवरविरतिविचाररंगअमलसुभंगसंतसंगवीचछानिगो॥ पगालअनन्यअवधेश
कीकृपातेतीव्रवासनाविषाद्वाइविरहितमानिगो॥ ७३९॥ सीतावरपरमपरेशशरनाएपरअपरउपासनाकुवा
सनाहिरायगो॥ सतितास्वर्गसोरव्यसिद्धियावतीपुरानिसिद्धमहाभुदहैनमेच्छपीरसोपिरायगो॥ नानामनिकांतिकम ॥नाम०॥
नीयकलाकोशरामराजसामराजेंद्रकोसुमनफिरायगो॥ पगालअनन्यअनाआसहीं विक्षेपचित्तहित्तअनहित्तहीं॥ प
विहायकेथिरायगो॥ ७४०॥ हसियारामसुधामनिवासनिरंतहोयउछाहसमेत॥ लौकिकक्लेशकहष्यपनोमिटिजाय

२

जहाँलगिनाकिसनातैं॥ आपसेवायनभानरहेतिलकोटिकरेकोउआयकेबाते॥ प्रेमअनन्यसुनामसुधारसपा
नकरेंनितसांझप्रभाते॥ ७४१॥ रंगरसरूपकीउपसनासनेहीसेतवडेभाग्यवंतप्रानप्रीयसियकंतके॥ फूलेभवभा
नमाननतानशानजानजनफूलेएकरसवागवल्लभवसंतके॥ रामारामधामअभिरामआठजामध्यानकेलिकमनीय
गीतगानअभिअंतके॥ युगलअनन्यधन्यमानमन्यअनगन्सेवहवरविदुरखवषाननतसमंतके॥ ७४२॥ होयहमेससिय
वरकेगुनगायककोटिकलाकिलपावो॥ खोयखरावरखजानखरीमतिउज्वलतारतिजोकनमावो॥ वोपव्रथावरवीजहि
एअभिलाखअनेकविपाकसुघावो॥ सोयकेप्रेमअनन्यसघासरज्ञतखेलीरसुरंगरंगावो॥ ७४३॥ काननकरीलवीच
विमलवसंतपायपत्रनोप्रगटकौनहोषरितुराजको॥ मारतंडप्रवलप्रतापअगजगख्यातहरतउलूकनागनाहगनहरा
जको॥ वांससारहितसुचंदनकलंककहामूढ[illegible]अतिप्रेमहासकोनवुधराजको॥ युगलअनन्यऐसेमोसेमहा
मंदउष्टकुपथकलंकीकहाकेहरघुराजको॥ ७४४॥ संतमतमांझवांझसुवनसमानसुखदुखहरम्पानेनेहनेकहून
मीतहै॥ आदिमध्यपरिनामखामकामकोहकलिकलिलनिदानभानमालमवमीतहै॥ कीजिएकवूलमोहमूलसुमिरनमूल

॥श्रीराम॥

शमनरमननमनचमनसुप्रीतहै ॥ पुगलअनन्यमहामधुँरपियरवनिधिनामअन्यवासनाविशेषतरतीतहै ॥ पराप्रीतिप्री
तमप्रसादपावैनशाहितहरिएहरितनामशोकसरसायके ॥ मराहीजपतजगजाहिरजहानयुगअरूगअग्रसुगवाल्मीक
हरसायके ॥ हराहररोजअजचोजचितचाहसाजसमितसम्हेप्रमपटपरसायके ॥ पगालअनन्यत्तराताकिंसुसंगवैठिवि
मलवहारनामवागवरसायके ॥ ७४६ ॥ काहूमतअसतकुमतिकाल्लजालवीचवाझिएनकेसहूंप्रमाददिललायके
ठौरठौरभौंरकलीकालनिधिनैननिजैहरिएहमशाहिव्येइशावहलायके ॥ कौरकैरकारनकलेशवेसवाइकहाकीनि
एकवूलकीचमीचचहलायके ॥ पगालअनन्यनाममहामोहधामगनगाइएउमंगअंगअंगलहलायके ॥ ७४७ ॥
नामरटविनवाइविशेषहींवेदविधानवितानविचारो ॥ तामसतारविहारविभववहवारएहाररघुवीरपियारो ॥
वामसनेहसहेहमुलायकेनामरमोमुदहर्षहजारो ॥ पुगमअनन्यअमोलमहामनिसांसमुचेतनचित्तसम्हारो ॥ ७४८ ॥
पंचवानवानजैनसायनसमहसुषउमरउमंगकोउचाटनकठोरनिधि ॥ महामुनिमनमनमोहनविशेषगनवसि ॥नाम०॥
हूंकरनमोहमारकप्रकाशसिधि ॥ औरहूंकलंककलाकोटिकनिधाननीचकीचमेमिलामीचसौंपतकलेशरिधि ॥

पुगलअनन्यसीतारामनामआसहृदकिएउरअपुरविहायएँहँननाहनिधि॥७४९॥नापिकानिशानमानमंडनमहाहिंदोलमइनवजा
॥श्रीराम॥ एगाजिरहयोतीनिलोककेमें॥सुनतसकोचसोचवसमुनिराजहोतचाहतकुवामसु[illegible]मित्तनशोककोककेमें॥नानारंगवासनासुमनदर
सायहगहावतकठोरशनमानतनेराकेमें॥पुगलअनन्यसीतारामनामधामगनशरनसम्हारुकहासोचचित्तमेंकेमें॥७५०॥
॥२९॥ सीतारामनामसुचिसुरुचिसेमतजपिजागतजहानानिमिसनेहनेमपायके॥काहूकीनसंकरंकराबेमसमाननमतिविरतिविचारव्य
वहारपारलायके॥शोकसाजसाजेसतसंगसुमजातिजानिजोकनीवुजानएकरसैमोजछायके॥पुगलअनन्यनानामतिहुमे
तिरूपअंधकूपसममानित्यागोगनगायके॥७५१॥छोड्योघरद्वारफेरजोड्योनासेनेहसोमललितलतामगनगायोनाप्रमो
दसें॥गाड्योगुनगेहवपुमानुषअप्रकाजहायतोड्योतीननतारनाविवेकिनविनोदसें॥वोड्योवरवोधमोधएकहूँनिरोधमन ॥२९॥
कीन्होनाहिसुनतसुत्तानेनसरोदसें॥पुगलअनन्यमोड्योमानसीनअत्रिलोकरंजनानिमित्तविनगाड्योगोरगोदसें॥७५२॥
सीतारामभक्तनामरूपअनुरक्तत्यक्तवासनाविविक्तवासकिएप्रेमयुक्तहे॥पुन्यपापकृत्यसुनिवाहेदहवीजहततीनतमवी
जेवहवीचविन्नसुक्तहे॥नीचनरनिंदकननिकटविकारअछेसवकसमीपसुचिसुकृतसङ्क्तहे॥पुगलअनन्यासिष्यसुवनसुवसुतेन
आपतापहीनहोयरछधामभक्तहे ५३॥

॥श्रीराम॥

विमलविवेककीवुधि.विपुलविचारिवातविसदविलंदवोधवीजचित्तचाहिए॥ कौनगुरुतरलोकवीचमाननीयमहिमाहि
पतिईशगिरिजतसमाहिए॥वीसभुजवालिअवधेशासर्वेशासवोंपरविराजमानसततउछाहिए॥ युगलअनन्यसेंतरसवंत
स्वच्छसंतसेवकसमानश्रेष्ठऔरनसराहिए॥७५४॥जैसेंपलपलवीचवूडतरकतनेकुनहीघडीकालपरिमानपरतच्छही
जैसेंसिंधुधारचित्तवृत्तिअविरतिमानऐसेंसहींविचारुनिजआयुषसमच्छहीं॥ लोकलाजलापएकनिमिषभलापजा
यपावैनहीनामसुषधामप्रेमपच्छहीं॥युगलअनन्यनामकरुनाकलितकोरजोरदुकजानिनसेनीचप्रतिपच्छहीं॥७५५॥
सीतारामनाममेंसनेहसोंचकामकाचऔंचविरहितमपाजाकेभलीभाँतिहै॥ चाहेवासविपिनवजारव्यवहारकरेचाहेमो
नहोयरहेवालेचित्तशांतिहै॥ आपनोस्वरूपसुद्धसोध्योसतसंगसतगुरुस्रुतिसंमतसमेतहीनभ्रांतिहै॥ युगलअनन्य
नामरूपमेंमगनमनअमनअमानध्यानधारेकेलिकांतिहै॥७५६॥चित्तनिरोधसवोधविरोधविहीनसुयोगअरोगनिहा
पत॥होयएकहूपलपायहूजोसुषसिंधुनिवासलहेहरसायत॥कोटिककायिकक्लेशकरैतऊपारपैरनहिकामविफापत
युगमअनन्यविनाश्रमहीछिनथोरेहीं में लहेलालरुनायत॥७५७॥मारिएमारनीमारमहामलमूलकुसूलसुसोपनहारे॥

॥नामने०॥

जारिएनारजवारअसारहोंटारिएलोकसम्रुहविहारो॥वारिएदीपकदिव्यस्शोदिशिहाप्रकासअनूपअपारो॥युगमअ
नन्यनिवारिएलालचलेभलवारपनेलषिवारो॥७५८॥ छोरएश्रीसरजूतटमेंकलकुंजकुटीरअमीरफकीरी॥भारएभा
नुकीभावनाभावसुभीजिकेरूपरसेशसुधीरी॥पारएप्रीतिप्रभापलहीपलछोडिकेकालकरालकसीरी॥युगमअनन्यअथा
रएखूवहींनामकृपालकेहोयअमीरी॥७५९॥अरेमनमूढगूढमरमनरमनेहनवलनिधाननामपूछिएसुसंतसन॥ घेर
अपनेहींस्वादसरससमैं सुखस्वामिनीसमेतस्वामिहेरिएकषापहन॥हेरहरोजसोजसमितरमितरितरतीहितकरत
करतमोजमोद वन॥युगलअनन्यमेरेभावनाविहारवरअमरअनरघदपारएप्रसादघन॥७६०॥सीतारामनाम
केअनन्यअनुरागीजोनतौनवेदभेदकोविचारसोसवच्छछानिके॥महिमाअथाहचित्तचाहदाहदोषउरतीनहीकीप्र
गटपुरानगानतानिके॥परमपेरम्रासेअभेदखेदहीनजननीवनअधारपारकारनप्रमानिके॥युगलअनन्यसोईग
रुवरिपानगुनगननिधानसांचभाषाव्रतठानिके॥७६१॥जानकीजीवनजगजाहिरजलूसनसभाजननभेदशाभानभा
ननसुसंतश्री॥महामदुमधुरमरंदअविनिंदनेहनागकनवलपनकीरतिसुमंतश्री॥ध्येयगेयपेयपरतच्छअच्छरच्छास

॥श्रीराम॥

रहससमुइस्वपछ्छपूरनप्रयंतश्री॥ प्रगलअनन्यदिव्यहानहुतिहैनहिलहारनइराजनइवइमनसमेतश्री॥ ७६२॥ जानकी
रशिकरसरहससुलीनस्वछ्छसुजनसमीपदीपइामइरसतहै॥ वडभागभालवीचजोकेजागिउठठाकतेनहीकोहोत
ताहसंगसरसतहै॥ नामरूपचारुचितहरनचरित्रप्रपपरमपवित्रधामवोधवरसतहै॥ प्रगलअनन्यऐसेरशिकउ
दारसंगहेतुएकरसतीनेइवसरसतहै॥ ७६३॥ संतसरकारसेअभेइवइहीनवेइव्यासवुधवइतविचित्रवैननिनही
जैसेमारतंडतेजतरुनकलेसाकोतिपाचतत्यशक्तिमेनवीचवाहिचिन्नहीं॥ अंगीअंगनामपरकरतविवेकएक
वागअर्थविलागनेहोतहेतहितनहीं॥ प्रगलअनन्यऐसीभावनासनायसुभपाइएप्रकाशप्रेमधामअविचिंतहीं॥
७६४ जैसेदिव्यदेहीइहसततसुपोगाईघाईआनामिलापज्ञानीज्ञानसेसमेतहैं॥ जैसेछअग्राहिमुक्तएकरसनेहनि
त्यवंध्यरवेहगेहसंगसेहदुखदेहतहैं॥ ऐसेहीअनेकवेरहेरिएहिरायमनमग्रमलमिलापनीरमीनमझषकेतहै॥ प्र ॥नामने०॥
गलअनन्यपातेविपुलअधिकसंतअवधसुकंतकोसुयागमोइइतहै॥ ७६५॥ नामपिपूषसुपानहमेशाहींहोप
विलीनकैंसतस्वामी॥ कामनारवामकलामहरामकोरवापकेमोजलेहवसुजामी॥ सुघइसानिजनेननिशानहि

॥श्रीराम॥

॥२१॥

६ धान

आनदिशाहिलहैरतधामी॥ युगमअनन्यसियावरवल्लभसंतस्वरूपनजाननकामी॥७६६॥ जानकीजीवनप्रीतिप्रतीति
बिनासुखसोजनमेलेच्छनकोमल॥ जानिएजोकजमायभलीविधिसंतसमागममैंबैठिसुचापल॥ भूलिकेआपनीवासना
विस्वभुलायकेछारएछानप्रभाकल॥ युगमअनन्यभजेबिननामकेपारहैरेखहहजारबिनाहल॥७६७॥ जानकीरमनन
षसिषरसरूपनेहनागकनिकेतहेतसहितनिहारिए॥ नीलकंजमंजुघनसजलमयूरकंठकलितमनोजरोमरोमपरवा
रिए॥ लायकेलगनदृढ़मगनस्वरूपसिंधुहूजिएहमेशानुच्छरूच्छताविसारिए॥ युगलअनन्यअंगअंगअनुरागस
निसामेहेसजनसेवसावैंसारिए॥७६८॥ कवहूंसियलालकेकपोलअमोलनिहारिएनेहलगाए॥ कवहूंकलकुंडल
जगाए
कांतिलखाचखास्वादहमेशाउमंगसजाए॥ चित्तचोरावनहारीअजूवमनोहरताइगाढ़हियेभाये॥ युगमअनन्यक
हूंचिवुकाधरनासिकाहेरिरहोउरछाए॥७६९॥ जानकीपरमप्रानवल्लभसुधामस्वच्छअवधअनूपवीचवसैजोन
जनहैं॥ तीनहीकेमालेमैंरसालललाललाहलिपिललितविसालेवैनसुरितरतनहैं॥ पांचतत्वरचितवपुषविलगाय
इतधाममैंमिलायमोजछायोयाअजतनहै॥ युगलअनन्यभीनमरमरसत्तउरभासतविशेषपायप्रीतमवतनहै॥७७०

रसाल ६

॥२१॥

॥श्रीराम॥

आनदशानागतनपांचहूंसमेतदशासातजगजातमेमिलातदृगदेखिए॥ सीतारामजूकोनामसंस्कारप्यारप्रेमपाए
केवपुषऔरभांतिऔरेषिए॥ सांचेसंतशांततविवेकउरआयउरधाममेमनेवैससदसाजनसुपेषिए॥ युगलअनन्ततन
तीनहूंप्रकाशपुरपारपहुंचतरीतिअनुपमलेखिए॥ ७७१॥ सांचोसनेहसुसामेहसौकसलाहसचाहसुधामसोहा
वन॥ कांचोकुदेहविगोरएवोधसेधामपरलवचदापसचावन॥ राचोनलोकिकेगहगलानिमैंनाचोमकानमहामु
दपावन॥ युग्मअनन्तमाचोलगेगरसंतसभासुलेहभवभावन॥ ७७२॥ चाहजोनतानधाममामभेमेनिवासखासकी
जिएअनेकमतअसतनसायके॥ पीजिएपियूषप्रियपरमसरजुजलअरधसुकूपवारिकमरकसायके॥ सेरएअ
संकगाहविमलाप्रमोदवनजतनजमातवहवाहएहसायके॥ युगलअनन्तधामप्रवलप्रतापगनअवनमनन ॥नामने०॥
विनमीचतरसायके॥ ७७३॥ धामकेनिवासीसुषएसीकेसमानआनभागअनुएगखानदेवि
एसदेषिसे॥ एकरससारससजातीस्वच्छसारसंगसमलअनंगगंगभिन्नखिन्नक्षछिसे॥
लेसहूकलेसहेससाधनसमाजराजभासततनेकटेकएकहिएपछिसे॥ युगलअन

न्यधामहीनपीनहीनछीनजानिएप्रवीनवैनविमलसुचखिसैं ॥७७४॥ श्रीविमलासरजूसुखमालखिमोहिरमाहूंउमा
मुहपाई ॥ रंगउमंगउदारविहारविचित्रविभूतिसभासरसाई ॥ जानकीजीवनकीमृदुमाधुरीठौरहीठौरप्रभावरसाई ॥ युग्म
अनन्यतजोतमतासमतासनिसेइएधामनिकाई ॥७७५॥ ध्यानप्रधानपुनीतपरारतिखानिलसेसरजूतटअंतर ॥ ज्ञानगुमा
नगवायगनोगुनगोयगरीयसुधामसुतंतर प्रानप्रियाधिपप्रीतिपगेचितचायचरित्रजोगोअभिअंतर ॥ युग्मअनन्यहमे
शासुवाहुमेवाधिएधामनिवाससुयंतर ॥७७६॥ सीतारामधाममदगोहरिविएदुरायदुरवदारुनदिमागहरसायहिलहा
मिनी ॥ रीताराजकाजसाजअफलकुराजसमशत्ततसम्हारिशोकसाजिएसुजामिनी ॥ नीतातमतारतीरत्यागिएत
मामतनतानतरागरसरागिएसुनामिनी ॥ युगलअनन्यअलिअवलिअमोलअलअमलअप्रलोलतलाहलीजि
एललामिनी ॥७७७॥ कोशलाश्रीविमलारचिएरसरागसजापसहासजनी ॥ होसलाभिन्नरहेनरतीअपराजिता
नामरमेरजनी ॥ पोसलाप्रेमप्रवाहलहेरसएकसुधाममएभजनी ॥ युग्मअनन्यअनेकविवेकविधानअनाहतहूं
वजनी ॥७७८॥ रसनारमिएनितधामसुनामनिकामअकाममएवसिए ॥ वसनावहवीजविकारविषयसवभांतिकेलेके
लखेहंसिए ॥

१०८

॥ श्रीराम ॥

जसनाहींकहूंअरिएभलिहींकलिकालकरालनकेबसिए ॥ युगमअनन्यसहाकसनाकरनाहिकभावलिएलसिए ॥ जा
नकीरासकप्रानप्रयसीसमानधामअौधसुसौधमानमानिएपुरानमत ॥ आनकीकहूंतिधूतिअधिकअपूतिज्ञूतिजा
निएनिसृतिधामधारएविशेषसत ॥ वानकीकलानम्लानहानहूंहिरानधामनामअभिरामकेउचारतप्रकाशपत ॥
युगलअनन्यलोककानिकीनसंककछुछोडिएकलंककोटओटचोटरेखारषत ॥ ७२० ॥ धामबसेविनहायहायहजा
रो ॥ लोककहूंबकखायभरोभवभूलभयानकवागवहारो ॥ जोहिएजीवनजासकरालनमोहिएलोभलगायअसा
रो ॥ सोरएधामनिचिंत्यनिशासकसोचविहायप्रपंचपसारो ॥ युग्मअनन्यसुमानिएसांचहींधामबसेविनहायहजारो
७२१ ॥ चिंतामनिचारुचितहेरिएसरीरस्वच्छमानुखरूपायहायदीजेनवहायके ॥ ऐसोकालकरनकहूंबकोनछोरगो
रकीनिएसचेतहोयवासनाविहायके ॥ सकलसमाजसुभसरससुयोगरोगागारतकरनेहेतुसोंचहींसहायके ॥ युगल ॥ नामनै० ॥
अनन्यऐसीसमैमनभिल्योनामरामअभिरामफेरिवारवारहायके ॥ ७२२ ॥ कालभालतेरेनिहिसूझेतहिंअंध
रे ॥ हरहरहेरतहिबानननसमानसठहठगंठबांधिभयोकठिनकबंधरे ॥ परसौंपंचप्रबलसुकीरकीपकीटकोशकेहरीसमान
हायसहायोहोयबंधरे ॥

॥ श्रीराम ॥

॥ ९३ ॥

धर्मकारनासिकावराघरीसुबुद्धितेरीजाननसुगंधदेहमहादुरगंधरे॥ युगलअनन्यअवविलंबनकीजिपलकालभालेतेरे
नहिसमझैतोहिअंधेरे॥ ७८३॥ हैसवभूतविकल्पजहांलगितीनहूंचौदहूंलोकउपाधी॥ पारहैरेखदभलीविधिमाजेहि
मूरखपासोसेनहसुसाधी॥ संतासिरोमनिनामभजेसुचिसांचसदासुखसंगसमाधी॥ युगलअनन्यविवेकलिएविचरैंस
वठावनराकहूवाधी॥ ७८४॥ सीतारामनामगुनरूपलीलालाहविनाविफलितदाहकेसमानजगजेंहिए॥ एकस्वास
स्वाससुस्वाससेंविहीनमानोकलपकोरोरजभजातनासुटेहिए॥ वारवारसीषसंतसुमतप्रकासकरदेततदिलमानतेंन
तऊअवरेहिए॥ युगलअनन्यएकवरषप्रयंतसावधानहोयुनामजपकीजेनाविमोहिए॥ ७८५॥ कहांभटकतभाववा
धेसेंविहीनमनपावतनश्रमभ्रमभावनामिलापसें॥ हूजिएतनीकसावधानव्यवधानविनापाइएप्रधानप्रानप्रीतमअना
पेसें॥ पोषकप्रनतहितकारकअनेककोंऽजानकीजीवनऔरदूसरोनमापेसें॥ युगलअनन्यजयजुगलवरनहरीहरआ
भरनजैनपालेमायवापसें॥ ७८६॥ पूरनप्रीतिपगीपरिखातिथिपावनताप्रतिकासनहारी॥ पीजिएरासवछकसनेहसु
धासरनामउमंगसुरंगसुधारी॥ हीजिएपाठिप्रपंचदिसानसेंफेरिएफैलफसादविकारी॥ युगलअनन्यप्रवीनवही

॥ ९३ ॥

॥श्रीराम॥

जेहिहीयवसेछविश्रीअवधविहारी॥७८७॥दूजेहिषेईहगनज्ञानहूंगारीयगेहनेहछत्रविछेईईनहारहीयऐहीरए॥
दामिनीअनंतदुतिवारिरासहस्त्रसूरशशिवारोमरोमपरमहामोहटेरीरए॥होषद्दरम्पानभानहोनहीनेईतेनकसंतगुर
टकसावधानसंगसेरिए॥पगालअनन्यहाहदुरितदुरायपहिलपगालस्वरूपचित्तवीचचस्मफेरिए॥७८८॥तीज
तीनोपनसमसपनसम्हारिसंतसाहिवशरनपसीतानाहनेहस्पाहए॥तीयतनधामरपामकामवईनामचाहचहल
पहलनुच्छमानिकेविसारिए॥तीरघीकटाक्षतीरस्यामरघुवीरवरेवेषिसवतोंकंजमानसीखिलाईए॥पगलअन
न्यतानसानसीरभायजगजीवनसुजानजानमानहूंमिलाईए॥७८९॥चौथचरित्रपवित्रविचित्रसुमित्रमनाहिचित्र
मित्रसुनावो॥चावचटायभलीविधिचितहूंचसमगनेमासुभावगनावो॥चौकसीसाजसजोमननेमननसूरभएभवभीतिभुना
वो॥पगमअनन्यचलायतहांचित्तचोगनेचाहउछाहसुनावो॥७९०॥पंचमीपातकीसोईसहजेहिपांचमेंरएकसनेहन
हीहै॥पायपसारिपडोसठसोवततरोवतखोवतस्वासरहीहै॥प्रीतमप्रानप्रधाननिवाजननामसुजापनजीहगहीहै॥पगम
अनन्यप्रकासपराविररवावेमेंमूढनहायलहीहै॥७९१॥पंचमीपेखिवेप्रेरकरामसमीपमहीपमनेहसंवारी॥ ॥

पे

॥नामने०॥

श्र

जहान

पाएप्रकाशपतंगअनंगदहेछनवीचविनोदविसारी॥ पागिएपावनधाममेकाम्हसजाएँजरूसहीजारी॥ युगमअ
नन्यपदारथचारिहजारनवारमिलेमैमारी॥ ७२२॥ पंचमींपांचोंकरोंवसआपनेचाहहीएजोपियामिलेनकी॥ पापपहा
रटहाएभलीविधिकीजिएयुक्तिदहेहेषिलेनकी॥ साधनचारिसेमतसदासुषस्वादलहोरनेमेंपिलनेकी॥ युगमअनन्य
हमशाप्रमोदअप्रमोदहिराएलहोछिलेनकी॥ ७२३॥ छठीमोदमठीनिधिपाएँसुज्ञानभूमिछैवींकलिकलितकशाएले
नयोगहै॥ हठीजनअतनविगोएसाथकीजिएनाहोइहेविछोहारबुनाथगापशागहै॥ छठीवरवानिसुषरवानिकोह
मसीहयहेरिएहिराएनामरूपमेसमोगहै॥ युगलअनन्यछटीस्यासरंगरासहोतमोतहनजोकभालगाजतकुरोगहै॥ ७२४॥
छवीतिथिमेंभभोरमेंभवांभवेनविनुविसदविनादमईलीलालालगाइए॥ छोडिएछलीनछईवासनामलीनमत
पांचएकस्वबससजाएसरमाइए॥ छाकिछाकिछेलछविपरमपियूषनवेनहनिधिनित्तउमगाएलागलाइए॥ यु
गलअनन्यछामकामनाकलामआमसामेननहोनकहूंहीनिएविलाएँ॥ ७२५॥ सातवींसवछसनीतिथिहै
निजरूपअचारजश्रीगरुध्यावो॥ सषअसेषभुलाएभलीविधिरागदद्वेषकुदेषमिटावो॥ संतसमागमसारसदासुषसीमस्व
हावनसोंपलेभावो॥

॥श्रीराम॥

युग्मअनन्यसुशांतिस्वभावहमेशारहेसियस्यामसोहायो॥७९६॥अष्टमीआठहूंजामगनाकरआठमहागनहैंव्याविचा
रो॥अष्टधाखेहमईप्रमहात्रिनतलविचारिननैननिहारो॥आसहीपासवसहैलकेवहुभांतिउपाधिअसाधिसुमारो
युग्मअनन्यअमोलकआठहूंकोनसुचित्तविलोकिकेपारो॥७९७॥नौमीनवोद्वारवीजविविधिविकारप्यारहारजी
तिसुजनसुजानैशोकसाधिके॥नवोखंडव्याकरनपरखोपरस्याहसुषनवलललामलाललाह्योनहीनाधिके॥नवोग्र
हग्रहननैनकुकरिसकेताहिजाहिएकरसनामरटनसमाधिके॥युगलअनन्यनवोअंकेकेसमानस्यामरामअभिराम
नामव्यापकअवाधिके॥७९८॥दशामीदशाहूंदिसिमैंहिलहारउहारहांदशावेहकिए॥दृगदेखिएदिव्यदशादश
वीपसरागरसाबनेप्रेमपिए॥दुसनामअदामसमानगिनेवहनामतरीफउपाधिलिए॥भनेयुग्मअनन्यसुधन्यसो ॥नाम०॥
ईदमदामफिरायजमीनजिए॥७९९॥दसमीदरसायदियोगरुदेवअभेवअछेवसुरूपसुधेशं॥द्वादसरायतु
रायतिहूंगुनमीतिभरायजरायअदेशं॥दाहदराजअवाजनेद्योजिनहैंधनधन्यवहीसवदेशं॥युग्मअनन्यदया
लदयाविनकौनलहेसुषमासुषमेशं॥८००॥एकादशीएकदशाकरनकलेसकरकरौकेदकायमकमालरूपापायके॥

॥श्रीराम॥

॥२५॥

संतसतगुरुरूपदर्पनजासुश्रीश्रनिजधारतसेप्रेममोदताहीगुनगायके॥ एकादशीपराभक्तिरहसरसेप्रासुषसैंपतीसु
दृशादिलेहरिविसरसायके॥ धुगालअनन्यएवमस्तुवरहोयसांचरेहेचित्तराचनोपैनाममोददायके॥ २०१॥ द्वादशी
द्वादशासरसमानसनूरहिएपरिपूरकरावो॥ द्वाहतमोगुनतोमामिटायकेनामकृपालउछाहभरावो॥ दीनतादूरिदुराय
दसादिलेमसरसायसमुंदतरावो॥ धुगमअनन्यहिमागअनागसहीसुषसौंपिसुहागसनावो॥ २०२॥ तेरससागतु
रीयधरेधियपीयपरेशपगेपलअंतर॥ नाकियतीयनहीसपनेअपनेमनकोसमझायसुतंतर॥ तोडिएतारतुशारति
हूंचितवृत्तिउभयद्दटरागविनिरंतर॥ धुगमअनन्यअनाहतशब्दसुनाइएकानप्रधानवजंतर॥ २०३॥ चौदशाचार
चरित्रसिपावरध्यायउमंगवढोंविचारो॥ चालकीरीतिप्रतीतिसजोकेछोडिएलोकिकीआनिअचारो॥ चौगनी
चारुचटापसुचित्तसुवित्तविनोदप्रमोदसंचारो॥ धुगमअनन्यचलाकपनोमनमूरुषताविलगायेचोरो॥ २०४॥
प्रीतमप्रेमप्रकासउदेउरउज्वलप्रीतिसुपूरनमासी॥ पापपहारविकारमहातमनासभयोरासिकेरसरासी॥ पोरसीपा
वनतापरतीतिभलीविधिहोयजोगाइएघासी॥ धुगमअनन्यप्रवीनताप्रौरिवहीजेहिसायतभावनाभासी॥ २०५॥

॥२५॥

॥श्रीराम॥

धामके निवासिन समान आन भान थान कहै जौन मूर ताकी सुखमा भधूर है॥ कियो न हिने कुसंतर सवंत संग चित्त चढ्यो
नासु रंग तातें जौन कहा कूर है॥ और जेते साधन पुरान वेद बीच बीर बिहित प्रतच्छ पेन परे कोऊ पूर है॥ युगल अनन्य धा
म अच्छल सुवास बिना खारी त्यौं आप अरु वेचतक पूर है॥ २०६॥ जाके जिय नागपान हिं विमला विलास वास छोडि है
स आस सोनि चौ वत अकास है॥ किए कई कल्प युग्य ज्ञान न पत प ध्यान अफल समान सूर धूर घुन घास है॥ परम परेश
सीताराम जू को पावक हाँ इहाँ उहाँ होत तिनहूँ की परिहाँस है॥ युगल अनन्य पात धाम मे निवास जु भज जानकी श्री जौन
वसे निज पास है॥ २०७॥ श्री सरजू तट शोक सनेह सजाय कुटी कमनीय वसो जू॥ कौनके कारन धाम बिना रहि ए बिबि
ध स्थान रंग रसो जू॥ छोडि छलीन मलीन कुसंग सुसंग लिए कबि क्यों न कसो जू॥ युग अनन्य अमंद अनंद स जाति
न पास हमें सल सो जू॥ २०८॥ जानकी रसिक प्रान प्रीतम परागपद पाय मुनिनारि देह धारि दिव्य देखिए॥ महाराधि

॥नाम०॥

ह

राज जू सनैं सेस समेत कर कियो चारु ग्रहन पुरान गाथ पेखिए॥ ऐसे हीं अनेक भव आस टकुटेक भजि भई मति सिला मा
को तारिबो परेखिए॥ युगल अनन्य जानकी श जू की कृपा हीन पीन युन्य वान हूँ तरन अबेरे खिए॥ २०९॥

अथल २

॥ श्रीराम ॥

॥ ९६ ॥

वारवारजानकीजीवनजूसेचाहेचाहइहाइविरहितसतसंगरसरागही ॥ जिनकेमिलापतेकलापतापनासेनितसहजप्रका
शेप्रेमैंअनुरागहीं ॥ नामरूपसुगुनसनेहवीजवांधीवरमानुषकुरूपहूसाँयेनआगहीं ॥ युगलअनन्यसीतारामअभिरामगु
नअगनअधारहीजेप्रीतिलाहलागहीं ॥ २१० ॥ कौनकंजकाननविलासिनीसुबुद्धिपापहोतकेसीरीतिमहामोहमुखजोन
है ॥ जानकीरसिकहियमुगनस्वभावकोनकीजिएविचारवीचवरनसलोनहै ॥ युगलअनन्यप्रेमपागिएपरेशरंगअंगरागरा
गिएविराजिएसुभौनहै ॥ २११ ॥ सीतारामनामरूपरसिकउपासकनसंगकेकिएसेंआपसंतहोतअनायास ॥ जैसेहिवपा
रसपरसेपरसमनिहोततनकालत्यागिरूगुनकलंकपास जैसेंचारुचंदनसमीरसेंसुरभिसुचिसीतलविसेषहोतछोडि
दुरछदासहूप्रास ॥ युगलअनन्यसंतसंगसेंसुलभसुषशककेकोनलेशचिन्तसमभ्रमाविलासपास ॥ २१२ ॥ ऐसेरसवंतसं
तस्यामप्रानप्रेयहैं ॥ जिनकोनहानजससहसउपाधिव्याधिआधिसमवैभवविशेषिहीसहेयहैं ॥ हारूनहवारतरवारवि
षभारप्यारसदसविहारव्यवहारमारमेयहै ॥ सदाअविकारसारसुखमेंसमानेनितनितिलहूनजाम्योजियवासनाकोनय
है ॥ युगलअनन्यसिरताजमहाराजमेरेऐसेरसवंतसंतस्यामप्रानप्रेयहै ॥ २१३ ॥ संतगुनगाइराइभक्तएमलीप्रकार

प्र० कौ०

कौनकमलनीपअर्थवोधकमलमुखकौनहृतदुखविभलोविनादेमुख्य
जौनहै ४

२

॥ ९६ ॥

जानकीरमनजूकोवेगहींसुरंगसें॥अंतनहींजाइएविकाइएविनाहीदामसहनसमीपसरसाइएउमंगसें॥अम
लअनंतअनवद्यजसध्येयमननमननकराइएनकाजअनंगसें॥पगलअनन्यपरसाइएपुनीतपदहसइरसएक
टेकधारिएसुसंगसें॥२१४॥संतजनरीतिप्रीतिपरवाहवाहहै॥कहामैंबषानौंमतिमंदछंदरंगरंग्योसंतनकोजसस्व
च्छशाषकोअथाहहै एकएकपलमध्यजौनकरतूतिकरैंतौनकोटिकलपलोगाएनानिवाहाहै॥नैनवैनअन्नैरैन
स्यामगौररूपरसरमनकरननहीदूसरीनिगाहहै॥पगलअनन्यऔरकह्यानहिजातमोपैसंतजनरीतिप्रीति
परवाहवाहहै॥२१५॥संतसहरीतिचलिआईहैहमेशाते॥आवैजौपासरावरंकछोटावडोकोईताहिउपदेसैंनाम
विमलविसेशाते॥छाकछविछावनावहावैहाथजाएज्वरजीवनवतावैंरूपरमनरसेशाते॥लावैंनिजठौरभौरषिष
मसकादिवाहिंदिव्यजानउजिअधिकदिमेशाते॥पगलअनन्यसांचसीषासिषलावैंस्वच्छसंतसहरीतिचलिआई
हैहमेशाते॥२१६॥संतकीरीसजगहीशासैंनहोआकैं॥छकेरहैंरहसरसालनामरूपगुनअधिकअथाहहाहला
गितमनातकें॥औरअपमानकीवर्षैनिएकवनवातशीशाछदनएहूपैलेशानहीसोवकें॥सदासावधानभलिहूकेन

प्रमादछांहछुवैंरतउतकेउपाधितेंरहेथके॥ युगलअनन्यजडजीवनकीकहाचलीसंतनकीरीसजगदीशसेनहो
॥श्रीराम॥ सके॥२०७॥ संतकेसंगसेउमंगअंगअंगमें॥ बढतचढतचितचावभावमेंजमोदविसदविनोदसोअरामरसरंगमें॥
कढतकुबोलमोलपोललोललाजजगभगाअनमोललहैंअमलप्रसंगमें॥ पढतपुनीतप्रेमपाटीउरछाटीशोकस
॥२०७॥ दनसमायरहेरसिकउछंगमें॥ युगलअनन्यऔरसाधनसेंकौनकामसंतनकेसंगसेउमंगअंगअंगमें॥२०८॥ सं
तजनवल्लभविशेषअवधेशके॥ शेषशिवश्रुतिसारदादिकवषाननित्ततिनहीकेगुनरमनीयसुभदेशके॥ आप
परमेश्वरहैंनिकटआधीनवरवदनविलोकैंसदाजुदानहींलेशको॥ चाहैंनहींरंचपरपंचमोदमंचवैठिअचलह
मसचषैंस्वादवरवेशको॥ युगलअनन्यश्रीवदनतेंवषानीवातसंतजनवल्लभविशेषअवधेशको॥२०९॥
संतमेरेप्रानहमसंतनकेप्रानहैं॥ उनकेनदृगमेंदेखातमेरेविनाकछुमेरेउनविनातिलभावतनआनहैं॥ वडेवडे
भागीअनुरागीमेरेहेतुधनसदनसमेतसुखछोडेविनामानहैं॥ मैंहूंउनकारनविसारिपरधाममौजरहौंसदासंगल ॥२०७॥
खौं[illegible]रंगरसखानहैं॥ युगलअनन्यअनमोलवोललालसुचिसंतमेरेप्रानहमसंतनकेप्रानहैं॥२१०॥ ॥

॥उनकेमिलापविनकोटिनकल्पलगिपचेरचेसाधनकरनप्रानअंतसें॥१

॥श्रीराम॥

माकोमिलोचहैतोमिलावमनसंतसें॥मेरोरूपइरसपरमसरसतसुषपवैंओररीतिसेंनसपधसमंतसें॥उनहींकोरमे
विकायोविनाहाममनमुदितहमेशाजैसेंतरुवसंतसें॥पुगालअनन्यसवफाकरधरममानिमाकोमिलोचहैतोमि
लावैमनसंतसें॥२२१॥इषिएव[illegible]पारसंतसंगरंगधारवरषेंविहारएकतारसुषसारहैं॥लेखिएलहरआह
२ चाँशाहमाहसतसमुद्रअथाहसमचदतअपारहैं॥पेषिएहिमागरागवागअनुरागगुललालितसमानफलअमल
अमारहैं॥पुगालअनन्यनारदादिकमुनीसकहैंसंतसंगमहिमाअनूपवेइपारहैं॥२२२॥परमअपूषअकिमधुरम
पूषमोदद्वादिद्वारूपअकिनूषभावमयव्हैहै॥रहसउमंगअकिरंगअनुरागअंगाकीधौसतसुकृतस्वरूपनितपानव्हैहै
कीधौंप्रेमअमलकीधौसालअनुकूलकीधौअमलप्रतिकूलकोहरनहितह्व्हैहै॥पुगालअनन्यअनूपमअनमोल
मनिसंतरसवंतसमसव्यअपसव्हैहै॥२२३॥पूजिएसंतउदारसदा[illegible]जोवसंतसमानरहैंनितफूले॥ ॥नाम॥
दीजिएहाजिरजायसमीपसुदीपप्रकासिप्रामतनमअकूले॥भूजिएऔरउपाधिसभीकलेकूजि
एश्रीमहाराजसचिकूले॥पुगमअनन्यननूमिएमीतजोत्वापकेसारइएरलेअमूले॥२२४॥

॥श्रीराम॥

॥२९८॥

वे

रसिकअनन्यसंतपारषीपरमपरहअसरहस्यमनद्युतिवंतरसवंतएक॥ पद्मअनेकनसमिद्धसिद्धमंडलीमेंमिलनमहालह
लवलितविवेकटेक॥ रहनिगहनिरंगरहसकहनिकोउकोटिनमएकवडभागीलषेनेकटेक॥ युगलअनन्यगतिअ
कथसुपथमीतजानेअविगीतजनप्रीतमछबीलीनछेक॥ २२५॥ रसिकअनन्यनेकपरपूजनीयप्रियकहेजोनजडसोंन
हानिनहहीनहे॥ सांचेउहजानेकहाअगमसुनीवाईथाप्रीतिपरतीतिरीतिझीनीहूतझीनहे॥ कोटिकोटिज्ञानीयोगध्या
नीअभिमानीएकएकहियागनपरवारिएप्रवीनहे॥ युगलअनन्यरसिकेशारूपसिंधुमध्यमीनसमरहेलीनप्रेमप्या
रपीनहे॥ २२६॥ स्वादिनकोस्वादवकवादीकेसपाइहे॥ जैसेहिअज्ञानअनभवअनमोलसुखपंडितप्रवीनप्रपंचचि
नकेचित्तमेनछाइहे॥ जैसेवामविमलविहारप्रानप्रीतिरसजतनजमातनेनव्याहविनाआईहे॥ जैसेनानाभांतिपक
वानधनवानधनगनतीकिएतछुधाहारिहिनसाइहे॥ युगलअनन्यऐसेसमझोसहूरसजिस्वादिनकोस्वादवकवा ॥२९८॥
दीकेसपाइहे॥ २२७॥ कौसलासनेहस्वच्छसाजतसहेहसोनरंगएकतारशोकलोककानकाटिए॥ होशलाअहाग
रागजागिहेजहानआगारहितअहितकालकोहहलडांटिए॥ चोसराचरित्रचाहदेषिएखलासएशखाहिसरवजानआन
नानशाननाटिए॥

दिनेश

नौसराअनन्यनेहधारिएसशोककंठकीजिए[illegible]घोतअंधकारछांटिए॥ २२८ ॥श्रीसंतसमाजसहायकसज्जनश्रा
॥श्रीराम॥ नसहाइहाइविएनीके॥ छैललनालखिसनकहाचितचित्तचलाकसेकेलिएजीके॥ श्रीधरिएहिठखेहहजारनशीश
सहेकहलाइएसीके॥ त्रीनिजनींदनिकारिएनाहसैंसानिएसाहसलाहसतीके॥ २२९ ॥सुंदरतासिपलालरसालप्र
कवित्त नेकनसालैंसहारक॥ लाइएलागलगायहिएरसरागसनायसहाहिप्रहारक॥ छांजनतासतसारअगारछेजनडता
दिहरासनिवारक॥ जाजनतानिजनेहनिहायतनीकलगेललचाइएतारक॥ २३० ॥हीरदहराजहिएदलहाहक
हाहदिलंदरधारिएसांचे॥ ईदअनाहतचित्तधरेधुनिध्यानलेहतनिकेकरुकांचे॥ नींदनिचिंतनिहालकरीजग
जालहरीगहिरेरसरांचे॥ शानसहाइदहींसंतसहालखिहैंचखिहैंजससाजननाचे॥ २३१ ॥सेइएसुसंतजानकीश्रा ॥नाम०॥
कंतकांतिकलाकायनातनैननिनिरखिएनिशंकहीं॥ जैदएसचाहचित्तसिधअसनेशानितपशास्त्रसंहितादिध्ये
एधारनासदंकहीं॥ खेदएसुखेरत्रैसजिदहीजहाजखाजजाहिरीनिकारिंगरागिएसडंकहीं॥ ध्येदएधेनशाधीप
जानकीसनेहसाइशरनअनन्यताअंधारअकलकहीं॥ २३२ ॥ कासिकहोहालहायअधिकविहालहीयपीयमुखमंधुर
मारदविनापानके॥

॥श्रीराम॥

॥२२॥

रोमरोमलागतहुताशसेंसहसगुनज्वलनअनंतजोनखिहै खोअरखानके॥ अैसोकोउकलितकृपालनामिलापेहैपलेपजी
वहानफलअमलप्रधानके॥ युगलअनन्यप्रानप्रीतमसें योगपायपाइहैप्रमोदएकरसस्वादहमानके२३३॥ जानकीरमनविनसु
दिनकुदिनसमविसमअगमअगमतमतीनलोककेमे॥ जेतेभागभोगतेतेरोगसोगयोगलोगजाननतनेनकेभरभीनेशातशोककेमें॥ रूप
छविभूपदगहरसपरसहीनपाइएनपीनपोषछीनहीनकोककेमें॥ युगलअनन्यहापहीपमहहमस्सहोतमोतहूनआयवेगि
गसतअरोककेमें॥ २३४॥ नामउचारविकारअसारविहंडनखंडनलौकिकीधोरणा॥ वेदपुरानसुसंतसहीपरमानअखंडस
वीविधिचोखा॥ नामिहंनेकुनभिन्नवसेपुनिप्रीतिप्रतीतिप्रकाशभरोषा॥ युगमअनन्यअभागनसेसठकोनउपायलहत
रतोषा॥ २३५॥ रूपविभूतिविहाररसारसरागरंगपरखेपियपाई॥ इष्टअनिष्टनिवास्वहूंतनवारिरहेमनमोहवढाई
सिष्टसोहावनपावनवेनविचारिभएछविलीनसदाई॥ युगमअनन्यअभिष्टअभयपदपायजपेजगनोरजकाई॥ २३६ ॥२२॥
जानकीनाहविहीनजितेभरभूतमलीनमकाननिहारे॥ आनकीरीतिनकेंनिकेरहटभावभरेनिजनामउचारे॥ मानकी
गैलनसैलसजैंसपनेअपनेसदधामसंचारें॥ युगमअनन्यअजानकीबानिविचारिवेयामसुलागसवांरे॥ २३७॥

आठहूँजामसियावरनाममोवारकमंगलधामकगहोजू॥ पाठहूँआमविनाघनस्यामकुकाठसमाननभूलिगहोजू॥ माठहूँप्रे
॥श्रीराम॥ मअकामभएअनयास[illegible]हुलाससमेतलहोजू॥ प्रेमअनन्यसुराठनिवासउदाससविहायसुभूमिरहोजू॥ २३८
जानकीजीवननेहनिधाननिधानवहीपरिनामविचारत॥ जीवकोकोनकहापुरषारथस्वारथहूँपरमारथआरत॥ केवल
कोसलपालकृपाकमनीयसदासुखहीयसम्हारत॥ प्रेमअनन्यअनेकनतेंकविकोंनिहारिसमुंझमेंडारत॥ २३९॥
जानकीजीवनजीवनजानजवाहिंजालसालप्रदायक॥ वेदविचारविलोलखेंनिजभेदअनूपसहीरघुनायक॥ आ
नअग्याननजानिसकेविनवोधवकेवहुवेनअलायक॥ प्रेमअनन्यपरेशप्रभानिधिनित्यकिशोरलिएधनुसायक॥
२४०॥ सीतारामनामस्वच्छसुजससुकीर्तिपरवारवारवारिएअशेषविसदानको॥ छीरहीरपीरमनमदनप्रतापदीप
सी [illegible]स्वेतस्वातिंपचेहचोंहनीवितानको॥ विमलविनोदवोधमानसमरालसुरसरितप्रवाहचाहसात्विकप्रधानको॥ ॥नामम०॥
२लोक प्रगलअनन्यसेषवेषसुषखानहरिहरैंगिरिगौरीरमावानीवानको॥ २४१॥ रामनामप्रेमपरवारोरोरागरंगको॥ कलितकु
सुममहीसुवनसुपद्ममनिप्रातसाम्हभानुनेहनागरीउमंगको॥ स्फुररनचूरैनेनलालिमाअधरछविविंवजपासुमनगुलाव
शोकसंगको॥

दाडिमदसनदुतिदामिनी~~दामिनी~~दिमाकगनरानसपुरानलोकभावनाउतंगको॥युगलअनन्यकोद्रिगअरुनअजुवरस
रामनामप्रेमपरवारौंरागरंगको॥२४२॥दोहा॥सीतारामसुनामजसपरमप्रेमप्रदछेम॥ऊपरवारौंअरुनतास्वच्छअनंतसनेम
॥१॥सवैया॥प्रीतिहींकेवसहोतचराचरप्रीतिहींकेवससारंगपानी॥प्रीतिहींकेअवलंबलिएजगजीवनपीवतप्रेमसुपानी॥प्रीतिवि
हीननहीनताहीनअहीननरंचप्रपंचसमानी॥सांचहीयुग्मअनन्यभनैनकछुप्रीतिकीरीतिनजायवषानी॥२४३॥प्रीतिप्रयागनहा
यमलीविधिपावनहोतप्रतच्छपरानी॥प्रीतिप्रकासदसोदिसिपूरनकूरनभेदलेषअभिमानी॥प्रीतिपरेसप्रसिद्धपरावरप्रीति
हींकीरसरंगनिसानी॥वातअजूवसुखूवविचारिएप्रीतिकीरीतिनजायवषानी॥२४४॥जैसेंद्यौसवीचवूंदकनघनछाया
जैसेदेखतविलातपलरंचकनभासाहै॥जैसैरैनसपनवजारगंधरवजैसेनीचनरप्रीतिअंतहोतनदिलासाहै॥जैसेजोतिदामि
नीअथीरनीरकोप्रवाहकामिनीकलोलकेलिखेदकोनिवासाहै॥वैसेहींविचारसारयुगलअनन्यकेहतनकोतमासाजैसे
पानीमवतासाहै॥२४५॥मत्स्यकूर्मसूकरस्वरूपनृसिंहवरवावनपरसरामकृस्नवलदेवहै॥वोधरूपकलकीकलंककेकदन
अस्वग्रीवव्यासदत्तात्रेयकपिलदेवहै॥ध्रुववरदैनसनकादिकअनपावोधनारदहरिरिषभधन्वंतरीमुसेवहै॥युगलअनन्य

॥श्रीराम॥

वसीणामन्यंतरसुहंसहारिचौ विसवपुखरामभेवहै ॥ ८४६ ॥ आनसिपार छुवीरसखीनसमानसमेतवसंतसजावत ॥ अंग
उमंगअनंतविधानवितानसतानमनोजलजावत ॥ गावतीगीतपुनीतअलीगनवीनमृदंगरवावबजावत ॥ पगमअनन्य
अजन्यउछाहविलोकितहींभवभानभनावत ॥ ८४७ ॥ पीतसुसाजसजायसोहावनजानकीजीवनजोहिएआली ॥
छापरही प्रतिभाहशांहूदिसिपावतीहूनहीकहुंखाली ॥ स्वच्छसुगंधसमूहमनोहरमंजरीमोद[illegible]प्रमोदहरसा
ली ॥ पगमअनन्यहिएउमंगसवहीविधिप्रीतिमईलषिलाली ॥ ८४८ ॥ जानकीरहसरसरसिकसनेहसिंधुप्रेमप्रि
प्रवंधपवमानिमोदहानिनित ॥ सरससुभावसानकूलभैलहरअउरअमरकरकारुनीकचारुचित्त ॥ रूपद्युतिदि
व्यअंगअंगअनरागरंगपूरनप्रवीनलोगलीनरैनअैनहित ॥ पगलअनन्यशरनैंसर्वेशशुभस्वच्छअवधेशविना
हेरिएनजितजित ॥ ८४९ ॥ जानकीरमननखनवलनिहारिनैनजगमगजोतिअंगुरीनद्युतिदेखिए ॥ महामोदसिं
धुअरविंदपदअंकजुततूपुरलफआभरनसहितसुपेषिए ॥ पिंडुरीविचित्रजंघजीवनअधारकटिकिंकिनीकलि
तकरसुभजसुपेषिए ॥ पगलअनन्यहियहारनहजारकंठवदनमयंकभालकीरअवरेखिए ॥ ८५० ॥ चिवुकअधर

॥नाम०॥

मृदुमधुरकपोलगोललोलकलकुंडलसेनेहसहेहेरिए॥मंदमुसक्यानरसखाननेहनिधिनैनखंजननसोमत्तअवलो
किछविछेरिए॥वारवारउरउमगायनखसिखध्यानसरससनामप्रयोगज्ञानगुनगारिए॥युगलअनन्यसावधानसीपपी
यजोहिमोहिएकूरसतिलहैंनमुखफेरिए॥८५१॥पासभागहैंपायभलेमैंमरूखकोटिनेकाननसावे॥ठारसमूढहींधारिहि
हिएनिजवारसरूअनूपरखसावे॥जारसस्वादनेहतसदाशिवमीचमसानसमीपलसावै॥युगलअनन्यअहारसमाधुरी
वासतेमदनफटकसावे॥८५२॥[illegible]चारुचिंतामनीनामविस्वअभिराममनिजनिकटनिवासविस्वासविनहू
रहे॥संतरसवंतसिरमौरज्ञानगोरथलअमलसुसंगरंगभीनेनेहनूरहे॥नाहकहींतीरथव्रतादियोगजज्ञजापसाधनसु
राधनकरंवहेवकूरहे॥युगलअनन्यनाममहाभक्तलेखाकृपाचाहिएसुचित्तनित्तहैसपरिपूरहै॥८५३॥रावप्पभाँतिजीवि
विकानिरूपिकेस्यामहाराजमनसिरताजमखेवहकोस्वरूपसुध॥रितामतमत्तयुनिप्रमतसुसत्यान्ततस्यानवृत्तिअंततैतो
नसंमतनसंतवुध॥उँछसिलापांचवतविहीनभीषषततरवनिजकुसवजामेआछेजामजोरुध॥युगलअनन्यविवेका
दिस्यासवृत्तिहेयछांडिएविसेषरेखराचिएविहायक्रुध॥८५४॥सीतारामनामकेअनन्यसातभाँतिसवपोषिएप्रत
अअंतरंगखोलिके॥

॥श्रीराम॥

५हान

रूपगुनधामग्यानविरतिसुवेदविधिसहितनिशांतनामअभ्यासेरोअग्रेडोलिके॥लोकपरलोकईशलोककोनचाहचितसन
तअशोकनामध्यायवोसुतोलिके॥युगलअनन्यमतिमेरीतिनहींकेकुरविकीसवतोरभलीभांतिटकेपलिके॥२५५॥स
तयुगमांझग्यानध्यानधारनासमाधिव्याधिविरहितजीवकेरनितनेमसें॥त्रेतायुगवीचमीचदमनदुरंततपतापनसमन
करिछोवछविहेमसें॥द्वापरप्रधानमुखखानपदपूजनाहिवेहतंत्रकथितहेमसक्षनछेमसें॥युगलअनन्यकलीकाल
विकरालमांहिनामकोरटनैदिव्यप्यारप्रेमसें॥२५६॥सतयुगवीचपापनिरतनरनसाथवचनविलासकरिपापपिठिगग्रा
वहीं॥त्रेतामांझपरसकिरोंतेंअघछआयलोगभोगसुखसुकृतनिसंकवननलावहीं॥द्वापरसुयोगपापअन्नहींसमानअघवहैवे
ध्यासमनुराजहूसिखावहीं॥युगलअनन्यकलीकालशालहालहरमधपापलोगजोनकरमकमावहीं॥२५७॥हेकलिकाल
कृपालसहीसमभेरावुधवैनविचित्रजपारथ॥घोरहांमैमुहहतमलीविधिकेवलनामरटेसवस्वारथ॥स्वच्छसुवासरना ॥नामने०॥
ममनोहरआदिपुरानकह्योहरिपारथ॥युगलअनन्यअमोलसमयसुभनामजपेपपदहैपरर्थ॥२५८॥नामसुमिरनसद्दासा
वधानसुखखानपरमप्रधानअवधानहनिहेतुहे॥कीजेसाईनित्यनेमप्रवलसुजापजिपपियपाइयेकोमुख्यकारनसकेतुहे॥

29

जाहिरजहानवेदविवुधसुभानगाथकिएकोटिकल्पकल्पत्यवेदसिंधुसेतुहै॥युगलअनन्यनामहीनसवसाधनादिहीनीरस
हमशाजैसेरूखवरनरेतुहै॥२५९॥रामनामप्रेमक्षेमअचलअखंडप्रदअसहअनेकगहरहकीरदेतहै॥कोटिनकुलीनसे
सहसगुननीचनरगरुगरुलरअनायासपदलेतहै॥महाराजनामराजवीचवसेवेअराजेंअमलअमोलमोहवारिनिधिसे
तुहै॥युगलअनन्यवारवारवलिहारतनवचनसुमनमतिहेरिक्रपाहेतुहै॥२६०॥कीजेअपमानहींकोआगेअनुरागजन
त्यागमानपावेप्रेमप्रीतमप्रधानको॥लोककीवडाईऊचिलाईकुताईघरसउरवैनरहेतुभवमानको॥साधिएसचेतचित्त
कामअभिरामनिजवासनाविकारवाजमैंजिएजहानको॥युगलअनन्यकाजभयोजोअकाजनवमूढकूढकायरशिरोमनि
नहानको॥२६१॥श्रीअवधेशउदारसिरोमनिमोहिअवैअपनाइएस्वामी॥जानोनहींतनत्यागिकहांगतिहैउद्वेगहिए
अनुगामी॥छिवरसाहगनेहनिशामोहिसोपिएश्रीकरुनाकरधामी॥युगलअनन्यमेरोसमसुतोषअवस्यकृपाकरिहेनि
जनामी॥२६२॥रूपरसप्यासीत्यासीअखियाहमारीरोजखोजतीसुधेशावरवहनविहारीको॥देखिएसुदृष्टिदेवेहारहेह
मारीकवपूजिहैमनोरथविशेषसुकुमारीको॥कोउनसहायहायप्रसाथिनविहायमोहिदीन्होललचाइचावचमनतिहारीको॥

॥श्रीराम॥

युगलअनन्यआय़हीनिएदरसस्यामसुंदरसुजानमानराषिएगवारीको॥२६३॥वासअरवेउपकांतरहेममवासनाव
रविहाय़विकारी॥काहूसेलेननेहनकरौंकछुकेवलआसकरौंधनुधारी॥आपभलाय़सुनाममहारसपानकरौंलखिश्रीघ
विंधारी॥युगमअनन्यकथापलपावनखोवाकभीपनधारिखरारी॥२६४॥संतसुहावनवैनसचैनसुनावरबोधवढावन
वारो॥काहूकीवातनकानिकरौंहुलसाय़दुरौंप्रभुवारदुवारो॥कामिनीहेमनरषावहूंभेपरसौंअवलौंनहींपनधारौं॥
युगमअनन्यसिपावरैपनिजआतमसाजसमाजहीवारो॥२६५॥संतमतमांझसोईद्विजसिरताजजाहिलागेरसराज
रघुराजनाममिष्टहै॥समदमधीरजदयालतासुसीलसुचिसत्यसमशांतितोषरीतिअनुच्छिष्टहै॥वेदबोधविमलविरा
गअनुरागग्यनरूपरागचावभावअचलअभिष्टहै॥युगलअनन्यअनुदिनवंदनीयममगमतेरहितनमतारकअनिष्टहै॥
२६६॥सूरतासजाएजौननामसोईछत्रपतीसांचोसानुकूलवेदविदुषसमाजको॥परउपकारव्यवहारसारहारहिएधारनेह
मेशावशाद्दशाकोशराजको॥रविकुलमंडनचरित्रसुनिचावपुतनुतनितरहेसंतगुरुपदध्यानको॥युगलअनन्यसावधान
धर्मध्यानधराणालेप्रेमनेम~~नेम~~छेमसहितसुसाजको॥२६७॥विमलविसेषसोईवेसजाकेनामधनमहामोदछिनरहेसदा
सानकूलहै॥

॥नामने०॥

लाग
ललितकमलविगसावैसंतगुरूपदपंकजविलोकिलोकै मानसूलहै॥ धेनुविप्रसेवैंधर्मसहितवनिजसुधकेरपारिहरेअधरम
प्रतिकूलहै॥ युगलअनन्यऐसेसावनिकविवेककीपावैप्रानपतिधामजौनसरजूकेकूलहै॥ २६८॥ सेवैसंतनामसदासाई
स्वच्छसुद्धहै॥ राखैनहीमानअपमानमेंप्रमोदरसचाखेभाखेमधुरविसोरध्योंहद्दुद्धहै॥ साधुविप्रअमलउछिष्टरषस
ममानिपालेप्रेमनेमसेसमेततनिजउद्धहै॥ वेदगुरुजनसनकेरनकलहकहूंधन्यवहसुद्धवेदवेदविधिरुद्धहैं॥ युगलअनन्य
मानकूलस्यामसीमसुखसेवैसंतनामसदासाईस्वच्छसुद्धहै॥ २६९॥ नामनेहहीनचारोवरनगवासहै॥ चाहकेरकोपि
नअचारधर्मनेमव्रतआश्रमसमेततऊहेतुउपहासहै॥ ताकोकरतवसवविधवासिंगारसमजानियोअरसजैसेफूलविना
वासहै॥ लोकपरलोकउभयशोकआकताकोनित्यजनममरनकीकोठिनताहित्रासहै॥ युगलअनन्यतातेध्याइएपरेशरामना
मनेहहीनचारोवरनगवासहै॥ २७०॥ विशदविचित्रब्रह्मचारीअविकारितौनत्यागिव्यभिचारीसंगरंग्योनामरंगमे
आठअंगमेधुनकोनेकहूनरह्योचोयसपनेहूंवीचनहीवाभतेअनंगमें॥ परंपरेशापरब्रह्मपरधामनामतिनहींकेमाहि
सदाविचरैउमंगमें॥ युगलअनन्यछविदसावाकीमाधिदेहअसंदेहजानोमानोनामकामसंगमें॥ २७१॥ गुननिधिवाहीजोन
धारैऐसीरीतिको॥

॥श्रीराम॥

सहसावधाननामगुनकलकीर्त्तनकेरूपरिहरेमोहममताअनीतिको सेवेसंतअतिथिसमानगुरुमानिनित्यन्यूनताईआप
नीनिहारकालभीतिको॥ दामकौनलोभरंचराखेनहनाखेधनधरमनिमित्तकेरेखरचसुनीतिको॥ पागलअनन्यपावेंपाव
नप्रकासधामगुननिधिवोहीजोनधारेअैसीरीतिको॥ २७१॥ वानप्रस्थआश्रमवानसुखखानतौनजोनतपकेरेपरिहरेविषय
वीजको॥ रटनामरूपध्यानधरेतनमनकेसवसेवनवीचमनमुघिततमीजको॥ लोककीनआसगासराखेकाहूसेगनहीअ
मलअघागारेहलेहेचित्तवीजको॥ पगलअनन्यसुद्धहससम्होरेसहाचौथोपदध्यावेछोडितारत्तमलीजको॥ २७३॥
सवविधिपुज्यपैसाईपतीसवकालेहै॥ जाकोमनअमनरहत्तस्वच्छअच्छद्विवदमकअनूपरूपपरमरसालेहै॥ पाइव
हारनकुरुहऊहछोडछलअफलविरंचिभूतिलेषअमसालेहै॥ सेहसवकषपरज्ञानध्याननषअषहोयरतीमात्रन
हीकेसहूकमालेहै॥ पगलअनन्यनामसुधारसभीज्योंहियोमनववि धिपुज्यपौयतीसवकालेहै॥ २७४॥ रामरटविनास ॥नोमने०॥
वआश्रममेधूरहै॥ कटविनापातकअनेकव्रतनेमकेरेसिधतानपावेपच्चेकेतेछिनकूरहै पटविनाप्रीतिरीतिरीतिरहस
सनेहीमीतजानिनसकतमोहममतामेचूरहै॥ लेटविनालोभगामविरतिउदोतनहीहोतसत्यजानोवातनिकूनदूरहै॥

मे
प्रगाल अनन्य याही भांति अनुमानो मन राम रटे विनास व आश्रमे धरै है ॥ ८७५ ॥ नाम के उच्चार गज ग्राह ते विमुक्त है ॥ केवल
॥ श्रीराम ॥ रकार सुखसार ही वहत आश्रय हह्यो हरी शंकर विकट अविमुक्त है ॥ नाम को महत्व परतर हूं ते परतम सम्भुचित होय के विचारो ग्रैसे
स्वच्छ मुक्त है ॥ महानीच जमन जरा छिहाष दुख युक्त सो उरायो नाम कहत हूं मुक्त है ॥ प्रगाल अनन्य अैसें तेर कोटि खलना
॥ १०४ ॥ मके उच्चार गज ग्राह ते विमुक्त है ॥ ८७६ ॥ नाम वल वचे प्रहलाद है नृपराजन सें ॥ वोरो वारिनिधि गिरि शृंग से गिरायो विष
अनल जरायो मरवायो गजगाजसें ॥ और हूं उपाय कोटि कोटिन सहस सठ किये लिये अजस विवस कालवाजसें ॥ सह्यो क
ष्ट आप त्याग्यो नहीं नाम रंग तातें भक्त भूप प्रह्लाद सुबै साजसें ॥ प्रगाल अनन्य महा महिमा अनंत रामनाम वल वचे प्रह्ला
द है नृपराजसें ॥ ८७७ ॥ नाम हीं से पायो ध्रुव अविचल धाम को ॥ जनक जननि अपमान सें गलानि उर धारि गयो विपिनि वि ॥ १०४ ॥
सारि नेह ग्राम को ॥ पंथ मांझ नारद कृपाल होय दियो नाम राम सुखधाम तातें छोरै फंद काम को ॥ महाराज नाम के प्रताप तें अ
खंड ध्यान धारि लह्यो सरस सरूप अभिराम को ॥ प्रगाल अनन्य सिव प्रान सर्वस नाम नाम हीं सें पायो ध्रुव अविचल धाम
को ॥ ८७८ ॥ नाम के प्रताप हीं सें वांध्यो सेतु कीश है ॥ देखो दृग अंतर उघारि के विशेष स्वच्छ केसी दिव्य महिमा सुनाम नग हीरो है ॥

॥श्रीराम॥

आपमहाराजअवधेसहूंविराजमानजहांनामप्रबलप्रतापईशशीशहै॥ नामहींकेजोरतारेउपलप्रसिद्धवातसुनतउमंगउ
मगातविस्ववीशहै॥ युगलअनन्यमेसिसठहूंतरेगसत्यनामकेप्रतापहींसेबांध्योसेतकोशहै॥ २७९॥ नामकेभरोसेसव
संतवचेकालसे॥ अमलअगस्तवाल्मीकमारतंडमुनिलोमसभुसुंडिमहावीरखुसहालसे॥ गिरिजेशगौरीगननाथरमानाथ
सवनामकोप्रतापपायभिलेमहिमालसें॥ एकजीहतुच्छतातेकहाकाबखानिजोहजअमितहूंभएपेअथाहगुनलालसें॥ युग
लअनन्यऔरआसअभिलासछोडिनामकेभरोसेसवसंतवचेकालसें॥ २८०॥ नामहीमेंरमेदेहसहितविदेहहै॥
महाराजमिथिलेशप्रगटविराजमानवेदहूंपुराननमेंसुजसजगनगेहहै॥ नामहीकेकरुनाकटाक्षसेसनेहसिंधुगाएआपअवध
किशोरमुहमहैं॥ कोटिकोटिशक्तिनसेंवेष्टितपहारविंहप्रागटिसुधामसीयनामहींकोनेहहै॥ युगलअनन्यवीचर ॥नामने०॥
रंचकनजानेनामीतेनामहींमेंरमेदेहसहितविदेहहै॥ २८१॥ झूठसमपापपरितापननिहारिए॥ झूठहीकेवेदवदनामीठो
रठौरवीचकीचमीचसमसईंमेंविचारिए॥ प्रीतिपरतीतिरीतिनिरखगरूभीतिमीततारविपरीतिझूठवैनहीमेंधारिए॥ लो
कपरलोकशोकसरससुभागासतनासतविरोधतातेअसतविसारिए॥ युगलअनन्यबोलोवचनविचारिएकझूठसमपापपरिता
पननिहारिए॥ २८२॥

को हलर

झूठाननामरटैकवहीं सतसंगतिहूंतेहिनाहिसोहावै ॥ झूठामहापरपंचनिकेतअसेतअनेतसरूपदेखावै ॥ झूठकोसंग
नकीजिए भूलिकैसौपिकेखइविवेकवहावै ॥ धमअनन्यउचारिएसत्यसतोगुनवैनसवैसुणछावै ॥ २२३ ॥ मिथ्या
वकवादसाधुसंतकोनचाहिए ॥ मिथ्यावोलकूरकामलोलुपलवारलेटवेउविनवोलतातेमिथ्यादुखदाहिए ॥ मिथ्या
हीकेत्यागअनुरागभवभागभलेजोगजोतजीवनजहानअवगाहिए ॥ मिलेकोनलाहउत्साहमिथ्यावानीवकेवुके
ज्ञानयोगभक्तिमननेमउमाहिए ॥ धालअनन्यसोंचसंवतसदैवसतमिथ्यावकवादसाधुसंतकोनचाहिए ॥ २२४ ॥
आसारूषनामकीएसमुद्रमानिए ॥ औरआसलासहासहूजिएजहानजु[illegible]पु[illegible]विनापसुसमदसाहूप्रमानिए ॥
आसाहीकेफासवीचवंधकैविकारजीवपीवतेविमुखसेंचस्य[illegible]वातजानिए ॥ भटकेभलानोप्रेतसदसाहिवानो
सठआसाहीकेवसफिरेलोकशोकसानिए ॥ धालअनन्यसंतसंगसमुरंगगहोआसारूषकीकिएसमुद्रमानिए ॥ २२५ ॥
रसोजवनामनवपलोचारोवेदको ॥ वाकोनहीवडोकोऊअंगउपअंगगउनिनाहकविचैरविनसहकौनखेदको ॥ मूलहीके
सीचेभ्रमिरहहीपातसवलोकवेदविविनपामेलेसमेदको ॥ चिंतामनिपाएपरवाहचित्तफेरिकोनेइखिएउधारिनेनधारि
निवेदको ॥

॥ श्रीराम ॥

युगलअनन्य हृद कीजिए प्रतीति पद रूपो जौन नाम तें न पल्यो चारो वेद हूं को ॥ २२६ ॥ रेफ हरि के बीच वेद सहित पुरान ज्ञान
ध्यान धारना समाधि भली भांति भीत है ॥ तीनों देव ईश जग अखिल समेत निन वसैं रेफ मध्य सह विगत विभीत हैं ॥ तिलमात्र बीज
कछु नाम सें न भिन्न तातें रटो निज नाम हीं को और विपरीत है ॥ युगल अनन्य मन मूढ को सिखावो तउ मान तन वैन प्रान पावे अति
भीत है ॥ २२७ ॥ हाय मन मूढ नहीं मानत सिखावनो । वारवार कहो पास नाम हीं सें नेह करु परिहरु लोक वेद नाना पंथ धावनो ॥
ऐसी पाकी रीति सुख सागर विहाय व्योम बीच खोदे कूप नीर कारन अपावनो । संत गुरु बैन को विचारो बात तात नर तातें सेहे घ
तत उत जतन भावनो ॥ युगल अनन्य सीता राम न सहाय हूं जे हाय मन मूढ नहीं मानत सिखावनो ॥ २२८ ॥ संत सरकार सें अ
भेद खेद खीन है ॥ बिंब प्रतिबिंब हूं कहत न वनत मो पै हाउ एक सम सब भांति भाव लीन है ॥ हाउ उनके गुन गान गावैं हाउ उपा
पास्य हैं भव भोग रोग शोग जग हीन है ॥ हाउ उनके तन मन धन अविभाग नित चाल चित्त सज्जन वखानें प्रेम पीन है ॥ युगल अन
न्य मेरे पूजनीय प्रान हाउ संत सरकार सें अभेद खेद खीन है ॥ २२९ ॥ संत रसवंत को मिलाप मे मिलाप राम राजिव लोचन स्या
म सुंदर सुजान को ॥ नई न है रीति चलि आई है हमेस सह अमित प्रमान याते वेद हूं पुरान को ॥ भेटे विन संत परमेस हू को मिलन

॥ नाम० ॥

कहूँतामेनहींरहससवादरसखानकौ॥ पुगलक्षनन्पतातिसंतजननरखोजकररूपरिहरूअपरउपायगतप्रानकौ॥ २२०॥ जेतेगे
पपंपतेतेसंतसतगुरूनामसुजससोहायेयोगीकेआलसविहायके॥ औरचीजछोटेवडेहोतहेसमेकोपायेपषिएपुरानमध्य
नीकीभाँतिभायके॥ तीनोकोपरत्वपरपंचसेरहितएकरसरोजरागेगाजेंहेघननसायके॥ पुगलक्षनन्पतातेइनेंसंवांधोनेह
वंधनविशेषद्वेषरेखवेरषघायके॥ २२१॥ योगसिधिकारनप्रसिद्धपांचचीजहै॥ धीरताअचलउत्साहआग्रहहवि
नचाहसेरहितचितचांहनीअतीजहै॥ संजमसेमतएकथलमेसुवासपुनिप्रवलप्रतीतिप्रीतिराषिएतमीजहै॥ राहिएहमे
सेअसहिरसहिराएराजसाजजगजाहिरविहाइएअवीजहै॥ पुगलक्षनन्पनामनेहहीसुयोगयोगपयोगसिद्धिकारनप्रसि
द्धपांचचीजहै॥ २२२॥ नामहीकेरटेतेरटेतेउरहोतप्रकासविकासविलछ्छन॥ चाहिएरेकीवेवेकसहाइदृढगाढहूपेन
डोपनपछ्छन॥ नामसनेहविहीननकोनहिसंगकरैवहैवेनविचछ्छन॥ पुगमअननपपरोक्षनहीमुरमाइप्रतक्षलषैनि
जअक्षन॥ २२३॥ विमलविरागहीसेंविसहविवेकपुनिवलितविचारतिव्रतरसुविरागहै॥ आदिमध्यअंतवलचाहिए
विरागवरयाकेविनाभएसवसाधनसहागहै॥ ब्रह्मलोकप्रभवएपहारथअनित्यजानिनागिउभोजीपवीचप्रमअनरागहै

हो ३

॥श्रीराम॥

युगलअनन्यजानकीशाकरनेशामोहिहहीं।जिएविरागआगहरनिंद्यमागहै॥ २२५४॥जेतेसुखसाररसरहसविहारतेतेनाम
हीकेमध्यअर्थमननकराएते॥रागतरंगीनसुचिसरससंगीनयातुअमलअनूपरमुभावनाभराएते॥जावतजहानबीचविभव
विलासवलत्तावत्तसकलयामिझलकझराएते॥युगलअनन्यअतिझीनहूसेंझीनंहूतेझीनदेशपावतअचलनामनेठहर
राएते॥ २२५५॥विमलविहारजीतहारव्यवहारमोदमधुरवहारनाममध्यनिरधारहै॥मानदमनसरससवादअविवादध्यान
सपनसमाधिव्याधिरहितविचारहै॥परमप्रकाशरसरासआसखासप्रेमसमनकरनएकरसअविकारहै॥युगलअनन्य
नामरीएविहायअन्नमवरमकरमतभीमिलेसुधासारहै॥ २२५६॥नामकीउपासनासमाननहिंआनहै॥देशकालभाज
ननधामहूंकीचाहकछुसुचिनअसुचिहुंकोरंचकप्रधानहै॥बैठतउठतपुनिचलतअसनमोदसोवेंहूंसतनामजपेसुख
खानहै॥संजमनएकोटेकचाहिएविशेषउरफुरमतजानिमानिआपनोईप्रानहै॥युगलअनन्यअभिरामआठजामप्रद ॥नाम०॥
नामकीउपासनासमाननहीआनहै॥ २२५[illegible]॥वेदसंहितापुराननंत्रमंत्रशास्त्रसबछोटेबडेकेरेंनितनामहीकोगा
नहै॥भासतजोकाहूंकर्मधर्मयोगयज्ञज्ञानसोऊनामरमननिमित्तअभिधानहै॥नामीनाममध्यभेदरंचकनजानिए

॥श्रीराम॥

॥२०७॥

ठा प

कासतजोवीचतौनमानिएअजानहै॥युगलअनन्यऔरवातविषवौनसमसघासवभाँतिनामसुधारसपानहै॥२९८॥
सीतारामनामजपानलहरुजडायके॥कहाँहौरीफेरीभिरोभटनसमानरनथिरोएकथललोकवासनावुडायके॥खानपानसैन
सवसहनतपाररघोकाजकोनकियामूढमूडकोमुडायके॥जौलौविजवासनाविकल्पवढवोयतौलौवधावहुवकनसुधर्महो
ताडायेके॥युगलअनन्यमिक्षअनायासतापतवसीतारामनामजपाजलहरुजुडायके॥२९९॥नामकीलगनविनअगिनहजा
रहे॥ठगनकेग्राममेमनिवासनागेगेहनिजवाघिनीपसीरमुखग्रसनकोपारहे॥प्रवलपिसाचफौजजुसोतकुमारिवेकोकोउ
नसहायअधिकअजारहे॥औरहूंअनेकदुखदाईवोरहेतोहित्तदीपननेकुसठसजतसम्हारहे॥युगलअनन्यपाहिपाहिर
टवोचोमीतनामकीलगनविनअगिनहजारहे॥३००॥नामकोपरत्वपनप्रवलप्रतापप्रेमपावनपरेशपुन्यपलपलपेखिए॥ ॥२०७॥
चामहामखामएलखाहिसरपरावखादेखोफकोवहायमेजमानसमेलेखिए॥नामहामहंडमेहकीजिएरहसपवृत्तचित्तचलसंग
तवरंगतविशेखिए॥युगलअनन्यछविछाइहैविसेषनामकरुनाकोपायजोनेहहूहिमिहिलखिए॥३०१॥नामिनकीरीतिप्रीतिअ
गमअथाहहै॥जानननहीयोगीरोगीभोगीभववाहवेहज्ञानीध्यानीहारहेअहंकारघाहहै॥औरजेतेसाधनकारनवालेजीवतेते
पाकेमरनअर्थरचेचिनचाहहै॥

॥श्रीराम॥

पारावार अमित परत्व नाम महाराज विधि हरि हर हूं को अधिक अथाह है॥ पुलक अनन्य कर नाहीं ते लखाय परे नाम मन की रीति
प्रीति अगम अथाह है॥ २०१॥ ज्ञान अज्ञान को भेद नहीं निज नाम उच्चारन चाहिए भोर॥ जाने अजाने जो उत्तम औषध खात
नसे तेहि राग सबोर॥ जाने अजाने जो गंग नहावत तासु को पाप के मेल भोरे॥ पुलक अनन्य विचारि ऐसे सहीं नाम रटे भवसाग
रपारे॥ २०३॥ ज्ञानी योगी कर्मकांड निरत भजनवान अरु सलउपासक रसिक रटे नाम को॥ अर्थ निज रीति प्रीति लिए करे सघ
सब पथा पोन्न अनायास पावे मोद धाम को॥ रम्यो आगजग प्रान अंत में वषानतीन पीन मति कहें रम्यो अखिल निधाम को॥ पुलक अ
नन्य रमे रहस अनन्य मध्य अमल अनूप अर्थ जानियो भो काम को॥ २०४॥ एकै विषय परहीं ते पांच को विनास है॥ इमि पांचो
राग शोग भोग रस मान के होत ताके बचवे की मीत कहां तक त्रास है॥ मीन मृग मधुप करी शाहूं पतंग रस आदिक के लिए सहे महा
तन त्रास सहैं॥ जैसे धनी साथ चोर महा वरजोर ख के भषन के साथ तैसे जीव जम ग्रास है॥ पुलक अनन्य राम ना॑ही के रटे सुख ए
करे एक एक विषय हीं ते पांच को विनास है॥ २०५॥ संत की रहस अजान जड़ जीव जग जानि न सकत फसे महा मोह फास मे
ऊपर की और रीति भासे विपरीत पर अंतरंग लक्ष्य लाग गो परस रास में॥ जैसे महाराजन को केलि भौ जहां रमी तव के कहा रंक पंक
सीने भव भास में॥

१क

म नामने॰

॥श्रीराम॥

॥१०८॥

८जैन

पुगलअनन्यशाकेलसहूनलावोउररहेहै॥ नित्तमगनलगनेकेसुवासेम॥ २०६॥ करतवहीनवेषउनउपहासहै॥ जैसेसिं
हस्यांमस्यानधास्यातनवैनवलरहितरवरावस्वारभयोअंतनासहै॥ जैसेवडोदंभसजवायकेसमानवुधविद्योतविहीनमा
नेलपशाकोनश्रासहै॥ जैसेसूररूपधारिसृंगनसजायशस्त्रभिरविनारनकोडीआधकोकुहासहै॥ पुगलअनन्यपीठिहीजिए
प्रमादवादकरतवहीनवेषउनउपहासहै॥ २०७॥ छिपेनहीं [illegible] केसेंहूछपाएकरतवहै॥ जैसेसुचिसुमनसुगंधप्रगात्तगा
ठिवांधेहशोफरपाहीरानिमरतवहै॥ जैसेमहाराजभाग्यवानवेषगोपकरेतउफूलकतभवभालललखेंसवहै॥ जैसेअनमोलला
लकीचहीकेवीचपरयोहूरहीतेतुतिहमकातनित्तनवहै॥ पुगलअनन्यऐसेसंतरसवंतनकोछिपेनहीकेसेंहूछपाएकरतवहै
२०८॥ दृष्टिअदृष्टिवाईवेहंवुद्धिमंतवुधतोनसत्यहैखोहगआपेननमूठहै॥ हूजिएएकांततवसकलउपाधिशांतमिलेजगजीवप
रवसेहींअतूठहै॥ सुक्ष्महूफूलमेंविवेकपाकोवनेमीतरीतविपरीतिकेरहितसूरपूठहै॥ पुगलअनन्यनेनअनीहलेरोकपरचालिएप ॥१०८॥
रसघरछोडिकीशामठहै॥ २०९॥ लोगनकेवीचसिंधवनेतशोरनकाजजोलोमनोराजखोजगाजसेननशेगो॥ हषीनगजीवनकी
रीतिमेउचालसमतिलभरिउरनविवेकपुरवसेगो॥ वेऽमहराजधनधामवामसुततनहेतअविकारऐसेसकेहकौटकसेगो॥ पुगल

॥ श्रीराम ॥

आनन्द

अनन्यअनुरागबागदागछूटजावतजहानवारुवाहरसरसेगो ॥ २१० ॥

हीजिएथूकिजहानकेतर्फमोबारकहर्फसैंशोकसनावो । लीजिएनामनभूलिहूंव्रत्तिप्रव्रतिविसारिनिव्रतिरंजावो ॥ पीजिएप्रीतिपियालापगछबिलोककुलाजसैंनाहिलजावो ॥ घनआनन्दसुसंगतिमेंबसिवासनाभर्मभुलानमनावो ॥ २११ ॥

संतसिरताजसूरसोहेवसुजाननूरवहनविराजमानमानसउमंगसैं ॥ मायामहमोहमानममतामलीनमनजीतिरनमध्यअनापासनामरंगसैं ॥ रैनऐनचैनचिन्तमेनमुखमोडितोडितगनतमामतारप्रीतिकेप्रसंगसैं ॥ घनआनन्दरेनामअभिराममनसचलतचलाकतीरतरलतरंगसैं ॥ २१२ ॥

तिपैरा

ऊंचीसैंसांदीषिलखिनीचेकोंनिहारेनहीऊंचीकरतूतिसूरताईवीचेजवहै ॥ ऊंचीबरबानीरससानीऊंचेहंसनकीकोहूंनेहनरमसनायसतसेवहै ॥ ऊंचोसतसंगरंगकेंओरगावैगोरडीचताईतजितनतामसअसेवहै ॥ घनआनन्दरेहअधिकअसंकसूरदूरकीरमनतेजहानलवह्वैवहै ॥ २१३ ॥

बातनसैंसरसतीसंतकहवावभलेकरनीकठिनसूरीसहसमानसैं ॥ घातनबचाएबिनवैननविमलरीतिप्रीतिनिवहतनहीकेसेहूंप्रमानसैं ॥ तातेंहोसप्यारहोप्ररहिएविकारतजिनामेंलागेचोपनाविषमविषवानसैं ॥ घनआनन्दपतीनोमांपावितविहिजवछोडेसानमानसुषस्वादतनप्रानसैं ॥ २१४ ॥

लोकमेकहावैंसूरसोतोकूरखरसैं ॥ पटपालिवेकेहेतलरतमरतजडजरतत्रितापमोहपावतनपरसे ॥ किएपर

॥ नामने० ॥

॥श्रीराम॥

॥१०२॥

जेगयथायोगनाकभोगपाएहोतपुनिपतितप्रपंचवीचभरसे॥ सांचेपूजनीयसूरस्वारथरहितसंतविसद्दविवेकवंतवीतकाल
डरसें॥ ख्यालअनन्यशोकभोकनसमेतसठलोकमेंकहावेसूरसोताकूरखरसे॥ २०१५॥ रेरविनानामसूरसुपद्दनपाएहे॥ फेरविन
वाद्दरविकारव्योमवीचवीरउद्दितान्निशनेकहूंनद्दरसाएहे॥ पेटविनाप्रीतिपरतीतिपरपंचपटुनिपटकपटतनतेरेतेनुजाएहे
छुटेविननगततजवालजालकालसनपरमपरेसपद्दमाभानसमाएहे॥ ख्यालअनन्यसद्दसांचीवातमानिएजरेरविनाना
मसूरसुपद्दनपाएहे॥ २०१६॥ जानकीरमननामगुनगनेगहेवेहरवाहिसरवजानखामकामकोकद्दनेहे॥ ध्यानकीजुगतिजो
वजानतजहानहानकरतप्रमानवद्दसुवुधसद्दनेहे॥ जेतेजानजालिमेजमातेतेतेनामधुनिसुनतनसातसषद्दोषहूरद्दनेहै
ख्यालअनन्यसुचिश्रवनसुनामहोयमोजएकतारध्येयसहसवद्दनेहे॥ २०१७॥ अवधिअधारनिजनाममोहसारचित
कीजिएविचारपारावारप्रेमप्यारको॥ इस्कअविकारद्दोरद्यानननिनारेतेलधारकेप्रकारचिन्तवनिहूविहारको॥ लोक
शोकओकनोकतिगनत्तलासतमतारतहेमश्राहापन्नारतनिवारको॥ ख्यालअनन्यनामसेंएसचेतचितनाहितअन
हितवातछोडिएविकारको॥ २०१८॥ हेवडभागद्देसजनीसियस्यामसुनाममजेगअनुराग॥ केकेसमानतिलोकलेगभेग
भावनामूतमयानविराग॥

॥१०२॥

॥ श्रीराम ॥

जैसबढ़ीविधिताहितभोजसजालवितानप्रधानसुयोग ॥ युगमअनन्यअभयहरसायतनामनिसानवजायसुभोग ॥ २१९ ॥
नाममहानकिएअवलंबविलंबविहीनविबोधविहारें ॥ आमअमानमलानमिटैमनमानप्रधानउछाहहजोरें ॥ छामछली
नगालीनगलीगिल्लगारहिवारसमानप्रहारे ॥ युगमअनन्यअगामभिलसुचिसोहैसोहावनसंतवजारे ॥ २२० ॥ जानकी
जीवननाममहामनिदीपप्रदीपकप्रेमअनूठो ॥ मोहमहाममतारजनीतमतामनिवारकस्वच्छअजूठो ॥ वासनावन्हपतंग
कुरंगनजीकनआयशकेभ्रमभूठो ॥ युगमअनन्यसनेहसजायसहाजपिएसपनेनउवीठो ॥ २२१ ॥ जानकीजानसुजान
सुनामसनेहविहीनमहामतिमैली ॥ कोमलतासुचिताईननेककवूलकरैभ्रमतागलगैली ॥ शोकसोहागसुभालनहींति
नकेसमम्रटकहाजगनैली ॥ युगमअनन्याविवेककियपरसांचहिहैमलमूलकीथैली ॥ २२२ ॥ रसनाभिनिवासरनामपियूषसु
भूषनिवारनपानकरै ॥ असनाहिसेमैमिलिहैकवहूंसुसंतसुवागविचित्रधरै ॥ लसनाप्रतिरोमसुसोमसहीलहिएतिलगा ॥ नामने० ॥
फिलतानपरै ॥ भनेयुगमअनन्यअभयवसनाहरसापतनाहविप्रोगजरै ॥ २२३ ॥ कालकरालकोखंडनवेसकनामप्रचंडसु
जापजपोजी ॥ प्रीतिप्रतीतिकरायमलीविधिसाधनाआंचनभूलितपोजी ॥ जोहअनीहनिरंतरधारनामूलमनोहरमंत्रपपोजी ॥

॥ श्रीराम ॥

॥११०॥

युगअनन्य कलंक के वाहन काटि के घाप अघाप छेपो जी ॥ २२४ ॥ चल्यो चिन्तवी चनाम धार सुख सार अव एकतार तैल सम मलूट तनता
रहै मल्यो मुरमहन मराल मन वृत मन छल्यो छलछंद हगाइ ल्यो व्यभिचार है ॥ जल्यो तन चार हार हिर सहराम है हौं हल्यो हिय प्रह
स अप जाहिर विकार है ॥ युगल अनन्य पल्यो सत गुरु सीत पाय प्रविकात विभीत रंग रमन रकार है ॥ २२५ ॥ अपजी ह ज्ञान जाल जगत जह
र जहि जागि जागि मंत्र मान सी के प्रेम पालि कै ॥ भूले मान भांति भांति शांति लहै लीन रस जाग जैं मगात जहान वीच चालि कै ॥ अमल अ
कलक लस वलसु गल करिस कलस वरिसार नकलसु घालि कै ॥ युगल अनन्य जग ठग मग पथ तजि सजि सत शान साज सरस सम्हा
लि कै ॥ २२६ ॥ कौन की कौन काज करता यम कलि लकलिकायल करनहार कामिनी के लाल है ॥ साधन समाज सब साधन समाधि
गत आधि व्याधि वेधित असि छता मलोल है ॥ गाहक गरीब गुन हीन कौन सी वचाव बैचाइ हौं भुवन माझ कोटिन अमोल है ॥ ॥११०॥
युगल अनन्य हग्शार्स पंहन सुवन राके टकोनि वाहक सुवाल को अडोल है ॥ २२७ ॥ सिय वर सह जसनेह सुख सोग है हर है हरखे हग
नि निसि वासर सम्हारिए ॥ चाह जौन होय हिए द्वन्द अभिलाष रचि ब्रह्मलोक मोह नहीं मानस निहारिए ॥ नाम रूप अमल सुपा
न रस खान निज अविहित भावनि धिम धिमो इडारिए ॥ युगल अनन्य खास सरकार पास रहि अपर उपाय हाय त्यागि मन मारिए ॥ २२८ ॥

सीतारामनामकलकुसलप्रकासप्रदहृदमनकुरुहदुखवेदविदवागैहै॥ अनकरतीतिउतिकथनकषापकृतकीजिएविचार
सारविसदविरागैहै॥ लीजिएललामलाहमानुषवपुअपापजायजगवासनाविहायपरसरागैहै॥ प्रगलअनन्यनामहीनपलपाव
पीनपापनविसषतजवीजिएसुभागैहै॥ २९॥ स्यामसकारसियासुकुमारसुधाछविसिंधुमझारनहाए॥ होतउमंगहजारनवा
रविकारविहारविचारवहाए॥ वासनावंदविलासविजयवदवासविसारिहुकानदहाए॥ प्रगमअनन्यजहानजलायकेआसअजा
यवज्ञानगहाए॥ ३०॥ रूपअनूपसुजानसिरोमनिजानकीजानिसुधीयपेआए॥ कायकुरूपकलेसकोटकलिकामिनीकालक
रालकलाए॥ मोहमहोदधिमीनभएभवमानवितानविलानविलाए॥ प्रगमअनन्यओडालअभैपदपाइएप्रेमप्रवाहवहाए॥ ३१॥
रामनामपरमपरात्परपरमेशशेषशिवमनकेसनंदनादिध्येयहै॥ जौननामसुजससमाजस्वच्छसिरताजेवदबुधविमलवदतअप्रमेय
है॥ जिनकेउच्चारनहिमात्रतेस्वरूपसुखसहजसुलभहोतदुरतदुरेयहै॥ प्रगलअनन्यममानसअनालसहूँहापकप्रमोदप्रानप्रीत
मसुपेयहै॥ ३२॥ राममनामंत्रसिरमौरहैजोरहरजोहरविधचित्रपापचाहऔरधूरैहै॥ पूरमपियूषमकरंदमोदनिधीनामजीहजौनवा
खोताकोसवरसनूरैहै॥ साधनसमूहदरसातहुलसातहिपकूरतकठिनपरिनामचित्तचूरैहै॥ प्रगलअनन्यनाममहिमाअगमअतिवारके
कहनेतवदतनवनूरैहै॥ ३३॥

श्रीसरस्वती पुस्तक भण्डार
श्री लक्ष्मण किला

नामअवलंबकैकेरयाजोननरतौनहंभैदोषधिसिसैंहैमशामस्तमोनहै||मानमर्य्यादमोहमद्दनमुराद्दमीच्चसमतासैद्दवसानैगर्वग
||श्रीराम|| नगौनहै||कामिनीकनककांचमापिनीमहत्वमोहमहादुखदैहनैत्रनैचैनविषैवौनहै||प्रालअनन्पनाममनिरतसुसंतपदपावन
परागपरसतपूतपौनहै||दो० ३४||नामअभिरामअनुरागवागफूल्योजहांतहांतहांसुचिसौरभसमूहसरसतहै||आरतअसलअधि
||१११|| कारसैंसहितजनषटपदविहंगविलोकिहरसतहै||सीतारामसहामोदमूरतिपरातारअनायासहिद्याहिलद्दगहरसतहै||प्राल
अनन्पगिरागानपगुनेशगनतिनहीकेगायपदप्रेमपरसतहै||दो० ३५||रसनासैंरमैसरटनलगावैनेहसहितप्रथमधुनिश्रवनसुनाए
अचल कै||षटमासतकहरीतिधारिमारिमनआसनअसनादिकनसायकै||बहुरिप्रमोदसंगसजेकलकंठगावैटअनपमजानेसाईनाम
गायकै||प्रालअनन्पएकवरसनिवासतितचितचतिरोकिकैरछैलछविछायकै||दो० ३६||संतमद्दगुरुनामकरुनारटनैसंग ||१११||
जंगजालजीतिशबसारहीपमांझहै||तैलसमधारएकतारनविलगहोतजोतिजागमगतप्रकाशभारसांझहै||बारिवर्षवासतहाना
मअविचलकरिछायोनाभिमध्यजितधुनीपंत्रमांझहै||प्रालअनन्पपंचवरषरटनकरिरामरामफैल्योनामैद्दनरसछौंमांझहै||
||दो० ३७||सोहबसमर्थमुखसिंधुसर्वेशासिरताजसुधासारनामसरससफीकहै||सहजअशरन्नसद्दगन्यअन्गानासवैद्दरामानमन्पारसामि
कफीकहै||

श्रीराम

हि म

सुखमासीलानसुकुमारताहि मगनबरनविचित्रबीचहमकहकौकैहै॥ पालअनसँतसाधिलमेनेहवंतहिएहरहमहापहरनहकौक
है॥ २३८॥ महिमाअपारनामकहोंकौनभाँतिसें॥ मारहअसेरव्यागननाथगरगिरापतिपहमअपारगिरिजेशशेषशांतिसें॥ अमित
मुनीशईशआमलअनंतगनगाविएकरसेनेतिकहतसुपातिसे॥ नामनेहनवलसजाउएविहायभ्रमभावनाभईशामावभवनमुकां
तिसें॥ पालअनन्यमतिमलिनमनोजमहमहिमाअपारनामकहोंकौनभाँतिसें॥ २३९॥ नामनरततेतानिसाचरनरहै॥ मानुष
वपुषपालवेद्योईमहगावाजभीतरखजानरवामरवालीरवलखरहै॥ खोटाहामअनरखराईहरसाएकहाँरवारिनखलासंतस
मासेसगरहै॥ मेरतनधारिधास्त्रिबलअसंरववारभारीअभिमानचितअजसअमरहै॥ पालअनन्यमखहैरिवेनयोगनिजनाम
नरततेतानिसाचरनरहै॥ २४०॥ ऐसेपंडितनपरमूढवहुवारिए॥ जिनकेनविरतिविचारव्यभिचारविनमूरतिसमूहहीनहि
नतानिहारिए॥ सर्वेशनामधामरूपनरचतउरफुरमतिगनित्यागिमूढभ्रममभारिए॥ संतमिरताजउपदेशजोवतावेकुछसु
नतविवादविद्याहजीतिहारिए॥ पालअनन्यननिहारतनयनभरिऐसेपंडितनपरमूढवहुवारिए॥ २४१॥ पंडितरहस्य
सोपुराननेमख्यातहै॥ सहासहसुभगविचारतविशेषकरितेजनमजालचित्तवनप्रेमप्रातहै॥ सूकरस्वआनद्विजरागेहवराजमम
असमनलशापरमझरहेशावातहै॥

श्रीराम

सीतारामनामगुनशोकतौकहैहोकहीनरिद्धिसिद्धिभावनाविहायह्निनरातहै॥ प्रालअनन्यमतिअमलप्रवीनप्रियपंडितरहस्यसो
पुराननमेंख्यातहै॥ २४२॥ नामनेहविनाबुधपनपरछारहै॥ कहाभयोसंहितापुरानवेदवादकिछकीनहोमतितौसमानखरभा
रहै॥ जैसेधनछीरपैनपीवतसुरभिआपपावततनाहितिमितिनकोविकारहै॥ सूपमतछाडिरीतिचालनीअसारगाहिगरकगरूर
गुनैगरकैगावारहै॥ प्रालअनन्यसवसंतश्रुतिवृतकैहनामनेहविनाबुधपनपरछारहै॥ २४३॥ रहसउपासनाविचित्रभीन
पीनसुखकरनवषानिकहोंसुनोसनमानसे॥ परमस्वतंत्रमंत्रराजरघुराजगहिजोहैआरमंत्रसोअपावैसोअपानते॥ अभितकलप
कलपतजमजातनाहिसहैमठमोईयामेशकनाप्रमानते॥ प्रालअनन्यसुधासागरविहायजडगोवरकुरसकुंडयांचतअजानते
२४४॥ सीतारामसंस्कारविशारदवहारसारधारिरूचिओरसोअलापकअपारहै॥ चिंतामनिपारसअमरतरुधेनुतजिउपलववूर
पसुसेवतअसारहै॥ आपतापसंगरंगभंगअंगअंगलोकवासनाकेहेतुसिष्यकेरसोगवारहै॥ प्रालअनन्यचितवेतुचौंकिचा
हचैहिचालिसदुगुनचारताहीमेंसंचारहै॥ २४५॥ सीताराममंत्रनामऊपरजोअन्यमंत्रकेरउपदेशसोनरककोद्वारहै॥ रेनरअ
नतौनजीवपीवमेविमुखताकीकहौंकौनगतिइहरहतकभारहै॥ बारबारमुकरश्रुकालस्वानधारिवपुजिवैपुनिमुवेसहाशीशकूटिरहै
प्रालअनन्यसावधानरटुरामनामसंतसतगुरूसंगसजेसुखसोइहै॥ २४६॥

॥श्रीराम॥

सीतारामसुजससमच्छस्वच्छसारससिपूरनपियखसुनैअपरविहायके॥ श्रुतिसंहिताहिमतमानेनवविरोधझष अधिकअ
निषमिषसानुकूलगायके॥ चाहेकोउ निंदे वा वडाई वहुभांतिकेरे चलेनिजपंथसद्दासमतासमायके॥ युगलअनन्यचित्तस
सहजअसंकअंकरहितअवंकवंकरहससोहायके॥ २४७॥ सीतारामनामअभिरामआठजामरटेरटेरहेंअडिगअसरता
विसारिके॥ ललितललामरामसुपदसरोजरेनुधारेंनिजभालरीतिरशिकनधारिके॥ वसेरहरहखेसमरिज्ञानकीजीवनधामप्र
गैसुगोपमध्यअंतलोकवारिके॥ युगलअनन्यअवधेशमईअषिसवविमलविलोचनविलोकमनमारिके॥ २४८॥ ठानेन
विरोधवोधसरसमजायजियजानेजीवजडदोउहुतीडुतिवंतको॥ मोनमजवूतमतधूतपनछोडिसवभूतनविवसनहीहे
यअभिअंतको॥ सजगसुजातिनसनेहसावधानसजिसुनेजसयुगलकिशोरनिजकंतको॥ युगलअनन्यछनछनअभिलाष
लाषभिलोंकवसीयस्यामसमन्तस्वच्छसंतको॥ २४९॥ सुंदरसोहनेमोहनरूपमेंचित्तकीवृत्तिविशेषसेंराखे॥ लालललीअवलो
कनकीछविवारहीवारहिएअभिलाखे॥ प्यारिपुनीतसुप्रीतमप्रीतियोगायकेअंतरहींरसचाखे॥ युगमअनन्यअमोलमहा
मनिनामसहारसनामलभाखे॥ २५०॥ जानकीजीवनकीमदुवोलनिहीयमेंमेरेविशेषगडीहै॥ सांवरीसूरतिसांनभरी[illegible]वे
अलवेलीअदादिलवीचजडीहै

८

॥रामनेहं०॥

कुंडलकाननेंमेंडुलसेविलसेद्युतिमोहनमाललडीहै॥युगम [illegible] अनन्यनसंकरतीपतिपायप्रमोदविनोदभडीहै॥ २५१॥
॥९३॥ जानकीरशिककेअनन्यअनुरागीजनजाहिरसुभामिनीस्वकीयासममानिए॥तनमनधनपनसनरच्योसामसनअतनन
नेकुसाँचस्वच्छताप्रमानिए॥नैनवैनविलगनहोतप्रीयतमरचिमचिमनमोदसुविनोदतापघ्रानिए॥युगलअनन्यध
न्यधन्यरशिकशसुचिरसअपनायो।जिननमोतिनठानिए॥ २५२॥सोईपरकीयावामजाकोआनइष्टधामखाममतिसु
गतिसुरतिसेंविहीनहै॥औरकोकहायस्यामगायएकभलीदूजीअवधललनसेंविमुखद्युतिहीनहै॥कामनाअधीनसो
सामान्यानायिकामलीनविनाहिननसजतसेनहछलछीनहै॥युगलअनन्यनानादेवतासेनहसोईकुलटानिपरस्वादपाव
न नँपीनहै॥ २५३॥रूपरसचाखियरनभाषिएवचनऔरविषतिषतीरतरवारसमवूझिए॥रूपसमसुभगसुमतकोग्रहनक
रिपरिहरिविविधिविकलपसमझिए॥जपपीतप्रमदृढअंहरगाडीहैदृढभावनावदायरनसनमुखजूझिए॥युगलअनन्य ॥९३॥
पूपपीवपरतत्वपायपरमप्रमोददिसिद्धसरीनसझिए॥ २५४॥कोशलाप्रभावपरमप्रासेअभेददेखिसेवसवलोकदिव्यभ
व्यनगायके॥जेतेतमपारथलविमलप्रयागआदिजोरेहेकंजकरकिंकरकहायके॥कासीमधुपुरीहरिद्वारद्वारिकाँतिमि
कोशीभनीयतोंअवंतिकासुभायके॥ ॥

॥श्रीराम॥

युगलअनन्यआठोजाममहमानगतजोहनीहमेशऔघसुमुखसोहायके॥ २५५॥ विमलविभूतिवरविसदविनोदमोदहेरिरही
यवीचलघुलोगहरिभौनहै॥ महाविस्नुवासुदेवराधापतिधामसवएकरसवसेअवधआवरनजौनहै॥ व्यापकनिरी
हब्रह्मसुधसुप्रवुद्धस्वच्छचिदाकासकोप्रकाससुतजअंसतौनहै॥ युगलअनन्यसीतारामधामसैंपरत्ववरैकोऊऔ
रसामलच्छमहाजोनहै॥ २५६॥ रामनामजपिएविकारभ्रमछाडिसवतापिएनतापपापपुंजहूवहाइए॥ औसर
वन्योहैस्वच्छसावधानहोयअवजानकीरमनजसभलीभांतिगाइए॥ कीजिएसप्रेमसंतसंगरस[illegible]खानवामसुतवि
नोपखिभलिनठगाइए॥ युगलअनन्यसीखसुनिएभगनमनपीजिएपियूखअनुरागरसभाइए॥ २५७॥ नामसुधासिंधु
मांझलहरहजारयोगभजनविरागरागविमलविहारहै॥ रंगरंगअमलअजवअनभवजवजाहिरजलसजगमगतविहारहै॥
सुधसतसंगसुसनेहससमेतजौनतौनजलजीवपीवप्रीतमउदारहैं॥ युगलअनन्यमोदमंदिरसरोद[illegible]भउठनहमेशव
रसतरसधारहै॥ २५८॥ एकरससरसअपारसहसनेशानाममहामोदधाममनमाझवरसतजव॥ विसदविहारवर
वीजअद्भुतवीजनतीजनमनतरनिविभासविलसततव॥ कामकोहकापिलकलंककलिकालकटुकायरअनेकरुच्छरतच्छन
सिजातहव॥

॥नामनेह०॥

युगल अनन्य नाम जपि ए जहान जस जाल जल वाय हाय विलंब न की न अब ॥ २५९ ॥ पलपाव सुनाम विहावत जो छलछ्रा
वृत तौ नके वीच विशेषी ॥ कलपा वृत मूढन ही कवहूं जल वा वृत जान तेहि निज द्वेषी ॥ थल जा वृत ता वृत रे वह दुख जान अगार सुसे
त केरु द्रोहे षी ॥ युगम अनन्य हि एम लभा वृत नाम तजे मत आध निमेषी ॥ २६० ॥ सीतावर नाम अभिराम काम धाम जन शा
म औ सुवु हजपु जी ह वृत ठानि के ॥ आलस प्रमाद रति लालच लवार पन दीजिए विसारि सुचि रुचि उर आनि के ॥ आफत हर
न हार पार कर नाम एके केलिकाल मध्य दृढ भजु जिय जानि के ॥ युगल अनन्य सत भाये तेक हत इह अमित अपार सत मत छानि
छानि के ॥ २६१ ॥ रघुकुल मंडन सुनाम अवतार हेतु विदित विलोकिए विमोह विसराय के ॥ योग यज्ञ जप तप वृत दान पुन्य स
म वस मता नमो हरु कवार नियराय के ॥ नाह कनि षेध वेद भग्ग में चस्त तजड अडवडु पंथ दुख लहत हिराय के ॥ युगल अनन्य अपर
शे मोक्ष करतल होत अनायास कहे संत महराय के ॥ २६२ ॥ परम परमा रूप रेफ कल ही न जौन कारन अमल ब्रह्म सोई श्रुति
मत है ॥ सहस किरन सा को रिस में तज वान वरन अतीत मीत प्रीत तहीं के रत है ॥ योगीजन तनज गाय के जपत जाहि रसिक सने
हि नेक सतगत पत है ॥ युगल अनन्य प्रति आनंद निकेत नित्य दशरथ राज सुत हृदय सपरत है ॥ २६३ ॥ रेफ में अकार ह स्व

॥श्रीराम॥

विधिनासेहतुतोषसहजसमाधिसुनिलागतअजवैहै॥वासुदेवलषनअगुनज्ञानदिननाथवाचकविसेषनितकारनसुखव
है॥करतप्रकाशतमरासकोनिरासकरिशव्दव्रह्मप्रगटतसहसहवूवैहै॥युगलअनन्यअनुपमअभिलाषलाषभाँतिनतेहेतसंतजन
महवूवैहै॥२६४॥जानकीरसिकपदपंकजपरागपषिचारुचिन्हचमकसुचषनचषाइए॥गदगुल्फजानुजुगजंघकटिआ
भरनसहितसुनाभिसरवक्षहूँलषाइए॥कंठकमनीयवरवक्त्रभाविचित्रकरकरजसमेतमनमाँझहीरषाइए॥युगलअनन्यभाल
तिलकझलकजुतअलकसुनैननवैनवदननदेखाइए॥२६५॥मधुरमनोजमदमदनमयंकमुखमजेदारमोहनमिजाजम
नेहेरिए॥बोलनविनोदवरसावनविचित्रसुखसुधाचहूँपासरसरासछविघेरिए॥मंदमुसक्यानतरतिरछीकटाच्छयुतजोहनक
रतकतलामकतहेरिए॥युगलअनन्यअलवेलीहुतिहैंषिहिलहीनहूनीहोउनिवछावरिनिवेरिए॥२६६॥वीरीवरवद ॥नामे९॥
नविराजतविलासहाँससहितसुवासआसपासमेंप्रकाशहै॥अमलअनारवीजवीजुलीविचित्रचारुललितललामदंतपंग
तिविभासहै॥ओष्ठअरुनारछविधारप्रियाप्रमवारेजीवनविहारहियहेरतहुलासहै॥युगलअनन्यआलीअवलीवि
लोकिरहींसुखमासुधामअंगतनकोनभामहै॥२६७॥जानकीरमनजूकीमूरतिप्रमोदमईएकवारकेसहूँविलोकिकैनधीरहै॥

॥श्रीराम॥

॥११५॥

रोमरोममांझपीरविरहउद्दोतहोतवारवारउरउमगातप्रेमपीरहै॥हेरवेविनाहिलहिलहारपलपावैवैनरहत्त
नहींराहायउठतअधीरहै॥युगलअनन्यमोदमंगलहेमप्रातवमिलेमहवूवजवसरजसुतीरहै॥२६८॥सियवर
सरससुरंगअनमोलअंगअंगअजवअजवअवलोकतहववहै॥मातमतमोरमांझभोरसांझहोशविनरातैनैनवैनपी
यपासमतलवहै॥छुटेलोकलाजकुलकाजमनराजसाजलूटेलाललुलितमधुरमहवूवहै॥युगलअनन्यदगहेरवे
विनाश्यामघनछनछनचितवीचमीचसमऊवहै॥२६९॥वारकविलोकिधामतारकसमीपहै॥दशोदिसिसहावद
ध्येदेखिवरद्दराजदगधगमगवारिमुक्तहीनसमसीपहै॥जेतेजगजाहिरविचित्रलोकअर्धउर्धतेतेसवसेरककसुत्र
धहीमहीपहै॥चाहेकरोकोटिनउपायतऊतोमतमहोतनहीनाशवारविनाँदीपहै॥युगलअनन्यवैनविश्रादविवा
दनीयवारकविलोकिधामतारकसमीपहै॥२७०॥मरएसुवामकेहाकैरकलिकालहै॥महाराजमकुटमनिदुर्ग्रोधधाम
पदपंकजपरागस्वच्छआसरोरसालहै॥सीतारामसरससनेहतमपासनीरपीजिएप्रतीतिसहमशमाद्यमालहै॥लोकवेदवि
षमविवादमतफंदतोडिहोरागत्तगपाहिधामभ्रमभालहै॥युगलअनन्यसेनकीजिएनिधिंतयाचितमरएसुधामक
रैकहाकलिकालहै॥७१॥

॥११५॥

॥श्रीराम॥

म
धाँनिवाससमजाएविनाकपनीकुलकामकलंककलीहै॥ नामनिरंकुशानेहविनाधिगवारहीवारननेवभलीहै॥ लौकिक
वाहउछाहलिएललवायजहाँतहँजालजलीहै॥ युगमअनन्यसुधीशसाईजेहिनामसुधामप्रतीतिपलीहै॥ ९७२॥
एकादिसिसंतश्रुतिसंहितापुराननिप्रियपारनअनंतउपखानदृगदेखिए॥ यंत्रमंत्रनाटकरहस्यअनभवग्रंथसंप्रदासुपंथ
हूंअरथाघमटेपखिए॥ एकवारजालिमजमातवरजोरमनधीरसिरमौरसूरउगातनलेखिए॥ युगलअनन्यसीतारामजूकीघ
पादृष्टिपरमपिपूषवर्षिआससुविशेखिए॥ ९७३॥ जानेनाहीनाममनधर्योकौनदुष्टको॥ मानतेंनसंतसतशास्त्रसुव
चनवरअवरअसाररहिततनपरपुष्टको॥ नईनईमौजमनोराजसाजकाजविनारचतरहतजामेरवटकोटिकुष्टको॥ सहजसु
भाववैरखैरनचहतनेकटेकअविवेकदृढधारितअसुष्टको॥ युगलअनन्यसावधानअनुमानकियोजानेनाहीनाममनध
र्योकौनदुष्टको॥ ९७४॥ नामचिंतचैनप्रचारजोकजीपबीचअचललगीहैताकेसमकहाकोनहै॥ आठजामजमेनमसाध ॥नामै९०॥
नसमहत्त्वच्छकियावारअमितविचित्रभाँतितानहै॥ तिनहीकेपदसरपंकजपरागभालधारतहरीशसुरनरमुनिगोनहैं॥ युग
लअनन्यनामरसनाउचारगुनअगुनअवारवारवातनसैमौनहै॥ ९७५॥ रैनअैनजागिरमैनहंसंसभतनामरसनारसनाग्र
खंडनितरटनप्रवंकुरी॥

प्रवउ

मैनैवैनतापागिरसुनैननसैंनिहारिनीतमुपथसुपथसुभावमेंचलतगतरंडही॥ पैनमतिसुरतिसजायसुवजायपर्ववविशारदविनो
दनामसअमलछबमंडही॥ युगलअनन्यसैरकीजिएसमाधिमांभभोरसांभएकरसहूजिएविरंडही॥ २८६॥ रसनासैंसरसमुन
मकोउच्चारिनित्तपरिहरिआलसउपासनाविकारको॥ युगलकिशोरचोरचित्तहित्तहेरिपलहिएउन्मत्तनैननैवैनमरप्यारको॥
मलिकेभरेदशाभावभावनासुदेशागहिरहिएहमेशादशाअविचलपारको॥ युगलअनन्यनामरूपमेंअभिन्नचित्तराखिएविशेष
रसचाखिएसुसारको॥ २८७॥ जागतहींजागतजलूसजगमगनामठगसैंविहीनरगरगमेंविभासहै॥ पागतहीपागतप्रवाह
प्रमद्राहविनाअमलअमलअथाहनाहनाजुकनिवासहै॥ त्यागतहींत्यागततगुनतमतारपारभयोमनअमनअमानमरसार
है॥ युगलअनन्यसवैतोरगोरकियोहमनामसैंविहीनसवसाधनदुरासहै॥ २८८॥ रटतरटतनामनामहोयजायगो। सिमि
टिसिमिटिलायलमनलहरहियकहरकलापकढुजाईवहवायेगो॥ वटतवटतउरउञ्चलउमंगाअंगअखिलअनंगसप
निहूंनदेखायेगो॥ उटतउटतधुनिफैलिहैसुरामेरामसामसतसहसमुमीतसरमायेगो॥ युगलअनन्यसंतगुरूधामकृपापायेर
ररटतनामनामहोयजायेगो॥ २८९॥ भोरवोविसारिअवजागनोईजोगेरे॥ सोईस्यामसरससुवासआववावववकिवाईहीं विहात
होतकालकिनभोगेरे॥

॥श्रीराम॥ रकारमकारमहुतिवंतगुनवंतसंतवरहिंविवेकेतविचारिविनशागरे ॥ नीरकेसमानदुखखाननानिहारोनैनअधिकअकाज
कोसोपतकुरोगरे ॥ पुगलअनन्यजेनवीतपीतानवीत्याअवमोरवेविसारिअवजागनोईनोवारे ॥ २२० ॥ पायनामरसस्वा
दअमलप्रमादवसलालचकेलिएजोनछोडेसोननरहै ॥ कौवाकोकहैंवातेनीचकरसातसवजंतजगवीचस्वानसूकरओरख
रहै ॥ पांचोमहापापीसोनसमतासमाहिंताहिजानेप्रेयश्विनउनहतलघुतरहै ॥ मुक्तानहोयऐसेअधममलीननीचपुगल
अनन्यजातेरोषनकोसरहै ॥ २२१ ॥ नामनेहहीननानानिपटनिकामहै ॥ महामत्युमातुपितुभानुसुतकोसिमवंधुविष
रूपकूपअरमृतगर्भमहै ॥ प्रगा. पिसेचिनीसमानवामहामप्रियऔरजेतेनहीरहकालकेगलामहै ॥ काहूसेंनप्रीतिरीतिजोरिराज
नममरिआनिकेविमुखआपवपुतुच्छचामहै ॥ पुगलअनन्यमेरोप्रेमनामनेनहीसंगनामनेहहीननानानिपटनिकामहै ॥ २२२
रटनहीनामसोविप्रोप्रकुलकोटिद्वेषकरतकलंकीसांचमानिएसुवनहै ॥ ताकेपूर्वजजेतेपरेविललातनेतेरतेअसीपत्र
आदिनरकअचैनहै ॥ पिंडदानदेतहूपैलेतनअधीननरवीचहीमदूतभक्तखातदुखदैनहै ॥ छोटोसोसुकृतकिएकोनीभां
तिमहाअघनासिहैविचारिआनिहोतोसुनैनहै ॥ २२३ ॥ जौसुखलोकउभैचहिएतोसनेहसजीहसेनामउचारो ॥

रो

॥नामनेह०॥

पावनप्रीतिलहेपरेतनपरआपनतरोऔहूजारनतारो॥ वादविवादवहायविषयमुखमादनहीभलीभांतिविचारो॥ प्रगमअन
न्यसुधानिधित्यागिकेकाहेकोपीजिकूपजखारो॥ २२४॥ सीतलगेतनुसीउचरेउनहिनेहकोलेशकौपिहिएमें॥ प्रानपप्रा
नमपोतेहिकोततकाललह्योसियधामतिएमें॥ जोगतियोगविरागविवेकउपायअनेकसटेककिएमें॥ प्रगमअनन्यमिले
अनयाससनेहविनासियनामलिएमें॥ २२५॥ लीजिएसवादनामऔरसछोडिके॥ मनतनवचनलगायकेअखंडने
हरटनमेंमगनतीनतापनारतोडिके॥ विविधिविकारव्यवहारवादनादनितआपनेसुचिन्ततेवहायदीजेकोडिके॥ रहिएप्रेम
खनसघनलतानेरविअखिलजहानसेहमेशमुखमोडिके॥ प्रगलअनन्यरिवाऔसरविचित्रमीतलीजिएसवादनाम
औररसछोडिके॥ २२६॥ नामहीकोरटतविताइएउमरको॥ नानामतवादभेदविषमविषादवहुंचकनस्वादनातेका
मनसमरको॥ होयकेएकांतभ्रांतरहितसहितसुचितसंयमसजायखूवकसिएकमरको॥ प्रीतिपरतीतिनामनिवेहनिदानतक
काजकोनकिएतनअजरअमरको॥ प्रगलअनन्यसवसंतनसुमतसुभनामहीकोरटतविताइएउमरको॥ २२७॥ नाम
केभयेमडरनिकरनिकारिए॥ होयकेअसंकरंकगतिकोविहायवेगपावनपुनीतपरप्रेमसेपुकारिए॥ सहईअधीनगुरुसंतपद

लीनरहेकहेनहीकछूकटुवचननकारिए॥ वैठिएनभक्तिजगाजीवजगजालीसंगकाढिनकुरंगगरंगभंगसुविकारिए॥ प्रगा

॥श्रीराम॥ लअनन्यप्रहलादजूकीकथासुनिनामकेभरोसेडरनिकरनिकारिए॥ २२८॥ श्रीप्रहलादविभीषनश्रीध्रुवभीषमआदि

भएसहदेजेते॥ नारदनेहनिकेतमहाशिवऔरहुसंतसुनामहिलेते॥ नामहीकेगुनगायभलीविधिकाममहादिककेसिरदेते

प्रगटअनन्यप्रपन्नभयेनिजनामरतेतेतरखलकेते॥ २२९॥ जानकीजीवनजीकोसोईप्रानप्रीयहै॥ जाकेनहीआसविस्वा

सअभिलासलोकरंचनाहूचतराकनामसीयपीयहै॥ देहगुजरानजैसेतैसेकैरमानविनखानपानमरसमोहातनहिहीयहै

वेसरूपधामअभिरामगुनगावैसदापरेमनभक्तिकहूंकहापिविनतीयहै॥ प्रगलअनन्यमोसेखलनकोकोनगनैजानकीजीव

नजीकोसोईप्रानप्रीयहै॥ २३०॥ वेदअभूतनामरहतनहानवीचतऊनरनीचजमधामजातचावसें॥ गहोमनमांझभोर

सांझद्वषसंगगांसतांतपरफांसनानिकामविनाभावसें॥ संतरसर्वज्ञनामनेनहीउपदेशावरवचनविचित्रनोनस्गोगहनद्वार ॥नामनेम॰॥

सें॥ प्रगलअनन्यप्रतपानकीप्रपंचीपरपहिरेहमेअरकनीचफिरेरावसें॥ २३१॥ नामहीकेआसरेनचाहरिद्धिसिद्धि

को॥ सांचाकहींवानीसुखमानीमतिमानीनामकलितकहानीनहीरवाहिसमसिद्धिको॥ हांतौअतिमानअन्नपरनामसर्वज्ञसोई

वहनमवैठिवदेवचनसुसिद्धिको॥

उचितननामेनहव्यामेमैमगनहोयऔरचीनचाहहुहरीतिगुनगिद्धिको॥ युगलअनन्यसुखसकलसुलभनितनामहींकेआ
॥११८॥ सेरनचाहरिद्धिसिद्धिको॥ २२२॥ संतनसमीपजायपूछोनामतत्वको॥ प्रथमउपाधिलोकलाजसुखमायतजिमनिके
विरागसुद्धसाधिसुचिमत्वको॥ हायकेउदासअभिलासनाममध्यकरिखराधनधामछलछोडिममत्वको॥ संगतिविशेषत्पा
गिरीजियविरोधीमानिकहतजोज्ञाननामरहितएकत्वको॥ युगलअनन्यतनमनधनसौंपिगुनिसंतनसमीपजायपूछोनाम
तत्वको॥ २२३॥ नामकीरहस्यअतिगोपहूंतेगोपहै॥ प्रगटदेखातसोतोपावनपवितहतु वटजावैजानेवकीआगेआग
चोपहै॥ अमलअनूपअर्थअकथसमर्थशिवशेषशुकजानेऔनजीत्याकामकोपहै॥ मिलैसुखरामसंतकरनानिकेतनव
लेगलागवागहोयजायलोभलोपहै॥ युगलअनन्यमोसेमंदनानिहारियकेनामकीरहस्यअतिगोपैसेगोपहै॥ २२४॥ हैं
धरिहैंतेअतितुच्छलेगमोहिमाधनआनप्रपंचपसारो॥ नरीहूनेहलेसनिजनाममेंमीतमनोरथमारहजारो॥ सरितें हैं॥११८॥
वचिहैंरटिनामहींभर्मअधर्मअकर्मनधारो॥ युगमअनन्यहुजोरिहूहोउहैथोरहींरोजकेवीचमधारो॥ २२५॥ कीजिए
नाममेनेहिनकोसंगपीजिएनामपियूखपरायन॥ मीजिएरोमहींरोमछटाछकिनामअनूपछटाछविछायन॥ मीजिएमान

॥श्रीराम॥

मदादिमहामलमूलकुमूलअमूलमलायन॥ युग्मअनन्यपतीजिएप्रीतिप्रमारहूँतेनकभीतिप्रमायन॥९९६॥छाय
नटसरजूवहायभववासननिगायगरवीलेगुनअवधधनशोको॥पायपटपावनपरेशोंप्रेमभायभायघायद्धामवामविषवि
षमविरहशोके॥लायलरभंगसमध्यानमुखखाननामरटनउमंगउमगायवरहशोको॥युगलअनन्यपीयहठघरखोफस
नसंतगुरुआरनसमारएऑरहशोको॥९९७॥मिथ्याततनतीनधनधामधरनीहूँमिथ्यासकलसमाजसाजराजमिथ्यामानेरे।
लोकओकमोहमिथ्यावासनावडाईमिथ्याजीवनजहानमिथ्याभलीभाँतिजानेरे॥कहाँनौकहानीमिथ्याचोजचतुराईमिथ्या
नर्कस्वर्गवासमिथ्याअखिलपछानेरे॥युगलअनन्यप्यारप्रेमनामरूपसत्यसंतगुरुसोंचओंमिथ्याहींप्रमानेरे॥९९८॥
निजशोकसमूहनिवारनहेतुरहीकोउकालहीमेंबुधता॥कछुकालगएसोउमीतमई।विषयादिककारनकाम्यमता॥छिति
नायकधर्मविहीनसबैकलिकैवसुधाअधवीचगता॥जियप्रयुग्मअनन्यसमायनहींहियहायअमानअनीतरता॥९९९॥ ॥नाममनै०॥
नाममहामहिपालउदारसिरोमनिनेहसजावसयाने॥कामकुतूहलहकालकरालविलोकिएचित्तमेंबढ़वखाने दामअहा
ममोकामअरामअकामभएअनुरागप्रमाने॥युग्मअनन्यसुधामबसोसरसोहुलसोसबभाँतिविहाँन॥१०००॥ ॥

ज्ञानकीवस्तुभभावसचावसम्हारिएचित्तमेछोडिछलीमग॥ध्यानकीरीतिसुसंतगुरुसनवूझिएऐसोकसेमततजेठग
हानकीसंगतिभूलहूंकेनहिकीजिएजानिअसारसभीजग॥युग्मअनन्यसुप्रानकीरहसाहमेंसहींहैकरतव्यविनाभग
१००१॥भाँतिभाँतिजिकरफिकरकोहरनहारनामसुखसाररटिरंगसरसाइए॥प्रथमविसरववरवरनविनाइवीजचि
तवारवीजहीयमांझपरसाइए॥वारवारउरउमगाएअवलोकिदगदमकनिकेतनामवलिवलिजाइए॥युगल
अनन्यरूपअमलअनूपअंतरंगनामनिरखिहरखिहुलसाइए॥१००२॥दूजोविधिजकरामकरनेहगेहगुनहिलेत
उठायनाममहामोदमानिए॥रसनाममानप्रानप्रगटनिकटकोरिपरिहरिआलसउपासनासुठानिए॥तीजोनामजुत
गुरुकरुनानिधानध्यानकीजिएसनेहमेंसमेतरुचितानिए॥युगलअनन्यचौथोअगुनअनूपरूपअंदहरूनवाह
वनिखिलजगजानिए॥१००३॥तुरियाजिकरवीचमीचसेंरहितब्रह्मअचलअखंडज्योतिअप्रगनगरेखना॥चौदहूंभुव
नवीचनूरभरिपूरलखिभेदभावविलगास्वरूपसुखपेखना॥पांचवोंजिकरमांझभोरसांझस्वाससनरटनउसांससांससा
दसाधलेखना॥युगलअनन्यनामऊरधअरधव्यापपायेप्रेमपरमप्रसन्नतापेखना॥१००४॥स्वासमंदवंदकरिसुरति

अचलधरिखवलधेरमानामपरमेशजापिय ॥ दूसामदुवारदुतिहारछविहाररूपलायकेलगनलोकशोकहूनधापिय
॥श्रीराम॥ इष्टअनुरागसेंसमाहितजोनजननितपायोअनायासप्रेमपदसदूछापिय ॥ युगलअनन्यनामनिरतसनेहीशोकजोन
होकरहितविशेषनहिनापिय ॥ १००५ ॥ छठपोंजिकरवतिवलितललितलायतनमनगनविसरायनामरंगना ॥ सात
वेंसुरेशमेंरामरगारगाध्यानध्येयनामसुमिरनलोकवेदहूंकोसंगना ॥ आठवोंरहस्यवीचइष्टकेसमीपवसिसुद्धरूप
सहितसुनामजापजंगना ॥ युगलअनन्यस्वच्छसात्विकअखंडभावनामनेहलीनपीनविगतकुरंगना ॥ १००६ ॥
नवमअनूपरूपवृत्तविचित्रवित्तअगजगशब्दनाममिलितसुधावना ॥ बोलकोउजनधुननामकोश्रवनना
मभानउत्तमेशरतिरटनसमावना ॥ एकरकवीचकीचमीचविनसातशंकरकहूंनतातकरामातनामछावना ॥ युग
लअनन्यरकरसअभिलासआसखाससदूवाससजिसुपलसोहावना ॥ १००७ ॥ रूपनाममधुरमिलायलायला
गवागअमलअदागभागभृतिवरवनवर ॥ छैलछविछांहछत्रभालअवलोकिनिजउज्वलउमंगरंगअंगअनु ॥नामने०॥
छनतर ॥ युगलसुचारुचितवनिचिंतामनिहेरिहिरसहिरायपायेप्रेमपरमितपर ॥ युगलअनन्यअभ्रआसरोअसतेपरिव
देखिदिलदृगइष्टचरितसनेहसर ॥ १००८ ॥

॥श्रीराम॥

॥२२०॥

नामसत्तसंगसारअपरअकारभारधारजारमारभेरअसरअगारहै॥प्रगटपुकारकेकहतकमनीयकल्पकल्पजौनजननिराधा
रनअधारहै॥वामविधिअविधिविकल्पदुचिताईहरनामेमेरमतदुरिजातनाहीवारहै॥पुगलअनन्यप्रीतिप्यारप्रतिकाश
करकारनकरंवकारुनीकहीयहारहै॥१००९॥ऊनअधिकारदूनेहेरविरहिताकरज्वरअपहरतैंभावचावचित॥चंदपू
न्नसहसमसमानस्वच्छमानकूलकोमुदीकलानसमुदितमनमाभ्रनित॥गुनागननचूनेवेचननेवेनमननामममहिमाअपारको
नकहेलहेपारमित॥पुगलअनन्यशिवेशषकमलजहरिचाहतहैमशएकतारबोधवीनवित॥१०१०॥राम नामभरमामत
सिंधुमेमीनभएजननजौनसुभागसोहाए॥दामदशाहिलधारिवहीहुलसेविलसेविकसेसरसाए॥स्यामस्वरूपसनेहसे
हागसौंपूरनजीवनमभ्ररिसाए॥पुगमअनन्यउरयउरउज्वलउछवउमंगसुरंगलसाए॥१०११॥आशाकीनामहींकीजि
नकेजियजानजवालजन्मसजहानी॥फासकीवामविनोदहंतजेतमपायप्रकासविलासवितानी॥नामकीकामकलोल
कुंवालविहायविलोलअमोलप्रमानी॥पुगमअनन्यउपासकीप्रीतिप्रतीतिपरत्वप्रभापहिचानी॥१०१२॥नागिनीजा
गिउठैअनयासमुनामप्रतापप्रकाशकोपाई॥रागिनीगायसुनायसभीरिझवावहीनागरीशोकसमाई॥कागनीहंसनी

भरत ३

श्री

॥२२०॥

होय़रहेनित्तनामसवारसनिहसमाई ॥ युग्मअनन्यवहीवडभागिनीनाय़िकाजौनेनेजौकजमाई ॥ १०१३ ॥ नाम
सुजापमेंखूवरमैंअलसायननेकहूंपौढिकेघाती ॥ कामकहंवकलेंककषायकौवैनसुवानसमानसंघाती ॥ चा
मकेकोटकोहैपरहाय़वहाय़विषयविषवूझिविजाती ॥ युग्मअनन्यसुनामनिवाससजेगुनग्रामहींगाय़सुजाती ॥
१०१४ ॥ नामनेहनित्यनिर्व्यलीकनिर्विकारनादविन्दुनिराकारकोनिधाननीमहीनहै ॥ नानामतनिखिलसुवा
रूसुचिसाकसतसाहेवसुनामअभिरामऔरहीनहै ॥ नातानकेएकवरविसरविवेकएकनामहींसेउचितहेमे
शास्त्रविहीनहै ॥ युगलअनन्यनाकनाजकसुवूझिवस्तुउदयउरहोइहैअवस्यप्रेमपीनहै ॥ १०१५ ॥ देवको
अमललोकलोकनअलोलखोलहेरिएसमच्छअच्छस्वच्छससम्हारिके ॥ गैवसाउवातघातरूपरंगजातपांत
पांचसातहीनहीनईशताविचारिके ॥ सैवसौरिशाक्तगानपत्यविष्णुभक्तहूंपैप्रवलपुकौंधारताहीकोनिहारिके ॥
युगलअनन्यनेवमिटेरामनामगुनरटनविहीनरोगदेख्यानिरधारिके ॥ १०१६ ॥ खाहिसखलकव्रह्नलोककेत
लवकदुखरूपमुतलकमुदसुदनीनहेचहे ॥ फाहिसफलकगरदिसअभैंकेदतआखरीकलकपांचप्रतनकोपंचहे ॥

जाहिसमलकजहांलोगनपलकलखिलोपनललकसामअलकसुभैचैहै॥ युगलअनन्यनतवाहिससलकतितचम
कचलकनामरटतउरेचैहै॥१०१७॥खीनख्यारखहखलखललखरावआवहीनहीनछीनआवरहितअगोरहै॥
हायकायमानुषविचित्रचिंतामनिपायखोनहीनामसर्वेशसिरमोरहै॥ नाममुदमोदधाममहाराजविनाऔर
आसअभिलासजोनकरैतौनबौरहै॥ युगलअनन्यकलीकालकोगुलामसोईअधमअलज्जनहीपावैकहूकोर
है॥१०१८॥रसनासैंरटतरटतरससिंधुनामहोतजातअमलनिसोतपरमेशाको॥ वसनाचलतफेरअंतकाहिद्वारमेंर
करतसमूहदुखहरनहीलेशाको॥ हंसनाजहानध्यानखानपानहानसवसवसमअसमउपासनाकुदेशाको॥ यु
गलअनन्यकसनाहीकोवियोगरोगनासननिभिन्नचिन्तचाहिवरवेशाको॥१०१९॥नामहीकैरकंजमंजुमधि
मेरोमनमधुरविकान्योजगजोरजालजोहिके॥ कामवामविषमभुलान्योअलसान्योहिलमिलिकैमहेशामनमो
हनसुमोहिके॥ आमअभिलाषखामकैहरकलामशामसुवहूविरामभयोआपहींनिचोहिके॥ युगलअनन्यगाम
अमलअजामवीचपायोप्रियखासवासभावनासमोहिके॥१०२०॥श्रीरघुनायकनामकेअंतरराजतजीवहुब्रह्महमेस

॥श्रीराम॥

हीतजिकेलखिएअखिएरससारसवादसुमीठअमेस॥औरसभीमततुच्छहलाहलकेसमतीतआनीतअनेसे॥
पुरमअनमालग्योहिललागानछहीहैनामसुरंगअवेस॥१०२१॥रफपरंब्रह्मरूपकारनसुतेजब्रह्मअगनअनी
हानिरअछरसुजानवी॥महामोहमोहनमकारहलअंसहीसैंसंभवनिरविलछरसुहदपछानवी॥अमलअ
कारतीनलेशअंसजायमानआनमविचित्रसोईअछरप्रमानवी॥पुगालअनन्यरामस्यामसतचितघनद्विभु
जस्वरूपसर्वोपरवखानवी॥१०२२॥चाहिएसनेहसत्यसंतसन्वंधसंगनाममहाराजमेंकृपालताविशेषहै॥दाहि
एनआनकोकहापिहीपपीयेगहवूभिकेविचित्रबोधविन्नशिवशेषहै॥वाहिएविकारभारमारमदमोहको
हसपनेहूंमांभूमतेपरेवोजगाढेषहै॥पुगालअनन्यअवगाहिएसुनामसिंधुपैठिकेसुमध्यवध्यताणिएअसेष
है॥१०२३॥अंतररटतजोनरामनामअभिरामतोनजनजीवनमुकुतिदरुधारिहूं॥उदितनहोत्तप्रमलछ्छ
नोविचित्रचित्तज्ञानकीजीवनकेनिकरनाहीप्यारहूं॥जेपेजोसनेहीजीभमध्यमनलायेप्रेमसोंतोपदपावन
प्रतछ्मलखेप्यारहूं॥पुगालअनन्यतातेयुगलप्रधानजानवाहविनसायरागरागिन्य विहारहूं॥१०२४॥॥

॥नामने०॥

जैसेजलवीचतपकरतच्यवनमुनिनाममध्यमगननतनसुधिलायोहै ॥ झखबंधनिरतकुजातिजालडारताहिकाटिमीन
संगतउरंगझलकायोहै ॥ भूपवरआयपरिपायअपराधसबछमाहूंकरायतउमोहनहीपायोहै ॥ पुगालअनमसतनामके
प्रतापतापकोटिनमिटततातेनामअपनायोहै ॥ १०२५ ॥ सर्वेश्रमुनिधुनिध्यानज्ञाननामलीनआठहूंपहरप्रेमपीनहीनेख
टहिल ॥ रैंटसतनामअभिरामबनवीचबसिरसिरसागरकतरकजगालगिल ॥ रैवतारिधीशसतसंगकैआयनितसुरपारि
सायपविपैरउमध्यरह्योहिल ॥ पुगालअनन्यतपीएकसतसंगकियोमहिमासुनामहरसायोपरतछकिल ॥ १०२६ ॥
नामपरमेश्रसुखधामकेप्रतापहीतेमहामदमगीहूंकेबांमीकालफंदते ॥ ध्रुवप्रल्हादगीधगनिकागजेश्रगीतविदितपु
नीतनामप्रबलसुछंदते ॥ कलिहूंकेमाझश्रीकबीररैदाससेसेनसदनादिपायोपरतसप्रेमकंदते ॥ पुगालअनन्यअवि
लंबखंभनामनेहगाडिएसुविननवीचअचलअमंदते ॥ १०२७ ॥ आठहूंपहरकलीकालकोकहरहेरिगहरनकीजिए
कहापिनामजापमें ॥ आठहूंलहरजगाजहरसहरनतेमालिकेमहरनितचाहिएप्रतापमें ॥ आठहूंकेवीचआससुछनी
प्रसिद्धपरपुगारनहोतविनायतनकलापमें ॥ पुगालअनन्यतातेनामहींसम्हारनितझौंकिअवहारभारमांझतीनतापमें ॥ १०२८ ॥

वपुष ध्या ह

वारवारमानुषैंनहिंहोतहायलायउरवीचनामप्राइएसनेहहेत॥ जैसेसुचिसँगामिनीकोनसिंगारफेरैंननप्राणप्रेक

॥श्रीराम॥ काताइसुहैहेत॥ फैलनहीकहलीकहापिएकवारफेरिलागतनपातनरमिलैपाजवरेवहेत॥ पुगलअनन्यतातेंचेतनासु

श्री विषैहायरेवाइएनजनमविकायग्यामोगाहेत॥१०२९॥ चिंतामनिपारसकलपतरुसुधासुचिजीवनसुमूरिसतसंमतनेपा

येके॥ आलसविवसजोनपलहूंवितावेसठहठकीरनाहकरखरावहायधायेके॥ संतशास्त्रसंहितापुरानवेदवोधवरसुमि

रिएनामरघुवंसमनिचायके॥ पुगलअनन्यकेसमाननअजानआनजानेहूंपैवाइवकिसोवतअचायके॥१०३०॥

नामहीकीआभाफेलिरहीसवदेशमें॥ शब्दब्रह्मजावतजहानवीचपेखातुमतावतअमलवोधनामसर्वेशमें॥ सूक्ष्म

मसुवटवीनसमलखोचखोरसअरसविहायवेंधाकाहूकेनवेशमें॥ रामनामहीकीकलाकलितअनूपअतिव्यापिरहीनि

न्तअविशेषशसविशेषमें॥ पुगलअनन्यआठनामअवलोकनिजनामहींकीआभाफेलिरहीसवदेशमें॥१०३१॥ ॥नामने०॥

नीचनापाकनिषिद्धनिराइरनिंदितनकेनिवासीनिहायत॥ कीचसमीचमरीचमहामतवारोमलीनमकीनहिमायत

हीककुलीकअपीककुछोकसोसांईसहासठसीमअतायत॥ पुगमअनन्यअसतयनेनेकहूंनामरूपपाविहीनरनायत॥१०३२

हरषहन्नारहिएहोतहाय़हीनमुनिहुकुमहनूरमहाराजरघुबंरके॥ विसहवजारहस्कवीचकत्ततामभोरहोहैांप
रममुहमंगलअमंहके॥ मंवरमरंहपारिपूरनमुरवारविंदहेखिहें अवसआजहिय़ाहिलफहके॥ ध्यालअनमउत्ता
हचिन्तधारिचाहचाहिलणनिवाहनितहितुआपसंहके॥ १०३३॥ सरीसुधासीसहीसजनीरजनीदिनदूनउमंगवढाई
धूरीवेनशाहूंकेधनसैंपरिपूरिलखीचखीरंगसवाई॥ मूरी जिवावनवारीहलाहलजानिमहामुहमंगलछाई॥ धुमस्अन
न्हुजरीनिहप्रेसस्वाहहमेशाहमेशरसाई॥ १०३४॥ नरकीआगसोंतासुभगविहारवागअमलअहाग़पामेलशाहूसक
क हे॥ करककेलेजेवीचहोतनारतींहूमांहिंउमहहवारहारप्यारसोंकशाकेहे॥ मरकहमारासोंताजीवनहजोरामीतलैकिक
कुरीतप्रीतपरप्रभशाकेहे॥ ध्यालअनन्यएकधरकरहेहआपतरकनकीजकमीकेशाहूंविपाकेहे॥ १०३५॥ अलपअसनमा
हिमांहिंप्रागनजानियो॥ आलसप्रमाहनींदवेहकीअधीनताईसंचकनेहायमहमोहाहिचानिये॥ सहानसन्स[illegible]प
र्थकालनविहानपराधीनतावरैंचाहमलिहूनआनियो॥ करननिवलमनमथहूंनसांतभिमिआसनअचलरागमोगदूरि
हानिये॥ ध्यालअनन्यसावधानसहारहोनितअलपअसनमांहिंहप्रागनजानिये॥ १०३६॥ गलीआपनीनित्त

॥श्रीराम॥

हौं सींचति हौं निज नैनन नीर सुगंध सें प्यारे ॥ मल्ली भावनी हो रहे कौन घड़ी जेहि औसर आइहौ स्याम हमारे ॥ कली को
मल्ली सी कुमिलाय लला विकसाइ रहै चांदनी चंद्र निहोरे ॥ अली हाय ये कहा कि हौं पौन पिपासु छवि भौंर कि हौं न हैं स राज
दुलारे ॥ १०३७ ॥ हाय आपहूं को हौं कहाय लोक वेद वीच सहत कलेश वश नीच अधम शात्रास ॥ कौन बात करौं मुख
मौन धारि रहौं राजरे नाहि न हाहा हू चिताई भीति भूप भास ॥ करुनानिधान कीनी कृपा कमनीय जो न तौ न भौन भावना
भेद श्याम भुलायो हास ॥ युगल अनन्य अपनाइये विलंब विना वार वार करत पुकार सिया राम पास ॥ १०३८ ॥ जीव जहा
न मम कहार जितें जाइ ईश्वर चेत्र अधकार कपापी ॥ सांची कहौं सत सम समत रयाइ गइ रिवि विचारि एत्रापी ॥ जानत हूं दु
खदाह हू सानु सें सो गुना पे रत हार चिचापी ॥ युगम अनन्य कृपाल हरो जग जाल न आन उपाय कहापी ॥ १०३९ ॥

॥नामनेo॥

चार संप्रदाय तामे मत हू प्रकार चारि करिके विचार सार चित्त बीच मानिए ॥ द्वैताद्वैत द्वैत सुद्धाद्वैत औ विसिष्टद्वैत तइन
मत अनेक भीन रह सप्रमानिए ॥ प्रकृति संबंध मांहि जीव तौ लौ द्वैत पुनि कहिए अद्वैत मुक्त सें द्वैताद्वैत जानिए ॥ जीव ई
श भेद दृढ अचल अभेद नहि द्वैत मत असत हरन अनुमानिए ॥ १०४० ॥ उध सुख सहज स्वरूप सविशेष ब्रह्म ताही को प्रकृत
जीव कौतुक समान है ॥

सुरतरुसदृसपदारथअनेकदेतरहेआपसुद्धयोहींसुद्धाद्वैतगानेहै॥कारनपेरमामेंवंशहीकोचिदचिदहेतताही
पुनयोविसिष्टाद्वैतमानेहै॥जुगलअनन्यप्रतिसमसमविवेकपावैगंथपंथअमितविवादहुबखानेहै॥१०४१॥पंचम
अद्वैतजीवब्रह्मकोनभेदलेशअविशेषनिराकारब्रह्मनतामगाईए॥यद्यपिअनेकमतमतनअसतपकोउऐपेए
कबातनोविचारेमेंसमाइए॥कलीकालकठिनकरालतामेलघुमतिरोगनग्रसिततनसबलाआयुपाइए॥जुगलअन
न्यप्रीतसारवधानहोयसदासवमतसारनामपैरनदिनध्याइए॥१०४२॥वेदबीचविदितविभागपांचधामनामक्षीर
सिंधुप्रथमरमानिकेतजानिए॥कारनप्रसिद्धसुवैकुंठमहानामीतिमिविरजाकेपारअविकारधाममानिए॥अवधअरुं
उअप्रकृतीयअसपांचथलअमलप्रसंसहंसवदंतप्रमानिए॥जुगलअनन्यरामरहसललामधामसमतानआवलोक
मूलिहूदैआनिए॥१०४३॥जौनधाममनमतिशब्दहूंसेंपारविधिहरिहरध्येयगेयआगमअपारहैहै॥ताहीकोसु
नामकोशालाअवधब्रह्मलोकअमरअलोकविमलाअचिंत्यवाहहै॥सुखदाकोनिकेतनिमिसुभगसाकेतअपराजि
ताअनूपअतिअमलअवाहहै॥जुगलअनन्यऔरलोकगननौनसवतानपरधामजानतिमितेमथ्यराहहै॥१०४४॥

॥श्रीराम॥

उरधअरधओरभूमिजोअवधतामरंचकनभदखदसाहितविचारिए॥सुलभसुगनधारिप्रगटैरवातदगपावनक
रनहितरितथीपधारिए॥महाभावप्रेमउदयपेहोतहैंप्रतस्सहोनसतचित्तमोदजैसोध्यानमेंमनिहारिए॥युगलअनन्यद
आसविस्वासमसजिरहेदेहमभ्यिअंतअमरविचारिए॥१०४५॥परमप्रमोदरूपपरमप्रमोदकरपरमप्रकाशपरधामपति
परखिए॥परमपुरुषपरधानसुखखानजियजानप्रानहूकौप्राननीकीभांतिलेलखिए॥प्रगटपरावरेशपावनप्रतापप्रेमपराधी
नआपतापहरनपरेखिए॥युगलअननन्यअवधेशसेअपरपरजैनजनहुकेहेताकोमुखनहीपेखिए॥१०४६॥पवनसु
वनसिवशेषसुकव्यासवाल्मीकमुनिमहाराजकुंभजाहिजैनहैं॥चिरंजीवलोमसभुसुंडिमार्कंडमुनिनिखिल
अनीशईशकूनहतत्वतौनहै॥विमलशाचरितअनंतरसवंतजसवंततनहिकह्योअैसोकहिएजूकौनहै॥युगलअनन्य
जानकीप्रागुणगावैसबगाइएविनानरखरउडेविनापोनहै॥१४७॥ १०४७ महावाक्यद्वारप्राप्रसिध्धजेवरहिवेदविदुख
विचित्रतामेंअर्थअतिचित्रहै॥रुच्यअनकूलमएविनाप्रतिकूलमूलशूलनामिटतयोअभेरताप्रावत्रहै॥चित्राचि
रदेहरामसुखधामवेदकेहैंअर्थमोसमर्थयामेंप्रगटनमित्रहै॥युगलअनन्यअद्वितीयअवधेशनित्यनवलकिशोरपरकाशकसचित्रहै॥

॥नामनेव॥

१०५२

[redacted]

वहतअनामअभिरामरामजोनश्रुतितेसहीं अरूपतनरहितविचारहीं॥ अद्वितीयअकलनिरीहनिर्गुननिरकेतनि
रैवबआदिपरअवधारहीं॥ ताकेअर्थबोधबिनवहकतवहकतमैंरमतिअगतिलहतसबभांतिनिअपारहीं॥ धाल
अनन्यउपबृंहनपुराननकेमध्यश्रुतिअर्थभलीभांतिनिरधारहीं॥१०४९॥ अमलअनंतअविछिन्नअप्रसिद्धवाग
जनितउचारनअनामतातेनामहै॥ पंचभूतप्रकृतिविकारतेरहितरूपयाहीतेंअरूपवरवरनतस्यामहै॥ सुद्धसतचित
घनमोदसुविनोदतनदगुनरहितअनवद्यअभिरामहै॥ धालअनन्यभेदलेहसतगुरुसनतवभ्रमभवननवसवि
श्रामहै॥१०५०॥ समनअधिककोईकारनअखिलतातेअद्वैपदरसदश्रुतिसतमतहै॥ मायाकलहीनपीनप्रेमप
राधीनलीनललितछबीनतातेअकलभजतहै॥ प्राकृतविगतचितचेष्टहूंतेंछतमअसमरहितजोअनीहअविगतहै॥
दिव्यगुनअमितसमेततेंसगुनतीनगुनतेंरहिततातेंअगुनरमतहै॥१०५१॥ परमेशासमतमपारअरचितनित्यनवलनि
केततानिकहतअकेतहै॥ निराकारकेवलसुतेजतनअंगमिजअनभवगम्यज्ञानगुननसमेतहै॥ प्रगटप्रकासी
गी

चि

॥श्रीराम॥

धामअवधनिवासीअविनासीरसरासीसर्वेशानकोहेतहै॥जुगलअनन्यअवधेशरामनामरसरहितविचारसुसार
स्वच्छसेवतहै॥१०५२॥आसअगाधसुसाधनकोकविकोविस्वेस्वरअथाहबतायो॥श्रीमुखआपप्रसंसतनित्तहींधारत
पायसुरनुरमायो॥शांतनितांतसमत्वदशाद्दढरागअरूढवनहीमनलायो॥जुगमअनन्यनमेपरपंकजरीजिएध्यानसु
नामसोहायो॥१०५३॥रामनामअमलसमाननअमलअनसमलजहानमोंक्षिअमलप्रमानियो॥औरजेतेमारव
रहतेतेनामएकहोयच्चारआठनकअवधसुजानियो॥उमापतिप्रानसर्वसयुगावरनेशासततसुमिसाहगहिलेमनि
सानियो॥जुगलअनन्यतातेयाहीमरमांझभोरसांझरहेमगननऔरचाहआनियो॥१०५४॥रामनामअमलनि
साहीवरवीचशिवशंकरहलाहलपच्चायोअनायासहीं॥तैसेहीपरमप्रेमनिधीप्रहलादधीरवासुकीकोविपतिप
पच्चयोप्रकासहीं॥वैसेहींकवीरगुनगहरगंभीरतीरआदिकनखमनहीनाम्योरंचभासहीं॥जुगलअनन्यनाम ॥नामने०॥
महामरमस्तभयफोरनउपाधिव्याधिआधिकोऊपासहीं॥१०५५॥महामनमदमेरोमातिकविसासिवैनविषमवि
हारवीचवढेसोविश्वासहै॥कहाकहोकरुनानिधानसेंविपनिनिमज्जतनतहमेश्रामोसेंवारवारदेषहै॥ ॥ ॥

जहाँजाउँतहाँसंगछाँडतनप्रेतपाँचप्रबलप्रपंचआँचदाहतअशेषहै॥युगलअनन्यअतिव्याकुलरसालआपकीजि
यसहायरह्योअयषहूँसेषहै॥१०५६॥नामकेप्रतापहीसैंपाहनकठोरगिरिगरुतासनतारएतउतरेसिंधुसुनीमैं॥नाम
केप्रभावहीसैंमहावीरपौनपूतभएगायकूदिपारावारगगनगनीमैं॥नामकेप्रकाशहीसैंमिट्यातमतामगमअसमत्र
रमजिततितसीनहुनीमैं॥युगलअनन्यहायहिरसनहूँनामभयाहीसेसरैबवारवारश्रीशधुनीमैं॥१०५७॥तारिए
नामकृपालहेमअबखेरअनेनकउमयोजहानी॥भरिभैरोमहारिपुमारकमारमनादिमहादुखदानी॥हारिएआ
पनहींइनसैंप्रभुतापरुआपनीछापपुरानी॥युगलअनन्यउधारिएवेगिविलंबलगाएककलंककहानी॥१०५८॥कौन
उपायकरौंकरुनाकरचित्तचलेनकहूँओंहिभाँती॥पावतहैंपलपावमेरेकहूअपारसुनेमरमोहकीपाँती॥पैठतहाय
केवीचरस्याकरिकाटतजोरसैंजीवनीआती॥युगलअनन्यनचैननपरैरतिलहायहैमप्रावेटहिनराती॥१०५९॥
वेलिनहीकछुवैनकहाचितकोटिनकायकलेसहूँपाये॥खेलिप्रेमाईहूँसेनहियगतिप्रीतिप्रतीतिमहामानिध्याए॥डोल
नधामविहायकहूँपगपावहलाहलरूपगनाए॥युगलअनन्यअमोलवहीश्रुतिसंहितासारस्वरूपजनाए॥१०६०॥

॥ श्रीराम ॥

वातवनायेनमोरप्रेमोरअमोरअनोकनहानकदाचित ॥ सरसतीसुचिसंतसोहावनमामसहापुरुषारथसा
वित ॥ वेदपुरानकुरानकितावहजारनग्रंथपढ्यौचितआंचित ॥ प्रेमअनन्यनमौजमेरविनपारथसतास्वरूपअ
यांचित ॥ १०६१ ॥ वारोवेदसंहितापुरानतंत्रशास्त्रसंङ्न्यनसुमारअर्थसिद्धनामरूपही ॥ कीजिएविचारफेरअ
परअसारकारभारकेसमानसंतरशिाकोनिरूपहीं ॥ औरमनमूढकूटघटनालखतभेदखेदकौनभांतिविनसायताअ
धपही ॥ युगलअनन्यसबद्धसंगप्रेमसहारासतअसतहरनहारहोतभावमपही ॥ १०६२ ॥ जानकीनायकलायक
हैसरनागतपालिवेहतुहमेशो ॥ गिद्धगयंदगवासगंवारकिरातेहूंअपनाएविशेशो ॥ बानररिच्छमलीनमहाकपु
केवटकानिवटायसुवेशो ॥ प्रेमअनन्यविहायविकारअसारजहानभजोअवधेशो ॥ १०६३ ॥ आपनीवोरविलो
किविभववरकोटिनजीवअजीवहिदीनो ॥ मानतश्रीअवधेशकुमारकिएयकवारप्रनामप्रवीनो ॥ ऐसेहूंस्या ॥ नामने० ॥
मीसिसाजसनेहसज्योनहिजोनमहामतिहीनो ॥ प्रेमअनन्यअनेकनपोनिभ्रमसठसोसतसंकभीनो ॥ १०६४
१ कृसाथ जानकीनाथसनेहसजेसुधरेदोउलोकविचारो ॥ मानवदेवकुसेवविहायकेश्रीनतपालकृपालनिहारो ॥ ॥

॥श्रीराम॥

॥२२७॥

लिप्रो

नाह कहीं शाक धारि मन हौं प्रभु ते रो सु वाक प्रकारो ॥ प्रगम अनन्य अपास विना भव पार परो वहु विस्व उधारो ॥ १०६५
श्रीसरजू तट मैं वर वास वनाय सिया रघुवीर अलापो ॥ ध्याय भली विधि पद पंकज लंक कल्यान मल्लानन व्यापो ॥ रेखि
ऐरह सुख हस मानद कान जहान पसारत कांपो ॥ प्रगम अनन्य अशोषन फा निज नाम सुजाप जपात जितापो ॥ १०६६
पंडित स्वच्छ भाई सव भांति एकांति कै जान न जे पर रघुनायक ॥ मंडित हिव्य सुभव्य गुनाकर छोडि छ लीन कु संग अलायक
काहू सें वाद विवाद न होहि न राति छ के छ विस्पाम सहाय क ॥ प्रगम अनन्य जहान कहे येवि चारि समर्थ स भी गुन गायक
१०६७ ॥ राग अराग उभय पअनुकूल अशल निदान न जो धाम मही सेवे ॥ भाग अहाग अनूप उहय उरउज्वल ताप सव हीवि
धि लेवे ॥ पांचहू मुक्ति सुभक्ति पराधित चाहति न्हे सव भांति ही देवे ॥ प्रगम अनन्य सुजान पनो हर सा वनो पाप समान सुछे
वे ॥ १०६८ ॥ ज्ञान गटे नित हीं अभिमान सुमेर गिरि प्रचंड स्वच्छ लज्ञानी ॥ लोक हू वेद की कानि न हीं स दंपथ विगारि वे हुख
खानी ॥ जानकीनाथ अनाथ सहाय के के गुन हिव्य सनेह निशानी ॥ प्रगम अनन्य अजान न की मति मानि रही विषवाद वि
तानी ॥ १०६९ ॥ काहू सें हांस विलास न हीं कारि एपि पपा चे नेह तु उदासी ॥ रोवत हौं रहि एहर साय न आरु हसे भेत सनेह उधासी ॥

॥२२७॥

॥ श्रीराम ॥

चातुरता चल लोक रिझावन छांडिए प्रीतम मे प्रम पिपासी ॥ युग्म अनन्य अजान बने न परपार है जानकी जान सुपासी ॥ ७०
चौदहं लोक विभूति वृथा बिन स्याम सुजान मिलाप प्रमानी ॥ कारज कौन कदंप पयकी छवि माधुरी हीन कलंक अयानी
गर्क रहो उत हीं सजनी रजनी दिन गाइए इस्क कहानी ॥ युग्म अनन्य नहीं चरचा तिलचा लिए कैसे हूं जाय जहानी ॥
१०७१ ॥ आंमुए परम मुक्ति सही उपखान वयान सुजान विचारो ॥ जैती विचार मई दुर्वासना चो विसतत्व अतत्व निका
कारो ॥ नाम सुधाम सनेह सजो विविवैन विनोद विहार विसारो ॥ युग्म अनन्य विवेकिन के मत मांझ बुझाइ वे हेतु इशा
रो ॥ १०७२ ॥ जागिए जो न जमी न धिया धरि रागिए राग अदाग विहारी ॥ पागिए प्रीतम नाम पियूष अनेक न भष निवा
रनहारी ॥ त्यागिए कायक लेश सभी मन मारिए प्रीति प्रतीति प्रचारी ॥ युग्म अनन्य सुनाम रमे सुख सो गन आठहूं जाम
वहारी ॥ १०७३ ॥ सुंदर श्री सियराम सुनाम सनेह समेत उचारिए प्यारे ॥ कोटि पुरंदर भूमि विलास हरास उदास
विचारिए सारे ॥ वैठिक हूं गिरि कंदर श्री सरजू तर तीर हमेश सवारे ॥ युग्म अनन्य भगंधर दारु न दाह हुरे पलवी
वअपारे ॥ १०७४ ॥ मौन हूं गौन अपार न पौन विचार तवौ न समान विनाशक ॥ प्रीतम भौन सुनाम रमे विन साधन पुंज

मुठ्ठेजविनाहक ॥

श्री सरस्वती पुस्तक भण्डार
श्री [illegible]
अयोध्या

नामकृपालउदारप्रतीतिउमंगलिएप्रेममोदत्तहांतक॥ युगमअनन्यसुधीसमुझेंसतसा।सोहाथकनैवेनमोवा
रक॥१०७५॥ नाममेवायवेहरमनावरवापविकापकलीकरसोई॥ श्रीरघुवीरपरत्वप्रकाशकहोयकहांव
हुवाएनजोई॥ अंकअशोककलंकनिवारनमंत्रमनोहरहीयपरोई॥ युगमअनन्यलिखवरनाधिपपंथउभयवि
सरायविगोई॥१०७६॥ कारनकारजभांतिद्विधासवसृष्टिनिहारिएनैनसिमेटी॥ ईशविभववलवल्लेशउभयउर
वीचविचारिएवासनमेटी॥ जानकीनाहपनाहप्रहायकनामपरावरनाथअमेटी॥ युगमअनन्यअनेकउपाधि
विहायसुनामरटारजलेटी॥१०७७॥ रैनमहामुदहैनसहीं चिंचैननिधानसुनामउचारत॥ मैनमदादिकलेशर
हैनहिंअनिवाससनेहगतआरत॥ जैनजमातसमानसभीमतमानिकेछोडिएलोककवाहत॥ युगमअनन्यरती
हूनहींसकआपहींनामसनेहनिवाहत॥१०७८॥ आलसत्रासउदासविहायकेनामअखंडसुजापजपेंगे॥ या
लिवेनविहायमलीविधिनाहवियोगसुतापतपेंगे॥ नालिसपामसमीपसजायवजायवजायनिसानसुभमिनपेंगे
युगमअनन्यअनालसहोयकेमोजनिकेतसुवासथपेंगे॥१०७९॥ श्रीप्रस्काररघुवाहिकगाथअनाथकरीहियधारि॥

सनाथ

स

॥१२८॥

छाडिहैंछांहछलीनमलीविधिवोडिहैंखरअनेकविकारी॥प्रीतिप्रतीतिसमायहिएहटनामभरोसअहाससंवारी
प्रेमअनन्यअदागअरागसुभागविशेषहीपाइहैंप्यारी॥१०२०॥श्रीसियरामप्रदायककामसुनाममहालिखिएप
टिएजू॥आठहूंजामअकामहदेनिजनामसुयंतरहींमटिएजू॥तीनहूंलोककोहामहरामनिकामविचारिमलेक
टिएजू॥प्रेमअनन्यसुरामगुलामकहायनहीखरपेचटिएजू॥१०२१॥गोंहरगोपहुंसैंतरगोपअमोलकचोपचटा
यनहारे॥रंगअजूवकेरपलहीपलताहिकेताहिकेरंगरंगछविचारे॥धन्यधनीगनपूजावहीवडभागीविवेकमनिहाय
विचारे॥प्रेमअनन्यसनेहविहीनविशेषहोऊघिसिमेंमुखकारे॥१०२२॥नामप्रतापपरत्वप्रकाशवसंतसही
रसवंतसनेहीहैजिनकेहियेनवहीसवतोरअधारअखंडनिरेही॥काहूसेंसंग[illegible]कुरंगनहीरसरंगनिधानसु
ध्यानसमेही॥प्रेमअनन्यजहानजलूसजलांजग्योजियजोतनवेही॥१०२३॥प्रीतमप्रेममनेमसुधारतनारतआनउप
पैपडारेंनैनहूंवैनमेंस्यामस्वहावनरूपअनूपमनामसुधारें॥चाहनहीतिलतुच्छविषयब्रह्मादिविभूतिपरागविचारें
प्रेमअनन्यपरेशउपासकलासकहायसमीपपधारें॥१०२४॥ज्ञानगरूरसमेतकुपूरुषप्रेमनिकेतसहेतनरायें वेदवेदांत

क
चित्रवारैंपरखेहखराबविषैरसचारैं ॥ जानकीजीवननामसुधापतिपूतविहायविवाहहीभारैं ॥ प्रेमअनन्यसुसंत
॥२२५॥ नकोसुचिसीषसुनैमतिमूरखमारैं ॥ १०२५ ॥ गायवजायकेलोकरिझावतपावैंदामगुलामनिसानी ॥ पायपियूषनभू
खविकातमांगतहैविषभीषनहानी ॥ जायसुजीवनजानविछोहसुतौमोहतसूषतनाहिकप्रानी ॥ प्रेमअनन्यअपाय
करैंवविभूतिसुमत्यश्रीसारंगपानी ॥ १०२६ ॥ रूपअनूपछजायछटाछविहीरगहायहिरायहजारो ॥ पीतपुनीतम
नीनजडेपटपेषिएनेहनिवाहनप्यारो ॥ स्यामसरोजसोहावननैनमहामुरहैनपेच्यापहीवारो ॥ प्रेमअनन्यखुली
जलैंमनमोहनिराखिएचखस्मकेतारो ॥ १०२७ ॥ स्याहसनेहसुशोकसजायजपोसियप्रीतमनामरंगीलो ॥ पाहन
महीविसरावाकभूतवरीझिहैंस्यामसनेहीछबीलो ॥ शाहसमतवसोयुगलोकमेंमवाहवितर्कविहायकसीलो ॥
प्रेमअनन्यसियावरकेतनुगाइयपाइयप्रेमअसीलो ॥ १०२८ ॥ आरतहोयपुकारतनामस्वरूपसुध्यानसजायनिहाय ॥२२५॥
त ॥ गारतगारगुनाहभलीविधिहोतगुनेशगुनेहरसापत ॥ तारततोमअसोमकृपाकरकोशलराजकिशोरसनायत ॥
प्रेमअनन्यप्रमानपुरानप्रधानकुरानहूंकीतिमिआपत ॥ १०२९ ॥ आलस्यआसकिएतस्त्रासमगवासमानमहांनहीजोहो ॥
स स

॥श्रीराम॥

होय़उद्दासविनासविलाससेंपेविविविषैमनमेमतिमोहे॥ लाय़ललामसुनामहिरामसुखमाभसदैवसहीसुखदेहो
युगमत्रअनन्सविकाशमहासरसीरुहवीचनहीअवरोहे॥१०२०॥ नामहींमातपितासुतवंधुसनेहीसगोसवभांति
हमारो॥ नामकेआसरेजीवनप्रानप्रमानवखानकहोप्रभुप्यारो॥ लाय़ककैहैंअघवाहैंअलाय़कतोभीतुम्हारोसदैव
सम्हारो॥ युगमत्रअनन्यविसारिवियोगनाश्रीरघुवीरनिजोरनिहारो॥१०२१॥ गाव़तहौंरहिहौंगुनराव़रेसीलसने
हसुहृदताप्यारी॥ देव़नराधिपलोकतिहूंमधिईशअनेकनयांचिहैंव़ारी॥ आपकोहोयजोहाय़हिय़ेगयोधोयोन
हींतोकृपाव्यभिचारी॥ युगमत्रअनन्यनछोडियमोहिजुनामकृपाहींकोवलभारी॥१०२४॥ राव़रीवानिविचित्र
विभव़वलक्षानीसुनीसतसंगसमीपमैं॥ वाव़रीहूंमतिमेरीलगीललचानेलोभानेदय़ाललतादीपमैं॥ पाव़रीपापव
य़ोनिधिवीचवुडानीपरंतुपडीसुखसीपमैं॥ युगमत्रअनन्यकृपालहमेअपनाएसेवगिविचारितदीपमैं॥१०२३॥ [illegible]
रामनामजापकजेनशासिरताजहैं॥ सदापूजनीय़वंदनीय़गननीयगुनअगनीय़माननीय़सोईमहाराजहैं॥
वडेवडेरिषमालभाविकपसंदप्रिय़प्रानेससहसगुनवाहीछविछाजहैं॥ जाहिजहानजरजरतमरततोकत्रातासवभांतिसे

॥श्रीराम॥

॥१३०॥

जुगल अनन्य में रेता रकार रहस्य निधि राम नाम जापक जे नेश सिरताज हैं॥ १०२४॥ नाम के उच्चारत हीं ऐसे अघ नासि हैं॥ जैसें सी
त भानु के किरननैं सूक मल अरु मारतंड तें जैसें न तम कहूं भासि है॥ जैसें राम राज्य में अखिल रोग सोग गत भली विद्या पायें जैसें मर
ता विनासि है॥ जैसें ताप प्रबल के गोला सें विनाश नरा निखिल नेहर घन पवन निकासि है॥ जुगल अनन्य आगला गे हारु केलि
मम नाम के उच्चारत हीं ऐसे अघ नासि है॥ १०२५॥ जैसें लोकरंजना किये सौहिं व्यसन हानि कामक दुकौतुक कलासें ध्यान
मान है॥ जैसें अपवाद निंदा करत सुकृत सुख लेश न रहत सत्य मानियो प्रमान है॥ जैसें सत संग औ कुसंग सें वियोग योग प्रीत
म पुनीत प्रीति रीति रसखान है॥ जुगल अनन्य ऐसे सहज हिलत नाम राम अभिराम मिटे मोह मलमान है॥ १०२६॥ जैसें रितु
पति में भरु च्छ ताप राग नाम ग्रीषम में सीत को न रहत विकार है॥ जैसें वर विमल वसंत में करील तरु हिम ऋतु आगमा पे
रव हूं न पार है॥ जैसें मान मागे अनुराग वाम कानि कुल वध्यत न लागे रवहार न को भार है॥ जुगल अनन्य ऐसे वारक व
हत नाम जात जमधाम अघ अखिल कुतार है॥ १०२७॥ यथा योग न एन वियोग सागर है नेकय के निहारत अनेकता ॥१३०॥
न भाव है॥ जैसें सुधासर सम वारि पाय एक वार कटु क कषाय को न रहे चित चाव है॥ जैसें महाराजन के निकट निबास करि
रंक तो कौ यासना विलाय जो लौ आव है॥

॥श्रीराम॥

युगलअनन्यउपमानसेंअसेस्यामगननामकेरतअघघोमेघघेनघावहै॥१०९८॥जैसेछितिव्योममाझअंतरलखाय
आतिजैसेसुरराजरंकभेदहरसातहै॥जैसेविज्ञअज्ञवीचस्वच्छजलकीचसुधामीचमेविभेदसवभांतिसरसातहै॥जै
सेदिव्यदेहगननगेहआमलीनतनसमताकहापिनहीकवहूंलखातहै॥युगलअनन्यऐसेसाधनसमूहसवमहाराजना
मकीनेतुल्यताविभातहै॥१०९९॥जगतविकासनविभासनप्रकासनहूंपालनसहितजेहिईशतविचारिए॥सवहीसुविस्व
गतअर्थज्ञानवानजोईसोस्वयंप्रकाशरसरासअनुमानिए॥वेदविनाखेदजोईप्रेस्योहैविरंचिउरजहांविज्ञसरिम
नमोहनपछानिए॥अचलअखंडरसएकमोदमईमूर्तियुगलअनन्यताहीमांझमतिमानिए॥११००॥तनमांहिजल
नीरमांझज्योंअनलजैसेभूमिकाकेमध्यदोउभांतिभिन्नभाखिए॥तैसेहींत्रिगुनमईरचनाअसतजामेंसत्तइकअपरहहै
हींमैंविचारिए॥धामश्रीअवधतातद्वारिकाएजीवनकोप्रवलसमलमोहतमअवधारिए॥मत्यपरहूंतेपरपरमप्रतापमा
नयुगलअनन्यसोईगह्वरनिहारिए॥११०१॥प्रेमपिलायप्रभावहरसायविलायकेकंजसुमंजुलहींको॥दोषदुरायसने ॥नामने०॥
हसजायवजायकेआपनेसोंकिएनीको॥जानजिवायमहातपहायहिरायकेदानअनपअमीको॥युगमअनन्यसोहाय

सदासतभावअनूपममैथिलीपीको॥११०२॥पगीप्यारिपसंदप्रसादसहीगहीगानगुमानप्रमानमही॥महीमानसमोदहस
मुंदसुभालहीनेहमहामनिमालवही॥वहीमोनमहानविमानेममीतसुचित्तचढायेकेहाहरही॥हरीदूधसेस्वच्छप्रत
च्छप्रभाहियपेहरिकेआपहिरायरही॥११०३॥अमितनखतदीपअनलसुदामसुतासहसउडप्राशुरसदसनहोतेर॥
अखिलजहानप्रजाजेरेवन्त्पेशासनवैभवविलाससमजोहियमनिशोतेर॥कोटिनपहारसमकोंचतऊचेंतामनिस
दसनस्वच्छताअमोलतासुजातेर॥युगलअनन्यअैसेमहाराजनामसमसाधनअसंख्यसिधताईनाउहोतेर॥११०४
जैसेप्रानहीनतनभूपतिरहितजनजैरसतसेनअनदुखहींकोहेतुर॥जैसेचंदचारनीवियोगमेंदेखातनिसिजैस
संतसंगविनुजीवनसकेतुर॥जैसेनीररहितसरितसरेदखियतजैसेधवहीनवामनतुच्छसमेतेर॥युगलअनन्यअैसे
नामसेविहीनभवसाधनामलीनहोयहारनउपतेर॥११०५॥सदाहिलवोचयारधारिएसुवैनवरवोभिवहुवसुन
कोलाभहितमानिके॥जोनहिनजनभभयोहैतेरोतोनहिनगावैमोदगीतसवरायांतपछानिके॥अैसोंअवअसलउपाय
तहकीककरिकीजिएसुदेहअंतसमेअनुमानिके॥युगलअनन्यरांवैंअखिलकुटुंबओरहर्षहियतेररहेनामनेहठानिके॥११०६॥

॥श्रीराम॥ नवलअनूपमधुनेहरयरसभरपंचरससरससमुझेजवाजिजानिए॥ चक्रयुगयोगजुतज्वलितवियोगागनिसुंहरसु
अच्छहिगभक्तिमेहमानिए॥ परासोईसहजसोहावनिनरमरस्मिमतशोकएकरसप्रवलपछानिए॥ ध्येयाकारवृत्ति
सिंधुधारसमवर्त्तसाधुवंधनसमानभावभाव्यसोंचमानिए॥११०७॥ रथीरसमत्तरैनचैनछविसपामजेकरशोकअ
नन्यधन्यराजतविशेषिए॥ चांपचापसरकेलिललीलालजूकीनवलनवेलीधारिधीरतापेरखिए॥ नेमयमयोगतप
साधनासुमत्रुजीतिविनाहींप्रयासराजकुंजनसुलेखिए॥ युगलअनन्यऐसोरीतिप्रीतिरूपासोव्यमानमदमोहकोह
दूरिकरिदेखिए॥११०८॥ जानकीराममहासुखधामसुनामउचारनमेंजमहानहै॥ तानकीकोनकथाकहिएललीहिय
अनुरागविरागप्रधानहै॥ आनगमानकीवातविहायउमंगगरीवीवरैसुजानहै॥ युगमअनन्यअजानकीसंगतिपाय
॥११०९॥ हमेसहींहोतविहानहैं॥ राममयामयमहाप्रेमसमाजतिमेंतिनकेमनमेंहोतजहानहै॥ वासनाव्यूहविनासम
योहिनकोउजियारनरैनकोभानहै॥ शांतसुभावसुशीलताचारुप्रभावअलौकिकहींसनमानहै॥ युग्मअनन्यउ ॥नामने०॥
मंगभरेहरखायतगायरहेगुननगानहै॥१११०॥ प्यारीअंगगमनपनअदूपनननवललसिशशिसुधाकर्नफूलफलितम
धुरकलि

कोकिलासैंवैनमैनैपैनसरैनेनैमैनसुखरसैंअनमालमकुटीसुमध्यमलि॥ दामिनीसीगातअलसातइतरातखरीभरीछ
विसारमारतीहूंविमरदलि॥ चालसुरमाललखिलालजूनिहालहियजुगलअनन्यमतिगतिसनितीयछलि॥११११
रविकुलकुमुदविसदअकलंकनवमधुरमयंकसैंप्रकाशकरशिकवर॥ लाडिलीलुनाईनखसिखछविछाईमाईपरमपि
यूषपानकरतसुप्रेमभर॥ वीनाकोवजावैस्यामसुंदरीरिझावैगावैंमधुरअनूपस्वरसरससुखदतर॥ कहूंकेलिठानेकहूंस
खीगनमनमानैजानैरदहरमजोविकानेहैसुगरकर॥१११२॥ आएनहींसखीस्यामसुजानसुनाएनतानसुजानजिवा
वन॥ छाएनजानोकहांधौंललाअवधेशपियूषममयूखपिवावन॥ धाएफिरैंचितचाहिचहूंदिसिचंचलचावसमे
तसोहावन॥ आएवनेअवआतुरनैननमेंगमअनन्यकेनेहनिवाहन॥१११३॥ अखियांअकुलायरहींतितहींसखियांसि
सनेहसमेतनिहोरे॥ दीजिएखायकहूंसुखसागरआगरनागरसांझधौंभोरे॥ वारहीवारव्यथावसंतवहवामसदाशिव
सकरजोरे॥ औटरदानिसुनीसवसेंवरदीजिएअंतरबाहहलोरे॥१११४॥ मुसक्यानमेंमीतकेजाइसहीसवतौरसे
खूवविचारिलईहै॥ वारकैनेनगएउतकोपुनिआइवेकीनाहिहासदईहै॥ रोहिनीनायककोदिनकेकलकोमुहीकांतिवि
नोरभईहै॥

॥श्रीराम॥

पागी

युग्मअनन्यविहायसभीछलेमेरिहैं दाष्टिविकायगईहै॥११५॥ सीतारामजूकेजोनजनअनुरागीवडभागीछविला
गीतिनहीमैंमतिहै॥ सोंचीप्रीतिरीतिकोविलोकिकेविकायगईभईअविचलसवभांतिमैंसुरतिहै॥ कहेकोउकोटिन
कलंकपंगतंकत्तउउरउद्वेगनाकुनीतिनामरतिहै॥ युगलअनन्यअन्यवासनाविहायभायएकरसनामनेहवान
सेजुरतिहै॥११६॥ सीतारामनामरुनरमनरंगीनजनसुमनसमानस्वछसोरभसमेतनसे॥ चाहोचावभावनेहसे
वनसुगेहदेहविद्यमानलगीलागललिततनिकेतसे॥ मानअपमानलाभहानकोसमानगनिपुनिसुखदानवरवच
नसुहेतसे॥ युगलअनन्यआनअभिलाषराषजानित्यागिहियोमपरिविसेषहींकुसेतसे॥११७॥ नामरूपअमल
अनूपअनुरागरतेरोशानजमीरधीरसंतरसवंतजे॥ उज्वलताचाहच्चरूपोचिनवीचैरोजंखोजनिजनाहतिनसमसु
खवंततेत॥ ज्ञानकोरशिकपट्टपंकजमरंदमध्यमधुपसमानमोहिरहेद्रुतिवंतवै॥ युगलअनन्यआसअचलहमोरमन
तिनहीकोएकटेकदूसरीनघ्योंहरहै॥११८॥ चाहेजोनकेहेंकरेंमेरेसिरमोरहैं॥ जिनकीसुमतिसरसायरहीस्याम
घनजोवनसुधनज्ञानजान्योरंगगोरहै॥ आपनेईसरनमोहागरागभागमानितांकिहैंतीनकालअोरतोरपोरहैं॥॥

न

राज
७२

॥नामने०॥

कोहूसैंनरागद्वेषरेषलेषशेषहित्लाहित्लहाररहेरसहिमागहुत्तैरहैं॥जुगलअनन्यप्रेमपरमीपयषपायचारेंजौनकैं
कैरैंमेरेसिरमौरहैं॥११९॥रटनहीनामतौनकाफिरकजाकैहै॥दीखिएनभूलिताकोबदनविकाररविषमरुनहमेशनी
चनाकिसनपाकैहै॥मंत्रशास्त्रसंहितासमरुश्लोकस्वच्छशुभसंवतविहीनसठसोईकुंभचाकैहै॥कैसेंहूकलंकचंकमे
हिकैनश्रीप्रतिनतवारिहैउपाधिआधिखेफसमकाकैहै॥जुगलअनन्यजमजातनामसेहेगोसठरटनहींनामतौनका
फिरकजाकैहै॥१२०॥सहसकरोरिवरद्वारिकाप्रयागजायपहुमअनेकवारकासिकाविहारहीं॥मथुराअवंतिकाअ
रवऔरहरवारमायापुरीकच्छपसमानदृगधारहीं॥जगन्नाथवद्रीकेदारनाथआदिसवतीरथसुछेत्रजा
यपहुमत्रपारहीं॥जुगलअनन्यतऊएकवाररामनाममुखकेउचारेसमकहैपापभारहीं॥१२१॥चारिवेदअंगऔ
उपांगकेसमेतविधिसहितअनेककोटिवारकेरपाठको॥तैसेहींपुरानसंहितापुनीतसुमृतिसहसकरोरवारकेहै
जीतिआठको॥नेमधर्मधारनासमाधिकईजन्मलगिकेरजेतसाधनउपायनकेठाठको॥जुगलअनन्यतऊएकवा
ररामनामसमहोतनहीरेवतरुसुरकाठको॥१२२॥करुनाअपारनिर्हेतुककटाक्षजवहोतकोशलेशजूकोपूरनप्रकाशहीं॥

श्रीराम

संत सत गरुअ हृदय द्रुम पराग पुनि पेरै रोम रोम प्रति सहित हुलास हीं ॥ मिले जब सकल समाज स्वच्छ सार सुचि एकरसहि
व्यगन मरस मसु वास हीं ॥ युगल अनन्य तन व राम नाम अभिराम जे गाजिय प्रीति पति पावै अनायास हीं ॥ ११२३ ॥ सोई सिर
ताज संत जाके नाम धन है ॥ ऋद्धि सिद्धि संयुत यिरंचि की विभूति तन तूल तम वमन वडाई वूझ्यो मन है ॥ एकरस अर
म रहित सुख स्वाद सर सुधा सम नाम वरसत जीह घन है ॥ महाउ नमन नम घपि एके समान हिलह गरसा पूरि रही स्या
म गौर तन है ॥ युगल अनन्य के अग्र धाम सब भांति नेम सोई सिरताज संत जाके नाम धन है ॥ ११२४ ॥ माया ईश आपको
न जानै जौन तौ न जीव पीवत विमुख वद्व प्रगट पेखिए ॥ जानै तो जो माया तौन काया जाया माझ प्रीति करै सांच भाव
मानि याको दृग रेखिए ॥ ईश ज्ञान की शवोध सोधम वल्लहाय याहि छूटै तो अयास विन वंधन विशेषिए ॥ युगल अन
न्य सुधि आपनी तनक पाय पावत पेरस भेद रंच कन लेखिए ॥ ११२५ ॥ सरस सरोज मांहि मधुर अमर तरु साखा तामे
तारागन नयारंग राजहीं ॥ आसपास ललित ललाम ममनि नेह निधि ताप कल हंस कलविंकपात भ्राजहीं ॥ ताहू पर
वेलिन विचित्र छवि मित्र प्रियकदली रसाल मन मोहन समाज हीं ॥ युगल अनन्य हरि चक्र वक्र हीन लसे सवसेर शिकन
चित्त छटा छन छाजहीं ॥ ११२६ ॥

नामने०

ताहिढिगसरससुखानसुचिसोभासजिसोहतसेवारपानहेवतसैरखिए॥ सुखमासनेहासकलितकपाटहारनवलख्न
नपफलकमलविसेखिए॥ ताहीकेसमीपकमनीयकंजनालनिजसुमनसमेतमनिनेहयुतरेखिए॥ युगलअनन्यलखिलो
चनरहसपदहभूलिहूंकेअपरपहारस्थनलेखिए॥ ११२७॥ सुरसरीधारयुगमारहासमेतस्वच्छलसतअनपकंवुमिलित
विचित्रहै॥ तापैआदरसअनमोलगोलताहूपरसरससुसीयमीनसंगरंगचित्रहै॥ मजलमधुरमदमेचकमनोजवनसो
हतसमीपदीपहैशशिमित्रहै॥ युगलअनन्यचारुचमकसमेतचंदअमलअमंदप्रियप्रीतमपवित्रहैं॥ ११२८॥ दामिनी
दमकवरविद्रुमललामछटाछायरहीकंजकोशमध्यरमनीयहै॥ तामेसुकमुंदरमधुपमीनमोदकरकरतकलोलकोट
कामकमनीयहै॥ ताहूपररतनसुपाटदुतिवंतवहुभूषनसमेतशाकशोकसमनीयहै॥ युगलअनन्यासितसुमनप्रकाशफेलि
रह्योचहूंओरजोरदिलरमनीयहै॥ ११२९॥ जानकीजीवनजैसेंलगाकवहूंममनेहविकारविसारी॥ आठहूंजामउ
मंगतरंगउठैउरउज्वलभावविहारी॥ काहूसेलेननदेनरहेममवामनाचंदविसारनिकारी॥ युग्मअनन्यसुनौमिं
शोकसजाइएआत्मालोचितवारी॥ ११३०॥ जानकीजीवननामप्रभानिधिनेहनहेजपिएएकतारें॥ हानकीवानन

नकरहेउत्पातप्रपंचपलायपवारें॥ प्रानकीप्रीतिप्रतीतिसुजानकीआकस्मातविचित्रवहारें॥ युगमअनन्यअमान
॥श्रीराम॥ कीरीतिसनातसुनामरटेहृदधारे॥११३१॥कौनकलंककषायकुकीचमैंमृदमषामथिरवेहखराबी॥ औनविलासकुवा
सदृशसमैंहोयउदासप्रकाशसहावी॥ औनसुभावसचेतनसंजोजियमौनेमैमौजसनेहसरावी॥ युगमअनन्यसुभौनेमवा
समुनामउजासमभासमहतावी॥११३२॥ जागिंखूवहवूवविसारिकेपागिएप्रीतमप्रेमप्रकाशी॥ लागिएलाललली मुह
मंदिरमाझविराजिएलौकिकहांसी॥ त्यागिएतावतिहूंतनपाअनुरागिएभागिएदेशवदवासी॥ युगमअनन्यसुवागिएव्या
मवितर्कविहीनकेवीचहुलासी॥११३३॥ नामनिरंतरनेहनिशांतनिहायतनीकनिरंजनजानो॥ कामकिलंतर
काजकलंकितपंकसुतंकभजेमुदमानो॥ वामवहिंतरवीजविलयविनुबोधविहारखुमारनआनो॥ युगमअनन्यप्रप
न्नसुसंगसैंनामअनामस्वरूपपछानो॥११३४॥ नामीमाझनामनखसिखलौविराजमानेंहरिएसुजानमानभानकोवि ॥नामैने०॥
हायके॥ ऐसोकैनअंगरसरंगनिधिजोमनामललितललामनहिलसतसुभायके॥ संतसतगुरुसुचिसंगकेविहीननरआ
नतानगावतकुरंगनीरन्कायके॥ युगलअनन्यअनमोलनामनामीगतिअगमअथाहकैसेपावैंविललायके॥११३५॥ ॥

नामीनामयुगलअनादिएकरसतिलतरुककरतसुखसुकृतविनासिहै॥रूपकेविहीननामव्योमकेकुसुमनामविनिहितरूपअंध
कारसमभासिहै॥नाहकीवितंडखंडनीयवाइसा विनवोलतअवोधसोधभामतेंखासिहै॥युगलअनन्यमंतगुरुइरसायदि
येनामीनामरहसायचित्रजौनगांसिहै॥११३६॥नामकेआधीनरूपवरेंवेरविज्ञवरचारोयुगवीचनाममहिमाअगाध
है॥वाल्मीकमुनिअविलोकमतमतधारिमरामरारटतहूंअचलसमाधहै॥महाम्लेच्छकोटिकोटिसहसअपूतनररामनाम
वारकवहतगतव्याधहै॥युगलअनन्यनामकरनासेंसुद्धहोयऔरभांतिमिटतनरोगहूंअसाधहै॥११३७॥नामनेहनिधि
विधिअविधिअवाहचिन्तचाहतसनेहमेंचपांचऔंचहीनता॥कामकोहकोफिरकनातकेतलामकरिकारजसंवातस्वच्छ
सुफलसुपीनता॥वामवागविगतविरवादद्धद्बसंगसाजसाजियेनभूलिहूंकुरेखदुखहीनता॥युगलअनन्यसामसरमसका
रद्वारनामसरकारहींकेरहेनीरमीनता॥११३८॥सीताराममनामहींकीवलिहारीवारवारनिरेहतकरुनातपायोमोइंधा
महिव्य॥वामनाविलासवहवायरवनवायतीनइंधनाउपाधिगनराज्योहवनीयहव्य॥मामनाममहमकुवायसरमाय
सुखिसिंधुपरपारआपमयेमईनीतिनव्य॥युगलअनन्यजानकीशसिरताजईशनामगुनगायस्वच्छसीसमुखसारसव्य॥११३९॥

॥श्रीराम॥

चारोचषचपलचलाककोहलाककरिचाहिएचरित्रचितचारुचित्रसारसम॥ वारोकुलकरनकषायकलुषितहेत
केलितकरनकमनीयनामनेहनम॥ कारोमुखमरनमलेच्छमतवारोहोयसोयरहेसजखोफजालिमजहानजम॥ युग
गलअनन्यरागअमलअदागवागप्रेमबागकुसुमसंमतविकसानतम॥११४०॥ भावनाभावविभावविभववरबीजविभू
तिविनीतविचारं॥ दावनानेकलोगअविवेकसुटेकअछेकछकैयोछलछोरं॥ आवनानित्यनवीनवनावलिवृंभिरएवा
तमुनैननिहोरं॥ पावमअनन्यअगावनापांवचरोधरिकेफिरिपीछनप्योरं॥११४१॥ रंगरसालविसालसुनैनसुवैनसुधा
सुचिसारलसे॥ अंगउदारविहारभरेछबिधारपरारतिहेहरसें॥ ऊनउमंगउछाहरेंपरिपूरनप्रेमप्रभापरसें॥ जीवन
जानपियूषनिधानपुरानप्रमानप्रधानजसें॥११४२॥ पायप्रकाशविलासमसेखासहुलासउदासविहीनवडाई॥ छैप
छटाछबिछैलनिवासमुवासअजवहिएहरसाई॥ गायगनेशसुकीरतिआसविनासकियोभवमानमुलाई॥ ला
यललामसुनामविकासअनन्यमुकंजखिलेरशिकाई॥११४३॥ वामवित्तचाहेपतिपासमुखरासओरखामनाउ
हासभोगभावनाविहारवर॥ स्यामविनालोकजगखामधामधरमसंमेधोलहरजाननीविसेषसेविपारद्वार॥ ।।।

॥नामने०॥

वेतिएसचेतचितईजिएसुपीठभ्रमिलाइएनहीठमीठमानिकेगलानिगार॥ युगलअनन्यभक्तिभामवतीकेंजमेंजुसेइए
मेंनेहस्वच्छमाजिएविहायडर॥११४४॥जोकिजियजीवनसुजानकोविरहआहताकेफीरसूझिनापरतमोरतेरहै॥फनीम
नीहीनमीननीरसेविहीनरामक्रीपिनिगएसेंमहारवईसांभभोरहै॥मुखिएनैवननेनकुकरततविहासहालवोलैंनाकइपिक
हैंकहासपामगेरहै॥युगलअनन्यमोसेंमंदनकोकहांलाभकपटकेघायव्यापिरह्योपारपारहै॥११४५॥कवहूंहमारीऔसी
रसाहायपेंहोयगी॥मरजएलीननेहनलिननवीनममफूलिहैंललितलाललखिमुखसोयगी॥लोनीलोनीललितमुकुं
जवीचस्यामगोरछटाछविकिछाईनिजनैननतेजोयगी॥एकटकलायसुधिवुधिहूंभुलायकवेंप्रेममेंमगनकहूंहमेंकहूंरो
यगी॥युगलअनन्यमतिमेरीतरसातनितकवहूंहमारीऔसीरसाहायपेंहोयगी॥११४६॥युगलकिसोरछविसागरअथा
हवीचमेरीमतिमीनएकरसहींसमायगी॥सखिनसमाजरणरंगारसराजनेहवचनविलासहांसहेरहुलसायगी॥
तीनोतनमानमहामोहअभिमानमानविषमवितानवीनवासनानसायगी॥युगलअनन्यचोरचौगुनहमेंसाउरऔ
सोसुभदिनकहूंपीयप्यारपायगी॥११४७॥तिनहींकोजीवनसफलसवभांतिप्रियजिनकेहियेंमअपेरासैंछेलछविहै॥

॥श्रीराम॥

ग

जिनकोनज्ञानिपरेरैनअैनवीतिकवसहजसमाधिसुखस्वादहुतिरविहै॥ लोकपरलोकमोकवासनानेनककहूंमहा
मोहसिंधुवीचवडेकेलिकविहै॥ पुग्गलअनन्यमेरीगतिकछपूछोनहीसत्यकरिजानोहियेछातीपविद्विहै॥ ११४८॥
वारवारधिकमोहिजिवोविनहेरेतोहिरायरायनाहककलेशसहियतहै॥ ज्ञानीमेविशोककर्मकुटिलकलंकीमेरोनाही
तेअयोंशोगभोगभोगियतहै॥ कोउनसनेहीहाहहररहरदवावैहिलहावानलहूंतेकोटिगुनदहियतहै॥ पुग्गलअनन्य
कियोआपनोप्रपंचफलकलकेरहितराजेराजेलहियतहै॥ ११४९॥ हायस्यामसुंदरसनेहीस्वच्छअंगरसरंगगनम
रितविनाहींवीतिपावैनछिन॥ जायतनधनजनजीवननिकायरूपमाधुरीनिहारोनाहींनैननसैंएकछिन॥ धायइतउतवि
षयवासनावलायवीचगह्योनहीटेकनेकचातकचकोरमिन॥ पुग्गलअनन्यआयवायवकिरखोयोसुखसागरजनम
नहींजप्योनामहोयभिन॥ ११५०॥ याकिएसाधनवाधनअरसेंअकिएअंकअशोकसुमेधी॥ ताकिएश्रीगुरुसंतशरनयासु
धासुखसागरशोकसनेधी॥ छाकिएशोकसमेतसुभोनमेंश्रीरघुवीरस्वरूपअवेधी॥ पुग्गलअनन्यविहायिएवासना ॥नामनें०॥
नामस्मवायसैवहुरवदैधी॥ ११५१॥ रूपरमायनचायनसंगसरंगउमंगसमेतपिएते॥ धूंपपगधियवेधिशोकेनहिलाह
लद्योतिनखवजिएते॥ रूपमेंवाहरहोयकेटकमनीयकलाकुलकामकिएते॥ पुग्गलअनन्यसुभूपकिशोरमेंराचिरहेहितहेरिहिएते॥
॥११५२॥

जुगलविभूतिनिजनायकनिरीहनामकोटिकामदायकदयालदुतिमंतहै॥सहससुमेरसमऔगुनअगाधबाधेनेकननजरवीचला
वतउदंतहै॥रेनुकनहूंतेलघुवचनविलासगुनगहतगनेशअमृतरसवंतहै॥जुगलअनन्यपाहिहेतुअवलंवआनंदलतन
मानिभजैंसंततसीयकंतहैं॥११५३॥व्योमकेकुसुमसमसाधनसमरुवांभवालकविनोदवतस्वादसववांमांभहै॥भूरधूरमोदकसमा
नमधुराईकूरमाननतप्रमोदवोचहीनमीनमांभहै॥करतविचारकछुसारनिकसतनहीकदलीसुखभसोंअसारभोरमांभ
है॥जुगलअनन्यअविशोकसुखपाकपीरनामनरटतमतिमंददुंददहांभहै॥११५४॥नामनेहनीरनिर्मलनीरमीननित्यसो
वतसुजनसावकाशसुखमानिके॥स्यामघनआनंदसुवारिवरषतवहुवोधवरवीजवरधतमोदमानिके॥स्वच्छसतसाज
सामराजसमृहितहोतजोतजगमगातछवीनछविछानिके॥जुगलअनन्यमोजमानसमुरादमोदसरससरोजविकसतहि
ततानिके॥११५५॥मदनतपारितामैंअतिहींखोआरीभारीविविधिविकारीज्वारीवसतहमेसहै॥जगतउजारीजैसदामिनीदम
कदारीछनिकअंधारीरंचमाहकोनलेशहै॥कहैजाकोनारीसोतोपूतरीममानजडुमांसमईमानोदुखदाहननदेशहै॥
जुगलअनन्यारीसवविधिस्वादकारीअवधविहारीनामपरमपेशहै॥११५६॥मांसहूंकोदद्दगांठउरोजकहैंउपमा
छटेहमविकारी॥लारअगारसदाभरवधारकहैंतेहिइंदुसमानविहारी॥औरहूअंगअनेकविकारभरेउपमावहुभांतिसँवारी॥

॥श्रीराम॥

प्रगटअनन्यमहामतिपाँवरनिंहितरूपकियोकविभारी ॥ ११५७ ॥ दीपकमध्यपतंगगिरैअनन्यानितैज्वालकरालसहाई ॥ मीन
हूँमीतफँसैवनसोंविनुज्ञानअज्ञानकुस्वादसमाई ॥ हौंसवहीविधिवोधसौंमतपच्योसुखकेतनिकेतअघाई ॥ प्रगटअनन्य
यहीमहिमाअतिमोहमहीपतिवेदवताई ॥ ११५८ ॥ भोजनहेतवन्योवनकोफलपानलिएझरनाजलमीठो ॥ सैनसोहावनका
रनभूमिसमहासुचिक्कनकसमानसुरीठो ॥ छाजनयोगशरीरसुपत्रविचित्रविनागथउज्वलहीठो ॥ प्रगटअनन्यनतोनसह्योअ
वनातअनाहरनीचउवीठो ॥ ११५९ ॥ दिव्यजनमानसमसमस्तभूमिपैराकोऊकियोकोउपाल्योपालखुआरहींसुभाँतिसैं ॥
जीत्योताहिअपरभुजंगमसमानननदियोहानसहजसनेहसुखसाँतिसैं ॥ औसेहींअनेककवीरवीरवहुभोगकिएलिएमो
हमानिमिथ्याभूमिमिभवभ्रांतिमैं ॥ प्रगटअनन्ययातेवासनाविहायतननतापहूँमिटायकीजेप्रीतिसीयकांतिमैं ॥ ११६० ॥ भूपतिमा
वगरूरहिएतवजानततैंनिजनैननदेखी ॥ श्रीगुरुदेवउपामनातेवुधिपायहमैंअभिमानविसेषी ॥ ख्यातभयोतवभूमिवि
भववलदानऔमानतेभाँतिअसेषी ॥ भीरहूँकीरतिहैशास्त्रअनेककहैंसुचिमंतस्वभावपरेषी ॥ ११६१ ॥ ताहिऔमोहिमभेद
नहीसवहींविधिसैंसमुझ्योसमता ॥ काहेकोमानवढावतहौजियमांझविवेकविनाममता ॥ दृगफेरतहौहमसेंहमहूँजगआ
सनज्योलखिकेनमता ॥

॥नामेनं०॥

॥१३८॥

प्रेम अनन्य सिया रघुवर नाम सुतोष लिए छिति में रमता ॥ ११६२ ॥ भूपति भूमि विषै कर कोटि भए मुख मोक्ष के मांझ समाने ॥ ताही
को लाभ भए अजहूं महिपाल के मोह महा मद हाने ॥ अंसहु को अति अंस महा लघु पाय रसा मति मंद भुलाने ॥ प्रेम अनन्य वि
षाद निवास में भूर मलीन प्रमोद प्रमाने ॥ ११६३ ॥ मांरि ही को अंस गलब लित समान अनु अंस करि रनकहू भोगतन्न पास
है ॥ तातक[illegible]ाप भोग विभव समान जन मानत हमेशा मुद मंगल विशाल है ॥ ताहू ते अनेक भांति सवन यतन करि पावत सुले
शाधन चित्त में निहाल है ॥ युगल अनन्य वार वार धिरकार तापै आंच तजो वाहू सन अवम अमाल है ॥ ११६४ ॥ नर भार गाय
न के मध्य मा मिलाप मम त्यों हीं पर द्रोह हीं निजानन्द न लेश है ॥ जोवन नगर रूर वाली वाला हू न भीत हम विगत विभीत नीत रहित
न वेश है ॥ भावत न भोग रोग सद्दस लखात मोहि पगी मति राम्हनाम जानि परमेश है ॥ युगल अनन्य जग जालिन भुआल
गेह कहो काहे हेतु मेरो गमन अंदेश है ॥ ११६५ ॥ श्री अवध शहु आरे विना तिहुं रेव विभूतिन रेखिहैं नैनन सें ॥ काहू सें का
जन में मेरो कछु सुख मोन गेह रहिहौं विविवैनसें ॥ जानकीनाथ सुभक्तन को सुचि माघ हमेशा करों चित्त चैनन सें ॥ प्रेम अनन्य
अखंड महाव्रत पाव रग्यो न कहूं धव वचैन नसें ॥ ११६६ ॥ न स्वहू तिहू नीपर वारो कलाकोटि पदुम पुनीत पद पंकज पै वारि हौं ॥

कर

॥१३८॥

॥श्रीराम॥

स्वस्तिकादिचिन्हनैपैवारिएसकलशुभकामनरुकोटिकरकंजनैपैवारिहैं॥ कदलीकलितवारौंजगामगजेंछपरके
हरीकलानिकेतकटिपरवारिहैं॥ युगलअनन्यमुखमोहनमयंकपरतनमनधनसर्वसनिजवारिहैं॥११६७॥दाडिमदिमाग
रामललितललामदुतिदंतनसुकांतिपरसहावारिडारिहैं॥ स्यामसमनितारससराजरंगधारहैवढ़िछविवामवारस्वच्छकेशन
पैवारिहैं॥ कोटिविसामकोप्रकाशरामक्रीटपरवारिहैंसकोचचिन्तअंतरंगवारिहैं॥ युगलअनन्यमुशक्यानमानमाधुरी
पैनिजमहितहमेशप्रानआपनोईवारिहैं॥११६८॥गौरस्यामएकएकअंगनअमोलपैअमितअनंगरतिवारिवारिएस
कोचतजि॥ कहाकामबापुरोविकासभाशुभेरोडरोजरामरोउपमाअनोगताविचारमजि॥ जानकीजीवनजूकेरूपअनरूप
औरदूसरोनकोईतातेअनुपमशानतजि॥ युगलअनन्यमनमेरोतूंनऔरथलकीजिएकहापिकालगमनापिशेषलजि
११६९॥ श्रीसियरामस्वरूपअनूपपैवारिएकोटिनईशानकोनित्त॥ जानकीजीवननामसुधामैपैवारिएनामअनंतमहेशचित्त॥ जा
नकीनाथअथाहप्रतापपैवारिएईशताउंजविनामित्त॥ युगमअनन्यअनूपमऔधपैवारिएलोकअसंख्यविहाचित्त॥११७०॥ चाह
चरीजेहिकेजियअंहरगालिमिल्योरघुराजपियारो॥ स्वामिसुतफेकसरनहीभरपरसेनेहसुराजकुमारो॥ हैदत्तहीविस्वासउमंग

॥नामसे०॥

५०१३-ठ-का १-

॥१३८॥

॥सीताराम॥

मैंफर्केमलीविधिनैननिहारो॥प्रगमअनन्यपगोसबत्यागिकेलोकप्रपंचप्रलापपसारो॥११७१॥अषभाँतिसुजनसनेहगुनगेहरत्तउ
त्तमाहिमेहवेसविहरवरनतवर॥पंचहेहवअगुनरेमशपररूपव्रजनायकउपासपतासुधारत्तउमंगिगउर॥करतअभेहरौतेत्वमेंप्रवीनहो
येकोउजानकीशकोभजनतशांतिभावधर॥प्रगलअनन्यमनमोहनमधुररसरसिकअनन्यभूपभूपतिविचित्रतर॥११७२॥रशिक
अनन्यअमगनवरहेसावुधवृमतविवेकवलवालताविहायके॥छाकेरूपरसमपियूषमूषभावभरियाकेहरीहरचारिमुखगनगा
येके॥उछतननेकसंकलपविकलपाहिलमिलरहेस्यामघनहोशविसरायेके॥प्रगलअनन्यप्रीतचातृकप्रवीनपनमहाभावपाय
चितछाकेछविछायेके॥११७३॥जेतेसम्प्रदायपंथतेतेपेखिलिएसवमेंपपरपेखोसिद्धनित्यनामरूपहीं॥औरतेविवाहसवाहहीन
हिनहिनहुतिअधिकमलीनविरसमयुक्तांधकूपहीं॥सुगुनसुभावचारुचरचाचरित्रचितचाहिएविशेषविसरायकामकूपहीं
प्रगलअनन्यअवनारिहरकीनेमोहअपरोक्षसुखसंतवहहैनिरूहैं॥११७४॥नेहनिजनगरनिवासीनित्यनाहनामनिर
खतनीकेनिशदिननीकेनैननसें॥देहगेहममताप्रपंचहिविसरायहायरहतहमेशचितचारुचषचैनसें॥मेहवरवूंदवरसनउत्साह
उरएकरसरहतमधुरवरवैनसें॥प्रगलअनन्यवेदविमलविशेषहिलमिलेमहवूवरवूवरंगरसमैननसें॥११७५॥ ॥ ॥ ॥

प
॥१३८॥

॥श्रीराम॥

जानकीजीवनपदपंकजपरागप्रियवमनविचित्ररंगवारएकमेशहीं॥ औररंगदूषसुचिसरससनेहहीनताहीनेविहायरामरंगसु
विशेषहैं॥ रसिकअनन्यसंगसाजिएस्वरूपसुखछाकछएउछाहरसमदमहुतिहेशहीं॥ युगलअननामजापिएअखंडदिलसाव
धानैखायवासनामेंहशहीं॥११७६॥ मनहींकेलागेगुननायकरैसासरसरूपप्रचुरतवारविहितपुरानहै॥ तनहींकेगारेजमजालि
मजहरजगठगरुगनाशहोयजानभोगभानहै॥ वनहीकेवासमेंविनौंसुचिसतवगनसरतसुपेगा औवियोगमोहमानहै॥ युगल
अनन्यअनआनेरनिमित्तपनमननजमालजमवारएसुजानहै॥११७७॥ सीतारामनामजसजिकरफिकरहर निकरनिकेतसु
खमारसुखफलहै॥ होयकेएकांतशांतभ्रांतसेरहितकांतकमलसुपदअभिलाषिएसुचित्तयल॥ वानतविनोदवीचव्यथीव्यव
हारविषवारएननकोकेछोडिएकलीकुमल॥ युगलअनन्यइथनामकीविभूतिवरजानिएजहानजहांतलकसुजलथ
ल॥११७८॥ चित्तवित्तविमलनहींजिएकदापिकहुंलाहुतिलभरकोनहानमेरसमहै॥ वितरनयोगजानकीशाकरकंजमांभ
भोरसांभमोहमहुमंगलसुगमहै॥ नाहकानिंपाधवेधअविहितहितहेतुप्रतसीरसाकोगोहडोलतअनमहै॥ युगलअनन्यपति
पूजिएपरावेरशेरशसोविशेशापायत्यागिएनगमहै॥११७९॥ नामरहाननाथहाथवैंचिएस्वरूपनितकरनमनादिकसमीपएकवारहीं॥

३ होय

न्य

॥नामने ०॥

५०१३७-का२

॥१३८॥

स
आमअभिलाखरायबूझिएविवेकवलश्यामहूँसुवूहहदेवारनासुधारहीं॥धामसुखरासवासअमलअचैंसाजिराजिरसरंगप्रि
धन्य
यपाइएप्रचारहीं॥पुग्गलअनन्यधन्यैंतीनलोकवीचहोयप्रोविशेषलेशमंकहूँनसारहीं॥११८०॥एकवारसनाउचारकोम
हत्यवेदवचनवपानयोगवदृत्तनवेदवुध॥जोनजनैरनअनरएतअरंडनामतिनकोपरत्वप्रियकहिएकहाँलोसुध॥परमपरम
हूलुभायरहेहिगनित्तनाभिनकेआसपासआतुरसजायपछुंध॥पुग्गलअनन्यअनपाधिअविकारनामराएसेंचाहेंहरिएनजगजी
वजुध॥११८१॥पारावारप्रेमकोप्रवाहचाहहृदाहहीननामकेअधीनपीनप्रचुरप्रवीनपद॥कारागरुसदश्यासुमांधनसमहव
कान्यूहकेसमानअएकोवृत्तउपाधिमद॥नारानेहनिकटनिवाससरसरासस्वासमेदकोनभासवरनतेवदवुधसद॥पुग्गल
अनन्यआराअपरउपायजायजीवनजीवनजीवनअधारनामरहितकदवदवद॥११८२॥हूजिएअमाननमानहानिसुअखिल
जगरगमगछोडिएविशेषमुषस्वच्छहै॥पूजिएप्रवोधरत्ननाकरसुनामरत्नगाइएरत्नेमाशेरखताईनिजलच्छहै॥मूजिए
मेदशमानज्ञानकोकतलकरिकेनिरूपानआनभावनाप्रत्यक्षहै॥पुग्गलअनन्यकेलकूजिएसुनामरवुज्ञवएकत
रहदलाइएप्रतच्छहै॥११८३॥हापवित्तअसतनिमित्तचित्तवारचिरराखतआनेकोटकेचारपतसवाहको॥ ॥

॥१३८॥

॥श्रीराम॥

२८५

जाय़जसजीवनजलाय़वहवाय़वोधविविधविरोधैंनाहकविवादको॥नाय़माय़तिगनसुगननसवाय़नीचवसवाय़वैरी वहुअंतरअनादको॥ग्वालअनन्यपाय़प्रीतमप्रकाशपुरजरजरहतउलायोनसमादको॥११८४॥धर्मध्यानधारनाधुरीनधे य़धामधीय़धवलधर्ममहूँधकारधरषतहै॥नर्मनेहनाकनिर्वाननिर्वेदनाकनाजुकनिरीहनेकनामकरषतहै॥धनकुव रनजगाजाहिरजहरजमजालिमजमाननाहिपाय़हरछूतहै॥ग्वालअनन्यमेरोमनडरपाय़अववूझिविनरूपतिलहूनक रषतहै॥११८५॥विमलविचित्रवैनवोलेविधवंदनेनशविकलविगोएवहवामवोधवीजहै॥वालिसविवेकविनुविफल विलासवनविमलविकारवारवकतमुछीजही॥वातिनविनारचस्तुवेषसुविशेषववलेषपतननेकछोररहवाहचीजही॥ ग्वालअनन्यवानवित्तनविहाय़वपुविगतविहालहाललीजिएतमीजहीं॥११८६॥ग्वालकिशोरजसजोराचित्तचोरच षचपलचकोरचारुवंदसममोहने॥रैनऔनलागेईरहतनगहततोषपोषपरपाय़मनमोहनहूँमोहने॥वारवारप्यारहार हिय़पनिराय़छविकलितकपोलतिलवाहीसुखछोहने॥ग्वालअनन्यआलीअवलीसमानचित्रपूतरीचहूँघाँरवरीमा तीमारदोहने॥११८७॥जानकीजीवनकीसदनामकरंदमर्धमनमाहिविचारत॥रामहिराममेमेशोभकलाकलकोमलतापरिपूरि संवारत॥

॥नामनेन०॥

तापकलापविलापविलयनिमेषारधवीवसुइस्वछअनारत ॥ युगमअनन्यकठोरपनोमपनेहूं नहीं दरसातविगारत ॥११८८॥ स्वामि
नीसीयसमेतसियावरउज्वलताउरलाइयप्योरे ॥ कोटिकलाकरक्षीरमहानिधिस्वछसुकीरतिहूं हियहारे ॥ शोकसमूहसजा
यसोहावनप्यारएहिवसोइगनन्यारे ॥ युगमअनन्यअनेकमलीनताआकस्मातविलातसकारे ॥११८९॥ श्रीसरजूतटतीर
सुधीरसोहावनस्वछसमीरसंचारे ॥ उज्वलऊनविहीनहियेआपनोकरिकेतितवाससंवारे ॥ पावैप्रधानप्रकाशपरावरनाथ
नहींशककलेशसुधारे ॥ युगमअनन्यअखंडमहामुदआठहूंजामप्रतछसकारे ॥११९०॥ श्रीसरजूनवनेहनिकेतनिरंजननीरनि
रंतरपीजे ॥ लागरजरहिएसवहीमननीमसमीपप्रदीपपतीजे ॥ होयविवाकसहीकरजगुनऔगुनमूलकुशलहूं छीजे ॥ युगम
अनन्यसुनामसिरोमनिध्यानसुजापजपेमलमीजे ॥११९१॥ श्रीसरितासिरमौरसमीपसुसैननसमाधिसुखैनसम्हारे ॥ वीति
वोमोनसुजापतहांहृगनीरगिराइवोप्रेमपसारे ॥ बूमनोठोरहींठोरपरिक्रमदेखिवोवसनमहूपिसुधारे ॥ युगमअनन्य
सुज्ञाननगेहगतिगोपनेगोपमचोपनिहारे ॥११९२॥ जानकीजीवनजीवकुसीजसजानतज्ञानजहानजलाए ॥ प्रेमप्रमो
दप्रमोतिमातिरहेहरसायतनामउमंगलखलाए ॥ आशाकहायकेखायहियेहोउलोकअशोकभएवहलाए ॥ ॥ ॥

॥श्रीराम॥

युगमअनन्यवहीधनधन्यअसंगसुरंगसवाइसलारण॥११८३॥श्रीसियरामसुधामसनेहसमेतनवीननिकेतनिहारे
हीअभिरामसुधीयधरेसुचिशोकसुवामविनोदविहारे॥श्रीहृदतासवतोरसजेजियनामपियूषपियेनहिहारे॥युगमअ
नन्यअजायवश्रीनाथसेंसियलेचित्तवीचवहारें॥११८४॥जानकीरमननजनजीवनजमीनजसमरसमुसीलचिन्त
आपनेविचारिए॥विसदवहारवारवारहिलहारध्यानधारिकेअखंडचंडवासनानिवारिए॥होयहिपहारतहमेशासर्वेश
देशानवलनिदेशासीसमानिएविचारिए॥युगलअनन्यनाममहामोदधामआठजामअभिरामधीयध्यावतनहारिए॥
११८५॥जानकीजीवनजीकीसवीहअनीहसमीहसुकारनहेरे॥ध्यानकीरीतिविचारिभलीविधिहोयएकांतसुशांतसवे
रो॥तीनहूंतौरसुगौरमहांतकहेरदुरारएमानिअंधेरो॥युगमअनन्यअभीतिरहोपियपासवसेरसएकउजेरो॥११८६
प्रीतितीनितौरगौरकरतसुजानसुचिवहतविसेषचित्तधारिएहमेशाहीं॥अमलअंगरहायतेसेहींवेशामवेरअंर
रनवाहेरसुमेदवरवेशाहीं॥श्रेष्ठजनमध्यलघुकमहींतेजानिलेहुनेहुनिजउचितविचारिदरवेशाही॥युगलअन
न्यएकरसछलहीननरनिकरप्रमोदहुतिवाढतसुदेशाहीं॥११८७॥काहूसेंप्रकाशक्रांतकीजिएनभूलिभीतरीतिविपरीतिनिदर
हारितनिहारिके॥

॥नामेने०॥

वूझतनवातघातआनहीरचतरातदिवसवरातवांमतातसुखमारिके॥तातैसावधानहोयगायगुनज्ञानधनजानकीरमन
गुनगारएसुधारिके॥पुगलअनन्यऔरिअंतमध्यमोजहोअवैलिसविदारघूमनाकसीनिकारिके॥११८॥जैतेजगजी
वसीवस्याइसैंविहीनपीवप्रीतिरतिछीनपीनवासनाविलासमैं॥संतरसरंगसिंधुसरसुसंगनेकुरचतनकैसेहूंप्रमादव
सहांसमैं॥ऐसेमइमलिनमहादिदुर्मतिवानवइनमपानअवलोकिएनपासमैं॥पुगलअनन्यसीयस्वामिनीशरनम
इसजिएसचैतरवतछोडिएनपासमैं॥११९॥जाकेसतसंगकीचमीचकोनिरासकीचनिखिलनिकामप्रतिकासरवास
स्यामसीय॥नानामहैवाइआइहेरेहूंनपाइअतजानकीरमनरूपमाधुरीमगनहीय॥ऐसोसुखसारसंतसंगहींकेभ
रभारभासतप्रतछ्छस्वछ्छसुछ्छलोकभानभीय॥पुगलअनन्यशब्दमोहनीसुरतिसाधहोतआतपातजोतनागत
जलसजीय॥१२०॥संतसमागमसारसहीवडभागीकोउकवहूंकिलपावै॥जानकीकांतउदोतउदयउरआप
हींआपअनंतापतनावै॥वागवसंतसमानखिलेचितचोगनेचारस्यभाववसावै॥पुगलअनन्यसुमंतसुधासरभीतरवा
रहूंहरसावै॥१२१॥यांचोसीतारामसमोदधामसेंहमशइहविसरदिवाघवरहनघालहरीजिए॥जोनप्रीतिअचलविवेक

॥श्रीराम॥

विरहितजीवहोतविस्वविषमविकारवीचभींजिए॥सोईसांचीभक्तिअनपायनीअकाममनमेरेकरुनेशकलक्षपाकोरकीजि
ए॥पगालअनन्यजोउजौनजोनपोनिनमैंतहांतहांभावचावचरनपतीजिए॥१२०२॥चाहोंअर्थधर्मकाममोक्षनानाभांति
नाहिंकरुनानिधानसुखखानननामहीजिए॥प्रानोप्रतिप्रेमउमगायहुलसायहियपरमपियूषचारुचीरतहिंपीजिए॥इखों
दिव्यदृष्टिसेंसमेतसवसृष्टिहीनवंधुवरविमलविभूतिरूपवीजिए॥पगालअनन्यव्यभिचारविरहितभक्तिएकरस
होयऐसीकरुनाकरीजिए॥१२०३॥नाहमैंहहीननरखरतरजानिए॥वाहवाहहाहवीचवहतवेकूफवरअसत
अलापनापरमितप्रमानिए॥शाहगाहचाहचिन्तनतिलउत्साहविनाहिनहिनतीनरिनव्यापतवखानिए॥आलीजाह
जोकहूतिहायकरयालनामरटतनेनेकतमेकहूठानिए॥पगालअनन्यवातविसहवुलंदवरनाहनेहहीननर
खरतरजानिए॥१२०४॥प्रेमविधिनेहनिर्गुनगुनवीजवरवानिकविचित्रवूंदवरसततताकिए॥छेमछितिछैल ॥नामनेह२०॥
छविछकनसमअच्छस्वच्छसागरअजवरखूवएकरसअंकिए॥हेमद्वीपपेमशतसहसप्रदीपपरिलहायकरराज
दुखहारनहुचाकिए॥पगालअनन्यनेमनामनिजनीकसजिभजिभाववन्नमनपावपलपाकिए॥१२०५॥ ॥

नामचित्तवनिचोरचारुचित्तहित्तहोरिवित्तवरदेशवेशापायफलफूलिए॥ कामनाकलामकंत्तकहरकुपंथकरुकायरकरैंवंद
वशेषैनभूलिए॥ आमनाप्रपंचनिरुवारिशुद्धशोकमनरतनअमोलअविलोलअनकूलिए॥ युगलअनन्यभव्यभावनाविलास
कुंजकूलनझूमझकिझूमिझुकिझपझूलिए॥१२०६॥ कोशलापुरीशवीचवीजिएनिवासनित्यनेहनिर्वीजधीपधारिव्यवहारवि
न॥ पाएप्रकाशप्रीतिपदुमपलासपरविसदविहारमौजछायारहेछिनछिन॥ हौंमलाहजारएकवारहींसुपूरहोतहलत
हिसावहायभरतिकरोरकिन॥ युगलअनन्य¹अभिरामधामवीथीवीचअटनहमेशाहुतिहिंआशुचिरकहूं॥१२०७॥ रामनाम
रटतपरतपदुप्रेमैंहेंमझलकपलकपुनिलागतनेनेकहूं॥ कामवामहरतनरतइतउतसेनसबलप्रपंचवस्नशेषनहिएक
हूं॥ नामऐसबरतफरतनमतोमरोमेरोमरमहरतघरतअविवेकहूं॥ युगलअनन्यअभिरामधामवीथीवीचअटनहमे
शाहुतिहिंहरासुचिरकहूं॥१२०८॥ विमलविहाररमधारसुखसारसुचिसिंधुमरकारप्यारनामकेअधारहै॥ विमदविचारसे
तस्वच्छरकसाररस्कअमलवहारनामरमतअपारहै॥ प्रेमपारावारहियग्यनगलजारजानजीवनहिहारनामतंत्रएतार
है॥ युगलअनन्यमनमोलअविलोलबोलअरलअतोलनामहरहीएहारहै॥१२०९॥ खलकखरावरोहरख्वातिरनेनेकहिल
लाइएकहापिनामरंगमांझरंगिए॥ ॥

¹ खौफ खटकानिकारबनसघनसदाहशेषकेरकहां तीन तीन
य

॥ श्रीराम ॥

ललकललामसमललितरगाएउरफुरउमगायनामगाइएअसंगिए॥ भूलककलामअभिरामरुपेनेहवानकीजिएमन
नएकरसएकअंगिए॥ युगलअनन्यपनपलकपरत्यपथपैरहनपावैपलप्रीतमउमंगिए॥ १२१०॥ सीतारामनामअभिराम
विनाआनआसकालकूटकेहरकृपानफांसमधूरसहै॥ भीतावासमनतकमसानअवमानहीनकारनकलेशविशदिशाज
मजालहै॥ कीताकरतवकायकाटनकलंकहूतनकायलकईर्ष्यमर्ष्यमारकमशालहै॥ युगलअनन्यअन्यतरफनतीनिका
लतकिएहिमागरागराखिएकमालहै॥ १२११॥ अहोवडभागजाकेनाममांभप्रीतिहै॥ वाहीकेविभूतिवरवछ्रभविनाद
मोदहारसैरक्षितताकीएकरसजीतिहै॥ जेतछिवनवगनसंतरसवंतकहैंतेतअविरलवलाहललहतविनीतिहै॥ महा
मोजमाहमनमगानलगनलाग्नरहसरसालपायविगतविभीतिहैं॥ युगलअनन्यधन्यधन्यमानमन्यगन्यअहोवडभा
गजाकेनाममांभप्रीतिहै॥ १२१२॥ श्रीरघुवीरमुनामअधाररच्योहरऔरउपाधिविसारी॥ काहूकोशंकनरंचकरतीसम
रावऔरंकसमानविचारी॥ जानकीजीवनकीकरुनाकलकामकलेशविशेशनिवारी॥ युगमअनन्यवितर्कविहायवसेसो
निजनामकेधाममझारी॥ १२१३॥ नामविनाऔरअभिलासअघरासहै॥ वहविधविदुषविवेककीवरवोधखाननामकम
कीरतिवखानतहुलासहै॥ ॥

॥ नामने ०॥

॥श्रीराम॥

॥२९३॥

नाममहाराजमनिमुकुटमुराहपुटग्रसहहमनध्यायछायछविस्वासैहै॥ योगज्ञानसाधनममहसैंउदासहोयआठजामनामधाममांभ
कीनिवासैहै॥ सांचेवासदशोकजोकसजतसुनामवीचअनायासमीचमारमदहोतहासैहै॥ जाग्योजोकेजीयनाहिमांहिमाअंतानामताको
दुखदारुनदवारस्योंसस्योंसैहै॥ युगलअनन्यसंतसंमतविचारनीयनामविनाअंदोरसअमिलासअहरासैहै॥ २१४॥ चेतनअशक्तिसेविह
हपुरानकुरानकुग्रानअनेकसुशाव्दभराये॥ वूभेविनासुवकूफवृथावहुवादवकेंनहिस्याहलयेहै॥ बोधविहीनपरेवहुधामनभा
सतभिहनजन्मगयेहै॥ युगलअनन्यसुनामप्रतापतेवासनावीजजलायदयेहै॥ २१५॥ वेदपरगतविसेषकेरपरवोधउदातिविनाविलला
तैहै॥ नामनिशैंसुनेहनहींकहिभांतिलौंचितकीकुसलातैहैं॥ आलसत्रासउदासीकरणमुदमोंहिसमाइऐप्रेमप्रभातैहै॥ युगलअन
न्यप्रमोदनहींशमआकस्मातहींजायसमातैहै॥ २१६॥ ज्ञानकीनाहिभिगाभ्रमणविनहोतकहींपढिकेवहुपोथी॥ नामअनामजेपजि
येजोकसनेहविहीनलखेसवथोंथी॥ वादविवादवदायनहींतहआपनेआपनेहींदिशिचोंथी॥ युगलअनन्यसुधासुचिस्वच्छवि
हायकेमरुखवखातहैमोथी॥ २१७॥ शांतसुसीलसजोसमतासुचितोषसुवागउचारो॥ संतसजातिनसंगसोहावनकीजिएशोकव
दायहजारो॥ नामविनावकिएनकदाचितवैनअचैनहिएअवधारो॥ युगलअनन्यसुनामप्रतापसैंपाइहोप्रेमप्रसन्नताभारो॥ २१८॥

॥२९३॥

अदोष

॥श्रीराम॥

वातनवनाएव्रसनवनेगनकैसेहैं॥ होतहिएहिसमहजारनपलकमांझभोरसांझचाहचित्तचामहामऐसेहैं॥ वेदवरवाकको
विवेकोकरैकनाहिछेकनाहिअंतहकरनममैपेमहैं॥ जानकीजीवनजसनामसेसनेहछोडिजोडिरहेनागतमबीत्योसँव
वेसहैं॥ युगलअनन्यअनमोलमनिजायहायवातनवनाएव्रसनवनेगनकैसेहैं॥ १२१९॥ सीतारामनामनादविंदुगनहेव
वीजवीजअस्तुतसुखसीमासिरताजहै॥ नानानवनरनिकसततनितपनहनाहहाहाविरहितकोउलखैरँगजहै॥ वडभागविस
दविलंददुखहूंदविनापायएकलकंजमकरंदजनराजहै॥ युगलअनन्यजोनमानुषजनमपायरटैनानहीनामतोनअधिकअ
लाजहै॥ १२२०॥ पडीप्रीतिप्रवलसुरेखनामध्यानकी॥ कोटिनउपायकेकिएमेंनेकहूंनकहूंहोततिवीचमौनओजरसखानकी
शोकजोकअमलअनपसरसातराजचोजअनुरागवानीकोनसीवपानकी॥ युगलअनन्यसवसंतश्रुतिमेंहितादिमलेहैंवि
चारमेंविचित्रछकिध्यानकी॥ जानकीरमनजूकीकरुनाकटाक्षपायपडीप्रीतिप्रवलसुरेखनाम~~टेक~~ध्यानकी॥ १२२१॥ सीताराम ॥नामनेव॥
नामधामजाकेरविनितपनवसाईस्वछसहासानकूलस्यामसीयके॥ वासनाविवाहमतवालीसपनेहूंवीचकैसेहूंप्रमादवस
होतनासुधीयके॥ आमअभिलासअन्यमानेछनछासममस्वांसस्वांसवासगुनगावतसुपीयके॥ जानकीरशिकरसराहततउछाहउर

श्री सिद्धि छिसखलतपारक्षरजोरिरहेपदनविलोकिशीरानवेनेपतानके

॥ १६४ ॥ उच्चलसुवासमनिमहल्लअमीपके॥ युगलअनन्यलासत्यागिरागिरहे रंगनामधामरूपगुनअमलअमीयके॥ १२२१॥ वालाप
नहीं ते नमतरफत लासत्यागिपागिरहीं मेरी मतिनामगुनरूपमें॥ लैकिक लल लाईल छुताई अमिताई समम सुभिस्सचेतडूवि
रहे प्रेमकूपमें॥ धोरराजनंदनंदनिशोतनित्यनेहमनअतनयतनकरिवापजो कजूपमें॥ महामोहमानसमजायवजवायवम्म
वम्मजामचावविन्तचौगनोअनरूपमें॥ युगलअनन्य व्रतिवंधीव्यवहारवीज्ञविगतसुदेहसमौजमानिघाहधूपमें॥ १२२३॥
मारियमोहिनिसंकहपानकलाकरधारिनरंजनराहे॥ डारियदृगनिसों चरतीवहुवासरवासनावीजहराहे॥ तारिय
तोमतमोगुनतेदुखदारिएहीयनरूपभरोहे॥ युगमअनन्यमुअजेमुनोसियरामतिहारईखोटोखरोहे॥ १२२४॥ लोकहूवे
दवपानप्रसिद्धभयोजेहिकोजनतौननिवाहे॥ जानकीजीवनजुसुनिएगुनिरपचितचाहविलंबकहाहै॥ पामनमें काकहू
मनमेंशरनागतपालसुभावसहीहै॥ युगमअनन्यनिहारिएनैनसुशोकसमंदमेजातवहाहै॥ १२२५॥ कियतपकोटिन ॥ १६४ ॥
वासमीतघामसहिहिहिहहिलमिलिगएदेवतानमें॥ औरहूसमहसुचिसाधनसमिद्धसवकसरनकाहूमेंतिवात
ववतानमें॥ युगलअनन्यएकछमाविनमएविनाअफलअयोगरोगरूपकेवतानमें॥ १२२६॥ आजसैरनहिनेसन

झूलना

॥श्रीराम॥

कौ रहैं नहीं लैरिपु गाघडी उठि वैठनौ है॥ मोरि मन मदन को सौ सहस सदन में हौ पहु सयार अवै पठनौ है॥ किसी से काज कुछ
मीत मुझको नहीं विमुखसैं भली विधि वैगर्ठनौ है॥ जुगल अनन्य श्रीनाम सुधासिंधु में रम वहम मै जमि लिमैटनौ है॥१२२७
मेरे सम मोह मद मलिन मलेसमूर कूट विस्व वीच आप परिवारन ओरे है॥ वारवार वहत पुकारि कै कृपाल अपनाएं विलंव
को किकाय वहतो रहै॥ ऐसो अपराध धाम विमुख मुख स्याम होत सनमुख महाराज योग्य गोरे है॥ लीजिए लगाय पर्प दपंक
ज परागवीच जुगल अनन्य को न आन कहूं ठौर है॥१२२८॥ वालि वली हरसी शीश सुहाए तत्र अंवक कंचन कस्यप को है
मोरी महामद मोह मनोरथ मूढ पनो तिनसे अधिको है॥ देखि दही नद पाल उपाधि अवाधि रचाय रहे तित गो है॥
जुगम अनन्य सुवोध मनेह परा प्रति भाउ रवेहत विगो है॥१२२९॥ मोको न भूलिए मोह निकेत उपेत मैं पाँव हूं प्रेत असे
त है॥ को [illegible] कियो नहिं मो हिअ चेतम चेतनता स्वामि सनेह समेत हौं॥ रोको न मानत मूढ मनादि फंकावत नित्त हीं उ
सरेत हैं॥ जुगम अनन्य अयोग अवी अपराधी तउ प्रभु नाम तो लेत हौ॥१२३०॥ श्रीमहाराज उधारे अपार विकार अ
गारन संक कहूं है॥ पेपन पाल कृपाल चहूं जुग मांह मेमेरे समान न हू है॥ हाय हवारह शीघ्र अभीत रवारह मेरे लगी सुद हैं॥१२३१॥

जुगम अनन्य तिवाजिरनाथ द पाद जद लिखु कीरति है ३१

को लो

॥नामने०॥

सुखमासोहागसद्दसद्दनसुधेरासीयचेतसुमिरतसुखमेगुनसुलीजिए॥ नारततमामनमतीननुकलीफतैोवेतोऊततनकता
सुधारतपतीजिए॥ रागरसरूपरंगराहतरसेशारासरोजरेरागरहितनिद्दानरारमीजिए॥ प्रगलअनन्यमैमोनमोहमसनंदमा
नमालिकमकानमाभरैनचैनभीजिए॥ १२३२॥ सीमुखसिंधुसुजापततेोकेसस्वाहसोहावनसच्छसुपावै॥ नातिरवेनी
अनंतलेहफलत्यागतसैावरतारतनावै॥ रागरिरोजरहेरसेमेमिलिराहअथाहचेतहिविछावै॥ प्रगमअनन्यमकारमनोह
रजीहजपेजगजालजलावै॥ १२३३॥ सीतारामशारनमसेतमरजीवजगजाहिजनेशआसनेकहंनराखते॥ जानकी
जीवनपदपद्मसद्मसुखमधुरमरंदहीनचाहिचाखते॥ अवधविनोदवरविपिनविहारीजनमैनरूमेशजीहज
समीजिमाखते॥ प्रगलअनन्यनामपरमपियूषचामस्वादीसंतसततस्वरूपअभिलाखते॥ १२३४॥ श्रीअवधेदुअमंदप्रभा
मी
प्रतिभापवमानिप्रसंसिसुकीरति॥ मोहमयीमहिराकीरपानअज्ञानवभ्रमाएमक्तिसुवीरति॥ सोयोमनाहिअजानिसमा
हिजगाइरामेजिहयासुचिसरति॥ प्रगमअनन्यकृपालकृपालकृपाविनवारहीवारवियोगविसरति॥ १२३५॥ सीतारामना
महींमेंवेदसंहितापुराननज्ञानध्यानभावनासमाधिसरसतहै॥ सीतारामनामहीमेंभौंरभक्तिमुक्तिसुक्तिचरसापकैविचित्रएकरस
दरसतहै॥

॥श्रीराम॥

सीताराम नामहीमें तत्वभांति वाग युगपर ब्रह्म प्रमुख स्वरूप परसत है॥ युगल अनन्य सीताराम नामही में मोद विसद
विनोद वार वार वरसत है॥ १२३६॥ सीताराम नामहीं सें दिव्य कलकाय होत जोतन गमगत अनपगनपार सें॥ सीता
राम नामहीं ते अगन सगन पार परम परेश प्रगटात सुखसार सें॥ सीताराम नामहीं के रटत रटत मोह वारे अंग अंग तेल
सीकर पसार सें॥ युगल अनन्य सीताराम नामहीं के वारए तार अवलअजवसुधारसें॥ १२३७॥ जानकीजी वनजू कीह्न
पाक मनीपल ह्वै जेहि जीव सुभागी॥ साधन सीम सुधा सद स्वाद सुचाखि के मस्त भए अनुरागी॥ स्याम स्वरूप में सु
द्ध सुनात लगाय मगाय विकार विरागी॥ युगम अनन्य अनूप उछाह अहाह अचाह दसा दुति जागी॥ १२३८॥ स्वाक अ
पाक समान वितान दिरं चिविम तिसुनैन निहारें॥ सांवरी सूरनिताक केरनित वाक विकों विसारि असारें॥ भौंकि के मोह
नी भरति कोलल चाय विकाय गए सुखसारें॥ युगम अनन्य अनाहत नाद सुनेन वनूपुर शब्द वहारें॥ १२३९॥ स्यामसिक
अंक अपंक कहि एगत संक अवंक अनंत क अनायव॥ रंक कलंक सुराव कैं वरई कविचित्र वजाय अगायव॥ पीनपुनीत प्र
तीत परापति प्रीति प्रहान प्रपंच पलायव॥ युगम अनन्य सुमंगल जंगल वीच सुविंदु चराचर सायव॥ १२४०॥ ॥ ॥

॥नामने ०॥

श्री सरस्वती पुस्तक भंडार

॥श्रीराम॥
॥१४६॥

स्वस्तिक स्वाद सुधा सुचि सीतल सार समूह सरोज सँवारो॥ सीम सनेह सुमोद विनोद प्रमोद प्रकास निवास सुधारो॥ चाह उ
छाह विहार विभव परिपूरन प्रेम प्रवाह द जोरो॥ युगल अनन्य हिय हुलसो सम द स्वस्तिक अंक असंक वहारो॥ १४४१॥ जानकीव
ल्लभ भाव निधान सुपाद सरोजन हि चिन्हहिं ध्यावत॥ कोटिन कामकले शाके टप रप्रेम पेट अनयास लोभावत॥ नित्य नियाम के नाहि
न नाजनि वाहन हारो ह मेश सोहावत॥ युगल अनन्य सुअंक प्रताप ते वासनां द विलास वहावत॥ १४४२॥ नाम ही के रटे ते उदास
ता विनास है॥ प्रीति परतीति रस रीति सुविनीत गुन गहर गंभीर धीर सीर सुख रास है॥ लोक परलोक में अशोकत मनोक विना
महत्त महानन की सभा में सुवास है॥ अनायास उदित मुदित अभिलास खास मंधुर सुमंजु कंज विशद विकास है॥ युगल
अनन्य सब सिद्धि करतल नित्त नाम हीं के रटे ते उदासता विनास है॥ १४४३॥ क्षमा महरानी सुखखानी दुखहीन दुतिदानी
अभिमानी नर जानत न भेद को॥ संत पद परम प्रधानता में मुख्य क्षमा ह माची जपास नहां कमी को न खेद को॥ क्षमा गुनगान
सावधान सब संत करें भरें हिय हरष जारन उमेद को॥ युगल अनन्य सब सामाजिय मुहानी स्व[illegible] पाद पद प्रतक्ष प्रेम क्षेम
मछेद को॥ १४४४॥ सीताराम नाम[illegible] की धौं काम कल्प वेलि हाम की धौं खास आम मोद बीज वाम द व धन॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥१४६॥

॥श्रीराम॥

कीधौंकोटअटहासचौरकेवचाइवेको कीधौंप्रेमपाटअनुरागवितरनछन॥ कीधौंज्ञानध्यानसुभभावनमफूलफलअमलअ
कलकाशकीधौंरंगरासछन॥ युगलअनन्यकीधौंयुगलसनेहरसरूपछोरछुपेतेरहितरशिकेशामन॥ २४५॥ कीधौंवेद
संहितापुरानकोजनककीधौंपराप्रीतिपरमअमलकअनमोलहै॥ कीधौंश्यामसुंदरसनेहीकेमिलापीमित्रकीधौंएकरूपभाव
द्वैतविनानोलहैं॥ कीधौंअविलीकलोकमोदऔविनोदसारकीधौंहनूमानहरहारअविलोलहै॥ युगलअनन्यकीधौंने
हीमनभूलिवेकोअमहींअनूपरंगहारसुहिंडोलहैं॥ २४६॥ हेअविकिरस्कवजारहुकानकेमोहासोहावनपावनप्यारो
कीवरवीनविनोदविहारीकिधौंगुलजारउदारअधारो॥ कीधौंमनोहरमंजुलहैदुरवीनस्वरूपदेखावनहारो॥ युगलअन
न्यकहाकहियगाहिरमनमौजसुसांझसवारो॥ २४७॥ नाममहामनिकांतिकलाकमनीयरसारमनीयरसायन॥ पा
र्वतीपतिप्रानपयोनिधिमायीसुजीवनिजीवजिवायन॥ संतसनेहीसोहागसुधासुचिमारसमोहावनभायेहंभापन॥ यु
गलअनन्यअवधारअभयप्रदधागहेसराविहायविहापन॥ २४८॥ जानकीजानिसुनाममहारसखानसुजानसनेहीअ
लोकी॥ पांचहुंमेंमसिरतानसुराजविहारीविहारलखेकोदशाकी॥ ईशपरेशप्रवोधाविधायकनायकनेहअधीसुजोकी॥

॥नामने०॥

प्रेमअनन्यअजापवचीजअतीजसुवीजविभौवितचौकी॥ २४९॥ माधुरीमूरतिसांवरेकीफलकातीसुनामललामकेअंतर॥ जो
हिएप्रीतिप्रतीतिनिमेमेतउचारिकेरंगउमंगसेंमंतर॥ आपहीं आपप्रकाशउठेउरचंदसुभानसमानवसंतर॥ प्रेमअनन्यअव
निमानिजनानिएसुनिरागिनीयंतर॥ २५०॥ राकिकेचितचलाकमलीविधिरस्कमजापेनामअखंडित॥ भौंकिकेभारहींवीच
विषयव्यवहारअसारविकारअमंडित॥ धौंकिकेप्रेमकोपानहिएगलिएवस्तुविचारविहारसुपंडित॥ प्रेमअनन्यसमेशहींचौकिके
धूकिरनालनवालविमंडित॥ २५१॥ जानिएउरथानाभिसमानसुतारकतारकतेरतनाए॥ जानिएमेरअछेहअरेखहसुसं
तसमीपअहमविकार॥ मानिएश्रीगुरुवैअविलासप्रकाशकोकारनजीवजिआए॥ प्रेमअननमानठानिएदूसरीरीतिअ
रीतिसंभीतिनिसिहाए॥ २५२॥ सीतारामनामभक्तिकीजिएकषायकल्पकाटिनेनिवारिसंतसंमतसुजानहै॥ राकिकेहमेशा
वृद्धिवनिहूंअसेषमहकरनस्वरूपध्यानधारिएप्रधानहै॥ वारवारविसरविवेकव्यवधानविनापरमपियूषसमसमृचि
तपानहै॥ पुगलअनन्यआमअकलकुसंगअंगधारिएननेकुवैनवहतपरानहै॥ २५३॥ हापेकेहमशमनमगनलगन
लाललोचननिलापमोजमाहलीसमाइए॥ रोपेकेएकांतकांतकलितनानवाइगाइगाइएसाहारएविकारवहवाइए॥

गोयकेरहस्यरसराकृतरसमसरूपैजोप्रानीरवाहपराप्रीतिपगवाइये॥ युगलअनन्यचित्तधोयकेसनेहनीरभीयमामसंगरंगअ्रा
॥श्रीराम॥ त्मारंगाइये॥ १२५४॥ हेसियरामसुचामनिवासीपयषपियषपिवाइयेऔरनयाँचो॥ आठहूंजामछकेकोजसनामविराम
नहोयमिलमुदपाँचो॥ लौकिकवैदिककामकलामकैदेनकहूँरसनाकृतकाँचो॥ युग्मअनन्यसनेहसमेतसुनपरवाँवि
समीपहींनाचो॥ १२५५॥ हायवितायहियेदिनवावैरोछावैरोगावैंनामविनामैं॥ कायकुदायसंवारनेमैगयेभूलिमनिंद
अनिंदरनामैं॥ हौंमवहोविधिधमरअगरदनिगूढभिरंतरवासनाधामैं॥ युग्मअनन्यसुहारदपानिधिशीजियदाहदह्या
यसुजामैं॥ १२५६॥ भलेंदहगेहदुखदारुनदरागतहाँफूलसुचिसुमनसुनतसवैतोरहीं॥ सहजसुभायचायचौगुनचरा
वैचिनवित्तप्रियप्रानदानकैरगुनगारहीं॥ विमद्दविभावअनुभावपदुपोषजाहितोहिरसगशाकनिरुपतअजोरहीं॥
युगलअनन्यतामेभेदनवदाहशाहुप्रगटनगोपजानेबुवसिरमोरहीं॥ १२५७॥ उज्वलअमलहोमवीरअभ्दुतरुद्र
करुनाविभत्सअोभयानकसुसांतहै॥ वात्सल्यसख्यदास्यमिलितसुभानसुनिहोतहैनलशाशाकसमअष्टअम्नातहै॥ ॥नामने०॥
भावतेउदितरसभावपाँचविधिअसवदतवुंयशोजानमैंवसियकेंतहै॥ युगलअनन्यअनुभावओविभावसुविसात्विकसंचारिभाव
जानिगनितातहै॥ १२५८॥

मुग्धबुधिबीचजोउठतवृत्तिआदिसोईभावरसजसअनकूलदृगदेषिए॥ सरससुहेतसौंविभावभांतियुगजानुआलंवनवेसहीं
उद्दीपनसुपेखिए॥ जौनअवलंवसैंसुस्वच्छप्रगटततौनआलंवनविहित्तविचारैढततेलेखिए॥ युगलअनन्यविषयआस
रसुभेद्दहेरिविसद्दविनोदमोदचित्तअवरेखिए॥१५९॥ केरजोउद्दीपनसुद्दीपनसरूरंगसोईतौउद्दीपनरशिकरसछानही
खटोरितुवागरागरहसरसालमनिमहलअनूपमुद्दमालपहिचानहीं॥ वचनविलासविनवद्दनविलोकिरसमत्ववकसमछ्छअ
नुरागजियजानहीं॥ युगलअनन्यबीजसमसवरसमांझथीरहोयरहेसोसुधापीहेयमानहीं॥१६०॥ रसराजसोमअभि
रामसौंगारसंगरससहितहरितहियहरनसुहेरिए॥ अद्भुतवरनविचित्रवागमनसुनगोचररहितकोनभांतिसैंनिवेरिए॥ औरा
समोहतसमैपैसाथगायवरविहितनगोपवधवूफतअफेरिए॥ युगलअनन्ययाकेवीचहैनेनकर्सकअकववकवाद्दवपाव
कननिवेरिए॥६१॥ छाइएविनेकेवीचसुवांदनीनामस्वरूपअनूपहमेरी॥ लाइएलागअदागहिएहरसायतहांशहिपय
विशेस॥ खाइएखाहिसखोफमलीविधिताइए॥ आपनीवटत्तिसुवेसे॥ युगमअनन्यसमाइएश्रीसुखसागरधामविहायविदे
शे॥१६२॥ शौकअतौकसुजोकजमायकेजीवहीवीचविकल्पविसारो॥ धौकनीनामअनामलगायकेचोकनीनायकामीच
निसारो॥

॥ श्रीराम ॥

खि
छोकनीछामकरीपरवासरमौनमहानसुजानविसारो ॥ युगमअनन्यअलौकिकीरीतिकोउमतिमानकेमांझरमारो ॥ १२६३
श्रीगुननायकशंभुप्रियावामुनिकुंभजकोकिलहंरिषिनारद ॥ लोमससमायानिहारिमहामुनिज्ञाग्यवल्लीकसुबोधविसारद ॥
वृसनहरीशमुनीशनिरंतरनामरटैंथिरकैमनपारद ॥ युगमअनन्यप्रतीतिविशेशशसजाएनामहीमेंश्रुतिहारद ॥
१२६४ ॥ कौननिमित्तकलेशकरैंवकैरानछैरामुखशिंधुकीओर ॥ आकस्मातभरोभलभावननाहकरेखदकुवारिहलोर
संतसमाजमेजायभलीविधिपूंछिएप्रश्नसोउकरजोर ॥ युगमअनन्यकहेगेअवसाएहीकरुनाकरिनामसुचोर ॥ १२६५
जानकीजानिप्रशायकेप्रेमप्रबोधसुध्यानलगायकेदेखा ॥ वासनावंदघविसायभलीविधिलाइएशौकसलाहअलेखा ॥
भावनासौंचीसजायमहामुदनासिहैआपहींकालपरेखा ॥ युगमअनन्यसुधामबसेअनयासउजासउमंगविसेषा ॥
१२६६ ॥ हैमतउनममीतरहैगहैज्ञानप्रधानसियावरसांचै ॥ छोडिछलीछलसंगअरंगसुसंगसुरंगसजेतजिकाचैं ॥ ॥ नामनेम ॥
पारसप्रीतमप्रेमप्रभावुरलायवहायविषयमदमाचै ॥ युगमअनन्यसुनामसनेहसमेतरटैफिरिनाचननाचै ॥
१२६७ ॥ सप्तकांडमांझसाररहसरसालहै ॥ वालकांडवीचवरवालकविनोदवनिविसदविवाहचिताचाहमुदमालहै ॥

॥१४८॥

अवधसुकांडमांहअवधकिशोररसरहसविलासखाससरससुचालहै॥ वनकांडविमलविहारविप्रलंभरसपोषकसिंगारसमुभ
तखुसहालहै॥ युगलअनन्यभावविसद्धवलितलालखाजतसुवालसुधिवुधिनसम्हालहै॥ १२६८॥ किष्किंधाकांडकमनी
यकथाहरखकीविधिविविधिविधानसुचिसुंदरसुजानकी॥ पायकेप्रवीनपीनप्रेममेंअधीनहोयदूतीवरवचनसुननचाहमा
नकी॥ युद्धकांडवीचकलिकीठनकषायहायहरिकेमिलापतापतरनपछानकी॥ युगलअनन्यजसउज्वलउतंगगनउत्तरसु
कांडभलीभांतिरचिठानकी॥ १२६९॥ सप्तकांडकलितप्रवंधवंधमोक्षपरपरमप्रवीनमनमरमसुजानिहै॥ मिथिलेशनंदि
नीसोहागरागरंगगुनकेवलवाथनआदिमध्यअंतमानिहै॥ महामुनिराजवाल्मीकठीकनीकमतस्वामिनीसुजससमुदायछ
किछानिहै॥ युगलअनन्यवाहवातनमेंकौनकाजमहाराजरसअनुरागहटठानिहै॥ १२७०॥ मरमसिंगारासराजेकस
मानरसअपरवहतवातवनतनएकेहै॥ युगलकिशोरचित्तचोरंगवारसुखअधिकअजोरजौनठौरहठेरकेहै॥ और
रसगौरकीकिएतेमानकूलसंग्रामसजतसुसेनसमवृक्षिएविवेकहै॥ युगलअनन्यछविछकनतकनतरतरलसुतीरचितव
नमेंहतेकहै॥ १२७१॥ सीतारामनामतारसीमहगहेखिय॥ परमप्रकाशमानजमींआसमाननकएकरसरूपछविमुगनपरिरिए॥

॥१५८॥

१ ८नामअमितगमसांहिनामीलितनासवदरवजुनगुननगजोगअवेदविद ८

॥श्रीराम॥

पेडसवसंतनकीनालतकरोखारजेपजैनननामनहीताकोकोनलेखिए॥पुगलअनन्यश्रोरमंत्रनकीकोनकथासीताराम
नामतारसीमदृगोहखिए॥१२७२॥तीनआसपायपीनभोनजनजोहिहै॥जानकीरमनविनअन्यदेवइष्टभावदूसेररसा
यनकुवाहअनसोहिहै॥जैानजनजानतजमातहींसुपूतसमतोनकीखरावीअंतसंतवचहोहिहै॥सारासारवस्तुवरविमल
विचारविनुपीरपीरपीशवारवारनरकोहिहै॥पुगलअनन्यसावधानसतसंगमजुतीनआसपायपीनभोनजनजोहिहै
१२७३॥देहभेदखेदपारतनोईअोरिहूं॥जेपजीहमारितप्रवाहकेसमाननामहोयनानिरोंआठजामविघ्नकोरिहूं॥जेपताप
वासनाविलायसेविहीनहोयखेपलोकशोकमेनकैसहूंअगोरिहूं॥नेपनितनेहमईभूमिकाभूमिकाभलायआपकेपेन
कछापिएकरोसहूंलगोरिहूं॥पुगलअनन्यगुनगायकेरिभावेरामदेहभेदखेदपाररतनोईश्रोरिहूं॥१२७४॥होतअभि
लाषलाषभांतिनेसेंसाधिशिवसेहवशरसनामरटेएकमारहीं॥तीनोतनत्यागिपागिरहोरसासेंधुयुगवरनविचारवी
चसीचसुखसारहीं॥सीतारामजूकीकृपाकलितउद्धारपायपरावारप्रेममैंसमाइहोंसवारहीं॥पुगलअनन्यश्रेसोभाग
हागहीनकवरामनामहोयप्रानजीवनअधारहीं॥१२७५॥वाल्मीकिमहामुनिरामचरित्रविलोकनीकठोकदैसमाधिनामकीरूपक
कस्तवक॥

॥नामप्रे०॥

पापापरतछेप्रमक्षमेहमेहनहारअरुबंधपुरेशमरकारछुविछोहछक॥ वाहीतैंतारैगोरउरउद्दितमुदितराजसोजचैजकोनपासकू
हैंहेतुहीनवक॥ पुग्गलअनन्यमतकेऽतिअर्वखर्वनामअमितअनंतरल्लाहहैंविहायवक॥९२७६॥ धपावैनवारवकिरएकपल
हूनमीतकैसेहूंवित्तेहैनाचितैतैसांचमानिए॥ महामोहहैचैनअेननामग्नावाहविनादूसराप्रपंचरंचअंचकोचनानिए॥ खान
पानमानभानहानव्यवधानसुखबूझिकेविमलबोधवलितपछानिए॥ पुग्गलअनन्यरूपअमलअनूपधामनामचित्तवीचद
ढतारिकेशघ्यानिए॥९२७७॥ प्रानमध्यग्रह्योतनथूलसूक्ष्मप्रघतिमिसुक्ष्मसरीरमनमाहिंग्योभीतहै॥ कारनवपुषचित्तवा
सनामैंगुपितह्योवसोभानविषमविषादअनरीतहै॥ पुरियाजोतनमहाकारनविचारिएजुसोतौअहंकारअहंब्रह्मग्यो
गीतहै॥ पुग्गलअनन्यहंसतनअविकारपरप्रीतमारहस्सासुखसहनअभीतहै॥९२७८॥ ज्योतिरूपकेवलवपुषजानुचिन्मा
त्रहैजबजीवतत्वघोषकेविहीनहैं॥ ताहीसेमैंमिलैमुक्ततनअविकारिमिथ्यारामकीझपातमहामोहरमभीनहैं॥ जानत
नअनुभगारतविनावोधवरविषमअमितमतवाहवांकेहीनहैं॥ पुग्गलअनन्यएकरसअनमोलमनिप्रभाअविछिन्न
तोममतिकियालीनहैं॥९२७९॥ पारिजातकोटिननिछावरिअमरधेनुसंतवरवचनविचित्रपरकीजिए॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीराम॥

तनमनधनपरिवारजेतमोहनिजहीनकेसमानहोयतिहूंजायहीजिए॥ कौंनेंजोअनादरतोमोहरश्रवनकीसमुझिसेन
हगांमरंचकनखीजिए॥ युगलअनन्यजौकमैरीपरीक्यौफेरिउनकीक्रपांतयुगयुगानलौंजीजिए॥ कामक्रोहकलुषकलें ॥१२८०॥
कंकदुराईकलिकायरकुसंगकालकीलकीरीकोकहै॥ करामातकहरकतारकारकामुककरतकितकक्रतकनककुशोक
है॥ काननकषायकेलकलित्तकुवालकोलकायनकेलेसकेशाकरषजिताकहै॥ युगलअनन्यकोअलिशकीक्रपाकटाक्षक
लितकलोलकामकारकनिशाकहै॥१२८१॥ जानकीजीवननामपरावरधाममहामहमोहप्रदायक॥ लौकिकलाजसमा
जहरवानलनामनिमित्तन्हेंनेशासुभायक॥ मोहमहातमतामप्रभाकरआकररंगरहसमुनायक॥ युगलअनन्यविचित्रवि
भववनवासिसहेतुहमसरामहायक॥१२८२॥ सीतारामनामजसजिकरनमीनजाहिजीवनजहानवीचसफलरसालसो॥
मोतमहामोहमहमधुरमरंदमांहिरातेरतिरहसरसिसममुक्तमालसो॥ आरटजामकामअभिरामगुनग्रामगीरगानगीर्वान ॥नामने०॥
गतिगाहकीनवालसो॥ युगलअनन्यरागद्वेषदुर्मीतिद्रोहविगमतउछाहचिन्ताहविधुमालसो॥१२८३॥ नाममहाराज
राजमुखदसमाजस्वच्छसावधानहोयधीयध्याइएअखंडतर॥ काहकोनसंकपंकतंकहूंलिगायनायआपहीसेआपरघुरायवाहुंहंवर॥

वीशएकसातयुगजावतीसमिधिधारिद्धिनिद्धिहाथजोरिकरिरहेगोघमंडउर॥ युगलअनन्यकीजेपलकविलंवमतअसत
समूहऊहव्यूहअंतखंडनर॥१२८४॥ रागरघुवीररनवीरसागरंगमांझमोरसांझवांझवागविरसविमईके॥ वास्तववो
धवीचवीचनीचएकमतवासनाविनाशनामअशरनसुहाईके॥ कामकार्मुककोरिखंडनप्रचंडवलमवलसुमंमधारनाक
संत
पाईके॥ युगलअनन्यनामनेहविरहितजनजानिएविशेषवालवन्नावलीवाईके॥१२८५॥ मोकेस्यामसुंदरसनेही
मनमुखसहाफिरावाककायचित्तछलिनछलायके मोहेंमनमोहनमित्रजाजरघुराजरूपअमलअनूपधीयधायवह
लायके॥ पोहेप्रानपरममनीशस्यामश्याकमूतराहें हुतिरामिनिसुभावनभरायके॥ युगलअनन्यजोहेजाहिरीजहा
नन्नाहिवोहेव्यवहारतारतम्युनतोरायके॥१२८६॥ कोटिनकीकरतूतिकलाविनरामललानहिनीकलगेहे॥ छो
टिनछोहसेकाजनहीगुरुज्ञाननगरीप्रमुप्रानपगेमें॥ चोटिनकाटिकेकोननफामनमांझसफागतमनमिमगेहें॥ युगल
अनन्यलेंगोटिनलागमेंवांधकहांसियस्यामसगेहें॥१२८७॥ कोउतोकहतसवछसुधाविधुवीचवसेकोउकवि
वचनविनोदवीचगायोहे॥ कोउतोकहतहेंवलोकमेंसवलोकमांझवसतपियूषमेरेमनमेनभायोहे॥ सहितकलंकपंके

॥श्रीराम॥

[illegible]पतितविकाररुचितातेअमीअमलनकहूंछलायोहै॥ युगलअनन्यनामनिरतसुसंतमुखमत्पवासअम तअमीवप
रुपायोहै॥१२८८॥ नामरटेअभिलाखवढाय़लेहेमसअावरुपातअनूपम॥ मोतकोथैलनभाललेगजेगजानकीनाहसे
प्रेमनिरूपम॥ संतसमागमकीन्हेविनानहिभेदखुलेअतिभीनस्वरूपम॥ युगमअनन्यविसारिविषयभ्रममतिएनाम
निसागतधूपम॥१२८९॥ काहेकोवादविवादवढावतनामरटोरसनासुखदाई॥ भावनानामअखंडितव्रतकरोसव
मेवहुभानभुलाई॥ सासनाबेदपुरानअनंतसुनोनहिकानसुजौकजगाई॥ युगमअनन्यकहौमतकाहूसेआपनीरीति
प्रतीतिवढाई॥१२९०॥ सीतारामपरमपरेश्वरप्रसादप्रियपावनप्रभावसर्वालेव्यर्थेवागाहीं॥ लोगनाकोप्रवलअ
साधअपराधतातेहोयसावधाननामहिव्याजनरागाहीं॥ सीतसीतप्रतिवाजमेथयोगाध्यानफलप्रगटनेलेप्राप्रीकेप्रेमपा
गपागहीं॥ युगलअनन्यमौनसोईसवभांतिजामेनामरूपकीतिषछमिषतादिमागहीं॥१२९१॥ सीतारामनामनेहन
वलनिधाननित्यनिजानंदप्रदप्रदपावनेभ्राजापिए॥ रिधिसिधिसाधनसमहविषव्याहहेहारहूजिएउदासअासभोग
भामसापिए॥ जानकीरमनदोपरमनसुंनेहस्वछपरमप्रतछअछनीकेछकिछापिए॥ युगलअनन्यलोकलाजखेहलाजसम
मानिएहमेशाकालआलसेनकापिए॥
॥१२९२॥

४

॥नामनं०॥

२पृ. ५१ का

॥श्रीराम॥

॥१५१॥

सीताराममजनमेंवेशभावनीयहै॥ जानतसुजानरसखाननामरूपगुनपेगजोनेप्रमहेसमपागपावनीयहै॥ जानकीरमननेहनि
धीथासमौभमनमगनठगनजंगजीतेरावनीयहै॥ काहूसैंनरागद्वेषरैरखाविवादचित्तमद्यमावधानस्वछछछबिछावनीय
है॥ युगलअनन्यनीकेनेननिमिहारेनित्यसीताराममजनमेवेशभावनीयहै॥ १२२३॥ जानकीजीवननामसुधामसुधासतस्वछ
मनेहसेपीवो॥ मानिमहामुदमोदमहोदधिवासनावेंदकुछायनछीवो॥ छाछसमानविधाननिकायनिहारिविचारनिजा
नंदछीवो॥ युगअनन्यसियावरकीरतिगायनिशंकचहूंयुगजीवो॥ १२२४॥ श्रीमुखसागरनामपरत्वपरशास्त्रमेदहिएअरथा
रो॥ संतसभामदसारसमीपसुप्रश्नकिएवरवातविचारो॥ त्यागिदेहाउदिसिकीअभिलाखसुलाषनमोंतिसनेहसवारो॥ युगम
अनन्यवसोमरजूतरतीरवहीरविकारनिकारो॥ १२२५॥ देहदशादिसिदेखतहानप्रधानपरारतिरीतिनभासे॥ गेहसनेहसुवाससजे
सुखसौगुनस्वारअनादप्रकासे॥ संतसुवागमनोहरमेहतेरतरहोयकुतापविनासे॥ युगमअनन्यउछाहहजारअघाहहिएहरसा ॥१५१॥
यतस्वासे॥ १२२६॥ वागविचारविचित्रवेदविमलाधिपवोधविहारवनाए॥ आगअरागअभागलखैंललचायललामवितानतनाए
कागकलंककलाकरनीतिनिकायसियावरहीनहनाए॥ युगमअनन्यअघागहेदहसपारवहारगनेशगनाए॥ १२२७॥ ॥

साधनतम्हसेंतुदुर्लभतोनधामनिहैंतुलकालीसेत्रापतपराहै

॥श्रीराम॥

मानसमोजनिशोनतहायरा जानकीजानिसुजीहजेपोरी॥ आलैंसाजसमाजभलीविधिधूरिमिलायसुतापतपोरी॥ चालैसरमुजीतेकिना
नहिहोतप्रमोदविशेषषपोरी॥ युगलअननमअखाहिसरीतिप्रतीतिसंवरिसुधामछपोरे॥ ९२९८॥ सीताराममसरसमर्थसुखसीमनाम
नेहसेसमेतपायपुन्यरूपपेखिए॥ जानकीरमनाप्रियप्रवलपरत्वविनासुक्रतसमूहसोउपायतमेलेखिए॥ पालेसावधानहोयतपाशिव्यवधानवी
जबीजउत्साहखानसरसमुलेषिए॥ युगलअननन्यैवनविहितविचारनीयकीजिएसुनामकोउचारअनिमेखिए॥ ९२९९॥ पायवपुअम
लअवर्णाचतनत्पाशिजायजगाहीश्रईशरामलोकसत्यैहै॥ सहासतवीवव्रह्मव्यापकअकासममानिभक्तिभावयुक्तसुघनासुनित
है॥ युगलअनन्यसंतसंगरसेवस्वच्छसकलसुदिव्यफलदानहजुक्तिहै॥ ९३००॥ महामोहमंदिरस्वरूपनामकोटिकाममभिरू
हचिंतामनिसहससमानहै॥ नेकनेहकियेगनगेहकरैंनीचनरहेरेपापतापकतिशदरशशिज्ञानहै॥ जहांलोजहानवेदवीचगनग
नध्यानगानताननामहीकेतंत्रजीवजानहै॥ युगलअनन्यअमअासवासफांसजानिकीजिएकामिए जिकरविविवरनप्रधानहै ॥नामने०॥
९३०१॥ होयमहाउन्मत्तसमानसुजानपनोअपनोसमलेखो॥ लौकिकवैदिकपंथविसारिचलोपथप्रेमअनेमअलेखो॥ गाढ़ोगरूरय
मानविनागनगानसियावरखेविसुरेखो॥ युगमअनन्यसहासुखहायजोमलेननिर्मलनामनिमेखो॥ ९३०२॥ जोहियजनममरिभावना

समायचारुचाहकारिजोरीसियस्यामनखसिषैलै॥मोहिएनिहारिएकटकललचायछविछननविछोहिहियसुरंगगुरुसिखलै॥पो
हिएप्रतीतिप्रीतितंतुमाहिचित्तमनिसोहिएसनेहसुखतागिलोकविखलै॥युगलअनन्यअवरोहिएसुपानरसअरसअरसअसेष
मत्तछेडोतीरतिखलै॥२३०३॥गौरस्यामअंगउपमानकोनकेहकविदविजैंतिमतिगातिअकथविचारिकै छनछनछविआननजर
परतहिएहोशहींहरतसुनवीनतापसारिकै॥रशिकअनन्यसंगरंगजनवचटेतवसुखमाअजवहरसातडरडारिकै॥युगलअनन्यरमिर
हुनामधामगुनजगतजवालजालजनताउजारिकै॥२३०४॥वडभागीसोईजेहिनामपरावरनाहकोज्ञानप्रकाशभयोहिल॥द्रविगए
अनुरागसुधानिधिदूरिविहायकुकायमनोगिल॥सांतिसुसीलसजायसहायअवलोकिअहाउरझायरहेमिल॥युगमअनन्यनहींजिन
केजियवासनावीजसुमेरपरह्योतिल॥२३०५॥मुक्तिरूपनायिकानवीनकर्नफूलमुनिमानसविहंगरंगहारयुगपक्षहै॥अधिकअ
पारपारावारभवतीरभूमिरतरुतजानतसुजानहिलहक्षहै॥कलीकालकलुखकलंकतोमतमनासकारनअनूपशामअर्कआ
तस्वच्छहैं॥युगलअनन्यपुन्यपुंजद्रुमहोउहलललितसुवेहनैनचैनप्रहस्यअच्छहै॥२३०६॥कहाभयोभयोयोगवसुअंग
साधेप्रानपौनमस्तकचढायवहुकालजोपैराखहीं॥होतकहासिद्धनसमूहकेमिलनवीचकीचलपटानिरजभरतसुअंग्राखहीं॥

कहै कोउ जतन तरत सवंत भजो रामनाम सुन तसको प दुख लाग वत लावही ३

॥श्रीराम॥

ज्ञानगुनगंधनअपारकेवखानेकहाजानेओपछानेदुषदषननाखहीं॥ युगलअनन्यसवकरतववांभसुतसहस
अकाजविनारामरसचाखहीं॥ १३०७॥ वडीवडीसभाजीतिपाएजसलोकनमेंशाकनकेमध्यपडेपंडितकहावहीं॥ विपुल
विपुलविवाहनपानपावितेहैतुरवेंपचेभूपानिकटसुमानविसरावहीं॥ युगलअनन्यमतिमलिनमलेछसमवारवारये
निमकराहिसठपावहीं॥ १३०८॥ जैसेएककनजातवरकोप्रवलघनसहससुमेरसमतूलजारेछनमें॥ जैसेसूरवीरअ
परएकहीप्रतापमानहलेकोटिकायरकपूतनकोरनमें॥ जैसेसिंहएककेगराजसुनिभागजातवनहूंकोंतजिमृगअनतविपनहै में
युगलअनन्यसीतारामनामधुनिसुनितैसेहींसपदिपापरहैंनहींमनमें॥ १३०९॥ ऐसोकौनअधमअभागीअघरुचिरतजा
केहिएरामनामभावतननेहसें॥ मेरेमनमानेउहमानुषनहोयकोउसूकरश्वकालखालफिरेनररहेहसें॥ कहनिरहनिगुनग
हनिगुनगहनिमहनिमनसाधनअनेकताकोगनोतुच्छलेहसें॥ युगलअनन्यरविमुखनसहनसठवसेसवकालगएसुभ
गुनगेहसें॥ १३१०॥ सत्यसमसुभगसरोजसुखसारसुचिदूसरोसमच्छस्वच्छअच्छमेंनहींपरे॥ ध्यानधर्मधारनादिविव
सविशेषजासुवेदहूंपुरानसंतसंवतहिएधरे॥ विमलविचारमुक्तिभावचावचैनचित्तक्षमाशान्तिसहितसमूहसंपतीहरें

॥ नामने० ॥

॥श्रीराम॥

युगलअनन्यसायआसअभिलासवसजानकीरमननामभाव्यभावनाभरें॥१३१०॥सीतारामनामगनपरमपियूषरूपपानजिनकिये
तिनानिकरनमीचहै॥वीतकोटिकलपकषायकोनलेशावशेषहैशाश्वविछिन्नवीचवासमुषसींचहै॥विमर्दविचित्रवातवद्दतवजा
पवंवसंतअवलंवपायरंचकनहीचहै॥युगलअनन्यरूपकायमकमालकुलकारनकरनविनकदतनकीचहै॥१३११॥पारदि
लहारसुखसारसुखसारविनआलमसमहसेनकामकछुमीतहै॥नाहकनिषेधविधिहरषावषीचजनवडनविवेकविनवूझतनरी
तहै॥लोकसवशोकअवजेंकपमजानिमानिमसनमसनेहसजमाजिएसुवीतहै॥युगलअनन्यजानजीवनविहीनसवसवराहत
नेनकसच्छसखुनसुप्रीतिहै॥१३१२॥जानकीजीनमहवूवलूवचाहप्रहअसहमनहिलहरवतअजवहै॥सोहउत्साहसेंसमेतरं
कअंकयुतजोहतननेकअवरजअवतवहै॥आसकअमलअमलअनुरागरंगरंगजोनतोनकेतरफदुकताकतसजवहै॥युग
लअनन्यआहकरतवितावैवेसच्चेमजेसविन्नासहेकोटिनगजवहै॥१३१३॥रामनाममयीमालाफेरनसुविषैहै॥ताकेसंगअंग
गनछुवाइएप्रमाइवसविमुखविशेषउहगरकोनसिषैहै॥कैसहूंअचारनेमसंजमसमेतपरपापिमकोभूपजोवषानेहैवरि
षैहै॥ममुभिसनेहसेवचनअनुपममर्मनिरयनिवारिवेकोमानोतीरतिषैहै॥युगलअनन्यअभिरामतनंधनपायरामनाममईमाला
फेरनसुविषैहै॥१३१४

॥श्रीराम॥

जेपजीहनामनहीसोईधूमधूरहै॥ निंहितनिखिललोकओकनेमेंशोकताकसहितरहिततेताबसाइजीवधूरहै॥ अधिकअमंगली
कलीकपीकछौटीकासममसततअपूतनामवासिनकोधूरहै॥ मभिनेपरतकालकठिनकरालताहिमहामहपि एमोहमायाकोमजूरहै
युगलअनन्यअनुचितहतकोटिकहु जेपजीहनामनहीसोईधूमधूरहै॥ ७३१६॥ विषयबबूरसेएसुखफलकोनहै॥ सुधाफल
अमलप्रधानहितसुरतरुसहससमाननामजपएकहामोनहै॥ सरजूसरितसिरताजकोविहायसठकहामगनीरवीचवहेगुनेगो
नहै॥ महामनिखचितसुधामअभिरामतजिनाहकअभागवसेभ्रूतनकेभौनहै॥ युगलअनन्यनामामहासुरतरुपापीविषयबबूरसेए
॥१५७॥ सुखफलकौनहै॥ सीतारामरसिकभूमिरोमनिसुभंसहै॥ जिन्हेजीवजानप्रानप्रीतममधुरनामएकअरोजामसुधसिंदुसंत
है॥ संसपशोकाकरोकरसरहितसहितसुखअरससम्मतकरिफूलेज्योंवसंतहै॥ प्रसन्नप्रवाहदृगकंपसेतदंभविनाछ्रपातन
माहरितुपावहीमंतहै॥ युगलअनन्यअनुरागज्ञानदेनहारसीतारामरसिकसिरोमनिसुसंतहै॥ ७३१७॥ प्रबलप्रतीतिप्रीतिपडीना
मधामेमें॥ साधनसमूहपरतूहव्यूहसंगलरिखअचलउपाधिविनाशेउत्पनगामेमे॥ आसअभिलाससप्यासप्रमनेनमहेसजसयुग
लअभिमतहोशाहिरसकुठामेमे॥ शाहकजहानवीचमेरेसममदकोदूजोनहिरवातमांचकेहोइघठामेमे॥ युगलअनन्यपारपाये

पुस्तक

॥नामनेह०॥

पारपायोपारावारअवप्रवलप्रतीतिप्रीतिपडीनामधाममें ॥ ५३९ ॥ आगिलीविचारुछोडुवीतवातपाछिली ॥ छनछनतनवन
॥१५८॥ काटतकोटिनकालकोइहिनमाकजेसजलहीनमाछिली ॥ आयोइतकोनकाजकरिबेकोचतुअरेरहौतौअनरथरूपवारथकाछकाछि
ली ॥ जागिरसनेहवंनसंनवरवैनमुनिधुनिपुनिपुनिमाधुरीतिइहैसांचिली ॥ पगलअनन्यनामरटनहेमधाकरुआगिलीविचार
रो ५ सोचुवी[illegible]वातपाछिली ॥ ५४० ॥ कामकषायकलंककुमारगकोटिनकेशाकुपंथबिलेगो ॥ नामसनेहसजायसदासुषैसोगनोस्व
च्छमुनामीमिलेगो ॥ मोहनिहारिमलीनवियोगमेंदोमुखपंकअप्रमखिलेगो ॥ पामअननपासियावरवोधविरौविनामनमाभमिलेगो ॥
५४१ ॥ कोटिनकलपलौकलेशकोरितापतपतउनामरटनविहीनहीनहारही ॥ वारोचारिदशाषटपंचरात्रपथाविधिकिएहूकिए
हूअधोमचेनपाइहैननारही ॥ साधनसमूहसिद्धताईप्रभुताईहूविभक्तिभावविगतविचारनामगारही ॥ पगलअननअवलं
वनामरूपधामअवधअखंडतामुसुमतिविमारही ॥ ५४२ ॥ सततसनेहसेंसमेतनेहकंतनामभवनिधिसतुजोनजननीहूनपैहे ॥
तौनकीवडाईतीनोलोकसरसाईसुरमुनिनसोहापगापअयपच्यपैहे ॥ मरामररटोअनपपरमेमापायरागएनपारमुनिकोकिल ॥१५८॥
कलपैहे ॥ पगलअननअैसोआरतशमननामरमनविहीननरसंकटजलपैहे ॥ ५४३ ॥ नामकेप्रभावतेप्रकाशअआसपासहोत
अनायासयांममीनेमसुखकेहोकोकहे ॥ ॥

॥श्रीराम॥ अर्थवारद्व्यर्थवकिवइनसुवोधविनवालिसविशेषमोहवारिनिधिमेंवहे॥ हेप्रभुसयारकारकायमकरतकिलअनायासेप्रमप्र
तिकाशपदकोलहे॥ युगलअनन्यआवअमलअनेलालतवरहेएकतारनामरटनसदागहे॥ ३२४॥ सीतारामनामअभिराम
हींसकामआवआठजामदूसरीसुप्रीतिनासोहातहै॥ हौतौमहाअधमअलायकअहौ ह्यपरकरुनानिकेतनिजवारेतछो
हातहै॥ जैसेवालअधिकअप्रजानपाहिचैंनिजियजननीजनकवारवारहीमोहातहै॥ याहीभांतियुगलअनन्यदीनवंधुदिशि
हेपतनेनेकाउचानिसमुहातहै॥ ३२५॥ दीनानाथअशरनशरनउदारअनतनमनवचनसुधिजेवोधघिनता॥ यांचोनहीवि
मलविवेकज्ञानध्यानभुक्तिमुक्तिशक्तिअमलसदुक्तिलाहलीनता॥ देषिदेषिदृगनदयालविकरालकालभयोभीतिविपुलवि
लोकिपापदीनता॥ लीजिएलगायरघुरायपायपाशभतियुगलअनन्यकीविचारिपराधीनता॥ ३२६॥ होतपलपलवीचव्या
कुल[illegible]विशेषमनजानकीरमनशोकसमनविलोकिए॥ हायआपहुकेकहवायनलजायचित्तजातजहांतहांदीनवं ॥ नाके ॥
धुपाहिरोकिए॥ कोउतीनलोकमेंसमर्थनदेखातनाथमेरेजौनघातउत्पातभारमेंरोकिए॥ जानिनीचद्वारसेनदीजिएनिका
रियाहिपाहिपाहिपाहिकोशलेशअवलोकिए॥ ३२७॥ महाराजप्रवलप्रतापपापतापशापनाशनस्वभाव[illegible]गनग्राम
कामहैमुनी॥

राधो

पाहीकेभरोसेलोकवेदभेदखेदहूंसेहोयपैकेउदासदीनवंधुकीकृपापागुनी॥कोटिमेरुसिंधुभूमिहूंसेऊंचथाहविनुहरि
॥१५५॥ हीयआपनोविश्रामसीसहूंदुनी॥फेरिचित्तसीतिनेतिनाथकरुनानिहारिवारवारहोतवलिहारिहीनहूंदुनी॥५२८
महावीरधीरनामअमलअकाममनसहितसनेहजोअनंन्यध्यानवासकरेंगे॥कहाकामकालकानकालिमाकुलाहदाह
माहनसुसाहससमैंजोजहांजमभरेंगे॥तहांतीनकालनादुकालजाललेशकाहूं॥जहांजगजीवनप्रभुपावपद्मधरेंगे॥यु
गलअनन्यमोहमयीमहामलमायाअनायासआपहींसेभिन्नहोयजेरेंगे॥५२९॥सीतारामनामकृपाकलितक
टाच्छकनपायप्रेमप्रभेदप्रकासपरवासहैं॥आठजामवामवरविस्यअभिरामसंगरंगअविभंगअंगविशदसुवास
हैं॥मनोराजखामखारखाहिसखजानखेहदेहकोविहायदूरभएअनायासहैं॥युगलअनन्यदामदामिनीदमकीव्यव
शाहिध्यानसुखखानरूपरासहैं॥५३०॥प्रेमदरशाहिज्लोंमेंलहरीठहरीतितवनिविचित्रविनाश्रम॥हेमनिशादृगमे ॥१५५॥
परज्योंफहरीपलपावहींमैंविनसोभ्रम॥दिव्यविहंगमसुरंगसमाननचेंत्योंवरव्योमविहायव्यतिक्रम॥युगलअनन्य
अनेमहियएहरसायततायतहोतसुधाक्रम॥५३१॥सीतारामनामनेहनित्यनिर्वानगेहगहरगंभीरधीरजननियजानहीं॥

पुगलानन्यतवरता धन सुनाम विनपीर सविशेष मल मूलसम धूरहै ४

॥श्रीराम॥

अगुनसगुनहोउब्रह्मकोआधारनामविदितविदितअगस्त्यमुनिआदिकवखानहीं॥यातेपरतत्वजौनजडपायमत्व
कहेतौननिसिचरसमअंतरनमानहीं॥युगलअनन्यअनुपमअनमोलनाममहाभनिछोडिसठकौडिनकोमानहीं॥
३३२॥कायरकपूतधूततरानवापिसाचस्वानसूकरसकालव्यालताहिपरवारिए॥अधमअभागकागकाफिरकलं
कवामसोर्इसवतोरभेहरंचकनधारिए॥वेदसत्सास्त्रसंहितादितेविमुखधामराहीमध्यनीकीभांतिभ्रांतिविनमारि
ए॥युगलअनन्यजाहिरूचतनसीयरामसर्वेशनामताकोमुखनानिहारिए॥३३३॥जौनजनजीहप्रियपायनरतना
मसीतारामआममतितेईअतिकूरहै॥सुधासारसरसप्रसादकोविहायमूढमागतफिरतविषमोदकसमूरहै॥प्रवल
प्रतक्षपोतपारावारपारहिततजिकेसुफेनगहेवडेवेशऊरहै॥३३४॥वेछिअज्ञलोकनमेंकहेतत्वज्ञानसठअधिक
अयानमानमानससमानहै॥सिवसेखसुकसनकादिकननामधनताहीतैअपरऔरकहतअमानहै॥सिखकेकलंक
पंकमईदंतकथाकहूंजानैहरुतुल्यनहीअपरप्रमानहै॥युगलअनन्यकामपंडजवसंगासंततनयतैमुलायजायज्ञान
अभिमानहै॥३३५॥ज्ञानकीरमनऊकोनितपनिर्यातिनेहनिसानिजनेनवीचभल्लकसवेशहै॥ताहिकेखुमारीमाम

॥नामने०॥

विनभेद

खलकललक लाहहाहसमसमुभिपरतहुरवेरशोहै॥ मुकिमुकिगिरतहरतनमुरसतिलत्रोगहीं कोकरतउछाहसुविसरोहै॥ प्रगलच्य
नन्यकोनजानेजानाविमलरेखरनिर्वरैजौनवीततहैमग्रहै॥ ४३६॥ नामप्रतापविलापकलापमिटायअतापसमाधिसुधारो॥ कामक
लापसमायकहोंफिरिरामहोंरोमसुनामसंचारो॥ लौकिकवैनसमैनअवैननिहायतत्यागकियरमप्पारो॥ प्रमअनन्यरहस्परंगीसति
रैनप्रकाशविलासविचारो॥ ४३७॥ श्रीअपराजितनाहअथाहपनाहप्रहयकेधामविलोको॥ हीहिहिपमहदलायमलीविधिपीजिए
प्रेमपियूषविशोको॥ धीधारकेअपनेमनमेंसपनेनहिधीरजतारविमोको॥ पुंप्रमअनन्यपरेशस्वरूपअनूपमेजीवमिलापअरोको॥
४३८॥ रामनामसरसमसमाधिसुखस्वाहसमागमतमसमननहंसरासमाधिहै॥ शिवाशिवसेषविधिविष्णुहूंसुध्यायनामरशि
कअनन्यपायअचलअनाधिहैं॥ सोगनमुहदस्वच्छसोहवमुगमसूरसावित्तसेनहसुखसहनसुसाधिहै॥ प्रगलअनन्यनाम
रसनारमनविनवैरवैरकोटिकोरतउनामनाउपाधिहै॥ ४३९॥ रामनामनेहविनज्ञानध्यानप्रानहीनतनकेसमानपोसुजान
संतभाषहै॥ ताहीहेतुनामहेतसहितसुपरसवदुखदरहितवेद विइवरभाषहैं॥ जेतेकरतवकालमपकेहरनहारतेतेनामवि
नजैसेवारिहीमराषहै॥ प्रगलअनन्यऔरसाधनरंभारुनीसोसीतावरनामहामिषसमराषहै॥ ४४०॥ ॥ ॥ ॥
म

फ२

श्रीराम
२ नेही

महाराजमुकुटमनीन्द्र राम रामनामजीहजपतैंनींद्रआविनैंइनेहनहीहै॥ शिवाशिवमारइगनेशाकमलेशाद्योशाकइनमुनामनि
तेंअनहइहै॥ परानंददायकरयालपमर्पालसालसमननदानप्रानप्रीतममुखरहै॥ युगलअनन्यत्रैसेसमरसमुज्ञान
सनसाजतनशैाकैतानीचरइवइहै॥ ३४१॥ परमपरेशकोशलेशनामतारकेशनपैजोनजनतोनप्यारपरिछइहैं॥
मोतमहामोहमरपीवृतप्रपंचत्यागिसुधासुखमाररसरातिअनवइहै॥ वेदभेदपायनिवेदसवआसहीतधारिधरध्यानभली
भांतिनविसरइहै॥ युगलअनन्यनामनिरतननीचलोनकीचकलीकालस्वानखलहूंसेवइहै॥ ३४२॥ मारिसछउडतापिरतवा
तपातममदमहूंनचैनचैनआपनेअमरइहै॥ कोईताकीरीतिनसराहततिलोकमोंहिजहांतहांपायपोशपावृतविपइहै॥ कोटि
नकल्पकरतूतिकायक्लेशाकैरतउतीनतापतममतसगरइहै॥ युगलअनन्यअवधेशवरदेशनामरटनविहीनदीनछी
नकीनकइहै॥ ३४३॥ महामोहशिंधुदीनरंधुविमलेशनामलोकवेदजाहिरहमेशाहींसुखदइहै॥ साधनसमूहव्यूहलिखो
जोपुरानवेदनतोनकलिकालवीचरइनाद्विरइहै॥ काहूमध्यवंध्यजीवशीवसनमखशक्तिनकुनाइखाततिहूंभांतिनिरुपइहै
युगलअनन्यअन्यआसकेकैरयानरखरकेसमानतिकेजानोनाइवइहै॥ ३४४ कागनसुपेरहोतसाविनलगाएसे॥॥

॥नामने०॥

यतनअनेकमारधारकोटिभांतिकरातऊनकहूपिप्रावजागतनगाऐसें॥आपनेईश्वरममभावनातेजोबनायोभक्तअमितउपाय
॥२५७॥ हूं न भागतभगाऐसें॥जैसेधूरभूरकोरचायोकोऊलाड़नरहेतनसवाइमिसाकेहकेपागाऐसें॥खलअननयअसैसेसमुझिनवातसठ
कागनसपइहोतसाबुनलगाऐसें॥३४५॥गनिकानहोतसतीधरमसिखाऐसें॥चाहेपश्चिमेरकोटिकलपउपायरचित्तऊ
व्यभिचारवाकोछूटतनकाऐसें॥अतरगुलाबशतसुरभीसुवासोतुऊलसुनवसाइहैअवसमुखरवाऐसें॥मीमसिठातमहामधु नीम
रसुधाहूडारपरयोकरआईताकेसहजसुभाऐसें॥खलअननयअसैनामुवैनसुनैगनिकानहोतसतीधरमसिखाऐसें॥३४६॥ सठ
वाटतहैहाहसठसंगतिप्रभावसे॥जैसेमहाअनलसमीपसेहहनेहहजैसेअजगरविषवटतअगावत॥जैसेरिपुनिकटगएसे
प्रानहोतहानजैसेततनतपतसुग्रीषमकेतावसें॥जैसेहिलवेहनाउठतरोगीपासगएजैसेवपुकोपुत्तविलोकिरंकरावत॥
खलअननयातातेत्यागोतमनोममित्तवाटतहैतापसठसेगतिप्रभावत॥३४७॥सारशाव्हश्रवनसुनतओगुनतगुन
चेवसचलावचितअवलसुपलैहै॥शुसमसुगुनिहशभांतिअनहहतोनईनहीकेअंतविचारिएसकलैहै॥काल ॥२५७॥
कूटकोहरलहरमवधारडरनिकरविलातजेतरोगकलमलहै॥खलअननयअविलंवरटोसमोध्रुहसहिअविकारफौरिमिलेगो
२० नकलहै॥३४८॥

॥श्रीराम॥

४ विप्र

नामसेमहेशऔप्रजयाहूंरमेशाधिपितिपालनसंघारकरैंनिगमबिदितहै॥ नामबलप्रबलसहायतेहिनेशादुतिकरतप्रकाश
तैंनिशेषमहूंमुरितहैं॥ नामबलशेषशीशधारैंलोकऔकसवपुजितगनेशनामबलसेउहितहैं॥ युगलअनन्यजेतेसिद्धसु
रसंततेतेनामकेप्रभावहीतेंबिनाहींजुहितहै॥ ३४९॥ नामसनेहसज्योंजेहिऔंतरताहिनहोतकलेशकशापी॥ आठहूंजामरहे
डुसयागविहायविषयैंमोहमिलापी॥ संतसुजापकसेंपलहींपलमायामहाउत्पातनीकांपी॥ युगमअनन्यसुनामरटेविनहैत्र
तिनिंघमलीनसुरापी॥ ३५०॥ कलीकालभगततकोगयोसोसुधेशनामप्रीतिपरित्यागिऔरसाधनकरतहै॥ जैसेदीपसिखारूप
वतीदेखिकैभ्रमविनापरतपतंगअंतजरहीमरतहै जैसेसेतेरतकोविलोकिललचान्योमूढकाठतातेतेलतीनकालनागरत
है॥ युगलअनन्यनामरटनेरमनविनाऔसेईभुलानेभवसिंधुनातरतहै॥ ३५१॥ रामनामसममारशब्दसुखसारयारहर
हिएहारमारमथननज्ञानहै॥ सोहंभावहसहीजपतजपतनस्वादकहैंकटतविचारिएसुबुद्धिवरज्ञानहै॥ नाममधायो
धपुनिताहूंकोविचारेपरपरब्रह्मसमलसवहीकोअविधानहै॥ युगलअनन्यरटेरसनासिरसनिधिनामसुखधामऔरभू
तपकवानहै॥ ३५२॥ नामरसहीननरसंगतिनकीजेभ्रमलिशलउपजतअनकूलहोशाहनेगो॥ सुधासुखसागरछोड़ायके

॥नामने०॥

॥ श्रीराम ॥

॥ १५८ ॥

अव सपसट ह्वै वसनी रकूप खारे हीं खैनेगो॥ बिमल बिवेक टेक रछ मुलवाये वेगि हो षड खहारन कपूत पूत जैनेगो॥ युगलअन
न्य हो प्रहारी सिस मंतर हे कुसल अस लन तौं विलवाम वनेगो॥ छं ५३॥ आज काल कठिन कमाई सें सहसग न अरे हे अयोग भो
गरत जो ननी चनर॥ तौन कह वावैमं तवड वड गरगाही वैठि अैठि चैला वैली ह सपांच हे खिवांधे कर॥ घायापछुवे मात्र गा न
छल मल थल होत जो त वुभि जात मो हहाय कअज व चर॥ युगअनन्य परत सद्गुरु खोलि है खोला ते मामर टोमंग उज्वलस जाय उर॥
छं ५४॥ वानी ते वतावै वृस्न पुरि रच्यो ह्रै रहे ह्रै अंतर कपट घैरा गवे सुमार है॥ एक पल ह न चित थी रकिया गो सवै छिपै छिं हिलअहर
न हे खा इतिपार हे॥ चालचा लवार न सन सम विकार भरो उरे रो मुखता कि वोम भारी भार खचा रहे॥ युगल अनन्य मो
मा ह मैन मोन मद मजन तन मोल सजि साहव उहारेहू॥ छं ५५॥ जो वर वैन कहें तिन सें कछु तो रिसि पाय कहे कटु गारी। पाय गए
हम वस्तु विलछन लछन नहीं नमु मूढ अचारी॥ कौन सहे दुख नाम जपे हम आप ही आप परे श्रप्रचारी॥ युगम अनन्य कृपालसि ॥ १५८ ॥
या वर ही जिए अै सो न संग विकारी॥ छं ५६॥ वेड पर पंची पखि लोग औ लुगाई सवी भास मिटाई तव मह हनी चैन नहें॥ जाने
सव जन वा वा ध्यान मे मगन मगन ज्ञान के समीप ही में रहें दिनै रैन है॥ वाकी मनो हाल हाय हिय में समायो है ऐसो है धन कोतो चित छन
है न चैन है॥

॥श्रीराम॥

सव
प्रगलअनन्यनिजदृगननिहारेसोतातेंसंगछोडिटोनामनेहअनहै॥ ५५७ ॥दंभिनकेसंगकिएदंभहिलआपनेउछाय
जातफेरवेजोरसेकढतहै॥ नैनवैनसैननतनमनमांभभोरमांभरदंभहीसोहाततातेंताहीमेमढतहै॥ सांचेसतसंगीरसरंगी
नामीनेहवानतिनकोसुवैनसपनेहूनपढतहै॥ प्रगलअनन्यसावधानहोयलीजेनामदिनदिनदाहकलिकालकोवढ
तहै॥ ५५८॥ नाममहामहिमासुनिकेजनिकेनिअंतररंगसुढंगसोहावन॥ मेरेउहीयमलीनमेमीतप्रतीतवढावतपा
श्रवाक
वनपावन॥ वेदसमस्तअनस्तसुवाकअपाककोमूलवहावन॥ प्रगमअनन्यसुनामरपेरसपाकहैउपदेशअघावन॥५
५९॥ भीनिभावभव्यरसनामीसुखधामीगुनग्रामीअनुगामीअभिरामीरामलालके दीनेहूधनवानवरवांहुसुखखान
छविछीनेज्ञानीध्यानीछकेरूपवइरूपरसालके॥ लीनेमनमोलअनमोलसुकुमारस्यामसरससनेहदामसंगरहसहालके
प्रगलअनन्यमीनेमधुरारहस्यसरसीनेप्रेमपावनपरेशप्रीतिपालके॥ ५६०॥ नामिनकीरहसअथाहजानेजीवका॥ प
लपलवीचमानेमोदमकरंदसुखश्रवतविचित्रसुभासारप्रीतिपीवका॥ वानीवेदनेतनेतनिजानंदनामीजनक
हतहमेशआगेरहचोषनिसीवका॥ सूरनकोरनमेभिरतजैनहोतहर्षतोनतीनकालहूमेपावतहै॥ प्रगलअनन्यवूझेविमल
विवेकीसंतनामिनकीरहसग्रंथजानेजीवका॥ ५६१
ह

[illegible]

न कीवका

क्षी.वका २

अलंकारकाव्यशक्तितर्कवरबोधविनाकोनफलविदुषविशेषहीविचारिए॥ जानकीशक्तिजनकरविहितनातसंयोगरसविही
नस्वादभोजननधारिए॥ विमलविरागभक्तिज्ञानवितरेकवेषअधिकअयोगप्रानहीनतनसारिए॥ युगलअनन्यनामनि
रतसुजनमायारहितसम्हसुखतुच्छअवधारिए॥ ९६२॥ सुधासिंधुछविकविअकथअनंतरविउपमानयोगरविनातम
तिईशकी॥ एकएकअंगअंगरसराहसउमंगसंगअमितअनंतबहुरंगरूपकीशकी॥ अगनसगुनजोतिजाहिंरनतवेसोतोसीता
कांतअंसअवतंसशीशकी॥ युगलअनन्यअतिअमलअनन्यरतिहितनजानिसकेगतिजानकीशकी॥ ९६३॥ लंपट
कामविमोहितमीचवहैरैपिताहिगर्भधसहीहै॥ आठहूंजामतकेतमरूपिनीपापिनीध्यानसुवीरलखीहै॥ नाहकहींकवि
सुंदरताबरनेमलमूतअगारएहीहै॥ युग्मअनन्यअरूपविवेकीवहीजेहिकामहिमागहहीहै॥ ९६४॥ जानकीजी
वनकीकमनीयकथामयमानव्यपासमनीहै॥ बारहीबारसुचित्तलगायसुनाकरिएनितहीरमनीहै॥ लौकिकवैदि
कशास्त्रउभयविसरायचरित्रविचित्रभनीहै॥ युग्मअनन्यसियावरकेगुनहीनवराटिकातुच्छमनीहै॥ ९६५॥ सो
इसिरोमनिसंतसनेहीजोनछुवतधामऔवामउपाधी॥ वोईसियावरकेसुचिसेवकलागततिन्हींकोअनूपसमाधी॥

॥ श्रीराम ॥

कैसुखसागरवासीसहानउटेजिनकेमनभूलितऔंधी ॥ युगमअनन्यअचेतभयोजबतेचितचाहउठीअपराधी ॥ छं ६६ ॥ औगुनवी
शगनाएकैहहमचिंतनहैखवसुनोसुखमानो ॥ वैरविरोधअबोधविकारनिरोधकोहानकलंककमानो ॥ बीजविरवाहप्रमाद
मलीने
अमादकोहीनताहोयकुरामसमानो ॥ युगमअनन्यशकीनकुलीनअपीनसुहीनविलानो ॥ छं ६७ ॥ जोनाहित्यागनिसो
तवनेतउसंग्रहमूलिहैंमीतनकीजे ॥ आपपराधिएनाहिनजीवकुपीकसमाननतेरसपीजे ॥ हर्षनसोककरोकवहींनितवे
छिविरागकेवागहैसीजे ॥ युगमअनन्ययथारथवोधकेराहचलेकवहूंनाहछीजे ॥ छं ६८ ॥ वेदनकोसारसंहितापुरानशास्त्रसा
रतत्वगेयसारनामसारजीवईशाको ॥ मोहनेकोततवरसरागअनुरागतत्वसुद्धसत्वतत्वमेइपावेगहरीशाको ॥ पराप्रीतितत्ववर
विमलविहारतत्वआत्माचरित्रचारुचखेनजेतीसको ॥ युगलअनन्ययुगवरनहरनमननामहीअनामतत्वसारश्रुतिशी
याको ॥ छं ६९ ॥ सीतारामरूपरसधामनाममध्यपरप्रीतिपरतीतिविनाभूलकनैननमें ॥ जैसेहारअंतरअनलरंगमेंदहीमें
फूलमेंसुवासप्रौंछचिन्नचैननमें ॥ एकअंससमाहिउपमावनायहिंयोनामअगमस्वरूपकह्योजातकैसेवैनमें ॥ युगलअनन्यरयोय
करसैभाभतवपावैजोअमूलैनामनेहरैनचैनमें ॥ छं ७० ॥ कोउकल्पकल्पनामैंजनमवितायोजऽकोउकैयोंआरोगमेंसगमेंमाभूउर
भ्रनेहैं ॥

नामनै०

क

कोऊ ज्ञान ध्यान वात गटत पुरान वेद संहिता कौ पाठ पढि विपुल लभ लाने है॥ कोऊ काव्य कोश अलंकार भार धारि शीश रचे कविता
ई पै न रहस समाने है॥ युगल अनन्य सवदेह खोव्यवहार तातें त्यागि सुख सार नाम नेह मन माने है॥ क ७१॥ जीवन हमारो वर वरन विचि
त्र मित्र तारा पति अमित सुजोति या पै वारिए॥ जैसे नीर जीवन है मीन को मनि न्है जैसे जीवन फनिंद्र के ऐसे नाम ध्यान धारिए॥ जैसे चा
ह चातक सु घन स्वाति बूंद चार चम कच चकोर चंद प्रीति अनसारिए॥ युगल अनन्य नाम नेह हीन सिद्धि फल छक्ति अभिला खराखमा
निद्धारि डारिए॥ क ७२॥ चाहो कोऊ निन्दो चाहो वन्दो मोह शोक नाहि मन वच वपु माहि लागो प्यारो नाम हीं॥ और न सोहात व
त बात सम विसम हूं जामे काहू भांति लेश होत ना आराम हीं॥ कथनी के कथै कहा पाइए परम धाम जौ लौ नाम रटि नहि पायो विश्राम हीं॥
युगल अनन्य मंद मती सब भांति तौ न जो न नाम कंज कर आए न विराम हीं॥ क ७३॥ रटौं वा न रटौं पै आधार मेरो नाम आठ जाम साचो
मानो भूठ वानी न विचारिए॥ आलसी हू मेरो तऊ शरन परेश नाम गह्यो लह्यो माह देह लौकिक न धारिए॥ बुरो भलो भाखो जो
न चाहो तौ न राखो ना पाहो तौ भयो विलग मेरो सो दृढ भारिए॥ युगल अनन्य जैसे तैसो पर नाम हीं को और आस वास ना विकार तेवि
कारिए॥ क ७४॥ नाम नेह वानन की गति ऐसी जानवी॥ कोऊ कहै बावरो बखानें बावरो सो कोऊ ताबरो उतारो बतावे मन मानवी॥

॥श्रीराम॥

कोउठगचोरसाउकारधनजोवरैकोउमखवेरकोचवोरपहिचानवी॥ कोउकहैअज्ञकोउतज्ञसर्वज्ञकोईकरतकु
जातिजातिउत्तमप्रमानवी॥ युगलअनन्यकोउल्लखिनशाकततिन्हेनामनेहवाननकीगतिऐसीजानवी॥ ३७५॥नाम
अनुरागिनकेसवाहिमेनामधनअधनहरनमिलेरंकह्रैकेविहीनहीं॥ जैसेजौहरीकेसंगजोहरपरखपावैवाहरकेहोयसवभाँति
नसेईनहीं॥ जैसेगुनीअंगसंगपायगानताननरसीखअनायासहोयजायरागलीनहीं॥ युगलअनन्यसंतसंगहीसेउह्यउर
अजस्रमखोयअविरोधक्षीनहीं॥ ३७६॥मनोराजनासनकोऔरनउपावैहै॥ नामकोउचारस्वच्छसरजुसुधारसम
सरससनेहतारदृढनसुभावैहै॥ नामप्रेमपरमप्रतापप्रतिपाद्यजामेंऐसोगेयपंचपरलेअनमअंगनसमावैहै॥ युगल
अनन्यसद्भावसिएँकौतविनमनोराजनासनकोऔरनउपावैहै॥ ३७७॥महामोहमहमातेनामकेअनन्यहैं॥ जिनकोन
होयहितअहितअनघकछुतानहूंकेमेसशमतधनधन्यहै॥ शोकजोकतोककमलकंठमेअकुंठमतिदौरैलोकवार्त्तनविचि
त्रमानमन्यहै॥ प्रवलप्रतीतिप्रीतिरीतिसुपुनीतप्रियनवनीनहुतमहामुदमंगलमगन्यहै॥ युगलअनन्यसीतारामप्रानप्रिय
अहोमहामोहमारमातेनामकेअनन्यहै॥ ३७८॥रागरंगचित्तवनमोहमूलसानकुलसमूलभूलहूलकोहरनहाररूपैहै

क

॥नामने०॥

अगजगमोहनअजूवखवद्दवडुतिमोहनसमरसुखदोहनअनूपहैं॥ जोहैंजनअत्तनविहीनसुयतनज्ञतपारखीरतनगत
पतनअधूपहैं॥ युगलअनन्यमनमोरनसमातकलकरुनानिकेतनलखिअवधसुभूपहैं॥ छं ७९॥ चाहकोऊकैसहूंकलेश
सेनिकासेतलसिकत्तातेंरंचकसुशंकहूंनधारिए॥ सहितापपासजेनानजीवतौनकाहूभांतिपिरभानुनीरमोऊसोंचहींविचारिए
कोऊभूमिमामविचरतशशाश्रृंगलाभलहेव्योमसुमनसुवांभसुतधारिए॥ युगलअनन्यमरखतारिमसमतनरकैसेहूंप्रसन्नवो
धैहोतनानिहारिए॥ छं ८०॥ मोहेमनमदकारकामिनीअनेकभांतिशांतिकांतिकतल्लकरावैपल्लपावमें॥ मंदमुसक्यायगायगिरहूं
सुनायभावद्यावनीछरायपहरषायकोपद्यावमें॥ चंचलचरित्रचपचांहनीरषाईरिजायमरदेरखालख्वायदुछदावमें॥ युगल
अनन्यआमनायसंतसीखस्वछ्छपषिण्प्रतछ्छवामदामदुखन्पावमें॥ छं ८१॥ हेरोहियहिरसहिरायवामवद्दनामआमहुतिरेनी
श्रेनीविविधिविकारकी॥ चित्तवौचलावत्तललाईज्ञानध्यानवीज्ञजातनुखसानव्यवधानप्रीतिप्यारकी॥ देखतहींहोप्रानताराकोश्र
कोविनासहोंसदोऊलोकमाभमोरसोंभजेकजारकी॥ युगलअनन्यगंग्रंगविषमकुरंगसंगभएप्रानहानशानशोकसरकारकी
छं ८२॥ विस्वमेनित्तवनीसमानदुखखानआनवेदहूंपुरानउपखानमैंनव्यानहैं॥ जेतेंरिराजसामराजउन्केठवानवडेवखवानमोहि
छि गएमोयमानेहै॥

॥श्रीराम॥

हूजेसावधानवोधवानकोसेंवारिनारिमारिएविचारिसीतारामहिध्यआनहै॥ युगलअनन्यआसआलसविसारिधामवसोपनधारि
छेमभामिनीनप्राआनहै॥ छ२८३॥ धनसोनआनदुसमनदुखखानहै॥ जोमसपनेहूंसुखसरससवादनाहिकेवलकलेशआ
दिमध्यअवसानहै॥ दूरिसेदेखानहुतिपारकेनिकटगएप्रेतनकोवासउभयओरभयोहानहै॥ मिलेअनमिलेदाहआठहिएरहै
नितताततेंत्यागयोगसदाकालविनवानहै॥ युगलअनन्यअनुरागिननामधनसंचधनसोनआनदुसमनदुखखानहै॥ छ२८४॥
संपतिकहत्तसबविपतिकोमूलहै॥ कंपितरहततनमनयाकेगेहहानसरितमेवहेहैहेगातगुनशूलहै॥ मोहमहीपालकोविशे
षसन्वेधीसठसोपतकलंकपंकतेकप्रतिकूलहै॥ कहोयाकहापिशुभसाधनसुवातसहीताहूपरमोसपथमेंनअनुकूलहै॥ युगल
अनन्यवरविरतिविचारचित्तसंपतिकहत्तसबविपतिकोमूलहै॥ छ२८५॥ विनविषयव्यालवीजविषयववूलहै॥ कीजिएनभूलिहू
परसअनरसहेतुपलहीमेंदेहेनानाभांतिभ्रमशूलहै॥ लोकशोककोककोप्रकाशकदिनेनिदेससमज्ञानध्यानदिव्यगुननाशकअन
लहै॥ औरठोरखाटतविशेषहायजल्पजोरतातेंशांतिहेतुवसोसरजूकूलहै॥ युगलअनन्यसबसंतनसेसुन्योहमविनविषव्याल
वीजविषयववूलहै॥ छ२८६॥ सोएसबचोरजागिउठेपाएधनेको॥ रुकेनरुकाएज्ञानयोगजपतपवलप्रवलसिपाहीमथडारेतनमनको॥

॥नामने०॥

॥श्री राम॥

॥१६२॥

रष्ट गुरु संतसैं विमुख पलपाव सघ्यपात कीकरायके छोडावत भजनको॥ तातें सावधान रहे कुमल लषाय नातो चौगामा
रोजा पतन अमल रतनको॥ युगल अनन्य पातैं मोड़ि एह मेरा मुखसो एमवचार जागि उठे पाएधनको॥ छं २७॥ आंष
तेरला वतननीचनरनेकुं धनपाय गुरसंतरसवंत अभिरामको॥ नैनके अछत अंध होत मतिमें ह्वै हुं सहत हजार हाय
अंतजमें वामको॥ कृपाके निधान संत वेदजात ऋषिकमी केर उपदेश तव मान लाभ रामको॥ युगल अनन्यनाम रटिए
असंगडो प छोडिके कुसंगम सघमाया केलामको॥ छं २८॥ स्वारथके अर्थ गुरुदेवसें विरोध करैं मेरे विना काज
लोललेप टलवारे है॥ खानपान कारन मूडावे मडमूर मन भजनकी रीति विपरीत चाह मारे है॥ सीखचतुराई चपलाई हान
हेतु सठ ज्ञान ध्यान धारनमें रंच कन प्यारे है॥ युगल अनन्य सव कौतुक विचार विनहित अनहित होत अै सोई विकारे है॥
छं २९॥ जननी जनक भ्रात सुत तो सम जे न होत गुरुसिष आन अरु तत्ताह रयातैं है॥ और जैसे वडे वडे नीपतिन हूं से द्वेष होत जाके
हेत रहै अभम कुजानिहै॥ जैसे वनेमी तैने मेहीजे पाकोपाठ हीठ रेषत हरत है हाहिरस समाते है॥ ~~छं ३०~~॥ युगल अनन्य
अंधआगेल निशान रहमलेह नपात नेह करी अति ताते है॥ छं ३०॥ जैसे सुचिवंत कान सोहत स्वपचसंग जैसे सती अंगना
रमिलनमलीनको॥

॥१६२॥

घ

॥श्रीराम॥

जेसेसूरवीरकोउचितैनविमुखरनवनवासवीचभोगसोगसकुलीनको॥जैसेहीरराजनकोमिलापतुच्छजीवसनैजैसेसम
हाराजनकोभागनोअलीनको॥प्रेमलअनन्यअैसेसंतनकोध्यानधरिसहसजोगावनोविसयहांसतीनको॥ छं २१
स्वामिनीसीयसहायसहासिरसोंचसमहसेमनसंहारे॥स्वच्छसुधासतसिंधुकृपाकमनीयकिरणहएहर्षहजारें॥को
टिनकायकषायकहूरतेवगिविनाससुनामउचारे॥प्रेमअनन्यअभयरहिएरघुवीरप्रियाकलकोरनिहारे॥ छं २२
कालकरालकेरनकछुकमनीयकृपामिथिलेशसुताकी॥हेरिएहायहिरायहिएहरसायतहोशलाहोशसुताकी॥को
काकहूंवविधानमहामुरमोहप्रधानसुनेहनुताकी॥प्रेमअनन्यअभीतनितैउत्साहउमाहअथाहसुवाकी॥ छं २३
वारकनामउचारकिएभवपारविकारवथानरहेतन॥होयहहेइपरप्रेमपरेशाविशेषसुरेशास्वरूपसुनेमन॥हेवडभा
गअहागसहेजिनकेजियजानकीनामसुधाधन॥प्रेमअनन्यअमंगलमूलनसेसबभांतिभएमिपकेजन॥ छं २४
पानिपप्रीतिप्रकाशपरावरपारएसीपसुकीरतिगाए॥वागविकाशविलाशविजयवरवीजविलच्छनवांधसना
ए॥वासनावंद्वितानविनेयव्यवधानविहीनछजेछविछाए॥प्रेमअनन्यसुदाससमीपसहायकस्वामिनीश्रीशसंगाए॥ छं २५॥

॥नामेन०॥

रंचककीजिएखैवाफनहीनिसिवासरस्वामिनीवैनविचारो। हौंहरसायतपालकपूतकपूतहमेशसुनैननिहारो॥ अंबकअनूपअधा
रलीरएकहुंकौनकलेशहिएअवधारो॥ प्रगमअनन्यप्रपन्नसदासुचिशोकसमेमतिसुनामउचारो॥ ७२६॥ जानकीनाममहा
मद्गमीरमनोहरमानसजीहजपाकर। वानकीभीतिप्रतीतिजहानकीपीठिहिएपरमोहछपाहर॥ शानकीरीतिअनीतिवि
नाप्रियप्रानकीप्रीतिसुरीतिढपाकर॥ प्रगमअनन्यहिवानकीनीतिसुहारेहूंजीतिउमंगमयाकर॥ ७२७॥ नामीसुनाम
सुधेशसुधानिधिशुद्धसुधाकरसीतलसौगुन॥ वामीविकारवलायलिएवंइसेइलहेमठसंकरचौगुन॥ स्वामीसनेहसने
ममसनेसोसुधीसुखपायभलायकेऔगुन॥ प्रगमअनन्यगुलामीलिखायउभयपरिसमंगलमोहसुनौगुन॥ ७२८॥
काहुकपापचिएबहुसाधनआधननाशकदाचिततेरो॥ तीरथरेवसुपाननभवकुवासरखइलिएहतहेरो॥ छो
ड़िप्रचंडप्रपंचप्रनाकरआकरमोहसुनामहीटेरो॥ प्रगमअनन्यविहायकेमानअमानसेसंतकहूजिएचेरो॥ ७२९॥
जानकीजीवननामजपैविनुहोषदराजइसोहिसिरेपे॥ काहूकीबातप्रमानकेरमतनामविनाकरनीकुसमेखे॥।॥ आप
मुलापेकेनाममहामनिलाहलहोउघमांगतथिरेपे॥ प्रगमअनन्यप्रपन्नवनोठनासांचपनातजिरागहूदरेपे॥ ७३०

॥श्रीराम॥

नाममहामहिपालकेआसरेहूजेहियोनिसिवासरेशांतिसे॥कामनराधिपएकौंहूपहारथैहैसबभूठहौऊहिसिभ्रांति
सें॥वासनावीजविलीनभएपरहोइहैहर्षहजारसुकांतिसें॥युगमअनन्यनचिन्तउवीठिएकाहूसेमभलभक्तिए
कांतिसे॥१४०१॥रामनाममहामोदधाममेंरकारजोनअधिकउदारहौऊसबछसरकारहै॥प्रेमभूमिरहमदुमधु
रनिहानएकारसरसखानेरफरसिकअधारहै॥रफमोंमकअमलअकारनित्यकेवलहैंहीर[illegible]भक्तिमोसचाहीसुवि
सारहै॥युगलअनन्यवद्धविधरमकारस्वरभ्रेप्रससमीपदीपसुवुधविचारहै॥१४०२॥ज्ञानभक्तिविरतिउ
पासनासुयोगभोगसोगसेंरहितनाममध्यमेंविलोकिए॥औरहूंअनंतसंतसंवतसुसाध्यसिद्धसाधनसुलछना
मवीचचित्तरोकिए॥वासनाविनोदवनवांभवरननवरवालिसविलासहूंविहायवीजझोकिए॥युगलअनन्
देहदृष्टिउत्पातवृंदवृष्टिभ्रष्टिहेतुजियजानिमोहमोकिए॥१४०३॥नामनेहनिरतनिहारिएनयनभरिभावविवि ॥नामने०॥
त्तचावचवपचौगनोचवरायके॥कामकमनीयरमनीयरसरीतिप्रीतिपूंछिएप्रसन्नतासमेतहींवदायके॥नामजग
जीवनअमीप्रासिरताजईशापीजिएअचिंत्यहोयचिंतनागरायके॥युगलअनन्यआमनायगनगावैनित्यनेतिकीहकारेवारेकामना
कदायके॥ ॥१४०४॥

॥श्रीराम॥

॥१६४॥

महाराजनामअभिरामकीसुरीतिप्रीतिरहसरसालज्ञानहीनवैंकेआनतान॥ विसरविसृतिविरहावलीविराजमानगोपलोपलेश
हूंनेहातति ललोकव्यान॥ जाकीकृपाकोरकीकटाक्षजोनजीवजगपापपूजनीयपरमेशहूंकेमरणप्रान॥ युगलअनन्यकोनभांतिसेंबरन
नेमुखअजवअजवच्चिन्तवीजमरोजीवजान॥१४०५॥ वांकीवांरनामकीलहीहैंजामेंतीनतमटांकिहूंनलागेयाकीप्रीतिपलपल
पर॥ छ्याकीरहेसुमतिमोरागिनीसुरागरमियाकीरतउतेंसेंकुपंथइलमलकर॥ काकीकोनमानेमोनसुमनसुभावसुखलियोअप
नापविसरायछलवलदुर॥ युगलअनन्यछविहारअरधेशासुतफांकीदगेंदेखिकेविमोहेजलयलनर॥१४०६॥ जेतेजगही
शेतेतेनामवकशीशपायभएईश्वदेहहुतिहारएकरसतर॥ केतेसिद्धसंतरिषितापसमुनीशपदलह्योअनायासनामजापही
तेसिद्धिवर॥ सेतेसतगुरुकृपाकोशशीशशहिएरेतनामनेहकेतनहीलेतमहाप्रेमहनर॥ युगलअनन्यरेतेजांयगेजहानयुग
जनमिननमिजमजातनाकलेशपर॥१४०७॥ परमप्रेमोहअविनोरहेपशाहहरएकवारनामरतिसहितउचारते॥ चरमसुप
घसिद्धेरशासुविशेषाहव्यनामेनेहशरनसमजायवाविचारते॥ करमधरमकायक्लेशकोनकामकछुकपटविहीनएकनामरुचि
प्यारते॥ युगलअनन्यानित्यनरमानिचिंतमेजसरसमसमाधिसुखमोहएसवारते॥१४०८॥ आलसीसुभावमतिवालसीसुचारविचि
नालसीसवारभवभारहेतआरती॥

॥१६४॥

॥श्रीराम॥

कालमीमुनैनचैनहीनपरोतोहितमताकिनपरतमीचशीशापरमारती॥ चालसीननेकेटकेवारिअविवेककोटिकैपकलपि
कात्योलाग्योनहीनारती॥ पुगलअनन्यतनरसाण्यालसीहैंमठतउनहीभजतसुनामरघुभारती॥ १४०९॥ कापरकलेकम
तमतभवभीतहोयरेवायरिपोखममखजानोरखहेतहीं॥ सायरमहस्नसमअसमसुसंचिम्रमसंपतअपनपापतापसापकेतहीं
दायरहिलेशरिनदिनदुतिदूनेहरिवंदखतननीचकीचकलितअचेतहीं॥ पुगलअननन्यनामवायरविकलअल्पहोतविन
जातनहीपडेमुखेरतहीं॥ १४१०॥ कोउसांख्यशास्त्रउपनिषतसुभाष्यवेदस्वरविरहितनिसिद्दिवसविलोकहीं॥ कोउयोग
रागहरसोगसेविहीनभक्तिसुरतिसुतंत्रसुविचारतअशोकहीं॥ कोउयंत्रमंत्रतंत्रसिद्धतावडाईहेतनानाभांतिसाधनसजा
यचित्तरोकहीं॥ पुगलअनन्यसवसत्यपरआजकालसीतारामनामजपपावैसुखथोकहीं॥ १४११॥ प्रेमप्रधानसुसंतसुजानक
हकलिकालनआनउपाई॥ सोसुखसागरनामअधीननआनउपायमिलैश्रुतिगाई॥ सोउउरयसुविसंतकृपाकरिहैअ
तिसयगतिदुर्लभताई॥ पुगअनन्यसफाईविनासतसंगसुरंगचढेनहिभाई॥ १४१२॥ शांकरशेषअशेषमहामुनिनामपरत्वप्र
वाहवहाई॥ वारहींवारप्रसंसिसुनामहींऔरसभीमततुच्छदेखाई॥ एतेहूपैनलोगनिजनाममेंतोसवभांतिनमेंजडताई॥

॥नामने०॥

पुगमअनन्यसुपंथचलोलोकदुकेंटकराहमग्राहहिहराई॥ १४९३॥ धन्यअनन्यजोनाममहामहिमाअधिआपनीचित्तगाऽई॥
चारिहूंभांतिपुनीततर्तेत्योंतिहुंभांतिमहाव्रतनामसुहाई॥ होयअचाहनिगाहसमुज्वलकंजलवासनादूरिवहाई॥ पुगमअनन्य
पद्मीमतिसुरतिस्मरतिनामहींमेंरीकताई॥ १४९४॥ नामपरत्वअगोचरपावनप्रेमप्रदायकनैननिहारो॥ होयपरराजरुवायभली
विधिमैंजअयाहसचाहविहारो॥ चित्तमेंलगिरागकहंवकषायकलाविनआतमतारो॥ पुगमअनन्यसुनामजपैविनुकैसे
हूंकाहूकोनाहिउधारो॥ १४९५॥ वहूनवपानज्ञानविरतिविवेकवरवित्तवरधनेंहतुहहैनहीहेचहूं करनकषायकृतकेसहूं
नेहोयहायहिरसरूजारवारभालफंदेपेचहूं॥ संतसद्शास्त्रसुचिसंहितासुवाकविनसेवनंनिमित्तमनमांभमैंमाजमेचहूं॥ पुगल
अनन्यआसअचलललामनामविगतगुलामकलीकालव्याललेमचहूं॥ १४९६॥ रामनामहीनपापपीनविषवातहै॥ जपतपती
रथविरागज्ञानयोगयज्ञजावतसुपुन्यपरलोकउत्पातहै॥ विविधिविधानवेदसंहितावितर्कवर्कविगततखजानखेदखोद्यो
खुदखातहै॥ कईकोटिकलपजलपअनलपकियमिलिहैनमोदमुतलपनेहनातहै॥ पुगलअनन्यमतगरसुचिसीषसार
रामनामहीनपापपीनविषवातहै॥ १४९७॥ सोईस्वच्छज्ञानजामैंराममनामध्यानहै॥ नामव्यतिरेकवोधव्योमवनसुमसमसूरजमरीचि
उपताऽनवपानहै॥

॥श्रीराम॥

नफानहोसफारवफाइफाहोत्तजोत्तइविजफाफलपावतविशेषमतिहानैहै॥ बडेबडेसिद्धसुरसेवितसुनामसइश्रारनविहीनमो
हेमहइनमलानैहै॥ प्रणालअनन्यपैवनविमलविवेचनीयसोईस्वच्छज्ञानजोमेरामनामेध्यानहै॥ १४१८॥ नामसनेहत्तकेलेश
विशेषरहीवुंवत्ताश्रामशांतहिए॥ सोईकालगएकछुजालभप्रोजगजीविकाकारनमूढकिए॥ सवभूपतिवेइविहीनसुईन
प्रजाहुपहासनहाहरिए॥ मैनयमअनन्यमहाकटुकप्रसुभूमिरसातलवामलिए॥ १४१९॥ सोहतश्रीरामसदासुखमाकलकां
तिमहामनिनामसुधांकर॥ जाकीछटाछविताममहातमदूरिकेसेअनपासभयंकर॥ श्रीशिवजत्रअधिकारीअनूपमलोकविशो
कवेसेअभयंकर॥ प्रणमअनन्यसुनामप्रभावेत्तवाजिहैवंवविनोदजयंकर॥ १४२०॥ रंचकवस्तुविचारतमीतमहामइअ
घकरीसमताई॥ हैतोवडोसर्वज्ञइहैअभिमानगमानसुमानमघाई॥ श्रीगुरुकेपदपद्मपंकजपायलच्योजवउनमज्ञानसचा
ई॥ प्रणमअनन्यविलायगयोगुरमानगह्योचुपमरूखताई॥ १४२१॥ कालविहीनविशेषकियोललनागनसंगउमंगवढाई॥
भोगसमोगकुरोगमलीविधिभोगतजन्मसमहगंवाई॥ दुस्तरदोषनिलयभवमारगमोंभ्रमुलायमहाश्रमपाई॥ प्रणमअनमम
प्रेमसियावरनामप्रकारतमानमुलाई॥ १४२२॥ जानकीनाहसुनामसुधाउत्साहसमेतसुनितपउचारो॥ वासनाओरभुलाय

॥नामेन०॥

भलीविधिनामहीकोउरअंतरधारे॥ वादविवादसवादि विहीनकदाचितमौननभूलिउचारे॥ युगमअनन्यसुनामसुधासुचिसा
गरपोषिप्रमोदअपारे॥१४२३॥ नित्यानित्यवस्तुवषिविमलविवेककरिपरिहरिअनितसुनित्यउरधारिए॥ अखिलविकल्पभोगअ
जलोकलगिसबजानिअनित्यसत्यनामहींविचारिए॥ समदमआदिसुचिसंपतिसमीपहोयसदमानिहामिगाहिरहिएनहारिए॥
युगलअनन्यबसिसमरजसीरततीरठहिरेंधुवीरआपतीरऐऔतारिए॥१४२४॥ आसविस्वाससुखरासखासनामकरिरहिएअ
चलकछुकाहूसेंनमांगिए॥ रैअंतरजायवैधौविविहरीहरसबअपरअमरगनसमुझिनरागिए॥ मीचलोकवासीगैरफांसी
गांसीसंगअनिलोगहियहांसीतिकेत्यागितेंतत्यागिए॥ युगलअनन्यबहुवासरवितापेसोपरतापनीचनींदअबसावधा
नजागिए॥१४२५॥ एकएकनामकेउचारनसमानसुखसंपतिअनंतकेनमिलेसोचमानवी॥ ऐसेहेंहिमागरसरागपायहा
यपुनिपांवरकरततातेंखेदताहिजानवी॥ सेषसुकदेवमहादेवसनकादिहनूमानरटैनामअभिराममहिएअनवी॥ युगल
अनन्यसोईसहजसोहायोधनआदिअंतमध्यएकरसपहिचानवी॥१४२६॥ रशिकरसीलेगरबीलेचटकीलेचारुचांदनी
वहेंद्योंचमकीलेवसुमारेहै॥ जीवनसजीवनमदनमदध्यानमानप्रानज्ञानहैंधौरसराजस्वादसारहै॥ आशाकानकमलकर

॥श्रीराम॥

हितमीतकीधौंकहरहापानअकिप्यारीजकेप्यारेहे॥हारैंहधौंअलिनकेमारकिधौंमारनकेतारकिधौंतारनकेनैनरंगहारहैं॥१४२७
श्रीरघुनंदनराजिवनैनमनोहरअंबककीछविप्यारी॥जासुकेहीएवसीनिसिवासरसोसुखसागरनागरभारी॥मीनमृगअ
लिखंजनवापुरेहैंउपमानहियोगअजारी॥युगमअनन्यविहायजहानलखोदृगआनप्रवानप्रचारी॥१४२८॥श्रीरघुनाथ
कलोचनसोंचविमोचनस्वच्छसंकोचनवारे दारिद्रदाहिवाहिमागमरोगनजोवनमानहैंरतनारे॥प्रीतमप्रानअधारमहासु
खदायकजोहियशोकसंवारे॥युगमअनन्यनहेरिखंडविस्वकलापकदाचितदोषअगारे॥१४२९॥नवोरसअरसहरनश्रीरा
मायनदेखवाहएउद्याहिदृगमगमनमारिए॥रसराजललितनदेपशामिथिलेशगेहविसदृशसदनमदकदननिहारिए॥रूप
नवीसंगहांस्यकरुनाअनुजदुखवरवधवीचरुद्रसजियधारिए॥युगलअनन्यअद्भुतपाकरिपुसुतसमयोविचित्रभ
१४३० लीभांतितेविचारिए॥नागपासबंधनमेंप्रगटविभत्सरससेतुनिर्मानमेंभयानकविशेषहै॥महाउत्साहचाहसहितसुरनमध्य ॥नामेन॰॥
सोहतसुवीररससरससुवेषहै॥शांतरसप्रजापनपालिवेमेंएकरसउद्वेगहीनचिंतलेसहूनद्वेषहै॥युगलअनन्यनवोरस
कोजनममभिंतेसहीअपररससहनअशेषहै॥१४३१॥धीरजहींधारेध्यानधवलसमाधिसुखभक्तिभावचावसवधीरजअधीनहैं॥

धीरजप्रतापमैंसमसूरहुसेनजीततिजनपावेमोरछनप्रीतिपरमप्रवीनैहै॥ धीरजधुरीननरखेदखेवाफहीनहोयधोयदुर्वासनाविला
सपनपीनैहै॥ युगलअनन्यअभिलाषआसखासपरिपूरनकरनएकधीरजवलीनैहै॥१४३२॥ धीरमतिमानकुलकानराजस
जसवरणकहोसुधारिशेकेकाधिककविलेशविन॥ वीरवलवानआनतिनकेसमानकोनजोनजनधार्योदृढधीरजउपाधिहिन॥ औ
रनकीकथाकहाजीतेमनसमसूरजाकेवसनिखिलजहानरहेहीनदिन॥ युगलअनन्यातिन्हेविसरहविनाहवरपलपलप्रीति
को छूट्योतिनहीँतीनरिन॥१४३३॥ धीरवरबुद्धियुतलच्छनश्रवनसुचिकीजिएसमेतरुचिभलेहीँप्रकारसैं॥ सुंदरसपूतसुतस
हसमसमनभएमानसनशोकअंकधीरताविचारसैं सर्वससौंजपरिवारदुखधारवीचबूडतननेनकोहिल्लहाहभवभारसैं॥ युगल
अनन्यमेरुमंदरसैंधीरअतिहलनचलनविनपागप्रीतिप्यारसैं॥१४३४॥ धन्यांधनांधरमधरेशापरमेशप्रियधीरजसुधारिजि
ह यमौंउत्साहसजि॥ एकटेकचातकचकोरमोरमीनवरहारिलगहनकरिलोकवेदलाजतजि॥ चाहेकोटिकहेकोईमानतन
नेकुवातघातउतपातविसरायधीरभावभजि॥ युगलअनन्यचतुराईचपलाईचालमानिकेदुमालरुषप्रेममोहसिंधुभजि॥
१४३५॥ काहूकीनशंकअंकेवंकव्यवहारविनुविमलविवेकटेकधीरताअडोलगन॥ नानामतवादविषवादकविषादनादसुनत
श्रवनउठगहैंनशीशधुन॥

॥श्रीराम॥

महाप्रलैअहिदुखदारुनदृगनदेखिदरदरदनरांचचितलागतविकारघुन॥ युगलअनन्यआदितीयवीजवोधवायवायकेचपल
मतिदामदारहियोहुन॥१४३६॥ धामिएधीरतावारनाकोधियछोडिकलंककलाचपलाई॥ जालिएजालकसालकरालउ
जारिएआजउपाधिवलाई॥ मारिएमोहमनोजकेफौजकोपायप्रमोदमिटायमलाई॥ युगमअनन्यसुधीरभएमढ़मानरहे
नहिनेकछलाई॥१४३७॥ रामरूपरंगकोदेखायदेतलेतचिनचोरवोरदहमसुसिंधुअनायासहीं॥ कामकोहमोहद्रोहछो
भछलछोहछनमांभहींनसातउत्पातखदरासहीं॥ आमखामदामसमहोतआसपासमोदविमलविनोदवरपावैप्रेमवा
सहीं॥ युगलअनन्यधामधरमधुरीनवीरधीरपीरहीनहोयवसेनामआसहीं॥१४३८॥ इस्कपारप्पारसारसरसमसमूहसवछ
अच्छअनमोलज्ञानपावैनामजापते॥ खटकानखेपजोफजालिमजहरजगठगमगलगनहीआवैनामतापते॥ निखिल
जहानमाहिंमानताअमानताअमानहोतखानपानमधुरपियूषदूरदापते॥ युगलअनन्यपलपावभाविकिएपरविसदवना
ववाविमलप्रतापते॥१४३९॥ नाममहामनिवारिहिएउजियारीअखंडअजूवप्रकास॥ दामनेनकलेगकवहूंकतहूंकछुरां
ककलंकनभास॥ आठहूंजामअरामरहेउरदाहमिटेमनमोजविलास॥ युगमअनन्यसुनामजपेनहिंआनवकातवहीयहु
लास॥१४४०

॥नामने०॥

ताप
रामरूपमांहिचित्तलाइयविकल्पवीजविफलविहायेंनासिहैसुसांचहीं ॥ अपरउपायकलिकालविकरालमांझ जायवायविष
इविशूलमूलआंचहीं ॥ हायहेमिमारराम नामरससारपानकीजिय अपारमोदहेतपारपांचहीं ॥ युगलअनन्ययातवारहि ॥श्रीराम॥
यधारनामरूपसम्हारिऔररेरवकानजोंचहीं ॥ १४४१ ॥ राजतरंगरहसमसुवाहदनामकेअंतरजोहियप्यारे ॥ ध्याजतमेजत्र
जवअभयप्रदअंगहींअंगमरूषेहजोर ॥ नामविनादुखदोषदुनादृगदोषिकेतागिगएफंदपमोर ॥ युगअनन्यसियावरकीध ॥१६८॥
विपहीनहीनिकसेभ्रमघोर ॥ १४४२ ॥ रामरसरागवागविमलविचारुचारुचांदनीचरित्रचित्तचारोहिसिरेरविए ॥ कामक्रूत
कागआगदागदुर्मतिदोषहीजिएदुरायप्रेमप्यारपनेपरिवए ॥ आमअनरागस्वादचारिवएभुलायपन्नमकर्मकायनातकोनता
निएनिमेखवठी ॥ युगलअनन्यनामहामअभिरामरोजफेरिएफेरवफ्यालफकिएविशेषिए ॥ १४४३ ॥ हायवपुमानुषमुष
खसखहेनुत्तऊचेतननमूरगनगूढवेवकूफहै ॥ आयवायजायवादवहतविचारविनुलोकशोकरूपद्वातमांझसठस्रफहै ॥ ॥१६८॥
काहूभांतिताकीभ्रांतिशांतिनकदापिहोतसोततताकोवेदमंदरहितआसूफहै ॥ युगलअनन्यअन्यवासनाउपासनासेंकाजनहीं
मेरोसांचकहेंअनहूफहै ॥ १४४४ ॥ चित्रकूटचारुचपचोरनचमत्कारचूरनचरित्रचितचायचैनचंदहै ॥ चामीकरचपलाचप

॥श्रीराम॥

दुतिदामेदरिखिबोगुनउछाहछायोरहतअमंदहै॥ लोनीलोनीलताललीलालनसनेहअताकरतीविचित्रअनरागीनपैसंदहै॥
युगलअनन्यचलिवमिरखिलेवविनाचित्रकूटवीचछोडिऔरफरफंदहै॥ १४४५॥ चित्रकूटकूटकेलिकालकोकदनकरका
मदकलेशकाटिकामदामदेतहै॥ योगजपजूटहोतहीयमैंअनूटवोधरहितविरोधसुखसाधनसमेतहै॥ सीतारामलषननि
वासमयकरसजहाँआसपाससरससमाजमुनिकेतहैं॥ युगलअनन्यतहाँवसैंसुरराजऋषिराजरघुराजपरपूजनकेहेतहै॥
१४४६॥ कोटिनकषायकामवासनाविलायनेकनजरनिहारेचित्रकूटगिरिराजको॥ कह्योवाल्मीकमुनिवर्य्यरघुवर्य्य
मनमहिमाअनंतनगरूपमहाराजको॥ ठौरठौरमहामोदमंदिरमनोजमदहरेहरेहरेभूमिरुहसुखसाजको॥ युगलअ
नन्यैंवारवारतापैधिरकारजैनननहिचाख्योचित्रकूटसिरताजको॥ १४४७॥ मंदाकिनीमधुरपयस्वंनीविचित्रनीरधीरधीरधीर
वहैंदहैंप्रानपीरको॥ एकसतआठसुचिसरितविराजैंनितआवरनमध्यजौनअवसुखसीरको॥ कोटिनकलितकुंडभुंडभुंड
रंगरससरेभसकतमोददेतरघुवीरको॥ युगलअनन्यमहामंदहंदरतेभाग्यहीनजोनदेख्योगिरिशृंगगाजगीरको॥ १४४८॥
जानकीजीवनचित्रकूमनोहरमोहनमानमनोजनसावन॥ हैकितहूँसुखसेजविहारथलीकितहूँरसरंगसोहावन॥ लोकमेंऐसान

॥नामने०॥

अंबकहींसतमानिऐवेनविलासववसावन॥कोनकहेंसुखमासुखयकसेयुगमअनन्यहियाहुलसावन॥१४४९॥मेरोमनमटजैोन
पलेमअरूटरोपगह्योगुनगूढज्ञानअचलअडोलको॥छुटोदुर्वासनाविकारमारधारभाररह्योलह्योनामनेहमहाअनमोल
को॥मागोवरदानअववारवारजोरिकरदीजियेयासियुअविलंबवरवोलको॥छोटनहीयुगलअनन्यसेंअवधेरहरहेलोकुपा
लत्पागिलाकउमाडोलको॥१४५०॥कामरूनाथसमाननहींजगहानीपुरानहूंवेदवखानी॥हैतअलौकिकरंगउमंगमिलेजेहि
पायकेसारंगपानी॥हैयनहीगिरिकोटिसोंरेखतएकरतीगुननेहकोछानी॥युगमअनन्यकोरीजहियाकोरघ्येटनश्रीसरजूम
हरानी॥१४५१॥रुपअरुपसमानप्रमानअजानसुजानबरावरजानो॥रुपअरुपअपुष्पसुपुष्पमेंभेदनहींमनमांमप्रमानो॥
वामअवामअकामसकामअरामसरामअभेहैंजानो॥युगमअनन्यप्रपन्नभनेभवमानहनेरहलखनजानो॥१४५२॥नाम
सुरंगरंगेसोरज्ञानी॥आठहूंजामसुधासवसेविलसेहुलसेमनवेदवखानी॥लाभअलाभमेमोहनशोकअरोकरहेअनुराग
प्रमानी॥वासनावैरअमंदहूमंदगुनेहुगंधअवंधअमानी॥युगमअनन्यसुलक्षनलक्ष्यमहीसोइनामसुरंगरंगेसोईज्ञानी॥१४५३॥
करमउपासनानज्ञानध्याननेकमोहिमनवचकर्मसियारामनामअभ्यासरे॥अधिकअनारीहुराचारीतऊधनुधारीतेरोकहवाऊंमूरे
श्रीलखलिचलकऊंलालेललमेतमनलदचिविषवासनाविकारनिशिवासरे सांचेहासीहासरे॥
८

ऊजे साप धान दुख खानन नेह दूरि धरि दूजे दक्षि देह सुनि तम क्षित रजाती

॥श्रीराम॥

युगलअनन्यवहंतरफसकेतममकेवलकृपालकेकृपाहीं तेनिकासेर॥ १४५४॥ वावरीसीमेरीमतिमलिनअलिनसाथगावे
जगगाथवरजेहूंनवरजती॥ सखिनसहायपायसवलासीभईवामनामकोजपतपेखिगहरगारजती॥ युगलअनन्यकीजेकरुनाक
टाक्षअवअविलंवनाथहाथगहिएअरजती॥ १४५५॥ भूमिजलतेजपवमाननभमनमतिअहंकारयुतआठप्रकृतिप्रकारहै॥
जानीजडपाहीशक्तिईस्वरीअपरजीवचेतनअमलजैानधामसोभवभारहै॥ जानकीजीवनजूकीजुगलविचारुशक्तिपरायकअ
पराअपरअधिकारहैं॥ युगलअनन्यअनायासमुखसारसुविराएमुनामतवजायपारपारहै॥ १४५६॥ वंदेहोवारवाररशिकन
पदरजको॥ जाकेएकवारकेपरससेप्रकाशरासहोतउदयआयदुर्लभसुखअजको॥ जैानप्रियपावनपरागपरमेशआपचाह
तहमेशहितआमरनमजको॥ धोरेविनाताहिमोहरवावमेअगमअतिमतिविपरीतरहेकोहकामकजको॥ युगलअनन्यविरुद
दलीविचारिवलिवंदेहोवारवाररशिकनपदरजको॥ १४५७॥ अवधअनूपमिथिलाविचित्रचित्रकूटकालकूटसमनदमन
दुखवंदिए॥ तीनोथलअमलरहस्यललीलालभलभाविकसनेहाप्रानप्रीतमपसंदिए॥ एहोअनुरागीवडभागीतमत्या
गीतहांतिन्हेवारवारनतिसहितअनंदिए॥ युगलअनन्यअविकारसारसुखनामरटेवसुजामसवसंतअभिनंदिए॥ १४५८

॥नामने०॥

जानकीजीवननाममहारसपीवतंप्रेमवेदपलअंतर॥भेदअभेददोउकथनीमिटिजातरहेरसएकसुमंतर॥नारअनारप्रमारय
गरुचिरंगरंगोवजेस्वच्छवजंतर॥पुगमअनन्यसुनामकृपाहींसेहोतहैजीवसमानस्वतंतर॥१४५९॥ऐसानकोउसनेहीमि
लैजिहितेंपियकीकछुवातहींपूछों॥जोकहूदैवतेनाममनोहरकानपरैसुखहोतअछूछो॥चाहतहैंदृगदेखिवेकोजिमिसुंद
रभोजनरंकवुभुछो॥पुगमअनन्यसियावरभेटैतेपरानहितौसदाचितछूछो॥१४६०॥हैनकहींविषप्रानमेमारविचारियचित्त
मेंआपनेप्यारे॥ पांचहूंवीचसनेहभयेमनहोतएकाग्रविलोलताडोरे॥ वृत्तिनिरोधहोतेंसुखहैनहिंऔरप्रकारकहापिविचा
रे॥पुगमअनन्यसचेतभलीविधिपीरतामाहिपरेशहिहेरे॥१४६१॥सीयसलोनीविभूषनसाजिविराजतिकंदुककेलिनिकुंजन॥
तैसहींलालजूछैलछवीलोप्रियाढिगवैठिलेहसुखपुंजन॥आलीअनेकघरीचहुंओरमनोअभिरामिनीप्रीतिअमुंजन॥
पुगमअनन्यसुकंजमकेंदुकमानसमेततिरामुरमंजन॥१४६२॥ लालनओरचलायप्रियाप्रियसोछविदेखिरसानि
जझेले॥आपहूंकेंदुकमंजुउठायरहेनचलायसकेहिनदूले॥लछ्यभईकहुंऔरहीऔरअनूपमप्रेमहिंडोलनेझूलें
जानकीवल्लभकेलिकलालविलोकिहियाकलकंजसोफूले॥१४६३॥भावसुचावप्रभावभरेहेरंगभरएकमनीयकलाकर॥

॥श्रीराम॥

कोटिनकौतुककेलिकरैंन्नमभीतिहरैंरसप्रेमपिलाकर॥कौनकहैंसुखमाअँगअँगकीजानिहैंआशवजाननजलाकर॥यु
गलअनन्यअहंगाअभयअनुरागमिलेमहंमानमलाकर॥१४६४॥प्रकृतिपुरुषमहतत्वआहंकारनेतप्रगटत्तविविधिप्र
कारविस्वसमुदाय॥जाकीमनतालेशहींकोपायनिजनिजकाजनिरततरहतसोईस्वरसअखंडकाय॥प़ाहूकोप्रकाशाकपे
शजानकीशसोईअवधपुरेशावरदेशरंगरामसिधाय़॥युगलअनन्यकालपुरुषप्रधानजीवचौरासीयपीयकेकृपाविनासम
र्थनाय॥१४६५॥परतेपरात्परनामअभिरामराममँहामोदधामअर्थविमलविचारिए॥रेफस्वरहीनमीनपरमप्रवीनपीनका
रनहरीशविधिअमितनिहारिए॥अवधपुरेशपरमेशरूपस्वच्छअच्छसुमनविकाशाकरेपखिवुद्धिवारिए॥युगलअ
नन्यनित्यमुक्तबद्धजीवपाँचप्रकृतिविचित्रतीनचारअवधारिए॥१४६६॥जानकीरमननाममध्यब्यवधानविनानि
खिलसुवस्तुवरवोधमोदकीजिए॥ईशअवतारअवतारीजेतेजगदीशतेतेशकहीनतितनित्तलखिलीजिए॥युगलस्वरू
पकोटिकामतेअनूपलीलाधामगुनसुच्छविप्रतच्छरसपीजिए॥युगलअनन्यपलपावविरहितहोयहायहरतोरगोरपु
तमनजनीजिए॥१४६७॥नामअभिरामगुनुअगुनसगुनधामकारनकेवैशाकामकरननिशंकहै॥जापिएजलायजगजालिम

॥नामने०॥

॥१७१॥

क
जलसजसैतेलमधुधारएँतारयुगअंकहै॥ दशोअपराधअंतरायव्याधदूरिधरिहिरसहिरायधोयईजेपटुपंकहै॥ युगलअ
नन्यआमसुखसिपतमेतपरधाममेनिवासमंतकहैंदिएउंकहैं॥१४६८॥ नाममहाराजकेकहायऔरओररचितैतानगुनगो
रैंसेविहीनमतिबौरहै॥ षटरसस्वादसैंसमेतमोदकेतथारिइतनीचषटरिभीषमोंगकटुकोरहै॥ साधनसमूहहैतपचतर
चतेरागशोगकोनिवासइविनानामसिंधुभौरहै॥ युगलअनन्यआसअखिलउदासमहोपरटरामनामतेनसंतमिरमोरहै
१४६९॥ रैनअैननामजपतपमखनामैनेहज्ञानध्यानभावनासुप्रेमनामचआसहै॥ लोकपरलोकनामकामपरिपूरकर[illegible]
नामअभिरामविनाआनकालफांसहै॥ नामधुनिमुनिगुनिमनमोमहानमोदविसदविनोदनामप्रेमप्रतिकाशहै॥ युगा
लअनन्यजाकेजिगरजिकरनामखूबखसजामतेननितयाददिलदासहै॥१४७०॥ अैसीकोनचीजजैंकोरहैसोहमहिरसहिरायजा
पजाकेजसजोरते॥ नामसामसीमसेरहितननजरवीचदूसरोहै खायपदिपेमाहिगुनगोरते॥ स्वारथीसनेहीसवेसवामावको
मआसरसाभामयेयोगरोगसोगतेरमोरते॥ युगलअनन्यअनिमेखसुविशेषनामजापिएअशेषतेवांछातनातनेतोरते॥१४७१
नामसुधारसस्वादसुपायकेफेरिविषैविषचाहहूंधोरे॥ सोमतिमंदविहायमहामनिकोचकेहितउपायविचारे॥ नामउदार

तजवीज ४

॥१७१॥

भिरामनिस्वच्छमरासुखदायकनैननिहारे ॥ युगमअनन्यप्रमोदहिंमिलेअविलोलजौंकनिमेखनटारे ॥ १४७२ ॥ नामप्रका
॥श्रीराम॥ शप्रतापपरत्वविचारतकैनकोकामनहोगो ॥ कैठिनकालकराल कीकीमतकाफिरताहोतहरिरहोगो ॥ नामनिसानवि
तानवजायवहायविकारवहारवहोगो ॥ युगमअनन्यअतर्कअपूरवपूरववस्तुविचारगहोगो ॥ १४७३ ॥ सांचेरसराचेयप्रपं
चपंचबानविनाज्ञानयोगविरतिविचारसेंसमतहै ॥ तेतेसबनेहनिधिनामभेमगनकियेएकरसअरसविहायअनिकेतहैं ॥
रुखेमरुखेमरुखेदरुखेकलीकालरसतरुखेतौनऔरसाधनकरतमरेरतहैं ॥ युगलअनन्यजीहजपोशिवप्रानधनसुमनसहै
वशुभसौगुनउपतहै ॥ १४७४ ॥ नामपावअंशहीसेंसंभवसुवेदमलप्रनवप्रसिद्धसिद्धपावनकेहेतहैं ॥ सोहंसेआदि
मंत्रतंत्रमेंविहितमहीवरनविचित्रयुगअंसनउपतहीं ॥ अमितअपारभारबाहककविवेकविनावेहेतेउगहेनामसेहै
निजकेतहीं ॥ युगलअनन्यनैनअंतरकेखोलिदेखुरेखखोंचिकेहसवसंतअमुसेतहीं ॥ १४७५ ॥ वीचवसेकलकीवकेरो
रकपापहजारनहायहजरी ॥ मीचमरेरातहैसबद्धौंचकोतूसट नाहिलखेदुखपूरी ॥ हूजिएपारविलंबविहायलहेतवहीं ॥नामनेन०॥
मुदजीवनमूरी ॥ युगमअनन्यसुहेलनमीतमिलेजवपीशाचेठअसूरी ॥ १४७६ ॥ खापरखोरोंखरावसभीविविपुछनकीनि०
म के हैरिपुपापी ॥

॥श्रीराम॥
॥२७२॥

धायकेहाथपरश्योहरिमैंमेंनिजनामसुजापजपोदुखदापी॥ हायरहेगुरकेपदपंकअशंकिमिलेमहवूवभिलापी॥ युगमअनन्यसु
गायसुखारहिएवरवीजविहारकलापी॥ १४७७॥ सूरवहीजोकेरचित्तकोवसकूरवहीजोनरामरिझायो॥ धूरवहीजोधुरीनधरे
रामनेहविहीनसुहीनखिझायो॥ नूरवहीभरपूररहेनितकूरवहीमुखमारमिझायो॥ युगमअनन्यसऊरवहीनिजजीवनमूर
सुनामहीझायो॥ १४७८॥ संतसोईरसवंतरहेनितकोसोईतियअंतकोजाने॥ संतसोईसुखवंतजपैजोहितेतसोईअभिअंतपछाने
हेतसोईभगवंतवंतभजेनहिंतसोईजोअनंतहिमाने॥ युगमअनन्यवसंतसोईजोइजानकीकंतकेशोकसमाने॥ १४७९॥ सीताराम
नामकेप्रसादसैंसरीरसवछछअछछरश्याचारिअंतःकरननिहारले॥ सीतारामनामकेप्रभावतेअनेकभोगयोगयज्ञसाधनसमूहनि
धीरले॥ सीतारामकरनाप्रभावतेकहूंवमोहखानपानअश्वगजराजसाजसाजले॥ युगलअनन्यअमोहीनचालभक्तिजोनकरतन
मरतोनजन्मजन्मख्वारले॥ १४८०॥ छोडिछलछांहछोभलोभगोमवारिवोडितोडितारतरुनसुनामहीसम्हारिए॥ कोटि
मनराजदुखजोडिसंतसाथशोकहोकोतोकेनकहूंरहेनधीयधारिए॥ थोडिआयुपायपरपंचपंचपापवीचनाहकहींनीचतंग
वायहेतमारिए॥ युगलअनन्यमोडिमानसीसुवृत्तिध्यानकीजिएहमेशजन्मजवाज्योंनहारिए॥ १४८१॥ पूरनेप्रेमपियूषपपास

॥२७२॥

॥ श्रीराम ॥

रामसुनाममजीवनजोहे ॥ तूरनतारतनोतनहींमधिरेखतहीरहिएहु तिरोहे ॥ ऊरननाभिममानमहावरवनिवनायसुसंगति
सोहे ॥ युगमअनन्यसुनामप्रतापमेंऊरननेकनहींकहुंमोहे ॥ १४८२ ॥ नामप्रवीनसुमौलिमहामनिमानतथोरहींमेंबिपुलाई ॥ बा
तविचित्रविकाशचहूंयुगवरहूंगायगनेचितलाई ॥ शंकननेककरोअपनेमननामभजोतजिकेचपलाई ॥ युगमअनन्यमेंआ
हमहीपरनामकृपातेहमेशलाई ॥ १४८३ ॥ दिव्यमव्यभावनीयअमलअमोलमनिमधुरमुनीशमेंशधारेंदिलप्रेमसें ॥ नाम
अभिरामअतिललितललामछविछायरचोमच्छअंगअंगमतसेमसें ॥ जौनकांतिकलितकृपाकटाक्षपांतिलहिजागतन
ररजेतिजगामगेहमसें ॥ युगलअनन्यनामनेहनिशदिनकरपरिहरवासनाविकारनितनेमसें ॥ १४८४ ॥ कोटिकोटिकायर
कपूतधूतमजवृतपापपलपलपररचेरोमरोमसें ॥ संतसीयकंतमतगुरुसेवनीयमवममनसमानसमुझतसालमोमसें ॥
परमप्रधानपविमाशिद्रुखदारिदलनीचनिरछिनकाजकियाकोलडेमसें ॥ युगलअनन्यअैमोअवमहुंएकवारनामकेकहतपार
पावैतमतोमसें ॥ १४८५ ॥ नाममहाराजअविराजराजवासीजनजीवनजहांनमेंप्रमानपूजनीयहै ॥ देवहामदवतचपतच
पलाचारितहारितहमेशाकालकूटहजनीयहै ॥ कहेकौनशक्तिमानदूसरोनिहारोनैननचैनअनहींमहायवैठेधजनीयहै ॥

॥ नाममे०॥

युगलअनन्यमनमान्योमेरेमोहनिधिमालिकमरादप्रदनामकुंजनी यहैं॥१४८६॥

नामबिनाजगजीवबजानि०जाहिरवरमहामलरामी॥ चारिदिनानरदेहभवभ्रमतिप्रमतिमहादुखदहारनआसी॥ होयअचिंतममाधिमुशैलाकोमेंसोयरहोरमलेपियपासी॥ युगलअनन्यअदागअडोलनेहपरप्रेमप्रवीननिवासी॥१४८७॥

रामानंदस्वामीजूकेसबलसनेहवंतसिष्यसिरताजजेतप्रगटउदारहैं॥ तेतसुखसिंधुहीनबंधुनामेनेहनदेहभववासनाअनेकजीवजारहैं॥ तामेंश्रीकबीररसधीरवैनचैनप्रदवीनकविचित्रनामसुगुनउचारहैं॥ युगलअनन्यऔरसंतछबिवंतबहुरामनामसारशब्दप्रबलपुकारहैं॥१४८८॥

जानोनहीजातजडजीवसीवमुखहीनदीनछीनहीनमतिरहितअजानते॥ वेकेवहुवारव्योमसुमनसमाननामेरमप्रीतिहानमानेविषमवयानते॥ पढ्योनहीग्रंथमतपंथसेंनसंगकियोकहांकरेंमूढगूढगतिनप्रमानते॥ युगलअनन्यश्रीगोसाईंजूकीवानीसुखखानीअभिमानीताकोसुनिकेनमानते॥१४८९॥

छकोनिजरामनामवकोनवचनवामतकोसतगुरुसंतशरनसुबोधको॥ जकोजगजाहिरनचकोचितचामीकरदुतिदेहदाहकेसमसुभेष्मासुसोधको॥ शांतरहुसंततसजायकेसुतोषनितपअसततअनित्यमतनिखिलविरोधको॥ युगलअनन्यवैठिसरजूसरिततटनिपटचपलचित्तकीजियनिरोधको॥१४९०॥ सीतारामनामःष

॥ श्रीराम ॥

हायक अमिय मिष्ट अविलम्ब रिषिकष्ट हरन हजार है ॥ दुष्ट मत भ्रष्ट नष्ट कलीकाल मध्य श्रेष्ठ सहित रहित हृद्य गुन संत सार है ॥ अभीमान उन्नत वितान तानि रहे सुखखानि नाम रटन विमुख सविकार है ॥ युगल अनन्य सब सोच को विहाय मीत भजिए सुनाम सब सुखन अगार है ॥ १४२१ ॥ सुद्धमान कूल प्रतिकूल हर्ष है न तम तम सम तम सरद सुचि सजन समूह को ॥ मध्य मरद सेवक सुभाव चाव चैन चित्त अचित अगित भानु सम पर व्यूह को ॥ जीव ईश नित्य एक रस शक हीन पीन माया ईश शक्ति वंग अतरंग ऊह को ॥ युगल अनन्य सावधान नाम रूप रस चारु सु आरमत सब जानु चकाव्यूह को ॥ १४२२ ॥ श्रुतिन सदर्थ सुसमर्थ अन्तव्यर्थ कारिकै प्रतिपादन अगुन दर्ह हीन को ॥ बृभिन पर तीतिन्ह पूरब अपर कधुं गहे गुनगार तगरूरगार वीन को ॥ लोक वेद विदित विशेष सर्वशास्त्र बध धाम विशेषा अविशेष बीज तीन को ॥ युगल अनन्य राम नाम के रटन विना विशद विचित्र वसु लखै के सभीन को ॥ १४२३ ॥ सकृत शरन जो पुकारत प्रपन्न होय आरत समतता को कत हन भीत है ॥ आप मेरे स्वामी अनुगामी सब भांति हम वरत विकार हारि रहे वानि जप्रीत है ॥ महामोह प्रद समद पूजनीयपन प्रभु जानि के विशेषन ही वात विपरीत है ॥ युगल अनन्य सिय पावन भसुव्रत सुचि समसु मिक सुरीति पसो पावन प्रतीत है ॥ १४२४ ॥ दीख एक लंक कर्न्ते तिकै न काक को ॥ अमित अनीत सठ कियो हठ वसत उ शरन के आए ज्ञान कियो विनाना क को ॥

॥ नाम नं० ॥

कारन

हियोदृगफेरितामेंहेतुनअपररंचपावनअशंकहानेंअवाककोकै॥कोटिनकलपपर्यंतवधयोगजउतउअभयवानकीन्हो
पुन्यपरिपाकको॥युगलअनन्यअैसोस्वामीकहैंकौनमित्रैरखिएकलंककर्त्तेनिकौनकाकको॥१४२५॥गीधगयंदमहा
मतिमंदतेरपरद्वंद्वकेआसरेआय॥सिद्धमनिन्दअनिंघत्तपोस्वरआजलैधामपरेशानपाय॥कायरकोलकिरातकुजातपग
अवद्वातततेअसिरनाय॥युग्मअनन्यलहेगतिस्वच्छप्रतच्छलखोहमसेंअपनाय॥१४२६॥कोनकहैंकरनीकरुनाकर
कीकमनीयकलाकुसलाई॥कोटिनकल्पलौंकोटिनजीहमेंसारदाशेषाकेहेनसिराई॥मोसममलीनअलायककोसबभांतिनतें
सुचिताईसिखाई॥युग्मअनन्यअयोगतउजसयोगकेहेतुउमंगबढ़ाई॥१४२७॥नीकेनिहारिएजानकीजानकोसीलसुभा
वसोहावनोसांचो॥फीकेविसारिएनातोसभीदुखदानीविसेषविचारिनराचो॥पीकेपआल्लापरत्वप्रभापतिप्रीतिसुरीति
सनेहहींयाचो॥युग्मअनन्यनजीकेढपावकुवाहविपादनमाचननाचो॥१४२८॥लाईएधिमीपनअदूषनविचारि
चित्तहरीगनराजअविलंबमतकारसें॥दीन्हौंमैंअभीतिपरप्रीतिरीतिजानेविनाहोयरसमोलितउसंकिएनहारसें
अमीयुधासानीवानीविदितवखानीश्रीवदनसरसानीमुनिहरखहजारसें॥युगलअनन्यमतिमेरीहुलसानीजानी
जानकीजीवनसुधाऔरविषभारसें॥१४२९॥

॥श्रीराम॥

जे अस सील सुभाव सोहावन तौ तौ निबाहहु मोरे सें नीच को ॥ होइहै यामें न संके छपन प्रीतम पंकविहीन अमीच को ॥ हौं हिय हारि
रह्यो पहिले परचार बटी अब बातन बीच को ॥ प्रेम अनन्य सुन्यो मन सें तितसें संग महा जल उज्वल कीच को ॥ १५०० ॥ स्वामिनी
सीय सुभाव सुनी हम श्री अवधेश किशोर सें जोइ ॥ राक्षसी घोर कठोर हू पै नहि कोप कृपा कमनीय प्रमोद ॥ श्री हनुमान सें अ
पकही कलैवन सुचैन विशेष विषाद ॥ प्रेम अनन्य ग्रहीत उतान के योग न नेक मराद प्रमाद ॥ १५०१ ॥ कौन अैसो जीव जो न क
रत न पाप है ॥ तऊ सत आरज सुभाव बल वीर क्षमा करें भरें भाव हरें तो मत न मत पाप है ॥ हाय वंधलाय कअलाय के अशेष विधि त
ऊ न हीं त्यागि एकदापि दुखदाप है ॥ भई सवशरन समीप हीं रहन मात्र तातें त्रान की जिए विसेष सुमिलाप है ॥ प्रगल अन
न्य अैसो सहज सुसील स्वच्छ कौन अैसो जीव जो न करत न पाप है ॥ १५०२ ॥ छोडिए लोक करंव की आस निरास सेहा समि
पावर हूजे ॥ तोडिए नातरु घात रुनीति न कास मजानि सुतोष को पूजे ॥ जोडिए जान जसी सुख खान श्री जानकी जान सनेह
न दूजे ॥ प्रेम अनन्य पयोधि समान सियावर सौं सम भाय न कूजे ॥ १५०३ ॥ बाट तमो जम हान हमें सहिं श्री अवधेश गुनाक
रगाए ॥ आट तऔर न हीं कत हूं मम सील सुभाव शरन्य विहाए ॥ हाटत हा कटशोधहि सिहैर के कानन वाध विरागविलाए ॥

॥सीतारामनाम
नेहवाटिका॥

॥नामनेह॥

युग्म अनन्य न वारत त्तै पउपाधिन को पद प्रेम पगाइए॥ १५०४॥ आरत सम न शरन रत अनवंध आप मेरे तनत्ताप ताको वगहैं
मिटाइए॥ व्याकुल रहत पल पल प्रान मम असम समान तिव्रै वेदना वहाइए॥ तीनो लोक मध्य हमे हसो नाहै रहै हि लहि रिक
खैया को उहाय पद रसाइए॥ युगल अनन्य कलिकाल को कहर कोटि कटिन कलंक करज लहद हाइए॥ १५०५॥ कोन सुने का
में कहैं खेद निज जीय़ को॥ सीताराम स्वामी सुचि स्वामिनी सहाय़ पाय़ तउ हिय हाय़ अभ्दुत भाग भीय़ को॥ हौं तौ अपराधी सिर
ताजस वतौर पर आपनोई गुन गौर कीजिए अमीय़ को॥ नाम के भरोसे पाप पुंज करौं रैन दिन छिन न अचल चित्त चाहत मती
य़ को॥ युगल अनन्य की खवर लीजिए कृपाल को न सुने को सक हैं खेद निज जीय़ को॥ १५०६॥ जानकी जीवन जू आपनाइए
पात्त की प्रेम प्रकाश विहीन को॥ लाइए आपनी ओर हौं खैंचि के मोहि भली विधि सैं लखि हीन को॥ आप से वाय़न त्ता पत्तमा
तम और विनास करै मति भीन को॥ युग्म अनन्य गरीव निवाजिए आप भली विधि स्वामि प्रवीन को॥ १५०७॥ विषय विकार
में न हटत अब मम मन सीख मत्त सहस असंख वार दै चुको॥ महा वेगवान सरिता ममान हान करवो धेहूं विवेक वल पल भरि
नार के॥ ख्वौं जो जव पाहि मारि वे के अर्थ नाम वल तत्व नार हत्त कौं हूं अन नत हिं जालु के॥ युगल अनन्य सुचि सीतल करावो माहि
मत्त दहन वीच जात हौं सहाय फुके॥ १५०८॥

॥श्रीराम॥

रघुकुलमंडनविहंडनविकारवनसुधाघनधाराधरवरषिजिवाइए॥ कठिनकरालकालमलिनमहासरिमलनताहीमैंत
प्याइहैप्रभुआपनतपाइए॥ परमउदांताविदितवेदलोकवीचनामुकोपरत्वमेरहेततननमाइए॥ युगलअनन्यजनसमस्वच्छसा
रमसिममसरससुसिंधुतामैंमेलिनहवाइए॥१५०९॥ कोटिकोटिरोगशोगमेरेरोमरोममें॥ महापापपरितापव्यापिरह्योअं
गअंगअैसोदुखदारुननलखोंडांगडोममें॥ जोनकछुसुकृतकरतेहौंमलीनमनतेतानजाएजानतजैसेसौंजरायहोममें॥ क
रुनानिधाननामअतिअभिरामतामैमेराअघअोघपथाअंकशोकसोममें॥ युगलअनन्यकरुनाहींतेविनाशहोयकोटिको
टिरोगशोगमेरेरोमरोममें॥१५१०॥ चेरीतिहारीकहायसहौंप्रातसंकटशोकनवातमलीहै॥ मेरीनहींविगरेगीकभीपरआ
पकोकोनकटेगीगलीहै॥ परीफिरौकलिकामकलप्राकेरहतरहेनहिमाइथलीहै॥ युगमअनन्यअंबरीकिरनितरंग
महोंकुभिलातकलीहै॥१५११॥ जानकीनायकनेहनिजानेहरायकेहेषिएहथिलगायके॥ प्रानकीप्रीतिप्रपंचभलाय
केनामसुप्रेमसनाइएभायके॥ आनकीवातनकानिकरोसियरामप्रतीतिहिंमेसरसायके॥ युगमअनन्यहमेसप्रमोदविनो
दसियावरकेगुनगायके॥१५१२॥ सीतारामनामरूपमाहिमनमतिलीनकिएजोरहततौनज्ञानीनकेगुरुहैं॥ प्यारेस्यामसुन्दर

॥नामने०॥

सनेहीको लगतते ईवेदवीचविहितविचारचारुफुरैहैं॥ अगुनअनीहनिराकारमैंमगनजौनतौनसोहकथ्यममअकथमजुरैहैं॥ यु
गलअनन्यतिन्हेंमिलेगोकैवल्यअंतपौवैंगोनरहमअनूपप्रेमपुरैहैं॥ १५१३॥ सौंपतनमनधनकरनकर्इवकुलकरमधरमअव
धेशहीकेहाथमें॥ चौपचितचौगुनसजापकेभजतनामरूपगुनगावतउमंगरंगसाथमें॥ चाहनतिलोककीविभूतिजतौसम
मानिमेवैंसावधानसानुकूलगुनगाथमें॥ युगलअनन्यआपआपखिलउठावैंछावैंछटाछविछावनीमिजेरप्रेमपाथमें॥ १
५१४॥ जोनरीतिप्रीतिपरतीतिनवनीतिधारीतोनहीनिवाहीअंततकचाहचावसें॥ जैसेचींटाचेंवुकअललहरिहारिलहुंगही
टेकत्यागीनहीचातकसुभावसें॥ चाहेदेहअवमविनासपैकोगमनलेप्राहूनैलावैभीनेनेहहीभावसें॥ युगलअनन्यसोईसन
मसनेहीसंतमिलवपुसहितविशेषरहुरावसें॥ १५१५॥ विसमतअमतविवादवीचवहेलामकरतननेकभेकसमवकवार
है॥ ठगनकेहेतनानामतनिर्मायोमुनिसांचवसुरहसछिपारएपारएस्वादहै॥ नेहनगभलकविलोकिएउघारिनैनअनत
मजापैरेनरहेनहीआहकौ॥ युगलअनन्यमवैवाहनैंसेपचोमतनामरसमन्तरहोगहोसहवाहहै॥ १५१६॥ संतरससंत
गुनवंतइतिवंतसंगपायकेप्रकाशरामउहितविशेखिए॥ जैसेहियनवमिलेनाविकहींपामअरजोहरपारखसाहुकाहीसेखिए॥

॥श्रीराम॥

जैसे महाराजन के माथसें उपाधि रंकताई को बिलात भली भांति ही ने परिवए ॥ युगल अनन्य ऐसे संत जन संग किए जगत विका
र मान हान हिए लेखिए ॥ १५१७ ॥ दीरघ रोग जहान प्रमान है वेद पुरान सु संत सभा में ॥ ताके निवारन कारन भेषज संत सुसं
ग विचार प्रभा में ॥ आपनो रूप परेश समेत सु विस्व विचार करे प्रति भा में ॥ युगल अनन्य मिटे मन मोह हटे दुख द्वंद्व ह अचाह अभा
में ॥ १५१८ ॥ संतन समीप में हमेश अचल जाइए ॥ रहें वह मगन सनेह रस सिंधु बीच केरन हीं रंच उपदेश तऊ पाइए ॥ उनके
सहज आचरन बैन आश नाहि हेरनि बिलोकि प्रेम परानंद पाइए ॥ बके भके बकु तन काज हू सरत जो पै आपनी न मति थिर
ताई तो में लाइए ॥ युगल अनन्य छोडि कपट कलंक कुल संतन समीप में हमेशा अचल जाइए ॥ १५१९ ॥ संत जन संग ही सें
अजस बिनासे स्वच्छ सुबुधि बिकाशे भासे भवन रहस्य को ॥ कोटि कोटि देवसरि शशि हूं अमरतरु वारिए सुभाव बैन ऊपर
सुरस्य को ॥ हरे पाप ताप दीनताई दुख दाप काम कठिन कलाप साप सहस अवैस्य को ॥ युगल अनन्य और न हीं है उपा
य को ऊ ज्ञान की जीवन स्याम सुंदर के वस्य को ॥ १५२० ॥ संयम समेत दिव्य भेषज विधि अराम नाम रस गहे के हैं रोग
निर्मल है ॥ थोरे हीं दिवस बीच कीच मीच नीचपन मिटत अनेक जन्म जन्मन को मूल है ॥ संयम रहित हूं पै रोग हान

॥ नामने० ॥

होतपरलागेवरवहुत्तउपाधिनकोहूलहै ॥ युगलअनन्यतामेसावधानहोयनामरटिएअखंडबोधमहितअमूलहै ॥ १५२१
सीतारामनाममहिंमैंउदैहोतहिंअज्ञानजामैंलेशहूनकहूंछप्योसुअज्ञानहै ॥ बातनकेकहेकहापाइएप्रतच्छरटिएकर
महापेकेअनन्यएकतानहै ॥ मनमतिरोकिकेविशेषविषयवासनासेंरामरूपमांझफेरकीजेनामध्यानहै ॥ युगलअनन्यनाम
रहितहमारेमतसाधनसमूहजेमेकायरकृपानहै ॥ १५२२ ॥ धामसुवाससजायभलीविधिवासनाउरधअर्द्धविसारी ॥ वेदपुरा
नअनेकविधानसोउनिजनामकेउपरवारी ॥ शांतिसुसीलक्षमाव्रतधीरजध्यानसमाधिरहस्यविहारी ॥ युगलअनन्यपरावर
नायकमोरहअथाहकथानिजन्यारी ॥ १५२३ ॥ सियावरविशैंवरस्वरनेशनाममेमोदमुदधामरतिहीननरहूसहै ॥ तीनलोक
ओकवीचैनसमानताहिजानवीनमीतसोईसठखरफूसहैं ॥ अखिलअलायकसमायकसमाजमध्यनित्यवध्यहैंतेवध्यके
टकितकूमहै ॥ युगलअनन्यहिलअंदरकिएविवेकद्वारुनहरदविलवस्योमानोमसहै ॥ १५२४ ॥ योगज्ञानअमल
उपासनाप्रधानधर्मनामनेहवानसुखखानलहैअनायास ॥ जाहिरजहानवरविरदवरनराजदुसोनतिलोकफैलिरह्यो
सबहीसुवास ॥ बारकबहनहैंतेबहुतविहीनबलसबलसमाजमध्यमाननीयगातआस ॥ युगलअनन्यऐसोआरत

नीच

॥श्रीराम॥

हरननामछाडिऔरतेसोतेपावरमलीनआस॥१५२५॥नानामतमाहकमलीनतामुराइविनमतलवकरनअजवत्र
विचारहै॥पायेप्रियपारसपहारअविकारजवतवकहाकौडिनकौरघोहरकारहै॥संतमजुरूररसापाइयोसुधासिंधुपी
वतप्रतोषकाजकौनजलछारहै॥युगलअनन्यसीतारामनामजसमसंगरंगअंगरंग्योऔरसाधनअसारहै॥१५२६॥जातपां
तिकुलकरामानलोकख्यातजसपंडितप्रशंस्यवरबुद्धिहूविसालहैं॥सर्वठौरमानदानमानसनमानप्रानखैचनविभूति
सिद्धिताईसुरसालहै॥औरहूंअनेकराजसाजसुखस्वादसतसंपतसमालखुमहालगतसालहैं॥युगलअनन्यराम
नामप्रीतिरीतिविनातिनकौलहूनकभीरीझूसियालालहैं॥१५२७॥नामसनेहविनासवहीगुननीरसजोतिविनाजसदी
पक॥देषतमैननसोजोगानसोजिमिमोतीविनवआवुतिसीपक॥संतसमागमस्वच्छलेहपरबोधविनाकेहिकाजसमीपक
युगमअनन्यसियावरनामरटेविनमानसमुद्धनदीपक॥१५२८॥प्रीतिप्रतीतिकेरहितसवस्वांगहै॥तीरथअचारनेमधर्म
कर्मवर्नसुचित्राश्रमसमहभावहीननकोभांगहै॥योगज्ञानध्यानधारनासमाधिव्याधिविनासोभितनहोतवांमवि
धवाकोमांगहै॥चौपचतुराईचमत्कारसुघराईसवममभेदविशेषसवसोनेवीचसांगहै॥युगलअनन्याकरोकोटिनसुकृतमी
तप्रीतिपरतीतिकेरहितसवस्वांगहै॥१५२९॥

॥नामने०॥

मत्तकमलेच्छजाकेसरससनेहना॥ वांकीदुर्गंधफैलिरहीसवदेशदेशअधिकअवेशअैसोनीचखरखेहना॥ संतनसमाज
सैंवहिर्मुखसोईसठसदईरहततपवाकेकहंमेहना॥ मानिएनिंदेशवेशभलीभांतिमेरीरहऔरदुखसहोसवदेखोवाकोदेह
ना॥ युगलअनन्यमहामघपीमलानमनमत्तकमलेछजाकेसरससनेहना॥ १५३०॥ हैवडभागीसोईसुचिसंतासियावरके
अनुरागीअदागी॥ चाहनहीजिनकेमनमेकछुदाहकीरीतिलखेलखआगी॥ मागिकेखातमधूकरीधाममेंमेंनाममेचित्त
लगायविरागी॥ युग्मअनन्यकेपुज्यसदाप्रियप्रानहैंतेजोपगेरसरागी॥ १५३१ देखीमैनिहारिनिजनैननतेमहामजालप्री
तिततविमुखहितअखिलजवालको॥ जहांलोप्रपंचपंचवानकोविलौंकुतुमतहांलोनसुद्धस्वादपाइमदमालको॥ दायअ
तिआगमजनमजनसंगवासपापनतजतलोकरंजनादुमालको॥ युगलअनन्यसीतारामनामहींकीसदागहिएशरनभव
हनरमालको॥ १५३२॥ गौरवगुमानगुरुवाईदुखदाईदलदरसाईरौरवनरकतेतामतापको॥ चाहवडमानसोईमदिरा
समानपानमेदनहीभांनपामरचहेंअलापको॥ सूकरकेवीटसमलोकवाहवाहदाहदारुनदराजप्रस्त्रसमकलापको॥
युगलअनन्यतनपीनपापसंगछोडिभजिएहमेशनामगुनसुखथापको॥ १५३३॥ संतसत्तगुरुगुननवलनिधाननिजननर
निहारिनित्यनेहद्दियोआपसें॥

॥श्रीराम॥

जौनवरवित्तअनमोलअविलोलपायरख्योनहींहायहियदुख्योदुखदापमें॥सीतलसमीरस्वच्छसींवसुरभितमारव
हतविचित्रकामकौनतीनतापमें॥युगलअनन्यखैफषटकाखवीशसववीत्योअनायासरामनामकेप्रतापमें॥१५३४
नानारंगरूपगुनअमलअनूपप्रियप्रगटप्रतच्छहोतनामलागलागते॥उज्वलउतंगतरतरलतरंगछविउठतहेमश
नामप्रेमपागपागते॥रागद्वेषदारुनकलेशकरतवकलिकटुककषायजायजातनामजागते॥युगलअनन्यआसआ
तमअचिंत्यचाहचांदनीचमकचारुभाषभागभागते॥१५३५॥प्रेमपारावारउत्साहसुखसारसीमभीमभानमवनस्वन
नामनींरहै॥छेममौजदारादिलदारअविकाररूपभूलकपरतवरनेशवीचचींरहै॥हमहौजसौजशोकदारदेखल
ईरहतदृगनअनौरगकरसअविनींरहै॥युगलअनन्यमोदमधुरमरंदमित्रनामसुविचित्रउरआलेअरवींरहै॥१५
३६॥चाहचरित्रउछाहनिहारनवैठिरणतोनिजनामभरोषें॥शाहनशाहनिगाहनिहायतहोततहौंतिलहूंनहिंधोषें॥

॥नामने०॥

आहकराहकुराहरहेनहिनाहसुमारलखेचितचोवें॥युगमअनन्यसलाहसहीसुभनामसनेहसनित्तहीछोवें॥१५३७॥
पांचोप्रियवपुषविहायक्रमहीतेसंतनामरतिरटनलगायलहेहंसतन॥सुद्धअविरुद्धप्रीतिवुद्धयुद्धरूढविनापारखतर
१अनुरागरसरागघन॥

द्वैताद्वैतमत्तसंतअसत्तनेनेकजित्तसहजसनेहसरसातसीयस्यामसन॥ युगलअनन्यदेशअमलअशेषसारविमल
॥१७५॥ विचारयुतपावनप्रमोदवन॥ १५३८॥ चित्तमनमतिअभिमानकरनादिकुलकीजियसनेहसिंधुनामसमांभलीननि
त॥ रित्तिअनिरित्तपारपादयप्रमोदपरप्रवलप्रकाशरवासरसीरसरूपवित॥ तीनींतमसमकर्मकारनकनाततनअतनन
शातपलपावनविलंवहित॥ युगलअनन्ययुगावरनहरनमनचीजअन्दुतअविलेकअजितजित॥ १५३९॥ युगलकि
शोरचित्तचोरकोशलेशप्रानप्रीतमसहलेमसहानमुदमोदनिधि॥ रंगरंगअमलमनिंदअविनिंदच्छंदकामदअमंद
मंदकारकस्वभावसिधि॥ जाकीजोतितितलतिहूंलोककोप्रकाशकरिहारिलिपोतोमतमअनायासमायविधि॥ यु
गलअनन्यनामलोकअभिरामजपिदृगननिकटदरसातध्येयव्यासविधि॥ १५४०॥ अगुनसगुनवपुपावनप्रकाशक
रकारनकृतज्ञकोशलेशसर्वेशाहीं॥ वेदविदवदतवुलंदवैनवैननिधिहरीहरचारिमुखवंदनीयवेशाहीं॥ महा ॥१७५॥
मनिमोहमनहायनीहिमागहुत्तिमरतिमनोजमदमारनीसुकेशाहीं॥ युगलअनन्यअनुरागनामभएमसभाशत
प्रतच्छस्वच्छरहितअदेशाहीं॥ १५४१॥ जायवादवदनकदतहायहोतहिएहिरसहजारहरवक्तहींतपारहै॥ ॥

कायतायजातकुलघातननातआयउत्त्रपुरउमंगवहवायेरतधारहै॥ मायानिधिमेविवेककोकुंभजातमहहनेहप
॥श्रीराम॥ वनउडाइवेनिमित्तहोमिपारेहै॥ पुगलअनन्यसारनेवासुखखाननामसहितसुवागसमुचितएकतारहै॥१५४१॥ आठ
भाँतिकांतिकरकांतिप्रयमतसुचिमंभवितजोनतौननामहींसुजापते॥ अनायासपुन्नकप्रवाहनैननीरसरभेदनसुकंप
प्रगटातअंगआपते॥ चिह्ववपुजडभाविवरनविचित्रवरमछर्दाप्रलापविरहितजोषनापते॥ पुगलअनन्यधन्यधन्य
प नामजापीजनपायाप्रीतकाप्रेमनामकेप्रताते॥१५४३॥ मेरोमनअलननतरफजातहेरिहेरिवेरिवेरिविषयविकार
वीजविलसात॥ पैरिपैरिहारयोहियहारनकेवारिवीचतउनहानीचतजवीजकिपोहिव्यजात॥ मोरिमोरिअसरम
नेरथअनर्पतरहिपोढुरवहाहफलअफलअनेकभाँत॥ पुगलअनन्यकोरिकोरिहितहेसोदशाहरितहजारवारना
मकेविहीननातत॥१५४४॥ धायधायधमधामधवलविलोकिहायअधिकउदेतजायजीवनविलायोमैं॥ खायखायख
ललखोवारीममनोजचोटकोटवारतानफेरिहिरसकितायोमैं॥ छायछायछावनीउपाधिआधिव्याधिचिंतमहाम ॥नामने०॥
दुसंततनसुसंगनाहिंपायोमैं॥ पुगलअनन्यपायपायकेकलेशवशभालिहनस्यामकलकरनाचिनायोमैं॥१५४५॥
ता

॥श्रीराम॥

॥१८०॥

ताकिताकितियनकौअंगवररंगराजआंकिआंकिविषयविलासविललायोमैं॥नाकिनाकिनवलनिरैश्रामतशास्त्रनकौ
छाकिछाकिछलनछलीननमिलायोमैं॥हांकिहांकिहिरसहवासवासआसमसवसदमविशेषतऊजानिकेजिलायोमैं
पुगलअनन्यचाकिचाकिचिनचारुचाहचौगनचलाकीचालचपलाखिलायोमैं॥१५४६॥कौनकहौंकरनीअपनी
अपनीकरनानिधितैनछीपीतिलमानहौं॥मोनसहौंसतसंकटचाहतेआहतेहाहरहतनप्रानहौं॥गौनगहौंगुननामह्वै
पालकौमुख्यविषयपरचिहापनआनहौं॥पुगलअनन्यसलीनसदाशरनागतआसनिरासमम्लानहूं॥१५४७॥साईं
रंकराजजाकीतस्मानशांतहै॥चाहैलोकचौदहूंकौभूपएकसरहोयतऊतोषपायविनामिटतनभ्रांतहै॥छोटेसेवडे
कौचाहवडेहूसेवडेपुमित्रैसहौंविनावैंहननाहकनितांतहै॥सावकाशनिमिषनहोयधंधवंधमनकवहूंनअघैधवै
छिमकतएकांतहै॥पुगलअनन्यसीताकौतमैसनेहसज्जमोईरंकराजजाकीतस्मानशांतहै॥१५४७॥रंकताईवीज
वडीवासनाविषारनी॥कठिनकषायतापतरुनकरंवतरुप्रगटकरनपलपावमैंनिरवारनी॥एकपलहूंनथीरधी
ररहेहैतहिलहिलिमिलिछलनसजायकेप्रमारनी॥महामोहसेनसुखसुजससोहागरागआपनीअनेकशक्तिपुष्ट
प्रतिपारनी॥

॥१८०॥

॥श्रीराम॥

युगलअनन्यनाममनोषेतगगहोतीव्रूंकताईवीजवडीवासनाविषाइनी॥१५४च॥ तस्मानहोयरहराक्षसीहैलंककी॥ खाय
लेतलपकिभूपकिअनायासवोधविरतिविचित्रमोधेनकहूंनशंककी॥ वायविषवहनसमायलेतरयाइममनलहति
लेशकामिनीकलंककी॥ युगलअनन्यमहावीरतायसैंहीडरेतस्मानहोयरहराक्षसीहैलंककी॥१५४छ॥ तस्मा
हैकीरैनपावसअंधेरीजामैंसूझैनपरतनिजपरकोविचारहै॥ कीधौंकारीनागिनीभरीहैनखसिखविषकिधौंती
रतिषतरवारदुखधारहै॥ कीधौंकालकठिनकरालकीकुदृतीकडुकाटेतनप्रानअतिअरइयअजारहै॥ युगलअनन्य
जवपूरनपरेशकृपाहोयतवछोरइहहारनरवारहै॥१५५०॥ सीतारामनामगुनसुजससोहागरागपूरनविहायकेहेक
याहेशरेशकी॥ चौकवीथीवाटिकाविकारभ्रमताटिकातथैवमिथ्याभूततुच्छसैनाहूंनरेशकी॥ हानपुन्यगाथपर
मारथविचारसन्यताहूतेनिरासनित्तहूजियसुदेशकी॥ युगलअनन्यकथागाइरपरहसभरीवथावाइवीचनफाकौन
उपदेशकी॥१५५१॥ जौलौरहेहैहतौलौगुनगानगेहनामरूपसुविहायवातभाषिहौंनभूलिके॥ संतसतगुरुसिरता
जउपदेशश्रुतिस्वच्छउपदेशवेनगावासुनाफूलिके॥ काहूकोनद्वेषरूपपीचिरणअशिष्याचारचित्तमैंविचारिलोकवासना
विधूलिके॥

३॥ माननितनिकेशोहूंमनाग्यरेपायरवलखोवनविशेष
प्रीतितिरीतिविनाअंककी॥ ३

३८

रोग

॥नामने०॥

युगलअनन्यसीतारामनामडोलहुतिअधिकअमोलमांझरहोरोजझूलिके॥ १५५२॥ सांचवाचअंचकांचनाचसैंवियोग
रोगशोगकोशमननामसहितजोबोलिए॥ आनदांचपांचसैंसमेतकामकालकेतदांचिएनकैसेहंसुहीयरकैटोलिए॥ चि
नवीचरषूवतेमवीजवीआनाकिरयपरसुमुषकूपाटहाटमोहभांतिखोलिए॥ युगलअनन्यबानीमेइरामनामसानीक
हतसुनतसुधासाररंगबोलिए॥ १५५३॥ नानारतिरीतिप्रीतिभक्तिमाननमांषैभलेअंतमांझनामतंत्रसकलनिरूप
हीं॥ साध्यसिद्धियुगलउपायनामरंगरंगिपावैंप्रेमहीनजननएकगतधूपहीं॥ कीजिएविशेषरागद्वेषकोविसारिहू
रनूरभरपूरअवलोकिएस्वरूपहीं॥ युगलअनन्यसीतारामनामप्रेमपरहूजिएहमेशाछाकिछैलछविभूपहीं॥ १५
५४॥ नामकीविभूतिछरअछरअजूवबरबरनअतीतमीठतीतरीतनीतहीं॥ तीनहूंकेपारजौनमहितविहारव
रमधुरमधुरनामरटतविनीतहैं॥ नामपरमेशापरहूंतेपरतमसमविश्रामविहीनअविगीतचित्तचीतहैं॥ युगल
अनन्यअनुरागीबडभागीनामसुजससमूहसबभांतिअविगीतहैं॥ १५५५॥ संतसमीपसजायसनेहसुसीखसो
हावनसारसुनीजे॥ स्वामिनीसीयसुकंतचरित्ररहस्यमेरोहियबीचगुनीजे॥ बागबसंतसमानप्रसूनसतानिजनेह
विगासससमीजे॥

का

॥श्रीराम॥

प्रेम अनन्य अनूप अज्ञव उतंग सुरंग उदै रस पीजे ॥१५५६॥ काहे को काय कलेश करो कल्प द्रुम नाम सनेह सम्हा
रो ॥ भाव विचित्र सुचाव चढे चित चोंहनी चोगुनी पेखिए प्यारो ॥ मानिके ऐपु को तुच्छ सहा भार नाग तरूप अनू
प सुधारो ॥ प्रेम अनन्य ग्यमान गए ग्यन सागर बीच बहो सुख सारो ॥१५५७॥ स्वच्छ ऐसो कबहूं सुभाव चाव प
रेगो ॥ भाषिहैं न और बात मानि वज्र पात अध्यमो जजौ कजाहिर सुनाम रस भरेगो ॥ राषिहौं न केसहू प्रमाद सें सप
न मांझ वांझ जीव जाल आस हास भाय परेगो ॥ नाखिहैं निशान वन वाय नाना भांति मत्त कुमत्त कलाप चाह दाह
मोह भरेगो ॥ युगल अनन्य सीतानाथ जू की करनां सें स्वच्छ ऐसो कबहूं सुभाव चाव परेगो ॥१५५८॥ मेरे उर कबहुं व
खासर विकाश कर जीव जान ज्वर को हरनहार आइ है ॥ घेरे उर आसा घ्व्याघ विषम वैआध मन नाम सुचि शस्त्र हीं
सकाटि कलपाइ है ॥ अंग अंग अमित अनंग मोहने शगोर स्याम अभिराम छवि स्वच्छ छटा छाइ है ॥ युगल अ
नन्य केलि कौतुक कलान कुंज युगल किशोर हिय हे रिउर भाइ है ॥१५५९॥ देत महा खेद वाम संग वदरंग अंग की
जिए कैसे हूं परस पाप मल है ॥ सावधान हूजिए हमेश देश हिव्य पाय जाय जग जां हि री विचारिए कुशल है ॥ ॥ ॥

॥नामनं०॥

॥श्रीराम॥

लेश

अर्थप्रमदाकोमनमननकरनहायहरषहजारअज्ञविज्ञसमतलहै॥ युगलअनन्यवीजवासनाविकारभरीनाधिका
निगोडीप्रीतितोडीप्रतिकूलहै॥ १५६०॥ कहौंकौनिकथाव्यथापूरिरहीहीयममगमकोनअंतकेजप्रानकेविछोहसें॥
मेंहोंसवखेदनिर्वेदपैनआवैनकैटकचारोकठिनविषादमोहछोहसें॥ जाकोपूंछोदेशतौनकहतसंदेशऔरअ
धिकभरेदशौंमाहहूंनजोहसें॥ युगलअनन्यसीतानाथहीसनाहएकटेकसांचीमेरीछीपीनाहीमोहद्रोहसें॥ १५६२॥
धारेज्ञानवैनऐनआपनेमचैनऐसेमीमथ्यउपदेशिएनभूलिहूंविचारिके॥ मोचनारिप्यारीकिएहारिहायहेतोतीहि
एतातितोकोपालनाहेंकीजिएनिहारिके॥ दुष्टनष्टबुद्धिखलसंगारगहानकरकैसेहूंयोगसांचमानिएसम्हारिके॥ युग
लअनन्यजीनोमायव्योहारकिएखेदअवसेषहांपचित्तकोविगारिके॥ १५६४॥ वामाकटुवादिनीविषादिनीवि
काररूपमीतसठहठवालोत्यागिवेहीयोगहै॥ दासजौननीचढीठवालेवैनआगेसममोऊसवभांतिसेंविचारोम
हागहै॥ कालव्यालवालोघरडरकोनिवासअंततत्रासहोपठीकवाटचित्तवीचशोगहै॥ युगलअनन्यचारोवी
जमीचरूपमीतत्यागेहींकुसलरहैऐनऐसमोगहै॥ १५६३॥ धारेएकपांवआगेपाछेपुनिराखेवुधपांवएकआदि
अंतरीतिकोविचारहै॥

॥श्रीराम॥

त्यागेनहीधामवासदृमेरोनिहारेविनुचलेचालसुधरसुपथसुखसारहीं॥ जोनदेशावीचवंधुमित्रनईविघा
लाभहोपनहींतोनदेशजानेखेदखारहीं॥ पुगलअनन्यनीतिराहमेनदाहलेशस्वच्छंदशवासहोतखवएक
तारहीं॥१५६४॥ सरितासुचिवैषधनीनिस्नातसुभपजहानहिंपांचरहे॥ तोहठैरमेएकनिमेषवसेपारिनाममहा
दुखदाहदहे॥ सतसंगसुरंगमदाजहिंग्रामकरोविश्रामविनोदवढे॥ पुगमअनन्यसुनीतपुनीतविहायकेआ
मनऔरगहे॥१५६५॥ मेजिकेसवककोपरखोदुखमांहसुवंधुसनेहसजाती॥ भार्य्याविन्नविनासविषेलखि
एअतिखेदमेआपनीछाती॥ जोध्रुवछोडिअनित्यगहेसोतोमूढलेहदुखमेंपांडुमपांती॥ पुगमअनन्यसचेतर
होतजिकेसवभांतिकुजातिसंघाती॥१५६६॥ दानदेनेदखिदगाईजिएहमेशवधादेशाकालआदिकोविचा
रिवोनयोगहे॥ जैसेरागलीनहीकोभेषजअरामकैआनजनपावतांकोदेतऔरशोगहे॥ चाहवानजीव
उपदेशासेविचित्रलाहहोतहेदेउदिपिनैसेनारीनरभोगहे॥ पुगलअनन्यअभिरामदछलपगननामअैसेकहे
मोहदेहगोकुयोगहे॥१५६७॥ मानकीचाहसदादिलमेजोपैतोपैनमागिएंकरतीभर॥ दानमिएपोचदेहाजोसदा
तोहमेशाहीजीतिएचित्तचितीनर

॥नामने०॥

मानजहाननमायाचहोतोस्वरूपअनूपसम्हारियभीतर॥ पुमअनन्यअमानभयविनाहोयगोतेंनसतीनपतीश्वर॥ १५६८
॥१८३॥ आधिविपत्तिविथाहसहिदुखपैनहीअन्ततारवहुतुले॥ हाथमेरीकरालेयवुरोवरनीचनकेभलोभीखखुले॥ आपनोहा
ननलाभलेखजोनताकेसमानअभागभले॥ पुमअनन्यविचारियसारअसारविसारियमैजमुले॥ १५६९॥ कथ
नीहिनरैनकियेमकहाजोपरंगनहींरसनीरसभीनी॥ ईपकवातकहेननथातकहूंतमवस्तुविचारियझीनी॥ वातनकेप
कवानभयेकहुंभयभोगकवहूंगुनहीनी॥ पुमअनन्यसचेतभजोनिजनामविहायकेवासनातीनी॥ १५७०॥ समयपा
प्रघोटेहूंकोआहरविप्रोयजैसेभागनेयआहिकोविवाहवीचमानेहे॥ ममेसेरहितवडेलोगहूंकोअपमानखेदनि
वेदआदिमध्यपरिमानेहे॥ ताहीतेहमेशासुचिसमईविचारेमोहजानिएरहस्यधामेऔरईप्रधानहे॥ पुगलअनन्य
देहमानुषभजनयोगफेरिऐसोसमयमीतमिलिहैनआनहै॥ १५७१॥ सद्ग्रंथसुपंथकोसारएहीभजिएप्रभुकोतजिके ॥१८३॥
दुखदूषन॥ मानसकायसुवाकहूंतेउपकारकरेगनसारशिषधन॥ संगमहांसुचिसाधुनकोकरिएतरिएभवसि
धुअसेरखना॥ पुमअनन्यसुनामरटेसवभांतिखुसीरघुवंसविभूषन॥ १५७२॥ धारेविनाकाहूकोवसीलाकरेचाकरी
जोअंतमेउपाधिताकेआगेहींतयारहे॥

तिसेहींसुबुद्धिविनाइहषेहरेहसमभिंउतारहि तयोगश्रागकोअजारहै॥ मोरविनारागजैसेसोहैनविरागला
गआगहींअपारतामेंस्वाइकोनतारहै॥ युगलअनन्यनामनेहीकेमिलापविनाऐसेहीअसत्यसभीवातव्यभिचा
रहै॥१५७३॥ मूढनरवातउत्पातघातलातसमसुबुधसुलातवातसहसमुझारहै॥ याकेवैनवीचकीचनीचपनभयो
कोइनेकेसलातमाऊविमलविचारहै॥ जैसेकोउमहाप्रेमसहितपिलावैविषवचैतौनप्रानहानहोयगोनवारहै॥युग
लअनन्यकुंभपूरनपियूषमुखपानहै किऐतमीचमितविकारहै॥१५७४॥ मूढनकोसुखदुखदायककमानसमक
ठिनकलानकेसमैतहींनिहारिए॥ ताहीवीचतानिनानावचनकेटारकोटिविमिषसमानमोरभलेहींविचारिए॥ को
नैऐसोसरषववरायोनहीघावगाहिसीहनहीजातसोंचवातचित्तधारिए॥ युगलअनन्यताकीऔपथसुमे
नछमासंतसत्तगुरुरूपाहिएनिधीरिए॥१५७५॥ जातिकोस्वभावतैसेअंगकोप्रभावकिएकोटिनउपावतउ
मोचनअभावहै॥ जैसेमारजारीकोसुनाइएसुचारिवेदमिलेपरमूसनहींछाडतविलावहै॥ जैसेकाकपा
लिएअनेकप्रीतिरीतियुतपायसुपवायतउरपातमांसघावहै॥ युगलअनन्यऐसेमानियाजहानवीचनीचनर
त्यागनहीकुष्ठपनहावहै॥१५७६॥

॥नामनेम॥

दुष्टनरछोड़ैनहीदुष्टतासुसंगहैपैजैसेखेतप्याजलसुनादिकोअयोगहै॥ नीचविनावभ्रवालेविमलसुवाकवुधवभिनशकत
उकैलागैरागशोगहै॥ जैसेवीनतानुभैंसभककोकमलवासकोपात्रआभरनस्वानकागरागयोगहै॥ पुगलअननयतातेसावधा
नरहेमाहविनाअधिकारउपदेशिवौ [illegible] रागहै॥ १५७७॥ भूरहूवचनजोविवेकीवुधवोलेकहैतउतामेसांचकोभलकअकश
कविन॥ आगुरीसमसारखापलखावैजैसेचंदकोउअमेहोविचारियरहस्यअविलोकतिन॥ भलेहूवचननीचमुखसेनलाग
नीकफकोईलगतनमोहातविनएकछिन॥ पुगलअननन्यसुचिसुरीभसमहस्वच्छमेंगलसुनादिकनभएतेलगतछिन॥
१५७८॥ श्रीसियरामसुनेहिनकेसुचिसंगविनासमुझेजोचहेरस॥ मोधनहीनसुदीनउदारतावोरहिएफलेलशननीरस
दस्वादकेमोटकेराविनचिनकोचाहेमिलेमहवूवजसीजस॥ पुमअननयसुउधमकोविनचिनकोआसकरेनलहेअस॥ १५७९
दुष्टनकेसंगकिएसुपूतविवाकैहै॥ देषिएप्रतच्छवानमालसुभावसोईकुटिलकमानमिलकैरपच्योकैहै॥ जैसेवननीर
स्वच्छहोतहैमलीनछितिछुवतसुवंकपंकसोहतअपाकैहै॥ जैसेचारुचंदनसुगंधहारहाहकरहोतहैदूसानुमेमिलतव
मुवाकैहै॥ पुगलअननयतातेसंतजननसंगमारदुष्टनकेसंगकिएसुपूतविवाकैहै॥ १५८०॥ काहूसैवैरविरोधनकीजए

॥श्रीराम॥

भूलिहूंकेमनमाँहिंधरेनित॥मित्रताराखिवेयोगमहासबसाथमेभेपरकामपेरहित॥जैसेमहागजराजकोखाडेसेमूशनेनेनि
कमायोकथारित॥पुमअनन्यभलाईसहाडुखहाईवुराईमुनीतिवहैंविल॥१५८१॥जानिएजबखततविसेषबलवाननहीं
पुरुषप्रधानमांचोहीहीरागनजरसें वडेवीरधीरतीरनिपुनविहितहूसमित्रअरजनतिन्हेदेखतजवरसें॥लटीनीचजम
नमलीनवामुंहवबामचलीनमुशक्तिरहेअजरअमरसें॥पुगलअनन्यतातिमारबैवाननामभंज्योतजोपरुषारथगुमानको
गजरसें॥१५८२॥मलयागिरमेंलपटेनितहींजोभुजंगरहेतउसीतनछोडत॥पेकरवाईसमातमहीकछुतोविगडोतोहित
मुखमोडत॥दुष्टनकेमिलिमोरनहीहैखरावीविशेषवनोगटतोउत॥पुमअनन्यअपासविनादुखदेशषसमुंदकेवीच
मवोडत॥१५८३॥मागनमेंमहादोषदमाहगछोरवैनिपाशाकमानिएना॥विनामांगमुसेरसमानसुईविण्यांचनापातसे
जानिएना तेहिहेतअयांचीरहाकीजैतरिणभववारिविमानिएना॥पुमअनन्यमुनामरटेउतउनकोवातप्रमानिएना॥ ॥नामे०॥
१५८४॥जानकीजीवनवामप्रकाशनिवासवसोउत्साहसजाधि॥संतसोहावनसंगतिमेंमुदमोदमिलेघरीतिवडाई॥ना
मनिरंतरजापकिएखुलेअवकमातप्रसन्नतासांई॥पुमअनन्यअनपमअजोंधमेंमोधविलोकिएभालमुलाई॥१५८५

वासनायेगैरोगरुशोगअनंतसरीरलहेजियजानो॥ वाहुवमारिवियोगभयरुहिनेरनअखंडउछाहप्रधानो॥ हेमवभाँतिमलाये
तभीजवहायअकामभजेसुखखानो॥ युग्मअनन्यसुनामपरायनवांछसोइबुधविज्ञसयानो॥ १५८६॥ नामपरेशउपासना
शोकमैंमाजिएकोटिकिषायकटैगो॥ आमनिगाहरहेनरतीछिनरातिसुखासप्रसारपटैगो॥ धामनिवासकिएसवहीसि
धिवासनावंदविशेषबढैगो॥ युग्मअनन्यसुसंतप्रतापसैंद्वैतमलीनतामेहफटैगो॥ १५८७॥ कोटिनभाँतिकेहैकोउवात
विचित्रवनायनचित्तमैंलावो॥ हाथलिएपरहौनिजनाममेमस्तसदाउरकंजफुलावो॥ कंचनकामिनीसंगकरोमतसंत
स्वरूपमेचित्तरलावो॥ युग्मअनन्यसुनामप्रतापसैंप्रेमपियूषपियोअपिलावो॥ १५८८॥ श्रीगुरुसंतसियावरकीकरु
नानिहैंसुकीपायमहारस॥ नामभिलैननहिआनउपायअपायसमोकरनीअतिनीरस॥ नामउपासककृपालवडाएनकौ
नकहौजियजानतहैंजस॥ युग्मअनन्यउपाधिविसारिकेनामहींमांभरमोअधकीलस॥ १५८९॥ सरजूसरजूसरजूरटिए॥
उठतेवैठतसोवतजागतभूलैंहुकेनकभींहटिए॥ सुंदरनामसनेहसोईरजुउज्वलताहिभलेवटिए॥ श्रीहगजासुचिस्व
च्छसोहावनपावनतीरहींमेंअटिए॥ युग्मअनन्यउपाधिविनासरजूसरजूसरजूरटिए॥ १५९०॥ सरजूसमानआन

॥सीता॥
॥राम॥

सरित्तानपावनी॥ देवधुनीमहिमाबिदित्ततउबिष्मपरसलिलप्रसिद्धदोषहारननसावनी॥ समतानपावैसोऊसर
जूविचारोमलैनैनआपुराननमैप्रगटप्रभावनी॥ कहांचखचारुकहांपरउरधारुतातेअधिकनिहारुरामरूपरसपा
वनी॥ पुरालअनन्यविज्ञविमलविचारवैसरजूसमानआनसरितानपावनी॥१५२१॥ श्रीसरजूजलकेपरसेपरधा
मपपानपुरानवखानी॥ हीतजिकेगुनिगमनमैनवरंगचेढेअनुरागनिसानी॥ गंगनहाएमुनाकरमैंभ्रउमेशकेधामैंमैंजा
तेहप्रानी॥ पुमअनन्यविकल्पभरीसववातनैसैततनीमुरछानी॥१५२२॥ जमुनाहिकेआरजितीसरितानितनीनिजसा
नगुमानकोछोडे॥ सेवतीसुधसुधासरजूजलज्ञानिकेहियमैतत्वअथोडे पावतीप्रीतिप्रतीतिपरारतिरीतिरहस्पवि
योगविछोडे॥ पुमअनन्यवसोसरजूमहरानीकेतीरसहाकरजोडे॥१५२३॥ श्रीसरजूसुचिसुंदरस्वछसुनीरपिय
बहैतमधुमाने॥ पीवतप्रानपुनीतपरापतिप्रीतिप्रतीतिप्रकाशप्रमाने॥ जोवतसोजननित्यअखंडितमोरसमेतनि
केतसमाने॥ पुमअनन्यगह्योसरजूपदपंकजआसउदासजहाने॥१५२४॥ जेतीजगमरसमोहावनीसरितातेती
कैजकरजोरसहासेवैवारिसरजू॥ होयकेपुनीतआपपावनकरतविश्वविभवविचित्रबोधभावभव्यासरजू ॥। ॥

॥नाममे०॥

॥ श्रीराम ॥

॥१८६॥

कोटिन कषाय हाय तापत मतोम हानि होत एक कन के लगाए अंग परजन्न ॥ युगल अनन्य और महिमा की कौन कहै जाकी कृपा पाय
बस होत सियावरजू ॥ १५२५ ॥ छोडि कुटिलाई कलिकाई हूं कुसंग रंग गए अंग होके वसो मसरजू सुतट में ॥ तौ ना समे मंजन मनो
हर सुधा सवार पान नेह नीर को हमेशाहीं प्रगट में ॥ खुलेगो अनन्य पैने नैन मन मध्य है रिवपरि है अवसमीप स्याम घट घट में
युगल अनन्य राम रूपनी सुतीर वसि हजिए मुलीन नाम नेह निधि रटमें ॥ १५२६ ॥ अगुन सगुन जगरूप अनरूप जललि
त प्रवाह अनुराग चाह हेतु है ॥ हिव्य गुन नवल किशोर चित चोर किंधौं बहत प्रवाह वीच महा माह कत है ॥ जानकी जीवन जी
वन जू को नैन मन नीर रूप अधिक गंभीर धीर रहस उपत है ॥ युगल अनन्य नाम सरजू उचार करि अनायास तरे भव कोटि को
१५२७ टि प्रत है ॥ जे मतिमान सुजान सिरोमनि नित विषहैं ते पियूष गाहे हैं ॥ नीच कुठौर मंडा स्यामु हे मलेहन हि नेक गलानि चहै है
नीच के पामसैं बिघा भली भले सीखि अमानन मान वहै है ॥ युग्म अनन्य बबूर विषे लग आयमयु धसो नाहि जरहे है ॥ १५२७ ॥१८६॥
वामा अहार कहे दृग नाक विषे रूप में सुधि चौगुनी तामें ॥ काज करे में समर्थ रसो गुन काम वस्य गुन है नित जामें ॥ साहस सौ च
विना अहार पा अति चंवल मूढ कुवाक निकामें ॥ युग्म अनन्य विशेष विमारि एकामिनी यो गावियोगानी तामें ॥ १५२८ ॥

॥सीताराम॥

भोजनस्वछ्छमिलैपैरुचेभलीभांतिपचेवडोभागविचारो॥पायकेवित्तसुदानकरैअनुरागसमेतसोऊसुखसारो॥सेव
कपुत्रसुतीयवसेवसपुन्यनकोफलहींनिरधारो॥युग्मअनन्यसुसंगमिलैतिहिकेसमस्वर्गनहींअवधारो॥१६००॥जोन
सुतमानेनिजजनकनिदेशतानमांवोसवत्तोरसैसुपत्तनीनवैनहै॥पालेप्रेमसाथसाईपितानहोइजोकोईमीतविस्वासी
जाकेभेटचित्तचैनहै॥तानदेशावशजामैंजीविकाविशेषहोयजैसेचेहसंगभलीभावतीसुरैनहै॥युगलअननयसंतसाईजोके
साथनाथगाथपायप्रेमरसविमुचेमोहमैनहै॥१६०१॥भोगनभोगकियोहमभीतअभीतविषैभवभोगभोगायो॥हौंनहितत्त्व
पत्त्योकवहूंसवभांतिसैंतापहीमोहितपायो॥कालकरालवितायोनकहींहमहींनिजआयुषवित्तगंवायो॥युग्मअनन्यत
षानहिजीरननेकुभईतनजीरनआयो॥१६०२॥शांतसमेतक्षमानकियरहमोहविरागसतोषअवाधी॥आतपवर्षन
तापसह्योनगह्योतपसारउदारसमाधी॥श्रीसियरामपदांवुजसुंदरध्याननधरयोनहिचित्तउपाधी॥वंचितश्रीसुनिरामभ
एजेहितेसोऽकाजकियोहठमाधी॥१६०३॥जोरजराकुम्हिलायगयोतनजातभईसुखकांतिविशेषी॥मेचककेकशसपेद
भएसवमदटनऊनमवाहिकपेषी॥ढीलभएअंगअंगअनंगहूंलेसारह्योनहिहायअसेषी॥युग्मअनन्यभएसवजीरन
एकतृषानरहीअवरेखी॥१६०४॥

॥नामने०॥

श्रीसरस्वती पुस्तक भण्डार
श्री लक्ष्मण किला

जायअवस्यविषयछिनकेतिकवासकिएपरसोंचप्रमानो॥ जोनतजेपातवआपमज्योपरमानसतापकेहेतलखानो॥ आपते
त्यागकिएहिएमोदविनोदवढेसवभांतिसोहानो॥ धुगमअनन्यविरागविनानिजजीवनजायअछ्यायसिरानो॥१६०५
सुरभूपतिराजहूंहेनमलीनमपोचितचाहतचाहनानारी॥ औरकीकौनकथाकहिएजेहिंसेंएमएजगदीशासुखारी
प्रीतिकिएअधिकातमसादहकारनदोषकलंककीवारी॥ धुगमअनन्यविवेकप्रकाशतनाशतआपहीआपविमारी॥१६०६
चाहसमेतसभीदुखियासुखियाजेहिचाहकोचाहमेडारी॥ जानकीनाहउछाहउछाहौंनिगाहनिरंतरहेरिभएअविका
री॥ सत्यदमासमतोषमहाव्रतधारिकिएजगजालविसारी॥ धुमअनन्यतजेविनवासनापावतहैनअरामअजारी॥
१६०७॥ कृशातनुअंधदृगखंजश्रुवहीनखीनपूंछहूंविकलव्रनछतजसमेतहै॥ महसअनेककीटरोमरोमप्रतिभूष
प्यासकीरतपितविशेषहींअचेततहै॥ अर्धघटनिपटकुसाजगलमध्यपुनिजीरननिविशेषसववेदनानिकेतहै॥ धुग
लअनन्यअैसीदशामांझस्वानसठजाततीयपाछेसुवेमारमानकेतहै॥ १६०८॥ भीषकोअसनताहवीचएक
वारहींसोनीरसविशेषालेशस्वादहूंनपाइए॥ भूमिमध्यसेनपरिजनसंगरेहएकजीरनवसनसतटूकककाथाभाइए॥

॥सीताराम॥

विपिनिनिवासगतआसहोंसरसछोडितोडिभवपासनामरूपमेसमाइए॥ युगलअनन्यहायहायनततजनततउविषयविका
रकेहोकहोंचलिजाइए॥१६०९॥रेफअद्वितीयअमलेशापरमेशपरिपूरनपुनीतप्रियपाररवीपछानिहै॥मूलाधारचक्र
सुद्धसुथलनिवासनिजपरावानीजनकजलसजियजानिहैं॥योगीजनअमनअतनरनजोतिध्यानधारिकेअचल
पलपलकनआनिहै॥युगलअनन्यरामरूपफलकतीततनाहिरजहरछविइस्कहारछानिहै॥१६१०॥अमलअ
कारअविकारसुखसारसरसहैनहारवागएनहेतुअनुमानिए॥वेदशास्त्रसंहितापुरानउपखानप्रियशब्दब्रह्मकारन
प्रसिद्धजियजानिए॥तीनतैरजीवगोरकिएसमानइतज्ञानभक्तिविमलविरागरससानिए॥युगलअनन्यबिंदुबि
शदपराप्रकृतिनित्यमुक्तरूपअनभावितसुमानिए॥१६११॥नामसेंसहितसुखसींमसरसातसुचिरुचिअधिकातवर
सातबोधभावनी॥तीनकालहूंनतरसातअरसातउरअफुरहमेशाहरशातचित्तचावनी॥हीनवंधुवरनवरेशासेर
हितरंगरूपगुनज्ञानछविछावनीनछावनी॥युगलअनन्यनामनेकृपाकोरकरिकलितकुसुमफूलिरह्योमा
नसावनी॥१६१२॥सपनेहूंभूलिकेनकीजेदुष्टरुष्टसंगकुचकलीकालअंगउदयहोतसांचहीं॥ ॥ ॥

॥नामने०॥

प्रीतिपनपष्यसुष्यस्वच्छसुखसावधानमसघहींसुमनसवहोतनीचवाचहीं॥मुष्यसमसहजसुभावतुष्यरुष्यहोतपोग
जगामगतनिशोतनषत्रोंचहीं॥युगलअननन्यज्ञानगुष्यअषकष्यकोटिपालिर्णविशषभोहमायामेनमाचहीं॥१६१३॥
परमपरेशपाइवेमेंपटुपालसरसंगवहरंगएवकेहूसरोरेकेआलहे॥हेत्तेहेगिरापवेगियोगारूटमरसमगूढभावमेहखेहवी
चपायमालहे॥होयकेहमशमष्यमोऽएएकांतभ्रांततागिमीताकांतगुनगाऽएकमालहे॥युगलअननन्यसीषसींचसमसुम
मेसुखनहींतोअनेकहायफरायजगुजालहे॥१६१४॥नामरूपगुनधामअभिरामरुचिसुचिहीननरखरज्वरजरगारू
पहे॥आमहुखधामताकोसंगरसभंगहेतुहेत्तेहेगिराय[illegible]छ्नवीचकूपहे॥नामकामधामहामस्मकनथीरहीरपीरपरप
केकवटारनेकोसपैहे॥युगलअननन्यवामधामकोवटकचावकारनकठिननीचकीचमीचमपैहे॥१६१५॥मायामेभिल
तमनमहामत्तवारोसीतचलतअनीतपंथरुष्यअषछ्रातेहै॥मानेनहींसाखसंतशास्त्रनकोलेशमठआपनेईकेहेकोप्रमानके
रमतहे॥पायकेजीतवेकोहितऔरनउपायकछुकेवलकपालनामआसरोशातनहे॥युगलअननन्यदूजोहिवमनसंगरग
होतमहभंगफीरलागतनछातहे॥१६१६॥जौनजनमानेरिपुमनकोसनेहत्यागिसोईवडभागीअनुरागीइागहरहे॥

॥सीताराम॥

उनहूँहाँकीमिलेरघुवीरधीरपीरहरसाँचोसंतवचनप्रमानिएप्रकाशकर पीसिकरईतटस्तअंगअंगमर्दिपुनिकीजिएज
तनमनजीततनिमित्तत्वर॥ युगलअनन्यकिएआलसअमेषभाँतिकैसेतवहानितातेजोवतहीविगिमर॥१६१७॥
जागेविनैरैनदिस्काचाँइनीचमकचारुरिवेलनकहापिकिएयतनहजारहो॥ रागेविनरहसरमालनामनेहनिधिअविधवि
शेषदेखोहीनरसवारहो॥ पागेविनपावनप्रकाशमनसंगरंगरासनउमंगहोतआगमअपारहो॥ युगलअनन्यत्यागेवि
नापरपंचपंचमहामोहमंचमाँहवैठनोमहारहो॥१६१८॥ जीतमनमीतप्रीतिप्रीतमप्रकाशिहै॥ पीतेप्रेमपरमपियूष
भूषदूषदंदप्यासत्रासरामअनापासहीसैंनासिहै॥ गीतेगुनगौरवगुनेशअवधेसमुखमारअविकारमाररागविना
माशिहै॥ रीतेमाँमजातजमजातनाजमातछामकोटिउत्पातहव्याधिलैतेनिकासिहै॥ युगलअनन्यऔरसाधनग्र
पोग्यमवजीतमनमीतप्रीतिप्रीतमप्रकाशिहै॥१६१९॥ हायआयवायचलअचलमनेहहीनछीनपीनपातककुवा
कमाँझमोहमम॥ जायजगजीवनमुभूमिरुहाहिअवपुप्रेमपरिपाकविनुनाहकनिरीसमम॥ धायदशोदिसिविषवा
रुनीमुपानकरिहोयमननेनवैनहँहिरायहम॥ युगलअनन्यगायगीर्वाननाहगुनअगुनअजूवरधूवपायोनाप्रकाशधाम॥
१६२०॥

॥नामने॰॥

विसदविदेहवरतनपापुदविंदवंदतहमेमप्रीतिरीतिसरसायके॥ सौरभकिशोरताईसुभगसोहाईमाईललितलोना
ईमकरंदवंदभायके॥ रसिकरसीलेचित्तहरतअनरूपभांतिपरिकरहंससेव्यमहालललचायके॥ युगलअनन्यअलीपी
तपरागपुंजमधुरससवाईतीनोतापननसायके॥ १६२१॥ चरनसरोजतलजावकजावकसनेहरंगमोहमनमेरोछवि
विमलदिखायके॥ मानोपरिकरप्रियरसिकसुभागप्रेमअमलअरुगगछायपसुघोहुलसायके॥ सेवतसदैवबडभागी
अनुरागीमुद पावतअपारप्यारसुरससजायके॥ युगलअनन्यसबभांतिनसरन्यअग्रगान्यमानमध्यपदपद्मसुभाय
के॥ १६२२॥ झूलना॥ जहांविस्वासतहांसुखरासनिवाससहीदृढजानियोजी॥ कमीकुछचीजकमीनगमीअमीपीव
नोनित्तप्रमानियेजी॥ जमीयोगविरागकीरूखरमीअनुरागअदागसमानियोजी॥ भनेयुग्मअनन्यप्रतीतिविनाझख
मारनाहायपपछानियोजी॥ १६२३॥ कोरोविस्वासकोटतमपासमिटेभवत्रासउदासमताई॥ मेरोमतमूढविनागुनमूढवि
वेकअरूढखुलासताई॥ तेराजगासिंधुनहूजिए अंधकअंधअगंधकुवासताई॥ रंगीनिजनामअनन्यभनेविस्वाससमेत
सुरासताई॥ १६२४॥ फानीजहाननिहारिएनैननमैनअचैननहूजिएजी॥ पानीतरंगमिसालसभीसैतानसहरनहूजिएजी॥

॥ सीताराम ॥

हानीविनाविस्वाससदासुखखानीवियोगविसृजिएजी ॥ ज्ञानीगुनीएहिवातवैंईविस्वाससेंस्यामकोपूजिएजी ॥ १६२५
वडभागीविरागीअदागीमेंईअनुरागीनशक्कसम्हारनाजी ॥ जिसेंजानकीनाथकीआसहुईविस्वासवुलंदविकार
नाजी ॥ उसीपासअखंडहुलासप्यारोसहीमानियोसखुनसुखसारनाजी ॥ भैनेयुगमअनन्यवेगम्महजेतभीनामरटिसो
हमेंमारनाजी ॥ १६२६ ॥ वातकासुचावसवमतकरोभरोभावअदावअदावयारो ॥ दूरकरअनेककीआसकोफैंकिअ
सेंकविवेकरहस्पयारो ॥ स्वातिसीकेंसमवारसेंसंतोखसदाइहरीतिविचारिएखूवयारो ॥ भैनयुगमआनन्यसियरामकीआ
महेमशाहमेशाकरोतभीमोजयारो ॥ १६२७ ॥ विनावूझेंकेभटकतेडोलतेहोसदनसदनमेंख्वारखुरखोययारो ॥ नामआपने
कोमख्वाखावतेहोजरासमुझिकेंधारिएकदमयारो ॥ वातवनाएफकीरीकहाँहिलगीरीअभावविहीनयारो ॥ भैनेयुगमअन
न्यसतसंगमावितकिएमिलेमिलेउहराहरसरहसयारो ॥ १६२८ ॥ अलमस्तफकीरोंकेभूलनेमेंभराआवमहतावअ
नुरागहैजी ॥ वदरदवरवूरसमभेदकोकहाजानेशहनशाहीदिमाकअदागहैजी ॥ खुलेविनाचितचस्मसुखरसमनाहीदिसे
ख्वावमेंनहींवरवागहैजी ॥ भैनेयुगमअनन्यमस्ताननामीलगीलालकीलगननयलागहैजी ॥ १६२९ ॥ चितवैरीको

॥ नामने० ॥

आपनेकेहकारिकेमहागोशेमेंबैठनायोगहेजी॥ इतउनकेजानेमेंनफानाहीसफाहोयकेजीतिएशागहेजी॥ इखाहे
खीमेंभूलिनचालिएजोइसीचालमेंभरावहुरागहेजी॥ भैनेयुगमअनन्यसोधन्यआरिफजिसेचाहनाहिहेचमरभोगहे
जी॥ १६३०॥ फेलफानीफरेबमेंफकेहोकेफिकिरफाहसीफोजकतलामकीजी॥ कलवकाशिमविनआरसबकसबछो
डकहरकामनहिरहेआरामहेजी॥ उसीयारकेयाइमेंरहोहरइमसराइस्केकेलिएजमजामहेजी॥ भैनेपुगमआनन्यर
तिरहसराहततलवगारनितरहोलहोधामहेजी॥ १६३१॥ चारहर्फफकीरकेबीचसमुभोतधीजालउरभोनहींक
धीप्यारो अउवलफाकाकवूलकरोकसिकेफिरिखाकेनायतखूबयारो॥ यारीदिलहारहमेशाकीजेनिजनामके
याइसेमेतयारो॥ भनेयुगमआनन्यसवसाधचहिएतुभेरेयातांमुद्दतहकीकयारो॥ १६३२॥ महासीलविभूषनधा
रियारोविषेवासनावोनसोआनजानो॥ मुहाहोयकेमारकोमारलीजेपीजेप्रेमनिजनामपियूषपानो॥ जहाहजिए
जानजहानजहानसतीखतोखाहिसीखायखुदख्यालठानो॥ अहाइस्कायुगमअनन्यलखोसतसीलसेमतसोहा
गसानो॥ १६३३॥ सुचिताईनसीलसमानकहूंकुचिताईउपाधिकेमेटनेको॥ रुच्छताईजहानविहानकेरखोफखरहका
खोमसमेटनेको॥

॥सीताराम॥

॥नामनेह९०॥

मुद

नहींआनपत्ननजेआवेमुझेजानकीनाहकेभटनेको॥ भनैयुग्मअनन्यउपायएहीहरसमेसुखसजकेलटनेको॥
१६३४॥ सीलधारनेमेंनहींटीलकीजेकीलकामकेभालमेंठोकिएजी॥ वेगपांचकोमारगुरतेगगहिकेसहौरसचि
नकोरोकिएजी॥ जेतेमिहमुनिंईहुवेतेतेसीलकोधारिअवलोकिएजी॥ भनैयुगमअनन्यहमसीलसमतानहींभेइ
हिलआपनेचौकिएजी॥१६३५॥ हमवंतसुसीलवडाईवडीमहाभारतवदपुरानमेहे॥ लागेअउअलसाकदूपांछे
पियूषसहस्त्रकुवानमेहे॥ मुरसिद्दमेहरनजरवांकेहुआवारउहदेशजोजानमेहे॥ भनैयुगमअनन्यश्रीनामसुमि
रनकिएमोजहमशामसहाप्रानमेहे॥१६३६॥ सवैया॥ आपविचारसोज्ञानीसहीहे॥ आपनेवोधविनाअविरोध
निरोधनहींचितवृत्तिवहीहे॥ सुद्धस्वरूपअनूपअनामअभेअभिरामप्रमोदमहीहे॥ अज्ञनमेंवहुमानवदेनहिस्यो
हेहवारएहृधरहीहे॥ युगमअनन्यसहाश्रुतिसंवतआपविचारसोज्ञानीसहीहे॥१६३७॥ नाहनिहारेसोनहीनवी
नो॥ ताकनहींसपनेहूमसूलिकेआनहिआगुमिहाहहवीनो॥ छाकेछटाछविछैलसिरोमनिजानकीजीवनरू
पनगीनो॥ जोकनलोकहोउअभिलाससुलासनिवासरहस्यमेभीनो॥ युगमअनन्यअदाकमसेमतहीमाहनिहारेसो
नेहीनवीनो॥१६३८

भोगतजेतवयोगयथारथ॥ नाकऔकानदबायकहामुखमौनगहैनमिलेपरमारथ॥ झीनहुँतेअतिझीनविलछ्छनयोगर
हस्यकह्योहरिपारथ॥ भीतरपैठिकेहोयसचेतनकेररसएकउमंगमेस्वारथ॥ युग्मअनन्यनवाकववेकोसिधिभोगतजेतवयो
गयथारथ॥१६३९॥ इस्ककैरफिरिसंकनधारे॥ बांधिविजयहतियारसिपाहकोशीशकटैपैप्रमोदनिहारे॥ पाव़केहेतचि
ताचरिकेपुनिवामफिरेमतधर्मविगारे॥ धारिकेदिव्यदशामनमूरकोमूलीकवलकरैनहिहारे॥ युग्मअनन्यकलंककोस
हमवइस्ककैरफिरिसंकनधारे॥१६४०॥ आशाकेनामकरोवदनामनहोइहबातबुरीदगदेखो॥ हायदईइकइस्ककीगैल
मेंमेलकिएदुखदारुनपेखो॥ अउवलआखिरीतिविचारिकेपाव़धरोतवरंगअलेखो॥ युग्मअनन्यसचेतरहोजपयोगवि
रागमुसारपरेखो॥१६४१॥ लोकविसारिअलोकनिहारे चांदनीचौकमेबैठिबिनादुखआपसमेतजहानकोवा़रे॥ यारकी
प्रीतिहारिरहैनकहैनगहैनवहैमदमारे॥ मूकपिसाचमहाउनमत्तअचेतनचेतनभाव़विचारे॥ युग्मअनन्यअलीकचलाच
ललोकविसारिअलोकनिहारे॥१६४२॥ लोककेसंगमेरंगनसेशतशोकसमुंदवढेदिलअंदर॥ नेहनिहायतनीकसहीवि
तचाव़समेतचरोमनमंदर॥ आपनेगेहसेंवाहरपाव़नदीजिएजानिकेकालकोकंदर॥ युग्मअनन्यसजायकेशोकसमैक
रहोअलमस्तपुरंदर॥१६४३

॥सीताराम॥

प्रीतिकोपंथजहानमेंन्यारो॥हानिभएलखलाभगनैउहमानिकेमोदउमंगहजारो॥होयहुलासहुवेउपहांसपैप्रीतमप्रेमपियू
षपिआरो॥सूझिपरेतिनकेनकभीकछुआठहेंजाममहामतवारो॥धामअनन्यसनेहीलखैनिजप्रीतिकोपंथजहानसेंन्या
रो॥१६४४॥कवहूंमननमेरेहेंनेहगलीवसिहैलसिहैहंसिहैछविघाकी॥सावरीमूरतिगोरसुरंगरंगीलखिहैंललचायकेझां
की॥वावरीसीमतिह्वैहैकहूंललीलालसलोनीअहानकोताकी॥धामअनन्यअलीसवआसपुजाइवेंरविरहीरहवाकी॥
१६४५॥निजानंदनेहीनकोहेतलेतचोरचित्तवितअनुरागदागहीनकोसदनहै॥पापतापदापकुलकलिलकलापसाप
नेकुहीनहायहोतआपहीकदनहै॥कोशलेशानंदनसनेहनीरपूरनरदूरदुखदारिदविमोहनमदनहै॥धामअन
न्यकुंडनिर्मलीअमलमनकरनवखानेशेषसहसवदनहै॥१६४६॥जौनफलमहसप्रयागमाघवासकिएजौनफ
लमथुराकेरवारगएसें॥जौनफलवारानसीअरवखरववर्षवसेजौनफलतीर्थकोटिनकेभएसें॥जौनफलयो
गयज्ञव्रतनेमधर्मकिएजौनफलकुरुक्षेत्रगऊकोटिदएसें॥धामअनन्यतौनफलअनायासनित्तनिर्मलीकुंडनी
रहरसनलएसें॥१६४७॥निर्मलीकुंडकोनामहेमाचौ॥नेकहींएकहींवारनहावतसुद्धसोहावनआंचनआंचौ॥

॥नामने०॥

नेह निसोत जोगनि पै जोत मिटै मह मोत प्रपंच हू पांचो ॥ जो वित्त चाह उछाह हैं सो पूरन है। यम सहाइ न हीं सन पांचो ॥ धुम अनन्य
निहारिए नैनन सें निर्मली कुंड को नाम है मां चो ॥ १६४८ ॥ कोटिन कुंड कलेस निवारक है जगतीत लसें सौं वही प्यारे ॥ पैसव
मो मिरताज सिरोमनि निर्मली कुंड अनूप अपार ॥ जो न मैं ज्ञान की नाह नहाए मन हसमेत सुवारह जारें ॥ धुम अनन्य जोती
र पत्र और की आस करैं वृथा भख मारे ॥ १६४९ ॥ संत समागम सोन सवाद सुधा नहि वागविलास सुगोहर ॥ सो जन प्रेम समा
नकछू कैं हूं सौं जन स्वच्छ सुभाव सो मोहर ॥ रागन द्वेषक समान कहूं वह रंग कुरंग सो औरन दोहर ॥ ऐसे ही निर्मली
कुंड समान न कुंड कहूं तिहुं लोक मनोहर ॥ १६५० ॥ पावन हूं पावन प्रसाद प्रेम अह्लाद सहित सु पाए फल अमित अनूप है
एक कन सममता एकैं द सी अशेष वृजन करिन शाकत वेहु विमल निरूप है ॥ सुधा हू सें स्वाद सीताराम जू की पराप्रीति दायक प्रसा
द ही तें मिटै धूमधूप है ॥ युगल अनन्य दृढ कीजिए प्रतीति पर्यु विना विस्वास सुख रहित विरूप है ॥ १६५१ ॥ देखो दै खी पा
ए प्रसाद न विवेक विन प्रवल प्रतीति सांची वात मेरी मानियो ॥ दृष्ट अनुकूल शूल सम न सुसीत सुभ अपर अनिष्ट प्रति
कूल ही प्रमानियो ॥ जीभ लोभ लंपट विगाए कलीकाल सठ खात रत उतताते मलिन द्वजानियो ॥ युगल अनन्य सावधान सें
सें वारो कान लाज साज पर गाज डारि सुप सानियो ॥ ५२ ॥

सीतारामजूकेबिनाआनकोप्रसादनाहिपाइएप्रमादहूतेंदोषनकोद्वारहै ॥ भलेनाममहातमकेसुनेगुनेकैसेहूंजोआपइष्टकहै
तौनमानतसुघरहैं ॥ इष्टअनमोलमनीसमझराशिशानेनैनवितचैनअंगअंगरंगरतहै ॥ युगलैंअवधेशकेअनन्य
रसरशिकउपासकनरीतिनेतिपरहै ॥ १६५३ ॥ औरइष्टआसकरैतौननरखरहै ॥ सकरसोआनप्रतपावरपषानजेतेनीच
हैंजहानचलेताकेनडगरहै ॥ चाहेबडेपंडितप्रवीनगुनीध्यानीपैअनन्यताबिहीनसबबकरमकरहै ॥ हायजरजाय
मौनजडनिजइष्टमिषअवधकिशोरत्यागिभजेऔरसुरहै ॥ युगलअनन्यमुखदेहखिवेनपोगसऔरइष्टआसकरैतौन
नरखरहै ॥ १६५४ ॥ इष्टकीविभूतिमानिपूजिएनिशंकपरसावधानहोयइष्टभावनानलाइए ॥ अनुगसमानजानिमानि
वेमेहाशानाहिंइष्टअनकूलवररहसमोहाइए ॥ निंदाओप्रसंसाउभयत्यागिअनुरागनिजइष्टनामरूपगुनविनानविना
इए ॥ युगलअनन्यव्यभिचारिनकोघेरिघेरिरीतिप्रीतिभ्रमलैअनन्यतासिखाइए ॥ १६५५ ॥ धन्यहैंतेधन्यजेअनन्यजनव
शैंत्यागिजगजालगिरिकंदरननाममोदमानिके ॥ ध्यावेंरामरूपज्योतिउज्वलअनूपधामगावेंगुनरहसपरशआपजानि
के ॥ ध्यानमेंमगनमनमणपरैंनैननीरप्रेमकोअश्रवतसुधिदेहहूंनआनिके ॥ युगलअनन्यअंकबैठित्यौहिपीवेरसगाहीनअनेक
नेकर्मकहूंनठानिए ॥ १६५६ ॥

तिनहींकोजीवनसफलकलिमलविनजिनकीसैहैवओसीरसाअनमोलैहै॥ हमसवलोगनकोव्यर्थमनोराजकेलिकौतुक
अटवैरवाटिकाकलोलैहै॥ ऐसेऐसेअसदमनोरथमेंलीनहोयविमलविचित्रवेसखोयाडमोडालैहै॥ पुगलअनन्यवा
रवारधिरकारमोहिपियानहीनामरूपरसनोअतोलैहै॥१६५७॥ कटितटकलितकोपीनछीनटुकशातनेसहींविरागगुनग
हाकेपाअंगमें॥ अटिवनवागगिरिदरिनमगनमनभीषकोअसनकंदमूलहीप्रसंगमें॥ सीताराममनामअभिरामगोरस्यामछ
विध्यावेषकरसरंगेराछवीपरंगमें॥ पुगलअनन्यपटीप्रीतिपरमेशरासंगतेतोडिकेअनंगगदरस्कीकेउमंगमें॥१६५८॥ चा
हकोनलेशहैप्राग्रचलअचिंतवसिगहिकेअनन्यअसिविरतिविभासकी॥ हेरेसुखमाहस्पासजनमनेहीराहलोकत
वितावेरैनअैनअभिलासकी॥ खानपानहारहथारभारिमानमानसुखदुखसममसकलसमाजलोकफासकी॥ पुगलअन
न्यअलमस्तकस्तकिएरस्कसदनकेवासतेहेमप्राग्राहआशकी॥१६५९॥ गजारंकअकेनकनजरमेंफर्कनहींअके
समचसममविरंचितनतलेमें॥ वाजाअनहदडंकमांककेविगेरराजरवूवहींवजावेंभानिनेहअनमूलमें॥ लोकलाजछो
डिकेउमंगनेमरूपमाधजंगजगजीतिकेअजीतअनमूलमें॥ पुगलअनन्यपरवाहहेचनाहीचित्तरहेअलमस्तराजसरग
केकूलमें॥१६६०

दुरखाविरोधक्रोधबोधेनविलोकियइंद्रियपायपोशीशफिकरफेरवेक॥ वरखानकोटकभीतगुनउपाधिरूपअमलअन
पछेकेतकेसुखंमवेक॥ सामेननिहारेनिननाहचिनवाहमाघनेहनियहकेंसजेसौंजजेवहै॥ युगलअनन्यवसें
सरजूसरितततटनिपटकपटतराहित्तविनाअवेक॥ १६६१॥ कामजहांतहांरामनहीहैं॥ लोककेवीचविलोकियहषिसें
छांहजहांतहांघामकहीहै॥ जौलौनवासनातीनमिटैतवलौनकहाचित्तमोहमहीहै॥ रंकतारागअसारहेंसारविचा
रविकारनसंगमहीहै॥ युगमअनन्यमहामतसंमतकामजहांतहंरामनहीहैं॥ १६६२॥ सीखीसिखाईनरंचककोहैसबबात
हैदखीदेखाईहमारी॥ नामीसनेहसुसंगविनादुखदारूनदाहहेवेनविचारी॥ देहअनंतधस्योतिहुलोकमेंपायोनमोह
कोलेशनिहारी॥ कोउनप्रीतिकीरीतिविचारतयुगमविनाविमलेशविहारी॥ १६६३॥ कामतजेमजेनामअखंडितआठ
हूंजामसनेहसेछाकी॥ आपनीहानऔलाहकीरीतिभलीविधिमेंसवहीदिखिताकी॥ मानअमानसमानगनेअभिमा
नवितानविरामविवाकी॥ युगमअनन्यकेआसहैनामकीजाकरेवदीवुद्धिवराकी॥ १६६४॥ नामीअनन्यनकेसंग
सेंमनमेरेसेमोहविनोदवढ्योहै॥ साधनसिद्धनिधिद्धनिहारिकेवामनावंदविकारवढ्योहै॥ श्रीगुरुकीकरुनालवलेशसें
नामकीपाटीपवित्रपढ्योहै॥

नाम
पुग्मअनन्यउमंगसेमतकहीहैकछुनहिज्ञानगसोहै॥१६६५॥जोनिजहानमनेहचहोतोनमाधनवीचवहोकोउरीती॥खोयके
आपकोखूवतभीमहबूकअजवकीपावनीप्रीती॥चातुरीचालचवावतजोहिलहावविज्ञीतिकेसाजिप्रतीती॥पुग्मअननसम्
रोअभीविगारीविगारिसुधेरीचितलावतवीती॥१६६६॥जरजायफहनोचसुभावहमारो॥जोनकुपंथमेंकंटककोटिकलंककु
पंकचलेतेहिकारो॥धर्मविहीनअकर्मअधीनजेपातकपीनप्रपंचपसारो॥अमहांनीचनकोसंगभावतगावतवीजविष
यव्यवहारो॥पुग्मअनन्यकहौंलौकहौंजरजायफहनीचसुभावहमारो॥१६६७॥**झूलना**॥भजोनामअभिरामसुखधामसुंद
रसुघरसमयसुभमिलीअतिभलीभाई॥तजोतीननदुखमहीनअघपीनपाजीमहारहेराजीरहसरंगछाई॥सजोसारसतसंग
उरसारसमोहनमिटेमोहमायामलिनमानमाई॥भनेपुग्मआनन्यअलमस्तनामीलजोजालगवालसेंजानगाई॥१६६८
तेरोपांवपचीसहस्रपावप्योरेनवलनामनैनोकाकेरोसाजछावै॥मेरोनामनिजनेहकाहामोहिल्लेमेंधरोदूरवोहारखरखा
रहावै॥जेरोविरहकेआगनिमेंनगनहोकरकरमवासनावमनसेंरहितनावै॥भनैपुग्मआनन्यअलमस्तनामीमरोद
धरैंसेउधरजीवोसुभावै॥१६६९॥लेडामोहमहसैनसेंकमरकसिकेवडोजंगभवभंगकोकरनवाला॥ ÷ ॥ ÷ ॥ ÷

अडेपाँवपीछेनहीँएकहीजेमारिमारिरहेशाक्ष्पकावाला॥ गडेज्ञानगुरुगमसेंमेंजोतितेरीसुवचमानेमेरीछेकोप्रेमप्या
ला॥ भनेयुगमअनन्यअलमस्तनामीजडेजानमैंनामतवमिलेलाला॥१६७०॥ भजनभावनामलीरमरीतिग्रहीसजन
सामेंनेनित्तहीनैनमोवे॥ वजनआपनीभूलिकेरस्कअेरसमधुरमाहमुखमीतमेंलीनहोवे॥ तजनफेरतिनकोकमी
कछुनाहींसुजनशीशसिरमौरमुखसजसोवे॥ भनेयुगमअनन्यजनमअलमस्तनामीछुअमैंछैलछविछावे
नीछकीगावे॥१६७१॥ लगीलालकेनाममेंलगनमेरीलहरकहरउठतीजिगरआयहरदम॥ भगीभमरिकेभालेसेंका
लकिमत्तमिलीहमसमतरहजौनगतगम॥ जगीजीवनीसुधासुचिसारसरतिपगीपारकेरूपगुनलायकेसम॥ भनेयु
गमअनन्यजीजानघायलपगीप्रेमरसमिलिगईकपाहमतुम॥१६७२॥ लोकवेदसेंजुदीहैचालतिनकीरटनामजोमस्त
रहतावजीवन॥ सोकहर्षनव्यापतीतिन्हेकवहींकामकलाकोकतलकारिनेहनीवन॥ कोककोकनीसीरहेमिलेविछु
रसमेंपायकेएकताछैलछावन॥ भनेयुगमअनन्यअलमस्तनामीविनारोककेभएसोसीमसावन॥१६७३॥ योगजा
नकीजानिकेमिलनखातिरकरेहोयएकांतचितशांतप्यारे॥ भोगभावनाद्वारकीभूलिआपानकीवातनाहैचचितवीवेप्यारे

प्रीति

शागफ़गतहिलहारकेवास्तेहींहिगरचीजनेकडगरैंसमझहारे ॥ मैनेयुगमआनन्यमस्तानानामीरमेरेमगनाकभीतनमन्नवारे ॥१६७४
राहअजबवारीकेहेवालेसेंभीक्रपापायेकेचेलेकोइएकआकिल ॥ चाहद्दनदुनियाविसरिमानिमाहुरनहींहोवनाखावेंमें
कभीगाफिल ॥ माहसजनेंसेंमामेनेमहंहारहतेवहीमहीमवैतारसेभलाआमिल ॥ मैनेयुगमआनन्यखुमरववरसुनिएस्माइमन
केविनानाचीजकामिल ॥१६७५॥ भजोसीलसुखसारउरआपनेमेमहनमोहकेवीचनहिनफाहेजी ॥ मंजोहहनोतेलफूले
लसाथीउदीकामकीलहरक्यावफाहेजी ॥ लेजोकामिनीहरिवकेतुरतप्यारीकिरएसंगवहरंगजमजफाहेजी ॥ मैनेयुगमआनन्य
अलमस्तनामीभजोनामतवकामकुलहफाहेजी ॥१६७६॥ सीलसंगनजिस्मकारंगलागावहीआकवतवीचखारावपानी ॥
पीलपांवमेंपीसेसोजायपहिलेहमीविस्वेकेवीचवहनामवाजी ॥ छोलवेदेगोआपनीरीतनाजकमधुरहारूकेसहसमनहिरष
राजी ॥ मैनेयुगमआनन्यअलमस्तनामीरोलकीजिएनामसेंनहींगाजी ॥१६७७॥ सीलसुधारसपाननितकीजिएजीनहस
जानहारीविषयछोडप्यारे ॥ कोलसीसमेंकालकागडेतेरखरखोफमेंवासभीहायप्यारे ॥ नीलखतमाअसुचिविनसीलप्रा
नीकेहमेंतरसवंतहरवक्तप्यारे ॥ मैनेयुगमअनन्यअलमस्तनामीसीलत्यागिकेभजोसुखसिंधुप्यारे ॥१६७८॥ ॥

सीलसत्यसंतोषसमसुखवनाहीकहीं देखियदृष्टिकोखोलिएजी॥ होलिमहिन्नेकोकर्मोसंरहोनाही गोसांवैठिकेकभीना
डोलिएजी॥ बोलमधुविषधरनकीजानुवामानजरनीवीकिएनहिंबोलिएजी॥ भनेयुगमअनन्यअलमस्तनामीगीलग
नवसीवालाहियतोलिएजी॥ १६७९॥ कोईकिसीकानहीं इसजगतमांहीफकतमूठनातादिनाचारकाहै॥ गोरवातननविहि
तवरवेहलोकेसकलवस्तुसुखछांहघनसारकाहै॥ सोइसुरतिसोहागिनीजागनेसरहेहैचनहिविस्तव्यवहारकाहै॥
भनेयुगमआनन्यअलमस्तनामीरटेनेमसुखधामआरामकाहै॥ १६८०॥ सियरामसुमिरनविनासकलसाधनसदृस
ननेकृतकुतुकनहिंसांचसमुझो॥ मृगवारिगंधर्वकोनगररजुसर्पघनवीचवहुरचनसमनाहिउरझो॥ दिलारामअ
भिरामगुनग्रामगावोमजामधरपावोनहिंकभींमुरझो॥ भनेयुगमअनन्यअलमस्तनामीजिकररहसमेंउरभिनहिंक
वहूंसुरझो॥ १६८१॥ कवित्तघनाच्छरी॥ लच्छमनलोगभोगभावनाभरमभूतधूतछलछद्मतउतनिकटनआशके॥ लोभलो
कलाजरवागनशेअनयासमवकामकोहमोहद्रोहसपनेहूंनातके॥ सीतारामजूकोउहपरमपियारोजनहोयज्ञानविरति
विचारसारहूंवके॥ युगलअनन्यलछमनजूकोनामजीहवारकसुनेहेंसेजपतइतसेंयके॥ १६८२॥ भावभक्ताईभूतिमगन

मलाईमूलभीतिविनाकरततिकीरतिविचित्रैचैन॥ भागसैंविरागहिव्यपरमप्रकाशरागअनुरागसाधनसफलसघवैसैं
॥१२६॥ अैन॥ जानकीजीवनजूकोनेहीगुनगेहीसोईसरससुजनसघविगतकलंकमैन॥ ध्रुगलअनन्यश्रीभरतनामरटेजोहपाव
॥१६८३॥ नप्रमोदप्रेमपावैतौनरैनअैनँ॥ सोभासतसंगरंगप्रतिभाप्रकाशअंगवासनाबिभंगजंगजीतेकामकालखल॥ तीनकालहूमैं
ताकेउपजेनखेदउरवैरीवारिपारसबहारिजोंहिछोडिथल॥ सीतारामलखनभरततापैरीझैंरोजसौंचसततसंकटनसावै
महामोहमल॥ ध्रुगलअनन्यसत्रुहननाममोदघनजपतअवसपावैप्रेमपरिपाकभल॥ १६८४॥ वारवारवंदनीयपदअरविं
दयुगलखनभरतसत्रुहनसुखरासके॥ कोटिनव्यधानव्यवधानविनानमोनितहितअनुरागवितप्रीतिप्रतिकासके॥ हौं
तौमतिमलिननलिनसकुचितममतदपिउछाहचितकारनविकासके॥ ध्रुगलअनन्यवेदसंहिताप्रसंसेसबनामगुन
अमलमहत्वपरकासके॥ १६८५॥ सीतारामजूकेप्यारेवीररनधीरमहावीरनमेवीरपीरहरनउदारजस॥ आपकेसमा ॥१२६॥
नसुखखानप्रानप्रीयआनजानकीजीवनवसकीएरहेएकरस॥ महासंभुअतिअमलअनूपजनकाटेभवकूंसैंनदूस
रोहेखातअस॥ ध्रुगलअनन्यमंदमतीपदकंजरतिहीनतउचाहतउचारनामनसनस॥ १६८६॥ ॥ ॥

॥सीताराम॥

॥नामने०॥

न

श्रीहनुमानसुजानसिरोमनिकीजिएमोपैकृपासुखरासी॥उज्वलदिव्यउदारगुनाकरजांकिजानिसुप्रेमप्रकासी॥रंजनहोजन
केमनकोध्यानअंजनभंजनभर्मउदासी॥ प्रनतअनन्यकीआसपुजावएनामरटौनितस्वांसउसांसी॥ ९६८७॥ श्रीहनुमान
प्रधानपरात्परतिरूपअनूपस्वरूपसदाहो॥ जानकीजीवनकीकलकीरतिगायकभायकभावमुदाहो॥ आपसेवायनही
कृतियाकोउजाननरामरहस्यअदाहो॥ प्रनतअनन्यदुखीदिनहीनकृपालविशेषकृपाकरिचाहो॥ ९६८८॥
मारुतनंदनविस्वविभवचितचंदनवंदनअंजनीवार रामहींरोममेंनामसुधारसछापरच्योपलहोतनन्यारे॥ कौनकहौंम
हिमाप्रभुकीममबुद्धिनहीएतनीमुनिहारे॥ प्रनतअनन्यनिवाजिएसीबूहींआपबिनानविपत्तिबिदारे॥ ९६८९॥ आरदरद
रनदुखदारिदहरनकामकदंनकरनभावभरनशरनजन॥ दाहनदुवनजगजननमरनअतरनकेतरनआभरननामनेहध
न॥ कारनकरनमदमलनगरनयुगवरनपरनसतवितमोदज्ञानघन॥ प्रनतअनन्यगिरिसुताकेरमनधराधरनधरन
पदवंदिएसुवागमन॥ ९६९०॥ दीजिएदयालनतपालकोशलेशवासनामरूपगुनरुचिअसुचिनशायमन॥ लीजिए
सुजससोंवशिवसुखऐनचैनकीजिएकलंककलमखकोटिदहिजन॥ पीजिएपियूषआपसततसुनामरसमोहूँकोप्रसादकन
देहुकरुनायतन॥

॥सीताराम॥

॥१८७॥

युगलअनन्यगतिराव़रोअरनवालपनेतपरनसोविचारिएउदारगुन ॥१६८१॥ श्रीगननायककौगौरीपदांबुजमेनतिमे
रीसहाविलसे ॥ सुचिसारदाशेशाशिनिभाप्रेजशारमेशाकोवंदिहिकेपाहुलसे ॥ रिषिनारदकुंभजआदिमुनीशनकेनतिसेदु
खद्वैतनसे ॥ नितयुगमअनन्यनमेसबकेपदपंकजहौंहदैविगासे ॥१६८२॥ सीतारामनामरूपगुनधाममलीलारसपगेजे
तसंतरसवंतस्छविवंतहै ॥ तीनोलोकमाहितीनोकालमध्यजहांतहांअपदप्रगटहीनबंधुमोदमंतहैं ॥ जिनकोसुभावसी
लसेषमारदारागेनशाकहतनपारपावसुगुनअनंतहै ॥ वंदौवारवारपदपंकजप्रकाशप्रदअसरदरमनअनुदिनदुति
मंतहैं ॥१६८३॥ मेरीआसपूरनकरनवारेसंतजनजाहिनदजोरंकपाइहेमरसममम ॥ करुनानिधानसावधानसदाचित्त
वत्तिहितअनहितमोरदप्रदसदाएकसम ॥ जिनकीवडाईठोरठोरफलकाईसुखदाईश्रीवदनमेंसवखानीअनुरागएम ॥१८०॥
युगलअनन्यहीनेहरविकेकृपालवरदेहुनिजनेहुहरलेहुमहामोहतम ॥१६८४॥ नामसनेहविचित्रजवाहिर ॥ जौंह
रीसंतवडेवितवंतलखैदुतिवंतरहस्यअजाहिर ॥ गोहरीरीतिपुनीतवडीप्रतिभासवलोकअलोकसेवाहिर ॥ रंकसु
शोककलंकिनकोगनिहारदहेतीनहूलोकमेंमाहिर ॥ युगमअनन्यलख्योगुरुसेंनिजनामसनेहविचित्रजवाहिर ॥१६८५॥

॥सीताराम॥

॥नाममे०॥

संकल्प छोड़ काम हान नहीं शंके है॥ काम के अभाव भए कोहू दुख होत आप होत निर्मल जैसे गीताषम में पंके है॥ शोक मोह त्याग उपनिषत विचार संग है भ सत्त संग सेवा किये गात अंके है॥ नींह पाप खानि सत्य सेवन में जोति जनत तन मन कामि के हमेशा हीं अवंके है॥ पुगल अनन्य है विमल उपाय सुचि संकल्प छोड़ काम हान नहीं शंके है॥ १६८६॥ काय कलेश कियें न नफा है॥ भीतरे राग भरो बहु शोग सं अयोग वियोग कुभोग जफा है॥ बाहर साधन कोटि करो पर मानस हाहन होत हफा है॥ नाम रटे सब बात पटे जग जाल जवाल हु काल रफा है॥ पुगम अनन्य विवेक मनै सजैसुए काय कलेश किये न नफा है॥ १६८७॥ ध्याए विषय वासना के संग होत तामें हट संग हीं में काम हे राषह राम संभवित है॥ काम हीं ते कोह कोह हीं से मोह मोह हीं से च्छु सुमिरन एक रस अविचिंत है॥ सुद्धि सुमिरन के अभाव हीं से बुद्धि बरविश ह विनाश होत यामें मोह नित्त है॥ पुगल अनन्य आगे आपनो स्वरूप हान पड़े अवधान बड़ो अकथ अमित है॥ १६८८॥ नाम सनेह विना सब धंधवाँ॥ बस्तु विवेक विचारिए सोच न नाचिए नाच पड़े तम कूवाँ॥ नाम विहीन रहे दिन हीन मलीन अपीन ज्यों रांड को रूवाँ॥ वेद पुरान कुरान पढ़े कहा ज्यों अविचार बके मठ मवा॥ पुगम अनन्य न स्वाद करे कछु नाम सनेह विना सब धूंवाँ॥ १६८९॥ मेरो मन हू जिए अ संग रंग राम रंग याही में अमित मोद पाई है विशेषते॥

वेध

मूढ़ासन्वंधैरूपधोषधंधधामवारतनयामैंशाकलेशाहंमुंरखवेते॥ ताकेनामतातेनामरसचाषअंगाष्टंव्यगुनजानकीजीव
॥१९८॥ वनकूकोभिन्नरागद्वेषेते॥ पुगलअनन्यफेरिंओसरनमिलेयारहारजीतसमाएहीमानोसंगमेषेते॥१७००॥ मनमोरमजा मूलना २
मरुदूवमिलेरिखलेकंजागिलमुखकालनाही॥ तनगोरेविचोरसमेतहिलेहरसायतनायतशाह[illegible]शाही॥ गनसंगकुरंगअठंग
विहायपिलरनप्रीतिप्रपंचदाही॥ भनेयुगमअनन्यअंनंदहरदमखुलेवस्समनमारफतरहसराही॥१७०१॥ आहमूषपिया
सघटायअउवलतवीलेगेलगन्नलयलालललाली॥ चिदानंदहिलहारहमेशाहामिलविनाशाकतुभेखुसीखारखा
ली॥ राहीरहगुजारआसारयानेतधीजिंहगीरवैरसहाहआली॥ भनेयुगमअननयअलमसहादमरुपैनामअभि
रामतजिवुद्धिवाली॥१७०२॥ निसीरीनसैंतशोकवाटेउसीरीतिमैंप्रीतिवदवावनाहै॥ किसीसंतकासखुननहिकानकरताबि
नावास्तेज्ञानगटवावताहै॥ असीसहसममअवहैदूसरोकापटलपापकापोटचटवावताहै॥ भनेयुगमअनन्यअलमस्त[illegible] ॥१९८॥
नामीमयाजीवमधिमानमरवावताहै॥१७०३॥ जरोहीरणटीषउवारिपहिलेरहांआवनाकोनकेवास्तेहै॥ तराआपनीओर
वनायवालिसविनावूभखलख्यालकेरास्तेहै॥ मरारीतिविपरीतिकोछोडियारामजामारफतलीजिएआस्तेहै॥ भनेयुगमअनन्य

॥ सीताराम ॥

॥ नामनेह० ॥

ढरपावेंसंतीगोतेषोरहींमोतीनिकासेतहे ॥ १७०४ ॥ नारीनेहसेंअंतरखगवीकेंरयकीपारीविकारीविषाढपारो ॥ कारीनागिनी
वेष्ठनीरएकसोहे मह्यचेतेरहोमतप्रीतिधारो ॥ वरिवद्धजवानमष्यानमानोनेकनिरखेतेमात्रसुखसकलखारो ॥ भनैयुगमअ
नन्यअलमस्तप्यारीनहीजा निपोनायकानीचनारो ॥ १७०५ ॥ मजोसीलसंतसंगमेसाधसजिकेचमकरमकनहिवपुखव
नवारएजी ॥ भजोभायभल्लभनवलनामनेहीवहीरंगमेंजायसमारएजी ॥ तजोतामसीअमनवहव्यसनसारहुमनहोरना
जायलोभारएजी ॥ लजोकुमअनन्यपरपुरुषसेंतौरलीअर्थेनमेरगवाडएजी ॥ १७०६ ॥ ररररराहदिलदूनदुतिराम
रेवेलवेंबेमरमसेतोपछानजालिम ॥ करहज्ञानवेराज्ञकेकाटनेकोविरहरेतविसरायभलवायआलम ॥ जरहहररसम
रंगवहरंगहोकेअमलअधिकअंगअंगमेंचदेगालम ॥ भनैयुगमअनन्यसुचिसररचाहोरटोनामनिर्मोलतवमिलेबालम
१७०७ ॥ दुखीहोरिवण्टामगुलामसभीराजारंकअमीरफकीरसारे ॥ सुखीसहजजोनामरसरहसमातेअपरआसमेंहोयविन
वासप्यारे ॥ दुखीरीतिसेंहोयविपरीतिहररसमसुधासाररसपानसवसमेंघोरे ॥ भनैयुगमअनन्यगुरुमुखीवानीसुनेमोहमनमु
खीविषछोडिहारे ॥ १७०८ ॥ चित्तचौंकिएहैंकिएनामहवाहवाहईखववीचारपाने ॥ हितशेकिपोंसेंशबोराजकीजेपीजे
प्रेमप्यालासमलाहसाने ॥

रितमिन्नसैंप्रीतिप्रतीतिसाजोसनाबारखुशासखुनसरससख्नशोन॥ भनैयुगमअनन्यवितवामत्यागोनहीजेवसमैसरहेएकध्यान
१७०९॥ गुनहगाररिस्तहारकोसाईसोंचाजोनराचैतानामनिजरखप्यारे॥ कुनहहैकौनसापारबखानिकहैंविनानामजपओर
गुनज्ञानखोर॥ कुनहहोनेकवास्तियत्ननसारासभीलागकरतेविनाहोयखाबार॥ सुनहसहसमोअबमअलबनहीहै भनैयुगमअ
नन्यपरपन्नप्यारे॥ १७१०॥ उठोखाबसैंजागिकसुबुहहवाइवासापमुलवारएनफानाही॥ रुहोजालजंजालकेतरफेसतीख
नखाहिसाखोदिरएखहराही॥ पुछइजिसएडगाहिमागजाहिरजहरजानिकछुवोमततासुछांही॥ भनैयुगमअनन्यसुनामज
पिकेतुहोसबैहाखोफनहिहेबकाही॥ १७११॥ गजबपडैगाआखरशशीशातेरेजतनयागसैंफरनहिहेपापी॥ अजबबातसु
व रुसंतसिखलीतहैंजराकानहीजिसभीतेरतापी॥ किजबवेनकेवीचकलिकीचकायमजिसमुनेसैंभूमिद्वनधूमिकांपी॥ सजब
साजकवराजसुखचलाजावैभनैयुगमअनन्यअलमस्तजापी॥ १७१२॥ मजामौजमकसूदकोहेनवालीफकतनामअवधे ॥१८८॥
शाकाओरभूठा॥ रजावंदहोलीनिएछोडिफानीफलकगरदिसाप्रबलमहमानभूठा॥ कजागाजतीहैभलाभालतेरे
वथाबादबरबादकेबीचतूठा॥ सजाहोयगीवकृतविननामसमझेभनैयुगमअनन्यजगसंगरूठा॥ १७१३॥ ०॥

॥सीताराम॥

जहरजानिकेखाइरफेरनाहींसखुनअधिकनालायकीकीलहेर॥ कहरकालकरालनसमभतहेतिसीवास्तिभजनमेंढीलहेरे
लहरलोभलवारलकम्मतजोभजोचरनगुरुसंतअसीलहेर॥ शहरशोकसाहवनकेवीचवसारसोअसमसहगुनगेह
हेरे॥ ७१४॥ खटखट्टकोछोडिकेखूवपारोधरोध्यानसुनामउचारिएजी॥ बाट्टमेनरहुजरजानोअटपट्टनावात
विचारिएजी॥ लटपट्टजहानमोहव्वतोंमेमनेनकनआपनाडारिएजी॥ चटपट्टसवारिएकामअपनाहानापन्नअननम
सम्हारिएजी॥ ७१५॥ मनमन्नकुरत्तकुसंगत्यागोजागोरेनवहारवहालिएजी॥ गन्तपन्तरहतवखूवप्यारेपतसनमस्वरू
पसम्हालिएजी॥ नन्तअन्तकरोगुरुसंतमिलतभीकेजखिलेजमजालिएजी॥ भनैपुगमअननन्यअसन्तसभीविनानाम
रटघरघालिएजी॥ ७१६॥ खरखारकेखोजमैंकौनमरआहिअंतमेरवहउडावनाहै॥ हरहालमेंरंगउमंगसुसंगसैंनं
गजहानतुडावनाहे॥ सरसारनिसेमैंसहारहिकेमनमानकामुडमुडवानाहे॥ डरडारअनन्यसुभावविषयभ्रम
कर्मकलेशछुडावनाहे॥ ७१७॥ अफसोसकरोकहांभलेफिरोकलिकालकाजोशनाभासताहै॥ ततनतासभरो
मवभानहरोहहनीकरहस्यकारास्ताहे॥ पहपाशगुरुनकेहोयरहालहालामेंमनाहकनास्ताहै॥ रसरोसनलेशअनन्य
रसोवसोधामरहहास्तासास्ताहै॥ ७१८॥

॥नामने ६॥

पेडावरफीवजारकीखायखुसीहुसीज्ञानगुमानकीवातवुरी॥ षेडाआठहूंजामअचेतरहेछलकामकीकोखमेंगुप्तछुरी॥ भेडाभावँवि
नासठहोयसहालेउंलोकरिझायवेहेतजुरी॥ खेडाखोफवसावेतआपहींतेंविनानामकेशरनसंसरमसरी॥ ९७१९॥ नामनेहलावन्य
लावन्यलयसिंधुसुखमासहनसुमिरिएत्यागिववहारखोषा॥ ईजेहैषिनसाधनोसाधकहींलहोइयगरुज्ञानजो।चिन्तचोरवा॥
सहाहोसायाहीहेरारिवएजोडुककिएगफलत्तचितशोकसोषा॥ भनेपुग्मअनन्यआनंदहरहमेंहोन्यामतोंपासलखुवैठिगो
षा॥ ९७२०॥ कवित्त॥ अमलअगस्त्यवाल्मीकमुनिराजजगनामहींकेरटपूजनीयपरमशोके॥ तउन्नामललितललाम
मेंरमतनाहिंआलसअभागवसविधविषवशोके॥ कहेंहमरूपरसछकेकहानामवकतकेतनतीपवनहोषदुतहेशोके॥ उगल
अनन्यअरपटीरहप्रीतिरीतिखपटछोडिरेनामअवधेशोके॥ ९७२१॥ शोकछोडिकेनामधेआरएजीजगतजालजवालसेका
जनाहीं॥ लेगवहुतसेंठगामगमांभतेरेधनआपनासजगजोगवावराही॥ अगजग्गामेपूरननामसहातिलउन्नोपालिए
हिएमांहीं॥ भनेपुग्मअनन्यश्रीनामसुमिरनसुधापीजिएजीजिएसततचाहीं॥ ९७२२॥ वरबोधविचारनिराधएहीनितैनामअभि
लाषेसेंजापिएजी॥ खोरखेहखजानखलकसभीअजलोकतलक्कसुतापिएजी॥ गनोगारतज्ञानगरीपगहोहहाईनतारोषनपा
पिएजी॥

घरआपनेप्रेमअनन्यरहेकोईकालनकालसेंकंपिएजी॥ १७२३॥ सीतारामसनेहसुधारिप्यारेसभीमाइपरमाइविनाइहैजी॥
गीताभागवतवेदपुरानपठापरआषरीनामसराइहैजी॥ वीताजापैहैजन्मभजनविनाजिनाव्यर्थअफसोससुषवाइहैजी॥ भनेप्रे
मअनन्य[illegible]नामविनातीतातुर्यासवबातअैमोरइहैजी॥ १७२४॥ निजानंदअद्वैतआलापसाईगोईवातविचित्रविचारिएजी
अज्ञानंदसैंचित्तविशेषमोडेतोडेतीनगटतर्कनधारिएजी॥ चिदानंदपरेरामसुखसाँचमाहींसदाराघवकेनैननिहारिएजी॥ भनेप्रे
मअनन्यउपाधिसभीअभीविषयआनंदविसारिएजी॥ १७२५॥ अलमस्तआवस्तहमेशारहोसुहीनेसतकिएपतिपारएजी॥
गुनगस्तगरूरजरूरलषोचषोनामनआनमनाइएजी॥ कुलकस्तकरोजगन्नारनेकोमतमतारनेकोगुनगाइएजी॥ भनेप्रेमअ
नन्यअपसतपषोनानाभर्ममेंनाहिभुलाइएजी॥ १७२६॥ सवैया॥ नाममहामतमीठालग्योजेहिताहिमहाविषलोजगजाहि
र॥ संतसमाजसनेहसनेपरवासनावंदविहातसुमाहिर॥ धामउपासनासुदृसहापरचाहिएचौंहनीचित्तनबाहिर॥ प्रेम
अनन्यसकाममएअपराधअनेकवदेवकुवाहिर॥ १७२७॥ प्रीतिकिरीतिसुश्रोकीकोउपहिचानिसकेनहिमूढमलापन
वातमलीतहकीककियाहमयामनसोंकअपकरसायन॥ सांचेसुसंतसमागमसेंसुषसो ग नहोतहमेशअपायन॥ ॥

॥श्रीराम॥
॥२०१॥

युगलअनन्यसुधामबसोरंगरागरसोमुदमोजसुभायन॥ १७२८॥ अमलअनूपब्रह्मचर्य्यमुनिवर्य्यकेहूंलेहैंमनमोहजोनधारेप्रेमनेम
पन॥ सुनैनहीं श्रवननविकारवामबैनरागसहितसैचैनमानैमैनवीजअभूत॥ गुनैनकहीपमनमोहरूपगनतासुसबलहुतासअसुअ
सहरेरागरत॥ युगलअनन्यविषयपवलितज्वलितगानकवहूंनकानकैरागावैसपनेंहूंक्षुव॥ १७२९॥ नैननैंसप्रमादवसवामाविषरूपमु
खकैसेहूंनपेखलेखेजालिमज्वालजम॥ होयकैएकांतभ्रांतरहितसुसांतचितवचनविकारनहिउचितसम्हारिनम॥ कामिनीकलि
लमलथलतनताकेलनतलहैहूंछ्छोहोयजातविपुलातगम॥ युगलअनन्यजुतजतनअतनमदमलवामभूलहूंनजोहैसजवायस्म॥ १७३०॥
आठवैंविहारमारलपटअनलधारअंतककतारखेदहारसारहीनहै॥ जोकरएवारकिएकोटिनकलंकपंकतंकवंकरंकगनहोतपाप
पीनहै॥ रोगसोगसहसोसिमिटएकठौरसवहोतजोतद्रवतरहतरोजहीनहै॥ युगलअनन्यतत्यागुमदमनआठअंगजीतिकेअनंग
रटेनामअविछीनहै॥ १७३१॥ मीनकेतुहेतुश्रुतिसेतुतोडिवेकोप्रवलपरेतकालकेतरेतसमहै॥ ताकीप्रानप्रियाहियाहोशतोश
होमातरकारनीहजारहापसोपतविसमहै॥ कामिनीकेसंगहोयकरतप्रवेशनैनवैनमनमोहमनमथुवनछदमहै॥ युगलअनन्य
होशापारीधारीजानिवीभत्सवधविहारीकैपापापदमदमहै॥ १७३२॥ भामिनीभोगमेलेशासवाद्दनावाहींजन्मविगाउनाहै॥

॥२०१॥

दामिनीजोतिसमानरहेछिनताहितपावनागाडनाहै॥ भोगकेअंतमेहायहजारहैंहोतमहातमताडनाहै॥ ताहितेयुगमअनन्यतजो
मुरमोरविनोदनछाडनाहै॥७३३॥ वैरागअदागसजायप्यारकामआगकेरागनलपटनाहै॥ बैठिनामअनुरागकेबागअंदर
चितचंचलोनालनितउलटनाहै॥ प्रीतिलतागकोखूबमजबूतकरिकेविषयवासनासेसदाहटनाहै॥ भनेयुगमअनन्यअलमस्त
नामीजगतजालजवालसेछटनाहै॥७३४॥ वासनावृंदआमेदहूंमेंदसहुंदसुफैदविचारिलागो॥ आसनाकाहूकीमीतकरे
भरोभावभंडारसतसेवरागो॥ खासनाताहिएवीचगुनिकेनईरीतिआप्रीतिसेसजुगभागो॥ भनेयुगमअनन्यव्यवहारबोझासतन
बीच
शीशसेंडारिकेललनलागो॥७३५॥ अनन्यरीति॥ सीतारामसुजनसहायहापद्रायमीचमदमथनसुनामकोशलेशाको॥ रीता
चित्तवृत्तिलैलीनेकनकनजरस्यामसुंदरसुमीताहोतमहाप्रभुदरेशाको॥ जीताजिनवाजीसुखसाजीरसराजीतेरालाजीजिनजोहेचो
चित्तलायअवधेशाको॥ युगलअनन्यतीताअपरउपायसबकीताभवअमितनपायोसुखलेशाको॥७३६॥ लीताजिननाम
तिनकीताकोटिकल्पतपपायोविश्रामधामपरमप्रतीतिपन॥ नीतासुविनीतावृत्तिरूपसुधासिंधुमध्यजीताभागवतवेदधीताअवि
चलमन॥ भीताभवव्यालकालकहरवितीतानिजनेहमवनीतारसचाखिछकिरहैजन॥ युगलअनन्यपीताप्रीतिनामप्यालाफेर
अपरवितानन्दरखानकहूंएककन॥७३७॥

चोरचित्तवीचनामलोगअनुरागतचकोरकामश्यामदुखद्वंद्वअनायासते॥ लोटपरेलैहैनामरूपगुनधामप्रियपरमपियखचाषि
आसकानरास्ते॥ ओटपदपंकजपरागपटुगहेरहेहैपापतापश्यापदुष्टप्रेमवास्ते॥ युगलअनन्यमोटमोहनिजशीशधारेताको
है उतारिनामनवलप्रकाशते॥ ७७३८॥ संजमसमेतसद्भावसेसरिवनगिरिकंतहूंएकांतआसश्वासविसरायके॥ अंजनअंजाय
नैनसंतगुरुरजनित्तचित्तवृत्तिरोकेधारैंध्याननियरायके॥ भंजनविषादपरमादव्याधदुष्टनामसुद्धवरवागरागगुनगाहराय
के॥ युगलअनन्यऐसीरहसकृपालकोशलेशकृपाधीनवडेभागनविरायके॥ ७७३९॥ रामगुनगावैंध्यावैंरामकेचरित्रचारुचौगु
नचमकचाहचित्तवीचचायके॥ धाममेंअचलवाससेजवैजवीनतवभ्रिनसुररागतामेंमनपरचायके॥ ग्रामजनवासीअभिलासी
भवभासीसंगसपनेहूंकरैनहींसमतासमायके॥ युगलअनन्यधामखामसममानैमानसीतारामजूकीकृपासहजसजायके॥ ७७४०॥
चित्तविकारसैंकोपिसदामुदामानिअदाअवधेशसुध्यावै॥ हित्तअनूपमआपनोदंभकेवादवितर्कविकारवहावै॥ सूरतिधीर
कोरनिजदेशमेंआपभुलायस्वरूपसमावै॥ युगमअनन्यसुनामप्रतापतेवासनाजालजहानजलावै॥ ७७४१॥ मौनअलमस्त
एकलखत्तरहैनामीजननखत्तपारसाहीनाथवैठिकेअचाहचाहद॥ गौनगुनज्ञानअभिमानधूपपोनसमसमुझेहमैंशावसैंदेश
विनआहदाह॥

॥सीताराम॥

॥नामने०॥

रैनमितफिरेमनमतिमथ्यौरेनदिनहेरेचोरघोरवरजोरजोहिरीतिराह॥ युगलअनन्यहोनहिरसहवाससरौंकौंजौनजनव
उभागीमिलेनामनाह॥ १७४२॥ पावकप्रवेशवीचचारपुनिग्निमनसुक्षमविचारनिर्धारनामजापसैं॥ पावकसैंतेजराह
रूपतातेतमचरनासताकेहितथितिजानिएअलापसैं॥ क्रोधहूंक्रसानुऔवियोगहूंक्रसानुतिमिमंडलअनलहियेसमुझोअ
लापसैं॥ युगलअनन्यअथेअमलसमर्थतरअपरअनर्थव्यर्थभसोहेहाषहापसैं॥ १७४३॥ ब्रह्मशब्दआत्माकोवाचक
विचारोमनमतिचितअहंकारब्रह्मनिर्धारहै॥ ब्रह्मवपुहूंकोनामकोशमेप्रसिद्धअरुमायाहूकोब्रह्मबुधवेदमेविचारेहै
ऐसहीं अनेकवस्तुनामब्रह्ममानोपरसत्यब्रह्मरूपकोविलच्छनप्रकारहै॥ युगलअनन्यअवधेशानंदएकांतिसोईव्याप
कअचिंत्यब्रह्मस्वच्छसुखसारहै॥ १७४४॥ विष्णुमनुआदिप्रजापतिकालदिगजेतेप्रकृतिपसारसविकारव्यवहारहै
रनहींसेंहोतउद्भवथितिनास[illegible]षिआदिमध्यअंतमध्यजानोभवभारहै॥ विष्णुमहाविष्णुवासुदेवऔरजेत
जगजीवनउधारहेतईशअवतारहैं॥ युगलअनन्यरघुवीरधीरअंशासववूझेविनाविज्ञवैनवकतगवारहैं॥ १७४५
तेजरूपब्रह्मजौनयोगीजनतोनभक्तसूक्ष्मविवेकीनहींभूलहूकेमानहीं॥ तेजज्ञानविनातेजहोतनअचर्यरहतातेतोन
तेजकाकोस्वच्छरीतिआनही॥

परमपुरुषरामकारनरहितकार्यब्रह्मकैकौनीभांतिचिन्तआपनेपछानहीं ॥ युगलअनन्यभ्रमपरेसौतौकमतमाभजैनवांभरु
तसमब्रह्मवाहूठानहीं ॥ ७४६ ॥ सीतारामजूकोनखचेतजसोवहहूब्रह्मपूरनअखंडजोतिघनएकरसहै ॥ तौनहींकोअंसब्रह्मसोतजरूप
आगजगवीचरह्योव्यापिजाकेभएज्ञानीवसहै ॥ वाहीब्रह्महीकेअंसवहुतमुनीरामहाविष्णुविष्णुईशायोमेनकनीनरसहै ॥ युगल
अनन्यसर्वोपरपरेशअवधेशासविशेषप्रेमलजसहै ॥ ७४७ ॥ भजैजोनजाकोतौनपावैताकोधामहै ॥ औरकोउपासकनऔरकेसद
नजातवातेवहविहितविचारिएललामहै ॥ सीतारामसेवैतौनलेवश्रीअवधधामअचलमोकामहीनकालकर्मकामहै ॥ हूजिए
अनन्यमतिरैवेचिरतउतमनपूजिएहमेशाइष्टगुनगानग्रामहै ॥ युगलअनन्यतिलभरिहूंसंकपमेंभजैजोनजाकोतौनपावैतौनधाम
है ॥ ७४८ ॥ कहूंकहूंवेदसंहितापुरानशास्त्रसीतारामजूसवीचविष्णुआदिनामपाइए ॥ तौनसवनामअवधेशहीकेअर्थवलस
मुभिसचेतलेशशंकाहीनलाइए ॥ वैभवविशिष्टनानानामकोशलेशजूकोमधुरमिलितनामरहसमाहाइए ॥ युगलअनन्यउप
निषदमेंकह्योसवनामपरनाममेंसमाहितातेभाइए ॥ ७४९ ॥ परमप्रकाशमानप्रवलप्रतापीइनिनाथतीनोलोकमेंविदितनहीं
गोपहै ॥ ऐसेंहूपैदेखतउलूकतमनेहीनहीकहाहानहोतयामेभानुतौअलोपहै ॥ ऐसेहींपरमपरेशअवधेशगुनअमितअनंतविद्य
मानरंकरोपहै ॥

।। सीताराम ।।

युगलअनन्यतऊसमिनपरतमूढनैनहीननीचनपैभयोइवकोपहै।। १७५०।। कोउतीनतत्वकोउउभयकोउएकतत्वकहैंहैंजग
हगमाजिएककएकेसें।। निराकारकहैकोउकहतसकारसविशेषअविशेषवेदवारनिरभेकसें।। जोनअनुरागीवडभागीतौनसा
रमथिहोयकेविलगभजेइष्टदृढटेकसें।। युगलअनन्यशांतिरहिएएकांतरहिभ्रांतसवमतअंतजानियोविवेकसें।। १७५१।। राघवके
गुनगाएजवहुवारविवाहमेंकोनमजाहै।। व्यर्थकुमारगमेंभटकेनिजनामसनेहसुराहवजाहै।। छांडिसभीचतुराईचटाकेइना
मरटेदुखदूरअजाहै।। युगअनन्यसुनामविनाकुछओरवकेतिसहीकोसजाहै।। १७५२।। युगलवरनमनहरनकिनेहजुग
युगलकिशोररसकरसअविकाररहे।। कीधौंप्रीतिवाटिकाकेमालिकमधुरयुग्मसुगमअगामरसरहसउदारहै।। कीधौंलोकवेद
सेतुरसनअनन्यजनजीवनअधारजीवजानसुखसारहै।। युगलअनन्यकीधौंमैनरिपुनैनअंकीअनअनमोलमोहरंगरंग
दारहैं।। १७५३।। मुनिमनमानसकेमधुरमरालयुगकीधौंकंजकलितकरसिकमलिंदहैं।। कीधौंप्रेमपूरनपियूषकेसुधाअतिअ
परूपमोचसमनअमंदहैं।। कीधौंअनुरागीजनप्रीतिपरतीतिपटुअकथअचिंतमिविशेषरूपकंदहै।। युगलअनन्यमनमोह
नहमारेदृगतारेछविवारेसर्वोपरसुछंदहै।। १७५४।। प्रीतमजानकीजीवनजीकोसद्दासुसनेहीजोनाममेंराचे ।। ।।

।। नामने० ।।

साधनसिद्धसुनामकेअंतरबूझिविशेषतहांथिरमाचे॥ मानेनकाहूकीकोटकेहकोउऔरउपायनिहारिकेकांचे॥ युग्मअनन्य
अडोलहुवैनिजनाममेंफेरिकेनाचननांचे॥१७५५॥ आशकनामकहायकेदूसरीआसकैरैसोनराचमजानो॥ लासकसोवहु
नामउभयपहिसिमृदमलीनसुहीननसानो॥ वासककेविषसोंतिसकेगुन~~औगुन~~औगुनरूपहमेशप्रमानो॥ शासकयुग्मअन
न्यनैनेनिर्वासकचित्तमेंमोदसमानो॥१७५६॥ जानकीरशिकगुननामधामलीलारससरससुवोधअविरोधवेदभेदभल॥
आनज्ञानकुमतवयानदुखखानहानकारनपुरानमेंप्रमानसुविदितअल॥ प्रानतनमनधनईशअरपनछलहीनसोसनेहभ
क्तिअविरलभावथल॥ युगलअनन्यअनायासआसरामलीनविशदविरागपीनछीनमोहमानमल॥१७५७॥ ज्ञान
भक्तिविरतिविवेककेसंगरंगाकिएभवभंगअंगअंगउत्साहघन॥ तीनहूंसमेतकृपाकेतकेनिकेतवासअचलहेमशत्रैसए
करसनाहधन॥ जैसेगुनहीनजनजनमनसंभवतैतेसईविचारुचारुचारितप्रमोदवन॥ युगलअनन्यआमआसभवफास
जानिहीजिएजलायलापलगनललाममन॥१७५८॥ दिव्यज्ञानभूमिकाविचित्रमित्रकांतिसमसहसप्रकाशमानआठ
दृगोंहीलिए॥ सीतारामकारनरहितकमनीयकृपाबीजअविचलसोईप्रथमपैरविए॥ इतीसंतसरससुमतअनुरागतीजीसुनाम
श्रवनउत्साहचाहलेखिए॥

युगलअनन्यचौथीभूमिकाअजवबरअपरविरागरागरूपसोविशेषिए १७५९ पांचवींसुभूमिमांझभोरसांझरामरूंहरसनेहत
वरविरहवनीरहे खानपानमानविस्वभावनाविनानभानअपतनहानचित्तवृत्तिहूंतनीरहे झीनहूंतेझीनजोनवासनामलीन
तीनषष्ठींवसुंधरासुपायकेरखनीरहे जानकीविहारी~~विहारी~~विनानजरनआनकछुआगजगमगसव सांतवींसनीरहे १७
६० आठवींसुभूमिकापरात्परपायप्रियरामरामरूपनामअमलप्रकाशहै पांचभूतसंभूतवपुषविलीननितनिजपरिकरहिये
सुतनसुवासहै जोनतनजोतिकीनमहिमाबखानिशकेसारदगनेशशेषमहामोदरासहै युगलअनन्यभूमिआठहूंसुसा
रसुविदायकउदारनामरसरवासहै १७६१ जानकीरमनबालचमनभवनवीचजातजवजीवपीवप्रीतिप्रतिकाशोसें पं
हिं चमांहिदिव्यपरिकरदरसावैंताहिनानाभांतिलोकरंगरूपअनायासें अगनितकोशपरजायतनमतारतनत्यागतसुनित्यव१
पायरसरासमें युगलअनन्यसियास्वामिनीनजरनिजपायकेसजनसेवासानकूलप्यासमें १७६२ जेतीईशशक्तितेती
आवेअनायासपासचाहेजोनहात्यकेरेसंचनानिरोधहै सहजसुगंधसुरभितनित्यनेहरूपवपुषविचित्रकौनकहैवैनवायहै
एकरससीयवरसुरुचिसुसेवेंटवदूसरीहिरायरहीआपहीं~~आपही~~विरोधहै युगलअनन्यपलपावपछतावनाहिनवलउमंगउत्सा
हसुखसोधहै १७६३

मन
होतकहूंवाटिकाविहारमारहेरकुसुमकलितरूपलालनरिझावहीं॥ काहूसमैकेकिलमयूरमनमोहकरचातकचरित्रचारुरचतपिझा
वहीं॥ सुंदरसोहागसुचिसोगनवनारिवेषकोटिकलाकरनखप्रानरिझावहीं॥ युगलअनन्यछत्रचमरव्यजनधनुवानदाम
आभरनहाथकेभिंझावहीं॥८६४॥ नानाभांतिकीतिकरकांतकमनीयसेवसजतसनेहसानकूलऐसहीं॥ कोटिकोटिप्र
कृतिविनोदवृद्धसौमारहूकोपलपावपरमप्रमोदपायहैंसहीं॥ जानकीरमनमुखमाधुरीपियूषप्रियपीवतहेमशचिरससहितस
रसहीं॥ युगलअनन्यऐसोसुखसेवैशाहितहायहायकरतनमूढकूढवसहीं॥८६५॥ नाममहामुददायकरूपअनूपसमे
तसुधीशसम्हारे॥ आमअनेककुवासनाखोयकेसोयरहेसुखसैजसवारे॥ वामविलासविचारवहायकेतासअखंडसुजाप
सचारे॥ युगअनन्यअकामभएपरप्रीतमप्रीतिप्रभानहिधारे॥८६६॥ नामसजीवनिमनिमनोहरसोहरसवछसदासुख
रासी॥ पीवतप्रीतिप्रतीतिसमेतमिटेमहमीचकलंककीफांसी॥ पावैंप्रकाशउदासविनानितजायजहांजननित्य~~विलासी~~निवासी
युगअनन्यकेप्रानअधारउदारविहारस्वरूपसुभासी॥८६७॥ आरएनामकीवारप्रपंचपछोरअंजोरअथोरकोपारए॥
पारएप्रेमपियूषमयूषअदूषअभूषहेमधारहारए॥ हारएहाथलगेसोभलाविनानामसनेहसुचिन्नमलारए॥ लारएयुगअनन्य
विवेकविचारवजारकेवीचमेंआरए॥८६८॥

गाइएनामसुकीरतिकोटिकलाकरस्वच्छछहनछविछाइए॥छाइएश्रीसरजूतटमैंपननेमसजायउछाहवढाइए॥ढाइए
मकान २ प्रीतिप्रतीतिविहीनँअतापसिपावरध्याइए॥ध्याइएविस्वविकारविहारनहीअघऔगुनआनकोगाइए॥८७६९॥नामहीं
कीप्रतिभाअवितकेंप्रवेशकियोवपुभीतरवाहिर॥अंतःकरणकेद्वारैंविषयवहुभोगप्रकाशकिएसवबाहर॥इंद्रिनमाँहि
विभाससोईसमुझोनछिपोसवलोकमेंजाहर॥पुनअनन्यननामविनाकछुईशतदूजोउपाधिछुपाहर॥८७७०॥चंद
सूरपावकप्रकाशीजेतेजगवीचतेतेसवनामहिंकेआसरेप्रकाशगुन॥रफ़परव्रह्मतेजअमितहिनेशासमव्यापकअचर
चरवहैवेदविदसुन॥नामीनामएकताअखंडसंतशास्त्रसुचिसंवतसहैवरहजानिविषपवीजभुन॥पुगलअनन्य
नामनेहविनाकिएसठकोटिकोटिकललैलखरावीसहोशीशधुन॥८७७१॥सतचितआनंदस्वरूपनामएकरसज्ञानमोदविमलविनो
दकीअवधिवर॥जाकीसुद्धसन्नासावकाशमध्यकोटिलोकपवसनतविलशातविनशाततर॥चारमुखपंचमुखचारिभुजआदि
सुरपावैंनहींपारगावैंगुनविनाकालडर॥पुगलअनन्यसोईसर्वेशनामममजीवनअधारताकेविनासववातगर॥८७७२॥
आतमाअनन्दरूपसुद्धसतचितघनअमनअगुनजिपअमलअतर्कहै॥जराजन्ममरनाहिहीनतीनतनविनप्रत्यक्षप्रपंचपथपार
दिव्यअर्कहै॥

कोष्ठ ३

॥२६॥

श्रेसोसुधश्रातममकारमध्यलीनवाच्यवाचकसंबंधैसंसंभेतगतकर्कहे॥ पुगालश्रनन्येरेफसंगरसरंगारमैनामकेविहीनतुच्छ
उलेंसममर्कहैं॥ २७७३॥ रामनामहींतेश्राहिमध्यपरिनामरवास्तश्रामकोनश्रपरउपायसोंचविंतिए॥ लोकवेदरेवरकरमा
नीच
रगविहायवेमीनामश्रनुरागिनसुसंगरंगगिंतिए॥ काहूसेभेहर्षशोककीनिएनचित्तवीचैंसाधछोडितामैंभलीभांतिहिंतिए॥
पुगालश्रनन्यश्रौरसाधनाविहायहायसहितह्वैमेमकियाकैरोप्रभुविंतिए॥ २७७४॥ सीतारामधामनामसायसञ्जेशोकभल
श्रफलसकलफलदाउनविहीनलरवु॥ हायेकेमगानगुनगानयुतं ग तानजानजीवगारएपेरशासन्तापरमसवाहचरवु॥ काहूकी
नशंकराववरंकमैंसमत्वमतिश्ररतिश्रमितलोकभावनाविदूररवु॥ पुगालश्रनन्यशांतिकांतिचित्तवीचधारिवारिएसमूह
सहकृत्यमारतेतारपरवु॥ २७७५॥ कोटिनकलालेजीएकहानोनज्ञानकीजीवननामउच्चारसो॥ नाहककलेषकरंवसहो
वहुसाधनसाधिमनोतनजासो॥ वासनावंदवसायविषयानिजनामसनेहसुधामउजासो॥ पुगमश्रनन्यसुसंगतिपा
यप्रमोदविचित्रविनोदनिहासो॥ २७७६॥ नामउच्चारतेश्रालसश्रावै॥ घोरहूश्रमनकर्मकष्टविनश्रमश्रधर्मश्रसेषव
हावै॥ जोसुषदुर्लभसाधनकोटिकिएसुपतछहिएहासावै॥ पातकीपुंजनतेरेजेहिकेएकवारपुकारिपुरानमेगावै॥ पुगमश्रनन्य
महासुखसोंजेहिनामउचारतश्रालसश्रावै॥ २७७७॥

॥~~२०५~~॥ २०६

क

नामहींगाइएध्याइए नामहींपाइए नामहींसेसुखसारो ॥ छाइए नामहींकीछविअंतरमाइए नामहींकोजसप्यारो ॥ लाइए ला
गअरुहागसुनाममेंसंजाइए औरनहींव्याभिचारो ॥ युग्मअनन्यकेप्रानसेजीवनजानकीजीवननामउचारो ॥ ९७७८ ॥ संतसो
हावनवागमनोहरशोकसमेतसुनामुहपाई ॥ सांचीसुरीतिसनेमहिएहढधारनाधारियभूरिविहाई ॥ वाकिफकारमिलेबिनभे
दकोपायसकेनहिंकोटिउपाई ॥ युग्मअनन्यसियावरसेंनितयांचिएनामसनेहसगाई ॥ ९७७९ ॥ इच्छाओंअभिच्छापरइच्छा
तीनभांतितिनभोगवर्त्तमानवेदविदितवषानहै ॥ प्रथमसचाहइहाहरूपसुविकारोगहैनहिनसमीपविलसतदोषखानहै ॥ शेषमे
नयुगलअगलहैंभगलभानसमनकरनसंतनिकटप्रधानहै ॥ युगलअनन्यअस्वकरीवरसिंहपापरूपजीवकोमिलापमोहता
पहानहै ॥ ९७८० ॥ देहमहामलमूलउपाधिकोकारनकोटिकलेशप्रदायक ॥ ज्ञानविचारव्यवहारविगारतगारतयागसुशोभ
विधायक ॥ हैंधिकवारहीं~~वारहीं~~वारसहानहिंनीचसराहनेयोगअलायक ॥ युग्मअनन्यप्रपंचपलायकेहोयजहांजपिएर
घुनायक ॥ ९७८१ ॥ खेदविनोदस्वरूपसुनोमनमाहगनोभनोभावनानाना ॥ जानसरापसमानसरीरकोचितआयपटिके
मुह्माना ॥ कर्मअनेकप्रकारलिएसंगारंगकुरंसंचमरमाना ॥ युग्मअनन्यजहानकेओरसेंहीजिएपीछिवजायनिसाना ॥ ९७८२ ॥

जेतेजगजीवपीवसुपदविहीनहीनरंकरावछीनपीनआवतनिकटैहै॥ तेतेसबमारननिमित्तविनतमूशनेरहेतुरीतिप्रीतिवटबावत
विकटैहै॥ कामनाकषापकायकुटिलकलंककोशचोटआरटपटपलटायकनिपटैहैं॥ युगलअनन्यनामधामसतसंगसर्वसंतरु
खसुखछजमसमजिर्णलिपटहै॥ ७८३॥ सीतारामनामगुनश्रवनमननध्यौंनधारनानिर्विकल्पचित्तकीजिएअखंडहीं॥ नाह
कहींजातघातबातउत्पातहिसिप्रविसिप्रपंचपींचपावतसुरंडहीं॥ देखिएदुरुस्तहिलहायमदपालहगहारूनरराजदुख
दमनप्रचंडहीं॥ युगलअनन्यनामरूपरतिहीनहायहोतकहाकिएकोटिसाधनउदंडहीं॥ ७८४॥ नामरटलायपगनं
दमैंसमायेंगे॥ कठिनकलेकवंकविषमविषादवलीविवसविहालहेयआपनरहायगें॥ सदासावधानसुखखानकीकृपाल
लातभूलेहैंकेकभीरोफरवतरानखायेंगे॥ अचलअडोलमितरीहिहैं। निकेतनिजेमयफेरबीचपारआवेंगेनजांयगे॥ युगलअ
नन्यहृदप्रवलप्रतीतिउरनामरटलायपरानंदमैंसमायेगे॥ ७८५॥ रामनामतारकतमामआंखासखलखलकखराव
आवहीननकोअनायास॥ हामबामचश्माचटायेचखवीचजैनतिनहूंकोपारकरकरूनानिधानभास॥ गनामगुनगम
नगलानिविसरायआसुआससुखदैननामकीजिएउचारिस्वास॥ युगलअनन्यछामखामनहींनेकोटेकविमलविवेकवर्द्धमान
हायरंगराम॥ ८६॥

प्रक्ति
पांचौरससिद्धिसारनामअभिरामअर्थसरससमर्थकेविचारतेविचित्रतार॥ क्रीडाअनुगामीअनुरक्तिशक्तिसब[illegible]विम
लविहारमांभमगानपवित्रप्यार॥ बूझेबिनाअर्थवारबीचविकलपबहुसाधनसमेतपंचरखेनानाखेदखार॥ युगलअनन्य
मत्तह्वैजियसुनाममदपीवतहमेशावहवाररप्रपंचचार॥१७२७॥ जीनजीहजप्यानामअभिरामअष्टजामतिनहींनकाम
रह्योचामअरुदामसें॥ ममतामलीनमतिलाभदुखधामतजिपायोविश्रामविसवासनाविरामसें॥ आगेपाजियजोतिप्रीतिनिखि
लनिसोततिमगुनगानगोतगपागरवगुलामसें॥ युगलअनन्यनामरसनाअधारकरिपायोप्रियरूपअनुरागवागवामसें॥१७२८॥ व्या
व्यि सीयपीयसहजस्वरूपवरनेशविविविशदविहारबोधकारनकृपालहैं॥ अमलअमोलगुनअमितअडोलदिव्यभव्यरसएक
सुखदायकदयालहैं॥ सुघ्रताविचित्रभांतिवारकप्रतच्छस्वच्छनामसियरामहियहरनकुशालहैं॥ युगलअनन्यतातोत
नहींसेनेहकरिअधिकअमंदमोदमानसनिहालहैं॥१७२९॥ मेरेजपतपध्यानधारनासमाधिज्ञाननामहीमहेशनितयेऔ
रनाभरोशहै॥ सबैविधिकायपरकलंककरतूतिममममनवचकरमकरवायकलिकोशहै॥ प्रबलसिकोहहारमोहमदमाररव
लदलजलथलपूरिरह्योअतिरोशहै॥ युगलअनन्यतउरहतअशंकअतिरामपदपंकजकोपायपायपोशहै॥१७३०॥

॥२०८॥

नाहकोनिषेधविधिविविधिविकारमधिंवेयतविचारविनुजपतपनामको॥ ऊंचोचषकीरेनिहारत्तनयनभरिश्रंतकगहेगोतव
कोनेतेरेकामको॥ साधनसमस्तसुरसकलसहायतवकारनशकीहिंकोऊरेखिद्धतहामको॥ पुगलअनन्यतहांकेवलरूपा
लनामरहसकोविचारमनमांभरवामश्रामको॥ १७२१॥ भूतकीमिठाईजैसेवंध्यासुतसपनेमेंभईपरसूतितांकीवंकर वधाईहै
जागेसनलेयाहूंहरषउपजतेरवहस्वातिरलहतनरनारीदुचिताईहै॥ जानकीजीवनजूकेनामविनाऐसेसवकेवलकथन
मात्रमोहनलषाईहै॥ पुगलअनन्यतातेत्यागिकेसकलमतसहजसनेहसीयस्याममेंलगाईहै॥ १७२२॥ राघवेशनामज
पिजपजूटधारीशिवसजतसंहारगुनश्रखिलजहानको॥ रचतविरंचिपरपंचवनामवलधारिहियमधिवरवरनसुध्यानको
रमानाथपालतसमस्तविस्वश्रासुतेजलेशपायगायगुनकरुनानिधानको॥ पुगलअनन्यतीनिःस्वरप्रभावजाहिकरना
तेहोतश्रोरजीवनगुमानको॥ १७२३॥ मोहविनोदप्रमोदमई चितशक्तिसुजीवस्वरूपसहीहै॥ नित्यअखंडअनंतगुनाक
रलालतहेचितचाहवहीहै॥ आत्मासुद्धसरीरनहींपुगहेहेउएकउपाधिएहीहै॥ पुममअनन्यसुभेदविचारविहीनव
केवरवृत्तिवहीहै॥ १७२४॥ तीनहूंदेहविकल्पविनानिजश्रातममजीवविचारकिए॥ सतसारउदारहिएगुनिकैप्रियप्रेमपयूषप्रधान
पि२॥

॥२०८॥

॥सीताराम॥

॥नामने०॥

जानकीजीवनअंसप्रसंससुभोगअहंसउछाहलिए॥ युगमअनन्यतहीयसहमतवादविवादवहायहिए॥ १७२५॥ अचल
अनादिअवितर्कअविनासीअजअचलअभंगएकरसहींअगाधहै॥ अकलअनीहअविकारव्यवहारगतअकलअमाल
तोलरहितअबाधहै॥ अमलअनवअकलंकअविशंकअलअखिलप्रपंचपरपारनिरूपाधहै॥ युगलअनन्यअवधेशाम
हाराजअंसप्रचुरप्रकाशसैंसमेतसुखसाधहै॥ १७२६॥ हैसुअजायवरूपअनूपअरूपविवेकविहीनवतावै॥ जानकीनाहसु
चाहकृपागुरसांचेसुसंतसैंभेदहीपावै॥ तीनहूँतेनितन्यारोनिरंतरपायसमेअवधेशरिझावै॥ युगमअनन्यसियावरकोकल
कापकलेशविहीनकहावै॥ १७२७॥ कासँकरावदवादविवादविषादहुंदिशिमेउमडेहै॥ मानमहीपकोराजअनाहतसा
तहँदीपसमीपखडेहैं॥ आपनेआपनेशानगुमानमेंजीवजहांकेतहांजकडेहैं॥ युगमअनन्यविचारिहिएसियरामसुनाम
उचारिअडेहैं॥ १७२८॥ स्वादनकोसाररंगदारगुलजारगुनअगुनअधारपारावारप्रेमप्यारको॥ आदनकोआदनित्य
नादनकोनादगुनावादनकोमूलअनकूलदस्कदारको॥ पादनकोपादसुखशादनकोशादपरमादनविखादनको
दनअजारको॥ युगलअनन्यप्रतिपादनमेंप्रतिपाद्यगिरिजभास्वामीनिजनामसरकारको॥ १७२९॥ ॥सीतारामोजयति॥॥

८

॥श्रीराम॥

॥२०५॥

जनम जन्मात योग जाग व्रत त्याग तप कियो परेमे शासेव सावधान जौन जन ॥ तिनहीं के वइनो विचित्र विधि वीच वर वरन यु
गल वरने श विलसत बन ॥ प्रगट पुरान पटु परम प्रमान प घस घसु खसु गनसज न वितरन छन ॥ युगल अनन्य अवि
लोकनी करी कसत नाम मोइ धाम सत वचन विनोद वन ॥१८००॥ पंचासत कोटि छिति अमल अहागवर कोइ विचि
त्र युत रचना कि चारिए ॥ सातहूं समुंइ अवगाह विनु परिमान मसीमन मोहन चमत्कृत धारिए ॥ अखिल वनास्पति वि
विधि सुरंग रंग कलम अजब खूब गुन निधि सारिए ॥ युगल अनन्य गिरा गान प लिखत तऊ गुरु संत राम गुन अक
थ सम्हारिए ॥१८०१॥ तुलसी न काठ कौ विवेक नाम राम मध्यौ विविधिहूं निषध से रहित रहत शो है ॥ जैसे पारजार वे नि
मित्त नाद हेम हार सहस विचार भे हरिं वकने लखो है ॥ जैसे तुला कन न कपरवान का पर्म तिकाको तोलने के वीच सम
ताई न विशेश है ॥ युगल अनन्य निमि भोजन सुपात्र वीच छुधा के निवारने मैं रंचना सुवशो है ॥१८०२॥ वेचक विवेक ॥२०८॥
वल वस्तु वित्तहीन हीन छीन लीन विषपीन नाम गुन जानते ॥ यंत्र मंत्र तोटकादि साधन समूह रचि पचि चित्र अन्न जीव
कृत्य कृत्यता प्रमानते ॥ मगन मन नीरसों भय मगन हमेशा है यौं विविधि विधि विकार ताते करत वखानते ॥ युगल अनन्य सर्वे

॥सीताराम॥

स्वरूपधाननामअगुनअनामगुनधामनपछानते॥१२०३॥कैसेहूंकहपिरामनाममहाराजमनिएकवारतोरवि
नानहकेउचारते॥ प्रागपुरानवीचनानाइतिहासजमनाहिदुखरासिपलअंतरउचारते॥ चारोयुगतीनिकाल
मायायुतजीवजालनामहीनघालभलीभांतिनउतारते॥ युगलअनन्यहनुमतशिवशेशमुनिनायकसमूहना
महिंपैआपुवारते॥१२०४॥ मंत्रसिरताजसुखसाजसामराजपदहेतअविलंबमूढमरमनजानहीं॥ चेतनस्वरूप
धपछोंहसैंरहितसोउनामकेउचारनअधीनप्रतिभानही॥ करुनानिधानजीवज्ञानप्रानहूंकोप्रानअविचलत्रा
नकरसुबुधपछानहीं॥ युगलअनन्यशिवसनकसनंदनकोनामहींअधारतेउमूरुषनमानहीं॥१२०५॥भोग
कोचाहमिलोमनतेजनतेबहुमानछ्योसवभांती॥ देषतहींसवमीतगएपरलोकजोप्रानसमानसज्ञाती॥ तामस
तमातमनेनमैधीरजवारिउठेगहिछाती॥ एतेहूंपैमरनोअपनोसुनिकानकलंकितकायसकाती॥१२०६॥
हायउपायउपाधिविनापरमानरज्योंविधिभोजनव्याला॥ तैसेहींअंकुरभांतिअनेककीकेपापहेतसुभूमिविसाला॥
संसृतिसिंधुउलंघनयोगसशोगसुमानवजीविकाडाला॥ ढूंढतहींजेहिकेगुनज्ञाननसवसेवासनावेहविहाला॥

॥नामने०॥

युगलअनन्यकहमूरखबड़ी
जेहिकारणजीवकाहालनिराला

५२

नी

१२०७॥ श्रीसियरामस्वरूपअनूपमध्यायोनहींभवनासनहेत॥ स्वर्गदुआरकपाटकोपाटनयोगपनधर्मकिएजसकेत
तैसेहीं हौं विषयारससाइलस्योनयथारथभोगउपेत॥ प्रेमअनन्यभयोजननीवनजोवनछुट्कुठारसचेत॥ १२०८॥
जीवनजानचलोनितहीं प्रीतिसूरउरपअरअस्तभएते॥ जानतमदनकालस्वरूपभयोजगधंधमेलीनअचेत। परवतनी
चअरामरनाहिकत्रासतउनहिहायसमेत॥ प्रेमअनन्यपियोमहिरामहमोहमईभयोवावरोप्रेत॥ १२०९॥ वालकहीन
अहीननिचोलसुजीरनखींचतहैजेहिवामा॥ वारहींवारपुकारतभूषतेअन्नविनानहीलेतअरामा। गेहनीहीछिपेरवि
सुचाहकेभंगतेभीतिविहारविरामा॥ पावतवालनहींमुखवैनअचैनसमेनपरोमतिरवामा॥ १२१०॥ ऐसोअभागलिया॥
जनकोजेहिपटकेहतनिकतनिहार॥ दोषअतोषदवानलकेनितदाहसहेगहेगेहअसार॥ जगजालमेजायकेमूढफ
स्योसियरामविनातेहिकोनउबार॥ प्रेमअनन्यविचारसमेतसहेतसहायप्रभुभावसम्हार॥ १२११॥ पंचमहापातकप्रपंच
रंचअरंचगतप्रवलप्रतापपायप्रेमपननासनो॥ इष्टअकिलिष्टमिष्टशिष्टसेवनीयसुचिसोरभसरोजपदवदरूपभास
नो॥ ऐसेअधमेशपरमेशशासेविमुखनरनामकेशरनलवलहोतप्रतिकाशनो॥ युगलअनन्यलोककलितकदंवकरवारन
ल्प
उनामअभिरामसतसासनो॥ १२॥

॥ सीताराम ॥

पावनपुनीतपावनेयपरमेशपइपरमप्रकाशमानकियोनिजभाववस॥ चाहैंचित्तचारुवीचजाकोताकोदत्तपलहो
तनविलंबअविलंबनामएकारस॥ रूपगुनग्रामअभिरामदिव्यभावनीयसहजस्वरूपअनुरागआनुभावलस॥ युगल
अनन्यअवितर्कअर्ककोटिनामशोकसतसाजिएशांततसानुकूलरस॥ १२३॥ नामउदारसिरोमनिकोजसगाइएपा
इएप्रेमपदारथ॥ औरनहींभटकोकत्तहूँसबदाईसमायरह्योनिजस्वारथ॥ पांचहूँआचविहायभलीविधिनाममहानि
धिप्रीतिपयारथ॥ युगमअनन्यसुनामजेपसबभांतिभिलेमुदमयपरमारथ॥ १२४॥ जानकीजीवननामबडाईकेहेक
विकोनसुमोनरहेभल॥ कोटिनसारदशोषधकेशिववाकजकेछकेनामसुधापल॥ छोडिसभीवकवादजहानकोना
मरटाकरत्यागुनहींपल॥ युगमअनन्यसुभावभएविनाकेसेहूंतेहिमिलेनकहूंकल॥ १२५॥ नाममहाराजमनमालि
कमोकाममुदमोदप्रदपातकप्रपंचप्रविलायकर॥ आरतअनर्थव्यर्थकलितकदर्पहरसहजसमर्थनामनेहनि
धिप्यारपर॥ हजिरहमेशापेशअैसबसनेशवलिपूजिएप्रवीनपदधूरिजएविकारगर॥ युगलअनन्यछनछांडेकुस
लातकितरूतउतनरतरसेदरसातिरखरावखर॥ १२६॥ प्रीतमप्रेमपयोधिप्रवेशविशेषकियोजनजोननिरालस॥ ॥

॥ नामने० ॥

पायो नितान्त

॥श्रीराम॥ नीतंतेनरहस्यसुखाकरमोऽमहामनिमूलप्रभालश॥ खाहिसखआलजवालजलायसुनामअखंडजेपायुतलालस॥ धामअन
ग्रशंक न्यमुंधीधापनेहूंकेरेनहिसंगतिवालस॥१८१७॥ जानकीरमनचखचभनचरित्रचारुचाहिरुचलायचित्तचोगनोचवावेंस
॥२११॥ नानारंगरंगहिलकरनकुसुमकमनीयकलाकोशहोशहरनसुभायसें॥ लोनीलोनीलतालहलहीआसपासहिंवरमकौंरस रहीहै रम
हावभावेंस॥ युगलअननयवागविमलविरागरागवीजतजवीजेकेकिएपेमोजन्याबेसें॥१८१८॥ खिरतोअनंतवेरवरतसुसंत
तोमभनोराजगाजेसेसहसगनजासतौ॥ सुभगसेपरहिलसाहस्याहहाहरूपकरतअरेररहीलेतरंगरासतौ॥ महामोहसिंधुउ
त्साहकोसुखायरेतेरतेकेसमानमनहोतनेहनासती॥ युगलअननअआसपासेमप्रकाशरासकेसेहूंविचारकेकिएहूंनविभा
सती॥१८१९॥ जेतेलोकवेदवीचनीचकीचमीचरूपतेतमनोराजकेगुलामकीनसरहे॥ केतेकेतसुभगसमेतप्रतकोनिकेत ॥२११॥
पावपलमांभमेंकरायेहतरवरहे॥ रेतकंठअमलअकुंठगनवानेतगविविधिविकारवेगधारतअडरहे॥ युगलअननअनामस
वलसरणआसमुहद्धउपास्यधामसंतत्रानकरेहैं॥१८२०॥ रामनामसुधासारसिंधुसुखधामदीनबंधुकेकहायपेफिरिहाय
अभ्दुततर॥ कोसेकहेंगायनहींवहतसोहायवातजोतरीतिअधिकअनीतअनुगतवर॥ कीजिसनिहालहालललालश्रीनपेशा
मनिहोतहोवेहालपायमालपनरतंऽर॥

पुगालअनन्यकेअचारदिलहारनामएकरसआछेजामभीनिएसुरतपर॥१८२१॥जानकीरसिककेकहाएविनाहाए
हेयहिरसिहरायेवानहेरिएलोआवेम॥कोटनकलेशकायकरतपरतप्रानमरतजरमवीत्योकलपकुवावैम॥सेएसवभांति
हेवहनवमाहिवनराहिएहअसहसहनपापलोयतनतावेम॥पुगलअनन्यसीतारामजूकेधोमनाभमजनविहीनवातको
नहेजोआवेम॥१८२२॥विधवाविकारभरीकन्यकाविलासविनअंतरमलीनव्यभिचारिनीविचारिए॥चारिहूंकीसंगति
विशेषहानहेमुहेरिपतिव्रतधर्मसमर्मसुदृगनिहारिए॥जानकीरमननेहहीनहीनजीवजोनतोनकलिकालकूटधूलजल
धारिए॥पुगलअनन्यधामआनंदअशेषसुद्धसकलसमिर्धसिद्धमोहपियप्यारिए॥१८२३॥सीतारामनामकेभजनमें
मगनजनजजनजमातकियाकछुहूंनशंकेहे॥चाख्योजोनपरमपियूषताकोरसकोनरख्योफरशेषसोउकहेनअंतकेहे
पापोजेहिचारिचिंतामनीअनमोलदामकलितकलोलवाकीकोनधनरंकेहे॥पुगलअनन्यवरवोधसोधछायोजवतवेफो
फरवटकानरहतकुपंकेहे॥१८२४॥वालकनवीचवैशवकुनविनापावपुवालिसविवेकवनवसेपानहीनकेहे॥पालकनसंग
रंगरचहूंनरच्योरतिरहितहेमअंगलोयसुधसोनएकेरे॥कालछनएनभालभासतनमोहिजाहिदृगकीजिएकृपालनामेटेकेरे॥

मूढ

युगलअनन्यमालधनसर्वेशरिगआलिविवसविसरावतअनेकरे ॥१८२५॥ रामरसायनचायनसंगसुपानकिएकुलक्लेशविनाशे ॥ मीचमहामद्दूरिहुरेमनमांझफुरेवरबोधविलासें चांहनीचोकउछाहअजापवआकस्मातप्रवीनप्रकाशे ॥ युगमअनन्यकहाचितकेसहुंबागसहागनेकनिकासे ॥१८२६॥ भलीओपरीहिलहुरीजवतकरहीतवतलफे प्रेमपहकहांपरसे ॥ ललीअलाललछविजालखुशख्यालमेंफसैंकवहींनहिरंगहरसे ॥ छलीछनभंगवपुमलिनसंगीजितेतितसमग्राहछिनरैनागरसे ॥ भनैयुगमअनन्यविननामकरुनाकहोकौनविधिजीयवखूंखरसे ॥१८२७॥ खूवतहकीककरिदेखिहमनेलियाजगतजंजालखुदख्यालवांधा ॥ संतसियकंतरसवंतपदविमुखनितविविधिदुखवासनाथिरकांधा ॥ भावनाभजनभगवंतजसजनतजिवथावकवादिवहुवकतआंधा ॥ भनैयुगमअनन्यवयाकामसंसारसेंआपनेरषसंवंधसाधा ॥१८२८॥ प्रेमपियूषअदूषननेहरघुवंशविभूषनरूपरमावै ॥ पूषनकोटिप्रभाशकेरतनरूषनरूषनजोकजमावै ॥ उषनमोहमयूषनकीरुचिचित्ततनीकहींभांतिशमावै ॥ युगमअनन्यअसषनसूषनदहविकारविशेषकमावै ॥१८२९॥ आजसेभलीविधिजीतिहौंनीरकोजानकीनाहनिजनामजपिके ॥ खानआपानइव

॥सीताराम॥

खानव्यवधानकरछोडिहौंनामतपतीव्रतापिके॥ किसीकेसाथनिजगाथकहिहौंनहींकौनवाकिपरावस्थपाव
पिके॥ मैंनेयुगमचरननमनजीजानकोवारिहौंजानकीनाथपरछोहहछपिके॥ १८३०॥ दीजिएहिलायपरहीनवंधु
सिंधुसुखचंद्रधतममेंभ्रमनमोह्योहोयमूढमम॥ कीजिएकृपालजूसहायपरापेहेरिहियाहिरसहिसाववहवाःएव
जायवम॥ लीजिएलगायलोनेसोहेनसुधेराशरसगनसमीपदीपदिवारसापसम॥ युगलचरननमामाथेमीजि
एमुकंजकरवारवारवागकरवोलियउहारतम॥ १८३१॥ काहकोकदारछोरजोरपनभोरसांभधारिएअनाथना
थअनाथकहवायके॥ चाहेकोचकोचकोरचारुचंदचितचामीकरउचितचातकनपावकवहवायके॥ हौंतौअ
धरूपकूपमोहमेंभपरयोपरवावराकहांवोआसहूजोरहवायके॥ युगलचरननमगनअगनविवेकउरकिरएकेअ
पनीनसावोंगहवायके॥ १८३२॥ ऐसोकौननरजाकेलोभछोभगोभनाहिहोतहेउहितहायदापकेविचारिए
कोटिनमेंएककोउविमलविवेकटेकभाजनकृपालकृपानेननिनिहारिए॥ पापनामरससअसचअरसहिरायरहे
चहेनतिलोकशोकसमभिसमझारिए॥ युगलचरननपसतसंयमेंसलाहमाहशाहनविशाषरेरखखोचतसुधारिए॥ १८३३॥

॥नामने॥

जानकीरमननामशमनसमूलध्यामवामअभिरामकामपूरननसंकहै॥सुधासमसुजसपुरानबखानविनकरतरेतविषविष
मकलंकहै॥हायमनमगनठगनकोमगनछोडितोडितमतीननतासअमलमपंकहै॥ युगलअननअगगन्यधन्यसोईसंतसहासाव
धानसमसमेरावरंकहै॥१८३४॥सरससुहमउपेहसैहनवालेसंतसाजनसेवायऔरकोनजगहसरो॥वरससहससारधानतपपुं
जप्रियपरपरिपाकसाधुसंगतिअनुसरो॥मानमतलवमहमानसमलीननरजानिहैंनभेदवेदविमलअथसरो॥युगलअनन्य
न्यअन्यआसअभिलासत्रासससमननिवासचितचतुधमधूसरो॥१८३५॥अवधपुरेशनामप्रेमपरिमलधामसोईसुखसारजियजा
निरजनूरेहै॥ चहूंवोरसोरसिरमोरछ्वनछोरविनचोरकेलकानभानआनदागदूरहै॥जहांतककारनकेदवकोपथ्यानतहांतलक
अनूपनामनवनूरहै॥युगलअनन्यमहामोदसरसातवोधवनवरसातरामेरामरंगासरहै॥१८३६॥कोटिकेलकसमानजहान
वितानविचारतनामसुजापी॥चोरचसित्रविचित्रधुम्योचितचाहअथाहनिगाहअनापी॥ओरअशेशविलापविलासकचित्ति
विहारविषेथिरथापी॥युगलअननअछोहसानिजैनेननिशामहवूवमिलापी॥१८३७॥रामरसचाखिएनभाषिएविकारवैन
अैनअभिलाखिएअनपरपच्यारपन॥कामकसनाखिएनराखिएजहरजोऽभिरामआसलाषिनमाखिएसुसतनुसन॥ ॥ ॥ ॥

॥सीताराम॥

सुधासतस्वादसंतसंगरसरंगवीचअंगअंगआपनोभिंजायएविहायवन॥ युगलअनन्यनामआठहूपहररटलाइएअखंड
तवपावैसतचितघन॥१८३८॥ आसपअचाहचहेनकछुचनधामगलामसोवृझेमलूका॥ नामपरत्वप्रकाशिकाहैहैहै
बहीरहकलंककलूका॥ अंजननैननमेंलायभलीविधिस्वच्छकरैतमतोमउलूका॥ युगलअनन्यअसंकसदाहमभीतनहीं
गरुवाकनपूका॥१८३९॥ नाहकभर्मभेदशाकुदशामभुलिरहेजगजीवदुखारी॥ गांहककोईमिलेनकहीं अछ्छआघखरीदकरै
तमतारी॥ वाहकवैलसैंलादिफिरैविषयांठरीज्ञानविनाव्यभिचारी॥ युगलअनन्यननामरटैजोहितदुखदोषकेभ्रमभारी॥१८४०॥
दशनामअपराधतजेभजेनामको॥ प्रथमअहौछसंतनिंदनोनिहारिनैनगुरुदेवमांहिमतिमानुषनिकामको॥ श्रुतिसद्ग्रंथमेकु
तर्कसिवदेवषपुनिअर्थवादप्रीतिविनाउपदेशदामको॥ नामवलपापपरितापमेंमगनतिमिसुनिगुनिनाममोदहीनदुखधामको॥
युगलअनन्यनामसमगनैऔरकर्मदशानामअपराधतजेभजेनामको॥१८४१॥ रटैआपनामउपदेशतवआनको॥ आपआठजाम
वकवादमेंमगनछनचिंतनामअचलछटांमूरुषअजानको॥ पूसेंकहतलगीसमरतिसमाधिनितकहोंकोनमानेवतकहीवगध्यान
को॥ नैनवैनद्वारहोयपरखपरतसुखसोंचमकैटतिलनहींवीचव्यवधानको॥ युगलअनन्यस्वच्छसंतनकीरीतिदहरटैआपनामउ
पदेशतवआनको॥१८४२॥

॥नामने०॥

नामकेमध्यरमायसुमानसजापजहानवितानविसासो॥ कामकेकर्मकोकाटिभलीविधिवामविलासविनासविसासो॥ चांम
केहैंहसैनेहनिवाहिकेआपनोरूपअनूपनिहारयो॥ युग्मअनन्यसुसौंमनेहाजिरहोपविकारविहासो॥१८४३॥ आइएनामकेतत
फसहासरसाइएशोकसुधावरसाई॥ साईएसाजसुराजसभीसुर्धियसन्तनसाथसनेहसोलाइए॥ लाइएचित्तसुवृत्तिवटोरिके
आपनेधाममेंरोपनखाइए॥ खाइएख्यालखरावखुदीफिरिमोजसमेतनिकेतमेआइए॥१८४४॥ नामगुनगाइएविकाइएसुनामके
रनामरसमोंभरुमननितहींरमाइए॥ नामअनुरागिनसुसंगसुचिसागरमेंहोयकेमगनतनमनअरुवाइए॥ नामप्रेमप्यासचित्तचा
हिएअखंडनिजनेहनिवाहिएविवाहवहराइए॥ युगलअनन्यनामसरसनेहसाजसाजिएसहैवसानकूलअलसाइए॥१८४५॥
नाममहाराजध्यानधारिएसुधीपवीचमीचेसरहितापइपावनसमाइए॥ धामअभिरामसेनजानिएअलगहेशभाइएसुवेनसं
तखेहकतखोइए॥ आमअभिलासहुरपरासकेनजीकजनिधाइएकहापिछापिछेलछविछाइए॥ युगलअनन्यपंथचालिए
सचेतचित्तसुवृत्तिवटोरिकेपरेखरिझाइए॥१८४६॥ सीतारामअमलअनूपअभिरामगुनअगुनअधारजाहिरचेतनहेतसें
कोनकहिकोजिएनिरूपननिषेधविधिसमतानताकोहैनयोगपपप्रेतसें॥ कोउलोकमेंभूताकोमाननमिलतमीतखलनकरम
मोहविकेसठसनसें॥

युगलअनन्यताकीमतिगतिरतिसबमेरेमतबीचकोचमीचनीचेरतसैं ॥ १२४७ ॥ जानकीरसिकजूकीकीरतिकलंकहीन
सुनतश्रवनसुखजाकेनहींपारहे ॥ औरवाततातभ्रातसमसीयनाथगाथसमुझलोमलीनमनवालिसविचारहे ॥ शेशसुकमु
निशिवजीवनसुजसजानिमानिएकपलनहींपागतपेआरहे ॥ युगलअनन्यकलवारडोमचर्मकारकुडीमारकातिलकुविंदहो
नहारहे ॥ १२४८ ॥ सीतावरसुगुनसनेहसेंविमुखसठजानोनहींजातकैसेजीवतअधमहे ॥ लोहकारभाटिधौंकनीसमानताको
स्वांसबलतस्वेतपरतासेनहींकामहे ॥ जेतोकुछसुकृतसमाजेतेतोहानहेतुखेददेनहारसोंचोमानोहरहमेहे ॥ युगलअनन्य
अनुरागगुननामबिनसंतमतमांझनरखरकीपसमेहे ॥ १२४९ ॥ रामनामधुनिसुनिधारिएधुरीनधुधवलधरेशपदपाव
नप्रबेशाकर ॥ राकापतिसहससमूहसेवितादिमासभाशाकप्रकाशकस्वरूपपरमेशपर ॥ रैनदिनएकरससुखबसहबसहरग
रगनगारतकरतसविशेषतर ॥ युगलअनन्यअनुरागअनुभवहेतुसेतुभवसिंधुसबभांतिनविलाशावर ॥ १२५० ॥ तत्वसार
सुखसारविशदविहारसारहनुमतहारीहियप्यारप्रीतिप्रानको ॥ रसिकउदारअभिसारगुलजारतारतगुनअगारपारसुचीसुर
सानको ॥ अभिमतप्रदसदसरससोहागरागराजतअदागदागदाहतअमानको ॥ कारनकरनकृत्यकारककृतज्ञवरवरनेवि
चित्रमित्रप्रेमिनप्रधानको ॥ १२५१ ॥

वारवारसतवारवाहीनरपरनितकरतधिकारसंतसोंचेसरकारते॥ जाकेउरअपुरविहायहायजायजगपुरमतिरीतिगतिभयोन
उद्धारते॥ सहजसुभायदुखदारिदहवायुहेतकाठिननिकेतप्रेतताउतअजारते॥ युगलअनन्यनामनेहनिजदिव्यगनगनेसे
समेतसोईमुक्तिहैविकारते॥ १८५२॥ ईशनकोईशरामनामसवशीशवसेलसेजीवअंतमुपरातमकेवीचमे॥ रेफअरविंदतेवि
हीनकोउसंत्रमीतसुनियतनाहीलोकअखिलअकीचमें॥ याहीमध्यमालिकमलुकमसहसवकहतप्रतछसंतजानिएन
खींचमें॥ युगलअनन्यरामनामजपोप्रेमयुतकाहूभांतिपडेगेनजायमुखमीचमें॥ १८५३॥ संतशास्त्रसंगीतापुरानतंत्रमंत्रमें
श्रीरामनामहींप्रधानप्रगटसुगूढहै॥ जोगीवनसाधनसमूहमेंपचतसठसहजसुभायनहिनाममेंअरूढहै॥ शिवसनकादिक
समाधिधरिजपैंजाहिताहीकोपरत्वसुनिमानतनमूढहैं॥ युगलअनन्यदुर्लभवपुपायनरविषयाविवसखोयोवेलवूढहै॥
१८५४॥ जाहिहेरकोरएककठिनमिलननतोहिताही~~कों~~रामनामकारकसुजानको॥ जहांजमजालिमजमाततनलमाततहां
केवलकृपालनामपालेतवप्रानको॥ आलसअभागवसजैसोनामसर्वसरटैननीचपचिमरेखानपानको॥ युगलअनन्यनेहकीअ
एसुनामसंगरैनदिनरंगनयोवाढिहैविधानको॥ १८५५॥ लौंडीकोगुलामजाको~~गुलामजाको~~कोडीप्रानप्यारीहै॥ ॥॥ ॥

वैश्र
५

पत्र

॥सीताराम॥

ताहीकीखराबीहैजोलोकमेंनअशोकनाहिआहिरेनत्रैनचैनचित्तहूंनधारीहै॥भक्तिभावचावमेंअभावपलपावेप्रेमनेमछै
महोतनाहिनेहव्यभिचारीहै॥संतरसवंतसतगुरुसेंसुप्रीतिदूरिपूरिरहीहिएमेंकुवासनाकतारीहै॥युगलअनन्यताकीकथनी
समूहमूठलौंडीकोगुलामजाकोकौडीप्रानप्यारीहै॥१८५६॥कौडीकेसनेहीकौडीवालकहवावैंसठहठवसवेषसाधुपनकोगु
मानहै॥चौंडीवालबातनिजताकेनिमरूपनिंद्यकलीकालकीचबीचबूडेमनप्रानहै॥डौंडीनामनेहकीनसुनेगनेकाहूभांति
शांतिपलपावहूंनगावैंतानतानहै॥युगलअनन्यजोडीजीयमेंजकडरहीविमलविरागविनाकदतनमानहै॥१८५७॥
जौलोंकौडीचाहतौलोंहाहकोनअंतकछुशाहराहहीनवहराहसंगशोकहै॥चाहचारोअम्नायसंहितापुरानपढैंको
टिसंतउरहोतहिएहोकहै॥विसदविरागवरवागकोश्रवनसुनिचौंकतमलीनमानोचढ्योचोरचौकहै॥युगलअनन्यना
मनेहकेकिएविहीनकोटिकल्पतांईगरेकालजालतौकहै॥१८५८॥सोहतश्रीसरजूसुखमाकरनीरगंभीरविचित्रविह
री॥रंगउमंगतरंगअनेकउठेभवभंगनहेतुप्रचारी॥नेमनितेनिरखेउमंगेअनुरागअदागविरागविचारी॥युगलअनन्यअ
धारहमेनिसिवासरसाधनऔरविसारी॥१८५९॥श्रीसरजूजलपानकिएकलिकालकसालमिटेअनआसू॥ ॥

॥नामनेः॥

ग्रं८

पीवेनहींजननीथनसोपुनिपावेप्रकाशविलासनिवासू॥संसृतितापकलापविलापछुटैहिनथोरेहीमैंभवफांसू॥पुन्यअनन्यउछा
हहमेसलखिनीरमनोहरमंगलरासू॥१८६०॥नाहकयोगवियोगनेमबहुसाधनसाधतमूढअलायक॥तीरथदानव्रतादिकरेब
हुजन्मनलौतउहोतनलायक हेवकहंवसहीसवस्वारथसंगकुरंगरंगेमहमायक॥पुन्यअनन्यतनोसबबातरहोसरजूतट
कैरघुनायक॥१८६१॥श्रीसरजूतटवासकियोनहिसोईमहासठसोकसमाई॥नातेविकारवजारविहायप्रभजोधवधामसुमंगलगा
ई॥श्रीदृगजाजलपानकरोभवभानवितानवियानवहाई॥पुन्यअनन्यसुधामवसेजननजानिरझूठजहानवडाई॥१८६२॥श्री
सरजूप्रियनामउचारतहोतअभैपदपावनप्यारो॥कोटिनजन्मनकेकटुपातकजातविलायनहीशकधारो॥जानकीजीवनरूप
अनूपसुधासुखसारननीरनिहारो॥पुन्यअनन्यसनेहसमेतिकरेनितमंजनधामपधारो॥१८६३॥श्रीविमलामहिमाअतुला
समलामतिनामउचारततारत॥श्रीशिवपार्वतीप्रतिप्रेमसैंधामपरंत्यववखानतधारत॥छोडिछलीनमलीनकोआससहासुखख
समसुधामसंवारत॥पुन्यअनन्यसुधामअनूपमओधसुसोधविलोकेनतापरनारत॥१८६४॥जानकीजानिकोप्राननतेप्रीतमधाम
महामुदमूलविचारो॥श्रीअपराजितनैनजातीरविहायकहूंसपनेनसिधारो॥स्वामिनीसीयस्वरूपलसैंसरजूरघुहूनओधनिहारो॥
ने

॥सीताराम॥

॥नामने०॥

युगमअनन्यविलाससोहावनभावनभावसुधारविहारो॥१८६५॥कोशलावासकिएअभिलासहजारनआससुपूरनहोतहै॥बा
कीरहैनहिमोहमहातमआकस्मातप्रकाशतजोतहै॥ दिव्यदसानिजनेहनिसापदप्रीतमप्रेमप्रवाहनिशोतहै॥युगमअनन्यउपाधिवि
हायसमायरहेसुचित्रअच्युतगोतहै॥१८६६॥सीतारामध्याननामरहसप्रधानप्रानप्रीतमप्रमानिगोपराखिएसुहीयमे॥दीजिएनभू
लिहूंसुनेहअधिकारविनाश्रीसाधनखोसभएभलीभांतिभीयमें॥जानेजवजतिजवाहिरजहानयुगजाहिरजलूसजगमगविततो
यमें॥युगलअनन्यअनमोलसंतबोलवरवांचिएविशेषलीनहेतुसीयपीयमें॥१८६७॥जयतिसियास्वामिनीसुनामसुखसार
श्रुतिसंतरसवंतसत्वसहसरसावनी॥ जयतिदुतिधामदिव्यदामिनीप्रकाशअंगअमलसुवाससोहवारिवरसावनी॥ जयति
अल्हादिनीअनूपशक्तिएकरससरससोहागिनीदिमागहरसावनी॥युगलअनन्यमनमानसप्रसादिनीपरत्वप्रतिपादिनीप
रेशपरसावनी॥१८६८॥तीनवरवरनविचित्रवीचएकरससरसनिवासविस्ववासनाविहायके॥तीनतरवरनसुमांझहींन होने
नित्तकरतहैमेशचित्तमलिननशायके॥पांचप्रियवरनहरनअपराधव्याधवांहुबीचधारनविशेशभासरसायके॥युगलअ
नन्यचा‸चारुवरनेशध्यानपरमप्रधानउरअफुररसायके॥१८६९॥युगवनचरअंबुविहंरनसीलतिमियुगलचतुरछिजएकगोपवेषहै॥
री

काहूमांझखेरडुखहरनभरनभावप्रेमवितरनगुनरंचहूनलेखहै ॥ शंकप्रहसंनि[illegible]भुजां चकसमानरंकअंकअविहितनसेमत
अविशेषहै ॥ युगलअनन्यमहाराजकोमालेसविनकैकौनशरनभरनअनिमेषहै ॥ १८७० ॥ झूलना ॥ रटननामकीरकटनेका
मकातिलकठिनकालविकरालभीखौफखाता ॥ वटनेजवरीमोहकोछोडिईजेलीजेललितलयलाहू चलासेमजाता ॥ लट
नपनेमेंमौजहासिलनाहीअटनेइस्कचटिझोंकिएमलीवाना ॥ भनैयुगमअनन्यरहितटनेसरजूहटनेहिरसहवासकुलेनहन्ना
ता ॥ १८७१ ॥ खुदीखाहिसामनहीखिरहराा जगिरहगुननकीपेडगीवहुतगाफिल ॥ शुईमिरजोजेपतूंनामनिसहिनवाइनवी
चनाहकवहेहायआकिल ॥ जुईडारिएडरेनूसपाइहिलसेतधीछाइहैइस्ककीरीतिकामिल ॥ गुईगोइनानामीनिजभालमे
रेभनैयुगमअनन्यनहिमिटेआमिल ॥ १८७२ ॥ तरफजाहिरीसेजुररचिन्नमोडातोडाकामकुलकोटकवाहतीको ॥ हरफइस्क
काखूबसापटोप्यारेशरफमोकसजिछोडिदेहाहतीको ॥ जरफेमेकसेसंगसवरोजकीजेजोजेनामपीजेचमकचाहतीको ॥
वरफनेरसमसहासुचिसीतलाईभनैयुगमजोगहेगनराहतीको ॥ १८७३ ॥ दगावाजजहानेसेंकाममेरारहाहेचनहिसां
चहींजाननाजी ॥ सगासाजसुखसहजग्ररसंतमेरेइहिगरचीजनाचीजमनमाननाजी ॥ लगागाजसिरउसीकेसहीप्यारे

निज

॥ठगमेठौरचहिएसगरुल्लानगहिएजहरजालजहिएहमकहूवहेजी॥२

जोनरदैनामपहिचाननाजी॥ पगारहसरसराजसोधन्यसोईमनेपुरमअनन्यसुखछाननाजी॥१२७४॥ पोप्रेमरहिएस
भीवातमहिएवहननामकहिएईहेखूवहेजी॥ जगेनेमगहिएमधुरमोहमहिएसहनभोकलहिएलभीहूवहेजी॥ लगेलाग
नहिएनहींनीरवहिएमनैपुरमअनन्यविनऊवहेजी॥१२७५॥ गुजरहैहकीजेप्यालाप्रेमपीजेललितनामलीजेमला
वत्तहेजी॥ उजुरतेजगीजेनहीकभीछीजेसभीजगहमासूकएकलखूहेजी॥ हुजूरच्चोपतीजेप्यालनौभीजेनरमसहजेम
चित्तजोसखूहेजी॥ मुजरछोडिहीजेहरहरहोपवीजेविलैपुरमअनन्यवतरखूहेजी॥१२७६॥ सरसमशोकसाजोजिकरम
न्नमाजेजोउठआपहीधुन्नविचित्रहेजी॥ जरसजोकवान्नोजगोतीरत्ताजोभजननामपरतीतपवित्रहेजी॥ अरसराजकाजो
खलककेपहकेलखाजोसभीजानिएसमनउहमित्रहैजी परसपायराजोछप्पछैलछाजोचरनेरनआजोमजाचित्रहेजी॥१२७७॥
ज्ञानध्यानधारोमहनमानमारोएहीमिलनकीराहसवतेरप्यारो॥ खानपानभारोईहहरचडारोजगतआरहारोतभीप्रीति
प्यारो॥ हानप्रानसारोखलककोजखारोदिगराजकरजारोरिमूराजवारो॥ आनकानकारोकलहकालगारोभलापुरम
अनन्यवेसक्कप्यारो॥१२७८॥ जडेमोतिपोसमधुरमारमोहनकलितकानोमेकुंडलभूमतेहैं॥ खडडस्कमेहानमेअसल

॥ नामनै १॥

आसकरसिकआसहीआसहीपासमेंघूमतेहैं॥ पडेप्रेमकेफंदवेहोशहोकेकोईचसमचितचाहसेंघूमतेहैं॥ अंडयुगमआनन
केजिगरअरुहरअजबकेत्रैओत्रैशसेंहूमतेहैं॥ १७८॥ हरेहोसअपसोससिरतानजालिमअहवांकीमेंगर्कहैंसभोआलम॥ घरे
ध्यानकेजोनआनंदहरदमअकथवातकोलखेगासोजहालम॥ खेरखेरैमपाइउहरंगकोहैकहांकौनसदसेनामीतवालम
मेरेभाववनाभावअननाहिलमेलहैआरवरीइस्कमालूममालम॥ १८८०॥ मधुरमानसेमोरिमुखमाहमनसिजमथनहेसमि
सवभांतिमनमोहतीहै॥ अधरअरुनतासरससुरंगभीनीझलकझीनीजिगरकोपोहतीहै॥ इधरउधरकीवातसवभाजगई
पांभईपांवावरीआलिपांजोहतीहैं॥ जिधरजोहिएतिधरदिलदारआहिध्यानप्रेमपरधानकोसोहतीहै॥ १८८१॥ चमक
चालचितचोरकाईखिएजीवपासाधनोनालमेउरझतेहै॥ झमकझूमनेमेंमगनहोपहरदमकहींइस्कमेंवांधेसुरझते
है॥ दमकदामदिलदारकेतरफजावोरहसप्रीतिकीवेयानहीवुझतेहैं॥ तमकतारकोताडिकेआशाकोनसदारस्ककेजंगमेजुझ
तेहैं॥ १८८२॥ खलकखोफउनकोनहीकभीप्यारेअलकलालमेंचित्तअरकावतेहैं॥ ललकमाहरमिलनकीरहेदिलमेंचमक
चालसेंचित्तचरकावतेहै॥ पलकपडेनहिपावतीकभीतिनकीमजेमोजमाशूकमरकावतेहैं॥ फलककुसुमसममुक्तिओभुक्ति
समझेंखवरदारखुदख्यालचरकावतेहै॥ ८३॥

॥सीताराम॥

॥नामनै॰॥

जिसमजानेहैवहीदिलजानजिसकेसोईजीवहैऔरसममुर्रदेहै॥खसमरसममेंमन्नलगायेहैजोवहीजगाहैराहमातुर्रहै
है॥किसमसभीतजवीजनाचीजकरिकेजुदेहोइकेपाररहखद्युर्रदेहै॥विशामवातनावोलदेकभींआशाकनहीयुगमअ
नन्यआजुर्रदेहै॥१२८४॥रैनऔनसुखजोनश्रुतिसंतभाषेउसेपावनावहुतमहालहैजी॥वातवक्कोनेसेकहाकामप्यारे
चपलचातुरीलोकजंजालहैजी॥बातवक्कनेकीअजवतरहन्यारीचुभीहिएमेंलखीसिपलालहैजी॥मनैयुगमअनन्यगुनसर
समुंदरसुधासारपीकेदसाहालहैजी॥१२८५॥देखोदरदसेभरेदिलहारहायमदसाहूनीदिमागसजायकेजी॥पेखोकदे
मानिंददुखदूनदुनियादखलहैरहुश्नामभजायकेजी॥लेखोलालकीललितलावन्यताईजगतनर्फसेनैनछपायकेजी
वेखोव्योमकेसुमनसमज्ञानजाहिरयुगलवातनीरंगरंगव्रापकेजी॥१२८६॥इसीइस्ककेफंदमेंउरभिमूवेकितेपीरफ
कीरअमीरसाजन॥किसीएकनेमोजसुखसैंनपायामेहरमुरसिदेंसेतजेलोकलाजन॥जिसीशोकसेउमडतीचाहअ
वलवहीरहेआखिरतभीकाजकाजन॥मैनेयुगमआनन्यनसीवजानीहँसीसाथक्योंवजेरसरहसवाजन॥१२८७॥
उहित्तहोयहियआयकेइस्कजिसनूउसनूऔरनगझ्लसोहावहार्द॥छुधितरंककेवोंगुप्तकारकरदेंगावदलदेनहीपरचावहार्द॥

॥श्रीराम॥

॥२१९॥

मुहितमिलनमाशूककेविनानाहींअखिललोकमांनैनेमेंलावहाई॥ भनैयुगमअनन्यादिलरहितरहतेकभींहसहेभावस
मावहाई॥१८८८॥ वहतदृटतेपारदिलहारहाय़मगरपांवहेनहींहिहारहैजी॥ गहतआपहीआय़केदस्तदिलवरतभी
वसलखुसरंगसरकारहैजी॥ लहतजतनसेकोईनहिदरसप्रीतमसुनीवेदपुरानपुकारहैजी॥ भनैयुगमअनन्यमसलहतला
जिमसदाशौकियोंसंगसुखसारहैजी॥१८८९॥ किस्येजाइएयारनखोजनेकोसभीजगाहदिलजानमौजूदहैजी॥ जिस्ये
जोहिएजाहिरीछोडिप्यारेउस्येदेखिवरछेलअजूदहैजी॥ तिस्येवारनकोनवीचारहैहैंशीशसौंपिएजलदवहवूंदहै
जी॥ भनैयुगमअनन्यमस्ताननामीनिसानामनिजमूलसवसूदहैजी॥१८९०॥ कभींमुहब्बतकेदस्कसदसहरखातिरकमर
कस्सनानहीवहदूरहैजी॥ विनाजानदीतेतिस्येनहिपंहुचेसखुनआरफाकाभरानूरहैजी॥ सरारीतिसेंजुदीउदचालवां
कीअकथकथाकोकहैछविपूरहैजी॥ भनैयुगमअनन्यआनंददहरदममिलेपिलेजोसामनेसूरहैजी॥१८९१॥ कोटिन
पातकीपापपहारअपारप्रहारतपावपलौना॥ लाग्योगनेशागरीयगोसाईंसुगीतपुनीतप्रसिद्धसलौना॥ हैंतोअभागीसही
सवहींविधिखेदखरावीरएजानोभलौना॥ युगमअनन्यशरन्यसिपावरआसएहीचितचाहचलौना॥१८९२॥ ॥

सवै०

॥२१९॥

कौनकहैकरुनाकरसौंअपनीकरनीकलिकालमईको॥कौनसमानअपूतपदारथहींपरमारथछानछईको॥मोनरह्यो
नवनेमअघमोचनसोचनवीचवितायवईको॥युगलअनन्यचहूंयुगमेंअपराधीहींआदरहानईको॥१२२३॥लोकवेद
विदितविनोदवुधविज्ञवोधविमलविचित्रवरविरदविराजमान॥वानीवरदेनवरदेशविधिविष्णुव्यासवासनाविलीनव्योम
चरनविमलवान॥वोधवलविरतिविचारव्यवहारवीजविसदविलासवाससुजससहायमान॥युगलअनन्यवाल्मीक
अविलोकवनचैनचितदैननिजनैननिरखतप्रान॥१२२४॥भीतिभरभारभवभजनभलायोभानभवनभरदशभावभसोभ
लीभांतिहीं॥भायभागभाजनभंजायोभूतभीरभेदनभवेशभूतिभायोभूपभांतिहीं॥भूज्योभोगभोजनभलाईभव्यताईभारभ
समभरोसभायभीज्योभरमातिहीं॥युगलअनन्यभौंहूभूषनभोराईभोयभासितभगतिभगवंतसंतशांतिहीं॥१२२५॥
मानीमदमोहमोहमालिकमकानमीनमादकमलेच्छमनमेरोमजवूतमल॥माहिमुरादमर्य्यादमर्त्यलोकमांझमांगतम
हेशमोजमूलमुरझायफल॥मोहनमधुरमतलवमनसूरमुदमहलमोसाहिवीमोदामनामआसअल॥युगलअनन्यमोसे
मंदमालहारद्दजोमानिएमनोजआजहारीअवलोकिथल॥१२२६॥भामिनीजहानवीचजेतीजगदीशशक्तितेतीजननीनसम
सह्याजियजानिहौं॥

कामिनीकषायकामकुमतिनिवारिनित्यनिजानंदनामगुनगायसुखसानिहैं॥ स्वामिनीसुभावसीलसानकूलनारिउरअपुर
विचारिमीचभीतिहूंनआनिहैं॥ जुगलअनन्यहिव्रह्मामिनीरमकहारअंगरसरंगनिधिध्यायमोहमानिहैं॥ १२२७॥ कामकंदव
कषायकंदमनमोहखंडउपरामकिएसें॥ सामसकारसुचाहचेदचितचैननीचाटवचायहिएसें॥ दषस्वरूपअभिषअनिषनिवारनैने
नसमापधिऐसें॥ जुगलअनन्यअपूरवताअनुरागअहागपियूषपिऐसें॥ १२२८॥ समाधानचित्तचलकीजिएप्रपंचपारप्रेमपार
वारमैंडुवायकेविशेषहीं॥ अवगाहनहोयसुखसहरकहरहीनहीनडुर्वासनाउजारिएअशेषहीं॥ बीजव्यवधानदुखखानहरम्या
नहाहअरुचिनसातशंकवंकातंकद्वषहीं॥ जुगलअनन्यबोधविमलविचारविनुव्याकुलविकल्पवाहबलितविलेखहीं॥ १२२९
मातुपितागुरुतेगुरुताअतिमीततेप्रीतिप्रतीतिसचाई॥ भायतेभायसेवायसतेगुनमानमहानूनतेअधिकाई॥ प्रानहुंतेममताअधि
कीजिनपैतिनकीनकलाकहिजाई॥ गाजतिहैजगजीतिसवैमननीतवचाप्रभुपक्षपराई॥ कोटिगुनीपसुतापसुतेकविकोवि
रकोटिनतेचतुराई॥ कोटिलवारनतेअतिमूढसुकोटिकसाइनतेकठिनाई॥ कोटिसनेहिनकेसमप्रीतिअनीतिअनूवकही
किमिजाई॥ कोपहिचानिसकेरनकोरसषानिषरीविषखानिमहाई॥ १२३०॥ केतनेकेमुखकोरिखलापवजायडुगीखरपैचटवावे

॥ सीताराम ॥

केतनेकोछूरवारगँवायरोवायकुइंश्वानमेंभरमावै॥ केतनेकोनकष्टकरवायपिटायजुतीयमलोकपठावै॥ हैजिनकेइहयोग
कोभोगतउजगलोगनकोअतिभावै॥ १९०२॥ भायवटायभलीविधिसोंसुखसाजसजेसवकाजमुखावै॥ नैनसोनैनमिलाय
रहैरसवैनअनूठसुधासेंसुनावै॥ मोहविनाइहिमेंवितवैदिनरैनसुप्रेमदसाकिनगावै॥ प्रानहुंतेअतिसंचकरैविषइतनरंच
केहरलावै॥ १९०३॥ वामविषैदुखधामअकामसकामकरैभवधामसहावै॥ नामनिशाननिरासकरैवइनामजहाननमेंसा
जसजावै॥ जानकीरामसनेहसुधामनफेरेकधचितदेयपछिनावै॥ परमअनन्यवचाइनतेसवभांतिसदाश्रुतिसंतवतावै
१९०४॥ मंत्रमनोहरमोहनमानदमीतमुफीदमहेशमुनीको॥ मारनमोहमनादिमहामलमोचनमानगुमानहनीको॥ महिरमा
लमुरादमहामुदमोदकमालिकजेयगुनीको॥ परमअनन्यसुनामसोहावनरामअनूपमवर्नसुनीको॥ १९०४॥ नामनरे
शनिमेंशनिहोरतनित्यनिहालनिरीहनिकाई॥ नागुकनेहनवीननहैनिजनैननिकामनिषैनसाई नाहकनेमनहीनव
हिदिनहीनमलीनविहीनवडाई॥ परमअनन्यनिहारतनित्यनिकेतउपेतसुहेतसहाई॥ १९०५॥ कोटिनकायकलेशकरै
कतिकलयअनलयअजलयरहावै॥ कंचनकामिनीकामकषायविहायसमायसमाधिसजावै॥ कौलकपालकठोकवाहतचाहतनाहि
सहासितलावै॥

॥नामनं०१॥

प्रभअनन्यअमोलअडोलसुनामैरटविनमोजनछावै॥१२०६॥ नामहींनितारटोनअटोभवपंथकुपंथकहीपिनभूलो॥भूलोभ
हसअवेशविशेससुदेशस्वरूपहिएलखिफूलो॥फूलोफरेवफनातजिकेसजिकेसवअंगसनेहहूकूलो॥कूलोभलोसरजूसरितासु
चिप्रभअनन्यअनेहअभूलो॥१२०७॥धावतधोषहींधामविलोकिविशेषविकारविकलअजानै॥जानैनपूरुबउत्तरहूंक
छुकापरकाजअकाजसमानै॥मानैनसंततसिरोमनिसत्यसुवाकविपाकअपाककमानै॥मानैनहीमधिमूढमलीनविलीनसनेह
मनेपहिचानै॥१२०८॥रेनरनामनिसंकभजोनितनेहनिशानसुजोनसहाई॥पातिपरेपरतत्वनआनकहेजोकोउकहूंसत्यन
भाई॥संगीसहासुखदायकनामरहौंऔउहौंश्रुतिसंतवताई॥प्रभअनन्यउपायहभीकलिकालकोपायअपाअघहारी॥१२०९॥
जैताजहानजलूसजमीनजमानवितानविनानवनाए॥तेतोतलाकहलाकअपाकहींलोकवरावरमेहनभाए॥देखिएदीठिउठा
रिजराजियमोहविसारिविवेकवढाए॥प्रभअनन्यनसाथचलेतिलपावरतीप्रगनामविहाए॥१२१०॥मातपितापरिवारअसार
सुतासुतदारनकारजसारै॥मीतअनंतअसंतसहीसवअंतसमेपलेप्रमनपारै॥देवताहीनअधीनअजावसहायकरैचुपह्वैनजिग
र॥प्रभअनन्यतहांसवलायकनामकृपालहींकछुनिवारै॥१२११॥कांतिकमाधवमाघअनेकनकलनहोपसप्रीतिविशेषी॥॥

॥सीताराम॥

विचार

ध्यानअरुसंखकैरैयमयोगहूसंतसुशास्त्रविसषी॥ज्ञानपधारथवेदविषेबहुमानमहत्वजहानअद्वेषी॥प्रेमअनन्यबिनानिजराम
सुनामरमेपरधामपरेषी॥१२९२॥छोडिहैरेजडजीवकुमारगआलसबाहविवाहविलावो॥पापप्रराक्रततेबपमानुषसुंदरलाहिनधू
रमिलावो॥भूलिहूँकेकबहूँसपनेमहँमोहमहामदनाहिपिलावो॥प्रेमअनन्यसियावरनामअकामरटोहियकंजखिलावो॥१२९३॥
हैसिगरीकरतूतिदईहैबिगरीबहुजन्मकीबातबनावो॥होयरहोअलमस्तफकीरसदावनबागमेंबासबसावो॥खाहिसहेचहुआलम
कीतहकीककैराहुप्रवाहबहावो॥प्रेमअनन्यअपूरबदेहसुनामरटेबिनकाहेगमावो॥१२९४॥नामउदारसिरोमनिहैसुंकामहजा
रनभांतिसुहानी॥वेदविरंचिहरीशजपेंजेहिऔरकितेसुरटेमुनमानी॥बंचकधूतकपूतकलाकलिसाधनआनकहेहठठानी
प्रेमअनन्यअजानसहासठमारखनेहतुबिलोवतपानी॥१२९५॥धर्मधुरीनसुगम्यसदासबलायकभाविकभावसनेही॥की
रतिकोटिनअंडनमेंतिनकीनितछायरहीगुनगेही॥तेईनिरंतरप्रानअधारउदारउमंगउछाहसमेही॥प्रेमअनन्यसियावर
नामहहैअभिरामप्रदायकजेही॥१२९६॥रफहींकेएकअंसप्रसंससेंब्रह्मअनीहअकामप्रकासे॥तीनहूंदेवसमेतनिकेतस
देवबसैंतेहिबीचनिकासें॥साधनसिद्धिसमूहजहांलगिहैफअनूपमअंकसुभासे॥प्रेमअनन्यपराप्रतिभाअनेमोलअडोलजपेप्रतिकासे॥९७॥

॥नाम मं०॥

नाहकेनेमनिबेरो लनिहापतनीचसकीचसरीरमेधारो। नीपतनेकविवेकसंजोपुनेटकसनेहसुनामउचारो॥ दूरकोअलसोहावनहैपर
मीतसमीपनमोहसम्हारो॥ युग्मअनन्यभजेनिजनामहींकामिककोटकलेशनिवारो॥१२२१८॥ नामनिहालकैरपलेमथलेमजलयो
मरसालनमें॥ नितनामहींमोहप्रमोदविनोदकोकारनकोशसुधाकलमें॥ जपुनामनिशानसनेहसमेतसुजापतमोतमिटैकलिका
लमें॥ युग्मअनन्यसुजानसुलायक नामप्रताप नामप्रतापसुधामरसालमें॥१२२१९॥ नामनिशानितपीजिएनेमसेंनेहनवीनस
जापसुभागी॥ फेरनहींउतरेहियसेंपियप्रेमप्रतीतिसोहागिनीजागी लेननिहारविहारविलोकनिशोकनएकरतीरतिरागी॥
युग्मअनन्यविकारअगारअसारनिसासबहीदिलदागी॥१२२२०॥ नामकेप्रतापसेंअतापकईकोटिजनजाहिस्वचरित्रवरवीच
कहोगोपहै॥ भक्तप्रहलादअहलाददरसायोहिअभयभावनीपनामअविचलचोपहै॥ हईलंकरांकसेंविहीनश्रीविभीषनहि
नामकरुनेशलीकललितअलोपहै॥ युगलअनन्यनाममहिमाविचारवोधअमलनिरोधशोकसीमदस्कओपहै॥१२२२१॥
सातहूंसिंधुसुखावनकोवरवीजअकारविचारिएवाजिव॥ अंडकटाहकहंवमहातमवीजविभाकरमारननाजिव॥ तापकलाप
विलापविलावतहेतुसुधाकरसाजिएसाजिव॥ युग्मअनन्यसुनामसनेहविनाधिकजीवनजानिएकाजिव॥१२२२२॥

सीतारामनामगुनगाइएकुलासहिएपाइएप्रकाश॥प्रेमछेमअविलंबतर॥अनतानततानिएनमानिएविधानस्तानभानब्यवधाननिधिजानि
एअलंबगर॥स्यामशोकसानिएउपाधिपाधिव्याधिहीनहोपहोकहिएसेहानिएहमेशवैचित्रंबउर॥युगलअननन्यरस्करानिएसंचतचित
हितअनहितवहवायकेकईवउर॥१९२३॥गोलकपोलअमोललसेहिएउस्मअजूवसमेतसोहाए॥ललितलोलकलौलसुधास
रमूषनकाननषेशालजाए॥कौनकेहेसुखमासजनीरजनीदिनचिंतसुमाझसमाए॥युगमअनन्यअनन्यभईमतिसुंदरअंगसुकीरतिगाए
१९२४॥त्रिगुनतरुनतममंगजगजालजसजननीजलीलतरतषातजविंजिरिए॥महामोहसागरउजागरसुखायवेकोवाडवाअनलअ
तिप्रबलपतीजिए॥नीषमकेरोरकदुतापपायएजजीवजाहिनिमित्तरितुपावसपसीजिए॥युगलअननयकठिकसिएकतलहितलोषत
रवारकरधारिजसलीजिए॥१९२५॥एकसेंअसंख्यविलणायनप्रसन्नहोतरोतदिनजाततातातकतपराइए॥नेकुनथकातअलसा
तरतरातवडीभातिनीदेखातहीएखातनअघाइए॥जतनजमातफैजजोस्योजीएजारिवेकोतऊनहींरंचहूंनसातरेवइखाइए॥युगल
अनन्यराममनामसुखरूपताषजोयकेअवस्पतरसातसरमाइए॥१९२६॥कीछनकेरजेवीचवसिहेवलायवइवावरीसुबुद्धिक
रिहेंईपलपावमें॥इंतजीहकाटतनजानोकहाकेरेकटुकारिनीकलहइरसायभावद्दावमें॥मानततनकुकरजोस्योमेंहजारवारवार
माझउरिमोहिवोइनवुडामें॥

व

वाअिनीकतेकिनीकस्याइनीकदूरनीउवेकिनीप्रपंचिनीनमैजदरसायेमें ८२

२७

पुगलअनन्यवडीपापिनीप्रपंचमईप्रईपालखींचतव जानाआवभावमें॥ कोटिनकलपकलपायोकतकालकरिकापरके
॥२२२॥ ईवपरसायोभरसायोतें॥ कालिमामहानमोहलालिमासुकोहहहोहमेरेहासुमायपरवेहवरसायोतें॥ पुगलअनरामनामअ १७
मिरामरसविसहविनोहसुखतोनसरसायोतें॥१९२८॥पावैगेपापिनीतापिनीतेंसवभांतिसजायनशंकरतीहै॥ जोवेगीसातहूं
सागरपारअवारनलागिहैमानवतीहै॥ जानकीजीवननामसुधारसपायकेतोषनेफीरगतीहै॥ पुगमअनन्यविचारोभलीविधितें
ठगनीसवभालमतीहै॥१९२९॥पटकेचोटचेपटनेमेंचितचाहचमंकनअंकरहेगो॥ लटनेहींसकिहैपलआधहूंव्याधउपाधअ
साधसहेगो॥ खटकेखोफवंधायविहंगमोतोडिसहाससठहाहहहेगो॥ पुगमअनन्यअकंटकराजसुधीरजतोघेतरपूवलहेगो॥१९३०॥
नाहकनीचनिहातहैनरतूंपरमेसकेतरफनताके॥ गांहकजोनगरीवनकोशेलोतोहिनिवाजिहैकैसेहूंमांके॥ हाहकेहवकेईवस
वेसठअंतिमयाचककैरजफांके॥ पुगमअनन्यउहारसिरोमनिजानकीजानिहींकोनिजधांके॥१९३१॥ आपविललातताप
हापसेंहलितमनवचनवपुसहितकेरैकोनओरको॥ लंपटललवारप्यारस्चतप्रपंचसाथमांथतक [illegible] लेतततउहेतनहीं ॥२२३॥
कौरको॥ हेरव्याहगावाजनसमाज~~समाज~~जनमपायवहुव्याकुलविशेषतवकियोगतिगोरको॥ पुगलअनन्यरागशोगदुचिताई
दुरवीमिटमोरतोरपदपायसिरमोरको॥३२॥

॥सीताराम॥

॥नामने०॥

रामकृपालसहीसिरमौरउजागरनागरनेहनिहारत रामननेकचवैंहैंकवहूंसुखधामसुपूरनकामविहारत॥आमहूंउष्पकायपद
पतिप्रीननेप्रेमप्रकाशसिहारत॥प्रभुमत्रअनन्यसियावरकोभजिभावनौआनकिपोसवगारत॥१८३३॥जानकीनाहनिगोनिरंतरचाहिए
चित्तमेंशोकसजाए॥वासनावानकीहींजेभुलाए लहेपरमारथवैववजाए॥तिव्रविरागअदागकेराउचैंसोकिकदाधिरा
अनमाए॥प्रभुअनन्यसियावरसंतसुसंगसदाकरिएछविछार॥१८३४॥रूपरसीरससरागगसीछविवागवसीअनरागअ
सीजस॥प्रीतिहंसीगुनगीतलसीसुपुनीतशशीसमसारसुधारस॥आहजगीचितचाहलगीमुहमौजपगीनिजनाहसगीअ
स॥स्वाहसनीसुखशाहधनीसुभसीमसनीजगरंगसनीरस॥१८३५॥नामरमीचित्तचामसमीदुखदामदमीअभिरामगमी
गत॥धामजमीगुनग्रामअमीछलछामछमीजसजामजमीजत॥सामतमीघनघामघमीखलखामखमीभवभामसमीपत
धामथमीकुलकामकमीफलआमअमीनगमीनवमीरत॥१८३६॥सहिएसवकीघनघातकुवातकवाहतनेकनहीगहि
ए॥दुखदुंदअमंदविलंदविाधहूंजानिअथीरहिएरहिए॥सुचिसंतसमाजसुधानिधिमेंनिसिवासरनेहमनेहवहिए॥जिय
प्रभुअनन्यउमंगसुरंगसियावरयोगलहालहिए॥१८३७॥मोजमहानमजामनमोहनैयोगकुरोगनिवारन॥ ॥

जोहन.१

।।श्रीराम।।
।।२२४।।

है रतनो निज नीचपनो सपनो मद मान विषाद विडारन ।। जानकी जीवन नाम स्वरूप अनूप सुमान सवाग विहारन ।। धुगमअनन्य
न्य थाभु किए हु किए सपनेहूं न होत मतारन ।।१२३८।। प्रेम प्रयाग अहाग अलौकिक बीच अछेवट वीज विचारन ।। हियत्वे
नी सुभक्ति सोहावनी पातक पुंज प्रतीति प्रहारन ।। तीरथ अंग उपांग अनेक न माधव मोह हमेश हजारन ।। धुगमअनन्य अमान भए
सुख सार सहा हगा रहि रवि एवारन ।।१२३९।। बानी विवेक मई भनिए गनिए सबही सियस्याम सनेही ।। मानस मांझ सुमार अनाए
व पांचि विएहु बहु राय निते हीं ।। काइक काज कलेशन कीजिए लीजिए लाहु उछाह न वेही ।। धुगमअनन्य सुभाव प्रभाव तेपा
इहै सुवसतो गुन गेही ।।१२४०।। आहि आहि आरत हरन शरन हराम करुना सुधाम जानकी श मोहि हेरिए ।। हौं तौ अति पात
की प्रपंच पंच वानर त असत्त कुपथ मांझ प्रीति विनहेरिए केवल कृपाल ही को आस अनायास सिरव हक हनि निमित्त हिल अ ।।२२४।।
हरनिवेरिए ।। धुगालअनन्य चाहे जैसो गुनहीन हीन तऊ सब तौर गौर किएए केतेरिए ।।१२४१।। कलप कहूं वलगि किपा
को अपराध प्रतिहीं असाधन छमा कीनेके योग है ।। जाको पाइ वारक करत डरपत हिय वार वार हाय मुख कहत सो गहै ।।
लागै वैह विवुध पिवैकी रुजना सहेतु तऊ पुग अमित लोभित तेन रोगहै ।। धुगालअनन्य रवइ मेरो साधन न संग अंग भंग नेकहू न होत बिना भागे है ।।
१२४२।।

॥ श्रीराम ॥

जानकीविमलविधुवदनचकोरचारुचरितहारितहियेहेरिएहमेशशाहीं॥ लोलालली लालले लोनी ललितवलिछविसरससु
धामहसपीजिएसुधशाहीं॥ होयकेनिरासहाथधोयवदवोयखोयदूसरीदिशानकोकलंकरंककेशाहीं॥ युगलअनन्यवानवि
शदविलाशरातिदिवसविचारिचित्तमहामोदपेशाहीं॥ १२८४३॥ जानकीरमनजसजनमनरमनेहनाजुकनिकेतनाकनाह
निर्वाननुत॥ कोटिनकलेशकालव्यालवालजालजगकुतरुकुठारशितधारकारीकरउत॥ एकएकवरनविवेकटेकनेक
किरीदिएहूतदामफलअमलसुवदरुत॥ युगलअनन्यअविलोलतोलमालवोलचौंरनीचमकचारुधासोजैनहीनच्युत
१२८४४॥ सीतारामसुगुनउदारउज्वशगुनअगुनअधारस्वच्छसारप्रेमप्यारहर॥ श्रवनसुनतसुखसहससरोजसमसुदि
तहोतजोतजागतजलरुशातर॥ शेषशिवकसनंदनादिध्येयपयरशिकरसालमोदमालमोहमानहर॥ युगलअनन्यआवबा
ववदवादवीचदीजिएनभूलेहूंवहायजायपायवर॥ १२८४५॥ रामरूपकेरसीलेरंगरागरंगसरसीलेध्यानज्ञानगरवीले
पीलेप्रेमअंगअंगमें॥ कामकोटकलकीलेभामभोगगुनढीलेदामदरायछलछीलेभीलेभ्रमकउमंगमें॥ स्यामधामसुव
सीलेआटजामभावभीलेचामछामवटकीलेलीलेलागसंतसंगमें॥ लामकाफफरकीलेनामनेहमरकीलेखामधामपरकीले
अटकीलेजानजंगमें॥ ४६

॥ नामने० ॥

रस्कयारेकेअधीनेप्रीतिप्यारपरवीनेनामैनेहनीरमीनेभीनेभावनाभलीनमैं॥ फिस्कफ्यालेमें विहिनेमोकश्यामतीजि दीने
दाहइलनइलीनेनलीनेलालजगलीनमैं॥ हिस्कहोशसेंसुछीनेहिसेंहालकालकीनेकसेकमरेकोपीनेपीनेरहसरलीन
मैं॥ फिस्कचारचितचीनेयुगमानसीमकीनेभूलेवातनीवतीनेमातेमाधुरीअलीनमैं॥ १९४७॥ सीतारामसुखकारी
नामविसरविहारीजामजोरजुगजारीप्यारीप्रीतिसजिजापिए॥ लोकलाजकोविसारीमोहमानमदमारीलायलालला
गतारीसारीशोकछापछापिए॥ छिबदीपतमहारीहिलइमककतारीवारवारवलिहारीभूमिभावनासुधापिए॥
भनेयुगमैजयारीचाहअवधविहारीदाहदुरितहारीनाहनेहथिरथापिए॥ १९४८॥ सीतारामनामलीजिप्याल
प्रेमप्रीतिपीजेजगजुगजीजेजसछीजेनेकहूंनहीं॥ सीतारामपारहजेधजेतमतोमतीजेदामदानदिलदीजेरवीझेवास
छैंकहूंनहीं॥ प्रियाप्रीतमोपसीजेराहरीतितजवीजेचाहचारुचितचीजेभीजेशोकसेंकहूंनहीं॥ वेनविसरभनीजेसा
रससुनसुनीजेयुगमसुगुनगुनीजेधामसमेटकहूंनहीं॥ १९४९॥ सीतारामनामगहेतातातानतामतहोमीतामानमे
हमहारहोधामध्यानधारिके॥ सीताभानभागरहोगीताज्ञानचित्तचेहोरीताराहरीतकहोजीताजानजहोजारिके॥

वीतौवैशत्रैशत्रुहोकानकीजिरणवहोसंतवागभिर्वहोलहोलाहश्रौकसारिके॥कीताकालकर्मसहोअनायास
सिंधुथहोभनैयुमभेयागजहोटीमटामेरमटारिके॥१२५०॥कियोमैअगाधअपराधव्याधसाधविनाँदिनाँदिनदाह
दुर्मतिदूनादूनहै॥लियोमैंउपावआवमोलअविलोलचित्तआयुषगवायहायहोतनेहन्युनहै॥वियोमैवियोग
सोगवीजचित्तबीजहरदियोरागहिलवीचनानाभांतिजूवहै॥युगलअनन्यजियोजालिमसुजगसंगरंगरसमानि
चाहचित्तसेरचूनहै॥१२५१॥मेरोमनअमननहोतपलपावभावरहितअहितसननातानेहजोरिके॥पेरोपवमानपाव
पातकीप्रपंचपनजेरोकियोमोहिआयोमहाबिषधारिके॥तेरोनामलेततेरतहारूनररररहिलवेडरगावाजमोरेमानभ
वमुखमारिके॥युगलअनन्यचेरोहैरोअबंरेराकहानेरोदिनआयगयोकह्योंमेनिहारिके॥१२५२॥नामअभि
रामसुखधाममहाराजराजसरससमाजमांझवसैंजनजोनहै॥सोईसिरताजमवीपरविराजमानकरुनानिधानकृपा
पात्रतरतौनहै॥कोटिनविभूतिलोकलोकपप्रपंचसबविद्यमानभयहूंपैमानैविषवौनहै॥युगलअनन्यपदपंकज
परागप्रियपूजितपुनीतपावनेशप्रियपौनहै॥१२५३॥नाममहाराजमनिमानसनिवासजाहिताहितीनतैंतिसतिलोकत
नतूलहै॥

॥श्रीराम॥

॥२२६॥

कामवानविषमविदेशोवेशाकालकूटजाहिरजलूसजसजहरकुसूलहै॥महामोहमोदमनमगनमलीनपीनमी
नसमपायप्रेमपाथगतहूलहै॥युगलअनन्यधन्यमहामानमन्यप्रियाप्रीतमप्रपन्नरामरशिकअमूलहै॥१९ ५४
आपनोस्वरूपसुद्धमिलननिमित्तरामकरुनाकोधामआननाहिनउपायहै॥ज्ञानभक्तिसाधनसमूहप्रभुप्रीतिपाल
ननिदेशोहैतअमलसहायहै॥सुकृतनिकायतामेकारननिदानपुनिपरमपरेशाउपनिषतसुधायहै॥युगलअनन्य
इटकीजिएशरनस्यामलोकअभिरामयामेकुसलसुभायहै॥१२ ५५॥सीतारामअधमउधारनसुनामवलपायके
अवलसततसवलअचलभे॥रीताअविनीतागतिगलितगरूरहोयसोयसुखसहजसमाधिमेंअमलभे॥गीताभागवत
वेदवेदंतविशेषतिन्हतीनोदेवपूजनीयपावनसुथलभे॥युगलअनन्यमीतामेह्योभलीभांतिउहहोयचिन्तसां
तिभ्रांतिरहितसफलभे॥१५६॥जानकीजीवनसाधसनेहकियोतिनकीगतिवेदनजानै॥आपहींईशसुपूजित
पायप्रसंसकरेबहुभांतिवषानै मायामयादिगुनानकोयोगजहांनहिलेशपरेशप्रधानै॥युगमअनन्यभजोसुचिसं
तसरोजसोहावनपादप्रमानै॥१२ ५७॥प्रीतिप्रकाशप्रवीनपदारथपावनपायसचायलहेहै॥ ॥ ॥

प्रति

॥नामने०॥

॥२२६॥

नीतिअनीतिअमीतसुमीतसभीतअभीतसमानच्वहेहैं॥ लौकिकीवैदिकीत्यागिक्रियाकुलसुद्धसुनामरहस्य
गहेहैं॥ युगलअनन्यसदासोइसंतसुसेव्यसदासुखदामरहेहैं॥ २८५८॥ पारावारअमितअपारजससीयवर
सुनतगुनतपूरेप्रेमपनखासहै॥ बडोअवरजभाग्यहीननकोलखोउरफुरतनजाकेगुनसरससुवासहै॥
प्रगटपुरानश्रुतिगोचरप्रमानशिवमहावीरसमजाकोसवलसुदासहै॥ युगलअनन्यअवधेशपरमेशसदशार
नविहीनकेदकाहूकोनफांसहै॥ २८५९॥ कायरकुटिलकलियुगजेहडाएजननजानैकहांराघवपरेशसुप्रताप उहका
को॥ लघुमतिगतिरतिअलपकलपकोटिपावैपीरप्रवलपतंगसमजातजर॥ मानवसरीसमतननदेखातऔर
भलीभांतिगोरकियोपीठिसंतसभासर॥ युगलअनन्यवारवारधिकधिकताहिआपनोसदनसुखत्यागिजायऔर
ठर॥ २८६०॥ नानामतवादवीचउरझिसुरझिमूढकूरगतिगूढसपनेहूनपछानहीं॥ संतसद्ग्रंथसतपंथ
कोप्रकाशिकहेतिनवरवचनविशेषनहींमानहीं॥ सीतारामसुजससुनामसुधासारतजितिगुनअगुनगुन
तारतत्वतानहीं॥ युगलअनन्यआदिमध्यदुखदाहहिलैतेसहींअवस्यसवभांतिअवसानहीं॥ २८६१॥ ॥

ईखेवइगावाजहुमैतिसहस्माजसबसामुहेसजतप्रीतिपीछेकौनमानेहै॥ वाहरविकारविनवानीवहुभांतिवईंवासना
अनेकउरसमलसमानहै॥ लोकशोकजनसनसहजसनेहईहगेहरेवहचाहप्रानप्रीतमप्रधानहै॥ जुगलअनन्यअ
वलोकिरीतिजगाठगमगविसरायनामहीयकुलमानहै॥ १२ ६२॥ रजसमसकलनकलजगाठगलखिवखि
निजमरमनरममुहृदमरम॥ जससुखसनमजनममिरितमितरहितरहसरसजसरतिरमरम॥ तजुतमतगुनअ
लजजनयमसनहेरनतरनहरनवृदिवमवम॥ जुगलरसिकसतसुजनसुमतियुतजहरकहरविनविहरतकम
कम॥ १२ ६३॥ कृपाकरुनाहिनिहेतुकअखिलजीवतारकत्युनतमसागरअपारको॥ भलेहनसपनसुभायस
हजेहिद्रोहकोहमोहममतानलेशहविकारको॥ सीतउस्नपरुषविवादहुर्वादसबसहैसुखसहितसदैवमन
मारको॥ जुगलअनन्यप्रानहूंतेप्यारेसोईसंतजिनकेजिनकेअधारसदारामसुकुमारको॥ १२ ६४॥ मानसवच
नकायकेरनकलंककछुकठिनकषायकोटोउनामध्यानेते॥ आसनसमानखानपानदुखखानलखेचखेंरसस्वा
दचिदहञनेप्रेमपानेते॥ मीतनाअमीतअविगीतअविभीतनीतनिपुननिरीहनिजनेहप्रानप्रानेते॥ जुगलअनन्य

श्रीराम

मेरेमालिकमुरारिप्रियपावनप्रत[illegible]पलकरनअमानते॥१९६५॥हेसिरताजसुराजमहीसोरसंतसुधासरके
निजवासी॥कामनाएंकरतीनजिन्हेजगजालजवालतेविरतउदासी॥वासनावंदविलासविलयगनेमतिमे
दअर्वदविलासी॥एप्रमअनन्यकोईपथमेनहिंकैदरहेखुदख्यालखलासी॥१९६६॥रसिकउदारसंतसनेसीय
केतरसनरससरादसजिसुधिनसम्हारहे॥तिनकेअमलगुनसगुनअगुनरूपअमलअनूपकेसेकहिएनपा
रहे॥वटतउमंगरउमाहवाहचंगसमचटतविचित्रउतराएनउतारहै॥युगलअनन्यमतिमिरीमहालहुलोभ
लालचजडितउसंतपदप्यारहै॥१९६७॥नामरूपधामअभिरामलेलीलाललीलाललितललामभाव
महितसनेहसे॥श्रवनमननरसरहेसस्वरूपकारिरहेछकिजकिथकिमानहूंविदेहसे॥अंतरंगरंगवहिरंगजो
रसाभअंगनवलअभंगदुतिदेखिहामेमहसे॥युगलअनन्यअजलोकओकशोकसमअमरअनंतभक्तिमुक्ति
खारेखहसे॥१९६८॥दसाअनमोलअतिअमलअडोलवालपोलतेरहितरतिमतिगतिज्ञानहै॥निसानि
जनाहनेहनैनवेनअैनअैनसैनवैननजरनिगाहजीवजानहै॥हिसाकीनसुधिवुधिविमलविहारवीचकीचमी
चसमसहालोकसनमानहै॥

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥

॥११८॥

युगलअनन्यशोकजोकितोकहोकीहिएहारकेसमानधेरेरंगरसखानहै॥११६९॥नैनबैनमनतेनदूषतनकी
टतकआगपाछेएकरसअसमविसारिके॥आपनेईअैनमाहिरहैहिलहाहदृहगहिवरविरतिविवेकगुनधारिके
वारवाकनिकरनिवासीमायावादीतिनकेसंगतिनकरैंप्रीतिरहससवारिके॥युगलअनन्यलोकलाजगाजखाज
समसमुझिसुनेहमदछकेमनमारिके॥११७०॥गुनगानगमनरमनरसजसयुगवरनहरनमनअमनअतनवि
न॥पलपलपनअविचलचलरलसमअरसअकलवलअमलअछललिन॥रघुवरपुरउरअफुरअमर
नरअपरअसुरसुरजरजडहिनरहिन॥युगलरसिकछविछकियकिजकिचितअमितसुवितजिमिलेहमुरधन
हिन॥११७१॥जिकरअखंडअनुरागनामनेहवागफिकरफकतप्रियप्रीतममिलनकी॥आलसप्रमादमति
वालिसनलेशउरअफुरहसपरतिविरतिकिलनकी॥सदाचारसंवतसुरीतिपरतीतिपनअमनअतनज्योति
वासनाभिलनकी॥युगलअनन्यसंतसावधानलखिलिएलक्षनविचित्रकंजमानसखिलनकी॥११७२
आपनोहमेशाहाधरेखहुविनारतजिसवजिसुचिसुमतिविवेकएकटेकसें॥औरनकोऔगुननिहारिबुरामानि

॥नामने०॥

॥११८॥

॥श्रीराम॥

ताहित्यागभलीभांतिशांतिधारिरतिएकसे॥ सुनेगुनेअैवचारिवहनसैंचावयुतविसदविचाररसपावैनेहनेक
सें॥ प्रगलअनन्यसंतरीतिवहुदूरनूरपूरनहुजेकहाजानेजनभेकसें॥१२७३॥ षटवेगतेतगातरत्यागेअविलंव
जनजानकीशसरससनेहरंगरंगिके॥ षटसुद्धलसनविलछनेंसवूभिउनिपावैप्रतिकाशरवासीरव्यग्र
नअैगिके॥ फूलेफिरैफोजसंगसाथहंकेसंतहममानेनसुरीतिवोलवचनकुसंगिके॥ प्रगलअनन्यतिन्हेका
टिनकलपस्मगिहातनविनोदमोदअमलअसंगिके॥१२७४॥ देशाहूंदुर्गदरीगिरि [illegible] काननमांभअनेक
नवारभ्रमायो॥ मीतमिल्योफललेप्रानहींकहूकेवलकापकलेशकरायो॥ जातिकुलादिककोअभिमानप्रधा
नतउतेतहिंधूरिमिलायो॥ प्रगअनन्यकियोवहुसेवतथापितहांरसरंचनपायो॥१२७५॥ भोजनमानविता
नविहायकियोपरमेहनलाजविचारी॥ ताहमसेकितकाकसमानरह्योचितरंचहूस्वादनधारी॥ औरहूंकमी
अनेककियेपरमोहहियेनहिनेकनिहारी॥ एतेहूपेनलह्योउरतोषतहूंहेतहेमअबरूपिनीनारी॥१२७६॥
छितिछेदनभेदनखूवकियोनिधिचाहलिएहियमांभअनेरो॥ वहुधावहुभूधरढाहकियोतितिवित्तनआहलयोमनमेरो॥

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥

॥२२८॥

सरितापतिमध्यसुगोतोलियोवहुभांतिनजालपसारिअनेरो॥ भूपनिहूंपरिखेताषिभलीविधिभांतिउपायसेंसांझसवेरो॥ १२७७॥
मंत्रकोजापअखारनहूंनिसिघोरउजारमसाननिमकीनो॥ वासनावंदमिटायनिचपचितएकहींरीतितहांदृढभीनो॥
कानवराटिका[illegible]लभयोनाहिहेतसमेदुखहारनिहीनो॥ धुगमअनन्पतज्योअवतोहिंसियाकरनामसेंतोषहींलीनो॥
१२७८॥ दुष्टअलापकलापसह्योगह्योमौनाहिहुएदुखपायविसेषी॥ ताहूपेअंजुलीजोरिभलीविधिकीनविनेस
ठस्वारथसेषी॥ नेनजनीरनिराधिभलीविधिरीतिविनीतिसवेकरिदेषी॥ मानससम्पतउंहसिवाहरजाहिरमारदेख्या
यअसषी॥ १२७९॥ [illegible]कीनउपायकरौकितजायकेहायमहादुखहोतहमेस॥ हेतसेअसुभेअवधारिनिमोद्व
मद्दाअभिलासविशेस॥ जोकछुभाललिख्योसोभयोअवनाचनचावेनायोगनैअसे॥ धुगमअननमत्रसारलख्यो
सवतोरसैंताहिसुतोषलहेस॥ १२८०॥ स्वादुविसेषसुधामधुतेरससागरवागविलासरसीलो॥ श्रीरघुनंदनकीकल
कीरतिनितनितमंडितप्रेमपगीलो॥ ताहितेताषभयोहियेमधनकारनआसनमेंभटकीलो॥ भीषसेप्रानअधारदियो
लियोधुगमअधारहमेशाअसीलो॥ १२८१॥ तीनोभांतिशांतिचित्तकीमिएसचेतप्रतपांचहूंपलायप्रेममालिकसजापके

॥नामने०॥

॥२२८॥

॥श्रीराम॥

भीनो भव चाह द्दाहद्द मकचमक लोक शोक सत संकुल विसारिए व जायके॥ पारावार प्रीति वीच वूडिए अचिंत्य होय रखा
परखुहि खाहि सकुभावना जलायके युगल अनन्य धाम अचल निवास विना मिले नहीं मीत परम शाह रसायके॥ १२८२॥
जानकीजीवन नाम सुधा जिन चाख्यौ तिन्है नहि वासना और है॥ आठहू जाम उछाह रहै तिन के हिय मे मन वाह
र गौर है॥ आपको प्रीतम के पद पै पवलि हारि किए अनुराग अहै रहै॥ प्रेम अनन्य सुनाम भजै बिन मांगत मूरुष कू
कुरकौर है॥ १२८३॥ काहू कि भूलि करै न कभी चरचा अरचा परचा करु नाम की॥ लौकिक खाहि शरीर वह समान
सदा अनुमानित जोत मकाम की॥ जानकीव[illegible]भ प्रेमिन साथ सनेह सजोगत वासना बाम की॥ प्रेम अनन्य स
नेह विना नहि पाइहै प्रीतम स्याम सु साम की॥ १२८४॥ लौकिक काम करै न कभी परलौकिक सत्य स्वरूप सम्हारै॥
संत सोहावनै वैन सुनै गुनै नित्त उपाधि विकार विसारै॥ चित्त सुवित्त यो गाय रहै गहे ज्ञान सुारख्य विचित्र वि
हारै॥ प्रेम अनन्य सिया वर नाम भजै सब भांति सहाय उधारै॥ १२८५॥ नाम सनेह विनाधिक जीवन॥
देव रिषी स्वर पंडित योगि सुज्ञानी तऊ विन नाम न छीवन॥ संमत शास्त्र पुरानहू को वर संत कहै गुन नाम असी वन॥

॥नामने·॥

॥श्रीराम॥

॥१३०॥

नामविनानकहूंसुखहैसच्चजानिंएवेननलकीवन॥ उगमअनन्यप्रतीतिहिएनितनामसनेहविनाधिक[illegible]जीवन
१९८६॥ परमपरेशापरतत्वपरहूंतेपरपरानेह्प्रह्पावनीयप्रेमपोषकर॥ ईशानकोईशसुअनीशानकोईशपर्सों
पतसहैक्ववरक्विह्वहैवागवर॥ जेतेअवतारतेतेजोरेकरएकरसंसेवहरवारसरकारसजेसरहाडर॥ उगालअन
न्यसीतारामजूकोरूपगुनमहिमाअपारजानेकछूविधीहरीहर॥ १९८७॥ सीतारामनामजपप्रवलप्रतापवल
पायईशएह्तुच्छजीवकोसुगमहै॥ परिवएप्रतच्छकाकअरिकरतूतिकोनगतिलह्योजोनवेडवेडकोअग
महै॥ कुंभजवसिष्ठवाल्मीकअविलीकगुनगावेंकाकोकहेमतवहोतोमतमहै॥ उगालअनन्यजानकीप[illegible]न
खकंोतिप्रातव्रह्मप्रतिपाद्यव्योमव्यापकरसमहै॥ १९८८॥ सीतारामम्हाराजह्व्यिभव्यअंसगनलेश
महाविस्नुजोनजूहविस्तातहै॥ वासुदेववह्मनीभूततेजअंसअवतंसजानोतिन्हीकीछटाछीरसाईरवा
तहै॥ महाशंभुरंचकप्रकाशोवच्छकाशअमितअनंतगनभासअवहातहै॥ उगालअनन्यजोनभाषिएसुधोर
सवजानकीजीवनगनअगामलखातहै॥ १९८९॥ कोटिकोटिअवतारनावेभालमानविनतितुकासमानलहागिनती
नकाहूकी॥

॥नामने०॥

॥१३०॥

ग्रंश

चरिभुजअरुषभुजषोऽससहस्त्रभुजअनुगअनेकईशगनैकोनवाऽकी॥ औरसुरसिद्धमुनिसूरशसिजहजन
हप्राकृतरहितरहेहाजिरउछाहुकी॥ युगलअनन्यसीतारामजूकेसमआनकहैंईशकोनतुल्लरंकसीमसा
हुकी॥ १८२०॥ सीतारामजूकेपदपंकजअनूपअंककहींतेसंभवितअवतारजेतेख्याते॥ वेऽवेऽरिमगुनभरपु
निअंककहींतेवरन्योविशेषगिजेशगुनब्रातहै। चरनसरोजचिन्हचिंततविचित्रफलअमलउपासकनचि
न्हेमलखातहै॥ युगलअनन्यसीतारामकेशरनभयेहोतअनवद्यतनमनप्रानवातहै॥ १८२१॥ ऐसोनाम
धामगुनसीलसुबराईशानशोभासुखदानमानकतहूनपाऽहै॥ अमितअपारवलीमुखकोलमिझरवलता
रेभवसिंधुअनायासगुनगाऽहैं॥ वलकलवसनसुधारिमहामुनिगनदंडकीविपिनिमवठगेरूपपाइहैं॥ युग
लअनन्यगुननामतेप्रसिद्धवेदलोकहूंविदितताअनंतनजाऽहैं॥ १८२२॥ भरतलषनरिपुदवनपेरववे
दविदितविचित्रसुनेमोदउमगातहै॥ रमानाथछीरसिंधुवासीमहाविष्णुअशिशोककोनलेशसतसमुझोसु
वातहै॥ सीतारामहूतप्रानप्रियहनुमानहरिसदृशानविष्णुवाल्मीकिजीवरख्यातहैं॥ युगलअनन्यहूजेशरनसमकारिमन

॥श्रीराम॥
॥२३१॥

वेदमुरमोदउरसुगुनसोहातहै ॥ १२८२ ॥ श्रीसरजू[illegible]रेनुहींतेअजविस्नुअनंतउमेशभएहै ॥ शानसुमानवि
हायसहासुचिसवतंमोदप्रमोदलएहैं ॥ कोशलाअंसकेअंशनेसओतारअपारप्रकारनएहै ॥ युगमअनन्यओप
रहस्यसुसंहिताबीचप्रकाशरएहै ॥ १२८३ ॥ प्यारेरघुवीरजूकेआयुधअवधबुधसुद्धकैरजीवपीवप्रीतमभिलाष
ही ॥ कोटिकोटिचक्रगदाप्रमुखसुशस्त्रअस्त्रमहससमहअंससमतानपावहीं ॥ हिवांहतेरिवधनुवानसुखखानजाहि
धारेंनुजपरमपरेशमनभावहीं ॥ युगलअनन्यसर्वोपर~~कलेक~~सकलवसुवेदसंहितापुरानसदागुनगावहीं ॥ १२८४ ॥
तिलकत्यगुनतमतरनिभलकयुगरेखरमाँबिंदुचंद्रिकाहिकसुभालमें ॥ परमापियारेधनुवानरघुवीरवरबाहुबीचबसरस
साहयामहमालमें ॥ अधिकउमंगरंगलिएवैनबोलेवरवल्लभसमेतनामस्वामिनीरसालमें ॥ युगलअनन्यऐसेन
हीरसिकेरासुखसिंधुएकरसनहींमेरललीलालमें ॥ १२८५ ॥ मारेहैकोकिलकूककलापिसुनेनरुनीतनतापपसारेहै
सारेहैभूषनभारविहारअजारविकारसिंगारसुमारेहै ॥ मारेहैमीतअमीतसभीततियाहियहोतसोहायहजारेहै ॥ जा
रहेयुगमअनन्यनहीपियप्रीतिनिकेतवसेसुकुमारेहै ॥ १२८६ ॥ जीवनजाएहैनामपरेशप्रतीतिप्रतापविहीनकुकायहै ॥

॥नामने॥
॥२३१॥

॥श्रीराम॥

कायहेऔसरफेरफवेफलफाहिसफोजफजीहतपायहे॥ पायहेसुद्धस्वरूपसुधानिधिनेहकिएछविछावनीछाय
है॥ छायहेयुगमअनन्यसभीदृगदेखतज्ञानजहानहुजायहे॥ ९९७॥ जानकीजीवननामसनेहीसहीसतकोटि
नमांझभएकहे॥ कौनकहैतिनकीमहिमासबसबभांतिबडीअनुरागिनटेकहै॥ आपपरेशभएबसजासुकेभूलि
परत्वसुप्रेमसेंछकेहे॥ युगमअनन्यसोराईंधनधन्यजोनामकेसांचेसुसेवकनेकहे॥ ९९८॥ एकपलनामअभि
रामकोविसारेजोनतौनरकलीकालकोगुलामनसंदेहहै॥ कोटिनकरतकरतवकायल्केशपरपातकप्रपंचअ
धिकातदुखदेहहै॥ मरासावधानहोयसनमुखनामनिजजपिएहमेंशासबभांतिसुखगेहहै॥ युगलअनन्य
नामरहितअछोछसमसाधनसमूहतातेंकीजेनामनेहहै॥ ९९९॥ रैनअनवासरचित्तस्यामसंगसैनबैनस
मितकुमैनअरुनआपनेसुपारुए॥ जानकीशयोगविनवोलिएविचारिवरहूजिएहमेशाअंगअंगमोजछाइए
तीनोंलोकमोहशोकधोकेकोविसारिवीजाविषमनिहारिसुखस्वाद[illegible]सरसाइए॥ युगलअनन्यनामधाममें
निवासनित्तकीजिएपिउषपानभूषअभिकाइए॥ १०००॥ जानकीरमनरूपपेदिविकोचाहचित्तजाकेनअनतोन
रगुनअतीतहे॥

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥
॥२३२॥

ताकीसमताकीकोनउपमावतावैं।वलिजावोसुभमानसउछाहअविगीतहे॥ केतिनेकुतर्कनर्कस्वर्गअपवर्ग
त्यागिपागिरहेहहसरसालनवनीतहे॥ युगलअनन्यअनमोलमनिकायपायपायापरमेशस्वछ्छअसकअभीत
हे॥२००१॥ कवहूंकपोलकलकुंडलनिहारेंनेनअनविसरायकहूंसुमुखमयंककों॥ कहूंलोललोयनललाईमेंम
गनह्योयरहेएकटकछोडिछाबनीकलंककों॥ कहूंसिरसुरखसुपागजुलफनवीचविवशविशेषवंधींछत्ति
हिएडंककों॥ युगलअनन्यभवअभ्भसननमांझकहूंफेसरंगरसेलसेहंसरंकेरोवको॥२००२॥ कवहूंपदपंकजप्र
मप्रधाननिहारिरहेहियेहोयशाहिराई॥ कवहूंनवनूरनिगाहकेरेंभलभावभरेभवभानविराई॥ कवहूंअनुरागनि
केतसनेहविलोकहीं ज्ञानगरूरगिराई॥ युग्मअनन्यछकेकेचहूंपगानूपुरशब्दसुनेसुखसाई॥२००३॥ कवहूं
करकंजमनोहरमंजुछटाछकिजोहिरहेमुखमौने॥ कवहूंपहुंचीवरेरखरेसुशनिवासनिहारिजेहेंगुनगोने
कवहूंमेहदीरसरागसवीहलखावहिएसरसायसुभौने॥ युग्मअनन्यकहूंललचायविकायविभूषनवीचविछौने
२००४॥ कवहूंसुखस्वाहस्वरूपसोहावनश्रीउरमोतिनमालविलोके॥ कवहूंहुलसायहिएकमनीयकलाकरकोट
तकेअविशोके॥

॥नामने०॥
॥२३२॥

॥श्रीराम॥

कवहूंदुतिदाममनोहरदंतसुपेषिविनोदलसैंदृगरोके॥युगमअनन्यकहूंमृदुहांसप्रकासप्रकाशसुजोहिस
जेसुषधोके॥२००५॥खटकाहरनहारीखटधाललितलीलालोचननवीनसनिहारिएनजीकजाय॥लटकालो
नाईलालवालकलकेलिमंजुविविविधिविहारसखासंगरंगरसछाय॥अटकायराखतविशेषउरगुरुजन
जननीजनकउरवासिनसुप्रेमप्याय॥युगलअनन्यवात्सल्यरसवालनकोजीवनआधारसुखसारगुनगनगाय
२००६॥विसदविवाहउछाहदाहदुर्मतिदुखदहननहेतहरेलेतपलआधमें॥अमलउमंगउत्साहचित्तचा
हचपचौगुनचढतपुनिवसतअवाधमें॥मुकुलितकमलविशेषविकसनहितसहितउछाहकीकिरनपा
यसाधमें॥मिथिलाअवधकोविनोदअनवधिअतिअगमअपारकहेहोतगुनगाधमें॥२००७॥ब्याहउछा
सुलीलासोहावनपावनभावनभाविकभावहै॥गाइएध्याइएनित्तसप्रेमहींपाइएप्रीतिप्रतीतिप्रभावहै ॥नामने॰॥
याकेसमाननहींकतहूंमुदसंतअनंतवयानसभावहै॥युगमअनन्यसुनामप्रेमविनहोतनहींउरसा
वचितवावहै॥२००८॥राजिवलोचनलालललीरसरासरहस्यविलासअनूपम॥होतअखंडसपीन

दौन युगलअनन्यअवधेशप्रानप्रेमकलकेलिगुनगायमहामोहमनमानिए॥४

समाजसमेतनिकेतनौनिरूपम। नाचसुगानकलासषानसदामतिमानसपारस्वरूपम॥युगमअनन्यविलोकवेने
करुनातेजहाँगतिसीतनरूपम॥२००९॥विमलविहारवनलीलामुनिजनतापसमनकरनहितप्रगौंविचारिए॥
वात्सल्यआदिगुनभक्तननिमित्ततोननताहीयलयोगयथायोगउरआनिए॥सूरताप्रकाशाकरलीलाजेगरंगनिधि
अधिकअजीतरिपुसमनपछानिए॥२०१०॥श्रीरघुवंसविभूषनकोसुचिराजसिंहासनवैठनोसोहन॥कोटिनलो
कनकेकुललोकपआयकेहाजिरहोतगेराहन॥दानअनंतहिरण्यद्विजदीनप्रवीनअनेकलहेमुददोहन॥युग
अनन्यसोहावनलागतगावतश्रीअभिषेकसुमोहन॥२०११॥औरहूलीलाअनेकअनूपलसैंइनमध्यमनोहरमीठि
जाकेसुनेनहिंऔरसोहातउमंगसदाअधिकातअसीठी॥जोनअजानअलायककोरहभावैनतासुकीफूटीसु
दीठी॥युगमअनन्यसदागुनगाइएदीजिएजानजहानसेंपीठी॥२०१२॥चोरीनारीगायकोचरावनोसमेतदुख
लीलातीनहूसकीसुनतउपहासहै॥औरअवतारनमेलीलाकोनलेशकछुकहेजोवनायतामेरसनाप्रकास
है॥तातेसवऔरतेहमहामोडिमीतमनजानकीरमनगुनगावोसुखरासहै॥युगलअनन्यरतउतकीकुचाहछांडि
हूजिएमगनलीलागावतहुलासहै॥२०१३॥

॥श्रीराम॥

तीनोताप पाप दाप कठिन दुराप दल दलन अशेष शेष रहत न लेश है ॥ पारावार प्रबल प्रताप मार्तंड कोटि
सदृश हरन तम तोम सुविशेश है ॥ वैभव विराग राग वाग विलास न हित हेतु भवेश तु सुखकेतु सर्वेश है ॥ युगल
अनन्य मुद दायक दयाल जन सर्वस समदमा जस दहन अशेष है ॥ २०१४ कामकोह कठिन कुचाल कलि
काल काम कठिन कुदास नास कारक हुतास है ॥ महामोह गहर गंभीर नीर निधि विधित्तारक अपोत जो
त जाहिर प्रकाश है ॥ नीरज समान मुनि मानैं निवास हंस परम प्रसंस सुख सैापन सुवास है ॥ युगलैं रसा
स्पद नसु वन जस जडताकुमात पात हत अनायास है ॥ २०१५ ॥ कामधुक कामतरु पारस सकल सुर र
तन न तनन नित करैं मान त्यागिके ॥ दिविखदग हदहर गरभुकि जात जिय जोहि गुन अमर करन अनु
रागके ॥ देवधुनि धारहार मानिके चपल चित्त चलत हमशा परमेश जस पागके ॥ युगल अनन्य प्रान
जीवनी सुमूरि मूरि महामुद मोद पूरिर घोर सरागके ॥ २०१६ ॥ सातौ सिंधु सरित समूह व्योम भूमि
तल सात हुसमानज्ञ सबद तसु लाज है ॥ सहस सुमेर समगरता कहत लघु तीन देव वैभव न समता सुराज है ॥

५स

॥नाममे:॥

अनन्य

पावनपरमसारहारसुविसंतनकोस्रुतिसदग्रंथनसमाजसिरताजहै ॥ युगलअनन्यकोशलेशजसभा
गवसअहेविधिआयकवमेंरहिएभाजहै ॥ २०१७ ॥ जानकीजीवनजसजाहिरजहानजानिजगमग
जोतिजियजोहतसुजानहै ॥ महामोहमलिनमहाहिसंकुलितचित्तसहजसमअच्छस्वच्छकरनप्रधानहै
सुरसरिसहससमानसुखखानिनित्यअमलअमानमभनप्रदसदशानहै ॥ युगलअनन्यधनधसजनसे
ईसुभजाहिनिशिदिनकलकीरतिवखानहै ॥ २०१८ ॥ सोवतसपनसदसपनसमूहभरभोगतमवेशगु
नविनाविलखावहीं ॥ श्रुतिमतसंवतसदैवजसएकरसअरसहरनतासोंचित्तनलगावहीं ॥ युगलअन
न्यआतिअधमअजानसदसाधनअनेककरिहायविपुलावहीं ॥ २०१९ ॥ कोशलेशनंदनरशिकचिंचं
दनअलीनदगफंदनकेदिव्यगुनगाइए ॥ दोशकोशखंडनविदुखमुखमंडनउदंडताविहंडनचरितचि
तचाहिए ॥ रोशरसभंजनरहस्यरसरंजनहमेशमनमंजनसुजसस्वच्छध्याइए ॥ होशहोशसमनहारिदुल
दमनश्रीजानकीरमनकलकीरतिसमाइए ॥ २०२० ॥ जानकीजीवनजूकीलीलाअनुरागभरेसारससुधीसो ॥

जागतनत्यागतकलंककोटिकछजडम्बष
मतिगतिरतिहीनविषयावहीं ॥ ७

सुचिसुमतिसुजानहै॥ जाकेगाएसुनेसरसातसुखसारसतवासनाविकारवीजमुनेभवभानहै॥ एकएक
वरनविचित्रपूतप्रेमप्रदपावनकरनहारपापपुंजप्रानहै॥ युगलअनन्यसिरताजमुनिराजेवरत्तविशेस
सवेदेशोहेराव्यानहै॥२०२१॥ औरअवतारअवतारीकृस्नविस्नुक्षीरसागरनिवासीजेतेईशवेदगाइए॥ क
हाजसस्वच्छरह्सकोटिहूंनिसातमलाहोयतोवतावोनहींरंचसरमाइए॥ एकवाल्मीकिअविलीकगुन
गायोसतकोटिवाल्मविस्तिनगोपसुनिभाइए॥ युगलअनन्यऐसेअमितमुनीशईशतेसेहींकपीशगुन
गायोउरलाइए॥२०२२॥ राजिवलोचनरामकलानिधिलीलाअनंतप्रकाशअनूपा॥ नामेविचारअने
कलसेवसेहीयमेशांततरंगस्वरूपा॥ हैंसुखधामसभीअनमोलअतौहरेतमतामसधूपा॥ युगमअनन्यअ
संकरहोगुनगायकेपाइएप्रीतमरूपा॥२०२३॥ अवंधेशसुवनसनेहीप्रतिपालजूकीलीलायुगभांति
तामनीकेमनदीजिए॥ एकतोविशेषईशताईकेसहितसुठिदूसरीमधुररससारसुधापीजिए॥ धनुष
विभंगसेतुवंधनसुरंगसिलातारनप्रसंगसवविभवपतीजिए॥ युगलअनन्यमिथिलेशवाटिकाविहारआ

॥नामने०॥

हिकरहुस्यामहामाधुरसुनीजिए ॥२०२४॥ स्वामिनीसीयसमेतसियावरलीलाललामसुनोसुखदाई ॥ योतेन
आनउपायअपायविहीनप्रवीनसुसंवतभाई ॥ बोधविरागसमाधिसमयनहिगाइएजीतविचित्रवनाई ॥ युग्मअ
नन्यपरेशप्रतापतेपाइएधाममनिशानवजाई ॥२०२५॥ खासखसखानेसौंधेसुरभिसरसानेसजेमधुरमोलाय
मनमोहनभिजाजहार ॥ आसपासनाहरनवीनधारखीरसीरछूटतछटानसैंअजूवखूवरंगहार ॥ मोहनीमनो
जमईमालतीलवंगलतालसितसुकुंजवनीरंगरंगशानहार ॥ युगलअनन्यअलीगानतानसंगभलीयुगल
किशोरराजेरूपतखताजहार ॥२०२६॥ रामरघुवीररंगरूपअंगअंगमांझचाहिएसुभावचावजाहिरीजना
यके ॥ स्यामरसहीरमीरन्हाइएवहायहायहिरसहजारवारफेरिएफरायके ॥ कामकईकोटिचोखोटवरवेशशो
कजोकजकजिगरजगाइएभरायके ॥ आमअभिलाखलावराबैंश्यामबीचवारिहविचारिहघराजिएपायके
२०२७ ॥ प्रेमप्रवाहउछाहहिएपरवाइएपाइएपारखपीको ॥ छेमछयोपियोप्यारपियूषनकामकछूअव
आमअमीको ॥ हमहजाछटाछकिएछविभीजिएरामरफीकरमीको ॥ युग्मअनन्यअजायवचीजजगा
मगजोहिएशर्मसमीको ॥२०२८॥

॥श्रीराम॥

चोटचित्तवीचमेसमोयजोयजोगजराजीतिएनिसोचपोचसंगतिनिवारिए ॥ लोटपोटसंतपरपावनसुपासुष
रवारवारमएमिलेमोरधनठौरिए ॥ चोटचरवरनविनोरदिविधिलिएरोजचोनओजविदितप्रतच्छस्वच्छने
रिए ॥ जोटजसजिसमजमीनमजवूतजवतवप्रमप्रवरप्रवोधउरतेरिए ॥ २०२९ ॥ नामनेहनित्यनिराकार
निर्वीजनिरावरननिर्लेपनिजानंदपदहानिहै ॥ जानकीरमनगुनअमनअमानप्रियपरमप्रधानस्वच्छथा
नरसर्वनिहै ॥ शब्दपरब्रह्मउभयभाववाचवाचकवरकारकअनूपगुनअकथअवानिहै ॥ युगलअनन्यव्र
हवतुराईवेरीजानित्यागिकेविशेषरागिरहोभक्तिरानिहै ॥ २०३० ॥ जानीनहींजातकौनकरामातनारि
नेमजातेनरवरवशहोततेजोतत्यागिके ॥ मानीमदरदपलपावमेअयासविनाविदितविनाशकामकेलिरंगरा
गिके ॥ सानीसुखसरससमानीआसमानीमत्तिगतिरतिरीतिवहवायदेतहागिके ॥ युगलअनन्यछानीछे
मनीछलावछीनछापाछनछनछमछायनीछयागिके ॥ २०३१ ॥ अधिकअभागआगअमलसहागवाग
वासनाविकारकोअगारवडोरोगहै ॥ अवलअनंतआमआगअवलोकुअरेअरसअरागअतिआरतसंयोगहै ॥

॥नाम०॥

न्य
अकलअनँअकलंकअविसंकपंककारनकेलेशकोटशोगनकोसोगहे॥ युगलअनन्यवचोसावधानहो
यमीतमहाप्रतिकूलशालनायिकाकुभोगहे॥२०३२॥ रूपसुधारसपाननिरंतरकीजिएवीचघडीपलना
ही॥ येत्रहूमंत्रअनूपमंधामसुनामहुरूपसजोमनमाहीं॥ त्यागिसवैजगआसउपासनाभावनासुद्धसपा
वरचाही॥ युग्मअनन्यहेमशखुसीप्रभुभीतरवाहरएलपाही॥२०३३॥ चातकचाहचकोरघनपैवनद
जोनदेखतदृष्टिलगाई॥ वारहमासरटैपियहीपिप़ास्वासखैटपरपीरनपाई॥ नाशकियाजगसेसववास
नाभासनाहोतविरूपकहाई॥ युग्मअनन्यइहैमतउत्तमसाधनशीघ्रमिलैरघुराई॥२०३४॥ नेमऔप्रेम
रहैरसएकहीटेककोत्यागिनऔरहींतोके॥ सिद्धसचीपतिलोकससोकविचारिकेखाकनहींमुखफांके॥ मपोचितउत्त्वलउ
कौनकेहमुरमोरमहानमहातमतोमसुकीरुविवाके॥ युग्मअनन्यअचाहसुचाहनैवनहीनाके॥२०३५॥
साममसेमबनस्यामसवारभएसुकुमारतुरंगमगाई॥ सुंदरसाजसुसज्जसजेसवतीरकमाननिखंगसोहाई
रंगभरेवहुराजकुमारचढेटगजअस्वउमंगवढाई॥ युग्मअनन्यसिकाररउभयहितआजपयानमहासुरदाई॥२०३६॥

॥श्रीराम॥

जानकीरसिकजेसेलागीहेलगनहियजेसेवामहाममांभभोरसांभलीनहे॥ छोडिहैंविषास्वनविहरनमे
रामनेहायकेश्रमनरातिनितनीरमीनहे॥ भूलिहेमयानमववासनामकानसुभहियवमसुकोनमतिमेरिहंनवी
नहे॥ युगलअनन्यवाहचौगुनचदायचित्तसांचअभिमानकहंहोयसोप्रवीनहे॥ २·३७॥ हायनिकायभ
लायमलीविधिप्रीतमनामस्वरूपसम्हारे॥ कायतिहंतनमायसुचित्तअनितनिवारिविकारविचारे॥ धा
मस्वहावनवाससजोलजोवासनावेंरसेंसांभसकारे॥ युग्मअनन्यसुनामविनाधिकजीवनसंतसुवे
रपुकारे॥ २·३८॥ नामसेविहीनसवकरनीकलंकहे॥ योगीजपीतपीज्ञानीध्यानीजेतेजगवीचनामने
हविनागस्योमानहूंमयंकहे॥ वडीमानताईसुचराईवुधताईवडीनामभावहीनताकोजानोकाककंकहे॥
विभवविरंचिसुरराजसेसहसगुननाममहाधनसेविहीननीचरंकहे॥ युगलअनन्ययामेलेशहूंनवीचजा
नोनामसेविहीनसवकरनीकलंकहे॥ २·३९॥ नामकेअधारसुखसकलसुगमहे॥ पेखिएप्रतच्छस्वच्छ
अच्छखोलिआपहींसेनामजोनरटेताको अगमहे॥ वाकोदुर्लभतीनकालमेंसुगतिमीतविनामोलमजीसोविकाया
अखिल
हाथजनमहे॥

॥नामने०॥

नामें नेह वानन के मौज नछू न छन नित्त वित्त वर चाय सपने हूं मैं न गम है॥ युगल अनन्य प्रीति परम पुनीत पर नाम के अ
धार सुख सकल सु अगम है॥२०४०॥ सीताराम मञ्जु ललित ललाम नाम रस प्रद पावन पराग प्रेम प्रद श्री सधारिए॥ जो नर ज
अजे अजन जनक उमेश प्रिय हिए हरसायत लसत अविकारिए॥ जो नर जपावन परमि मुक्ति वाम गति लही अनु
राग के समेत हीं विचारिए॥ युगल अनन्य अवलंबतौ न धारि भूरि जीवन सुमरि रमम प्रान हूं ते प्यारिए॥२०४१॥
जो न पद कंज मंजु नख पांति प्रात द्युति व्यापक अचल ब्रह्म ज्ञान गुन गए हैं कोटिन हरि शारद शेष सनकादि महा मु
नि निमिष न तजें जानि वूझि निज ध्येय हैं॥ परा प्रीति रस सिंधु मांहि जे मगन निरंतर रसिक अनन्य तिन्हें प्रीयतम प्रेय हैं
युगल अनन्य जीव जानै एक रस सोई अपर अनेक रीति विपरीति हेय है॥२०४२॥ राम नाम रेफ वर विंदु औ
अकार स्वर रहित करे वर्ण तंत्र गत प्रान है॥ याही ते महेश अभिराम नाम धारि उर तारत अशेष जीव पातकी अ
जान है॥ महा मद मोहन मधुर सुधा हू ते अति चाखत सवाही हास रसिक सुजान है॥ युगल अनन्य अवलोकि सबै
शाकर वरन विचित्र ताते धाम सोउ निधान है॥२०४३॥ स्वास से सरटत नाम सुरति समजाय स्याम पावे अभिराम धाम साही
न
ततनमध्यम॥

वोलेवरवानीसुधासानीजससंगअरुसोएसुखतलनहीं रेमगुनवध्यमे॥तीनोतनअसतसुमतिसेविवेककरिपगे
॥श्रीराम॥ रूपपरमतुरीयअनवध्यमे॥युगलअनन्यसंतरसवंतसाधसजिसोभनसमरहसुखमिलेमीतसध्यमें॥२०४४॥सीता
रामनामकेसरनगएचैनहै॥जहांतहांकठिनकरालकलीकालफौजसंसतिसहायसेंजमजेअनैरेनहै॥
मांगेनहींहैतवडीएकोचोराश्रारनहीमानैनिहारजमजोरसमसेनहै॥वेडेवडेज्ञानीध्यानीलूटिलिएपल
मांझवच्यौनहेरवातकोईजोगीजतीजेनहै॥युगलअनन्यअवलंवचेतहेतयुतसीतारामनामकेसरनगएचै
नहै॥२०४५॥नामकेरटनवीचपांचविघ्नदुष्टहै॥प्रथमप्रकाशलोकवासनाद्रुरासदूजेसिद्धताईचाहहिए
कोटमेकोकुष्टहै॥तीजोदेशतीरथअटनविधावाहवहुपटनकथनचौथोसोकरनसुष्टहै॥पांचवोंकविनकु ॥नामने०॥
शूलाईनिपुनाईनिजसुजसकेहेतदुखहाईनहीपुष्टहै॥युगलअनन्यअतिकठिनउपाधिसवनामकेरटन
विचपांचविघ्नदुष्टहैं॥२०४६॥कौनसुखस्वादजोननामजपिपाइए॥कहिएतुम्हारपदकमोहूंसेंगम्भूरमनक
परकलंकछावनीनअवछाइए॥लोकमाहिमानपरलोकसुखखानिहोउनामकेअधीनतातेखूवनाहिगाइए॥

जानितो हि आपनो मनेनही सांचो सीखवें उमाने गो जो भीत तो अभीत सरमाइए || युगल अनन्य जनि भूलि सभ
रम भग को न सुख सार है जोन नाम जपि पाइए || २०४७ || नाम जप त्यागि पाठ पढे सो अधम है || तौन सठ सुधा सुछि
मर सम सुपान तजि हालाहल लेहै तुरचे यतन कुशम है || पायमनि मानिक अमोल लाल फेरि जड पाथर खटोर बौ
रमो रहर मर म है || महाराज संगन ख़रंग अंग पीछिहे यसे व्रसा रहरि इडनो नाहि गम है || युगल अनन्य अवलो
किए न जरने क नाम जप त्यागि पाठ पढे सो अधम है || २०४८ || राम नाम महिमा अनंत संत श्रुति कहें जोन शिव शे
षशुक मति अनुमाने है || कुंभज से आदि मुनिराज लेख लस्यउ हल गनन लगाय त्यायल पाकार ध्यान है || और र
हं अनेक साधु आधि व्याधि हीन हो यस मुभे स्वरूप गुन छोडे जग मान है || युगल अनन्य कोन भांति कहें गाय गुन
महामति मेरे सब भांति न अजान है || २०४९ || जोन नाम सबल संम्हारि हनुमान हि एगए सिंधु पार रहचो लं
कविनशंक के || जोन नाम प्रवल प्रताप धारि कुंभसुत पियो वारिनिरो क्योंति विंधि विनावंक के || जोन नाम सुमिरि
गनेश पूजनीय भये शंकर पचाया काल कूट होन अंक के || सोई सुखधाम नाम सवेश सिरमोर युगल अनन्य को अधार
अविशंक के || २०५० ||

धि २

॥श्रीराम॥

एकमहापापीपरितापीजगजालजापीसापीसंतशास्त्रनकोगुरुकोविशेषतै॥कोउदिनकरतकरतपापपुंजपुनि
पातकीअजारवशभयोराहद्दखतै॥आरतताकेसंगीखलकाठनकुरंगीजवकछोतिनसनहैंविरामभीतभखतै॥
युगलअनन्य[illegible]इहकेतनविष्णोहप्रानभयोगयोधामअद्भुतगुनरखतै॥२०५१॥राममनामअभिरामअर्थशात
शापश्रुतिसारहासमथेनहीकहेंयथायोगहीं॥आगमअथाहतरुकहैंहोयच्यासिअर्थेअखिलअनर्थव्यर्थजाय
जातेरागहीं॥रामरूपरफपरब्रह्मपरमेशपरतत्वपरधामव्यापकविशिकअशागहीं॥युगलअनन्यरसराजकोफल
कर्तामेंललिततविचित्रसुखसदनसुभोगहीं॥२०५२॥मिथिलेशानंदिनीस्वरूपकलकामप्रदअसरहितसदृस
छविखानिहै॥रेरखअकारअविकारदिव्यजीवगनमधुरमकारकोअकारवउप्रानहै॥विशदसुविंदुमध्य
मायावेदमलीतिमिमानिएहमेशशंकतिलनअमानहै॥युगलअनन्यअनमोलमनिनाममांभअखिलसुवस्तु
रटेजाहिरसुजानहै॥२०५३॥सीताराममरूपअर्द्धमात्राविहाररसमदनविचारुच्चायलाईचित्तटारिके॥ललित
अकारलघुलखनलखाईरतहीरखअकारसोईशत्रु[illegible]लप्यारिके॥मधुरमकारमनमोहनभरतभावबहुभउ
चारनित्तकीजेमननमारिके॥

॥नामनं०॥

युगलअनन्यनाममहाउत्साहगुनचरित्तकरंवलछिपरेध्यानधारिके॥ २०५४॥ जगमेवगेरेगुरवाकनफूका॥ ज्ञानविरा
गनेनेहरतीचित्तवाहअथाहविषयविपरूका॥ लोकरिझापैवेहेतअचारसरंभसभीकरनीसमलूका॥ कल्पितपंथलिए
मतग्रंथपरचेतजिकेजपआखरहूका॥ युग्मअनन्यकीकौनसुनेजगमेवगेरेगुरवाकनफूका॥ २०५५॥ मिथ्यकरैगन
तीकेविनावकवायसरीतिअनीतिअचूका॥ संतसुजानजेनामरतेतिनकौकरैनिंदजोमोचवउलूका॥ मंत्ररहस्यनले
शलसेवैवित्तलेननिमित्तहींकानमेंथूका॥ युग्मअनन्यमहाठगएजगमेवगेरेगुरवाकनफूका॥ २०५६॥ सांचेसनेही
सियावरकेसरवसुवरैंहरिकोहियहूका॥ जिनकेवरवैनसुधेशमेरेसुनिकेजियजागतजोतिभभूका॥ कामकखायक
लंकमितायभगायकेलौकिकचाहचमूका॥ युग्मअनन्यसम्हारिरहोजगमेंवगेरेगुरवाकनफूका॥ २०५७॥ पांवरप्रेतप
तीपटुपातकीपंचप्रपंचपगेपलपानकी॥ आपुसमेंमसमिटसवहीनिजनेहनिहारिनिशांतसमानकी॥ हेइतंतेरहशामहादु
खसेथसलाहकेराकहुंअैररंजानकी॥ युग्मअनन्यउचाररतनामतजेनधामगएजसजानकी॥ २०५८॥ स्वामिनी
सीयसहायसदासिरसीलसुभायसजोसुखदाई॥ कोटिनकालकुसालेरतउमीतमेरेमुखसंकमाई॥ मायामका
न स

॥श्रीराम॥

महवालीसोऊडरपायेकेआपहीजायछपाई॥युगमअनन्यअहेतुकृपाकरनाकरुनासियजीकीरुखछविछाई॥२०५९
वारकजीहेतजानकीजोनिजनामललामउचारतनेही॥पावतहैपरपावनधामसदाविश्रामनिकेतनिरेही॥लोकक
दंवनकीसुखसंपतिकोनगनेछकिप्रीतिविरेहीं॥युगमअनन्यसुधन्यसोईजनजोरटलावतसीयसनेहीं॥२०६०॥श्री
गुनअपारननिहारतनयननेकसकृतशारनव्याजवहतनिवाजती॥गाथागुनप्रगटअछटछटनादियुतनिपटनिहाल
करिसाजसुखसाजती॥रघुवीरधीरहूँतसरससुभावशीलसकुचशारनपालनादिसेविराजती॥युगलअनन्यअैसी
स्वामिनीचरनरजधारतसुशीमनेहनौवतैंसुवाजती॥२०६१॥राजिवलोचनरामसुनामप्रतापअतापकरैंततकाले
देखिचहंपिउचारिमलाकछुछोडिकुसंगकुरंगकसाले॥पूंछिसप्रेमप्रभावपरत्वसुसंतनकेदिगजायकेहाले॥यु
गमअनन्यमिटलोखरकापलनामउचारतनित्यनिहाले॥२०६२॥श्रीगुरुकेपदपंकजध्यावतपावतप्रेमअनूपमेसारा
मोहमहातमतोमनशावशाज्ञानसुभक्तिअनेकप्रकारा॥दस्यकेओरतेवनिकटघटवासनावंदविलेदअपारा॥युगम
अनन्यकृपालकृपादृगवाहेरतेरंगउमंगप्रचारा॥२०६३॥संतसमूहसियावरकेवरवल्लभपादसरोजमना ऊं॥॥॥

॥नामने०॥

जासुकृपाभवभानमिटैदुखखारअमेयबलहूंहरषाऊं॥ निर्मलनेहसुसाहियपूरनपावनपाछैहमेशाआगाऊं॥ युग्मअन
न्यकेआसरएहीसवहीविधिसंतसुधाकनपाऊं॥ २०६४॥ श्रीमन्मारुतनंदनकेपदवंदतप्रीतिप्रतीतिप्रकाशैं उज्वल
चित्तसुचाहलहेहगमानसरंगरहस्यप्रभासै॥ श्रीरघुनायकपायकप्रीतमकोममहीयभरोशनिवासै॥ युग्मअनन्यप्रप
न्नकृपानिधितेरदृष्टिसेंवस्तुविभासै॥ २०६५॥ वासनामोहमिटैमनकोतनकोउरआवतस्वच्छसबूरी॥ जनकोपुनि
आसभरोशकहांजहांजागतजोतिविरागहुजूरी॥ तिहिहेतनिरीहनिकेतसदानिर्वैरसप्रीतिकरातनतूरी॥ जोसुदयासव
विसविलासविनाशलहेनवकेलिवनूरी॥ २०६६॥ ज्ञानीगनैसगरतागुनपायनलावतआपनेनयनमेकोई॥ धनमा
नमहोदधिमानगिरेवरवैनसुनेनहिहोससजोई॥ अज्ञताद्दामफसेजनजेतिनकोअधिकारनहींतिलहोई॥ युग्मअन
न्यसुभाषितवैनभयेनिजमांमहींजोरनसोई॥ २०६७॥ विस्यविलासविभवउम्रवसवकौंतुकछमनहींहियभासै॥
पन्यविपाककलाकटुतीछनभीतजमीतविचारतत्रासै॥ जानिविषैरतऔउनकोदुखरूपनहींमनमाह्प्रकाशै॥ यु
ग्मअनन्यसियावरप्रीतिअखंडप्रमारहमेससैकासै॥ २०६८॥ झूलना = वैरागहिमागअसागहैजीनहांआगकाज्वाल
जवालनाहीं॥

॥श्रीराम॥

वनावागअनुरागलयलागअउलनहांभलकमरखूबमुखचंदचाही ॥ बिलाशक्कवेहोशसरसारहोवैखुशीखोफररगु
जरनहिगाहगाही ॥ वनाविरहमिररंगसंगरंगहरदमशावरशोरसुनिरुवामनवेतवाही ॥ २०६९ ॥ वरा॰परहसाकोराह
वोंकोजगतत्यागिमैदानकीसैरभावे ॥ रहेमस्तमाशूककेनाममाहींफिकरजिकिरचितवेनहीसवरलावे ॥ पिएनीरनि
र्भरननिर्मलछुधाव्याघछूयवास्तकछुकपावे ॥ परानंदजोजानकीजानकाहैसोतोआपहीआपसवनरहछावे
२०७० ॥ मीतमौतफिरदीसहाशीसतेरतनकजागिकेदखतेंएकवारी ॥ भलआपनेआपकोसपनआयाउमीदशामेमौजमा
नाअनारी ॥ तीनकालमेवंधनमुक्तहेतूंपडीकल्पनाकठिनगलविश्वभारी ॥ भनैयुगमउसताददकाहुकुमहायमतुमेचाहि
एवाहनाचारवधारी ॥ २०७१ ॥ वुहीहददवेहददकेपारप्याराजिगरवीचहरसमेंखुशहालहैजी ॥ वलीपीरपेगंवराईशाजि
मनूसहाशीमनवावेहालहैजी ॥ वजहदारमानसमुवासुभगासरकाअजवरंगरसमहलमगालहैजी ॥ वहमभिटीमनकीक
टीकुल्फतेसवसनमसायसतवीरकसछ्याहहैजी ॥ २०७२ ॥ हरितरुसमहरंगकारहसरोशानवहरतफेदरयावसमसह
जररसे ॥ हसरतकनहीमुल्लेगीमुझेहरगिजसमेसमेपरआयरसरंगवरसे ॥ हक्ताभलाजगजीवजंजालछूटीलुटीग
ईमैआपनेआपकरसे ॥ हजमहोगयाहालआजगेवअंदररुवायुगमजानानकाफहमपरसे ॥ २०७३ ॥ जानकीवल्लभ

पेटभरि

रूपअनूपनिरूपकेरश्रुतिसंतअनालस॥ नामअनंतवनायकेहैंगहैंगेयविचित्रविभासअलालस॥ श्रीरघुवीरसिरोम
निकोप्रतिपादनहीसवठौरअचालस॥ युग्मअनन्यनओरविवेकवकेकछुओरसोजानिएवालस॥२०७४॥ ज्ञान
कीजीवननामसुधारसधामप्रतच्छकहेसकुचाती॥ ताहितेब्रह्मवरेवहुधाश्रुतिगोनसुनामहीलेतअघाती॥ सारववि
धूसमुन्नायुसजायुलखायुतियावररंगरंगाती॥ युग्मअनन्यपरत्वप्रकाशकहेश्रुतिसारसहैवविभाती॥२०७५॥ संत
मतंरउननिषिमहावीरपदपदुमप्रनामकरिकहोंज्ञानभानको॥ श्रुतिनसुसारउपनिषदविचारवरकियहिंउद्धारपारसा
गरअमानको॥ प्रथमप्रमानउपनिषदप्रधानरूपदुताहितेगनावोनामसुखदसुजानको॥ युगलअनन्यत्वपरमप्र
काशपदकरिहैंकतहुवोधकारनअज्ञानको॥२०७६॥ ईशावास्यकेनकठप्रस्नमुंडतैतिरीयऐतरीयुअमलरहस्यरस
रासहै॥ मांडूककलितकैवल्यछांदोगपुनिवृहदअरन्यमहामोदनकोवासहै॥ हंसपरमहंसमैत्रायनीप्रतच्छस्वच्छ
श्वेताश्वतरहुउरवनकविकाशहै॥ युगलअनन्यतीनतापिनीरहस्यादिव्यसुनतगुनतपरमअसुखरासहै॥२०७७॥
ब्रह्मविन्दुआत्मासुनामचूलिकाविचित्रअमर्तसुविंदुसूक्षुपोरुषप्रधानहै॥ कामधेनुकलितकोशीतकीअथर्वसिर
ब्रह्मरामपरसवसुभअभिधानहै॥ वीसअरुचारउपनिषदसुसारइतकियोनिरधारप्यारसहितसुजानहै॥ युगलअनम

॥श्रीराम॥

मतिमलीनबखानिसेकपूरनकरनहेतुकरुनानिधानहै॥२०७८॥अर्थधर्मकाममोक्षचारिहूंविदितवेदनउखेदरस
मननिमित्तमोक्षसारहै॥ताहीकेमिलनहेतअखिलउपायश्रुतिवदतसुवैनचैनदायकअपारहै॥कर्मकरिसंचितकहूं
वलोकशोकयुततातेनिर्वेदयुक्तब्राह्मनउदारहै॥युगलअनन्यकर्मकांडतेनिरासहोयधोयबीजवासनाविका
रव्यवहारहै॥२०७९॥सीतारामनामरूपगुनसनेहलीलाललितपरत्वधामधारनाहंमशाहीं॥जेतीउपनिषतप्र
धानतेतीरनत्रैनहूसरीनरीतिकोनिरूपतीसुवेशाहीं॥लक्ष्यंप्रमेयमेकेतसबलसुवैनबीचबचनविलासभांतिविवि
धिविशेशाहीं॥युगलअनन्यअवधेशपरमेशबिनबूझिएनआनईशकेशहूंसंदेशाहीं॥२०८०॥अगुनसगुनयुग
विसदविभूतिवरवेदविदवदतविवेकविलसायके॥शब्दब्रह्मऔरपरब्रह्मवपुजानकीशजानिएसुनैनकोउद्यारि
हुल्लसायके॥सावधानहोयखोयवासनाअनीशमतसुमतसुसंगसरसाइएलसायके॥युगलअनन्यबूझावैमत्रैंस
जेससिंधुनाहकेवितायएनभूलिअलसायके॥२०८१॥सततचितमोदबढनमूरतिमनोजओजकदनकरनकमनीयर
रमनीयतर॥रोमरोमसोमसतसहसविभासवरअमरअजरहेरिहोतअनायासनर॥जाकीनखप्रांतकांतव्यापक
कहंववविस्ववारनवितानतममोहसिंधुपारकर॥युगलअनन्यसीतारामअभिरामनाममंतरसवंतवेदवेद्यवागबुद्धिपर॥२०८२॥

॥नामनं०॥

कर्म उपासन ज्ञान सुभक्ति परा श्रुति सार विशेष विचारे ॥ आदि द्वितीय रु तीय सु रीति मे त्यागि करे परु प्रेम सुधारे
हे सब वेदन को मत उज्ज्वल विश्व समूह को भान विसारे ॥ युग्म अनन्य वहै न कहूं नित भौन मे वास किए सुख पा
रे ॥ २०८३ ॥ पातंजलि सांख्य न्याय वैसेषिक मीमांसा ते सहीं विचार सार वेद अंत जानिए ॥ व्याकरन ज्योतिष
कलप सीक्षा सब्द छंद नवल निरुक्ति छै रु अंग अनुमानिए ॥ काव्य कोश हास बिना आभनै नाटकादि ते सेहि
पुरान उपखान पहिचानिए ॥ युगल अनन्य जानकीश परतमत्व कहत करैं व मत असतन मानिए ॥ २०८४ ॥
जानकीजीवन से परमेशहू को ऊकूर कहा चित आने ॥ ताकिए ताको प्रमादहूं से मुख नाहि निहारत पातक
खाने ॥ स्थावर धत्यो परमारथ तैसन सेवा हनन कीजे स्वाद समाने ॥ युग्म अनन्य प्रसंग सजो सुख सार सजाति न रंग
रंगाने ॥ २०८५ ॥ कोटि करैं व कलाकर कारन कोशलराजकिशोर सुजाने ॥ खोटि कुसंग कुरंग गरंगो मत्त स्वछं
सुरंग उमंग प्रमाने ॥ आदि गहे गुनादित्य दिवाकर श्री गुरुदेव स्वरूप पछाने ॥ युग्म अनन्य असे पविभ वास य
स्याम सु अंस समहीम्न मभानो ॥ २०८६ ॥ तीनहूं कांड सें न्यारी लसै रस रीति पुनीत प्रभा पति प्यारी ॥ झीनहूं ते अति
झीन लखि गति कोउ अनन्य रसीर सधारी ॥ मीन समान सदा सुचि स्वाद सुलीन विकल्प विसारी ॥ युग्म अनन्य

प्रवीन

॥श्रीराम॥

कृपालकृपावलवृक्षिपरीपियप्रीतिसुधारी॥२०२७॥ मोहमएभ्रमतेमनमेंनिजमानेंतधीरगंभीरप्रलापी॥ मूरखपंडितमा
नमूरखानितनीचनसेसनमानसतापी॥ ज्योंदृगहीनसुहीनकेआसरेजातसुनैनविनादुखव्यापी॥ युग्मअनन्यखरावी
उमयप्रसवभांतिरहेविधिमूढमिलापी॥२०२८॥ सीतारामसुजनसनेहीसुखसारस्वारस्वाहेवसरनसर्वेशसिरताज
पर॥ जीताजोनजीवशंकरहितअहितहरपीतांप्रेमपूरनपिपालानामछोडिडर॥ सीतागुनद्वैव्यविपरीतापथप्री
तित्यागिरीताजगजानिमीतामाहिरहेभावभर॥ युगलअनन्यगीतागावैंगुननेहनीताकाढनवुनीतानीतातीन
गुनहीनघर॥२०२९॥ छाकेछटाछविछोंहछजीछितिछकिहद्वैंगतिभरशसीकी॥ सीकीकटाक्षननैविधिकेपि
यहोशनहींहियहानहंसीकी॥ हंसीकीविचारविहारलसीवसीआयअलीनकैनैनरसीकी॥ सीकेकहेसुखहोत ॥नामनेव॥
वडोवलिसिजेसमेसुखमाननहीकी॥२०३०॥ गाढएगीतसलोनीसहांसुखसारसवारसनेहसंवारी॥ वारीक
रावपुप्रीतमपैतवमोजअजूवउहोतवहारी॥ हारीहिएहरसायतहींजगकेहिसिसेनवनेहनिहारी॥ युग्मअन
न्यनिहारीकेरेनितिजानकीजीवनराहुसंभारी॥२०३१॥ मिलेकवसामसलोनोहमवहुवासनवीतेवियोग
व्यथाई॥ खिलेकवकंजमुमंजुसखीसकुचायरघोदुखदैखिदुराई॥ मिलेकवभूमिभरोखनमेमतिसांवरसंगउमंगसजाई॥

युग्मअनन्यापिलेषनेप्रमअनेमउछाहअथाहँसजाई॥२०२१॥प्यारीजूकेकरमेंविकानेस्यामसोहने॥नेकहूंनजरतेनवि
लगकरनवारहालअमुतलाललली मनमोहने॥पागप्रेमपागहोऊसुधिनरहनकोऊसवभांतिसुखसोऊसुधा
रसहोहने॥नेहअवलोकिपैंकलितकेलिवेलिवरसरससेहलिनकेलागिनित्तगोहने॥युगलअनन्यअलेवेली
छविछांहछकिप्यारीजूकेकरमेंविकानेस्यामसोहने॥२०२३॥तीनकांडवेदवीचविहितवखानेवुधतामेंकछु
गांससोविवेकसेविचारना॥कर्मकांडयोगत्यागतीरथअटनआदिकहिएउपासनाअनेकहिव्यधारना॥ज्ञान
प्रभुरूपवोधविगतविरोधक्रोधसाधनसज्ञायमहामोहमदमारना॥युगलअनन्यउभयभेदहैंउपासनामेंज्ञानि
हैंसुजानतोनिगुनतमतारना॥२०२४॥कर्मकेआगेउपासनाजोनहैतोनपरारतिरागविचारो॥साधनमांझग
नारथसोहठत्यागिकैनैनसेनीकेनिहारो॥श्रीअवधेशपरेस्वरकीजोउपासनासोअतिऊचउचारो॥युग्मअन
न्यसुज्ञानविज्ञानहूंकोफलसाध्यउपेन्नाधारो॥२०२५॥ज्ञानिवोज्ञानप्रमानसहीपरमेससमीपउपासनाहै॥
धातुकोअर्थविचारिएजूतववानीविकारनिकासनहै॥सेवासमीपविनानसवादविवादकोरंचअवकासनाहै
युग्मअनन्यसियावरकेपदव्यापकेकंजविकासनाहै॥२०२६॥जोनवरवोधरैनमांझजगसैनकरैंपरेभवकूप
विसरायपरमेसहीं॥

॥श्रीराम॥

तीनज्ञानधननिसिमध्यजागेसंतजनहोयकेअचिंतविसयओरसेंविमोषहीं॥ जौनतनमीमांझजगजीवजोगभाग
रततौनहींमेंरामरतसोएअविसेषहीं॥ पुगलअनन्यपाकीरहसअनूपगतिवूझेविनाविमलनहोतसुखसेषहीं
२०९७॥ होयमहामदमस्तफकीरअहीरहकीरवहीरवहोए॥ वोयविचित्रविहारसुवीजअतीत्रहिएगुनगेयगहो
ए॥ धोयकेहाथउभयसुखसेंतुषसेगातिज्ञानगरूरदहोए॥ युग्मअनन्यसमोयसहोसतसंपतिदंपतिनीरनहोए॥
२०९८॥ सखासुचिसुंदरीधंनुहींसेअभिलाषदसाद्युतिदूधदुहोए॥ जानकीजीवनप्रीतमकेगुनमोहनमेमन
मीतमोहोए॥ लोकहूवेदहसेंहोयजुहासमहाशोकसनाहसुभागसहोए॥ युग्मअनन्यअसारअकारविकारविहारवि
हीनवहोए॥२०९९॥ काजकहाजगजीवरिझाए॥ केवलकामकलेशकुमारगदेशकुवेनसेअंगभिजाए॥ प्रीतिप्रती
तिहरेपलमैंपलमेंजडजायरिझाए॥ चावलराउसमानसहाउविहारनहावकेवीचसिझाए॥ युग्मअनन्यसु
चेतिभजौप्रभुकाजकहाजगजीवरिझाए॥२१००॥ करतकुसंगकुंभिलायकमनीयअंगअधिकअनंगजोसजा
निजीवलेतरे॥ भरतभदेशमावहरतहरेशचावमहादुखदोषवावआवहनिदतरे॥ डरतनदष्ठगुरुसंतसेंअसं
कहोयजरतमरतआपओरकेउपतरे॥ पुगलअनन्यअनुहरतनतोहिसठहठमठसाजिनामरोसुखहेतुरे॥२१०१॥

नलमे

॥नामने०॥

महामोहमहीपतिकोदुखदारुनदाहदह्योदिसिफैलिरही रहीबोधविरागकीबातसभीचितचौगुनज्यौंगुनवा
॥श्रीराम॥ ढ़चढ़ी चढ़ीचैनअमैननहाथलगीजगीजालजवालवढ़ालवढ़ी ॥ वढ़ीयुगमअनन्यकीमूरतिस्वच्छकुसंगको
पायकुरंगमढ़ी ॥ २·१०२ ॥ वढ़ीप्रीतिप्रतीतिउनीतभलीमलीमानमरोरमनोजमढ़ी ॥ मढ़ीमीतसुनेहकेतारगढ़ैछविसांव
॥२५५॥ रीचित्तकेवीचचढ़ी ॥ चढ़ीवामअटारीविहारीविनादुखदाहकीपाटीविशेषपढ़ी ॥ पढ़ीवातनभलेभुलाएकहूंजिय
युग्मअनन्यविखाहवढ़ी ॥ २·१०३ ॥ जड़ीवूटीवथाहींपियावतहौअनजानेव्यथादिनदूनवढ़ी ॥ वढ़ीवेदनाहीयके
माहिजगीजवसेसखिसूरतिआयअड़ी ॥ अड़ीनेकरहेनहिरैंकिहूंसेमतिमेरीअगारकेद्वारखड़ी ॥ खड़ीपेखतराहभु
लायगईभईमानहूंजीवनजानजड़ी ॥ २·१०४ ॥ जानकीजीवननामसुप्रीतिप्रतीतिविनाधिकजीवनतेरो कौनउपा ॥२५५॥
यकरैमनमूरखवस्तुविचारविनाहठछेरो ॥ सांचेसुसाहेवसंगीसमागमकीजिएचाहचढ़ायसवेरो युग्मअनन्य
सुनामभजेविनभांतिअनंतमिटैनअधेरो ॥ २·१०५ ॥ जिनकेनशक्तिकाव्यकोशकोनज्ञानकछुलोकरीतिआदि
कविचारतेविहीनहैं ॥ तेऊपदललितविचित्ररचेंअनाप्रासशंककोनलेशचित्तवूझिएप्रवीनहैं ॥ परप्रेमपूरनकरं
वसायननकरिमिलननहीपावैंसोउसहजनवीनहैं ॥ युगलअनन्यसिप्रास्वामिनीनजरनेककरतअशेषमोहपावतअरीनहैं ॥
२·१०६ ॥

^गति

अमेज २

॥श्रीराम॥

तीरथ व्रत अनेक हु नेम अप्रेम हु प्रेम में नाम सोहावत ॥ ध्यात हु ध्यानु सु ध्येय हु मैं ज्ञेय सु पेय अपेय ज्ञो हावत ॥ अक्षर औ
निरअक्षर में छवि छायो विचित्र मनोज सोहावत ॥ युग्म अनन्य अतेज सुतेज अंगेज में नाम लखावत ॥ २·१०७ ॥ भा
व विभाव उद्दीपर्दीप न सीप अ[illegible]पन में अवलोको ॥ जाग अजाग अभाग सभाग अदाग हु दाग में नाम विशोको ॥
ताक अताक अतीर सतीर अधीर हूं धीर के माझ न रोको ॥ युग्म अनन्य लखो सब में निज नाम अनाम सुधाम अदेको ॥
२·२०८ ॥ बोध अबोध असाध ससोध व अरोध विरोध में नाम सुव्यापक ॥ दाम अदाम अवाम हु वाम अराम कलाम
ललाम अतापक ॥ मास हु पाख घड़ी दिन वर्ष अकल्प सुकल्प विकल्प मे छापक ॥ युग्म अराग सुराग में द्वेषिय नाम
परत्व के व्यापक ॥ २·१०९ ॥ है नहिं ठौर कहूं तिलहूं भरि मीत जहां नहि नाम विराजत ॥ आतम औ परमातम में अन आ
तम में छवि नाम को छाजत ॥ मर्म महा मतिमान लखैं चित चाह सें स्वाद चखै सुख साजत ॥ युग्म अनन्य अपंक अ
संक कलंक विनाम वमान में भ्राजत ॥ २·११० ॥ परत्त परात्पर ताहू पर प्रेम सार अमर मरन हार नाम सुधा घन है ॥ नाम
हूं के आग को ऊख कहे कलिकाल वशाम गर पिसाच ताको लग्यो तन मन है ॥ अखिल अभागी दिल दागी आगी लागी
ताके भाल तिम भरि भागी सुद्ध सुरधन है ॥ युगल अनन्य ऐसे पावरनं देखयो गसौं पत हैं शोग रोग दुख द्वंद्व मन है ॥ २·१११

अनन्य ६

॥नाममने॥

रतीकेवजनसनऊनदसवीसतीसभागनामनेहजोउदोतहोयहीयेमें॥ताकोपापपुंजसतसहससुमेरसमनासेततका
लख्यालहीतेजानुजीयमें॥ऊपमानकोऊदुखदुरितहरनपारअनुपमनामकोप्रतापविनमीयमें॥युगलअनन्यकीजे
रटनमेनहसंगछोडिकेकुरंगपगेरहासीयपीयमें॥२·११२॥जीतिएजासजवालकोकारनचित्तसुबुद्धिसहायविचारी
पातपरनहिउज्वलधर्मकहूंश्रुतिसंतनहेंनिर्द्धारी॥भोगसमोगविहायउभयनिर्वेदअखंडसजोश्रमधारी॥युग्मअ
नन्यसुनामरटेसुचिसंगमसाथलहेसुखभारी॥२·११३॥प्रीतिप्रवाहबढेजिहिकेजियताकोनसंसृतिभूलिकहूंहै॥
आठहूंजामरहेमदमत्तअवस्तअनन्तस्वरूपचहूंहै॥देहकेवारकरावितवृत्तिकरैंनहिआपनीरोषदहूंहै॥युग्मअ
नैंसुसंतसियावरमोरसमेतनखेरछहूंहै॥२·११४॥काहूसरागनद्वेषकरैंकछुआनतमसंगपरांतमपेखे॥भावनानेह
निरीहमईसगुनाअगुनायुगसंधिपरेखें॥नामउचारविनाविधिवेनउचारतमीचसुआपनीलेखें॥युग्मअनन्यसजे
सुखस्वप्रतपरावरप्रेमचखैं॥२·११५॥मोनसमाननसंजमआनपेचाहिएवोधसमेतसुधारन॥औगुनपंचदसो
दुखदायकवागतजेमुदहोतहजारन सात्विकसंगसदाकरिएहरिएप्रभुनामकेवारअवारन॥युग्मअननन्यमनोग
मनोरथवीजविहारिएवातविगारन॥२·११६॥जानिएआपनेहीमेंभूलिनमानवितानमहादुखदानी॥जानिएजीव

य

॥२४५॥

॥श्रीराम॥

मं

चराचरतेलघुआपकोभेरविचित्रविधानी॥काहूसमेनविताइएवैसकोव्यर्थसुसंतसमागमठानी॥युग्मअनन्यसु
सांतिसमेतमजोप्रभुमैंरहैसारंगपानी॥२ ११७॥साधनसाध्यस्वरूपअगोचरगोचरहोतकृपालकृपाकरि॥
संतलहैगुनभावअनंतअसंतनजानिसकैहुविधाधरि॥जानकीजीवननामसेंआइसभीसुखधामअखंडप्र
भाभरि॥युग्मअनन्यसुध्यानधरेतवपाउहोमर्मअनूपरसाभरि॥२ ११८॥साचीप्रतीतिबिनाकईकोटिनकल्प
लौंपछितारहेपाजी॥होइहैतेरोउधारनहींकिएपुन्यकरंवसुकछसमाजी॥आपुनोरूपसम्हारुभलीविधि
जीवसम्हरनकोकरराजी॥युग्मअनन्यसुनामप्रतापसेसंतनकेघरनौवतिवाजी॥२ ११९॥देखोनाअवधताके
मुखमांझछारहै॥कीएकोटिकठिनकरमकरतवतऊतिमिरविशेषनिनाविपुलविकारहै॥विरहूंपुरानउपखान
भलीभांतिज्ञानवाहीमतेचरनसुखौंतविस्वप्यारहै॥रिद्धिसिद्धिजोरेकहूहाजिरहमेशरहेचाहेसोईध्यानपान
मानहोमिपारहै॥युगलअनन्यऐसेभएहूंनसरेकाजदेखोनाअवधताकेमुखमांझछारहै॥२ १२०॥कोशला
विलोकेविनाअधिकअभागहै॥जानकीनवलनेहनरमनिधानधामअमलनिवासविनाव्यर्थजपजागहै॥ला
लचीलवारकानीकोडीकेगुलामनौनजाकीमतिसुरतिनपागीधामपागहै कहाभयोतीरथकरंवकईकल्पकिए

॥नामने०॥

न फास्य ल्प वसै जो पै विपुल प्रयाग है॥ जुगल अनन्य छुटि कपट कलंक कहो को शल्ला विलोके विना अधिक अभागे है
२०१२१॥ धाम रस रसन विन वारवार रोइ है॥ काहू भांति सांति कौं ति पाइ है नैं नैंकु मन अतन मतन सैन सा जिस ठसोइ है वि
विधि वे कौं ब्यवहार सिंधु धार मांझ डूबि डूबि ऊबि ऊबि विस्वास सठ खोइ है॥ जानकी रमन [illegible] दुरवह मन विमुख
वीज विषम विष्ठा पडु धिम मिवी चवोइ है॥ जुगल अनन्य शब्द सार सुचि सार ठीक धाम रस रसन विन वारवार रोइ है॥
२०१२२॥ पेख्यो न अवधता पै कोटिन धिकार है॥ महा मूढ़ गूढ़ तत्व सुन्यो न सु संत पास ताही ते अचेत चित रखो भाल
भार है॥ खान पान मान मोह मांझ मे मगन होय खोयो सवै सुख स्वाद नेको सार है॥ वीत्यो तौन वीत्यो अवहीं ते सा
वधान होय सेइ एसु धाम जो मैं मौज एकतार है॥ जुगल अनन्य प्रीति प्रवल प्रतीति पगि पेख्यो न अवधता पै कोटि
न धिकार है॥ २०१२३॥ नाहक मनुख वपु पायो तिन नीचवै है॥ कियो कौन काम अभिराम दृग दै ख्यो नाहि खान पान
मे न हीमे आयु गई मीचवै है॥ सार सुख सोपन सु संतन समीप सठ गयो एकवार हूं न छोडि कल कीचवै है॥ कहां पावों
ला खन करोरन सु रामजाते वाट लोक मान्यता वडाई जाति नीचवै है॥ जुगल अनन्य धाम रस परस विना नाहक के
मनुख वपु पायो तिन नीचवै है॥ २०१२४॥ प्रीतम प्रीति ही के परतंत्र स्वतंत्र पनो निज त्यागि रंगीला॥ रखि एदछि उघारि

भली विधि वानर भाल किरात उसीलो॥ ग्यान गुमान न भावत जे कहूं लाल सनेह के हाथ विकीलो॥ युगम अनन्य र
सा रति के सम ग्यान नहीं छिति मे चरकीलो॥१०१२५॥ प्रीति हीं के वस स्याम सदा इहली कहै॥ सवरी अधम जाति
मधिनता विसेष नीचता के सगो हफ ल जू को अग्निनी कहै॥ पावर मलीन पीन पातक प्रवीन कियो अंक माल औस
हेंनि पाइ को अधी कहै॥ बोले वर बैन महा मधुर किरात को लसंग रंग युत सुने हात मुह ठी कहै॥ युगल अनन्य औ
र भांड को सर्वांग सब प्रीति हीं के वस स्याम सदा इहली कहै॥१०१२६॥ और मन नेहि न नजीक जाय जान जन तिन पै
वारि मीखो नेह को लगावनो॥ कौन विधि नेह निधि मिलै इह प्रस्न करे तो न रीति पूछो पुनि विरह जगावनो॥
पूछो लोक लाज कुल कान को विछोहति मि पूछिए विरोध भ्रम भावना भगावनो॥ युगल अनन्य औसी रीति के
कियसे मीत चट चित्त रंग आप पडनर गावनो॥१०१२७॥ प्रीति की कठिन रीति खाला जू को घर नाहि हलुवा को
ग्रास मनाविचारिए विवेक सें॥ पहिले कट मसिर सो ध्यान व आगे राह चाह की मिलेगी तव भली भांति टेक सें॥ भूं
कनो विसारिए तउ तको अचिंत्य चित सहित सुनेम श्रेह गेह ने अनेक से॥ आपनी चपलता चतुराई नित निरख नैन
नवैन बोले नाहने केसें॥१०१२८॥ कोशलेश कामरु कृपाल कमनीय कृत्य कारन कृतज्ञ सिरताज हीं नेह रिए॥

॥श्रीराम॥

॥२५७॥

व्याकुलेबेहालमहामदनकरालजालज्वालनजरोग्योज्ञानजीवननिवेरिए ॥ हायहायरुदनहजारहूएकदमउठ
ततरंगअंगअंगभंगजंगजेरिए ॥ युगलअनन्यसीतानाहहींपनाहहाहहारुनदमनअनुदिनकिनफेरिए ॥ २१२९ ॥
महामोहजनकजमातकरामातहरअउरमनोजओजहारसरदारहै ॥ वेडवेडधीरवीरगुननगंभीरपीरतीरतरवार
समहियोलियोमाररहै ॥ सांवनसमक्रूरसहीसजगसुयोगपरकठिनकुयोगमनरचतविचारहै ॥ युगलअनन्यनहि
चलतउपायनेकेटेकएकतेरोईहमेशाअविकाररहै ॥ २१३० ॥ जौननाममिलनमनोरथमजापद्दसुकदेवस
ममुनिराजगएधामहै ॥ सहिकेअनेकनअकथतिरस्कातवपायकेदिदारलेहअविचलनामहै ॥ सोईसवेशगुन
सुलभसुधारिअवसंतसुविवदनसेजान्योखासआमहै ॥ युगलअनन्यएतेहूंपैनजपतजौनतौनखलमलकलीका
लकोगुलामहै ॥ २१३१ ॥ रामअभिरामकोटिकामहामछविनामरटनहमेशमनुतजुजगोरारको ॥ ममतामली
नविषसागरअपारदुखधारवारवीचमततडूबोकदुकौरको ॥ विविधिविचारयुतजोहोपरिनांमुहायकनआन ॥२५७॥
नामविनासवचोरको ॥ युगलअनन्यतातेत्यागितमतीनतारसरेनामखूवताकेसमसिरमौरको ॥ २१३२ ॥
फूलना ॥ चाहसेचाटचितचषनविचचमकतीदमकती~~दमकती~~हामहुतिहाररदूनी ॥ आहउरअजवअरगाह

भेदमानहीनशुद्धसमतानदैवसोईसहाजस्वरूपशुद्धभूमिकाविहारनो ४

रुचिर

॥श्रीराम॥

सतसाहसमत्रअगमागममंभगुनअगुनऊनी॥अरुचिरुचिहितरसरंगसुचैरुचिरमननवसहनप्रियप्रेमथूनी
सकलसाधनसमनसदमसिपसामविनलगतजोंयुगलजिपसजसनी॥२०१३३॥झमकमहकवमुखमाहके
तरफदिलगरपरफेरनहिहायआवै॥झुकनिझांकनिझलकझीनसैंभीनअतिपायपरितोशापुनिप्रेमर्प्यावै॥झां
झुडफमधुरमिरदंगधुनिध्यानसैंसहसगुनस्वादनिजनाहध्यावै॥युगमआनन्पजिपहोतवेहाशजवपलकभरि
झांकेतेमोजछ्यावै॥२०१३४॥घनाछरी॥विमलविरागहेतुजानिएविशेषपांचविषयमेंदपदुखहारुनमलीनता
शुद्धस्वरूपसुनोगुनोमननमाहनित्तनिखिलविकारवस्तुत्यागरूपलीनता॥रोगशोगभोगनकोहानदत्तउत्तचाह
राहकेसमानफलपेखिएप्रवीनता॥युगलअनन्यलोकचौदहूंवमननमनअमलहमेशास्वछ्छअवधनवीनता
२०१३५॥दिव्यज्ञानहेतुसुचिश्रवनमननिनिदिध्यासवेदभालरहसविचारनो॥मोकमोहछीनजरामरनउपा
धितीनअनायासहोतफलअमलसुधारनो॥युगलअनन्यबोधब्रह्मवोधमेमगननतनसहितअतनसोईअवधसम्हा
रनो॥२०१३६॥योगकोहेतुविचारिएसंजमनेमसहासुखछेमविधायी॥शुद्धसमाधिलगेसोस्वरूपवितर्कविकल्प
विहीनवडाई॥चाहरहेनहिसिद्धसमूहकभीगतशोकदेहैफलगाई॥युगमअनन्यअचाहअखंडसमाधिसोआधिविचित्र
सोहाई॥

॥नामेन०॥

२०१३७॥विप्राहविचित्रभक्तिमहारानीउहैहेतुर्मतगुरसेवाजसश्रवनसोहावनो॥प्रेमेमेमगनलोकलाजराजसाज
नजिसरसस्वरूपस्व[illegible]स्याममनभावनो॥जानकीजीवनजूकेनिकटनिवासनित्तनवलअनूपफलजीवनजि
वावनो॥युगलअनन्यअविधोगरूपरंगरसअवधिअजवखूवछैलछविछावनो॥२०१३८॥दिव्यपरेशाउपमा
नाउचलहैतुसुज्ञानविरागविचारो॥आपनोरूपअनूपमहेषसमेतलखेसोस्वरूपसम्हारो॥रासविलासविहारउ
दपउरआठहूजामसोईफलप्यारो॥युगलअनन्यभुलायकेआपकोप्रेममेलीननताऔधिनिहारो॥२०१३९॥ना
ममहाराजजूकेमिलनमेहितुवरनामसुधसारहीकिकरनाविचारिए॥छूटैनहींरटनअखंडतैलधारसमलगा
रहैनिजसोस्वरूपनिरधारिए॥नामकेरहितऔरसाधननसिद्धिरचिरहैंअबहोयफलसोईसुखसारिए॥युगल
अनन्यरामरोमरगरगनामकरैएकरससोअवधिछविप्यारिए॥२०१४०॥कोटिकोटिवारतापैराजधिरकारहै॥
जौनजडजीवपीयनामअभिरामजापतजेऔरभजे[illegible]ठनाहिकैधिकाहै॥परानेदपावनपेरशापरत[illegible]सवपा
वैनामरटिवेदवानीनिरधारहै॥जानीनहीजातआनसाधनमेकौनरसमिलेमूढमननजातेहोरतअपारहै॥यु
गलअनन्यनामरटनविसारैजौनकोटिकोटिवारतापैराजधिरकारहै॥२०१४१॥मेरोमननमेरोईकोभयोकोटिकालेहै॥

॥ श्री राम ॥

सांचौ कहौं संतन समाज मैं न झूठ रंच पांच नैं म मिलौ मोहि करत विहाल है ॥ नाम रूप रमत करत है प्रमाद कोटि और औ
र वात घात रचत निहाल है ॥ जौन री महा विपरीति पर धाम मगती नहीं के साथ पा की पारी हर हा लै है ॥ युगल अन
न्य अव की जिए सहाय आप मेरो मन ने मेरोई को भयो कोटि काल है ॥ २०१४२ ॥ जीवन अलप तामैं रोग से असित तन
मन हू न धीर कहा कहा मीत की जिए ॥ कानन समान शब्द जाल को न ठीक मीन परत अनंत युग पद पै पती जिए ॥ योग
ज्ञान ध्यान नेक वन नाशक तकाल कठिन कराल नै नेह रवि के न छीजिए ॥ युगल अनन्य मोह ममता विसारि रस वसा
रहू को सार सुधा सार नाम पीजिए ॥ २०१४३ ॥ जुरे ऊ जंग जोर है ऊ और मोह भूप और विमल विवेक सैन सह स
अपार है ॥ काम क्रोध दंभ द्वेष लोभ छोभ आदि भट सेनापति मोह के कठिन गुन गार हैं ॥ विराद विचार वर विर
ति सुतोष तर धीर्य्य क्षमादि सैन प विवेक अविकार है ॥ युगल अनन्य अस्तु तरन हेत हिए जीतिहै विवेक युद्ध मोह नीच
हार है ॥ २०१४४ ॥ जौन छन नाम न रटत सो नरक है ॥ अंतक कौ कौल मौ लम हा मोह धौल धिक है ला अफसोस सुष को भ

॥ नाम नं० ॥

सै फरक है ॥ छन छीन दिन दीन दंड दंड समत व प्रहर प्रहार तर वार की करक है ॥ अधिक अमंगली कहा म को मंडार काल
काल के समान सुठि सम मको मरक है ॥ युगल अनन्य अति त्यागिए विकार व च जौन छन नाम न रटत सो नरक है ॥ २०१४५ ॥

चारोयुगनामसुखखानभगवानहै॥ तऊकलिकालबिकरालमेनआनकछुरेखिजोपरतसोकुरंगनीरभानहै॥
बानीवीचबकनविलासकेनिमित्तमीतजावतउपायतत्वयोगग्यानध्यानहै॥ भूलेनभरमैवनसुनिशेषचित्रि
नकीतीनकालनामबिनानांहिनकल्यानहै॥ युगलअनन्यसंतशास्त्रनकोसिद्धमतचारोयुगनामसुखखानभग
वानहै॥२०१५०॥ जीवनजानपियारीसहासुकुमारसलोनेसियारंगभीनो॥ उन्नतनवकिशोरकलाचितचोरवि
चित्रमहारूपनलीनो॥ ताकितिरीछीकटाक्षनतेअनुरागअहागहिरधरिहीनो॥ युगमअनन्यसुधासरसोहनमा
धुरीमैंमनमीनसोकीनो॥२०१५१॥ समलासबजभीससोहतमनोजमननमोहतप्रकाशरासअजवेरवायकै॥
रचनारशेसअनुरागरंगरूपमनिआसपासझलकसलामछविछायकै॥ ऊपमाअनूपरवूवरकमनमान्योतऊ
कहतसरमपरकहोंकछुगायकै॥ युगलअनन्यमानोंइंद्रनीलछविनयरहरितरततनरूपमानदुतिदायकै॥२०१५२॥
सीतारामनामअभिराममुदधामतजिअजवअभागीगएग्यानअभिमानते॥ गीताभागवतबीचभजनप्रधानश्रुतिसंघ
तसैवसंतवहप्रमानते॥ तीतातमतुरसअरसस्वच्छशुन्नग्यानध्यानकेरहितसुखसपनसमानते॥ युगलअनन्य
सीतापरमपियूषनहिभानुकरनीरहेतमरतअजानके॥२०१५३॥ स्वासासमशाहरसमाजसुखसीमपायहायनरटतनामअ
वधकिशोरको॥

॥श्रीराम॥

खासोमखमलसमकोमलमधुरखरबरनविचित्रनखखतस्यामगोरको॥ आसाअविहितचितधारतहमेशासठमासा
सोनसहसमुमेरभावभोरको॥ जुगलअनन्यअविलासापरिहासातजुनजुनामजुगलविहायमोरहैंको॥ २०१५४॥
रंगरससदनकदनमंदमोहमनअदनअदेशोहशामदनमुरादको॥ कमेकालरदनविभंजिगंजिगुनोगामगदनन
दनमलिममताप्रमादको॥ प्रीतिसंवदनवरखरत्तविसंदपनरुदनरहितदरसावतअवादको जुगलअनन्यप्रिय
मदनपुनीतपरअवधकिशोरनामपतिप्रस्वादको॥ २०१५५॥ जीतेजगजोरजगजाहिरजहरजमजीवनअधारना
मजेपजोजिकरसे॥ रीतेअंगअगुनअभीतेरहेएकरसहिरसहवासपांचवीतेअमकरसें॥ सीतेउसअनलअभीते
भीतेविषतिषपरमपियूषसुखसत्तगुनकरसें॥ जुगलअनन्यशोकसजततसमूहमुदमानसफलकमोजफरकफिक
रसे॥ २०१५६॥ मालिकमेरोउदारसिपावरएकतुहीसिरताजसलोना॥ तेरहीचाहमेंआहहमेहरसायहैचनाओ
रमिलोना॥ मेरिहैंस्यामसुजानकभींनिजजानिहमेशावैतोरललोना॥ जुग्मअनन्यकेवाहिसएकमुझेअवकी
जिएखेलबेलोना॥ २०१५७॥ उमगायहिएउरिगायसुगायसुपायसमाननपानकिए॥ विचलायकेचित्तसुवि
त्तजहांतहंमोदप्रमोदननेकलिए॥ विसरायविषयव्यवहारावलीदिलदारपैभारनवारिदिए॥ जुग्मअनन्यसमाष

॥नामने०॥

सनेहसमुंद्रसुधाविनजायजिए॥२०१५८॥जानकीजीवनजानेविनाधिगजानिवोतेरोजहूंलगिहै॥वातविचारिए
वोधवलिएअविरोधविरोधभलेभगिहै काहूसेनेहनकीजेकहूंदुखहामअचानकहीजगिहै॥युग्मअनन्यसुजानसु
संतसुवाकसुनेमतिमेपगिहै॥२०१५९॥श्रीसरजूतरतीरहोगहोसंतसोहावनरीतिरसीली॥होवोनकाहूसेभूलिक
हूंगरजअरजसुनिएसुभशीली॥श्रीससहोसमसलीसहादुखमोहसेमतविहायकसीली॥युग्मअनन्यनिसानि
जनेनमेंनितवटेअनुरागरंगीली॥२०१६०॥रघुवीरधीरममहरिएविषमभीरपीरनीरनिधिहूतेअधिकअडोलहै॥
द्रवतहौंहीनवंधुपावनवारापारहारिहिएहायएकरहतअवोलहै॥कोउनहींवांहहनवालातीनलोकवीचमीव
वसमुरसमुहायगतलोलहै॥युगलअनन्यरघुराजवंसअवतंसशरनकेआसरेविकायेविनामोलहै॥२०१६१॥
हौंतोअपराधिनकोभूपसिरताजसाजसहसअकाजहगावाजेरोमरोमहै॥आलसअभागहागहिलहूनहाहक
रकोदिनकषायग्यहग्नसितअसोमहै॥मेरोमनवैरीकलिकालकोसहायपायधायहायलाघनकरतसमडोमहै॥
युगलअनन्यकोशीलशाकीकृपाविचित्रपरमपवित्रमहुअवधिसुमोमहै॥२०१६२॥वारवारवलिहारवरनसरो
जपरमनवचकरममसमेतएकरसहौं॥विविधिविकारव्योमवीचवातध्यानपटुकंपितसमानतनपभितअवसहौं॥

॥श्रीराम॥

लोकपरलोकहोऊभांतिशोकभांतिहीनविसहसुभाववासलसुहरसहैं॥ जुगलअवकाटिएकृपालमोहिकली
कालकेकठोरकठिनकसमरहैं॥२०१६३॥ हापहिनरैनचैनअहकनचिनवीचकलीकालमीचसमगाजतअसं
कहै॥ मानततनकच्योंकरजोरिकैनिहोर्योमलअधिकअयोगअतिकठिनकलंकहै॥ देवनरमुनिसवदेख्यो मैं
विचारिखूबकोऊनहींछ सोयातैअैसोकदुपंकहै॥ जुगलअनन्यहिएआसरोहमारोएकजानकीजीवनपद
केजमंजुअंकहै॥२०१६४॥ काहूकेमिटाएममसंकटकटकेकटुमिटनकठिनसोचिकहतदयालहैं॥ महादुख
दारुनहराजकलिकालराजदगावाजप्रवलअधर्महैंकोसांहैं॥ लीजिएनवाजरघुराजआजजानिनिजपलए
लचौगुनोविशेषवेहवालहैं॥ जुगलअनन्यशरनागतकोआश्रीमैंमेरोसमहाराजनामसर्वदानिहालहै॥२०१६५॥ ॥नामने०॥
ज्ञानगुनगममनगरूरगरुवाईगतिगिरापतिज्ञेयगायगाहिएगनेशाहै॥ गानगीर्वानगरीयानगुनवानगनगनत
गुलावगीतगुरुगिरिजेशाहैं॥ गाफिलगरकगरगुलिनगजवग्नामगाहकगरीवगुजरायगमेरेशाहै॥ जुगलअनन्य
गिरगाहिएगिरायगमगरमगोहरगायगपिएगुनेशाहै॥२०१६६॥ संतरसवंतसीयकंतकेसनेहीजौनतीनलोक
विहकीउठायदईकानहै॥२४ अनुरागमिष्ठमधुरपियूषछकिरहतहमेशानखसिखतनप्रानहैं॥ एकरसरहसउपासना

सम्हारेनित्यमहलटहलमांझलीनरसखानहै॥युगलअनन्यमानामानहूंनलेशचित्ततनतूलहूंतेतुच्छजानत
जहानहै॥२०१६७॥जानकीरमनजूकीकीरतिकलंकहीनगायदिनरैनतामलीनताहुराएहै॥आपनीविशेषप्र
भुताकोनगुमानमानप्रानप्रानहीमेंनित्यआपनोभुराएहै॥स्वामिनीनजरनेहनिरखिनवीननैनहीयवीचचौ
केप्रेमपरमपुराएहैं॥युगलअनन्यअनुरागीवडभागीतेईमेरोकोसवभांतिविनामोलहीमुराएहैं॥२०१६८॥वैठि
केअचलनामरागवागवीचमीचमलिनमहाहिंदुवीसनावहाएहै॥ऐंठिकेअनंतलोकश्रीकेराकेटाकसम
रंगरसरूपकोअभंगहीगहाएहै॥पैठिकेप्रवीनप्रेमपारावारमांझखूवभोरसांझहोशकोभुलायकेनहाएहैं॥
हेठिकैअनंतपंथग्रंथकोविचारसोसारयुगलअनन्यसोईउरतेसमाएहै॥२०१६९॥रसिकअनन्यमानमन्य
अग्रगन्यसोईजाकीमतिगतिरतिसोईराममरंगमें॥कसिककरेजेवीचमीचसहसहसगुनससीकहूंसूरसमसूझे
तउमंगमें॥हसिकहजारोंरतउततऊऊवनाहिमसिकसमानमानभानेंअंगमें॥युगलअनन्यछविवसिक
विराजेउहजानकीजीवनजूकेछकेजसरसरंगमें॥२०१७०॥नामहीकेरटेतेउहासमताविनाशहै॥प्रीतिपरती
तिरसरीतिसुविनीतगुनगहरगंभीरधीरसीरसुखरासहै॥लोकपरलोकमेंअशोकतमताकविनामहतमहा
मनकेसभा
मसुवासहै॥

अनायास उद्दित मुदित अभिलास खास मधुर सुमंजु कंज विसद विकास है॥ युगल अनन्य सिद्धि सब करतल नित नाम ही के रटते उदासता विनाश है॥ २०१७१॥ नवधा विचित्र भक्ति कीएपर प्रेम पुनि प्रगट प्रमोद मूलका बत अपार है॥ जीवमात्र कोई अधिकारी सुखस्वाद सोई गोई नरहस लोक विदित प्रचार है॥ सीताराम रूप अनुभव अनवद्य अललीए अवलंब विनाखेद भाल भार है॥ युगल अनन्य और पंथ दुख मानित जु भजु नाम सरस सहायक उदार है॥ २०१७२॥ जो भावविहीन सुमुग्ध तथा बधिरो दृगहीन सुपंगु नपुंसक॥ द्विजदासखवधारिए पुन्निसें संत समागम पाय अधं सके॥ स्वाद विहीन सुसत्यता लीन सदा गुन छीन अहीन सुनेशक॥ युगम अनन्य सु आसनसीन प्रमाद मलीन विहाय केलासक॥ २०१७३॥ छमासी नरमा आन सुनी मे पुरान मे॥ जाको दशलेश पाय पावत प्रकाश परम पुनीत अविगीत सुखखान में॥ हेवहिजि सुबन अन ऊत धूत भूत पूजे पाय भायसे समेत मान दान में॥ आप परमेश ताको वदन विलोकि रहें कहें वार वार धन्य संतसन मानमें॥ युगल अनन्य बड़भागी छवि छाकी छकि छमासी नरमा आन सुनी मैं पुरान मैं॥ २०१७४॥ छमाके किए सरमापति पूजनीय भये तीनि लोकवीच वाह वाह जस खात है॥ छमाके प्रतापसे अतापभये पाहीन द्विज कठिन कदर्य मर्द्यगन स्यो जाको गात है॥

छमा अंक के अमल अनूप धारि भूप सुता पायो पति रोग सें रहित होय वात है॥ पुगल अनन्य यापै। विदित अनंत गाथ
छमा पद पूजे मिटै कोटि कोटि घात है॥ २१७५॥ छमा वान जन जग ठग सेन ठगो जाय जे ते रिपु क्रूर ते ते करैं नाहि वं
दना॥ मन वच काय सावधान रहे रहे नाहि गहे गुरु ज्ञान फेरि परै मोह वंदना॥ छमा मधुराई के समान आन मिष्ट
कौ न नीर ससुवाद सिता हाब मधु कंद ना॥ पुगल अनन्य जानि बूभि के विसारै जौ न तौ न नरनीच सम दूजो म
ति मंद ना॥ २१७६॥ छमा धन माल मांह माल जाके पास होय ताके हर हाल खुशहाल जीव जान है॥ दशा हूं दिसा
न मांझ मोरसों भ्रहा न नाहि लाह कौन अंत संत श्रुति न प्रमान है॥ जाकी पद कंज रेनु कामधेनु सम सुखदायनी
न चित्र मित्र प्रगट सुजान है॥ पुगल अनन्य दुष्ट पापन अनिष्ट कष्ट हारनी छमा हीं दिलदर्या अनुमान है॥ २१७७
॥ झूलना॥ अलमस्त फकीर असीर नहीं दिलगीर अधीर हकीर पिआरे॥ हस्तु सनेस्त समस समुभि अउवल ललेगला
ल के लगन मैं मौजवारे॥ इधर उधर की जिकर चैं तोरत जिके फिकर षार के मिलै कीनि तन धारे॥ भनै पुग्ग अनन्य मदहो
श नामी रटन नाम पियूख समवस खुनखारे॥ २१७८॥ करो आपने चित्त को कैद पहिले मन जा मिले महबूब का खूब
सोंचा हुवै विना दिल इस्क के रंग रंगीस भी साधना वा धना काम कौं चा॥ जरा बैठिए कौं तअंदराए हस रीति तहं की क वारीक
कीजिए
वाचा॥

॥श्रीराम॥

भनैयुग्मअनन्यनिजनामसुमिरोनहींसपनमैंदांचिएआनठौंवा॥२०१७९॥खवरदाररहिएसदाजागिएजौतेरेवा
सोहरतरफचोरलागे॥तुझेमारिहैविनतवरवादकरिकेनहीवातवातिलसमुझिरहोआगे॥खुदीछोडिकेभजो[illegible]विं
दअपनाखुसीहोयरहासिलहवसहिसंभोग॥भनेयुग्मअनन्यलाशाक्कनामीरटननामसेंप्रेमपियूषपागे॥२०१८०
गईवासनासासनाशरासारीमिलीराहप्यारीअजवरस्कवाली॥जहांमोजमाशूककमुखमाहदीदनसहावैठनात
रवनआनंदआली॥तहांखौफनहिखतरोहचपारोअजवदेशमनपारगुनज्ञानखाली॥भनैयुग्मरसनाममेंपगाहर
दमदमीरीतिसेचटेगीलालालाली॥२०१८१॥हायहायकरतेरहेरोयएआशिकफकतयारदिलदारकेखोजखाति
र॥छायकुटीउरविरहकीखूबखाहिसखल्ककुछोडिकेपंथमेंरहाखातिर॥धायधायवनवीरवेतालवाजूफिरोक
हाड़दौनिकरनेहनाजिर॥भनैयुग्मअनन्यमस्तनैननामीरनवललनामआधीनहरघडीहाजिर॥२०१८२॥ ॥नामने॰॥
फसकफूलनेमेफूलकपारसुंदरचमकचांदनीफैलतीपेखिएजी॥हमकदामिनीकोटिकीकौनभाखअमितमाह
खुरसेदछविदेखिएजी॥रमैंरहसरसरंगरंगीनजानोतधीराजउसदेशकालेखिएजी॥भनैयुग्मअनन्यतमत
मतपागेतधीइस्ककीरतनपेराखिएजी॥२०१८३॥महीहूंदिलनेठाभरपूरप्याराजिवारविच्चरगारगाइशहजानो॥
कै

व़हीनूरमसहूरजहूरजगमेनजरआंहरीनालेसनिरखिमानो॥छ्रमहूमेमसज्ञिहानेंहूरनसहावेछिसतसंगमेखूब
छानो॥भनैयुगमआनन्यनिजनामसुमिरनसुधापीजिएआननहिबातआनो॥२१२४॥हवेंहराहेहडुतिहमकह ८
यमउसीवीचमहबूबनिजहूवेहरवो॥व्याट्टदतोहूतरफहरिनहूवेहिएहोप्रहेराननहिंघारपेखो॥हसाहरह
हिलआपनेसजोसांचीतजोमोहकोंवीकलावुरीयेरवो॥भनैयुगमआनन्यहुसप्यारहजेनजरनेहहूजेसनमप्या
रलेखो॥२१२५॥सहागाएआपनेमहलअंहरमधुरगीतमनहरनमहवूबमोहन॥जुदाहूजिएएकपलकभीना
हींअवधछैलछविछकेमहमोहहोहन॥सरासाजरेवाजकोतरककोजअमलमारफतअैनखुसमरससा
हन॥भनैयुगमअनन्यअराइस्कवालीसहामीतसमभेोतजोछांहछोहन॥२१२६॥चलोआपनेराहमें
चाहसजिकेविनाशहकेतहांसुखशोकसीमा॥छलोवासनावंहविलकुहत्तफानीखुदीलाइएआपनेन
हींजीमा॥जलहवाजनाहजिएपंथनाजुकरहससंगचलिएमधुरवालधीमा॥भनैयुगमअनन्यहरसमैराहिए
सभीतोरसवलोगससहानीमा॥२१२७॥अन्यरीति॥सीताराममनामरूपअमलअनूपकलाकरकोतिकोमुदी
निहारजौननैनसें॥अैसेसंतविसदवसंतरसवंतसमसंगअनुरागरंगसोपनसुचैनसें॥पापतापकलिल

॥श्रीराम॥

कलापकालथापसापहारकरुमेशाछनमांझबोधवैनसैं ॥ पुगलअनन्यकोटिकल्पतरुकामधेनुचिंतामनिरा
शिएसुसंतनसुसैनसैं ॥ २१८८ ॥ देवेमानसानसुखखानअवधानविनविग्राहववानमअभानप्रीयतमप्रान
छेवेहालेंहायकलिकठिनकपानदुखदखलदलानदुतदाहतदुरस्तवान ॥ लेवेअपनायपायपरम प्रधाँमद न
असहदुरायहरसायजानकीशध्यान ॥ पुगलअनन्यसेवेसिद्धसारसंततसुविसुरुचिसमेतमानिमोदएकरस
तान ॥ २१८९ ॥ देहीदेहअसीवारफिरतफिरतनिर्हेतुकृपाकोशलेशाकलितसुपायचार ॥ मानुषवपुषपा न
योअगमअमरगनपरमेश्वापुपत्तिकेलायकसुचित्तधाम ॥ कीजिएविलंवनाविचारिछेंअभंगुषियतिहजे
हाथायारडारिधौंमेंसेविकल्पभार ॥ पुगलअनन्यदिव्यवाजीखिलसमतनखूवतैंवीजकारिजीतुचाहेया ॥नामनें०॥
हिहार ॥ २१९० ॥ चौदहभुवनसुखसारकहिलोकसारज्ञानध्यानसारस्वच्छतातेईसारसारसत ॥ औरहेंअगाध
व्याधिविगतविभूतिवलसारअविकारचित्तचेतिएअनंतमैं ॥ सांचीरतिरातीमतिमाभरुचिराधिएजूएकदिसि
दजेसततसंगतिसुपावतत ॥ पुगलअनन्यतउत्तुल्लतानानेकनैनेहेरिएप्रमादमैंविहीनहोयपछोडिछत ॥ २१९१
संतसंगअंगरागरंगकेप्रकाशकरकामदकलेशाकुलकाटतअपासविन ॥ अमलअनंतभागपमंतासिरताजपदअ

वेद

गरसुसोपिरेतधोएकेविकारकिन ॥ जौलौकछुकपटकुपटहैनिकटनिजतौलौहिलेदरगएवेरफेरनाहीछिन
युगलअनन्यधन्यलोकवीचजाकोमनलाग्योसंततपदपंकजपरागहिन ॥ २१-२ ॥ संतसहायसहीसरकारसुहे
शमदसरोरेखिएनाही ॥ हेपरतछ्छहीवातदुरीकितख्यातपुरानहूंलोकसोहाहीं वारकसंतसमागमसेनरनी
चहूंतारकहोतसदाही ॥ युगमअनन्यनभेदलखिकछुहोतकृतारथथाहगहाही ॥ २१-३ ॥ संतसमागमकीम
हिमाकविकोविदगायसकेनरतीभर ॥ जानतहांगुनतीनमनाहिनहींअतिउज्वलरूपसुधाकर ॥ जानकीजी
वनजानेसुसेवककरीतिप्रतीतिपुनीतप्रभासर ॥ युगमअनन्यमराहसदातिनकोजिनकीरतिसंतरामकृपापर ॥ २१-४ ॥
सीतारामरसिकसुसंतसवैप्रासमसरसदरसपरसपरसअरसहर ॥ सकृतप्रनामकिएहोतअभिरामहिएजिएजु
गजुगरगरहितशमितडर ॥ थिरचितयुगलवपुषप्रियतममानिरागद्वेषनिखिलविहानिउत्साहउर ॥ यु
गलअनन्यअभिलासआसपासछविछायरहेनैनवैनरैनअैनप्रेमपुर ॥ २१-५ ॥ ऐसीअद्भुतचीज
कौनलोकवेदवीचजोनसंतसंगकेकिएसेनहिलाभहोत ॥ वडेवडेरंकअंकशंकसेंसमेतसंतकरुनानिके
तविनपायकेतलोकधोत ॥ वाहिएसुचाहचितनाहिननितनेहऔरकाजसाजजिकरनभूलिहूनसंतसोत ॥

नामने·

॥२५४॥

॥श्रीराम॥

जुगल अनन्य इस्क फिस्क मिस्क मानि मन छोडि ए सनेह संत संग सों चव्वाचवोत ॥११८६॥ संत सुधा सुख
सिंधु सिरोमनि पूरन प्रेम सुमेर जहू जारों॥ पारन पाय शके श्रुति हूं कविलोगन की गनती कहं पारो। जानकी जीव
नजू को महा धन संत समीप सदेव विचारो॥ जुग्म अनन्य अरो सत संगति वाशना व्याधि विकार निकारो ॥
११८७॥ वैठ रहो सत संग गहो हु चिंता ईह हो लहो लाहल लामी॥ वैठ सु वाग विलास च्च हो मनि नाम निरंतर
केलि कलामी॥ औठ जहो जगजाल जवाल को शंग कुरंग विहाय हरामी॥ जुग्म अनन्य [illegible] अमेठ म हो मन
वायु समागम संत मा कामी॥११८८॥ संत संग कीधों राग रंग उत्साह अंग अमल सुरंग निधि कीधों चंग चारु चित
कीधों महा मोद वर विशद विनोद खान कीधों जीव जानके सुवोध हित हू वित्त॥ कीधों काल व्याल वैनतेय का
म कोह कलि कहर कलंक कत कानन कृशान शीत॥ जुगल अनन्य कीधों कोशाल किशोर मन मोहनी स्वरूप मं
त्र मानि एह मशरित्त॥११८९॥ अहो वडभाग अनुराग पाग पग्यो मन अत्तन हिराय सत्तसंग शौक सों सन्यो ॥
कोटिन कलप कलपततल पंकसुचि सुमति सुवांभ के समान सुख हूं जन्यो॥ जानकी रशीक कलकेलि कमनीय
गुन गावत उमंग साध मोह माय हूं हन्यो॥ जुगल अनन्य धन्य संगम लौ भांति पाय छाय छवि छैल भाव भावना हि एतनो॥
सत
११००॥

ईशासुनीशाअनीशाअधीशामेंब्यापकनामनिहारिएप्यारे॥ देवरुदानवदैत्यपिसाचवेतालअकालसुकालमेधारे॥ स
थूलमथूलअमूलहुमूलअथूलअमूलमेसोईविचारे॥ धूतअधूतअपूतकपूतसुपूतकेमांहप्रभाअविकारे॥ २२०१॥
वेदपुरानकोरानकेताबअजावसवावअतावमेराजे॥ योगअयोगवियोगअसोगअरोगकुरोगमेंनामहिभ्राजे
मंत्रअमंत्रअतंत्रसुतंत्रअयंत्रओयंत्रमेसोईविराजे॥ पुमअनन्यप्रपन्नप्रसन्नअधन्यसुधन्यमेंनामअराजे
२२०२॥ अंगअनंगउमंगअभंगअजंगसजंगउछंगमेंव्यापी॥ तारअतारसुतारकतारविहारविकारमेंनामप्रतापी
सुद्धअसुद्धसुबुद्धविरुद्धअबुद्धकेअंतरनाममिलापी॥ पुमअनन्यअनेकओएकअटेकसुटेकमेंरंगकलापी
२२०३॥ सीतारामनामपरिपूरनप्रकाशसुद्धविद्यानंदकारनकलंककेहरनहैं॥ पेखिएपरत्वमलहीनसुचिस
त्वकरिपरिहरिअसहविलापआभरनहै॥ निरीसेहितअकारसेसहजस्वछसानकूलनामजगाउपाहनद्य
नहै॥ पुगलअनन्यअजसेषसारदागनेशअमितमुनीशाईशाशंकरसुधनहै॥ २२०४॥ व्यापकत्वहेरिएहिएकी
आंखिखोलिअवकहोकोनथलजहांरम्यानहींनामहै॥ ओंकारअगुनसगुननामगुनवीचराजनअखंडएकर
ससुखधामहै॥ सुक्लतसमहसेत पीतचित्रकृस्नलालहरितअनेकरंगमांहअभिरामहै॥ पुगलअनन्यसवविश्व

॥श्रीराम॥

मेंविहारीनामरामसवजामलखुललितललामहै॥२२०५॥सरससजातिनसुसंगसेसहजभावअचलविचित्रहोत्त
उरपआपअनापास॥नव्यहिव्यसप्तनसमेतकोऊहिनपीररहिपुनिरतिप्रगटवतप्रकाशरास॥सुमतिसमीपक
शुकालरतिरीतिसजिप्रेमाणरारसमपउहितसुवासरणास॥युगलअनन्यवीजचारुचमकतवीजकेवलअनूव
एवसंतसंगअभिलास॥२२०६॥वरनविवेकीवुधभावच्चावचिंन्हनवजवसवसममनकरनकेवास्ति॥नाम
अभिरामद्युतिद्दामगुनगानधामअचलनिवासनेहसहितहुलाशते॥छनहूंनवीतेव्यर्थविरतिविगतमान
आसअभिलासयुतप्रेमपानप्यासते॥युगलअनन्यछमाछितिकेसमानसुचिचलेरघुवीरधीरनेहिनकेरा
स्ते॥२२०७॥सगुनअगुनयुगरीतिभक्तिवीचतामैंकामनाअकामनासनेहविधिवीजहै॥चारवीशएकभेद
सगुनाकेमध्यमीतसत्वरजतमतीनलिएतजवीजहै॥अगुनाअनूपमहामधुरसुचारिअंगअखिलअनंगगु
नरहितनमीजहै॥युगलअनन्यपरभजनक्रियाविचारिभजेनामरूपसोईसांवरोअजीजहै॥२२०८॥लली
लालहांसऔविलासवरवैनचैनसैनरैनअनध्यानधारिएसनेहसाथ॥मंजुकुंजकेलिकमनीयरमनीयरस
रीतिप्रीतिदंपतिउदारअनुरागगाथ॥युगलकिशोरमहचरिनसनेहसुखध्याइएपरस्परपूरनपियूषपाप

॥नामसे०॥

युगलअनन्यछकिरहियहेमशाहिएहेऊलोकमहंतविशाखधोयखेऊहाय॥११६९॥रंधररुधरनमिहारिएनप
ननेकुनिखिलनिरसारसरिपुअनुमानिके॥धाराधरसमहरहमनामरूपगुनगाइएविशारदवृंदवरागिविनितानि
के॥चातुरीचवाईहुचितारकलिकाईतजिसजिसतसंगरंगअमलप्रमानिके॥युगलअनन्यअनुरागकेहरस
वीववि फलविशेषयुतरहोचितमानिके॥११७०॥पारखीप्रीतमप्यारमहामनिसंतमहीशाकेलिसनधाम॥
छोडिसभीवैवाहविषाहरमोनिवासरसंगललामें॥थोरहींरोजमेंचोजअजवलखाइहेखूवजवाहिरधाम॥
युगमअनन्यसुपंथचलोकहोंमलिहोनाहकमारगवामे॥११७१॥नारीकारीवगछोरवेहनविविधिवंदवरषि
हरषिविहिएहंसतहेमशाहे॥सींचतसनेहीनिजकामहरामअमिमतिकरतविसालपुषखेतगुनदेशाही॥महामा
हममतामहाहिकमयूरगननाचहींनिहारिमुदमेंगअशोषही॥युगलअनन्यचितगंकितगारजसुनिधुनिधी
रागतिगह्योनामअवरधेशाही॥११७२॥रहोसावधानअवधानअनुरागवीचविरतिविवेकवानसंगअंग
जोरिके॥गहोगावीनश्रुतिसेवनसहायहेतआसुरीकुधनसननातोनेहतोरिके॥अहोनिसिनामनेहकी
जिएकलेशकलिकलिलकषायप्रेममहानदवोरिके॥युगलअनन्यमसहोसवकीनकहाकछुहरदमहिरसप्रपंचनपछोरिके॥
११७३॥

प्रानापान व्यान औ समान स उदान नाग कूरम क्रकिल देवदत्त हूँ में हेरिए॥ करन कहँव मन मति अभिमान चित्त नाम धाम बीच लसे समुदायें निवेरिए॥ भूमि हूँ पताल स्वर्ग अपवर्ग मध्य मीत अंतरी[illegible] दिगादि सबही सुख हेरिए॥ युगल अनन्य श्री मसूर जन खत माहि अचल प्रकाश नाम पेखि गुन गेरिए॥ २२१४॥

सरित समुद्र लहुदर अविरंचि रुद्र इन्द्र सुर सकल के मध्य नाम छवि है॥ फूल फल पात तरु चार औ अचार धूप छाह माम क[illegible]ी ऐसे कहें कुल कवि है॥ शब्द स्वाद नाद गंध परस दरस काम कोह मोह द्रोह मध्य नाम प्रभा फवि है युगल अनन्य जपि जीवन अधार नाम अखिल प्रकार सें विचार दाह दवि है॥ २२१५॥

विमल विराग त्याग धीरज सुतेज पमांहि प्रबल प्रताप राम नाम को निहारिए॥ ज्ञान ध्यान धारना समाधि सत्य सोच सुख सकल समाज बीच सांई निहोरिए॥ लोक परलोक अज लोक हरि लोक तिमि अगुन गोलोक में सुनाम भूति धारिए॥ युगल अनन्य ब्रह्मानंद मध्य नाम बीज जानि विषय वासना विडारिए॥ २२१६॥

काम राग द्वेष करो पराभव सिंधु बीच सब मेद खात रघुबीर जीव जान है॥ इष्ट प्रतिकूल किए हिए में हजार हाय होरहे हित उग्र मुदित अपमान है॥ चिदाचित जग जो न जाहिए नयन तौन ज्ञान की जीवन वास थल सुखखान है॥ युगल अनन्य संत संग से लखायो नाव सत्य सुद्ध सहज समाधि धुनि ध्यान है॥ २२१७॥

॥श्रीराम॥

॥२५७॥

सांचो सत गुरु सिरताज महाराज तौन जौन निज नाम उपदेसे हो षह लिके ॥ प्रगट अखंड अटपट के विहीन
परतत्व हद सांचै मान मोह मद मलिके ॥ भावना मरम अधरम अमर म मेटि महा मुद्दा नहि पोचारो छलीछ
लिके ॥ युगल अनन्य अमै गुरु सुद पाल दिग कोटि काम धाम तजि रहो पास चलिके ॥ १२५८ ॥ पाथर की ना
व वैठि कहो कौन पार भयो सुनी ना है वाई कहूं पस्यो काहू नै न है ॥ गाडर की पूछि को पकरि न हीन है पार भयो
जात के सहहूं अटपट वैन है ॥ रंकन को सप धनी औ गुनी के संग गुनी होत न त्रिकाल ज्यों नपुंसक को मैन है ॥
युगल अनन्य एही भांति गुरु वान संग रंग न चढत ताचित चोक मनु चैन है ॥ १२५९ ॥ सीत अ सीत अ भीत अनी
त पुनीत अ जीत सु जीत मे नामे ॥ जाति अ जाति सु ज्ञाति अ ज्ञाति मे पूरन ऊन कहूं न कहा मे ॥ ताप अताप प्रता
प कलाप विलाप सु साप असीस मे नामे ॥ युगल अनन्य विसेष असेष वसे सव मे निज नाम अनामे ॥ १२६० ॥ ॥२५७॥
अर्थवाद वाद जौन जड ठाने हठ वस पर ते परात्पर नाम अभिराम मैं ॥ व्यर्थ औ अनर्थ कर वचन वमन विष
विसेष समान मन मानिए असाम मे ॥ वाहे जे सो पंडित प्रवीन गुनी ज्ञानी होय समुझि विसेष वाको जम के
ग्राम मे ॥ युगल अनन्य मेरो महा रिपुहूं तें रिपु सोई सत्य कहौं आज वैठि रघु धाम मे ॥ १२६१ ॥ ॥ ॥ ॥०

॥श्रीराम॥

जीभजडजीतेविनवाद्जन्मजायहायकैछिनकलंकनकीअधिकअधारहै॥ चपलचकोरीपाकोदूधहहै।आ
दिरसभावैदिनरैनतातेनितहीखोवारहै॥ मारमदमोहकीसहायनीविशदवोधवालककेहंतदीपिडायनिवि
कारहै॥ पुगलअनन्यसोचकहंतप्रकारकरिजीसोप्यारेजीहजोपेचाहिएउधारहै॥ १११२॥ जीत्योजिनजी
हतिनजीत्योसवअंगहै॥ वाहीकोमिलतमानसहनसोहायमानज्ञानध्याननधारनाअखिलताकेसंगहै॥ ताहि
कोविरागतीव्रतरनसंदेहरंचविगतप्रपंचउहरहितअनंगहै॥ पूजनीयसदांवंदनीयसोईसंतशुभअशुभ
समनरंगेगोरस्यामरंगहै॥ पुगलअननरसप्रकृतिअरसनानिजीत्योजौनजीहतौनजीत्योसवअंगहै॥ १११३॥
मातिमतिमेरीमोहमानमघसघपानकीएहीएसुद्धताविचित्रतावहायकै॥ तातीतीनतापनतमामखेदखेदहखा
तीफिरतिअचैनखैंकलिलकमायकै॥ प्यातीअनुमालअविलोलनिजपासपरभातीनहींनेकछू।कीछा
तीहालहायकै॥ पुगलअननसंतसंगसुछ।मारसरहुजिएमगनहोयसदारसनदहायकै॥ १११४॥ खाहिश्रा
खलकख्वारखललखरावखेरखिल्लतखुदीशविनसोपोसठख्वावहै॥ खारिजखोराकखामखाननखुशा
वखोफखातिरीखिजावआववलितअनावहै॥ खाकीतनपाकीप्रीतिअचलअवाकीधारिशाकीपदपंकज
सुपूजोआफतावहै॥

॥नामनै॰॥

युगलअनन्यखालीखालिकनहेखोकुछपखोहरतर्फनखबरमाहतावैहे॥२२२५॥पावननामसनेहसजावै॥
लौकिककाजनकानकेरकछुवैदिकवस्तुनतानतनावै॥आपनेऔगुनवौरलखपरदोषसुनैफिरनिंधुनावै
युगमअनन्यअमंदमनेअनुरागअदागसुभागसुनावै॥[illegible]॥संतसमागमसेसुधेररुचिपावननामसनेह
सजावै॥२२२५॥सानसकारसहायकजीको।संतसमाजसमागमस्वच्छसहासमताममताफनफीको॥
शब्दसनेहसवादसुधासुचिसीमनिवासमुजानअमीको॥सामुक्शौकसजौकरहेअलमस्तअवस्तअस
स्तअमीको॥युगमअनन्यसम्हारसहीसतसातसकारसहायकजीको॥२२२६॥नीकोनकारनवोसुखकारि
नाहनवीननिहायतनेहनिसानिजनैनअमैनखुमारी॥नामसनेहनिरीहनिरालसुनाजुकनाकनिशानन
हारी॥नाकनिवासनिरासससहाउरनित्यनिकैछटाछविधारी॥युगमअनन्यनिषेधतजेतवनीकोनकारनवो
सुखकारी॥२२२७॥वीप्रावकारविकारविसारो॥वानिविषैविषव्याजविजातिनसंगविरंगविहारनधारो॥वा
लसीवुद्धिवुलंदपनोवकवायसव्याननिकष्टनिकारो॥वाजीवहीवकवादविसर्पनवीतवितानविमारवि
गारो॥युगमअनन्यविताइवोवैसहींवीसवकारविकारविसारो॥२२२८॥आठअकारअभयप्रहप्यारो

॥श्रीराम॥

अंगअज्ञवसिपावरकोअनवचसुनामसनेहसंवारो॥आलसहीनअहारुअचाहसदाअविकारअ
हारविचारो॥आगमीज्ञानअमानपनोसपनोसवसाजसमाजसिंगारो॥युगमअनन्यसुभौजरहोगहिअ
ठअकारअभयप्रदप्यारो॥२२२९॥नामरूपगुनकोकथनततिमहरजौनवेकेब्रह्मज्ञानतौनअधिकअ
चेतहै॥सुरधेनुअमरविविचित्रतरुदेवमनिछोडिनिजसदनभुलाएफिरेप्रेतहैं॥तुखसमरछ्छज्ञानभजन
विहीनजडकूटतकलंककोटिकरनउपेतहै॥युगलअनन्यतिननीचनकीछायानहीछुइएकदापिरहिअ
पनेनिकेतहै॥२२३०॥जाग्रतसपनसुखसोईवोभरमतीनइच्छाद्वैरूपदरसनभ्रमअनुमानिए॥सत्वरजतम
तीनिहूवृतीनलोकतीनकालकर्मतीनभ्रमभावनापछानिए॥कर्ताकर्मक्रियासतअसतयुगलतिमिमनम
तिकरनभरमउरआनिए॥युगलअनन्यनामरूपसेंरहिततीनसकलभरमदृढभावनाप्रमानिए॥२२३१॥ ॥नामने०॥
सुन्यभीतिमापातापैचित्रअगजगजंतुविरच्योसुमनचित्रकारअंगहस्तविन॥साधनसमूहजलधो
एनमिटतजानिशुस्मविलासचित्रछूनछूनहोतछिन॥विषँभानुनीरग्राहकालविकरालतनरहितव
सततचाहकिएनरहोतलिन॥युगलअनन्यअवलोकिएविचारयुतनामरटलायतवछटेदुखदीनहिन॥२२३२॥

औरमनभजनप्रतापतौविचारिए॥कौनवाल्मीककुंभसुवनस्वपच्चकौनजनमनसुजातितनेकुंनेननिनिहारिए॥
कौनकुलअमलसधनमैनरईसासकहिएकवीरधीरकुलहिएहारिए॥ओरहूंअनेकगनिकाहिकसमानव
रुभएकहोंकहानामजपिनिर्धारिए॥पुगलअनन्यअवअचलप्रतीतिकरुओरमनभजनप्रतापतैविचारिए॥
११३३॥सोयोसोईखोयोअनमोलधनहांथते॥कालकोलम्बांसत्ताकोभयोअनायासहायनामविसरायैसो
विमुखसीतानाथते॥पायोमरिपरग्रामसूकरसमानपुनिरहेलेटखाटकोविछायविनामाथते॥जागजव
हीरहेवितायकालसेनतजितववकबाहवकेलागेसरसाथते॥पुगलअनन्यचेतिजागिएरयनहिनसो
योसोईखोयोअनमोलधनहांथते॥११३४॥मानिएनकहातीनिकालमननीचको॥पातसहारीतिविपरी
तचलेमोहमनमिलेखिलेकंजकमनीयचित्तवीचको॥महारिपुजोरजमजालिमसहस्त्रसमसमता
नकीजेयातेचाहजोअमीचको॥पलपलपरगतिगमनरमनरसताकेरहेहोततमहीनकेलिकीचको॥
पुगलअनन्यसावधानतासमेतिसुखमानिएनकहातीनिकालमननीचको॥११३५॥किएविसवासहानि
हांसमवातोरसे॥महामनिवनवीचवसितनमनकसिसंकितसहैवतऊहैज्ञामगोरसे॥छनहीमेरचेविपरीति

॥श्रीराम॥

भीतिप्रहभीतकहाकहोरीतियाकीवढेभ्रमभोरसें॥साधनसमाजैतनधकततरुकातनेकडेरेएकेटकजवनाम
श्रीसमोरसें॥पुगलअनन्यहोथ्रासहितविनोदवरकिएविसवासहांनिहांससवतोरसें॥११३८॥पांचपकार
पगेपतिपावे प्रीतिप्रतीतिपरत्वपरापनपावननामसनेहसनावै॥लोकिकीकाजनकानकेरेकछुवैदकी
वीचविचित्रविनावै॥आपनोऔगुनऔरलखिपरदोषसुनेधुनेशीसधुनावै॥पुमअनन्यअमंदमनेप्रिय
पांचपकारपगेपतिपावे॥११३९॥जीवअनरूपअविकारभवभारविनईशकेअधीननित्यविभूतनमात्रमें॥
शोकसेंरहितनमपरपरमेशअंसआवतसुखलिवेनिमित्तगुनगात्रमें॥सतचितमोदमयमहादितेविहीमत
कुवंध्योआदिकालतेकुसंगनीचपात्रमें॥पुगलअनन्यमेदपरमपुरुषसनपाकोसवभांतिजेसेहिनअरूगा ॥नामने०॥
त्रमें॥११४०॥एकताकहतजीवईशमेअजानजोनतोनअनुचितकिएविमलविचारके॥समतानहोतमार्त्तंडचे
डकरसंगजुगनूकहापिवूफ़्कोनेननिनिहारिके॥श्रुतिनकेमध्यकहूंभासतअभेदतउभावनाकेअर्थसुद्धरीति
गुनगारिके॥पुगलअनन्यजीवब्रह्मनहींतीनिकालचेंदपाविमेरेमनमोहमदमारिके॥११४१॥सुद्धसतचित
धनअगुननिरीहब्रह्मकल्पनाअतीततामेंसंभ्रतिनचाहिए॥परानंदपावनविहायविषयविषसमछनिकुंविनोदनाम
चाहउत्साहिए॥

राजा रंक अज्ञ विज्ञ वेद गुन गावै जाको ताके सम तुच्छ जीव झूठ अवगाहिए ॥ युगल अनन्य सेव्य सेवक सुभा
व सज हठ मत वाद व्यर्थ वस्तु न विसाहिए ॥ ११४२ ॥ संत मत गुरु सन ठानै मान मंद मति अगति निमित्त निज जन्त
न जमावहीं ॥ सूझि न परत चख अछत अनैनन नर खर सम भार वहै कलिल कमावहीं ॥ कामिनी को सुहृद सने
हीइष्ट मित्र गुरु गनै विना बोध अविरोध अनुभावहीं ॥ युगल अनन्य अछी अधम अभागी मुख जो हिवानै पागसं
ते शास्त्र समुझावहीं ॥ ११४३ ॥ कहै हम भए गुरमुख दुख दूरि मम बातन बनाए गम सम मन न होयगो ॥ जो लौं
चित्तवृत्ति सब ओर से सिमिटि परानंद परमेश मांझ आप को न खोयगो ॥ तौ लौं कई कोटि जन्म जनत मरत मू
रपाइहै अनंत भ्रम सुख सेन सोइगो ॥ युगल अनन्य वस्तु विमल विचार विना जहां तहां भरमि भरमि रोज रोय
गो ॥ ११४४ ॥ साधन आस निरास किए पर पाइहो प्रीतम प्रेम प्रभाकर ॥ नाम निभोत सनेह समेत रटा करिए
तम ते मह दिवाकर ॥ नाम विना नहि ठौर कहूं सब ठौं प्रति काप्रा करूप सुधाकर ॥ युगल अनन्य दयाल ह्वै विनु
पाइहै प्रीति प्रतीति निमाकर ॥ ११४५ ॥ धाम सिरोमनि औध अखंड प्रचंड सुशक्ति समेत विचारो ॥ शोक समे
त निवास करो तित वासना छंद विकार विसारो ॥ हाय अचिंत्य सुनाम प्रताप ते नाम सनत कैत लास निसारो ॥॥ ॥

॥श्रीराम॥

युग्मअनन्यसियावरनामसुआठहूंजामसमेतउचारो॥११४६॥नामनरेशापरेशापरावरपावनप्रेमपगेप
रपावै॥पापपहारविकारवजारविहारउजारकरैछविछावै॥चाहसहाहकुलाहधस्योसिरसोसवभों.ते
समुंद्रवहावै॥युग्मअनन्यलहैनितिकातमनेहतरावततीररहावै॥११४७॥नाममहानिधिनेहलगायमगा
यविषयविषकोंचवकचाई॥धामधराधनधोधोसवैदुखदायकैअंततनमीतमलाई॥साधनसिद्धसहायककै
परपायसमेसुमसाजसहाई॥युग्मअनन्यरटोरघुवीरसुनाममहासुखधामवडाई॥११४८॥जेजनतुच्छ
जहानकोजोहतसोहतमानमहत्वमेनाही॥चाहतहैपरधामअपधारनकामकलेशअकथापसुराही॥संततशां
तिसमाधिसजेसुसंगसुरंगसदैवरहाहीं॥युग्मअनन्यसोऊनिजनामपगेवसुजामसुधारसमांही॥११४९॥
नामहीकेअनुरागछकेछलछांहतकेतिनकेहिसिनाहीं॥प्रीतिपरायनपायपकेनवकेनजकेनथकेरसराही
भूलिहूकेहुलकेनअचानकआननिकेतकुसाधनमांही॥युग्मअनन्यअजूवहसानिजनामनिसादृगसें
भूलकाहीं॥११५०॥छूटतहैपटपंकजमप्रचितचक्रविनाश्रमनामसनेही॥आकस्मातसुनेसर्वोपरनाद
नवीनरसोगुनगेही॥देखअजायवनूरभलीविधिसानतवोकंजविचित्रसमेही॥युग्मअनन्यनप्रोमरहेकछुनाम
रटएकतारविदेही॥ ॥११५१॥

॥नामने॰॥

कोउकहैजपनेमअचारभलोकोउजोगबषानतनीको॥कोउवहैवरज्ञानविचारप्रकारअनेकतहांकरिठीको॥
कोउकहैकियत्यागविरागसहीजियजागउठतजितीको॥प्रथमअनन्यहैसत्यसमीपसुनामअनूपमदासियपीको
११५२॥काहकौलोवृतस्वासउस्वासहनामविनाधिकजीवनतेरो॥वस्तुविवेकविनावहुरूपोवहुवासरहोयनितियासुतचेरो
जन्मकरंवनतेकलिकोयकेकाछापरह्योतवहीयअधेरो॥प्रथमअनन्यसुनामरटेसततेसंगसजोतवहोयउजेरो॥११५३॥
केंवककवायसकूकरस्वाननकीकरनीकरिमोहवढावे॥चाहिस्वारिविनाहीतुफेसठदूवनोनाहककआसपेहखा
वे॥कौनकरारकियेकरुनाकरसंगकरेअवकौनकहावे॥प्रथमअनन्यअजानअलापकनामजपेअवआल
सआवे॥११५४॥आलसमाहींसेअनेकउपाधिअसाधिकुव्याधिनओरप्रकासें॥आलसमीचनमेहवहेसत
तातेभलीविधित्यागुविचारसें॥आपभुलायसुनामरटेमुहमंगलमीतवडेसुखसारसें॥प्रथमअनन्यसुनामभजे
विनवारहींवारविकारअगारसें॥११५५॥संतसनेहिनकोसुचिसंवतनामनिरीहउपासनठानो॥कानकरोसप
नेहूंनहींवहुवादविवादस्वरूपपछानो॥काहूसेलेननदेनकरोनितहोयअचिंतसुनामवषानो॥प्रथमअनन्यन
हीमुहमयमरुकूवमिलेविननामप्रमानो॥११५६॥सूरतिशब्दमिलापकरोवरध्यानममझारविलंवनलावो॥

॥ श्रीराम ॥

सांतिसुभावसुचावधरोगुनगोपकरोअभिमानभुलावो ॥ वातवनावनकोतजिकेकरनीविचश्रौकसनेहस
जावो ॥ पुस्मअनन्यसिपावरनामविनाकवहूंवहुईश्रानध्यावो ॥ ११५७ ॥ रोगनकीखानदेहहरमकचमकचल
महामोहमेहतीनकालनापतीजिए ॥ सोगनकोखानगेहदारासुतवितनेहजानिकेविषोवमूढपीठपातसीजि
ए ॥ जननमरनदुखकरनकोएपानमीतजानिएहमशाअविवेकजातेछीजिए ॥ पुगलअनन्यनामविमल विवे
कटेकेमोहमुद्गरवानसुं[illegible]सारपायजीजिए ॥ ११५८ ॥ जाकोचित्तचपलचलाकअतलाकुवसरहतअचलथ
लसोईभूपसिरताज ॥ वाकोरैवोफूखटकानखोहिसवजानखामआठजामअमलअरामएरसराज ॥ कोटिनकले
ककरकरनसुजीत्योजिनतोनेहश्रीपतिसमसोहतसचैनसाज ॥ पुगलअनन्यमनस्ववससस्नभूपचोपोउर ॥ नामनेव ॥
ताइननिमित्तमहाभूटराज ॥ ११५९ ॥ उत्तममध्यमनीचअकीचविभेदछितीशनमाभूगनायो ॥ तीनविहीन
जेपातकपीनसुहीनमहादुखदाहदहायो ॥ आपनीनारीकेपीठनहेतसोऊसठलोकमहीपकहायो ॥ पुस्मअन
न्यजोनामरटेसोसिरोमनिभूपतिमोमनभायो ॥ ११६० ॥ चारचीजसाथचारचीजकोमिलापहै ॥ भएवसु
विपुलजहानवीचमान्नअतिसुमतिनारीफकरेछोटवडेआपहै ॥ नीकोतनअरुजअशोककेरेहसमीतआ

॥श्रीराम॥

॥२६२॥

पनोप्रमोदरसहाविगमतविलापहै॥ स्वच्छसावधानशुद्धसहितसुमनसंगरंगअनुरागभागविमलअलापहै॥ उ
गसअनन्यरूपपरमअनूपसुखचारवीजसाथचारवीजकोमिलापहै॥ २२६१॥ लखेनिजरूपतवपावैपरमेशको
जैसेनैनहीनकहाकरैगोमुकुरताकिनाहकउपाधिउपहाससवहेशको॥ जैसेरंकनीचकीवसानेमहाराजरिग
कैसेजायपावैविनाकिएसुभवेसको॥ जैसेमखदानतपकिएविनाहैवराजपुरकोनभोगमिलेसाधेहुखलेशको
उज्जलअनन्यऐसेआगमस्वरूपसुखलखेनिजरूपतवपावैपरमेशको॥ २२६२॥ वासजोसरायवीचकीजिएअहा
व्राहोपफेरहावाहईऔउपाधिमेनकाजहै॥ खानोनिजगांठिसेजोसहजनिशंकरहोहीनतानकाहूकीउचि
तसुभसाजहै॥ आपनोस्वरूपहटकीन्होनविचारजौनतौनकोअकलसमनकलकुराजहै॥ उज्जलअनन्य
ततनछूटैहैअवस्थाताकीचिंताकरैकौनमहाअछूताहराजहै॥ २२६३॥ विमदविनोदहेतुसेतुभवसिंधुहट
विमलविचारचारवातहीकेवीचमें॥ कठिनकरालकालशीसमेनिहारेनिजसदासाव~~स~~धानहायफसेनाकुकीच
में॥ दूजोउपकारओरकियोकैरयाधनतचिनमनलावैद्रोहकोहमिलेनीचमें॥ उज्जलअनन्यतीजोआनअप
कारतैसेकियोउपकारनिजमूलेसुखसींचमें॥ २२६४॥ सकलपुरानवेदसंहितानुसारसतवचनविचित्रजोपैरहेपारदरोमहीं॥

॥२६२॥

राचसंतसमतनजानोदिडताईमीत भूमिकाअजूवचारिहारसमधारिए॥

हांन२ एक२ क

होयपैकोमुलावैहोयपराधेसुमिरनमांझभोरमांझफसिमेअनायासखेदखोजहीं॥ व्यासदेवहूंसुचित्तसंवत्तसुवैनयुगकी
॥श्रीराम॥ जिएविचारएकतारयुतओजहीं॥ पुगलअनन्यउपकारसमपुन्यनाहिपापपरपीडनसमानदुखओजहीं॥११६५॥
भूमिकाअजूवचारिहारसमधारिए॥ अखिलजेहांनेहतुदुखहाईहूसरीविनाशीसहाकुभिएविचारिए॥ तीजी
कल्पितचौथीआपनोईकियोरोगसोगरूपजगतविशेषसविकारिए॥ भसमसमानभोगभावनामुलाएमोज
मानसहमेशनिजनैनननिहारिए॥११६६॥ श्रीअवधेशपरेससुनामरटकटिहै [illegible] जगजालजवाला॥ और
उपायमहीपैनहींअवकालकरालकठोरकुसाला॥ छोडिसभीवकवादविखादकोनामजपोरसनातनकाला॥
पुगमअनन्यसुभानुउदैजवकाजकहातवहीपकमाला॥११६७॥ तीसनतकारविकारविसारो॥ तानातनमातमत
स कत्तकेवुरतामैंताशांतमाशानधारो॥ ताकनेतीयतमीतिसमानतनआधिउपाधिअसाधिप्रहारो॥ ताकततारनला ॥नामैन०॥
सतसोउरतुशंतिजारीतवाहीतरारो॥ ताकतकेपुनतीरतलातलतीसतकारविकारविसारो॥११६८॥ पांचोम
कारमहादुखदाई॥ मैपुनमघमनोरथमांससुमानसमैतिसहादुचिताई॥ चौकेरहोइनसेसवहीविधिहैदु
खदाहकेहायकभाई॥ कीजेसदासतसंगसनेहसुनामसंखुवअखंडअघाई॥ पुगमअनन्यविचारकियोकुलपांचो०॥११६९॥

सुनेगुनेनामअनुरागीभोरसमनित्तखैंविचित्तलीनसोश्रवनसोहावनी॥ देहमध्यमानजैसैंछपतनभानकेहूत्यैसे
हीमननकिएपरानंदपावनो॥ वनोरहेराजछनछननिदिध्यासनिजनामकोतत्वैवप्रभुरहससजावनो॥ युगलअनन्य
अभिमानकेसमाननामरूपमेलगनसोप्रतछ्छभावभावनो॥२९७०॥ औरहूरहस्ययाकेमध्यअनुमानियो॥ प्रथमजोसु
न्योगुन्योताकोमूलजोननवअवनमननतववाकोस्वछ्छ.जानियो॥ सवहिदेख्योजोनछोटोवडोवस्तुताकोहेयविस्म
त्तिसाईनिदिध्यासठानियो॥ युगलअनन्यअपरोक्षलीकीभातितवजवनामरूपमेआपनपोप्रमानियो॥ सांचसंतसेवन
नजानोदृढताईमीतऔरहूरहस्ययाकेमध्यअनुमानियो॥२९७१॥ अमलअनूपयामेभेदएकऔरहू॥ अखिलउपाधि
व्याधिरूपविषयपंचहूतेपारजवहोयतवश्रवनसुनौरहू॥ देहअनुरागमेटिजोवेजवपारतवमननप्रकारऔरवातसव
वौरहू॥ चित्तकोउपाधिसेंउलेंचिनायज्ञानजवततवनेहनिधिनिदिध्याससिरमौरहू॥ युगलअनन्यअहंनासभएअप
रोक्षअमलअनूपयामेभेदएकऔरहू॥२९७२॥ हैअतिसूक्षमरीतिसभीसियरामकृपातेचैनदृढधारो॥ लोकिकगंध
विहायमलीविधिनामरटोनहिआननिहारो॥ धामनिवासउदासजहानसेरागनद्वेषहमारोनप्यारो॥ युग्मअनन्यउमं
गवढेभववासनामूलकढेनिरधारो॥२९७३॥ नामसनेहविहीननकोअनुभवसुखस्वादहुनकेसेहूंआवे॥ जैसेविना

धवसंगसेजेतिहुकाल~~नवाल~~नवालमुवालकजावै ॥ जैसेविनारसनासुनिसुंदरकोमलवागविचित्रनगावै ॥ जुगम
॥श्रीराम॥ अनन्यविचारिकेऐसेहिंनामरटैमुदमंगलछावै ॥१२७४॥ देहदुखगेहनिर्वाहहेतनेहयुतखेहखरसमजोउडा
तसोईस्वानहै ॥ जौनजनअतनविहीनपीनतोषसजिमानैदेवतंत्रसोनृपआपरधानहै ॥ मानुषकीआसअभिलास
करैजौनजनतीननीचकीचखेहरूपहीकोखानहै ॥ जुगलअनन्यपरवाहआहहाहकरअधिकविहायमहामो
दमधुपानहै ॥१२७५॥ आखिरमेमरजानाजरूरनसंगचलेकछुसाजसमाजै ॥ कोहवपावकिवायससोंसठखा
तहैसुखस्वाससुराजै ॥ गाइएराजिवलोचनरामकीकीरतिकोटिकलाकरकाजै ॥ जुगमअनन्यजिवाइएमानसआ
पनोत्तोलिकैनामततराजै ॥१२७६॥ परकेचोपरहीमलेरहोतहांनिहायपैपैठतअपारजाकोकवहूनपारहै ॥ सेरहूं
कोआधपुनिताहूमध्यऊनताकेकारनमहतमठसंकरसिंगारहै ॥ कोटिनधनेप्रामममअववनपेप्रानामपायकेअ ॥नाम्ने०॥
घायनहीवडाईविकारहै ॥ जुगलअनन्यमोसेमलिननरनपरवारवारकोटिवाररोजहीधिकारहै ॥१२७७॥ पाव
कप्रवलपांचआंचतेदहतपायकठिनकलापकुलकालिमाकलंकको ॥ कर्मकांडमानिजोमहानसअनलवलअल
पकलपनाहिछुद्रनीरशंकको ॥ अपरउपासनासोजानुआवआगसमशोकदामअगिनिविचित्रविनाअंकको ॥

युगलअनन्यबड़ागिनिविचारमहाप्रलयकोकृसानुअनुभवइहेवंकको॥११७८॥ जानकीजीवननामजपेखेपकालक
रालकषायकरोरन॥ शेषरतीनरहेजगकीमतिप्रीतिप्रतीतिबटेजसजोरन॥ ज्ञानविरागसुयोगमहाफलनामसुप्रेमअ
कामहलोरन॥ युग्मअनन्यअतीवअगाधअबाधरहस्यसुसंतनिहोरन॥११७९॥ अखिलजहानवीचभूषआरिभागहै
आधीभूषमाभूजगजीवनकीचाहसबखानपानमानसुखसकलसुभागहै॥ तैसेहींपटनसबगंधघनसमूहशब्दचातुरीवि
चारिएजुनीमभूषलागहै॥ सारीभूषताकोजाकोचाहपरलोकनित्तछोडिकेकुसंगलोकलाजब्यामवागहै॥ युगलअन
न्ययुगआधभूषनेहीमनअखिलजहानवीचभूषआरिभागहै॥११८०॥ जाकीमतिटूटिरहीरामरसरागहै॥ सोईसंत
माचितसुरूपमेमगननित्तविनवरपायत्यागिहियोमःवभागहै॥ अमलअनूपनामध्यावैनाचिगावैरामरशिकीरझावै
सुबजावैबाघलागहै॥ काहूसेननारेखतिलअंतरकपटरीतिसीतारामकरकैंजविकेबिनाहागहै॥ युगलअनन्यसोईबं
दनीयसोऐसेसंतजाकीमतिटूटिरहीरामरसरागहै॥११८१॥ जिनकेजियजीवनजानजिवावननामसनेहसुचाहज
गी॥ तिनकीकरनीकरतूतिकलोकोइजानिशकेनहिप्रीतिपगी॥ सियश्यामकेपखिवेकीजिहिंचाहहियेहटमांहिअखंड
लगी॥ जोहिकोमलभूषअनन्यअनूपविकारकुवासनाभानभगी॥११८२॥ पीवकेवियोगमेंसहसमसतसानुकूलमुव
केसमानखेहहोहूसबकालमें॥

॥श्रीराम॥

भावैनहींनीइखानपानव्यवहारविषविमिषसमानसवसौरव्यहरहालमैं॥ तैसहिंसुयोगमएमोहहूंअपारशानकोटि
ब्रह्मांडकोसुप्राप्तसमवालेम॥ युगलअनन्यनेहवाननरीतिप्रीतिअगमअथाहएकरससवकालमें॥११८३॥ जागेनव
जनमअनंतकोसुकृतस्वच्छयुगलअनन्यतवपावैअनुरागको॥ पागप्यारप्रनयहींमेलोकवेदवैनत्यागिभूलेभ
वविषमविषादद्वंदद्वदको॥ खिलेमंजुकंजकमनीयमालमअमध्यारेखेदिलहारप्यारसहसविभागको॥ नामकेरटत
सवसुगमअगमनामहीननेकोनित्यहटवूझोविनाहागको॥११८४॥ नामसमानसुधाकाकामदकोनकृपालवि
योहरसाबे॥ धोरहीमेहमसेंखलपातकीलेतलगायहिएअनुभावो॥ छोडिइनेजेहिआसहेऔरकीसोपछितेहेअं
तसचावो॥ युग्मअनन्यअमयपुतमीनप्रतीतिसेंनामहींकेगुनगावो॥११८५॥ षटलच्छनमानुषमाहिनिरंतरवेद
विचक्षनभाषतहे॥ तेहिकेपुतमानवहिव्यसहाविनाअंकपशूसमराषतहे॥ परवामलषेजननीअपनीजियमाव
विषयनहिचाषतहे॥ मनैयुग्मअनन्यसुजानसुनोमततरीतिसेसोअभिलाषतहे॥११८६॥ धनआनसमानप
खानगनेअभिमानविनाविनमानरहावे॥ समआपनेलोककहंवलषेदुषमोदअभेदनभेदगहावे॥ आपनोई
शजहानकेरूपकोरवूवविचारकेरसुषछावे॥ युग्मअनन्यप्रपन्नमनेइहलच्छनसेसियरामरिझावे॥११८७

विधोनामदूसरो

५

॥नामनं०॥

॥श्रीराम॥

॥२६५॥

रीतिपुनीतिसुसंतनकीसुनिएगुनिएउरनेहवढाई॥ वासनाहीनविरागकोवर्त्तनोचाहच्यवावउपाधिविहाई॥
दृढताप्रभुरूपकेज्ञानहीकोहियमेपरतीतिअखंडसचाई॥ युगमअनन्यतनोमनवागसेनामसनेहसुभक्तिजमाई॥११२८७॥
ऐसेरसवंतसंतप्यारेस्यामकंतको॥ जिन्हकीविचित्रवृत्तिसावधानरहेनित्ततीनहूंसुदेहमध्यमोहमोदमंतको॥ जीवन
मरनसमअसमविहायगामफिरेंहमदमदामअनामभगवंतको॥ छाकेरहेराजखाजखाहिमनहेचपैचनैनमनलावेके
हूंऔरदुतिमंतको॥ युगलअनन्यमतिमंदमैवखानोकहाऐसेरसवंतसंतप्यारेस्यामकंतको॥११२८८॥ संतनकेगुन
गनगावतगुलामगुनगोपलोपलालचलवारलोकलाजहूं॥ होतजोतजीवनजहाननित्तशोतविनामोतननजी
कफेरकुमतिकुसाजहूं॥ आपहीसेसानकूलभ्रलभारभानहरउरमेउदोतज्ञानरहसमाजहूं॥ युगलअनन्यविस
राइएनिखिलनेहपारोंदनेहतसंतनिकटविराजहूं॥११२८९॥ दिव्यताहेहअदेहहदशासुदगेहसनेहसुदेहसपावे
भव्यताभावअध्यावअनूपमचावचरित्रविचित्ररचावे॥ नव्यतानाहमनोहरअंगकीरंगसमेतसुहागदृगछावे॥
युगमअनन्यअसव्यतालौकिककानकलंकसमूहवहावे॥११२९०॥ जेतविधिधर्मकर्मसुभआचरंततेनमहीकेका
रनविवेककेविलाससें॥ नेमसवप्रेमकेनिमित्तनेहवानकेहेप्रेमएकाकारहीकेअरथहुलाससें॥ एकोरवृत्तिनाम

का

॥२६५॥

॥श्रीराम॥

रूपसुविचारेहेतुसोऊपररूपथितिकारनप्रकाशसे॥ युगलअनन्यअनमोलमहामनीसमवचनविचित्रसंतसु
हेसुवासमें॥ २२२१॥ संतजनवचनविनोदअविनोदहरअंतरतरनहेतुसंतमुहकेतुहै॥ कोमलकलितकम
नीयकलाकरकामदायकसुमनसमसुरभिसमेतहैं॥ सुधाहूतेमिष्टइष्टअखिलअभिष्टप्रदअसदविहीनही
नपालकउदेतहै॥ जानकीजीवनजूकोदिव्यनव्यभव्यजससहितसलोनभ्रमरहितसचेतहै॥ २२२२॥ ऐसी
वानीविमलवखानेसोईसंतहै॥ सत्यसावधानसानुकूलमानमूलविनइष्टप्रतिकूलसूलसमनसमेतहै॥ प्री
तिप्रतिकाशप्रेमकारनकठोरगुनअरसनजासेंरंचस्वादरसवंतहै॥ वोलतवचनमानोझरतसुमनसुविपा
रिजातआदितरुललितवसंतहै॥ युगलअनन्यमोसेंसठनसेंहोयकहाऐसीवानीविमलवखानेसोईसंतहै
२२२३॥ वानीहीतकाकअरुकोकिलालखातहै॥ रंगरूपवीचभेदतिलहूनपाइयतकाहूभांतिदेखातवएकही
देखातहै॥ सिंहस्वानरूपएकप्रगटवषानेसवपौरुषसमेतधुनिजानोवडीवातहै॥ ऐसेहीअनेकवस्तुएकसोदे
खातपरवोलेसपछानेभलेभलेलोगनमेजातहै॥ युगलअनन्यसंतदुष्टमेपछानएकवानिहीतकाकअरुको
किलालखातहै॥ २२२४॥ वोलिएवैनविचारिहिएनिजवुद्धितराजूमेतौलिसयाने॥ खोलिएखानविवेक

॥नामने०॥
॥वाटिका॥

समेततहींहोपनजामेहसीदुखखाने ॥ जौनविलक्षनवागधिनोहसुनेउमेगमुरमोहमहाने ॥ युग्मअनन्यनजामेजहान
एवानीकोबोलनोहूरिअपानि ॥ ११२५ ॥ सीतारामनामलिएबोलेवरवैनको ॥ ज्ञानभक्तिभाववीजविरतिविचित्र
वीजकरेजाकेवीचसोईवानीचित्तचैनको ॥ सोभानहींहेतव्यर्थवादवकवादसंतकीजिएविचारसहाछोडिमोह
मेनको ॥ भूपनकीवातदेसदेशनकीवातखानपाननकीवातसववखेहकरचैनको ॥ युगलअनन्यजसउज्वलसमे
तसुचिसीतारामनामलिएबोलेवरवैनको ॥ ११२६ ॥ जानोविचारमेंपांचप्रकारविकारविहारपहारदहावन ॥ मानोसु
६ प्रमान
आदिमेदीपसमानप्रकाशहुलाशवदावन ॥ आनोद्वितीयमसालवरावरवस्तुविचारगरूरगवावन ॥ युग्मअन
न्यप्रमानोहिएमहत्तावीसमानस्तुतीजोसोहावन ॥ ११२७ ॥ चौथोविलक्षनवस्तुविचारविचारिएएकमचेहसमा
ने ॥ वारतहेछिनहीछिनमेपुनिद्वारिनहोतप्रकाशसोहाने ॥ हेअपरोक्षविवेकप्रभाकरकोदिनेमोहनिसातमहाने ॥ यु
ग्मअनन्यएपांचविचारकोलक्षनलक्ष्यम[illegible]लेपहिचाने ॥ ११२८ ॥ प्रीतिहूंपांचप्रकारविराजतजानिएचित्तसनेह
सजाए ॥ दामिनीजोतिसुपंथलकीरतथाखरवोलपखानखचाए ॥ वावनरीतिविचित्रविचारिएउत्तममध्यमनीचगा
नाए ॥ युग्मअनन्यलहेसवोंपरप्रीतिसुनामनिशानवजाए ॥ ११२९ ॥ पविकेसुलीकसमप्रीतिएकमानवी ॥ एकप्रीति

॥ श्रीराम ॥

बाहकी श्री भीति विपरीति अति रहत न नेक नास मान ताहि जानवी ॥ एक प्रीति जन लेके तमंगां गसम तुच्छ उठत हीं मोह दान
तुरत पछानवी ॥ युगल अनन्य तूल विंदु नीर माह सम प्रीति सुपुनीत ताहि संग रचि ठानवी ॥ संत गुरु संवत सु सों चगत आंच
परखु पविके सुलीक सम प्रीति ए मानवी ॥ १३०० ॥ चारि पदारथ येखेन अर्थ विलक्षन चारि पदारथ सोहत ॥ स्वरति स्वच्छ
समागम संतर मे मिय कंत सनेह मे मोहत ॥ आत्मानंद अमंद मिलाप अताप हमेशा तिहूं तन दोहत ॥ युग्म अनन्य अनूप मवे
न अमैन सचैन मही जन जोहत ॥ १३०१ ॥ लाभ न ही जग मे गुरु संत समागम रंग उतंग के प्रानी ॥ भेटत हीं जिनके जि
य जागत जोत निसांत रहस्य कहानी ॥ भूलत है अनयास धराधन धाम जहां लगि नात जहानी ॥ युग्म अनन्य कहौं मै कहा
छन अंतर मे मिलें सारंगपानी ॥ १३०२ ॥ जड़ चेतन गांठि खुले पल मे गुरु संत सें जो मिलिए महत्यागी ॥ अडरे वपु मन रहै
कवहीं न कटैं तिलमान हूं ते ल अभागी ॥ खेतन के मग मे अट के पग लागि है कंटक मूल दवागी ॥ युग्म अनन्य गहा वडवे
न मुनाम रटो हठ होय विरागी ॥ १३०३ ॥ परम परेश अपरोक्ष स्वच्छ वोध वर लक्षन ललित मुनो सज्जन सनेह सें ॥
समता सज्जाए सुख सहज समाए श्री श्रेष्ठ हूं न हा प्रहिए संचक विदेह सें ॥ आए गए मोद शोक मित्र शत्रु सम सदा जुदा
न विवेक व्यवहार गुन गेह सें ॥ युगल अनन्य गति तिनकी अगाध अति गाए गुन होत हिए हरख सुमेह से ॥ १३०४ ॥

॥ नामने॰ ॥

साधुनकीरीतिसुपनीतगाएरंगरेजचटतआयाहनातेगाइएविशेषहीं॥ इरखाविचित्रहूंहकोहमोहजानोतिन्हमानो
तैानरहसहमसछोडिदेहहीं॥ इरखाविरागज्ञानध्यानवृत्तनिमित्तहूंहचित्तसनकोहकोहऊपरसुपेषहीं॥ जुगलअ
नन्यमोहनामरूपगुनवीचवमीचतेरहितहितआपनोपरेखहीं॥ १३०५॥ तैाननरनीचकीचमानोमहामूढ़जौननजानैमा
यमीवतऊमनजतनरामको॥ खानपानधनसनमानमेंभुलान्योसठअंतककोत्रासननिहारैऐसोखामको॥ संतनस
मीपजातसरमसकोचपोचपांवरपखंडरतठानेप्रेमवामको॥ जुगलअनन्यकौनकहिएकेलशताकोसहेकोटिदु
ष्पननरककिनाकामको॥ १३०६॥ ऐसोअहमकऔरदूसरोनजानियो॥ पायवपुमानवअलभ्यलाभयोगजडफेरअ
डवडमगअवेलेसुपछानिए॥ पोरहिनवीनपरनिरयनिवासक्रूकराहिदेहरासपाकोमिलेऐसमानियो॥ हंसनखेलनमें
विगोवसुखसोवसठवडोअचरजवातआतवनआपियो॥ जुगलअनन्यलोकअखिलकेमध्यमीतऐसोअहमकऔ
रदूसरोनजानियो॥ १३०७॥ कालकोनगारावाजेहरदमभालहै॥ सुनतनमूढमनमेरातेहोतनतनिहिनिहोरासविनाजो
नमोहमालहै॥ रागद्वेषरागहिलआपनेजमायोजडवडकहहावैपैवडाईपायमालहै॥ भारतवरषलहितऊनसंवास्यो
काजवडाहगावाजकाजपरोतापैहालहै॥ जुगलअनन्यसंतजनचौकिवैठेउरकालकोनगारावाजेहरदमभालहै॥ १३०८॥

ग

॥श्रीराम॥

नामरटेअघपुंजकटेसबबातपटेनघटेसुखसोहन॥ लोभलटेहियहायहटेनिघटेजगजन्मजरादिविमोहन मोह
फटेनबटेचितचंचलताहचेटनसटेदुखदोहन॥ युग्मअनन्यअरेसरजूसुचिस्वच्छतटेलपटेयुगजोहन॥१३,९॥
करमउपासनासुज्ञानकोस्वरूपस्वच्छसमुझोसदूरीस्वादसरससमजायके॥ अज्ञाअनकूलरहेछोड़प्रतिकूलभूलभि
टेसबसूलसोउपासनासुभायके॥ कर्मकांडपापनसेंवचेसावधानहोयलावैउरग्लानिहामिअपनेअचायके॥ युगल
अनन्यज्ञानसोईजाभिमानभवमिटेकेरोगसोगसंसृतिवनायके॥१३,१०॥ तीनोकांडसारअधिकारइतनेहीवीचजानि
हेअकीचचित्तचपलचलायके॥ याकेपरेअपरकथनऔवकनसववाककोविलासलोकरंजनारचायके॥ तातेसारधा
नहोयहेरातीनोतत्वतरअमरअजरकरकारनसमायके॥ युगलअनन्यसुखसौगुनअगुनगुनपारअनायासपावोप्र
म रंगछायके॥१३,११॥ कर्मकियेकलिकोटिकपापकटेदिनथोरहींमेअनुमानो ज्ञानकेभाननसेअनजानकोमानवि
तानतनेनप्रमानो॥ उच्चलहिव्वउपासनासेमिलेलालरसालसदासुखखानो॥ ताहितेतीनोकोधारेंसुधीजनइशत्रोक्ता
ललिएपहिचानो॥१३,१२॥ ज्ञानविरागनथाअनुरागविहीनसदासठहीनरहावै॥ वासनावृंदविलंदनमेंवधिसंधि
नआपनोनाहनहावै॥ लौकिकरीतिसेंप्रीतिकरैपरलौकिकरीतिअनूपवहावै॥ युग्मअनन्यनमानुषसोपसुपांवरप्रेतमसा
नकहावै॥१३,१३॥

॥नाममं०॥

॥श्रीराम॥

॥१६८॥

ष ह

लोककहंवनमांहगुनोतुममार्नुरेदविसेखनजानो॥ एकअनूपमपूरनज्ञानसुनामसनेहसमेतप्रमानो॥ आधेमेजीव
जहानजितेसवकर्मअकामकेपंथपयानो॥ पुग्गलअनन्यजोराहमलीनचलेसोसहीपसुतेलखुमानो॥ २३१४॥ हेदैपाप ह
पुन्यजानोनिखिलजहानमें॥ एकपापकठिनकलापतापरूपतौनजोनूनहीजानेनामरूपआपसपानमे॥ तेसहीसुहातएक
ज्ञानवोस्वरूपपरआपनेसहितलीनमोहहीकेभानमें॥ परकोदुखावैमनवचनकरमसोई आधोत्रयरहितसुकृत
हूंप्रमानमें॥ पुग्गलअनन्यपातिपरवकवारहवडुहेदैपापपुन्यजानेनिखिलजहानमे॥ २३१५॥ याहीभांतिमंगलविनो
दमोहस्वादसुचिसंपतिसमूहवीचकीजेअनुमानहीं॥ पूरनपरेशवोधवाननकेहीयवीचऊरनअखिलव्रह्मांड
नमेमानहीं॥ नामअनुरागिनसमानहर्षततैविनदूसरेकेनिकटकदापिहूंनजानहीं॥ पुग्गलअनन्यसंतवचनवि
चित्रसुधाहूंमहामधुरसुनतसुखखानहीं॥ २३१६॥ आसानामनहीमेमनोरथकोनीरखवसेतुसातरंगनानारंगहरसा ॥१६८॥
वती॥ रागहीहैग्राहतामेविहंगावितर्कधीरद्रुमनकोहनेमननेमेरोडरपावती॥ महामोहभौरदुस्तरअवगाहविनचिंता
ममतातीरपीरकूंद्वरसावती॥ पुग्गलअनन्यऐसेसरितसुपारभएमोदितयोगीशनामनेहीभावभावती॥ २३१७॥ सीता
रामनामहींमेसदाकुशलातहै॥ वडेवडेचोरराहहर्नेहजारोंजोनलूटैदिनमध्यलेशआसंकाहूनगातहै॥ नानाविष

श्रीराम

वढ्लैनपैरपहिचानसदहढवससहाकेरे प्रीततनपातहै कोऊनसहाययोगभोगजोनिवारैऽहरोमेरोममामक लागी
आंचउतातहै युगलअनन्यऔरशरननजो चाहमसीतारामनामहीं सेमहाकुशलातहै ॥१३१८॥ शास्त्रस्व
रूपबोधअवलोकिविनाजोनजनकरेंअभ्यासतिन्हेंस्वाहनयथार्थहै पचैरैनअैनपैनपावैचितचैनजैसदीपक
तिमि
विहीनअैनदीपकेअकार्थहै तातेसावधानह्वायमानमदमत्सरधायखायखुदख्यालवेदबूझोपरमार्थहै युगलअ
नन्यभाषासंस्कृतभेदनाहिचाहिएविशेषबोधवेदमेंएकार्थहै ॥१३१९॥ चारिपदारथमीतसुनोमनमोहगुनो
मदमोहप्रदायक एकछोटनितवारतएकछोटनवेदएकजानुसुभायक एककभीछटजाततलखोतुमफेरिकहूंवरि
जातसमायक युगअनन्यउपाधिमिटैजेवनमरटोरसनारघुनायक ॥१३२०॥ छोटपलपलवीचआयुघननीचलखे
भवभीचढीसचढीश्वासअनमोलकी वेटादिनदिनछिनछिनतमरूपतषानरुनीहमप्रानवुढायलोभलोलकी
छोटवटपावतिलकेसेहूनभाग्यनररहेएकसमतऊगहेडमाडालकौ युगलअनन्यसंकलपऔविकलपयुगछोटव
टेरोजधारिसंगतिनिचोलकी ॥१३२१॥ वसजाकेसदावुधिभावनीवामगुलामभयोमनपूतप्रपंची रसयाकेवसेसु
खधामसांईजनजीवनमुक्तसुधारससंची असताकेसदादृगतेअपनेविषयोनसमानविभूतिविरंची हंसवांकें

नामेन.

चिदअरूपचिदचिवेवनकिरतेएकअंसतिरशंसध्वंसपावेअविसेषतें

।।श्रीराम।।

।।२६२।।

वेहैनकहै उरत्येहसोजीवनमुक्तअनन्यअबंधी।।१३२१।। ऐसीहसाहिबरहेजिनकीओडालहे।।सातोसिंधुसीकर
समानगुनेभानुसथीजुगुनूसमानसुरपतिरंककोसहै।।कामधेनुदेवतरूपारसहूंचिंतामनिमानेपसुरूखतुच्छउपलक
सोलहे।।जोनततीनोवासनाकोप्रवलविरोधीनिजमानेमानश्रुलशतसहसविलोलहे।।युगलअनन्यसदाजीवनमुकु
तसाई ऐसीहसाहिबरहेजिनकीओडालहे।।१३२२।। भजिएमलभावसमेतसदासियरामसुनामनहींतजिए।।तजिएतिस
नातरुनीतननीनहूधामधराहिससेलजिए।।लजिएसपनेनहिगावतजानकीजीवनकेगुनप्रेमसजिए सजिएजियपुम
अनन्यसुसंगसुरंगकुरंगनसेभजिए।।१३२४।।चारिभागजानिपोअविद्यावीचवोधसें।।ताकेनासहेतहूविचारिएउपा
यचारिएकभांतिहानिहोतमनकेनिरोधसें।।एकभागछीनबुद्धिधर्मतेविलगमएअसतविसारसतगहेसुऐसाधसें
युगलअनन्यभागशेषरहेनहछोडिचारिभागजानियेअविद्यावीचवोधसें।।१३२५।।चारिउपायवनेअतिखरेसें ।।२६२।।
तातेविविचित्रउपायविचारो।।एकहीकोकिएवीजनसेनवसेपुनिआयरहिएअवधारो।।नामसुधारसपाननिरंतरकीजिए
ओर [illegible] चितरूपविसारो।।युग्मअनन्यसजेसतसंगसुरंगउदैपअनुरागहजारो।।१३२६।।शुद्धवुद्धलच्छन
विशुद्धबुद्धिमानकहेहहेहिलहागरागआगवामवागको।।अनुद्वेगरहेचित्तसमतासजाएस्वच्छएकरसवीचनहींपडलास
लागको।।

॥श्रीराम॥

मीत

मेहव्यवहारपरमारथकेमछैहोयनकहापिचित्तपग्योप्रेमपागको॥युगलअनन्यकरुनाहीतेंसुलभसदरहसअनूपनही
कामतीनतागको॥२३१७॥तीनिभांतिपरचापछानिएसुप्रेमसें॥चित्तचलअचलकरोपैप्रीतिरीतिपुत्तरंगेअनुराग
सोईवादशाहीसेमसे॥ज्ञानध्यानधारनासेमतईशभावचावजानियोवजीरीवृत्तिहीनलिएनेमसें॥धर्मशास्त्रउक्तशु
भआचरनजौनतौनजानोधनमानसमपरचोअनेमसें॥युगलअनन्यव्यथाखोइएनहिव्यततनतीनभांतिपरचापछानि
एसुप्रेमसें॥२३१८॥चोटचित्तजीतिवेमेंजानोसवसंतकी॥प्राकेजीतेविनानविरागअनुरागज्ञानध्यानरसखानकोमि
लनवातअंतकी॥शुद्धसमस्वरूपपांचवृत्तिकेसमेतयामेंअधिकअचेतऔरवृत्तिहैअनंतकी॥हारोकरिजतननआवे
तरुहाथखलजोलैनिर्हेतुकीनकृपासीताकंतकी॥युगलअनन्यअतिकठिनकलंककरचोटचित्तजीतिवेमेंजानो
सवसंतकी॥२३१९॥मनकोस्वरूपजानेपैयामांसंतजनभएजेअमननतनतीनहूंभुलायके॥जीतेजगवीचदुखसुखदु
खरोगसमसहामुखतुखनामरूपगुनगायके॥सोईसुखसेजतनतामसतरकत्यागिरोवेकहूंहंसमीतप्रीतमसमायके
युगलअनन्यअनमोलऐसेसंतप्यारेसहासीपैकंतविश्ववासनावहायके॥२३२०॥जानिएजिज्ञासाहींकोमनसंगजंग
जीतहारचलअचलउपाधिआधहीनमें॥भएविनाचाहचित्तचपतनदाहदाहलौकिककुमतिनसिरातलीनभीनमें॥ ॥

॥नामसेन॥

॥श्रीराम॥

॥२७०॥

सों चेमसद्गुरु वेद्य आतमप्रबोधवान तिनही के सोध साथ ह्वे न हूं दीनमें॥ युगलअनन्य आग्री विषकंचुकीसमान तजेतोम
तमतनअतनएकीनमें॥ १३२७॥ मोतप्राइ रोखे अभिलाखरस चाखे दि अगुनगन भाखे नेह ताखे अभिमानतनन॥ कोटनिजस
हनअमीपसेकुमीचनी च चाटत नमोह घन ज्ञान सुखखानमन॥ जोग अनुराग जवउ ज्वल लहर हार त्पोग तत कालकाल
करमसुभावगुन युगलअनन्य छाके छे लअरधमाछ विजीतिके स्वभाव साई जीवनमुकुतजन॥ १३२८॥ रामनाम रटे कोर
पातकप्रपंच पंच रहेनहीरंच मोहमेव अंचखावमें॥ धामसरामसुरनिमुलावे मुहछावे लवजगतह ववमिटहट विना
आवमें॥ पावैचिनतचै नैन्नन क्रूरपूर रहे रोजरैन एकरस कहा कोनि माहतावमें॥ युगलअनन्यजन जीवनमुकुत दि व्यभ
व्यभावमायसम लाय लहो लावमें॥ १३२९॥ जीतेजो सुभावसोई सूर संतभाव चार सहित अहितहित उदासीनसम है॥ भीजे
नाम रूप रस अगम अनूप छर वसे लसे खसे नके रापिआपगम है॥ लोकवेद्य बंधनविहाय गाय गुनसार महामोहधार प्यार
संगहमहमहे॥ युगलअनन्यजन जीवनमुकुत नामनेह मेनिरत हरसा नकमक में है॥ ताहीको सुदृढ अभि आस सुखरास
स्वच्छ्रुपस्यो जिन वेदशास्त्र संहिता पुरानमत॥ जाग्यो सारासार नीके वुरे को विचार उर धार्यो आविकार मुनअगुन
परमातन॥ देखे विना गेयपंच पावतन नेक अंतभूल अविवेक टेक मूरख विघाहत॥ युगलअनन्य वेद वोधित सुदृष्टि ज्ञान

2332

॥२७०॥

॥२२९॥

॥श्रीराम॥

मेटत अज्ञान वेन सदा अविचल मन ॥ १३३७ ॥ कर्म उपासन ज्ञान जथारथ रूप सु लच्छन वेद वखानी ॥ तीन हूं को फल लोक
सि बाहिर जाहिर संत सभा सुखखानी ॥ चिंन्तसे चिंन्तन से सब भांति उपासना सो मन मे रमे मानी ॥ चाहि सही न उपासनता पी
न अनन्य उभै सफल सब छ सोहानी ॥ जो लौं निज इष्ट की विभूति उत्तकर्ष पन ध्यावै न अखंड तौ लौं तु छहै उपासना वा
नीव की विविधि विलंद पै अमंद मन होत न कहापि छीन हीन दुर्वासना ॥ ईशान के पति अगति न गति प्रद राम सीतापति जानि
फेर रहे औ र आसना ॥ पुग्गल अनन्य मो से मंद दंद फंद फंदि हरि हसे हर्ष संस्ति सम हनन की उपासना ॥ १३३८ ॥ चाह चटी ज
व लौं चित्त है चित्त में हित में मन मान न में ॥ आह वटी छन हो [illegible] छन है तव लौं न हिरं गहे ज्ञान न में ॥ अच्छर वी च पर
रथ नित्त निरच्छर नाहि पुरानन में ॥ पुग्ग अनन्य अ चाह रहे न वहो दुख होय उहा न न में ॥ १३३९ ॥ मन मति चित्त अ
हंकार की मलीनताई होत चार तौर गौर ज्ञान पुत्त जो हिये ॥ चाल चतुराई राग द्वेष चट काई व्यर्थ वस्तु वीच लोभ तन
मोह प्रेम पाहिये ॥ चारो के न साए विन छूटत न कहा पे जन्म मरन की त्रास दुखी सम लटो हिये ॥ पुग्गल अनन्य संत संग सस
नेह साजि विषम विकार यि षवीज को न वाहिये ॥ १३४० ॥ सोई चतुराई जा मे मिलें रघुराई दूरि है पहु चिताई दुखदाई
लोकलालसा ॥ राग राम रंग द्वेष अखिल कुसंग अंग जंग मद सवल अनंग मेर चाल सा ॥ हिय देह वास अभिलास

॥नामने०॥

आसनिर्वासपरमप्रकाशसुखराशिख्यालखालसा॥युगलअनन्यबूझेसूझेसुखसारप्यारप्रीतमविहारजीतहार
नेहनालसा॥२३४२॥बुद्धिबोधविमलविचारशुद्धिवेगिचित्तचेतनविचारोमलरहितअमलहै॥उन्मुनिभारभए
मनहूंअमलसितजोतजगमगतअखंडजलथलहै॥यु निजरूपअनुरागभावएककिएअहंकारभारनरहितछल
वलहै॥युगलअनन्यचारोसाधनप्रकारसारवेदबुधकहैंनिराधारपरिमलहै॥२३४३॥नामअनामअकामरट
अभिराममोहब्रतमीतसलाए॥रामओधामकीभूलिहूंकेचरचानकेअभिलाषवढाए॥स्यामसलोनेकेरंगरंगे
मनभीतरबाहरवेषछपाए॥युग्मअनन्यलहेललितकांतरूपअनूपछटाछविछाए॥२३४४॥कोनसेंवैरविरोध
रचौंसवमेसुचिसावरीसूरतिसोहत॥जोनवातछिपावौंकछूउहतोनमेंजानकीजीवनजोहत॥मोनरहौंकेहिसे
अवमीतवहीछविमाधुरीमोमनमोहत॥युग्मअनन्यउपैसनाहिंममुलछनलस्पलिएअवरोहत॥२३४५॥
सीतारामभईसवझंखिवेदबुधवदैंसोवोनहींनैनचितचैनकैसेपाइए॥पीताविषब्यालजोनजीतारहेकहोकौन
औसीगतिबूझिसुखमैनमलभाइए॥रीतामननमतिममरहसउहारसमरहितविशामग्रनभरितविताइए॥युगल
अनन्यमीतामेरोनहीकोउजंगजालिमजलावैकहाकरेगुनगाइए॥२३४६॥सतचितआनंदप्रकाशरामसतीनोतिन्के

॥ श्रीराम ॥

तीन बीज रोके या महा कठिन कलंक कुल ॥ अखिल अनित्य ने हसत को निरोध कियो दुख मोह मूल कलु कायो नेतारि प्रीति
पुल ॥ अचिद विलास सुद्ध चेतन रोका सो जात खेद अधिकायो कोऊ लहत न नासु तुल ॥ युगल अनन्य तीनो मिटे परत्यूह
नव नव सनत चिदानंद भासत मुलाय मुल ॥ २३४७ ॥ अमल अनूप वेद सार भाग सुनै मन मनन समेत गुनै भुनै तवतीनतम
॥ सांचो सतसंग सहास जे सुख पायउर अस हमु लावै नाम ध्यावै राज हम हम । विशद विराग हागरहित विचार
चित धारे छोडि वेषराग द्वष व्यवहार रम ॥ युगल अनन्य सीताराम की कृपा कटाक्ष करुनानिकेत अनायास पास
मोह मम ॥ २३४८ ॥ जोग ज्ञान वान सुख खान राम नाम जपित पितिव्रत पतो मत मगम नाशते ॥ सोवै चाह चैन वीच विमल
मुमुक्षु जन अतन रहित विषय प्रवासना विलासते ॥ रोवै नर अधम मलीन सव सम सहा जागे नहीं सोवै खोवै
आयुष अरासते ॥ युगल अनन्य नाम जपै परमो ज सुख जाग्रत सपन परा प्रीति के प्रकाशते ॥ २३४९ ॥ खान पान ॥ नाममेन ॥
मान तीन सरित अपार तामे डूबे बहु स्यान सो नगुनन भुलायके ॥ तीनो ततर के होय कर कके र जो जौंहौं पनही रहे फेर
हरि गुन ध्यायके ॥ जैसे तैसे कीजे गुजरान आन मान तजि भजि नाम रूप संत संगति समायके ॥ युगल अनन्य वेठि रहिए एकांत
शांत भ्रांत ने रहित सीता को न प्रीति पायके ॥ २३५० ॥ आपनी कामिनी सुंदरी हूँ पर प्यारी लगे न कभी नेहि अंतर ॥ ० ॥

जौनविकारीकेवीचवस्योमनमोहनीवारमुखीनकोअंतर॥ कोटिउपायकरोनिसिवासरबांधिएबांहअनेकनयं
तर॥ प्रेमअनन्यनलागेकछुव्यभिचारीकेहीप्रेमनेहनिरंतर॥ १३५२॥ मधपीकेउरऔरप्रेमलसोहोतनहीदी
जिएबनायततऊफीकोईलगतहै॥ मांसकेअसनवालेनीचकीचमानवनभावैऔररसनाहिजावतजगतहै॥ विम
लेवसंतविचारधिनविवेकीउरनीतिसप्रमुखविद्यापागनपगतहै॥ युगलअनन्यरामनामसुधासारपानकियेतोकोसा
धनसमूहनठगतहै॥ १३५३॥ कामसोनवैरीअरुवामसोनशत्रुआनमानसोंनमैरीहरीनिखिलजहानमें॥ हामसोनसूरी
वहनामसोनधूरीलोकलाजसोनकूरीकलाकोटिनकसानमें॥ धामसोनमोहगुनग्रामसोंकिनोहनाहितामसोनदाहदुख
दायकप्रमानमें॥ युगलअनन्यरामनामसोनमीतएकरससुप्रनीतहेरव्योवेदहूपुरानमें॥ १३५४॥ योगसोनभोगऔवियो
गसोनशोगजगलोगसोनरोगजोनहोहतहैमप्राही॥ ध्यानसोनहर्षगुरुसानसोपरखअनहदसोसरोदनाहिखोज्योस
वेदसही॥ प्रीतिसोपुनीतसंतसंगसोनमीतगुनगामसोनगीतअविगीतवोधवेशाहीं॥ युगलअनन्यरामनामसोसने
हीनाहिगेहीनाहिरषिकअनन्यअवधेशाहीं॥ १३५५॥ तोषसोउछाहनाहिदूसरोदेखातहै॥ रोषसोंविकरसरसमुभग
सरदोषसोनहारुनदरदवनधातहै॥ प्रेमसोनपोषनेनसोकरोखनाहिवोधनाहिसरजूसमानसरसातहै॥ मोषसोन

प्रप

नासे

॥ श्रीराम ॥

मौज औ सुजनता सों फौज नाहि हिहिए सोन हौज ज्यों मैं जल अधिकात है॥ युगल अनन्य राम नाम सो न चाष चारु तोष सो
उछाह नाहि दूसरो देषात है॥ ३३५६॥ कोशला सों वास औ गुलाब सों सुवास राम रास सों न रास प्रेम पास सों न पास है॥
सत्य सों न भास पातिव्रत सों विलास कहूं महावीर सम न सुहास सुधैरा सहै॥ इस्क सों न प्यास गुरु ज्ञान सों हुलास नाहि हांस
सों न हरष जो सुजन सुपास है॥ युगल अनन्य राम नाम सों न नाम खास आम अभिलाष प्रद दूसरो प्रकार है॥ ३३५७॥ देखो है
खीचे लै बाल ताकी तोखरा विहाल जाल हूं जवा लता के भाल लपटात है॥ आपनो स्वरूप पुरुषारथ विचारि तव कर कैं करतूति
ताको दुख उलटात है॥ कुलटा समान मति आपनी वटोरि राखै चाखै नाम रूप रस जौ न नखटात है॥ युगल अनन्य संत संग सैं
विशेष रेख करम कलंक हूं की मीत पलटात है॥ ३३५८॥ नेह को लगावै निर्वांहै रहत क अकवक छाडि तोडि मुह मोडि तोरि
कै॥ कामना मिटावै दुख सुख सहजावै सब द्वम द्वमशाद पार चिन्न नहीं वटोरि कै॥ भली बुरी बात न कै गली मैं न धरै पाय हा पहिरै ॥ नाममे० ॥
अंतर वसावै जग जोरि कै॥ युगल अनन्य इतउत कहूं झांके नही नैन न निहारै छवि चंद्रमा चकोरि कै॥ ३३५९॥ कबहूं गुन
गावै उमंग लिये हिये रूप मनोहर मैं समनको॥ कबहूं निज नाम सनेह छके सुधि सोंच भुलाय रहै तनको॥ कबहूं दृग मूंदि कै ध्या
न धरै उर भाव भरै रस के रनको॥ भनि युग्म अनन्य सुजान सोई सब भांति लह्यो अपने धनको॥ ३३६०॥ राजिवलोचन राम

॥श्रीराम॥

॥२७३॥

सुनामकीमैवलिजांउहमेंशाहजारन॥ जिनकीकरुनातिललेशहूंपायके मोहप्रेमाह चल्योचितवारन॥ भूलि
गईविषववासनावंहविलंहअमंहउमंगअपारन॥ छप्पअनन्यगह्योमनमोहनपाहनकोनवदोरेअकारन॥ ३३६१॥ स
नाफेरनासमनीरवहेधुनिधारअखंडसुनामसोहावन॥ हंसनासुखसानकोखोयदईनईनेहलगायविकारवहावन॥ धसना
मईमोहकुसायरकोतजिकेतस्यातमतोमतपावन॥ छप्पअनन्यकेजीयवस्योछविसावरोजोनितचितचोरावन॥ ३३६२॥
कलिकालकरालमेंनामअधारअगारसियावरकोसुखदायक॥ गाइएहियगुनाकरकोनिसिवासरशोकसमेतअमायक
आसहमेशहिएधरिकेविस्वासविशेषसजेरघुनायक॥ छप्पअनन्यनशंककरेकछुरामसहायलिएधनुसायक॥ ३३६३॥
मानुषसोतननसुजनसमजननगरनसोंनमोहजोनसोवितअडोलहै॥ गुनसोंनहितऔगुननसोंनअनहितविमलविरागसोंन
वित्तहूअलोलहै॥ धनसोंनमित्रउपकारीअपकाररतमनसोनकोऊदुष्मनदुखडोलहै॥ छपालअनन्यरामनामसोंनधनश्री ॥२७३॥
प्रेमाहबनसमबनऔरअनमोलहै॥ ३३६४॥ सुधासोंनमिष्टगुरुसंतसोंनदृष्टिमाससावनसोंनवृष्टिनकवहूंहरसातहै॥
छुधासोअनिष्टऔरछुधासोकलिष्टलोकमानकेसमाननकनिष्टजमजातहै॥ भोगसोउच्छिष्टऔसनेहीसमशिष्टनांश्रे हि
ष्ठनाहिमानसोसमानसरसातहै॥ छपालअनन्यसीतारामजूसोइष्टसर्वोपरवरिष्टकोऊकहूंनलखातहै॥ ३३६५॥०॥ ॥

॥श्रीराम॥

गानसोंनरंगअनुरागसोंनभंगगुरुज्ञानसोंनजंगजगदूसरोविचित्रहै॥प्रानसोंनअंगचित्तचाहसोंनचंगभवअंगसो
नअपरउमंगप्रेममित्रहै॥मानसोंनहानव्यवधानसोंनहानकछुकुलसोंनकानसांचमानियोनचित्रहै॥युगलअनन्यराम
नामसोंनमानजाकेजपतपव्रतपत्तखोफख्वाहिशत्रुमित्रहै॥३६६॥जौनवडभागीअनुरागीकेनगमकछुसमचित्तविषमविहा
यएकरसहै॥सोईपादशाहनकोपादशाहशाहविनमाहआफताबसेभूलकेनसनसहै॥जाकीसमताकेयोगयोगीयगी
जतीसतीनतपीजपीकोऊकरिसकेनवहसहै॥युगलअनन्यपूजनीयतीनोलोकसोईकोशलेशनंदनहमेशताकेवसहै
३६७॥चित्तचावचाहनहीलोकपरलोकदाहआहअवगाहचाहभूलेजोनजनहै॥तोनईशासमआपतापत्तरहितहि
तअहितसमानमाननास्योतनमनहै॥भीजेपरमप्यारसअरसअरोषतजिभजियुगवरनसनेहमेमगनहै॥युगलअनन्य
परयाहिरविविधिरंगअथवाहमेभावपुराखहींनगनहै॥३६८॥फूटीकानीकौडिहूसेंतुच्छलोकमानताईगाईवेद
विधिचिरचैनछकिरवूवहै॥फूटीछदानसमस्वर्गसदनपुरंदरहूंरंककेसदरासुसमुंदकोहवूवहै॥कूटीकालकामना
मेंकेरननिवासनेकटकइष्टनामऔविवेकमहवूवहै॥युगलअनन्यछूटीत्रिविधिकुवासईषनादिकविलासत्रा
सह्व्योविनउवहै॥३६९॥जिनजितनायमनतितितनिततगौरस्यामछटाअवलोकेंरीकेकवहूनपारुचष॥विहा

॥नामसने॰॥

चिह्नमई द्रूप सीताराम तन न मानै जानै देह की विभूति त्यागि कै विकलपष ॥ अपरोक्ष बोध सोध सरस स्वरूप करि परिह
रि अखिल अरस काल व्याल भष ॥ युगल अनन्य मोह छाया ए कर सतिन्है देखिए विचारि दृग भली भांति सिषनष ॥ २३
७० ॥ प्रीति पगी पिय पसे जिनकी नैंगति लोल अलौं अजा पव ॥ भीतम गीजि प जोत जगी अलगी दुख दाहति हूं गुन गाय व
भीत पुनीत सगाई सगी सुचि भाई विश्राम विकार सेवाय व ॥ युगल अनन्य अजीत अतीत असीत सुसीत वरावर भाय व ॥ २३७१ ॥
वानी सुखखानी रससानी दुतिरानी प्रिय कलित कहानी सरसानी उर आयके ॥ ज्ञानी ध्यानी संत रसवंत नवखानी जानी जीव
न जहानी मनमानी छटा छाय के ॥ परा प्रीति पानी फलकानी चमकानी चार भाव हरसानी हरषानी रंग लाय के ॥ युगल अनन्य
हानी होत ताके सहा जौन सुने न सुवानी संत सुमुख सजाय के ॥ २३७२ ॥ नित्य मुक्त मुक्त मन मोह न मुमुक्षु जन बद्ध विमद न हूं को है
तहि लै मोह घन ॥ वेद उपनिषत सुसार रस धार मव भार व्यवहार कोहर मनि डरत डर ॥ परम परेश रूप अपरोक्ष हेतु तर पर हूं ते पर
प्रिय लोग विधि हरी हर ॥ युगल अनन्य संत रसवंत वैन वर सुधा सरस मकरै अजर अमर नर ॥ २३७३ ॥ वचन विचित्र सम
त प्रतम ज प्रकरर प्रकिए कठिन कषाय काम नाशहीं ॥ उपदेश रूप वेश अचल निवास निधि विधि हूं अविधि जाके सुनत प्रका
शहीं ॥ आवै अफसोस मूढ मन नर पर मित्र जो न हित आपने आनंद है विमुख पेरा सहीं ॥ युगल अनन्य वार वार धिरकार ताप जो न सुख
वपु पाय भयो न सुदास हीं ॥ २३७४ ॥

॥श्रीराम॥
॥श्रीराम॥

ऐसे नीच नर पर आवै अफसोस है ॥ जाने मर जाने फेर विषम भुलाने हां सरस लपटाने उर भाने हांस को ग्राहै ॥ दू-
जो उपदेश माया मोहनी अनित्य सुख सम भेन त्याग दृढ प्रीति सजे तोश है ॥ तीजे विधि अंकन मिथ्या मिटत उरं ककर
न उपाय को छि आस कन होय है ॥ जुगल अनन्य कहा कहिए वषानी मीत ऐसो नीच नर पर आवै अफसोश है ॥ छं ७५ ॥
चौथे तापै सोचे अफसोस सतोस विना रामसहित हमेशा आवै रूकत न नेक है ॥ जो न जड जानि वूझि विरति विवेक फेर पंच प-
रपंच वीच विगत विवेक है ॥ पांच वा अधिक खेद होत ताके देख जो नर रतन नाम पाय संगति विवेक है ॥ जुगल अनन्य निरयु-
आत से सवे फन हि करत कलंकी जानि वूझि पाप टेक है ॥ छं ७६ ॥ जानकी जीवन ईश सिरोमनि को सुख स्वच्छ सुनि ताहू
जानत ॥ तात पर न विनोद प्रमोद कहूं इहनी के के चित्त न मानत ॥ ऐत हूं पै मिले न हित स्याम के कायर कूर प्रमाद न ठानत ॥ जुगल अन-
न्य छबो अफसोस समस्तो हि मूरख मूड पै आनत ॥ छं ७७ ॥ आवै अफसोस सरोस तापै वार वार जो न परम परेश पद छोडि भजे
और को ॥ करुना निधान सुखदान जन दोष मरति लके समान न निहारत अनेत और को ॥ जैसो केमा गुन रे न तुरंच परपंच सुन्यो
ताको गेह सहा फेर गहत न गोर को ॥ जुगल अनन्य ऐसे हूं पै न भजत जो नर राम सर्वेश ताके सम वेल वोर को ॥ छं ७८ ॥ सात हूं
वात को राज विचारिए मारिए मोह मनोरथ मादक ॥ साचो सुचैन सु संत को सुचि मे हूं कह्यो सुख को प्रतिपादक ॥ ॥
नै

॥श्रीराम॥
॥नामनेव॥

॥श्रीराम॥

॥२७५॥

विस्वविकारविसारिभलोहढजानिएचैनअचैनसवादके युगमअनन्यकीवानीसभीसदग्रंथसुपंथनकीअनुवादक॥३३७९॥
भल्लेलोकशोकविनतिनकीसुरीतिइहमहाबलिआईताकेधारेमोदपाइहो॥प्रातकरतवतोनकेरआजवाहततिपावे
भोरहर्षजोनआलससमाइहो॥वैरकोहमेसउपेहसोभूपनीतिचारभांतिनसेभीतिहिएनितहुलसाइहौं॥युगलअनन्य
सावधानरहैचैनचितरंचकप्रमादकिएसदापछिताइहो॥३३८०॥मानउदैतमनासमपावनपाएसेंरंकताहानविचारो॥
ज्ञानभएतनभानहरैजिमिमानमुरेकिएचाहनिहारो॥प्रानगएजनजातिनसेअरुध्यानसेंखेदविनाससम्हारो॥युगम
अनन्यअनालससेंतिमिकोटिकलंककषायविहारो॥३३८१॥आलससेंसबभांतिमिपावरकांतिमेंहोतसदाबव
धानो॥आलसहींसेकुकर्मन कोफलव्याकुलतामनमाहप्रमानो॥लौकिकवैदिककाजसभीनमिजातहैआल
ससपहिचानो॥युगमअनन्यअनालसहोपसुनामसुधारसपानसयानो॥३३८२॥एकसंतविसदविवेकवंतपद्यो
चारसहसकेतावआवहारभलीभांतिसे॥फेरताकोमननविशेषकरिकाढ्योसारचारिवरवचनविचित्रप्रेमकांतसें
जाकेसुनेगुनेधुनेशीघ्रसंतजनपुनिमुनेविषबीजहायजुहामवभ्रांतसे॥युगलअनन्यमननेमेरभजानामनितचाहोजो
मिलनमहबूबसीताकंतसे॥३३८३॥औरचित्तचपलचरित्रजोभजतसीतारामजूकेआलसप्रमादढीलकीजिए॥

॥श्रीराम॥

॥२७५॥

॥श्रीराम॥

उचितनतोताकोखानपानपरमेशदियोनिमिकहरामीव्यर्थकाहेहेतुलीजिए॥इष्टकरतबअनुकूलजोनचलेमनछोड़ि
सततसोंईशओरईशासेपतीजिए॥प्रगलअनन्यपरमेशप्रतिकूलकर्मत्यागनकठिनतातेंओरहूराजीजिए॥२३८४॥छोड़ि
एअधर्मशर्मसमनसहैवमनमाहिवसैंशंकाउरलायकेविशेषतर॥जोपैलोकेकरनमेंप्रीतिविपरीतिमतिकीजेऐसी
रीतिजैसेकहेंहमप्रेमभर॥जौनथलअमलगनेशापरमेशानहीदेखेऔरहोयदूसरोकहापिनेकडर॥प्रगलअनन्यतो
नठौरअघकीजेभलेभलीभांतिहीयमेंविचारिकेपियूषगर॥२३८५॥एकदिनसंतछविवंतवनजायपूछ्योसहजे
सनेहसेकिरातनकेपासमें॥कोनलाभहोतवसिकाननमेंकहोतुमराजसऔतामसविहीनसत्वआसमें॥पांचहूंविष
यसेअतिअरुचिसहैवशुचिकंदमूलभोजनमिलनअनायासमें॥प्रगलअनन्यसुनिसुवचनगरत्यागिवस्योसंतवि
पिनिविशेषहीउदासमें॥२३८६॥भीतएकांतमेंवासकरोनितवासनालोकहूंऊविषजानी॥संतसमागमसारस
जोलजोइष्टसंसाचोसनेहप्रमानी॥आपकोखाकसमानगुनोतवपाइहोनूरसुसारंगपानी॥प्रगलअनन्यअभयपद
दायकधामनिवासप्रकाशवितानी॥२३८७॥एकदिनसंतछविवंतवनजायपूछ्योअनाचरवाहेसनमोहमनमा
निके॥तैनेकछुविद्याव्यवधानविनापढीमानपढीतोनकहोनिजनेहीजियजानिके॥कहीउनवैनचितचैनप्रदसदमत
सारमैंनेपढीपांचरहसप्रमानिके॥

॥नामने·॥

॥श्रीराम॥

॥२०६॥

युगलअनन्यताकोमननकरतरोजखोजकरिकोदिनकेतावग्रंथछानिके॥१३८८॥ रामनामभजनकीयोग्यताजो
होयरंचकीजिएनभूटपरपंचपायमूलके॥सांचीवातरसनाकहनसमरथपायफेरभूठवचनउच्चारिएनभूलके॥सुधजो
असनमिलेकाहूभांतिजोपैतौनअसुचिमलीनअन्नपाइएसुखमूलके॥युगलअनन्यनिजअग्रोगुननिहारतवओरकोनदूष
नवखानेप्रतिकूलके॥१३८९॥ जोसियरामसेसांचोमनह्वैकेलायकचिंतनमनाहिकतेरो॥तौनहीभूलिहूंकेसपनेमहुआ
नहिप्रानमसानकोहेरो॥पायपियूषपुनीतनयोगहलाहलपानकिचाहकरेरो॥युगमअननसोईधनधन्यजोपाचहूवै
नविचारसेवरो॥१३९०॥परमपरेशअवधेशकोनिदेशसुचिरुचिकेसमेतसाधुसुनोगुनोसावधान॥कीजिएनपाप
परितापउरलाणचितसमुझिप्रतापएकरसममकोटिभान॥खानपानचिंतामतिकरोमेरोजहांतहांमेरेईभंडारअनापास
मिलेपुष्टप्रान॥युगलअनन्यसांचेचितसोंजोकरैकृत्यतौनभलीभांतिनिर्वाहोंसांचकरिमान॥१३९१॥होंतोसदाव
हिप्रीतममानततूंनहमेंपियजानतभूले॥जोतूंहमेनिजनेहीसंबंधसजिशोकतभीउरपंकजफूले॥काहूसमैनहिहूजि
एगाफिलमोतैऔरतैंजोसिरभूले॥युगमअनन्यसदावसिएचितचेतनश्रीसरजूकलकूले॥१३९२॥अरेनरनी
चकीचसमानोचितहितत्यागिसबवरबैननहींमानतसिखायहूं॥तेरेतनदेवेमेंनकठिनकलेशमाहिपसोअवदेहनिर्वाहनदेखायहूं॥

प्रौ

॥२७६॥

॥श्रीराम॥

ए
श्रीरतनपहिलेहींकियोमेंप्रगटपेखमानुषकेगातमेंविधिचित्रतालषायहूं। पुगलखअनन्यधीरधारिकेंपालवलप्रवलप्रता
पपनभालमेंमलिरवायहूं॥१३ २३॥जेतेजगवीचवसुछोटवडेतेतेसवतेरमोगवासिवनायोमैविचारिए॥तोकोनिजभजन
सनेहअर्थस्योहमखोलिहगभीतरकोप्रगटनिहारिए॥औरसवतोसेनेहस्वारथकेहेतकरेमेरीप्रीतिकेवलउधारतापै
धारिए॥पुगलअनन्यऐसेहूंसुयोगपायसठभागदुखदाहूअगिरागअवधारिए॥१३ २४॥महाभूटमूरखअधम
जीवपीवपरमनकेनिमित्तकरकोहप्रतिकूलरूप॥ताहीतेअनेककष्टनष्टभ्रष्टपष्टहोतजोतत्तरहितपरमलीमां
तितमकूप॥हीनवंधकरूनाकेसिंधुहितछलीचित्तउपरनक्रोधखलकरतसहतधूप॥पुगलअनन्यएतेहूपैनित्य
नेहनिधिविमलविवेकवनलावतअवधभूप॥१३ २५॥सुनिएसुवानीसरसानीमेरीहायहिर्सहारिनीमनुष्य
वडभागीअनुरागसें।कीजिएसदैवसुमिरनइहकाजतवछोडिकेउपाधिजवैनहरविरागसें॥मेरोकामरिजनकेके ग
हेनेकोहमशत्रानिमानिउपदेशात्यागिफिकरसुभागसें॥पुगलअनन्यपरमेशअवधेशस्वच्छसुनिएनिदेशमन ॥नामने॥
शांतिसजिलागसें॥१३ २६॥तूंतोकरारकेंरारेनभूठकियोअवओवजहानकेकारन॥वेदपुरानसुसंतसिरोमनि
भांतिअनेकनसेंकरिवारन॥तोभीनमानतमूढविमोहितवोहितत्यागिकेफेनिहारन॥होंतौकहोसोसभीकियोसत्य
उनासोउपाधिअसाधिअवारन २७॥

||श्रीराम||

कोशलराजपेरशासुवस्तुहई परतूंसठतोशन्वावत॥ याहींतें द्वारहीद्वारखरावफिरेकनमागतहायसमावत॥ तातेविचारि
एवैनसहाचितचैनअमेनकेवासतावत॥ युगमअनन्यविसारिएआसनिरासताजानकीजानकोभावत॥ १३९८॥
द्वादशाउहारउपदेशाकोशासुनिससुभिसचेतहेतअवधेशाकीजिए॥ आलसउपाधिव्याधिरूपसंगरंगछोडिपरमपियू
षनामरसरोजपीजिए॥ लालसअनेकखेदप्रदवदसदमनहीनहीनछीनतातितर्कतनवीजिए॥ युगलअनन्यरीतिप्रीति
सुपुनीतगांठिबांधेयुगयुगचिरजीवहाकेजीजिए॥ १३९९॥ सज्जनसीषसुनेपरतीवलेगसमवीषसमा॥ तिमिऔ
षधीनीकसहाअविलीकलेगपरफीककुरोगजमा॥ चितचांहनीशीतपियूषसनीतऊहोयवियोगमहामतमा॥ जानि
यौंऐसेंहीसंतसवैन विचित्रविधायकमोजहुमा॥ १४००॥ प्रीतिमानननरनकेआगतीनपरहै॥ जौलौंजुहा
होतनहीपरहायखेडपनतौलौंमहदूवघरमहलअघटहै॥ मायापटप्रथमअनादिईशारूपसुखआवरनेहेतप्रतकरत
सुघटहै॥ दूजोपटदुषसंगधर्मसमेआवरनतीजोमननीचपटनिपटकपटहै॥ युगलअनन्यपरमेशाहीघरपायो
जिनप्रीतिमाननरनकेआगतीनपटहै॥ १४०१॥ वारहीवारससोचरहेमनऐसोअनारीअजारीनिहारी॥ झूठहुंजा
नतहैधनधामपेदूटतजन्मावितावैविकारी॥ मोतनहीसिरसूझतहैसठहांसविलासमेराजगुजारी॥ युगमअनन्यकेरै

विश्रीव ५

||२७७||

॥श्रीराम॥

की
अब औ अब आमै नित ईश्रौं भीति बिसारी ॥ २४०२ ॥ चित्त रूप माया जो अविद्या वेद बिद्द बदत ताको रूप कलिल कुरूप धूप कूप तम
कोऊ काल पाय परलोक बीच रूपवती माया ईश आगे खड़ी होयगी सम्मत नम ॥ अंग अंग गलित समान आंत नैन नवे नव
न्न मुख स्याह हारू सहित अधर थम ॥ पुगल अनन्य नामी रोगन ग्रसित तन रखत डरात मन पैठत अनेक गम ॥ २४०३ ॥ ताकी
ऐसी गति रूप ताकि परम श्रात वहो जिर्णनि दशाया को डारि लै नरक मैं ॥ किया बुरे कर्म इन धर्म को छांड्या पतित तिन नरकनि काय डा
रयो राननरक मैं ॥ ताहू नै अरज करी संगी मेरे साधनाथ है जिंकरा यरह वे सै क्यों फरक मैं ॥ पुगल अनन्य दाम लागि छोड्यो
नाम ताको फल जम धाम अंत मिल्यो निधि कैमें ॥ २४०४ ॥ एक बार विमल विचित्र ब्रह्मन वाग भयो अमल अकाम सैं सुसंत जन
कारने ॥ काहे केत परम पसंद किया तुम्हें हम जानो कुछु मे अनजान चित्त धारने ॥ जे ते जग मानुष सम मत अभिमान सब देखी
मैनें खूब तन बीज अविकारने ॥ पुगल अनन्य एक तेरे मन मानन महत्तात अंगीकार कियो दियो आप प्यारने ॥ २४०५ ॥ श्रीरघु
वीर सिरोमनि की गति झीनी विरंचि हरी सन जानत ॥ बोर हीमैं अपनाइ तहीन को नाता सनेह ही को नित मानत कोटिन
पाग विराग करो पै गए अभिमान विना न प्रमानत ॥ पुगल अनन्य महारव लपावन ताहू पै प्रीति सिया वर आनत ॥ २४०६ ॥ जा
न की जानि कोरी लसु भाव सहासु मेरे सुखै स्वाद मोहावन ॥ मान की रीति प्रतीति तिन जिन व प्रान की प्रीति पगे पद पावन

॥नामनें०॥

॥श्रीराम॥

॥२७२॥

हे।ऊ२

ध्यानकीपुनित्रअजजूवरहीगुनधाइएगाइएहोअभुलावन॥जुगलअनन्यअजानकीवातकोकौनसुनैसिगरेरसकुचा
वन॥२४०७॥तीनोपरनिकरनरहेजवमीतकहंतवपाकोलालचेहपावैलोककी॥भीनोविषयवासनामैंगहीतेहिरस
वानपावैनहीप्रीतिसुपुनीतिविनाशोककी॥हीनोजोनपीछतिन्हेहोठपरीविधिनाहरूपिनीअनूपमहामोहरसपोककी
जुगलअनन्यचावभावमेविवियोंजानोजैमेएकपलगतिहोततकेजगजोंककी॥२४०८॥मायाकीवडाईदुखदाईसवधूरम
रमोहकसमानमेरेमतमांझधूरहै॥आएगएरहेखाएखरचेउपाधिव्याधिहायउरसततसमातभरपूरहै काहूभांतिशांतिप
लपावमनरहनेरेतहांवभावहरतसनेहचरखेसूरहै॥जुगलअनन्ययाकीअनुरागमनवांधिकेकमरजायपहुंचेहजूरहै॥
२४०९॥जौनवातव्रातेतेरेपरहोनिहारताकोजतनविशेषआगकीजियोविचारिहिल॥जामेमिटेरोगशोगविकलवियो
गभोगपावैअनमोलएकरसरंगरागमिलि॥कौनकामकाजहुरवराजहगावाजवीचवध्योविनाहेतुजामेमोहहूंनक
हूंतिल॥जुगलअनन्यसावधानहोयजीतोरजनामवलपायमलीभांतिआगेआगेपिल॥२४१०॥एकसंततमनएकवि
मलविवेकीजनपूछ्योकहोहालसुरसालभिन्नआपनी॥कहोउनवैवनचैनहानईनतासमेतस्यामसेतकोनिकेतअवु
झविलापिनी॥मांगेपरमेश्वरभावभजनहमेशाधर्मशास्त्रकर्मकांडफरमावैहोशकांपनी॥जुगलअनन्यमनमांगेविषयभोगजामे
कोटिनकुशोगमोहहरहाहहापनी॥२४११

॥२७२॥

॥श्रीराम॥

पूतपुतीहकुटुंवजितेतितेयांचनआठहूजामभरोटी॥ मौतमहा[illegible]मजकूतअचानककाटिहैप्रानगहेक्कचचोटी दुष
नकेसंगपापकरावनचाहतहैनिसिवासरखोटी॥ पुगमअनन्यअकेलेगरीवपैपांचकएतेकहांसुखजोटी॥१४१२॥ चाहे
जोविचित्रमित्रपरमपवित्रचितनकोपालकिसोरहींसेप्यारीदृढकीजिए॥ संगीरसरंगीजोउमंगीचितचाहैंजौहमेश
चित्रगुप्ततेरेसाथलिखिलीजिए॥ आसउपदेसागहिवेकीजोविशेषतेरप्रगटतमसानउपदेशाकसुनीजिए॥ पुगल
अनन्यसंतसंगजोचहतमनअमलअनूपग्रंथवागरसपीजिए॥१४१३॥ प्रेमपियूषमेवोरससांस्युचिसंतसुवेनसु
नैनसेंहेरो॥ छेमभयूषहिएपसेरनिसिवासरफेरनहोयअंधेरो॥ हमअदूषगहेनिजनामकोधामकोवासविशेषउ
जेरो॥ पुगमअनन्यकेजानकीजानि उदारकृपाहीकीआसघनेरो॥१४१४॥ सीतारामकरुनाकेधामकैंकरुनाजो
आपनीस्वानिनिहेतुकविचारिके॥ तौतौवातउचितविचारिएसुरीतिउरजैसीहमकहेंमनतासोंनिधांरिके॥ ॥नामने॥
धूलभूलसमदुखमूलधामधनकुलकुटुंवकलंकजानित्यागिएसम्हारिके॥ पुगलेअनन्यदुखहीकोसुखमानि
एजूहृष्यअनकूलविनचित्तमेनिहारिके॥१४१५॥ जानिएवडाईख्वारखारहारभारसमप्यारप्यासेप्यारीकिएअंत
मेंउपाधिहै॥ जीवनमरनमानुमरनजीवनसमजानुभेदप्यामेजोनविगतसुव्याधिहै॥ ज्ञानहीमेमोहमानुमाकलाम

॥श्रीराम॥

॥२७९॥

क२

दुखखानिबुरीभलीरीतिवीचतकेसुखसाधिहै ॥ युगलअनन्यसंतसंगसारस्वछसीअकीजिएअभीमनीमहीनवाधवां
धिए ॥२४१६॥ एकरामरसजसमगनलगनलीनसंतऐनेहीअपनेसेकहीवैनवर ॥ भेरगएपीछेतेरैनिकटउपाधि
मायाप्रगटस्वरूपवरिआरहैविशेषडर ॥ करैगीजरूरतेकोभछ्छनपिसाचिनीमोजैसेखोपईधनकोअननविलंब
धर ॥ युगलअनन्यतातेत्यागिएसुवेगिहरिकीजिएनरंचचाहेकुशलसुछेमतर ॥२४१७॥ मायाजादूगरवडीहारतमार
तकोटिसमरसमानछलसाजेमोहवासते ॥ मायाकीकाटिनकरुवाहिदुखदाईचलीआईआदिकालसेविचारिएसोअ
संत ॥ त्यागमेकटुकपरमिष्टपरिनामनीकेजानिएसुभावछलछूतनीविभासंते ॥ युगलअनन्यसांचेचित्तसेंविसारि
याहिपावैनामरूपस्वादसहीस्वासस्वासते ॥२४१८॥ भूलिएनमातपटठौरदृष्टनामजसस्वछ्छज्ञानध्यानमायामि
लीवातवीचमें ॥ हियसंतसंगरैनपीछलीमसानभूमिमृतकसमीपनेममध्यधर्मसींचमें ॥ याहरूपलनामैंरतजो
विगोएनरजानोतिन्हेंपरपेंडरहेंसुधाकीचमें ॥ युगलअनन्ययाकोश्रीमकातपतीनवरसकोहानहोतमरैविनामी
चमें ॥२४१९॥ होयसचेतरहोनितहींअपनोअनुमानकेरो ॥ धोयकेचाहरचित्तभलीविधिसेंमुरमोदसुरंगभरो ॥
खोयकेमानगुमानअज्ञानकोज्ञानकृपानसेंखवमरो ॥ वोयकेयुग्मअनन्यसुवीजसुनामहींकोफलप्रेमहरो ॥२४२०॥

हितहीर

॥२७९॥

॥श्रीराम॥

पापीपरितापीपीरव्यापीजौननीचनरतैनखटविकटकुवस्तुमाभरतहै॥ मायासाथप्रीतिअपुनीतिदूजेकामहारनेहख
रेवहतीजेजोखिताकुमतहै॥ चौथिमलेभोजनसवादखानपानप्रियपांचवेवासनेहसेनकरतमरतहैं॥ युगलअनन्यहांसख
लेख्यथैवादवीचौरैनअनपचतखपतविगरततहै॥२४२१॥ तीनपहारथसंगकिएनरमूरखमोहितहोतविषेखहीं॥ नाप्रि
कानेहसुआदिलखोतरवारसुधर्मकेहेतअशेषहीं॥ दूसरीप्रीतिसुमानिएमीतनिसेमेअनीतसुजिहगीदैषहीं॥ युगमअ
नन्यसुतीसरोप्यारधनादिकमोजगहामकेलेखहीं॥२४२२॥ ज्ञानकीजानिनिनेहरासुनोमनमाहगुनोमदमूलमनोहर॥ वह
रंकतालोकिकीऔरेजवैनवैमानिएमारसोहावनसोहर॥ मानवडाईवैरअवहींतवहीनिजपापपछानिएमोहर॥ युगमअ
नन्यरहस्यअनूपसोजानिहैजोपरखेगुनगोहर॥२४२३॥ वारवारतोपेरोजमरीधिरकारजोनविनहीननरजानिमानेनी
चवोधविन॥ दिविधनमानदुखखानकरैसनमानपायोनाहीमरमरहस्यभेदभावतिन॥ ऽष नामहीनलीनपरखेंसुसंतन ॥नामनेग॥
नअपरकुजनमनमुखमुखहेरेछिन॥ युगलअनन्यसमराखिएसुभावमहाजुहाकोरडारिएविषमताकलंककिन॥२४२४॥
कपटीनरकीगतिहोवेबुरीपरलोकमेंसोनकहीपरती॥ युगनीहनमरूजमेलभरीविकरालकुदहलैहजरती॥ मुखओर
हिएकुछओररवैसेतिसकोफलखदमईधरती॥ मनेयुगमअनन्यकुवदनाकोटलहेकपटीनविनोदरती॥२४२५॥

विहीन ३

ग्राठचीजअमलअनूपहैजहानबीचकीचसेरहितकीअसहितविचारते॥ अहवसमेतवामतपागजुवामध्यनामरटनपर
टनपरकिएनिरधारते॥ धनवानजनमेउदारगुनमित्रप्यारसुंदरसुतननिर्वाहव्यभिचारते॥ पुगलअनन्यइनसाफनपमा
रफतसंततरसवंतकेहेंरहमसुमारते॥१४१६॥ यामेवेअहवजेसेभोजननलवनबिनभजनबुधवच्छफलहीनसम॥ वडेवित्तवानपेउ
दारतारहितजेसेसरितातडागनीररहितअसमतम॥ प्यारप्यारहीनजेसेचेतनरहितनसुंदरसगुनहीनधनुषअगननम
पुगलअनन्यरूपनीतितेरहितजेसेनीरहीनअनरंगेशोभितनव्योमरम॥१४१७॥ माफततहीनफकीरसुरीषसनेहविहीन
विचारिएप्यारे॥ जोपेजवानीमेंत्यागनहींतौविनामुक्ताहलसीपविचारे॥ ताहीतेयोगवियोगमेनीकअनीकअलीकसुली
कनिहारे॥ पुगअनन्यसुसंतनकीसुचिवानीविचित्रसराउरधारे॥१४१८॥ कीन्होसरकारसुखसारसेअरजएकसंततसे
वंतअनमोलध्यानधारिए॥ पावेंतुम्हेकोनठोरदीजिएवतायभईवानीगेवहायकेगरीव[illegible]मानमारिए॥ ताडिकेसनेहस
भीसाथफेरकहीउनमेरीगतिऔसिहीकृपालजूनिहारिए॥ पुगलअनन्यओसेमएपरखोजदिलतेरहीमेमेरावासभलेहींवि
चारिए॥१४१९॥ एकसंतअमलअनंतकेसमानदृष्टिपूछीसेवासरससमेतएकनेकनर॥ होयकेदयालउनदीन्होउपदेशावर
सुमनिसमानसप्रवचनउपाधिहर॥ जोनसमेंकीजिएभजनतोनसमेमनराखिएअडोलसीघप्रथमसनेहतर॥ पुगलअनन्य॥

॥श्रीसीता॥
॥रामनाम॥

सतसंग मसे में जीह निज चाहिए निरोध बोध धारिए सुचित न कर ॥१४३०॥ तीजो अनन्य पाइए विवेक सें सहित नित भलो बुरो भलो भांति
भीतरे विचारिकै ॥ चौथो परब्रं जाय ताकिए नेनक कहूं नैन नीचे राखिए सुभेद कों निहारिकै ॥ पांचवों न भूलि एक छापिए क सांस नाम
रूप गुन धाम मोह मान कों विसारिकै ॥ युगल अनन्य छठवों मोन पाइ कों जे सदा सातवों भलाई भले वाले सें सम्हारिकै ॥१४३१॥ आई
एक वार एक संतके समीप माया पूछी उन तेरे कैतरव समवताइए ॥ वोली गनती कि विन फेरि संत भाष्यो ताहि कीन्हौ तें तरक कै कै
धों मोई समुझाइए ॥ छोडि भ्रम लीन मानि ऐसी वात साधु जानि दे री माया मोहि न रना कि सविसाइए ॥ युगल अनन्य ऐसे अंध
मसकों न नेह जामे नेक प्रीति की सुरीति हूं न पाइए ॥१४३२॥ कन्यका को रूप धारि आई माया संत पास पूछी तें कुवारी कों वखानि
एसु सत्य वात ॥ भाष्यो तिन वै न जो न चाहै मो कों तो न नरनी च ना भरै कों नर सपरसाए गात ॥ चाहे जो न मोहि सो सिपाही ज
वां भई नाति जानो असमंजस सुभाहो वीच अहो गात ॥ युगल अनन्य माया धूलि तनो विसारि सुख पाइहै विशेष छोड़ि रागद्वे ष
रे हजात ॥१४३३॥ मानुष देह में मुक्ता मानि पांच पै आंच समे मन विचारिए ॥ है पहिलो मुक्ता हल धर्म है नेति हि भूठ सुनेन निहा
रिए ॥ दूजो सुबुद्धि सो हार न तासु को क्रोध मदादि पुनासे संभारिए ॥ तीजो सुतो यह नेति हि लोभ समग्र सदा सव ही विधि मारिए ॥
१४३४ ॥ चौथो उदार तमोति मनोहर सो वाहिए परवे रिसु ताहि ॥ पांचवीं मोती सुविद्या भली अभिमान हो वैरी विशेष सजाहि ॥

पांचौ विकार को जीत लेह सुख सार सवार सुवास सदा ही ॥ उग्र अनन्य सु नाम रते पुनि आवै न ही कछु भूलित वाही ॥ १४३५ ॥
कोई बडो भाग्यवान खोज्यो संत सावधान पूछी पुनि प्रश्न सुख खान मान दान सन ॥ कौन भांति होवैं धनी संत कही है वपर रहि
ए है मम धारा जी साजिए अतट धन ॥ हू जिए समया नीकी किमि पूजिए परेश पद धारि के विशेष भी तितै हो सपार हे प्रमन ॥ उग्र अ-
नन्य सूर होवै न की चाह चित लाइए समान भाव सर्व में सजाय पन ॥ १४३६ ॥ भलो होन की है अभिलाख लिए जग में पर-
लोक हू में सुखदायक ॥ चाहिं जीव चराचर को भलो तीन हू भांति सु नो हु दुखदायक ॥ संतन के सतसंग रमो किमि कीजिए भक्ति
अकाम अमायक ॥ उग्र अनन्य सो हा ही वास भी सजो दीन सधे भाव सेन हू सहायक ॥ १४३७ ॥ नर्क की आग में कैसे बचौं मचौं
क्रोध में भूलि हूं के न कभी ॥ कहीं फेर सो दीन दयाल कबल परैं हर वार में निज अभी ॥ तब संत कही सु विभो जन पाइए गाइए
नाम में मोद महा शुभी ॥ मनें उग्र अनन्य सुधाम बसे न खसे सपने श्रम हो तन भी ॥ १४३८ ॥ परदाह मरो नित दांपो रहे न उ-
धारिए औरन को परदाह ॥ परदाह या कहो केहि भांति प्रभो मन से उलटे मिटि है गरदाह ॥ गरदाह ह वियोगन से कबहूं मिलि है
चित चोर सुधा सरदाह ॥ सरदार पै उग्र अनन्य करै तन जो भोग कुरोग बडो परदाह ॥ १४३९ ॥ पांच बीज पांच वस्तु खाव-
ती हमें शहे ॥ निंदा निज डाकिनी सुखात है भजन भाव तैसहीं बखीसी खावै रिजक विशेष है ॥ चिंता खाती आयुष अनूप

रूपकूपडारिविमलविरागखायडारेकामवेश्याहै ॥ पांचवींउदहारमासोखानहै वलायहायेहतहै वसायमोहमंगलीकेहशेहै ॥
॥श्रीराम॥ पुगलअनन्यतहकीककेकिऐसेमीतपांचवीजपांचवसुरावतीहेमेशीहे ॥ २४४० ॥ आवेतोषतीवृतवलावेज्ञानध्यानमोह
अमलअडोलपनमानियोविशेषहीं ॥ नासीजोनकालदुखहायनीकरालतपातीनसमेघरूसोचाहचित्तअविशेषही
घूस्योमत्सरताहीसमेप्रीतिजानीगईरह्योकहूसंगनहींरंचभीरद्वेषही ॥ पुगलअनन्यसंतसंगसैसुभायसवभूठोसो
वीवातकर्मधर्मशर्मरेखहीं ॥ २४४१ ॥ धर्मकोतत्त्वसोहावनीबुद्धिहैबुद्धिहूंततहीनगरीवी ॥ ताहूकोतत्त्वसुतोषलसेमि को ५
तनेहनवीनइजारकोनीवी ॥ तोषकोतत्त्वपरेशविशेषपतिव्रतसुधारनोसर्वकीवीवी ॥ प्रमअनन्यनपात्तपरततमांनि
केसाचहींचित्तमहीवी ॥ २४४२ ॥ हेअनमोलअतोलसुवाकअपाकविवाकेरैपलमाहीं ॥ पूछ्योसुसंतसमीपकोउजन
मेहफकीसिकहोचित्तचाही ॥ संतकहोसुनिएमनहैहनिएनिजवंधुदयाकरनाही ॥ आपनीवामातजेजननीसंगसेनसजे ॥नामने०॥
सोफकीससंहीं ॥ २४४३ ॥ सप्तमभावनजानीपरेतहिंतसुविअर्थकोखोलिलखावो ॥ भाईहेतेरोहमेशहिकोमनसंगर
हेआदहैतनतावो ॥ नारिबुरीविभिचारिनीमानिएनामहैजाकोअविद्यागनावो ॥ प्रमअनन्यधराजनमीनेहि[illegible]मिलि
केमुहमोहसमावो ॥ २४४४ ॥ चारिगुनबालकनवीचमेअजूबखूबगहेंवोधवानजनमानभानखोयके ॥ रोगपरेशीशातव

॥श्रीराम॥

॥२८२॥

२ हे

पिंह्राजगदीशनेकुकौरैनकहाविचिंताखोनपानसोयपेके॥ मिलैमित्रमाहीजंगपीछेनहीगांठिकाहद्वाहचिनवीचराखैसो
गरोगधोयपेके॥ पुगलअनन्यचोथेसोचनकरतेहहगेहपरिवारजहांतहांहसेरोयपेके॥२४४५॥ सांचेसंतधीरगुनवंतस्वा
नसनसोएवैलैवंहदशाभोतिकोतिरीतिमलीजानिके॥ भेषनितरहैंगहेतोषइहभलेलोगरहसहमेशाजानोमानोपहिचानि
के॥ धामनावनावैजहांतहांगुजरानकरिवडोनिरवंधगुनधारेधीयध्यानिके॥पुगलअनन्यरैनजागैअनुरागीनरखिं
न्हचषचारुसैंविचारिएप्रमानिके॥२४४६॥ सोषतुरीयसुनोसुषहामुरहाभएपीछेनहामकदेतिल॥ जानिएसुद्ध
विरागिनिकीसुचिरीतिनमानिएभेदकहूंकिल॥ पांचवींसोषसोहावनीहैनहीछूटै[illegible]हैरमालिककोदिल॥पुग्म
अनन्यसुसेवककीभलीरीतिपुनीतिविचारकिएमिल॥२४४७॥ षोरहीठोरमेंदेहनिवाहकेरैरहरीतिगरीबीविचारो
सातवींकोउठावैतउरैराजीप्रसन्नसमेतसम्हारो॥ जातनिरादरमेपुनिआवतसादररीतिअमानिनिहारो॥पुग्मअ
नन्यसुसोहवआसरहेनकहेतपधर्मसुधारो॥२४४८॥ हेदसावींसुचिशीषएहीकोउताहिपुकारेसमीपवादरसे
नीचेकोमायभुकायनिहारत्तचिन्हसुदिव्यछकेछविभूरसे॥ वेदपुरानकोसारसुवेनसुवेनप्रदायकजीवनीभूरसे
पुग्मअनन्यसहाअलमस्तरहाकरिएनहिकामगरूरसे॥२४४९॥ साहवशीलसुधामसिपावरसंगसनेहसम्हारिकेकीजे॥

कमी

॥२८२॥

॥श्रीराम॥

चाहप्रमादविसारिहिएनिजतोलिकेचित्तनहिएसुखलीजे॥ नीतिकीवातकहीहमेनकरनाकर्योरहिमाहपसीजे॥ पुग्मअ
नन्यविसारिविषयविषनामस्वरूपसुधारसपीजे॥२४५०॥हेप्रासमेतकरोअबहूंतितनोजितनोदुखभोगशको॥हारुमेग
हमहानलसोतेहिज्वालजवालमेजायजको॥कीजेइहांविस्तारएतो[illegible]अपनोरहिवोअनुमानिपको॥मेनेपुग्मअ
नेमसुनामरटोभलीवातएहीनहीआनवंको॥२४५१॥जेसीविभूतिसुवुद्धिसुरीतिसुप्रीतिविचारिकेभाषिएतेसी॥ते
सीकहेभलीवातलगेसवहीपरतीकहेमेरुअनेसी॥ऐसीवडाईमेंधूरिपरेनितजामेमुठाईखोटाईसमेसी॥मेसीनवानी
वेदकवहूंजियपुग्मअनन्यविचारमेंजैसी॥२४५२॥वोधविरागसुलागेकवेधनसाधसहांमनवांधवोचाही॥याही
केवांधेविनाहविभोसवयाकेखुलेमेंअनर्थसदाही॥जोमननीचनेवांध्योतुभेपुनिकोटिनकलखरावतवाही॥पुग्म
अनन्यकह्योनहिकीजिएप्राकृतहेमनसुद्धनआही॥२४५३॥महाहिरपुरुमरिउमानिएमनोजतातघातउत्पातकरे ॥नामने॥
विनावूझवातवर॥याकेसाथमित्रताकिएसेपरमशप्रीतिहोपगीअभावसुपुनीतनीतराहवर॥ताहीतेहमेशासावधान
हूजेपूजेमीतसांचोअभिलाषसवनानाभांतिचित्रतर॥उगलअनन्यमनहीकेजीतेहारेमोहदवहहूंअपारऔरवातसे
नकाजसर॥२४५४॥होयएकांतसुशांतसदांरटेनामअकामअवामएनित॥खोयकेखाहिशखारखुसीखुदरव्यालहीमें
उरझापररखोचित॥

मथ्या२

धोयकेघायप्रवाहकेबीचहीं सोपरहोनचहोवहतोवित्त॥ उगमअनन्यसुगोयरमो नितनामहीं माहरसीमैंसहाहित॥२४५५॥
इतिसंतरहस्यउपदेशासंपूर्णं॥ अथअप्राकृतगुननिरूपनं॥ रसिकाधिराजरघुराजसुभसाजरविद्यौगुनअगुनसगुन
जुगबीजहै॥ तामैंभांतिकांतिकरलसतसुचारिचित्तचौगुनउछाहप्रदप्रेमचारुबीजहै॥ ताकेअधिकारीचारशरनस
मेतकामरहितरसिककमलजतजबीजहै॥ युगलअनन्यगुनश्रवनमननविनचारुकैसीभीतिप्रीतिअथिरस्त्रबीजहै॥
२४५६॥ गावैंगुनरूपअनरूपमतिरतिसंगअमलउमंगअंगवादनसुकारने॥ छावोछविछावनीसुचित्तवीचएकर
सरसिकअनन्यमनभावनीविहारने॥ पावोपरब्रह्मपावनेशसर्वेशसुखअगमअगाधाअविछिन्नतीनतारने॥ युगल
अनन्यअलसावोविश्वबंधसनसरससुगंधगुनऊपरसुवारने॥ २४५७॥ रीझवोरशसस्यामगौरगुनदिव्यगायतगु
नगाहरगतिभलीभांतिछोडिके॥ भीजिवोअमलमननामसहारंगरसपरमप्रधानप्रेमपानकोरिजोडिके॥ भीजिवोमधुर
मनमोहनकलितकेजसोहनचरननेहनातातमतोडिके॥ खीझिवोहमेसप्राइष्टभावप्रतिकूलपरहेपअनकूलसहावा
सनाहिबोडिके॥२४५८॥ नाहकनिषेधविधिवारिनिधिवीचवहेसहेसतसहसअसेखौंदाहको॥ चाहकरिहूजिएअ उख२
चाहगुनजालबंधिसमुझिसनेहसंधिमीतमुखमाहको॥ नाहकमनीयरमनीयचषचारुचहिछैलछविसाररूपमाधुरीउमाहको॥

॥श्रीसीताराम॥

होत

जुगलअनन्यअहकरतअपाहुउरउदयैहरितसुरंगउत्साहको॥२४५८॥ द्विव्यगुनमयीमदमोदमालमयीलखुकीरति
कलितकमनीयसीयलालकी॥ चारुचंद्रकांतिमतिविमलविचित्रविधुसरससमानसुचिसीततारसालकी॥ अवधविहारीजू
कोअमलअनूपक्रमसविवसवदनसेवपानेप्रीतिपालकी॥ जुगलअनन्यमोजमानससमायसदसारप्यारहारहोयहूकृपाछ
विजालकी॥२४६०॥ २५ मित्रप्यारेनृपवीरसुकुमारेजूकोगुनअनगनअनमोलसुचिसोहने॥ रशिकसवाहीस्वादवाद
विनऐसेविधिहरीहरहनूमानमनमोहने॥ जामपेगप्रानध्याननभाननरहततनगावैंजेनताकेलगेलालगाहने॥ जुगलअ
नन्यसवसाधनसमाजततजिभलीभाँतिद्विव्यगुनमाहमनपोहने॥२४६१॥ होयमहाउनमत्तभलीविधिजानकीजीवनकेगु
नगावो॥ खोयविषयव्योहारसुभासुभशोकसुसागरमांझसमावो॥ धोयमलीनकुवासनाकोचितचारुनिचोलविचित्र
वनावो॥ जुग्मअनन्यनसोयरहोपुनिजागिअजायवशौकसजावो॥२४६२॥ हेरसरंगउमंगउतंगकोकारनश्रीजसस्व
च्छसोहावन॥ कालकरालकर्योंबकसालहरेपलपावमेंपातकीपावन॥ जानजिआवनहारसजीवनमूरिसभूरिसुधास
कुचावन॥ जुग्मअनन्यअधारसदासमुदाछविचोगुनचाहचढावन॥२४६३॥ अवधेशसुवनसनेहीकृपासिंधुजूकोरहे
चोपचाहचारुचित्तमेहमेशाहीं॥ भोंततविनोदमोदमुदखेहजीवगुनवेदनविहायमरवासनउपमासही॥ द्वैधातुपालनके

क

॥नामने॰॥

जौ ५

अर्प्य अ समर्प्य दुख छेदन निभिन्न पन मानिए विशेसही ॥ युगल अनन्य रहैं हीं रहे हद स्नात निज सुमिरि स्थिर चिंता रहो विगत अं
हैंशाही ॥ १४६४ ॥ जे लोह पाहि शिरो रनि मैं कत्त फंका कत तौलैं कुपथ रि अपावन ॥ साधन सिद्ध सहाय करैं न हि अंत समेटहु ये
हाहुरावन ॥ जानकी वल्लभ स्वामी सही अनुगामी न हो मकलंकित धावन ॥ युग्म अनन्य हु पारस स्वच्छ सहाव रसे सज
सवाह रसावन ॥ १४६५ ॥ लाडिली लाल हयाह गेह रिखि शाह दुखद्वेष अशोषन सावो ॥ होय अमान तजो जग मान सुजा
न सुसंग सुगंध वसावो ॥ गाय रिझाय सिया वर कोकिल कीरति भाय सुभाय सजावो ॥ युग्म अनन्य सहांधन धन्य प्रसन्न
प्रसन्न जो प्रीति वसावो ॥ १४६६ ॥ प्रीति प्रतीति परे रस रीति उदय विपरीति अनीति निवारन ॥ भीति अभीति विनीत
पुनीत सहा जगजीत वहे भव भारन ॥ उष्म न सीत जहां गुन जीत तहां तम तीत अतीत अजारन ॥ युग्म अनन्य मिले मन
मीत खिले तब कंज सुमंजु हजारन ॥ १४६७ ॥ सीताराम जू की कृपा कलित ललित लाह उज्वल उछाह है न वालीजी
व जाल को ॥ सहज समर्थ सीतावर अनुकूल सुख समन समूह शोक संकट कुसाल को ॥ स्वरग नरक अपवरग अ जग
जग साधु ठग मगत हाधीन सब काल को ॥ युगल अनन्य अति तीव्र सुचि पनि जि फंद द्वंद हि लखै जब ध्यावै लीला लाल को ॥
१४६८ ॥ जो मुह मोह विनोह मिले नहि साधन चार हजार विचारे ॥ सो सुख स्वाह अनाह अभे प्रह पावत पावन प्रेम प्रचारे ॥

॥श्रीराम॥

जानकीवल्लभजूकीकृपाकमनीयकेआसरेसांझसकारे ॥ युगमअनन्यउमंगउदयउरआकस्मातविहारे ॥ १४६९ ॥ जानकी
जीवनजूकीसुकीरतिगाइएऔरनकाजकहाहै ॥ कोटिनपंथकुपंथवनेजगतामेंचलेसुखँकोनलहाहै ॥ जीवनमूरिसुधाक
लाहुमनामसुदिव्यगुनादिमहाहै ॥ युगमअनन्यतजेपरपंचअवंचभएपदकंजगहाहै ॥ १४७० ॥ जानकीरमनजूकोगु
नअनुकंपाप्रीतिसंपासेंसहसगुनपरमप्रकाशछवि ॥ पालकुवेपूरवसुजनसवभांतिफेरतिनहीकोत्रानहेतुवाहमनमाहफवि ॥
नानाभांतिमोहसोविनोदहानहेनोनितअनायासतोमतमनासनोसमानरवि ॥ युगलअनन्यमनवानीगुनपारगुनकोन
रीतिताकोकैसेकथनकरावेकवि ॥ १४७१ ॥ यागुनकेअधिकारीसुसंतप्रपन्नवडेरसवंतसनेही ॥ जेनिर्वैरसमानलखैं
सवचित्तसुधीरसुशांतविदेही ॥ तेईलहेगुनस्वादसुधाकरऔरनकोमिलिहेनकिएही ॥ युगमअनन्यनहींतिनकेसमतीनहूं
लोककेमध्यमेंदेही ॥ १४७२ ॥ जिनकीपदपंकजधूरिधरेनिजभालमेआपपरेशप्रमोदित ॥ शिविरदधिउद्धारिभलीवि ॥ नामने० ॥
धिहेमहिमामर्यादविनोदित ॥ ताहीतपूजिवेयागसहासदशोकसमेतविसारिविषोदित ॥ युगमअनन्यमिटेरवटकोनिज
त्रानविषैगुनधारिसुबोधित ॥ १४७३ ॥ सुनिएकरुनावरुनालयसेकतिकोअगाधमहामधुराई ॥ आरतरवेदसुनेद
गदेखिकेआपसतापसियारघुराई ॥ आश्रितहायसुपावकसेंपिघलातहियोनवनीतनिकाई ॥ युगमअनन्यकृपालसिया
वरकीकरुनामनमोहसमाई ॥ १४७४ ॥

कोनि उपाय करें कितजाः एकासे कहो[illegible]हि भांति मिटे दुख॥ श्री अवधेश किशोर को और सो हात न वात विना तिन के सुख॥ ऐसी कहूं करुना न सुनी अवलोकि एखु वहीं है शाः है रख॥ युगम अनन्य कुसाधन और मेला मन नहीं वहु भांतिहि नेतु रख॥ १४७५॥ अपराधी जीवन को कठिन कलेशा को शोलेश करुना हीं ते निपात वात ठीक है॥ दूसरो उपावन तिलोक तिहूं काल को उ सांच हीं कहत हौं न जानि पोसु फीक है॥ चाह अभिलाष उत्साह उरवी च निन्न राषिए विशेष करुना ही को मुनी कहै॥ युगल अनन्य सीता राम जू के आसरे सें हू जिए असो चपरा प्रीति हू न जी कहै॥ १४७६॥ करुना गुन के विनई शा स्वरूप असोभित है भली भांति विचारो॥ कोटिन भांति वडाई परत्व परवान वरावर सो चहीं धारो॥ ताहीं ते इष्ट विषय करुना गुन पूरन भाव समेत निहारो॥ युगम अनन्य कु पंथ चले तिन के संग भूलि हू के न चितारो॥ १४७७॥ आनन्द शील रूप गुन अनमोल चिंतामनि सम जानकी रमन जू को सुनिए सनेह साथ॥ आन वा महा मन्त्र अपवाद दुर्वाद तीन काल हू मे विद्यमान नाही सो विदित गाथ॥ महा वैरि हू को सनमान उपदेश आवेश लेश को हू काहू पै न कैसे हूं ससील पांथ॥ युगल अनन्य ऐसी रीति काहू ठौर वीच पाइए न भूलिजै सेगुनराज रघुनाथ॥ १४७८॥ जानकी जीवन हूं सें विचित्र सोहाव नशील सुभाव सिया जू॥ देखिए सो दशमौलि के वाग मे धारिए खूव विचारि हिया जू॥ राक्षसी वृंद महामति मंदनि वा जो गई अघ पुंज किया जू॥ युगम अनन्य उभय गुन सागर नागर आगर रूप दिया जू॥ १४७९॥ या गुन दिव्य विचार भली विधि तौ अपराध विभीति वहावै॥

ते४ को

॥श्रीराम॥

जोनेहमेअपनावहिंगेसियनाहअचाहअहाहरहावे ॥ वेधनलोकहूंवेरहूंविसरायकेआसउजासगहावे ॥ युग्मअनन्यनहीखटं
काकरूनाकरकीकलकीतिगावे ॥ १४८० ॥ अनुक्रोशतोशप्रहसोपतसुहिव्यगुनरोशकोशहेशद्दूरिकरेअनायासहीं ॥ तासुअं
कअमलअशंकतंकपंकहरसुनिएसहेवमनगुनोसुखरासहीं ॥ अपनेहुवारअथवासुओरभांतिखटपायोजोननेहीताकोसो
वेईशाखासहीं ॥ युगलअनन्यअनुक्रोशहींमेरोमलोहारहेननाथकाहूविधिसउरासहीं ॥ १४८१ ॥ पागुनकोसुचिरूपअनू
पसुकोशलाकांडसेंआदिमेंजाहिर ॥ श्रीमहरानीप्रसंगमेंश्रीमुखआपकहीवरवैनजवाहिर केसवखानिकहांसोकथाहिएहो
तव्यथासुमिरेवपुवाहिर ॥ युग्मअनन्यसहावलिहारिसुभावपेजानकीजानिकेमाहिर ॥ १४८२ ॥ ऐसेसुछमिछशिछरिव्यग
ननामगानहीनमेंचितायोकईकोटिनकलपकरि ॥ हायवारवारउपजतआयहीयवीचमीचनजिकायोतऊछूटेनविकार
धरि ॥ आवेमनमाभूअवकीजिएनकर्मओरहेरगोरत्यागिनितन्हाइएसेनेहसरि ॥ युगलअनन्यनामधामगुनावारहीमें
रमिहोंविशावरेखचांचिकेजनममरि ॥ १४८३ ॥ श्रीरसिकशासिरोमनिजूकोसोहावनस्वच्छसुहिव्यहमोगुन ॥ जीततनोरैत्य
रूपीकसमहअयासविनातेहिमांभूकघधुन ॥ लच्छनाहारेसेसिद्धसहीविभुतामेंअयोगसुयोगरतेपुन ॥ युग्मअनन्यवि
चारिएभावसबावअभावकरोनकभीसुन ॥ १४८४ ॥ श्रीसियजीवनजूकोसखीसमसुंदरसोहततेहेगुनप्यारे ॥ मानसपीरको

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥
॥२८९॥

कारनसोसुखदायकलोकिकीरीतिमेंधारो॥ईशतामाहसुलक्षनोतेंपुनिसंभवहोतहिएदृढधारो॥पागुनसोउविचारेमनेसैंफि
रिरोगकोलेशनहीअवधारो॥१४८५॥श्रीरघुनायककवर्यविलक्षनहैगुनसत्यसुलक्षनलीनो॥जोकसुनेमनमाहगुने
विषपवीनअसत्यमुनेत्रनहोनो॥सत्यसुवेनप्रधानमहाप्रियधर्मकोहेतुहितीसुचिंहोनो॥पुगमअनन्यपियूषभरेजियपेरर
सुरंगधरेसुभसोनो॥१४८६॥प्रीतिप्रतीतिवढेसुनिकेसियसामसुसत्यसोहावनवानी॥श्रीमुखचंदसेंआपकहीहमसत्यव्रती
सुनिएमहरानी॥भक्तिप्रपत्तिप्रकाशकवेनविषेदृढताअनुरागवितानी॥पुगमअनन्यनहींकतहूंअनमोलमनोहरवागसुहानी
१४८७॥मूरखखलधूर्तछलछतऊतलोभलीनदीनहीनसेनवेनसत्यभाषनो॥ऐसोकोनजीवजामेंबीजइहवीजनाहितोही
सेसुसत्यसंधहीमेसत्यराषनो॥सत्यकेसमानधर्मदूसरोनवेदवेदसत्यहीमेंमोदसुचिनोद~~सुविनोद~~रसचाषनो॥पुगलअन
न्यदृढसत्यमेंप्रतीतिधारिचाहदाहरूपकोविसारिअभिलाषनो॥१४८८॥नेहिनकेहितधर्मअनूपकरेकरनिधिआपसदा
जानिहैमेदसुभीनकोउजिनकेमनसेमयोरविदज्जुदा॥जानकीजानिकोसीलसुभावसुनीजहमेंशास्त्रअनन्यमुदा॥भूलेन
होकवहूंदिलसेंतिनकेरघुवीरकीवांकीअदा॥१४८९॥जानकीप्रानपियारेउदारसिरोमनिकीछितिकोछिमा॥को
नसैंतौनवखानीपरेथकेसारदाशेषरमेशरमा॥केवलश्रीसियनाथछमाहींसेंपापपहारविकारकमा॥लेसहूंअंतरध्यान

नो
॥२८९॥

॥श्रीराम॥

कछुदुखहासनहोयहराजहमा ॥ २४२० ॥ कोटिनकल्पअनल्पउपायकरैरकैरैतउपापननाशै ॥ भोगहूतेनमिटैकवहींअति
सूक्षमआपहिएपुनिभासै ॥ याहितैऔरकीआसतजोमनजोएकछमाहिएकंजविगासै ॥ जुग्मअनन्यसचेतसहागुनिएगुनहि
यकीअंतरगांसै ॥ २४२१ ॥ जानकीनाथसमर्थसिरोमनिवेदपुरानसुसंतवषानत ॥ ताहूपैपेषिकेजीवनकेअपराधअगा
धहिएनहिआनत ॥ जानिपोहिअघछमासेछमासववसघत्रवौवसुमेरहूमानत ॥ जुग्मअनन्यछमाहीकीआसहमेशाहिए
नहिदूसरोमानत ॥ २४२२ ॥ सुनिएगुनिएरघुनंदनकेगुनहियसुभव्यसहाहितसें ॥ सुचिसारसुहृदघनालछनहींअ
वलोकिएरघुवसहाचित्तसे ॥ अधिकारकीएकअपेक्षानहीचहिएशरनागतहीरितसें ॥ मनमांहवसेनितजुग्मअनन्यसु
हृदघताप्यारीमहावितसें ॥ २४२३ ॥ जातिपांतियोगजग्यनेमधर्मचाहेनहींरूपगुनआहकीनवातउहांलेशहै ॥ चाहिए
सनेहआसहीनहोयहीनकछुआपकोनमानेरंचमानिवोभईदशाहै ॥ अनायासस्वासहासहोयसोसुवेगिभाशाआशाअभि ॥नामने०॥
लासताकोपूरेपरमप्राहै ॥ जुगलअनन्यसावधानसेसुहृदघग्यनधारिएउछाहरकरससवदशाहै ॥ २४२४ ॥ कोलकि
त रांकुजातकरोरनकोअपनाएसुसीलसुधाहृदय ॥ प्रेमअमोलअतोलहिएहिएहषिसंमेतसुवाकअनाहद ॥ कोनकहौंगुनशी
लसुभावअभावसचाववढैंसुसभासद ॥ जुग्मअनन्यअमयरहिएगहिएगुनज्ञानप्रधानविनागद ॥ २४२५ ॥

॥श्रीराम॥

॥२८७॥

जानकीरमनवात्सल्यगुनप्रेमनिधिनेह नित्तलाय गाय गाइए गरूरगुन ॥ महामोहमंदिर सुलच्छ स्वच्छ सुनिए जु गुनिए हमेश
प्रानवे शत्रुनमोलधन ॥ निसानं दद्वंददाहहारि ददरन छविधाम अभिराम मभे लखि पारिए मुदित मन ॥ युगलअनन्य लेश खचर
कानधारे हिलसावधान होय के सचेतत्वदोरागरन ॥ १४२६ ॥ आश्रतको हत औगुन आप गहे हहे तापकलाप हुपाकर
जानकीजान सनेसनो मन नेही मैं लीन रहे सुखमाकर ॥ गहीसु प्रीति प्रतीति महा ममता परिवार के मध्य पाकर ॥ ताहूतको
टिगुनो अनुराग सुप्रेमिन बीच कैं सुख्य पाहर ॥ १४२७ ॥ पीरगुन नाम वत्सल्यता को दान देन वारे रघुवीर धीर वत्सलोक
मन मानिए ॥ तौनहीको भाव वात्सल्य सल्यहल्यकर दासन को प्रान के समान जान जानिए ॥ कोशलेश विप्राइ सुवात्सल्य
नेही नेह मिलन नवनीत कंद सुधा छीर आनिए ॥ युगलअनन्य होउ ओर मैं सनेह सजे होत अविलोकठौ करंग नीकठानि
ए ॥ १४२८ ॥ जौन सनेही विहाय विलाउ दास निरास मयो जगसे नित ॥ तौनके हाथ विके करुनाकर ताहीके संग सुरंग रगपो
चित ॥ होय अधीन सुतंत्रता को तजि प्रीतिहीं के परतंत्र परावित ॥ युगलअनन्य सुमको सजीवनि मानत मानत नित्त सुवा
कसहारित ॥ १४२९ ॥ साधु सिरोमनि जौन सुधी तिनहूं के नेही रघुवीर विनापल ॥ जीवन होत होत निहारे रहैं मुखमाधु
री आउ परे न परे कल ॥ जीवन को अपनाय लिए हिए पीठि जहान सें जानि महामल ॥ युगलअनन्य अप्रांक अपंक अरंक
अवंक रहे न गहे वल ॥ १५०० ॥

॥२८७॥

गुनसीलभश्रीरघुनाय़ककोमनभाय़कगाय़कज्ञानगुनीजन ॥ जोमनहीअधिकारविचार~~विहार~~विहारवहारविचित्र
सुधाश्रवन ॥ ईशानहूकोअगोचरमूरतिपाव़रमूढनिहासोगएवन ॥ युग्मअनन्यसिय़ावरकीसुचिसीलभक्ताअनमोलमहा
धन ॥ १५०१ ॥ माय़ामाहलीनहीनवासनाअधीनजीवह्वैतिकेकृपालहिएह्वैहमोहमेहमन ॥ साजनानाभाँतिकाजकारन
कलंकबिनकिएबकसीसजगहीशासतचितधन ॥ आपहूंकृपालअवतारलेप़ंगरंगआचरनकिएजीव़तारननिमित्त
धरन ॥ युगलअनन्यअनुरागीजनजानिरससीलभसुगुनकेसमाननहीआनधन ॥ १५०२ ॥ सीलभक्ताईसुसीमसिय़ारघु
बीरनहीकोउआनहैरखावै ॥ वानरभालकिरातनसंगसनेहसजेगुनआपहिरावै ॥ मित्रतानीचनसाधभय़ोतऊनाहि
नशोगउमंगघिरावै ॥ युग्मअनन्यसुभाव़सोहावनआठहूँजामहिएवहरावै ॥ १५०३ ॥ मेरेममझूठमनहूँकोमोहभय़ोअ
तिसीलभसुभाव़जानकीशाकोश्रव़नकरि ॥ नाहितौअपांरव्यकल्पहूँलौंनामिलापप्रांतहेतौकैसेहूँनअनुरागभालभार
धरि ॥ कोऊकालबीतेमोहिमेंटिहैंभरतबंधुलेशहूँनपामरोंकमोहमनमाहिभर ॥ युगलअनन्यविस्वासदृढकिएमिलैं
घेरेहींदिननबीचआइहैंपियूषबरि ॥ १५०४ ॥ नामरूपलीलाधामधारनासुलभतामेंधामनामअधिकसुलभसुखमूल
है ॥ एकवारकैसेहूँनिहारेऔउचारेमहापातकीउधारहोतत्यागिकेकुशूललहै ॥ ऐसेसरकारसेनजोसोजोसनेहसठतौनशकरादि
हूँतेनीचव[illegible]घूलहै ॥

युगल अनन्य सीताराम को स्वभाव स्वच्छ सर्वदा समहारि वस्यो सरजे सुकूल है ॥ १५०५ ॥ ममता गुन माह भले करि के धरि के वरवासना आस सुहेरे ॥ समता सव जीवन वीच सहास जिके उर माह विनोद से पूरे ॥ जनता के वटोरे न स्वाद कछू करि है कवहूं अति हानि हु जेरे ॥ युग्म अनन्य गुनो गुन हीं मन हीं मन आप हीं छाइ है नूरे ॥ १५०६ ॥ परम परेश अवधेश सर्वज्ञ गुन अमल अचिंत्य नेह वुधहूं विचारहीं ॥ सर्व वस्तु वोध एक काल अवछिन्न भिन्न शेष नहीं रहे ज्ञान रूप हिय भान हीं ॥ औरई श कोटि माह योगपान तप वल होत तीन काल ज्ञान सो च पहिचान हीं ॥ युगल अनन्य सीताकांत में सुभाव सिद्ध एक रस ज्ञान भेद भावना विहा नहीं ॥ १५०७ ॥ नित्यहूं नैमित्य लीला वीच सर्वज्ञ सर्ववित ते वद वैन साम्प्रत छहीं निहारिए ॥ कौन ऐसी कला जो न हूं जौने न नपे शाम निहरिए विचारि फेरि चित्त वीच धारिए ॥ कीश भालु आदि जेते जीव अगजग जाल तिनै की भाषा वूझें रंग अवधारिए ॥ युगल अनन्य सर्ववित वो येह तु लीला निमित्त के मध्य भली भाँति निर्धारिए ॥ १५०८ ॥ ज्ञान प्रमोद प्रयोज्ञर सो गुन वेद विषे निर्द्धार कियो है ॥ सो सुनिए गुनिए मन मैं सोइ स्वल्प समत देखाय दियो है ॥ लखिए पसु से उर सौ गुन मानुष जाति को मोद सु ज्ञान वियो है ॥ युग्म अनन्य मनुष्य सें दूनो गुनो शत रास सपक्ष लियो है ॥ १५०९ ॥ दैत्य दानवादि के मैं इनहूं ते सत गुन योगिहूं समान ज्ञान मोद धारे जानियो ॥ योगिहूं ते मानव गंधर्व तातें शत गुन देव गंधरवनी की भाँति सो च मानियो ॥

॥श्रीराम॥

तिनहूंतेहोउगुनसौगुनसुजानोमित्रपितरनमांभयामेंसंकानहींआनियो॥ताहूसेविशेषतपावभिएअजानेहेवयुगलअ
नन्यवेहयुक्तअनुमानियो॥२५१०॥तातेनित्यहेवतिनहूंतेहोनोभांतिवडेमरीच्यादिरिषिवहवीचनिर्द्धारेहैं तिनहूंतेरु
द्ररुद्रहूंतेपितामहजानोहोनेरीतिवडेपामकल्पनाकुतारहे॥कमलासनहूंसेविशेषरामरंगरंगेजानियोअसंख्यगुनसो
वहींविचारहै॥युगलअनन्यआगेजानकीरमनज्ञानमोहकहाकहोंमोनगहोंनिराधारहै॥२५११॥श्रीअवधेशापरश्री
सिरोमनिहूंसेंकछअघकोठहरावे॥सोनरनीचमहामनुजादसमानअजानविषयलहरावे॥पातकीकूरपखंडीसोईमुखदे
षिवेयोगनहींजहरावे॥युग्मअनन्यकरेरारसनातेहिछेरनवेदसहागोहरावे॥२५१२॥रघुसर्वज्ञताविचारिकेवहाकोभ
मेकमप्रतिकूलभूलशूलसावधानहें॥लोकरंजनादिवीचचित्तकोलगावोनाहिंगावोगुनदिव्यमायाहीनसंतसंगछै
आपनीवडाईविषव्यालदुखदाईदेषोवासनामलीननामनेहनीरसायध्वै॥युगलअनन्यअनमोलमहामनिगुनराषिवे
एसम्हारिसदावेठिएनकहूंरव्वै॥२५१३॥श्रीरघुवीरसिरोमनिपराशक्तिसिरोमनिरूपविचारो होनीहूंकोअनहोनीक
रैविपरीतधरेनिजनेननिहारो॥हैजितनेगुनदिव्यपरेशकेसोसवपाहिकेआसरेधारो॥युग्मअनन्यकृतकेविनागुन
आपनेचित्तकेमध्यसम्हारो॥२५१४॥नानाहावभावसाजसाजिकेरिझावेनाचेगावेगीतजानकीजीवनजूकेआगेहीं॥

॥नामने०॥
की २

देखिदेखिवाकीगतिनिपटअनूपआपमानैआचरजवाहवाहकहेखांगेहीं॥ मोहेमहामनीईशापामेअद्भुतकहासवलासुशक्ति
ईशाएकतासुवागेहीं॥ युगलअनन्यताकीकिंकरीअविद्यामायाजामैंयोगीजतीवडेवडेअनुरागेहीं॥२५१५॥ सीतारामजूकी
शक्तिसोईमनमानोमननअगमअथाहकोईपायोनहींपारकन॥ जामैजलैकेसमानतीनदेवईशौअखिलमुनीशउतरावैं
डूबैंवारगन॥ औरजोवरंककंकअंकशंकग्रसेकोनकहिएकथानचित्तबूझिएविचारखन॥ युगलअनन्यऔसीशक्तिसान
कूलहोयअनायाससेएगुनजानिकेअनन्यधन॥२५१६॥ साधनकोटिहूँकेकिएहिएशांतिकरापिनहोतविचारो॥ जोलोसि
यावरकीसुचिशक्तिकोआसगहेनहियेननिहारो॥ प्राकृतदेहविहायविलक्षनरूपमिलापमेंहेतुसुधारो॥ युग्मअनन्यअचिं
त्यसहायसुखेसजमैसोयकेखहनिकारो॥२५१७॥ जानकीजीवनजूकीकृतज्ञतास्वच्छसोहावनविज्ञताखानी॥ पावरती
निजनेहिनकोकृतमाननतोकोटिसुमेरसमानी॥ यागुनऔरनमाहनहींकहुदेखिएदृष्टिउघारिगुमानी॥ युग्मअनन्यउधा
रकोकारनहैगुनएकएहीमुददानी॥२५१८॥ जेतेदिव्यगुनसारछीरकेसमानतेतेतामेमहामधुरपियूषकृतजानमो
पानकीप्रपंचीकलीकालजीवयाकेविनाकैसेहूँतरेसोचवातमीतमाननै॥ जोनचित्तवडेवडेकठिनउपायकिएपावैं
कोउकहूँतोनपारवोपछाननै॥ युगलअनन्यजानकीशकोकृतज्ञगुनगायध्यायमोदसिंधुमांहरंगछावनै॥२५१९॥

॥श्रीसीताराम॥

और बुवीर सुधीर गंभीर गुनोगुन वीर सुधीर बिहावन ॥ छोटो बडो कर जव्य नहीं कोउ जानि शाके पहिले मनभावन ॥ जे निजे नेही स
मीप बसे सोउ मर्म न पावें रहस्य सोहावन ॥ युग्म अनन्य सिपावर को मुख्य बस्तु कहें वां भीर लोभावन ॥ ५५२० ॥ संहिता पुरान वे द
बीच मे प्रसिद्ध चार त्वम क गंभीर गुन हेरिए नैनसें ॥ कोटि कोटि सिंधु औ पताल तें गंभीर अति जानिये गंभीर गुन सांच ही सु
बैनसें ॥ कैसे हूं सु को ह सोऊ जानो न ही जात आगे आये मुग्धा क्यात बोलि आ हिहीं सु बैनसें ॥ युगल अनन्य अनुराग हा गही
न करो धरो मन स्वाद रूप संत गुरु से न नैसें ॥ ५५२१ ॥ अवध किशोर चित चोर चतुराई सु घराई निपुनाई भलकाई लोक लोक
में ॥ अबुध अभागी हाह हागीन निहारि शाके जैसे नैन हीन स्वच्छ मुकुर बिलोक में ॥ दिव्य गुन चातुरी सुरीति प्रीति प्यारी रह
आपनेई बुद्धि बल वैभव अशोक में ॥ युगल अनन्य महा कठिन असाध्य काज अनायास ही सें ताको करनो अरोक में ॥ ५५२२ ॥
विगरी सिगरी वर बात जोऊ सोउ आपनी चातुरतानि सुधारें ॥ कोटिन अंडकटाह रचें रंग रंगन तऊ श्रम नेकन धारें ॥ चातुरी
लीला विभूति विषे रस स्वाद विवाद विहीन विहारे ॥ युग्म अनन्य सुधाई सजो जिय चातुरता प्रभु की निर्धारे ॥ ५५२३ ॥ धीर गु
न दिव्य भव्यन व्यर बुवीर ज कों सुनिए सनेह से अडोलता को हेतु है ॥ नाम धाम लीला गुन रूप ए करस नित्य मोद सिं
धु सरस स्वरूप सुख केतु है ॥ और जे तेई श नाम वाले कहावें ते तर हैं नहीं अंत काल कठिन समेतु है ॥ युगल अनन्य भीति

॥नामने०॥

लागिए सु धीर होय जो यै ऐसो ईष्ठ दृष्ठ धीर ताउपतु है ॥१५२४॥ जानकी जीवन जू की उदारता शेश सहस्र केहैं मैं न आवै ॥ सो गुन
हिव्य स्वरूप अनूप महामति मंद कवी कस गावै ॥ देश सु पात्र सु काल लखे नहिं जांचक मात्र को तोष करावै ॥ पुण्य अनन्य जो चाहे
रती तेहि भर सेज्या दे सु वित्त भरावैं ॥१५२५॥ महाराज सुवन सनेही धन प्यार बिन भोग शोग ही न होय नाना जीव जानिये ॥ रैन
ऐन चैन न न परत हानि हिये विनु ऐसोई सुभाव पसो आहि ही से मानिये ॥ नित्य धाम मध्य कोउ पांचक न रंक मीत ताते लीलाभू
मि में प्रगटता पछानिये ॥ युगल अनन्य सीता नाह सो उदार आन सु न्यान हीं कान सांच चित्त बीच आनिये ॥१५२६॥ अमि
त अनंत जीव नीच नर नारी पसु पांवर ऊ तारे आप प्रगट सुधाम में ॥ वेद मर्याद नेकु रही न विचारी चित्त साथ नित्य धाम मा
हि गए बिना काम में ॥ जानकी रमन जू उदार चूड़ामनी लिए बिनाहि एहसान दिव्य ख्यात खास आम में ॥ युगल अनन्य दू
जो ठौर नहि खात ऐसो ताते सीता राम हीं को भजो आठो जाम में ॥१५२७॥ कोशल राज किशोर सुधीरज दिव्य सुनो गुन प्रीति लगाए
काम से आदि के वेग जिते तिन से उद्वेग न होनो कहाए ॥ वैभव को टिउपत तऊ हिल धीरज साधु सुकर्म सहाए ॥ नास्तिक नी
च कुवाक कहे तउ धीरधुरीन न हीं अकुलाए ॥१५२८॥ दोष न काहू को नेकु लखैं लखि कै न कहैं दहैं वेग कृपानिधि ॥ रोष को
लेश न जानि परे कछु कैसेहूं धीर्य मे लीन सुतासिधि ॥ पोष करे अपनो तन कि केब वरावो न हीं सपने हूं बिना विधि ॥ ॥

॥श्रीराम॥

युग्मअनन्यमिटपरत्यूहचमअविलंवमिलेसुखमानिधि ॥२५२९॥ सुनिएचितदैरघुवीरसिरोमनिकीसुचिसूरतानूरतानपारी ।
सवसेविनभीतअजीतरहेरनमाहउमाहउछाहियपारी ॥ श्रीअवधेशविरोधिनकोकोउराखिशकेनहिधीरताधारी ॥ युग्मअनन्यअ
भयरहिएगहिएदुष्टकैगुनसूरताभारी ॥२५३०॥ कोशलेशअभ्दुतगुनवीर्य्यवरएकरसअचलअखंडशक्तिसारयुत ॥ वीरर
सभावसोईवीरजप्रभावतामेपांचभांतिचावकेसमेतवूझोवोधरत ॥ दयापायदानवलवीर्यत्यागवीरहीरसमसोहतसदैवर
घुवीरवीचरामहुत ॥ युगलअनन्यज्ञानकारनअशांकेहतुवीर्य्यगुनहिंविधानधारिएसमेततनुत ॥२५३१॥ तेजपुंजहूंतेजेरन
वारीतेजगुनजानकीरमनजूकोशुद्धअविलीकतर ॥ सेनाचतुरंगिनीसमाजसाजचाहेनहीआपनेईतेजसाध्यजीतेयुद्ध
कोटिवर ॥ कोटिकोटिमार्तंडतेजतीव्रतमसमताकेयोगकोऊनाहींकहूंपेरखुसर्वपर ॥ युगलअनन्ययाहीतेजअंशलेशपाय
भएतेजवानकेतेईशाछोडिकालडर ॥२५३२॥ खेहनशाययगेमनकोतनकोनहिहाहरछोजनको ॥ अनायासहीसदुर्वा
शविनाशमहातमरासभयोछनको ॥ गुनतेजकेतेजतेसजहियोतजिकेगरनीचकहूंधनको ॥ भनैयुग्मअनन्यअचिंतम
हामुदश्रीगुनतेछयोहेमनको ॥२५३३॥ राघवजूकोमहावलउज्वलधारैविचारैविहारैविषयवल ॥ जौनमहाभ्रमयोग
क्रियातहिकोअनयासकैरपलमेहल ॥ देखोअनेकनलोकधेरेनिजआसरेसेनखिहसदाचल ॥ युग्मअनन्यवेंधेसवहीनिजमाया
केडोरमेकौनकहोकल ॥२५३४॥

॥नामने०॥

ऐसो रूप पायके असोच रह्या कीजिए ॥ जाको बल प्रबल प्रताप तेज आदि गुन अचल अखंड तो मन नीके चित्त दीजिए ॥ आप ही खोटाई
खीनताई कदराई खोय रोय पतो बिसारि महा मोद रंग भीजिए ॥ काहू भांति काहू सन नेकु संक धारो दिल आसरा अनूप सत्या पतिहि
को लीजिए ॥ युगल अनन्य धाम बीच बिश्राम स्वच्छ ऐसो रूप पायके असोच रह्या कीजिए ॥ २५३५ ॥ जानकी जानि सुजान
सिरोमनि सुंदरता अनमोल अनूठी ॥ अंगन माह उमाह महा मधुराई पग्यो चित नित्य अजूठी ॥ छ॰ नहीं छ॰ नेम छ॰ बिछाई छ॰
लपट टहोति उदय प्रसंग अभूठी ॥ युग्म अनन्य पगी जिन की मति प्रासु खेम पुनि भूलि न रूठी ॥ २५३६ ॥ नख सेसि सिखलों सि
रपसेन खेलो महा माधुरी मोहनी मोर मई है ॥ लच्छन एक से एक अनूपम चित्र रसार सछान छई है ॥ चित बुद्धि बिलीन ल
खि दग हूं सुधि भूलि के अंग के रंग रई है ॥ युग्म अनन्य बिलोकि महा छवि नाइ का बंद बिकाय गई है ॥ २५३७ ॥ कहिबे मन
आवै सि पावर की सुचि सुंदरता हि प्रभा पर ही ॥ जप योग बिराग सु साधन हूं सब स्याम सनेह समुंद बही ॥ प्रिय पाय महा मनि
फेर कहें कि मिकां चकिरी चकी चाह चही ॥ मने युग्म अनन्य अनन्य भई मति लाखहीं वरवात सही ॥ २५३८ ॥ जानकी बल्लभ
जू की महा मधुराई हि रहुल साई सोहाई ॥ स्वाह समूह सुसीम सिरोमनि रोग कहूं बबिहीन बड़ाई ॥ को टिनेक लये लोचन खैं
र चित्त नमें तो षनउ पल पावन पाई ॥ युग्म अनन्य तत्पर वटती ब्राती दातीन कभी रस रागबिहाई ॥ २५३९ ॥ ॥

ति
जीवनरूपअनूपसजीवनजानकीजीवनकीमधुराई पीवनजोगरहस्यरंगेजनस्वच्छतारीतिकुनौंविहाई॥ लोकनमांहजहांल
गिमाधुरीसोसवफीकननीकलगाई॥ युगमअनन्यसियावरजूकीसुमाधुरीसंगसनेहसजाई॥ १५४०॥ तकहींलोजहानसुमीठो
॥श्रीराम॥
लगेजगवलोसियलालकीमाधुरीनाही॥ चाखीनहींरसनासैकभीधिगजीवनतासुकोसंतकहाही नामस्वरूपसुधामगुना
करहैमहामाधुरीखानिसहाई॥ युगमअनन्यरमोरंनमेंतजिकेआहारविहारवडाई॥ १५४१॥ रूपअनूपसियावरकोशतकोटिर
तीपतिकोनविचारो॥ देखिकेनैनअवानकहूंफिरिआवैनहीरतजन्महजारो॥ मोहैंनिहारिचराचरहूंसवनेहीकीकोनकथानि
र्धारो॥ युगमअनन्यसुदीपपतंगसुचुंवकलोहकीरीतिनिहारो॥ १५४२॥ जानकीजीवनरूपसमाननहीकोइइशामेंकैसेहूंदे
खो॥ मोहेमहामुनिवामभएपुनिप्रासुनिकेधुनिनीकेपरेखो॥ राक्षसीऔरिपुमोहगएमनमोहनरूपविलोकिकेलेखो॥ युगम
अनन्यअतर्कअचिंत्यस्वरूपसोहावनेप्रेमसेपेखो॥ १५४३॥ रसिकेशसियारघुनंदनमनोहरअंगअनंगलजावनवारे॥ तामेल
सेअनमोलछवीगुनहोतविनोदसनेहसैंधारे॥ स्वच्छतासुद्धसुदीप्तअनूपमउज्वलतासुखमाअविकारे॥ युगमअनन्यमहा ॥नामने०॥
मलहीनसुदीपसोंनिर्मलताछविकारे॥ १५४४॥ महातमजोमहानेहतुउजलाईझलकाईमनभाईवरसाईरंगरासरस॥ स्वच्छ
तातेराजसमलीनताविनाशऔरसुद्धतासुचित्तपतेहरासरोगशोगग्रस॥ कोटिनकुयुक्तिनीचतर्ककोविहानकरजानोनिर्मल
गनसोकसुधासिंधुधस॥
ल

॥ श्रीराम ॥

॥ ३०२ ॥

जुगल अनन्य जरा आदिक को विरोधी सुचि सुखमा सलोनी एक रस गौर स्याम लस ॥ १५४५ ॥ प्रीति तें रहित पराधीनता सजाए जियही पता बिना सत्रास हेतु अवलोकिए ॥ ज्ञानकी रमन ज्ञेम षट्गुन महादिव्य दोषते विहीन सदा स्वच्छ अविशोकिए ॥ एक एक गुन माँहि कोटिन असंख्य गुन जानिहैं सुजान प्रीति प्रान पन रोकिए ॥ जुगल अनन्य सीताराम जू के नेह बिना योग जज्ञ पत्तन हजार भार झोकिए ॥ १५४६ ॥ कोटिन रोहनी नायक सें सुचि उज्वलता सियलाल सोहावन ॥ संत सनेहिन के मन सें अधकी मलहीनता भावनी भावन ॥ स्वच्छता स्वच्छ महामनि तें अति सुद्धता पावन हूं कृत पावन ॥ जुग्म अनन्य सुधा सी सुमीठ महा सुखमा रसमय छविछावन ॥ १५४७ ॥ गुन के गुन ध्यान धरे उर मैं जुर मैं मुनि तासु को संग नहीं है ॥ सुनि के सद्वैन सुचैन सदा अहा प्रीति निहारिए मोह मही है उनके विषय वासना वीज सभी विरहानल मांझ जरो रोग रही है ॥ जुग्म अनन्य खुसी खुन के हर वार घड़ी पल प्यास वही है ॥ १५४८ ॥ सौरभताई सोहाई सदा सियलाल मनोहर अंग के माहीं ॥ ताही को लेस सुगंध सुपाय के कोटिन लोक सुगंध सदाहीं ॥ जावत दिव्य सुफूल सुगंध तिते सब छाय रहे रस चाहीं ॥ जुग्म अनन्य जहान कुगंध मिटे गुन ध्याय के खेद बिनाहीं ॥ १५४९ ॥ सुकुमार सिरोमनि श्री नृपनन्दन जी की महा सुकुमारता प्यारी ॥ क्यों कहिए कटु वैन कठोर सें सो मृदुता सुचि सीम सँवारी ॥ स्वच्छ सिरीस हूं सें अति कोमल फूल विकाश विलास वहारी ॥ जुग्म अनन्य अतर्क सियावर की सुकुमारता हीयमे धारी ॥ १५५०

॥ ३०२

॥ छविसागरनागरकोशलराजकिशोरकेअंगनमांहलोनाई ॥ फलकेमुक्तामधिआवअजूवसुचंचलत्योंद्दगकै
॥ छविछाई ॥ सवअंगनकीप्रतिभानवअंगमनोहरमेंपरतीद्युतिछाई ॥ श्रीयुग्मअनन्यसुलावनतालखि
रद्दिगलायकेशोकसजाई ॥ २५५२ ॥

॥ श्रीराम ॥

तीनहूंभांतिसेंकोमलतासियस्याममनोहरमूरतिमांहीं ॥ कैसेंहूंकाहूसमैंनकठोरकलंककेअंकनकीपरछांही ॥ सकुचेसु
चिनित्यसनेहासवेपरसेंपरसअंगसुरंगसहाहीं ॥ युग्मअनन्यअभयरहिए सियजीवनमेममहृत्ताडरनाहीं ॥ २५५१ ॥ जानकीजानि
सुवेषतापवनेहैमनभावननेहीनवीनी ॥ सच्छिदानंदमनोहरमूरतिमेंरचनारसमयरंगभीनी ॥ नषेकीद्युतिरामकरोरनकी
ममहाअभिरामअजूवछवीनी ॥ भूषनभूषनअंगसोहावनहेरिकेवासनानाशकीभीनी ॥ २५५३ ॥ जैसेनानाभांतिवर
व्यंजनविचित्रबीचस्वादसरसातहेलवनताहीयोगसें ॥ तैसेंहीअनूपअंगअंगमेंलावन्यगुनअमलअजूवहिएहेरिएअ
शोगसें भूलिआपहींनिहारिआपनोस्वरूपस्यामसीमरूपमाधुरीसोहाईभावभोगसें ॥ युगलअनन्यद्दत्तउतकीउपाधित्यागि
रूपसुधासिंधुवीचवूडिएअरोगसें ॥ २५५४ ॥ संहननअंगमेंअजूवरबुवीरजूकेमहावलपुंजप्रोदताईसेंसेभतेहे ॥ महामहा
वीरमल्लहारेयुद्धवीचकोऊसमतानधीरजेतेस्यामओसपेतेहे ॥ आरतजननत्रानेहेतअविलोलगुनसंहननचारुचि
तचाहिएसचेतेहे ॥ युगलअनन्यखोफखटकाविहायसवहूजिरअसोचनित्यआपनेनिकेतहै ॥ २५५५ ॥ श्रीअवधेशकिशोरस
नेहीउभयअनुरागअथागसुनावो ॥ जासुनिकेउपजेउरभावसुचावप्रभावउछाहलखावो ॥ हाउनकीवरतीप्रियप्रीतिसेंद्द
ढ़सोईअनरागसुभावो ॥ युग्मअनन्यरहेरसएकविवेकसुटेकअनेकनसावो ॥ २५५६ ॥ रूपगुनरसजसस्वच्छसर्वकालहिए

॥ नामने० ॥

होवे दृढ़ तम होउ औरसोई रागहै ॥ फेरि मन नाहिंसें सुख छवि अनुराग होत अमल उद्दोत होतहीन प्रेम पागहै ॥ महा पवि सार सम
सवल अडोल कोटि कलपहुं बीते अविकलप अरागहै ॥ युगल अनन्य ऐसो अनुराग अनमोल पावे कोऊ जन जाके बडे ऊंचे
भागहै ॥ १५५७ ॥ पागहीमें कुसलात भलो पल पावे वियोगमें रोग है जारो ॥ होत उद्वेग परे मग हूं मइत कीलहुको निकथा
निर्द्धारो ॥ प्रेम महीपरतंत्र सियावर नित्य पुरान सुवेद निहारो ॥ युगम अनन्य सुसाधन स्वच्छ सोई जो हित अनुराग पिआरो
१५५८ ॥ सांचे सनेही सियावर के तिनकी रति रीति पुनीत सोहावन ॥ आखिन मे चख माछ छवि सांवरी सूरति धारि लिए मन
भावन ॥ और कछू नहिं सूझि परे दृग स्याम महीं स्याम सुरंग लो भावन ॥ युगम अनन्य भुलाय गए निज प्रीतम प्यार पगे पद पावन
१५५९ ॥ भूमिका रंग मई तिनकी केहि भांति निरूपिए चित्तसे बाहिर ॥ आप परे श्रावणाने सुनेति निहाल भए नित हीं जग जाहिर
ऐसो अजब सनेह कृपा बल लाह अहोह सुचाह जवाहिर ॥ युगम अनन्य कहूं प्रतिकूल विषय फल कात सभीत सु माहिर ॥
१५६० ॥ ऐसो अनुराग अधिकारी भेद भाव पाय भयो नाना रंग नीर फटिक समान सो ॥ जैसे सजल एक कहीं अनेक द्रुम मांहि
परे बीज अनुराग फल पाग प्रमान सो ॥ नाना रंग नाम अभिराम सुभेरागु नाम मन उनमाद्दरीति के समेत सुखखान सो ॥ युग
ल अनन्य नीको रंग है मंजीठ मीठ लाल एक रस भाव जानिहे सुजान सो ॥ १५६१ ॥ कलित किसोरताई छिवर चुराई जू की सुनिए
सचेत सुखदाई छवि छाई है ॥

॥ श्रीराम ॥

शेषसारदागनेशकहतलजातलालअवतसुभगकैऐसीशोभासरसाईहै ॥ दूजोमतिमंदकविप्राकृतनवषानैकैसेकहेजोकहा
पितउपवानसीवनाईहै ॥ युगलअनन्यप्रेमहीकेपरतंत्ररामललितललामअभिरामआसआईहै ॥ १५६१ ॥ षोडसवर्षअनूप
सुवपसुचिसोहननित्यअजूवनवीने ॥ जानकीजानिकीमाधुरीपानकेरेरसखानरसीरसभीने ॥ बालकुमाररहसाउपास
कभावकिशोरकेअंतरलीने ॥ युग्मअनन्यसियावरसुंदरनव्यकिशोरभजोचितदीने ॥ १५६३ ॥ जानकीवल्लभजूकोस्व
हावनदिव्यमहागुनभागविचारो ॥ जोनकेधारेअभागभगसुचिभागजेगनिजनैननिहारो ॥ देखतहींमेहियोउमग्योवडभा
गविचित्रविचारिएप्यारो ॥ युग्मअनन्यनहीकोईआसियावरकीममताजेहिधारो ॥ १५६४ ॥ भोगअरोगअशोगसदारस
एकअभयपअनवघसोहावत ॥ नायिकावृंदविहारविभववरभागअरागअजूवजोहावत ॥ श्रीअवधेशकिशोररमालखि
कोटिरमापतिचित्तमोहावत ॥ युग्मअनन्यउभयपविधिसेनहिदूसरोभागसमानलखावत ॥ १५६५ ॥ दिव्यअदिव्यकेपारवि
लसैंभागसुवागविकाशविमोहन ॥ रासविलासनिकुंजअनेकनभांतिमहामनिँमोहन ॥ वानीसुबुद्धिकेपाररलेससववक्या
कहिएसुखमासुचिसोहन ॥ युग्मअनन्यहिमागसमेतसदारहिएगुनगायसुहोहन ॥ १५६६ ॥ गाइएहमेशासीताराम
अभिरामगुनध्याइएसनेहसैंसमेतरूपरासहीं ॥ भाइएसुसंगरंगारशिकसजातीअंगपगेगुन‸जंगछोडिलोकहांसहीं ॥
भाव

न

॥ नामसे॰ ॥
मंदिर २

जी२

आइऐनधामत्यागिएकपलहूंकहापिहूजिएअचलकाजसेरअनायासही॥युगलअनन्यपाइएप्रमोदएकरसजानकीजीवनकोहोयस्वासस्वासहीं॥१५६७॥हैवहभांतिसुकांतिसमेतसुधीअनुरागकोरंगअजायव॥जानकीजीवनकीकरुनाहींसेप्रेमपतिहोतहमेशअगाधव॥द्विदश्याहोउवारनिसामनपाररसाकहिएकिमिसायव॥युगमअनन्यअजानसुजानथकेगातिगावतसंतअवापव॥१५६८॥कोउअनुरागरंगजानिएपतंगसमरहेधोरहिनहींलौनेनसेनिहारिए॥हारहीसुरंगआगेपीछेऔरभांतिकांतिअंतमेननेकवानविदितविचारिए॥कोउअनुरागकाश्मीरहरताररंगगैरिकसमानचित्तआपनेमेंधारिए॥युगलअनन्यकोउबंधुककुसुमकोउजपाकेसुमनसमअनुरागधारिए॥१५६९॥कोउअंगाराकेरंगवरावरकोउपलाससमानसुहावन॥कोउगुलाबसुरंगलिएकोउदाडिमरंगउमंगवढावन॥कोउसनेहसिंगारहरीसमकोउमयूरसुकंठलोभावन॥युगमअनन्यकोउअनुरागसुस्यामलमेहसमानरिझावन॥१५७०॥कोउकोकनदकोउकुमुदसमानकोउविस्मुकांतिकृत्यअनुरागप्रेमरूपहै॥कोउअनुरागफूलअतसीप्रसूनलकोउकहिएकपासरंगजावकअनूपहै॥कोउअनुरागरंगविद्रुमसुहीरमनिहाटकसमानस्वच्छसुखसरूपहै॥युगलअनन्ययाहीभांतिनानारंगलिएजानोअनुरागवेदसंहितानिरूपहै॥१५७१॥जानकीजीवनरंगअनूपमेंरंगकदंवसमानयथारथ॥नेहीसमूहसुखीअपनेअपनेरंगरूपविलोकिसुखारथ॥

॥श्रीराम॥

राजावहीश्रुतिसंतमंतमनईजनजौनकेरैविनस्वारथ ॥ युगमअनन्यचराचरकोइहहेप्रविशेषविभवपरमारथ ॥ २५७२ ॥ श्रीसि
यरामकृपालसद्भावहियसखिसामुहेऔरसेकाजना ॥ औधसुकांडमेंवैनरहस्यप्रसिद्धविचारियभावविराजना ॥ जानकीवल्लभ
नोतेसिनातविहीनसभीसवसौचोअवाजना ॥ युगमअनन्यभजोसियजीवनसिद्धविसारिकैवैदिकवाजना ॥ २५७३ ॥ ऐसेसनेह
सुसागरसेंजिन्हकीमनहीमिनेहविनाछल ॥ सोकपटीकलिकालकलंककीमूरतिहैभरिपूरिमहामल ॥ वारहिंवारधिकारह
जारकैंतेहिपेम्युचिसंततसुधायल ॥ युगमअनन्यविहायविषयपरपंचगहोनितनेहमहावल ॥ २५७४ ॥ रततेसतकोगुनोअनु
रागअहागसजेंजिप्रेमसियजीवन ॥ एतेहुंपैनलगाततअभागअधीनसुहीनमलीनअसीवन ॥ वादततहैपरप्रेमहिएगुनचिंतनसें
सवभांतिसजीवन ॥ युगमअनन्यसनेहविहीनसुमुक्तिहूंभुक्तिहूंकोनहिछीवन ॥ २५७५ ॥ जानकीजीवनतेहिनकोअनुरागसनेह
प्रनप्रसतसारह ॥ शेषसहस्त्रकहेनचुकैमतिमंदकहावरनैकविहारह ॥ आपनेजीहपुनीतलिएगुनगाइएपाइएप्रीतिविसारह ॥ ॥नामनेह०॥
युगमअनन्यसनेहसजोभजोजानकीजानिसुजानसुपारह ॥ २५७६ ॥ प्रीतिरहेनहीनेकउपायविहीनमहाचपलाचरकीली
तातेउपायसुमुख्यइहैअपमानगहेअपनोघरकीली ॥ चाहेनमानगुमानकछूरहनवाततनेमननफाअरकीली ॥ युगमअनन्यउपा
यउठायप्रपंचनहानमुहापरकीली ॥ २५७७ ॥ स्वामिनीसीप्रेमस्यामसमानसोहावनहिव्यगुनाकरजानो ॥ हेजनरच्छननेमअधिकी
६४
कछुभावसमेतसनेहमेमानो ॥

एकताअंगसुअंगउपंगकेअंतरनेकजुहैनहिआनो॥ युगमअनन्यसुसेव्यहेहाऊसबभाँतिसुसंहितासंतप्रमानो॥ २५७८॥ जेअनुरागअंगे
सियजीवनजूकेसहातिनमैंतिननोगुन॥ भीतरबाहरभीनोस्वरूपकोऊपरखेअनमोलमहाधुन॥ तीनहूंरूपअनूपसुभिन्नकि
एपरभिन्नलेगहुरवैमेघुन॥ युगमअनन्यसनेहकेहेतुसहीसमन्यारेरहसालिएसुन॥ २५७९॥ राघवीयाइष्टगुनअगुनअनूपअ
लअमलअपलपलव्यापकअखंडहै॥ एकएककोटिकलसारिविसेसहसगुनदायकअभिषभिषसिषचारचंडहै॥ महामो
हमंदिरमवासीस्वच्छसीलधीरगुनचिन्हैहैविचारिएहमभाहीअरंडहै॥ युगलअनन्यमोहतामतमनासकरअमरमानहार
मानोमार्तंडहै॥ २५८०॥ हीनहीनखीनलीनवासनामलीनपायपीनप्रवीनवैराग्यनोऔगुननखाननर॥ ताहूसेअभेदछेद
हीनखेददूरिकरिभेदनोविशेषसोईशीलतास्वरूपपर दिखिएसुगापगीधराजऔविराधपापप्रगटप्रमानवेदसारबीचमोद
कर॥ युगलअनन्यगोदआपनेसुधारिपोंछिअंगअंगहायकेवेहालआपप्रेमभर॥ २५८१॥ भूमिमैगाडोविराधमहा
अपराधअगाधअगारअलायक॥ आपनेमोहनमारमनोहरअंगछुवायदियोसुखदायक॥ वाकेसमानकुरूपनहींको
उताहूसेभेदगह्योनासुभायक॥ युगमअनन्यसुसीलसुधानिधिहैसबभाँतिसहायरघुनायक॥ २५८२॥ आपनेनेहिनकेगुन
आपहींश्रीमुखसेंबरनेकरुनाकर॥ बारहीबारबखानतऊनअघातिकथासदख्यातिसुधाकर॥ श्रीहनुमानसुजानसेआदि
सनेहिनकोसुप्रसंगप्रभाकर॥

न

॥श्रीराम॥

प्रेमअनन्यसुसीलनिधानसियावरसोकहौंदूसरोआकर॥२५८३॥कोटिभांतिधिकारहमेंहरसापतऐसोसुसीलकोसागर॥
जानकीनाहविसारिवहेविषयवासनाबीचअचीजअनागर॥ऐतेहूंपैनहित्याग्योमलीनकोशीलनिकेतकृपालउजागर॥
प्रेमअनन्यभजेंगेसहीअवएकहौंतासैंनागरीनागर॥२५८४॥जानकीजीवनजूकोसुधासमस्वच्छसुनेग्यनहोतमहाफल
चारकेपारविकारविनारसएकविहारलहेमुक्ताफल॥घोरहीमेमतिमानलखैवटबीजसमानपियूषहलाहल॥प्रेमअनन्य
नजानिशिकेगुनभावसुभेदअजाननजाहल॥२५८५॥इतिश्रीपरात्यग्गुननिरूपनं॥४॥अथसर्ववस्तुकथन॥अतिवाहअपो
गससोगतजेसजेयोगअरोगअभोगसही॥अभिमानवितानन तानतनेदुखखानकृसानुप्रमानमही॥पुतक्रोधविरोधअसो
धनतेप्रियवैनअमैनसचैनकही॥जनसज्जनभंजनभावविभवसियरामसनेहसुभायगही॥२५८६॥प्रियप्रेमपियूषमयूषस
मानतपासुररूपसुवैनसचारै॥गारीगवारनकीसुनिकेहियेहंहर्षअमर्षनरंचविचारै॥जीवननीरतरंगवरावरभंगअरंगहमे
ध्रानिहारै॥प्रेमअनन्यअशेषजहानसेंद्वेषकुरेषविशेषसटारै॥२५८७॥अलमस्तअहस्तअवस्तरहैसुखहस्तसमस्तको
अस्तसम्हारै॥मस्तसमूहअरस्तदुस्ततेंहीनअपीनसुदीनसुधारै॥चुस्तजहानप्रमानलखैनिजसाननजहीसवतेनिर्द्धारै॥प्रेम
अनन्यअतंकअशंककलंकसपंकविलाशविचारै॥२५८८॥राहअराहअचाहचलेचितशाहउमाहउछाहसजाए॥०॥

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥

॥३०६॥

आहअथाहअगाहनहींमनमांहमाहवतछानछवाए॥ वाहविलायतवीचवसेनहिनाहसनेहसेहहसमाए॥ युग्म
अनन्यनिवाहनिहायतनामपरेओसप्रीतिलगाए॥ २५८९॥ नामकेआसरेजीवनमेरो॥ जैसेनवीनवधूघरआस
रेवालपिताजननीहिपेंहेरो॥ जौनप्रकारप्रजानृपकेवसहेहीअधीनजपातनेडेरो॥ शिष्यसबोधरहेगुरुकेपदपंक
जपासमुसांमसवेरो॥ युग्मअनन्यनओरहमेरकनामकेआसरेजीवनमेरो॥ २५९०॥ आसकनपिएप्यासलेस
हूननासेहुतनाहकगवारआसकरतअकाजहीं॥ चोरीठगपनकेकिएतेकोटियुगजायतऊनमिलतसुखसाजसाम
राजहीं॥ कानीकोड़ीपाएनमिलेदुखहाहहिल्लेऐसेहीउछाहसठसाजतअलाजहीं॥ युगलअनन्ययाहीभांतिराम
नामरसरहितअनेकनउपाधिनापराजहीं॥ २५९१॥ नामहीनिशंकअंकहीनपीनऐंरसछानहीनप्रारनगहनहितहे
रिए॥ कैसेहूंमलीनलीनविषयकुरसमीनरटेकाहूंरीतितनऊतरतनहेरिए॥ जेतेसंतसरसस्नेहरसवंततेतेनामहीं
कीमहिमावषानियोनिवेरिए॥ युगलअनन्यसवसाधनस्वरूपचिन्तकियोतहकीकमुखसावधानफेरिए॥ २५९२॥
कामदुघसिरताजकाफिरकजा कहे॥ ऐसीरीतिप्रीतिनरमाईसेंप्रवेशाकरिंसखन्नपनदुष्मनदुवीकहे॥ शरमस
कोटसमसत्यमारशोकसुखलेशानरहनेहतअधिअपाकहे॥ अमितपिसाचप्रेतपांवरपखंडीपरपाकेपरवारिएहमसचिन्त
चाकहे॥

क ७

॥३०६॥

फरि २

क

॥श्रीराम॥

पुगलअनन्यऔरहुखदनपाहिसमकामदुष॰सिरताजकाफिरकजाकैहै ॥ १५८३ ॥ मदनकदनकदनविनसदनसदनसठस्वा
नसमडोलैचैनवोलेगतचैनहै ॥ आपनोपरापोकछुनजरपरतनाहिदृगनकेविद्यमानअधमअैनेनहै ॥ मानोभवसंगसजिमए
सबसमगमग्नसितविशेषहींतेखोपोतरफैनहै ॥ पुगलअनन्यवासिकरतसनेहसठमदनमहानदुखदारनकोअैनहै ॥ १५८४
मदनकदनविनवदननरंगहै ॥ यद्यपीकरतकोटिविधिजपतपजंत्रसीतधूपसहततनमानसउमंगहै ॥ जैसेसत्रुसबलविशेषब
विजयफुवैपरहिफोहरषतवरषतजमजंगहै ॥ तैसेमहामुदमीतमिलतमिलतमकरध्वजजीतिकेअखंडपामैविपुलप्रसंगहै
पुगलअनन्यखूबकिफोतहकीकमनमदनकदनविनवदननरंगहै ॥ १५८५ ॥ संतसंगसुदृढकरतमनजीतिहै ॥ औरनउ
पायरंचदृगनैदपातजोकहतसोउजापपचिउमरवितीतिहै ॥ पावकपरसजिमिपारदउउततिमिहोतहींकुसंगभरोबरमूर
रीतिहै ॥ धन्यसंतचरनसरोजवोजचोजचित्तखोजकरवायदैतविगतविमीतिहै ॥ पुगलअनन्यधीरधारिरसुएकरससंत
संगसुदृढकरतमनजीतिहै ॥ १५८६ ॥ संतरसवंततरुतरुनअरुनदुतिहारनहरदुखदलनदयालहै ॥ साधनसमस्त
अस्तुहितसुसाषसुभफूलफलअमलउपासनारसालहै ॥ विसदवहारमूलमधुरप्रमोदधारसरसरहस्यअनुरागमोद
मालहै ॥ पुगलअनन्यवरवचनविनोदप्रियपवनपरसपरतच्छजसजालहै ॥ १५८७ ॥ संतसिरमोरसवतोरजगजोरहद

॥नामने०॥

गोरगुनकरतजरतज्वरजीवके॥ सहजसमाधिआधिव्याधिवरजितवलवैभवविचित्रलहेललितसुपीवके॥ अखिलजनमनो
निजाहिरजहानजोनतौननसिजातयुतअसहअसीवके॥ युगलअनन्यसियजीवननिरतमतिपदकंजरतिसुखदायकअ
तीवके॥ १५९८॥ लोभजोपैचित्तबीचओगुनकीकहाकमीनिंदाजाकेजीहताकेपापनकोरासहै॥ सुभगसुसारसत्यतीव्र
तपपुंजशुचिसुमनसुतीर्थसंतवहैंसहुलासहै॥ भलीविधापाएपरविनतकीनचाहकेछुअपजसपुंजमीचकठिनदुरासहै
युगलअनन्यरामनामसैंविमुखजोनतौननरअखिलकलंककोनिवासहै॥ १५९९॥ कामसोनमहाबलीसुन्योकोउकानहै
जाकेवसअगजगरहतअधीनहीनपीनमनछीनकरडारतप्रमानहै योगीजतीतपीपलपावमाझखाकसमेहतहैवना
यऐसोसवलितसानहै॥ जाकेडरडरातरहतविधिआदिदेवसुरपतिसुरपतिसहनगुलामविनामानहै॥ युगलअनन्य
जीतोजाततनकठिनरिपुकामसोनमहाबलीसुन्योकोउकानहै॥ १६००॥ कामदुखधामरामविमुखकरतहै॥ भाववरवीज
वीजवावचैनवालतरतजवीजकिएनिर्मूलसेजरतहै॥ दगाद्रोहदहावदुर्वादछिलछिद्रदाहप्रवलप्रवाहउमगतनअ
रतहै॥ संतसंगशुचिरुचिउचितसुपंथगतिअरतिविषैपैद्वेषैरखसचरतहै॥ युगलअनन्यकिएविमलविचारसुखका
मदुखधामरामविमुखकरतहै॥ १६०१॥ सीयवरनामरसवंतसंतकंजपदमंजुरसलोनेरसुशीसविनाधारने॥ ०॥ ॥

कोटिनकलेशकायकरतकहंबविधितीरथअटनआदिसंकटनटारने॥ योगज्ञानध्यानसबसंतसनमानसंगरंगअनुराग
जीयजागिहैअकारने॥ पुगलअनन्यछोडिकरमभरमतोडिजोऊनामरसिकसनेहमनवारने॥ २६०२॥ रामनामरसिक
उपासकसुसंतजनजूठनपवित्रपरमेशप्रियपावने॥ सहितसनेहवारएकहींप्रसादलेतहेतमुदमंगलमहानमनभाव
ने॥ जिनकेपुगलवरवरनजपनजीहअपरअलीहदरशअनततनधावने॥ पुगलअनन्यसिरमोरसिरताजसंतसीतसुख
सारपापपुंजनपरावने॥ २६०३॥ महिमाअनंतसंतसीतकोकहतश्रुतिप्रगटपुराननवीचविदितसुवातहै॥ कनकेगहतबन
आनंदस्वरूपहोतजोतजगमगातजहानभानमातहै॥ याकेमध्यतिलभरिकीजिएनशंकअंकमिटतकुभालजालजहरजमा
तहै॥ पुगलअनन्यकृतकृतताप्रमानतबजबनामनेहवानसंगसरसातहै॥ २६०४॥ कोउज्ञानयोगभक्तियोगओकरम
योगभोगकेहरनहैतुभाषहींविचारिके॥ कोउतपजपजागतीरथभ्रमनकोउकहतपुरानवेदपठनसुधारिके॥ देखोसब
रीतिविपरीतिकलीकालपापजापसबभायभयएकुरामयनिहारिके॥ पुगलअनन्यअतिसुगमसहजपंथसंतसतसंगना
मलियोनिरधारिके॥ २६०५॥ रामरूपरामनामरसजससुखसिंधुसहजसरसआगब्रह्मानंदकनहै॥ पवित्रएप्रतच्छअच्छ
गुनस्वच्छअंगछविअकपअपारभेदपावतसुजनहै॥ महामुनिदंडकविपिनिश्रीजनकेरूपमोहसुधित्यागिजिमपाएरंकधनहै॥

जुगलअनन्यअनुरागीजवहोयचित्ततवहींभलीप्रकारलखेमोदछनहै॥१६०६॥ अंतसमैंरामनामवारककहतजौनतौनजन
जातअनायासपरधामहै॥ संघनसमूहत्रासहासपनजगभासमिटतकलंककाशपासदुखरासहै॥ अहोभागरहतरहतएक
रसजोईसोईहैअहागरागरससुचिवासहै॥ जुगलअनन्यनामभनिरतसुजननित्यजानकीजीवनप्रानप्रीतमसुहासहै॥१६०७
छिनछिनउहितउमंगआगाआगरंगनामरसरमतजमततनसजालहै॥ प्रगटपरावरेशप्रीतिपरमितिरितरीतिविनाभीतिझलक
तमोदमालहै॥ तारकनटगुनतरकीवतरतारततअववरसरितसुखदैतवासहालहै॥ जुगलअनन्यअविलंवभजुभावनिधि
नामविधिअविधिविहायकलिकालहै॥१६०८॥ रसनासप्रथमसनेमनामजापकरिप्रवलसनेहउरउठतविचित्रहै॥ सु
धासारस्वादवादविगतविलासजीहअग्रभागपरसपरतसुपवित्रहै॥ रोमरोमशोमशांतसहससुसीरनीरवहतअधीरधी
रहैनहारमित्रहै॥ जुगलअनन्यजनिखोइएजनमजायनामरटलारभवशागरवहित्रहै॥१६०९॥ नामअभिरामचोरचि
तेलागिजातजवतवकछ्ववातनासोहातजातपातहै॥ विरहावेहाललालमिलनसुचाहछिनछिनउमगातप्रीतिपदप
रसातहै॥ शिवाशिवप्राणहनुमतमनमंजुकंजमकरंदमधुपवरनयुगख्यातहै॥ जुगलअनन्यताहीसंगअनुरागरचुपचुज
निरतउतआयुघसिरातहै॥१६१०॥ रामनाममंत्रमोलिमधुरमहानमनमोहकमहालमालमरमगुफीदहै॥०॥॥०॥॥

हं ५

॥श्रीराम॥

सहजसुभायसुचिसुगमउपायअघअखिलअपायकरकारनप्रसीदहै॥ वेदभेदपारतनआगमअतीवपुनिधुनिध्यानधारिजा
मेयोगीजननीहहै॥ जुगलअनन्यप्रानप्रीननहमेशाएकरसअविकाररनामनवलनफीहहै॥ २६११॥ रमेजेहिमाँहिमनमारि
केमुनीशईशाविगतअनीशाजगदीशांहशोहशाके॥ कोटिनअनंगछविअंगअंगपरनिनमातहोतअकथअनूपद्युतिवेशा
के॥ नामीनाममध्यलेशअंतरनपाइअतनीचेजेवहततेईमंदभवमेशाके॥ जुगलअनन्यनवअंककेसमाननामव्यापकवि
चित्रभाँतिपूजितअशेशाके॥ २६१२॥ मानसमहानकरअपरनताकिए॥ मानैनेप्रानपतिप्रीतिपरभीतजाततघातजमजात
नाहिनीकीविधिमांकिए॥ मानस्वानसहससमानसुचिहीनछीनकरतप्रमानभावभानउरआंकिए॥ तपजपयोगनेमप्रेम

८ वि
ते ८

कोनेरेखशेखरहतकाहैंपापपुंजपरपाकिए॥ जुगलअनन्यअनमोलअपमानमनिमानसमहानकरअपरनताकिए॥ २६१३
भएअपमानइष्टमिष्टभोजपाइए॥ तनहूँनीचनिजमध्यअनुमानिनितचित्तवीचसहनसुभावसरसाइए॥ मानप्रदहोय
आपरहिएअमानआनतानसपनेहूंजानिबूझिनहिगाइए॥ वाहवाहजगतजवालकालसममानिदाहदुखरूपउरअंतरप्र

॥नामने॰॥

मानिए॥ जुगलअनन्यचित्तचेतनसम्हारसठभएअपमानइष्टमिष्टभोजपाइए॥ २६१४॥ अपमानऔषधसजीवनसुमा
नहै॥ जनमकहंबकुकलिलकठिनरोगशोगहरहेतवहैंविज्ञगुनख्यानहै॥ अमलशरीरतीनपीनप्रतिछिनहोतछीनदु
र्वासनाइवारहरख्यानहै॥ ॥ ॥॥

॥श्रीराम॥

॥३०८॥

शुकसनकाहिजडभरतरहस्यरहमोसैंजडजीवनकोअगमअमानैहै॥ पुगलअनन्तरुचिउहितविशेषउरअपमानऔषधसु
जीवनसमानहै॥२६१५॥ क्रोधवोधरिपुसवनीचनमैंनीचहै॥ हिंसातिप्रासापलैअनाथसमकरैजीवपीवतैविमुखहेतुमानो
महानीचहै॥ गुरुसंतमित्रसवंधसगेजेतेकोऊकाहूकोनमानेमूढमलिनसकीचहै॥ अविचारसुवनदुवननभुवनजेनितानको
सहायधरिवैसवनवीचहै॥ पुगलअनन्तधन्यसंतजीतिलियोमोजक्रोधवोधरिपुसवनीचनमनीचहै॥२६१६॥ छमाछि
तिछितिपायपरमप्रसादहै॥ सहजसुसीतलसुभावभावचावयुतकोमलकठिनपैनाप्रमादहै॥ चाहकोउकोटिनकलंकपंक
डारैशीशतऊतिलमात्रहूंनउठतफसादहै॥ योगयज्ञसंजमसकलसुभगुनवीजचीजअद्भुतजोपैरहहिएपादहै॥ पुगलअ
नन्तछमाविद्याकिएअपासविनछमाछितिछितिपायपरमप्रसादहै॥२६१७॥ छमासोनआभरनआनअनमोलहै॥ जाको
अंगधारतउधारतअखिलजीवजारतअखोवतमतारतअतालहै॥ सरधाहिहूतैघानभाँति पुनि भाँतितनतीनपीनछीनहोत
अधिकअडोलहै॥ सांचोटकसोशब्दसहीसवभांतितताहिमिलतअजूवखूवअमलअलोलहै॥ पुगलअनन्तवैठिरहिए
समौनमनछमासोनआभरनआनअनमोलहै॥२६१८॥ मेरेरामरसिकसनेहयुनगेहसंगरंगअनुरागवटेअमल
अहागहैं॥ वाहींनहींसुकृतसमूहकृतलोकपुंजगुंजगुनज्ञानध्यानयोगजपजागहीं॥ केवलरहस्यरसरासखाशसीपवर
सुमनविचारधारिएकरसरागहीं॥

महोत ५

॥३०९॥

अंग २

युगलअनन्यजगजाहिरजहरज्वररहितउछाह। अनुदिनअनुरागहीं ॥१६१९॥ जानकीजीवनरूपअधिकअनूपसर्वेशाम
पशोभाशोभावसेव्यसदासांचहै ॥ अखिलजहाननजसजगमगमननमगउमंगउतंगअंगप्रियपांचहै ॥ ताहीमांहमगनहमेशारहा
॥ ॥श्रीराम॥ कीजेमननिरसनिखिलमतअसतकुवाचहै ॥ युगलअनन्यजपुजसहअनूवनामरामरसधामतैलागिहैनआंचहै ॥१६२०
अरेचितचपलनहोतहैअचलछनकोनठोरजातकहालहतसवाहहै ॥ यद्यपिचतुरतउअधिकनदानपनधारतनआव
तभारमतोहिआहहै ॥ संतसतगुरुचिंतामनिसमतेरागुनगावतहमेशातउकरतनयाहहै ॥ युगलअनन्यवारवारविनवत
करजोरिकेकहतत्यागिदीजेफरसाहहै ॥१६२१॥ मनउलटाएमोजमानससुखरहै ॥ श्रुतिसहग्रंथसंतसंवतसरससुचि
सत्यसवरीतिपरनामनेहवरहै ॥ रटविषप्रभावनाविहायंवाहवहुअवसअनूपरंगचरेवरतरहै ॥ छटेछलछितिछकिरहै
रसमतिपतिप्रेमपरमितविनव्यापतअसरहै ॥ युगलअनंतहकीककेकिएविशेषमनउलटाएमोजमानससुखरहै ॥१६२२ ॥नामने०॥
मनहींकेजीतेजगजननजीतिजातहैं ॥ अमितउपायमंत्रयंत्रजपतपव्रतकरतकलेशपेनकाजसरसातहै ॥ वनवनडोलत
नबोलतवचनवरखोलतकठिनगोपआनउरवातहै ॥ उडतगडतनहिअडतकतहुंगतिसुमतिप्रसंसासवविस्वबीच
ख्यातहै ॥ युगलअनन्यसवफोकटधरमएकमनहीकेजीतेजगजननजीतिजातहै ॥१६२३॥ विनामनमारेसवसाधनअसारहै

जैसेअतिअवललगतसेनकोदिपातजोनएकप्रवलसुखदसरदारहै॥जैसेवामविमलवरनअंगअंगतउसुपतिविहीनमहा
मलिनअकारहै॥जैसेसररतनरचितसोविचित्रतरनीरविरहित्तसवविधिंसमछारहै॥जुगलअनन्यचितचेतनविचारनि
जविनामनमोरसेंसाधनअसारहै॥१६२४॥मनकेपकाएवेनिमित्तसवचोटहै॥जेतिकजलूसयोगज्ञानभक्तिभावमेद
सोंचोसिवेंदवेदवीचवनचोटहै तेतिकसकलमनमेंवारहेतुमीतअपनरीतिकछुभासतसोअोटहै॥वडोहगावानको
जकोटिनकलंककरकारनकषायकायखोटनकोखोटहै॥जुगलअनन्यओरनेंविचारचितमनकेपकाएवेनिमित्तसव तोर
चोटहै॥१६२५॥वामाअंगसंगसेसकलगुनज्ञानध्यानधारनासमाधिसवभांतिसेंनशातहै॥जेतोकछुसंचितसनेहसुख
सारप्यारतिनहूंकोखोजकहूंनेकुनाहखातहै॥नैनअैनचेंचलचमकचितनचलहलसमपलपावनहींअचललखातहै
जुगलअनन्यअनुरागजोवहतस्यामसुंदरविचित्रतोविसारवामजातहै॥१६२६॥कौनसुखस्वादसठसजतसरोजउ
रअफुरअयोगहठनिपटकपटरे॥देखतवहारपरस्वतविचारचित्तअधिकउजारमगवारिलखिहटरे॥धोरहरधूम
औवजारगंधरवचित्रव्योमवीचजैसेतैसेजगाअटपटरे॥जुगलअनन्यअतिहारनहारहैनहारीतिपातामेंसपनेहूंना
चपटरे॥१६२७॥ललितललाईलाललोचननिवसिगो॥अधरमधुरलाललालवरविन्दुभाललाल[illegible]सिरपागपैंच
खैचिमनलसिगो॥

॥श्रीराम॥

मेहदीकरनलालजावकरसालपदकंजमंजुलाललखिभलीभांतिग्रसिगो॥ लोकलाजकुलकानसाजऔसमाजसवलाखमु
खदेखेंहेरिअनापासनसिगो॥ युगलअनन्यऔरसभिनपरतकछुललिललाईलाललोचननिवसिगो॥१६१८॥ चीरा
पंचरंगसिरहीरासुरचितचारुकलंगीभु[illegible]कायनीकेनैननिनिहारिए॥ अमलअमोलमंजुमोतिनकोहारप्यारसहितसुधा
रिजैवजौंहरविचारिए॥ मैनमनमोहनसलोनेनैनसोहनमेंअंजनअंजायवारवारवलिहारिए॥ युगलअनन्यवीरीव
दनपवायप्रेमउमगायदसाहामिनीविसारिए॥१६१९॥ स्यामममनोहरअंगनकीदुतिछायरहीचहुंघांछितिमाहीं
मलिगयोरतिनायकहूंनकितेछविकेछविरूपअथाही॥ प्यारेरसेशसिंगारसुधारसपूरननैनसदाचितचाहीं॥ युगमअनन्य
नचारकछूरविजोहिवोएकरच्योगलवांहीं॥१६२०॥ जागुजडजीवपीवनिकटनिहारभिजनिलजनघानजनिदूरिअनुमा
निए॥ भावचावविमलविहीननननजरवीचभासतेंभारहतुपहिचानिए॥ कौनलाहललितललामकेगवाएसठकहोकौनमो
रकोवकिरचजुआनिए॥ युगलअनन्यऐसीवातनेममूरमनमलिननकरतगलानिहानिमानिए॥१६२१॥ एकएकस्वा
सधनरासेसनमिलेपागेरखुतजिहामदगअंतरंगखोलिके॥ सोईअनमोलवस्तुजातअनरपेहेतुचेतुचितचटकचला
कभलेतोलके॥ अपरअनेकअंगअधिकअनूपतेरोसंतसंगसाजिताहिहेराटकटोलिके॥ युगलअनन्यअन्यआसअभिलास

॥श्रीराम॥
॥३९८॥

भासम समस मान हिद धारिए अमोल के ॥२६३२॥ मेरो मीत मालिक अवध पुर भूप है ॥ औरन के औरन हित ताकि हौं न जर नेक
टेक हद असल्ल विवेक रस रूप है ॥ यद्यपि अनेक ईसा विस्व वेद बीच पर मेरे मन मांभ जानि परे तम कूप है ॥ पुगल अनन्य सुचि
सीतल सुधर्म शुभ सील परप्रीति हूजो होय षद वधूप है ॥ चाहे कोउ कहे कछू मन ने मेन मानि अंत मेरो मीत मालिक अवध पुर भू
प है ॥२६३३॥ कठिन कराल कलीकाल काल सम है ॥ तउ नहीं सपने सजत संक अंक पंक सहज अभंक पापप ह अवि लम
है ॥ अवध अखंड अनुराग पुरवास हद सरजू समीप नाम नेह हहर हम है ॥ सरस सरोज सुधासार रस मभमर भावन सहन सं
त गुरु के कहम है ॥ पुगल अनन्य ह सकल सहाय सिर कठिन कराल कलीकाल काल सम है ॥२६३४॥ सतगुरु रूप ह कंज
मंजु मह मोह दल दलन विशेष ताते विमुख अजोग है ॥ वाको सब समस ब करतूति होय कर कारन कलंक कंटकित स
ह सो ग है ॥ तौन नीच संग रस रंग भंग भाव हर करत कषाय कोटि भांति न को रोग है ॥ पुगल अनन्य देह सहित सुप्रीत सम
विसम विहार हार हिय भार भोग है ॥२६३५॥ वाको पाप ताप न को मिति न कहू न पैंगो बसारद हा दिमति मान सोच जानिए
महापाप खानि ताको मुख कहु दुर्गंध पुत्त अंतर मलीन खीन हीन पहिचानिए ॥ अवध किशोर रूप नाम गुन धाम स्वाद सप
ने हूं ताको नहीं सुरति सम्मानिए ॥ पुगल अनन्य गुरु रूप ह अविंदहदंद विमुख अभागी ताके मुख मसी ठानिए ॥२६३६॥

॥३९९॥

॥श्रीराम॥

संतसेवासावधानसरससकलभांतिहूजिए विसेषरीतिधारिसाहूकारकी॥ सुवनमरनेखद्वंदचहूंनधामसोधीपाइयोसुता
व्याहिवरविमलविचारकी॥ दोषरोषधोषहूंनसंतवेषगहोकहूंपावोतवमोजहिव्यमव्यसरकारकी॥ युगलअनन्यअनु
रागकीदशाविचित्रपरमपवित्रसुखसाधनसुमारकी॥२६३७॥ संतसंगसहीसरकारसुखसारहै॥ अचलअमलअति
अकलसकलविधिकलिमलरहितअजितअविकारहै॥ तगुनअतीतभीतरीतअनरीतसीतउषसमभीतरिपुभेदनअ
जारहै॥ नामरूपगुनधाम ~~धाम~~ धारनाविशेषनित्तचित्तअनवद्यमोहहीनगुलजारहै॥ युगलअनन्यऔरवातनतेवने
परसंतसंगसहीसरकारसुखसारहै॥२६३८॥ संतरसवंतकोउकोटिनमेएकहै॥ जिनकेनहोतअभिलाषतीनोंदेवलो
कैबैभवअनेकदुखरूपदेखेकहै॥ मानअपमान ~~बरनाहि~~ बरनाहिंअभिमानभानभासतनसपनेहूंजानिमूढछेकहै॥ लोक
वेदवंधनविसारिभएमुक्तमनप्राकृतरहितअनुरागसुविवेकहै॥ युगलअनन्यपूजनीयपरमेशसमसंतरसवंतकोउको
टिनमेएकहै॥२६३९॥ संतगुनअधिकअथाहअवगाहहै॥ शेषशिवसारदागनेशगुरुगिरापतिगावतहेमशातउपा
वतनथाहहै॥ जिनकोसुजससुचिसरससहरसतभांतसोहाप्रमानसहितउछाहहै॥ लोकवेदविदितविरुदवर
देनसंतसहजसुभावसुखआरनसुराहहै॥ युगलअनन्यजगगाजीवजडमेरेसमतिनकोविशेषसंतवरनपनाहहै॥२६४०॥

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥

॥दे१४॥

चि १

संतसुजानसुसंगतिमेंजिनकीरतिधनधन्यविलासी॥ छूटेवहीपरपंचविकारअपारअसारलनेसुखराशी॥ मोजमहोदधि
माहमगन्नभएगुनगनावहीअभिलासी॥ पूरमअनन्यअतर्कअजूवसुखूवमिलेमहबूवप्रकासी॥ २६४०॥ रसिकसु
संतसुछिमंतधनवंतप्रियप्रेमपरंततमोहतजनजहानके॥ पापोहैप्रकाशसुखवासभावभानुभलकलिलकलंककु
लकतलकुमानके॥ महामोहमदसदछकिउन्मत्तममअनतनवतनविसरापुसिपुजानके॥ पूगलअनन्यनामधामअभि
रामरूचिरहितअसुचिदुचिताईदुखखानके॥ २६४१॥ डोलेंरतउतनहींअचलअखंडचिनचेतनसमाधिव्याधिहीन
अनुरागहीं॥ बोलेवरवचनमधुररसरूपगुनखचनखचापचापचमनहिमागहीं॥ बोलेरसमधुरसनेहसरवतस
मछोलेछलछांहहैंरुअगजगहागहीं॥ खोलेख्यालरहसरसालछविजालजुगजुगलअनन्यजुगवासनाविरागहीं
२६४२॥ रागरोषद्रोहदोषलेतपलपावबोधविशदविचारसारहेतहीनहेखिके॥ अधिकअनूपअनमोलगुनज्ञप
समसमतानआनतीनलोककेहूंपेखिके॥ सहजसोहातसीपसमदिनरातनहींऔरजगवातध्यानभूलिहूनलेखिके
पूगलअनन्यमतिमंदमैंअज्ञानजडसंतसुखखानगुनकहौंकिमिरेखिके॥ २६४४॥ जोसियरामसमीपचहोचित्ततोहि
तसंतसुधासरकीजे॥ मानगुमानभुलायभलीविधिरंकसमानरहेरसपीजे॥ ज्ञानविरागरहसरसारतिरीतिसुनेमुदमेमनभीजे॥

॥दे९२॥

॥श्रीराम॥

हा।

जुग्म अनन्य ई है सत सीष सौं वन सत्य हिए धरि लीजे ॥१६४५॥ लोभ अरु याँचना समान नहीं पापहै ॥ तन हू ते तूल हू ते नीच
नर धन लहैं ते अधिक हलूकपन पाके मध्यतापहै ॥ जेते वडे वडे गुन गौरव प्रसन्नता हि कांति कमनीय कलकीरति कलापहै ॥ ते
तेसव देहि वहु वचन उचार करि आस विनसात नहीं रंच हू विलापहै ॥ जुगल अनन्य सुधा सहज सुतोष गहु लोभ अरु याँचना
समान नहीं पापहै ॥१६४६॥ नारिन से सपने हूँ हाँस औ विलास वैन अैन एक रस वीच भूलि ना विचारिए ॥ मधुर मृदुल प्रिय
वचन श्रवन करि रीझिए न मीत मीच आपनी निहारिए ॥ नैन हूँ निरोध बोध सहित सदैव करि मैन मद परिहरि सुमति सुधा
रिए ॥ जुगल अनन्य निरजर न आगम तन पाप काहू भाँति वाजी जीति के न हारिए ॥१६४७॥ नारि अनारि रमे रमि के अति ही य अ
जारि हजारि समावै ॥ मोह मई मतवारी है साध नकारी घटा घट अंतर छावै ॥ दापम है रहे जित हीं तित काय म प्रीति प्रभा
न छिपावै ॥ जुग्म अनन्य जहान जलूश फनूस मिसाल जरूर जलावै ॥१६४८॥ नारि महा व्यभिचारि विषय पवन पुंज कलंक
दवानल रासी ॥ हे अवला सवला सव तौर सुगौर विगैर गैर गुन गाँसी ॥ जेते महान मुनी प्रभए तिनहूँ को छली भली भाँति
हरासी ॥ जुग्म अनन्य सचेत रहो तव मौज लहो गहो नाम निवासी ॥१६४९॥ रहस रसाल ख्याल नाम मध्य हेरिए ॥ सरस सिं
गार रस राजे रफ रसरूप अमल अनूप भाव भूति सुनि वेरिए ॥ सहज सुभाय चाय चहल पहल नित सख्य शुचि भार कलमा भरूची
वेरिए ॥

॥नामने॰॥

॥श्रीराम॥

॥३०३॥

वात्सल्यविमलविचित्रगुरुअपरखवीचवरहैनअनुरागसुखेटरिए॥ पुगलअनन्यशांतहास्यहूंमकारमाहरहसरसाललाल
नाममध्येहरिए॥१६५०॥नामकोप्रतापतापसमनसहेवहै॥गनिकासिंपापिनीपरीधीपरमेशापहशुकसेसमेतविस्वविदि
तअतेवहै॥महामूरमलिनमलेछमुखएकवारभाखिकेहरामधामहाविलनगैवहै॥मरामरारटतमरालमहामुनिभएवाल्मी
किईशाममसंकानेकैनेवहै॥ पुगलअनन्यविस्वासदृढएकरसनामकोप्रतापतापसमनसहेवहै॥१६५१॥नामकीकृपालता
तेभ्रमतमनासहै॥ रहेनहीपावतप्रपंचपंचवंचमंचमानमदइंचजहांनामभानुभासहै॥ सरससुभावभावभागअनुरागगुन
सुमनसहेवविकसातअनायासहै॥ अखिलअमंगलअगारदुखधारभारअधिकअजारजारमिटनेकुवासहै॥ पुगल
अनन्यओरसाधनसेकौनकामनामकीकृपालतातेभ्रमतमनासहै॥१६५२॥ नामअभिरामसुखधाममेरोमीतहै॥ पा
वनपरेशापरतत्वपरपंचपरपारअविकारशुचिसारजुतजीतहै॥ देवनकोदेवमहादेवमनमाहनिनरमतउदारदिव्यगुन
सिंधुरीतहै॥ तौनजनजानेजाकेजीवनअधारतौनसरससलौनसुधासारनवनीतहै॥ पुगलअनन्यअनुभवसाधिहेसो
मलेनामअभिरामसुखधाममेरोमीतहै॥१६५३॥ नामरसखानप्रानप्रानजीवजानहै॥ सारनकोसारमोहमंदिरवहार
हारहरहनूमानहियहारइतिमानहै॥ कठिनकरालकालकहरकलंककुलकातलकरनहितनभितनकृपानहै॥ ०॥ ॥

॥३०३॥

॥श्रीराम॥

अपारनपारनहरनअपारावपुंजअगुनअधारओअमानिनकोमानहे॥जुगलअनन्यमनमानिलियोभलीभांतिनामरसखान
प्रानप्रानजीवजानहे॥२६५४॥सुद्धसिरोमनिरामसुनामअनामसुधामप्रदायकप्यारो॥तेधनधन्यसदाजगतीतल
हेजिनकेजियजीहअधारो॥तारकतीनतिलोकनकोसोइहेंसवभांतिनहींशकधारो॥जुगमअनन्यछकोरसपीरततछीव
तस्वाहनहीसुखखोरो॥२६५५॥कईकोटिकायरकलंककरतूतिकलिकईकोटिकापरकलंककेकुहासहे॥कईकोटि
भरम[illegible]सिरताजनरहसमकईकोटिग्यानमानशानआनुआसहे॥कईकोटियोगीईशभोगीपुनिकईकोटिग्राटचोटव
चेकईकोटिसुखरासहे॥जुगलअनन्यकईकोटिरामरूपरसपीवततहमेशअलमस्तसांमसांसहे॥२६५६॥विमलवि
वेकमयीविद्यारूपतीरथमेसुबुधविचित्रअवछाततहमेशाहीं॥संतसुखदंतसत्यतीरथतगुनतमविरहितमांभमल
मांजतविश्रासहीं॥योगीजनसहजसमाधिविनावीचविविधिविकारनिजनाशतअशेषहीं॥जुगलअनन्यमनमलिन
जहानजीवजाहिरसुतीर्थमध्यधोयेअघदेशाहीं॥२६५७॥छितिपतिपरमप्रवीनअसीधारतीर्थमध्यमनअमलकर
तअनयासहीं॥ग्यानमानतीरथनमध्यधनवानजनपापतापसापसवकेरसीव्रआसहीं॥लाजसुखसाजशुचिपतिव्र
तधर्मतीर्थवीचअवअखिलसुधाएवामखासहीं॥जुगलअनन्यनामनेहीनामप्रेमतीर्थधोवतअनंतअपराधनहुरासहीं॥२६५८॥

व्याधि
४

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥
॥३१४॥

ज्ञानतें है जननी सम वाम तथा पर दाम महा विष व्याला॥ मानतें हैं सब विस्व विभव अति तुच्छ महा दुखरूप कराला॥ मानतें है
सपने में नहीं गुन दोष उपाधि में जानि जवाला॥ युगल अनन्य सदा परमानत नाम सनेह सिपारसु लाला॥ १६५९॥ सीय
वर प्रवर प्रताप सें सहज जीत धुज अति अमल अनूप फहरत हैं॥ महामोह सेन सत सहस असंख सब शंकित है मग्राम ध्वाहि
पहरत हैं॥ सबल सिकोहदार माया मन मोहनी हूं देखि के प्रभाव नाम गुन कहरत हैं॥ युगल अनन्य नाम अभिराम
प्रीति सजि दीजेत जिलोक शोक मोह दवरसत हैं॥ १६६०॥ जेते सुख संपति समाज साज राज रस सरस उछाह चाह बिन
अभिलाखिए॥ तेते सब युगल वरन वरने प्रजपि जीह आना यास शत भांतिन से चाखिए॥ काहरीति संकट विकट न
निकट होत निपट प्रमोद मोद श्रुति शान्त साखिए॥ युगल अनन्य निशि दिन नाम नेह करि अपर वरन वर वदन न भाखि
ए॥ १६६१॥ जैसे बुन युक्त दार अन्न हूं अनल दहि पट अवलोके नहीं मामक सार समझै है॥ वस्तुते विचार किए नाम नेह वा
ने कर्म तें से ही अर्थ कर्म कर हित रस में है॥ युगल अनन्य जानकी जू नाम भाव विना वैदिक करम सब सद समस मझै है॥
१६६२॥ सुभग सरोज सम स्वच्छ श्रुचि सुरभित सरजू पुलिन प्रिय प्रेम प्रद पेखिए॥ तरल तरंग रस राग अनुराग संग उमं
गि उमंगि दगा हिल हूं तें देखिए॥ सुधासार मंजुल मधुर मकरंद सन चित मोद रूप नीर पीर तरले खिए॥ युगल अनन्य अनुपम नाम नेह उर
भली भांति सजिय विरखता विशेखिए॥ १६६३॥

राम नाम महा मोद धाम अभिराम गुन
रहित अनेक सुभ साधन पथ काम है॥ ३

॥श्रीराम॥
॥३१४॥

मिलो कवक मल अमल पद पानि वर वदन वनज स्याम घन देह काम है॥ पलक निमेष छिन वियोग रोग शोग सम होय निज वित्त
सम न लोभ प्रिय नाम है॥ क्रोध क्रूर चित्त नरतित रहित अहित परद्वेष अनुराग विना वहकत वाम है॥ युगल अनन्य मोह माधुरी मनोज
मई मान सह मेश आसवाम अभिराम है॥ २६६४॥ भूप सिरताज महाराज रघुराज जुग निखिल समाज को कहावों इहमई है॥
मानो नहीं ईश अवतार अवतारी कोउ केवल कृपाल कोशलेश औरर है है॥ साँची कहों वातन असत्यताको छीट कछु तुच्छ स
व विश्ववास मानदिक असइ है॥ युगल अनन्य सीतापति से विमुख जो नते तान सठ सूकर सो वानहूं सेवइ है॥ २६६५॥ जानकी जीवन
विन अपर अगुन गुन रूप सव संग मेरो सहज सुभाव रुचि॥ होत न कहांपि कियर कलित उपाय कहूं कहों साँची वात सत समास्वच्छ
धाम शुचि॥ रसिक नरेश के रिझाइवे निमित्त नित्त अमित खिपाल सोई इम व्यवहार उचि॥ युगल अनन्य सव तोर वोर मति गतित
उ सिया राम के शरन भव वीज मुचि॥ २६६६॥ लौकिक वैदिक वैन सही चित्त चैन न नैन सुनै न निहारी॥ संत सदा परमारथ प्रेम ल
प्रलीन करें तेहि जीव विचारी॥ पावन प्रेम पिलाय महारस प्यास हरे जग जाल निकारी॥ युगम अनन्य सदा सत संगति कीजिए भा
व समेति सुधारी॥ २६६७॥ नाम वतावन हार जहान में संतसे वायक हूं न हिदू जो॥ साफ सोहावन शीश सजे हिय भाव भजे क
लकुंजन कू जो॥ प्रीतम प्रीति प्रकाश करें मन मान हरे हिय हाय अदू जो॥ युगम अनन्य विकार असार मली विधि से अव संचित भू जो॥ ६८॥

॥श्रीराम॥
॥३१५॥

रामसुनामरमेरमिहैरससागरमेंभऊअपाहअजायव॥रागअरागहिउअनुभवअनुरागविहारवहारसुसायव॥कालक
रालविहालजहांतेंहआपहींआपसेंहियेगेगायव॥युगमअनन्यमिलेतवमौजजभीसुचिसंतसमागमनायव॥२६६९॥लोकि
कवैदिकवैनसहीचितचैनसुनामविहीननदायक॥संतसमागमस्वच्छकियेरस[illegible]भावअनन्यमिलेसुखदायक॥प्रीतिप्रतीतिप
गरहितयहरसायनरामकृपालसहायक॥युगमअनन्यसनातनधाममेंवासकरेतजिलोकअलायक॥२६७०॥दायमदागदग्योदिलमेंद
शदाहकसंगसहायपेपाई॥खैंचतखामविचाररतुम्हेसठज्योंपसुपारवरप्रेतवनाई॥नाहकतेंउरम्हेंदनमेंजडवस्तुविचित्रविलाशभुलाई
युगमअनन्यभजेनिजनामहींनेहनिशानसहेरववजाई॥२६७१॥उन्मुनिभावमनमिलितप्रमोदहै॥जेतहठयोगराजयोगजपयो
गजपतपज्ञानसाधनसमसफलयाहीमेंविनोदहै॥श्रुतिसुस्मृतिसंतशास्त्रसतमतसवप्रवलप्रकारसारसवलसरोदहै॥अचल
अखंडचितलीनहोयजवतवमौजहोजवीजवैठिपियगोदहै॥युगलअनन्यनामरटनविहीननहिउन्मुनिभावमनमिलितप्रमो
दहै॥२६७२॥पतिव्रतपरमधरमसिरताजहै॥सुकृतसमूहशुचिसरलसुजानपनसुधनसुभगगननगनमहाराजहै॥जेतेधनध
न्यमानमन्यअगनगन्यश्रुतिसंवतितितकेसवयाहीसमाजहै॥जाकीमतिएकरसनामसुमिरनवीचताहीकोमिलनपतिव्रतसाम
राजहै॥अमलअनूपरूपसहितसनेहसंगपतिव्रतपरमधरमसिरताजहै॥२६७३॥पतिव्रतप्रवरउपायसुखसारहै॥॥१०॥

॥श्रीराम॥
॥३१५॥

लक्ष्य
४

की२

॥श्रीराम॥

५भाग

वेगहीं रिझाय लेत अगम अमोल लला ललित रसाल स्रुति विहित विचार है॥ अनायास चित मन मतिहूं सिमिटि एकठौर होत जोग
जगमगत अपार है॥ जानकीजी वनहि अमय अनुपम गुन सहज उदित उर रहित विकार है॥ युगल अनन्य व्यभिचारनी स्वभाव
तजु पतिव्रत प्रवर उपाय सुखसार है॥ २६७४॥ पतिव्रत रहस रसिक को उजानि है॥ जिनके नम्रपन स्वभावहूं सहज कहुं अपर रमन म
न भूलेहूं न आनि है॥ २६ अनकूल शील सहस पियूष सम प्रिय प्रति कालहू नवीन लाड मानि है॥ सीयरघुवीर गुन श्रवन मनन
नित्त अखिल अनीश ईश भावैं मनि है॥ युगल अनन्यगति पांवर न पाय शके पतिव्रत रहस रसिक कों जानि है॥ २६७५॥ अहो अनु
राग भाग जाके पति प्रेम है॥ सोई पूजनीय प्रिय पावन करत तन अतन मतन मद मथन सेदम है॥ जिनके वदन सुखसदन वनज व
रवारक विलोकि कोटि भांति पागछेम है॥ महामोद मंदिर मवासी संत सोई सत सुरति सोहाग झलक तडुति हेम है॥ युगल अनन्य
वार वार वंदनीय मम ~~अहो~~ अहो अनुराग भाग जाके पति प्रेम है॥ २६७६॥ प्रथम पुनीत नीर मज्जन सुचीर तन दुतिय तति पहार
ललित विचित्र है॥ तिलक तुरीय नैन आंजन कुंडल चार नासा मनि सुमन सुदाम छवि विचित्र है॥ स्यामजू के नूपुर नवल झन
कार अंग सुरभि अजू व चरचन सुपवित्र है॥ युगल अनन्य कटि किंकिनी नवल कर कंकन चतुरतादि षोंडस सुमित्र है॥ २६७७
सोरह भांति सिंगार सजे सिय स्याम सरोज लिए कर माहीं॥ बाल सुचंचल चारु चलाय हरे जिय प्रेमिन के पल माहीं॥ कोटिन चंद

७५

॥नामनें०॥

प्रकासरतीपतिछायलहोतलखेपरछांहीं ॥ पुगमअननमउमंगवटेउरध्यावतगावतरूपसराही ॥ २६७८ ॥ कोवरनेछविना
गरकीसुखसागरआगररूपरंगीलो ॥ पलहींपलमेंप्रतिभाकछआनहींनितप्रकाशतहैअजबीलो ॥ एककटाछनमेंवहुरंग
देखावतनेहिनहीपछबीलो ॥ पुगमअननमनजायकहूंचितचंचलथकवतहांअटकीलो ॥ २६७९ ॥ वाघराभूषनहूपनकेविन
सुंदरस्वच्छसुभायसुहावन ॥ वेनीविचित्रसुसीशलसैश्रुतिनाशिकाप्रेमप्रमोदउछाहन ॥ पातसुकंठसुरागसिरोरुहसोर
भसंगसहैवसुभावन ॥ कंकनकिंकिनिमालमनोहरपुगमअननम्यहिएहुलसावन ॥ २६८० ॥ सुखनसंतोषसमसुन्योकोऊलो
केमें ॥ जोकेपाएपरमप्रकाशआसतोमतमनाशअभिलासपरिपूरनअशोकेमें ॥ कामनाकषायकलिकहरकलंकअंकमिट
तमहाहिकुवीसनाअरोकेमें ॥ सीयवरसहजस्वरूपसेंअभेदमतसतमनहीजिएरंगीनेनेहनोकेमें ॥ पुगलअननसवसाध
नसुफलसुभसुखनसंतोषसमसुन्योकोउलोकमें ॥ २६८१ ॥ लोभनिधिलहरअपारदुखधारहै ॥ जोमेभएमगननेरमअोसु
रसासवजगतजनेशजहांतकव्यवहारहै ॥ प्रथमलगतलछुवावनसमानपुनिवादतअमानमाननाशानअजारहै ॥ अमितउपायक
रिहोतनमिटतिसठजोलोसुचितोषतरवारकीनमारहै ॥ पुगलअननवेहवितविशेषतरलोभनिधिलहरअपारदुखधारहै
२६८२ ॥ सअंतपसंमतसुचारिमुक्तिद्वारहै ॥ प्रथमसहजसुखप्रदसमएकरसविश्रामविहारहरहेतुअविकारहै ॥ द्वितियरतगुन

॥ श्रीराम॥

तारतोडनसवलसहतोषपोषपरमप्रकाशशुचिसारहै॥ तीजोभवविभवविलासमातुच्छकरवरविशदविचारसंतजनहिएहारहै॥ पुगलअनन्यबोध्योसंतसंगरंगनिधिसहगंधपसंवतसुचारिमुक्तिद्वारहै॥ १६८३॥ माषिकउपाधितामेचारिभागजानिए॥ एकभागत्यागहिलहैनवालाजोनजडजहरजलसहानिश्रवनसेमानिए॥ एकभागवैठिकेएकांतमांभशांतहोयभ्रांतविरहिततोतेश्रमनपछानिए॥ रहेभागपुगलप्रवलताकेहेतुनितचितसंतसंगमेलगायभ्रमभानिए॥ पुगलअनन्यरहअमलउपायतीनमाषिकउपाधितामेचारिभागजानिए॥ १६८४॥ चित्तकोजोरोकिवेकोअमलउपायचारिसारसंतसंगमांभकियोनिर्धारहै॥ मलिनकुवासनानिरोधनिजवीजजतजहरजलशानगजाहिरविकारहै॥ संतसंगवंधनविमोचनविचित्रवरद्धितिपउपप्रसर्वोपरअधारहै॥ तीसरोउपायउपनिषत्तविचारसहगंधपंथप्रेमछेमप्रहरसधारहै पुगलअनन्यप्रानायामसावधानदृढजानिएतुरीययोगपाथिनप्रकारहै॥ १६८५॥ राजिवलोचनरामसुनामसनेहविहीनपशूगतपूछैं॥ साधनसिद्धसभीसुखसंपतिवस्तुविवेकविनाछलछूछैं॥ लालचआगलगीजेहिकेजियताकेसुचिनौंरंगमुभैछैं॥ पुगमअनन्यअयोगसभोगसोईसवभांतिननेअतितूछैं॥ १६८६॥ रामनामरटनसुपंथमेअनेकरिंहूरखवनजसुवनईशसमभे॥ उदितमुदितदिननाथनिसिनाथपाथनाथरितुनाथनामरमतसुरमभे॥ अंवरसरितशिंधुछितिहूंसमीरनीनामसुधिसुमिरिसवलसुखसमभे

॥ नामने०॥

युगल अनन्य बर बरन भरन भाव आवरन जीव पीव प्रेम को सनमभे ॥१६८७॥ त्यागि तारतगुन अगुन नाम ध्याइए ॥ मदन मलेछ
मद मोह द्रोह कोह कुलकान लबिशेष करि स्वच्छ छवि छाइए ॥ प्रीति प्रतिकाश चहूं पास सखि स्वास सत वास नासु खेभर बिरह स-
रमाइए ॥ अंतर निरंतर लगाय रसरूप रजु रिझु भौंक शोग बिन शी जिय मुलाइए ॥ युगल अनन्य अनुभव अनुराग सजि त्यागि
तारतगुन अगुन नाम ध्याइए ॥१६८८॥ एक रस रटत रहत राम नाम के ॥ योग यज्ञ जप तप अलप है वसहु ति हाय मन अंतत तमग्र
समम अकाम के ॥ ब्रह्म लोक शोक पुन जाहि रमेशा अंत लोक न रहत मीत मानो मत्र राम के ॥ गिरिजेश वह्न भवरन अनुराग सजि
पाइए अमर अनव घधाम राम के ॥ युगल अनैखे फरखत रानं चमहीं एक रस रटत रहत राम नाम के ॥१६८९॥ राम नाम मानि
कमूल कहुति हाम काम को निशसानु भानु तारके शतुच्छ है ॥ पल पल पर प्रतिकाश भाश भाव हर अमर अजर कर निकर मुमु-
च्छ है ॥ रहसर सालनेह निधी रषिकेश प्रिय हर हिए हरन रहित रसरुच्छ है ॥ युगल अनन्य वरने न परमेश सम सर सरमन
विना कली काल कुच्छ है ॥१६९०॥ जेते वेद विहित सु मंत्र पंत्र नाम निधि तेते सब युगल वरन अंश अंश अहीं ॥ प्रनव परत्वशु-
विशेष हं सम तत्व सहित तगुन पर एक नाम हंसहीं ॥ पावन प्रबल बल अबल कृपाल भ्रम शाल काल कहर कदन नाम सं-
सहीं ॥ युगल अनन्य राम नाम नेह हीन नर रावन भये पावन समान कलि कंसहीं ॥१६९१॥ सुधा सत सह ससमान रस खान नाम
राम अभिराम इह कथन न योग है ॥

॥श्रीराम॥

पीवतपियूषस्वर्गपतिकोउकालपायपतितअजितकुलकरनसरोगहै॥ विषमविनिंद्यविषवंधुपुनिशशीसंगसहितकलं
कतंकग्रसितवियोगहै॥ जुगलअनन्यनामअमलअखंडचंडचूरनप्रचंडकालकठिनकुशोगहै॥१६२१॥ रामनामपरकोउअ
परअजाननरखरमतिमलिननिरूपिहैनसांचहै॥ प्रवलप्रमानजामेंमहामुनिराजऋषिराजसिरताजशिवशेशसततपांचहै
जुगनजुगनप्रतिप्रवलप्रतापतापकहरकलामहामहमननराचहै॥ जुगलअनन्यरामवरनवियोगयुतशोगसतसहितसपूजि
तपिसाचहै॥१६२३॥ नाममहानिधिमंत्रअलौकिकप्रेमविहीनलखैनरपांवर॥ जोहिजेयोगनहींतिनकोमुखपापपहारल
गेअतितावर॥ वाकेसमाननआननजानअलायकहैकोउभूरुषपावर॥ जुग्मअनन्यअसंख्यअपूतकपूतउसीपरनित्तनि
छावर॥१६२४॥ शेषशिरवहुभूवरनउनिंध्यानधरिधावनअघरधरडुरततडुरूस्तहै॥ अगमअपाहअगाहअमरअमाह
माहमेहरकहरविननित्तहीनिशास्तहै॥ कुपथकुचालकलिकलिलकरालकालकशातननताहिजाहिनाममगकस्तहै जुग
लअनन्यनेहनिरंतरफीकनामआठजामभूमतअप्रेमनमस्तहै॥१६२५॥ नाहकनिचोलनिजनेहकोनघाननतनकरत
मलीनहीनमतिआनरतिसें॥ रचतहजारपैंचपचतमचतमीचशीशमेंनचतनतउसजतनसतिसें॥ हलतनमनमगवामतेवि
चाहवनअलतकानसुखस्वांससहामअतिसें॥ जुगलअनन्यमूढमलिनविवेकविनवाकिफनहोतरामनामकीसुरतिसें॥१६२६॥

॥नामनें०॥

॥श्रीराम॥
॥३१८॥

प्रेमप्रवाहवहेदृगमेंमनमोहअमंदपगेनिजनाम॥ आकस्मातकपाटखुलेनतुलेसुखओरभलेमवभोम॥ बोधविधानप्रधानपर
रतिपावतहैसवसंकनयामें॥ पुन्यअनन्नलहेअनयासप्रकाशनिवाससियावरधामें॥३६९७॥ अनलअन्नपरविप्रवरप्रकाश
शोभसीतलसुवाससहस्वच्छअनुमानिए॥ तीनहूंतेपीनविस्वपलअरभीनषीनहीनहिवहानवजनमपहिचानिए॥ सो
ईशिवमानसरहंसअवतंसवरवरनकेअंसस्मृतिसाखिउरआनिए॥ पुन्यलअनन्यनामअवनमननकरिअनायासवासनार
हितभयोजानिए॥३६९८॥ लोकशोकवोककुलकतलकरनहितजातवेदवीजबोधविरतिविचारिए॥ पारसपरमपनपोषनप्र
धानपच्छस्वच्छतासदनश्रमसोषननिहारिए॥ जाहिरजहानवेदविमलवखानमानमधुरमहानरसखानधीयधारिए॥ पुन्य
अनन्यसुधारनेप्रासवेदसपरमेशअवधेशनामपरआपवारिए॥३६९९॥ राजतरहस्यारससरीतिरागरूपरंगराहतरशोभाव
रवरनविचित्रमें॥ सहजसुभावचिन्तचाववर्धनवलअवलसवलकरकारनपवित्रमें अखिलसमर्थअर्थवार्थव्यंगवा
नविनविविधिविलासविलसतनामभित्रमें॥ पुन्यलअनन्यअनमोललोललालसमनिमोहनमहानमहवूवशाखिमित्रमें
३७००॥ हायमोहमदिरापिवायसवजीवगुननामभुलवायकलीकालहेतहालहै॥ कठिनकुमारगकेबारंबारंकितनामचल
नसिखावतसुगमपथसालहै॥ जौननरनीचमलमीचकीचसानेचित्तहोतहैहरषतिन्हेंमिलेमनिमालहै॥ पुन्यलअनन्य
पेखिपावनरहितरीतिलियोरामनामओटत्यागिजगजालहै॥३७०१॥

॥३१८॥

भीतरभावनाधारिसुपूजनकीजिएसाजिसुसत्वसमाजन॥प्रीतिप्रतीतिप्रनयग्याननामसुशांतिसनेहउपासनाराजन॥नीर
म मनोहरधूपसुदीपसुफूलसुनाइअनूवनिराजन॥युगलअनन्यविसारिउपाधिगहेगुनदिव्यरहस्यसुभाजन॥२७०२॥रामनाम
अखिलजहाननजगपतिहेतुसेतुभवसिंधुनेहनवनिकेतहै॥सरससपेतकाहितअविहितहियमहामुदमलिनकुरेतगतेहेतहै
काइककेलेसालेसालेतननिहालकरकारनकृतत्रगुनगाहकसचेतहै॥युगलअनन्यअवलोकिएसुनैननिजमेरेसमउसर
कोकारकसुखेतहै॥२७०३॥रामरूपरंजितरकारतेरहितरेफहेरफेररंचकनयामैंमनलाइए॥धाममयअकारहस्वदीरघसु
दिव्यगुनपरमप्रकाशप्रेमरटेपरपाइए॥मधुरमकारमध्यलीलालसीलालनित्तरासऔविलासमोहमानसमैंछाइए॥युग
लअनन्यनामविमलविहारविंदुकारननिखिलवपुवरनसुध्याइए॥२७०४॥हरहीगिरहसमवरनविचित्रवरनामअभिराम
रतिरंगसरसायगो॥रटनविहीननहिकढतअनूपरंगसंतसंगवीचइहमेहदरसायगो॥तेजतेगततरनिजनिकरभएतेकहा
जौलौंनहीवेगसरसाईपरसायगो॥युगलअनन्यसवजानतपरेशानामरटनरहितकहूंमोदवरसायगो॥२७०५॥नामकेस
मानपरमेशानहीआनहै॥परिख्यप्रतछ्छपरतापप्रतिकासप्रेमथोरेहीमेरीझतनखीझतसुजानहै॥अधिकाररंचकनकरत
विचारसुखरूपसरकारजानेहरहनुमानहै॥नामीतेपरत्वऔरकहेतुमकौनकोहैसंतसिरताजकोउनामनपप्रानहै॥युगल
सो

अनन्यजनिमूलिये भरमभेदनामकेसमानपरमेशानहीआनहै ॥ १७०६ ॥ नेहवाननरनकीसंगतिसदैवकरिउहैहोतजोन
सुखस्वादसोअवैनहै ॥ चरचाचमनचारफूलतसुफूलप्रियनामअनकूलगनरूपफलऐनहै ॥ पुलकप्रवाहद्वगरसअवगाह
चिनचरितसुचाहअनुपमगतमैनहै ॥ पगलअनन्यअविचलमोदएकरसअरसरहितरहेउरइनैरेनहै ॥ १७०७ ॥ नेही
नरमिलनमहालमनमानिए ॥ रिद्धिसिद्धिसंपतिसमाजराजरसभोगरोगतेविहीनसबसुलभपछानिए ॥ योगजपत
पफलफूलहूंसुगममीतमूलविनाविघाहूंसुगमअनुमानिए ॥ नेमधर्मतीरथव्रतादिककीकौनकहेज्ञानध्यानधारनादि
सुलभसुजानिए ॥ पगलअनन्यसियरामकीकृपातेयोगनेहीनरमिलनमहालमनमानिए ॥ १७०८ ॥ अहोनेहमिरतसु
जनकबमेटिहै ॥ जिनकेमिलापअंकमालेकेकिएसेंकोटिकठिनकलापतापसबसमनेटिहै ॥ अमलअजूबएवरस
महकूबछानिहरवसहकूबहरिशंकपंकमेटिहै ॥ अगनसगनपारहेमासुखसारनिजनवलानिरूपिशोकसंसेहूंमिमटिहै
पगलअनन्यबडभागीउहरेजबरअहोनेहमिरतसुजनकबमेटिहै ॥ १७०९ ॥ नेहलगेमेरेनितनेहीनिजनामसे ॥ वि
सरेनकहूंकापकहरकलेशकोटिभएपरवेटपलपलसुखधामसें ॥ नानानामीतरककरककोफरककरिजानिरज
हैंतेतुच्छसुच्छअभिरामसें ॥ पगलअनन्यऔरकारजनमोहिकछुनेहलगेमेरेनितनेहीनिजनामसें ॥ १७१० ॥

१ ॥ आसखासखासाहबसबलरघुराजधारिनानाप्रीतिरीसानन्यागिहैंकुदामसें ॥ ॥
ति

रघुवरराजसोईजोनहिंनहुतिवंतश्यामगौरअभिरामरामरसिकनिहारिहैं॥मधुरमनोजमनमोहनमुखारविंदमंदमुस
क्यानिपरतनधनवारिहैं॥बालचषकनमुहमाललखिलोचननिसाचनसमूहजगजालजडजारिहैं॥जुगलअनन्यअ
नुरागिनसुसंगसजिसकलप्रकारशोकनामरूपधारिहैं॥१७११॥सीतारामसरससनेहीसानकूलमोदमंगलसुमूलजौ
नवासरसुयोगहै॥तौनदिननहींतेशोगरोगनवियोगभवभोगनकोहानप्रानप्रीतमसुभोगहै॥सुकृतसमूहनकोउदितमु
दितताहिदिनसबअरसहायहवसत्रयोगहै॥जुगलअनन्यकोकिकेलपनकह्योजायहियाहरषायमानोपायोसिद्धियोगहै
१७१२॥मेरेसमभाग्यमानदूसरोनजानिए॥जातेतीनोगुनसेंरहितसंतदिव्यदुतिसहितपधारेभौनमहामोदमानिए॥
प्राणपरिवारप्यारोपरमपदार्थनवारिएपदुमपदऊपरप्रमानिए॥चारिफलहूकोफलअमलअमोललालललितरसाल
वाहीओरपहिचानिए॥जुगलअनन्यपायोमनाहिनबडाईकछुमेरेसमभाग्यमानदूसरोनजानिए॥१७१३॥हायहमहि
रसहरसहुवासवीचवहेवहुवासरविवेकतेविहीनहीं॥विमलविलासवोधवैभवरसेसरससुग्यनसुधेपासरभयोनहींमीनहीं॥
वारवारदुरितदवारसेंदहतदिनदिनदिननाहकअनूपछविछीनहीं॥जुगलअनन्यनामरस्योनहींनेहसाधवकेपाव
दुवाददवीदमोदहीनहीं॥१७१४॥सदनसमाजसुखसन्बंधबंधुबहुवरनपुनीतसुचिआश्रमहुत्यागिहै॥रच्योवरखव

॥श्रीराम॥

॥३१०॥

लोकरीझिवेनिमित्तरतरितअनरितनवरत्तलाजलागिहै॥ महामहामलिनकुदाननपजोनअन्नताहिकोअसनकीप्रेत
पनपागिहै॥ युगलअनन्यकौनकौनकहैंहालनिजहाय चित्तवीचजौनदिनदिनदागिहै॥ मेरेसमअधमअलायककुचाल
कोउकालनहीभयोयोकृपालजानिलीजिए॥ संतसंगसीषसुनिगुनिपुनिपुनिउरवहुरिअसममगमध्यजायजीजिए॥
चाहतहैंनाथरघुनाथजूअनाथइहशासनअनेकभांतियथायोगदीजिए॥ युगलअनन्यअवलंवएकटेकउरआपहीहे
मोपेभावेरीझिएकैखीजिए॥ २७१६॥ पापीतोअनेकएकएकनसेंएकसभीमेरेरोमरोमनपैवारेसवजातहैं॥ कहाकलिके
६७ लखतकपटकोलिलकोहमेरीसमताहिरंचरतीहूनपातहै॥ कीजिएविचारसरकारअपचारममसारहारिसुमतिविलोकत
परातहै॥ युगलअनन्यनीकेजानिअपनावोमोंसंकटहिवावोनउहिपहरपातहै॥ २७१७॥ जानकीजीवनजूकोरजायस
सीसधरेसवभांतिउछाहहै॥ याकेसमाननसाधनस्वच्छसुनीकहुंकानसुसंतसलाहहै॥ आपनायपभजोनितहीरघुराय ॥३१०॥
वरायविश्रामउमाहहै॥ युगलअनन्यसियावरकेपदपंकजपासहमेशानिवाहहै॥ २७१८॥ प्रातसमेसुंदरसरससुकुमारमार
मोहनमहीपकेकुमारहींकोध्याइए॥ मधुरमुखारविंदपूरनमरंदमोदमंदमुसक्यानसुधाचखनपिवाइए॥ मंजुलमनोहर
मनोजमेत्रमोरसमवचनविचित्रचित्तश्रवनसुनाइए॥ युगलअनन्यनाअरनाईहियदंतपांतिसुछविछटानहीयअंतरसमाइए॥
२७१९॥

ललितलहरहास्यअमलअमोलगोलकलितकपोलप्रातसुमिरनकीजिए॥ चिबुकविचित्रचमकनचारुबिंदुइंदुदेखिरोमरोम
मेंप्रेमोहरसपीजिए॥ बिसैबिसालभालललितरसाललेखितिलकअनूपद्युतिहेरिहीयभीजिए॥ युगलअनन्यअनुरागबागबैठि
नितवदनविलासरसरासलखिलीजिए॥ १७२०॥ नाजुकनिकाईनेहनवलनवीनीनिजनासिकानेरसासुजससुचषनिहारिए
श्रवनसोहावनसमेतस्वच्छमहामनिकलितविलोलकलकुंडलविहारिए॥ जुलुफजंजीरहारभौंजीरसराजधारचारचित्त
चमकचोरावनसुधारिए॥ युगलअनन्यजानकीशछविसिंधुमांझमीनकेसमाननित्तहोयभाववधारिए॥ १७२१॥ प्रातसमेपा
वनपरेशप्रेमप्रदनामरामअभिरामसमोहधामजपुजीयसें॥ अमितअपारअघहारनद्वारभारमवनभंडारमलेमस्महोयही
यसें॥ कोटिनसहस्रनामनारायनआदिसमकहेंशिवशेषतोनधारध्यानधीयसें॥ युगलअनन्यऔननामनेहयुक्तनित्त
जपतहमेशाहोईसांचेसीयपीयसें॥ १७२२॥ प्रातसमेअधिकउदारकंजमंजुतरसुकरअजूबछविध्यावनसुयोगहै॥
पहुचीकनकमनिजटितकरकंकनअंगुरिनमध्यमनिमुद्रिकासुयोगहै॥ मेंहदीमधुररंगरंजितललिततलचित्तसुमिरत
जनसहजअशोगहै॥ युगलअनन्यवरवरददयालदीनदेखतनिहालकरकरनअरोगहै॥ १७२३॥ जौनकरकमलअमल
बलपुंजराजसहसिसुमध्यधनुतोरयोगतशोकहीं॥ रूपरसरासिसीयसुकरग्रहनकरिविपुलविनोददिएरावअरुरंकहीं॥

नेहीजनभजनविरोधीनिसिचरनीचनीरसनिखिलनाशकिएपेखिपंकहीं॥ युगलअनन्यकेहमेशसाईहसतशुभसरसअवारविधि
॥श्रीराम॥ लिखोभालअंकहीं॥ १७२४॥ प्रातहीपरमप्रियपदअरविंदनित्तचित्तसेंसुमिरिसुखस्वादहरसायगो॥ कोमलकमलदलहूंतेको
॥३१५॥ टिग्गुनकांतिअंगुरीनखनअनुपमछविछायगो॥ स्वस्तिकसरोजविंदुबिमलमपंकआदिअंकपदतलहीपलापहरसायगो
युगलअनन्यपदपंकजपरागशीशधारतअवस्यमोदमानससमायगो॥ १७२५॥ जाहिहितयोगीजनयत्तनरचतमनप्रानहूं ग ५
कष्टतअपचततहिनरातहे॥ पावनकवहुकरनेशकृपाकोरहीतेअनायासअखिलअमेंलसिरातहे॥ जहांजोतिजगमगरही
जगवीचताकीरंचकविभासमेंपेलिरहीकरामातहे॥ युगलअनन्यजाकेसुरजपरसकिएगोतममुनीशवामतरीदुखव्रातहे
१७२६॥ प्रातसमेसहसमोहावनीसरसद्युतिपूरितसमूहरतिवारवारधारिए॥ इंद्रनीलमनिनीलकंजघनदूवशुभअसि
तमयूरकंठस्यामतानभाइए॥ महामहामनिनजडितआभरनअनुरागकेभरननखसिखचित्तलाइए॥ युगलअनन्यमन
मननकरततित्तकालवालभीतिसपनेहूंनचित्ताइए॥ १७२७॥ चूरीचारुचमककरनवीचविलशातवसतहमेशलाललोचन
रसालमें॥ मधुरमरोरहारमुद्रिकामनोजमदमथनअमलअंगुरिनछविजालमें॥ वाजूबंदविसदविचित्रवरबांकुगीव ॥३१५॥
भूषनअनूपरसरूपमनिमालमें॥ युगलअनन्यकटिकिंकिनीझमकघारदेएतनहीआहिएहरेहरहालमें॥ १७२८॥

॥श्रीराम॥

विछुवाविहारहारहिएपहिरायेहत्तेलत्तमनमोलवरहससुनायेके॥कंकनकलितकरकंजमंजुमकरंदपूरनजलजअनुरा
गरसहायके॥श्रवनसोहावनसमीपआभरननवमनिनजटितजियेहत्तैहेजिवायेके॥युगलअनन्यशीशफूलअनकूल
रह्योप्रीतमसनेहहींइकुलक्षविधायेके॥१७२९॥रसिकासिरोमनिसरससिरताजतरअधिकझलकहारजेवहारजोहिए
वांकीविलसनिजुलफनिनिजनेहनिधिमुरभिसमूहसैंसहितदृगमोहिए॥मानमानमधुरमिजाजचितवनचखिखरीखिरूचि
राहतसुचिंतनिनितसोहिए॥युगलअनन्यलाललसितवचनवरस्रवनसुनतसुखआगमअरोहिए॥१७३०॥कुंडलकलि
तकाननजगमगजोतिजियजागतजहानभानरंडकोटिवारिए॥मधुररसालमालमोतिनअजूवउरहेरतहिरसेहेचखलहू
नधारिए॥ऐंडदारअलकझलकमुखमाहतावमिलितअनूपआववलितसुधारिए॥युगलअनन्यअंगअंगअनुरागसीमसह
जसलोननिरखतदुखटारिए॥१७३१॥भ्राजतसुसीसलालपागरहुलालआलीमोतिनकीकलंगीसुमनिनरचाएहै॥आभा
अनुरागअतिअमलअदागकीधौंअरुनकिरनसाररुचिरखचाएहैं॥वांकीपेंचपरमविचित्रत्रैंचिचित्तलेतहत्तमोहमधुरन ॥नामने०॥
रंचसकुचाएहैं॥युगलअनन्यप्यारीकीछविकोविलोकिराजरसिकवरप्रेमोजमानसमचाएहै॥१७३२॥सोहनसोहंगस्वरूप
रामनामरूपरहितसहितकछुफलहप्रमानिए॥स्वांससेंसहजसंभवितहोतजोनवस्तुतोनपरिनामपरनासनपछानिए॥तसोकोन

॥श्रीराम॥

॥३११॥

पतितप्रपंचरतनामविनसोहंगजपतनाकीसाखीनौवत्ता२९॥ पुगलअनन्यकलीकालकोकलंककुलरामनामविना औरमनमे
नआनिए॥२७३३॥हापपापमानुषवपुषसुखदुखदूरकूरमननूरनिजनामनधेआवहीं॥ जाकीक्रपाकोरकेकटाक्षतेअखिल
मोदमिलितललितलाहुअंकविनभावहीं॥ अधिकअप्रयोगशोगरोगसवभोगलखुलालचलवारपनछोडिरामगावहीं॥ पुगल
अनन्यतोहिंआपनोसनेहवंतजानिकेहमेशचित्तनित्तहीसिखावहीं॥२७३४॥रामनामरटतकटतअभिमानमानशानदुख
खोनप्रानफांसअनाआसहीं॥ भूतप्रेतहानरहरिद्रदोषदुष्टवाहकोरनरखलकोउकालताकेपासहीं॥ जाहिरजहानसर्वशा
स्त्रमेप्रमाननाममहामोजखानजीवजानआमखासहीं॥ पुगलअनन्यभोगभावनासमूलभलीभांतिनिर्मूलहेतुजेपासांस
ग्यासहीं॥२७३५॥खरजोप्रयोगतंत्रमाझमंत्रसिद्धिभएकठिनकलेशकिएकोउएकसिद्धहै॥ नामकेरटतअनायासप्रगट
तसोईअष्टदरहतनित्तनिपटप्रसिद्धहै॥ मारनमनोजवसीकरनसुमुक्तितिपातारनतरनगुनखेचनसमिद्धहै॥ पुगल
अनन्यअष्टऔगुनउचाटनमननमतिथंभनविद्वेषनअसिद्धहै॥२७३६॥सीतारामनामपरमेश~~वरनेश~~वरहेशाशिव
ईशशम्भुतिसंतसनकादिकअधारहे॥ जिनकेउचारएकवारअष्टकोटिपातसर्पदिविनघनीचनरमोहपारहे॥ सोहंसेआ
दिजेतेमंत्रप्रनवादिनपातारतनसुन्योकोउअधमअगारहे॥ पुगलअनन्यतातेअपरप्रपंचपटपहिरनत्यागिपागिगयोनाममप्यारहे॥३७॥

॥३११॥

परमप्रकाशप्रासेसैंफिध्यानधरिहिदेमध्यकंजमोदसहितसमाइये ४

॥श्रीराम॥

नईनईवानीविषवाइफरसाइफलसानीअभिमानिनकीकलहकहानीको॥ सुनिसुनिमतिवौरानीअलसानीरतिमोहमन
मानीनीचनरदुखखानीको॥ सीतावरविमलविचित्रचारुचित्रप्रियनाममुदधामनावषानीछलिजानीको॥ जुगलअनन्य
वारवारधिकधिकताहिऊपरहैमशजोनरटेनामहानीको॥ १७३८॥ आसनअचलअभिलासननिरासकरिसासनउसांस
नसेंनामरटलोईए॥ औरहूंवरनवरविप्राइस्वरूपसुधिपूछिसतगुरुपासमेंहनिजपाइए॥ जुगलअनन्यनामप्रभाप्रति
विंवविस्वअखिलविलोकिदेषभावनावहाइए॥ १७३९॥ मेरेमतमांझसववांझसुतकेसमानसाधनसुनामविरहितसांच
मानिए॥ कथनीकरतलागसुगमअगमअतिहोततिलमात्रहूंनधीरमतितानिए॥ तुछबातकिऐसेंनकरतअनाजकहूंनीर
केमथेतेछूतेकेसेहूंप्रमानिए॥ जुगलअनन्यकलीकालमेंकृपालनामहैतसत्यधामसंतसाखिसांचजानिए॥ १७४०॥ इंद्रि
नकोजीतिमनवसीकहेकोनकरैकिएकाकेहोतअतिचपलचलाकहै॥ पलनरुकतमासवरषकीचलीकहाचाहिएजन
न नभरिकरनोहलाकहै॥ वडेवडेजोगीजनहारेपासेजंगकीरअंतमसुनामकीसरनहिंएहांकहै॥ जुगलअनन्यनामरटिएस
नेहसुजितजिविस्वाँसनासमानवीटखाकहै॥ १७४१॥ रामनामप्रानधनहैलतसुरामनामरामनाममुलकमहानमस
नदहै॥ रामनामलोकपरलोकरिद्धिसिद्धिसवमगतिमुकुतिरामनामअनहदहै॥ रामनामरोशनरहस्यरसरामनामरामनामजीवन
अमूरिदपरपदहै॥

॥नामन॰॥

पा

॥श्रीराम॥
॥३१३॥

युगलअनन्यरामनामसेवेप्रेममनातमातभ्रातपतिनातोअनवद्यहै॥१७४२॥सीतारामप्रारनसुधारिहैसकलविधिअविधिअनेक
नानिहारिहैंनजरते॥ऐसोईसुभावसीलनामरूपधामगुनएकरसरहतअजूवहींअसरते॥जिनकीभईहैरतिकैशोहूंविवेकवि
नउनहीकीमहिमाअधिकहैअमरते॥युगलअनन्यअवहायसारधानमनजानकीजीवनभजुलजुगुनगरते॥१७४३॥राम
महामुद्धामसुनामअखंडउच्चारकरेतातजिकेजग॥सिद्धसिरोमनिसंतनकोमततहेरहुउज्वलधारजगामग काहूकीओरनदेखि
करोहिनरैनछकोरसनामसुधासंग॥युगलअनन्यनभूलोकहींअनुरागविनापथऔरमहाठग॥१७४४॥अथभक्तिरहस्यलिख्यते॥
कवित्त॥सीतारामलोकअभिराममभक्तिरूपरंगरहसउहोतकछुकहतसनेहसें॥मेरीमतिमलिनमहाहिकुवीसमर्पीकेवलकृपा
लगुरुसुपदसुमेहसें॥जेतेजालजीवनवेधाइवेनिभिन्नवनेसुभासुभभेदयुतरहितसुगेहसे॥युगलअनन्यमहारानीजूकीनेक
नैननजरनिहारततिमिप्रायनाशसहसें॥१७४५॥जानकीरसिकपदपंकजपरागवीचपराअनुरक्तिभक्तिउत्तमाविचारिए॥
रैनऐनसेवनसनेहसेसमेतस्वच्छकामनाकषायतेरहितधीयधारिए॥कर्मज्ञानयोगसांख्यविरतिविशेषछेरफेरतेविहीन
निजतंत्रताविहारिए॥युगलअनन्यनामरूपगुनधामगुरुपरमपियूषनिधिमगननिहारिए॥१७४६॥जैजैसीपासवबसीम
हारानीआपआपतौनकेनिकटपांचमुक्तितापसापपेहे॥इतहूंनलेतकृपाकेतनेहततहितेहरिछोरिरहीसुमतिसनेहसेवनायहै॥ ॥

॥३१३॥

न २

पायपरमेषाप्रियमोदअविनोदहनअतनसुजीतिरनवनछैलछायेहै॥ पगलअनन्यमोजमानसवचनकायजायविरहितएकरस
॥श्रीराम॥ जसजायेहै॥२७४७॥ अचलअखंडदंडहीनखंडअंडपारपरमप्रचंडचंडसुषवनिपायके॥ अमलअचिंतचारवाहआहद
हविनपलपलप्रचुरप्रगटधायधायके॥ अनलअकाशसर्वगआपभूमिडरंचहूंनरह्योशोकसाजनसमायके॥ पगलअनन्यकु
लकरनसुलीनतितजितजीवजानचितरहेहरसायके॥२७४८॥ हेतुव्यवधानसेविहीनपीनलीनगुनरहसरसालमोदमाल
अनुरागवर॥ निखिलउपाधिआधिव्याधिविरहितहितएकरसअरसविरोधितसुलागतर॥ लोकवेदद्वंदनविछोहमोहमान
मदअसहदुचाललेशहूंनतमत्यागतर॥ पगलअनन्यसेवेशांतअमुख्यकरकारनसनेहभक्तिभव्यताप्रकाशपर॥२७४९॥ भक्ति ५ ७
महारानीहितभव्यबरगुनसुचिश्रवनसमेतरुचिकीजिएविशेषते॥ करतकरोरकटुकालिमाकलेशहानिद्वंद्वव्यवधानश्रमरहित
अशेषते॥ नानाभांतिमोदमुदमंगलप्रधानप्रियपावनसजतसुभसोपिनीसुवेषते॥ पगलअनन्यमुक्तिपांचहूंतिस्काररंकलखुक ॥नामने॰॥
रतनेहरअनिमेषते॥२७५०॥ कोटिनकलपलगिसाधनसमूहकीरमिलतकठिनतातेअतिदुर्लभतम॥ कोशलेशरसिकअ भ ३
नन्यकरुनेशकृपाकाहूवडभागीपायध्यावतविहायतम॥ सबनसुनिगधमोदमंदिरस्वरूपपरमपरेशाखीचिलीनीअनायास
सम॥ पगलअनन्यरसगुनपरिपूरिभक्तिभाविकसरोजउरवसीरहेहरदम॥२७५१॥ जेतेउत्पातव्रातपापतापशापलोकवेदहूंविदित
तेतेभजनप्रभावते॥

यतन बिहीन खपि जात संचित ताहि कर्म कीजिए प्रतीति प्रीति सहज सुभावतें ॥ जैसे काठ प्रपल अनल जारि देत तैसे दाहत दुरूह दुख दारुन
सबावतें ॥ युगल अनन्य अनकूल की कथा कुवन प्रति कूल हूं जैसे दहारिनी सुभावतें ॥ १७५२ ॥ ब्रह्मानंद दाहदुंद हीन अविचिंत जो न
तौन कोटि कलप समाधि की रपायो जिन ॥ असंख्यात अंड खंड बिना सुख लेश नाम बहुत पुरान वेद खेद निर्वेद बिन ॥ ऐसो अविलोल
मौल रहित हरतम भक्ति महारानी मोद निधि मांह कन होत हिन ॥ युगल अनन्य अवधेश रति तुल्यताई कहत भेद शापन मूढ अनुछन हिन
१७५३ ॥ स्वस्ति माहात्मपी भक्ति महारानी मांझ भेद अमल अरेख द तीन भांति अवधारिए ॥ साधन सुभाव प्रेम छेम केत भांति व स्व अवर अ
सरहल नेक धी प्रधारिए ॥ हरषी काहि योग युत अद्भुत भाव मुद साधन सु साध्य सावधान तानि हारिए ॥ युगल अनन्य नित्य सिद्ध भाव
हीय बीच प्रचुर प्रगा साध्य बिसद विचारिए ॥ १७५४ ॥ साधन सिद्ध सु मांझ द्विधा गति बिस्त बिचारि बखानत नीके ॥ वैधी सु रागा
नुगा रस दाजे हि को सुख लेश लिए सब फीके हैं इनमें बहु भांतिन भेद अखेद सुचिंत न बैद रु चित्त जी के ॥ युगम अनन्य प्रकाश प
गवर नाथ हैं अवर भासत ठीके ॥ १७५५ ॥ वैधी बीच बिबिधि बिलास शाबिल शात वस्त्रात रतराइ बनि मित्त जिए जानिए ॥ बद्द
बिधि से तु सत्त संग सीष सीम साक चित्त परिपाक प्रेम विगत प्रमानिए ॥ साधन समूह शान्त सहस सु गन सुख सोपत सहज शान्त
भांति मलमानिए ॥ युगल अनन्य अंग अमित विराजमानता समुख अंग साठ चार दृति हानिए ॥ १७५६ ॥ नाम अंक अमल समेत

॥ ३२४ ॥

स्वादहेतसुनिश्रवतसचेतकेतकामनानिकारिए॥भक्तिभावभेदखेदहीनपीनप्रेमपनपालकमननकरिरंगरससारिए॥संत
सतगुरुसेवकाईसावधानसजितजितारतगुनतलासतमतारिए॥युगलअनन्यअविलंबअवलंबनामकीजिएअखंडभक्ति
सारसुखधारिए॥१७५७॥चारोवेदअंगउपअंगसंहितादिसंगपत्योपाठप्रवलपुरानउपरवानहैं॥चारिदशअकलाकृतको
टिनकलेशकरिकुशलअसलप्रेमपायोमतिमानहैं॥लोकपरलोकपथपरमप्रवीनपीनहीनताविलीनमौजमान्योधर्मध्यानहैं
युगलअनन्यअनपायनीपेरमाभक्तिभजननजनविनवूझोव्योमवानहैं॥१७५८॥पराअनुरक्तिरषमिषमाभएकरसअर
ससमनहरिहेतुभक्तिभावरहीं॥साधनसमिद्धसिद्धयुगलस्वरूपप्रियपीजिएपियूषभषसहितसुभावहीं॥वीजरूपप्रथमप्रकाशपुनि
पायप्रीतिवर्द्धमानविततविदितअनुभावहीं॥युगलअनन्यप्रानआसअभिलाषभाशमानिखहराशिभक्तिभावनासमावहीं
१७५९॥सीताराममहाभक्तिमहारानीसुखखानीजूकोअंगरसरंगससमेततोअपारहै॥भिन्नाभिन्नभेदखेदश्रामनचमनचित्तसोध
नसमहसमरथमरहारहैं॥काहूभांतिकांतिनिधिनेनपंथवीचहोयएकहूंसुभागवशाछूरनविकारहै॥युगलअनन्यकछुकहतकृ
पालअंगजीहनिजपावनकरनहियहारहै॥१७६०॥जानकीरमननेहनिरतसुवेदविदविरतिविनोदनिधिसंतगुरुआसरो॥
कीजिएसचेतचिंतपीजिएसुनामगुनरूपरसअरससमननिशिवासरो॥कामनाकपटअटपटरीतिप्रीतित्यागिपागिपदप्रेमपारावार
स्वासस्वासरो॥

॥श्रीराम॥
॥३२५॥

युगलअनन्यरसिकसिरसेंअभेदमतसुरतिसमजायसबभांतिप्रतिकाशारी ॥२७६१॥ संतरसवंतभगवंतसीयकंतरतसुपथपयानसुख
खानजीयजानिए ॥ सोईसतराहभलीभांतिसेंतलासकरिपरिहरिकुमगकुचालदुखदानिए ॥ श्रुतिसुस्मृतिपंचरात्रआदिशुध
विधिविरहितभजनविशेषफलहानिए ॥ युगलअनन्यतातेसावधानमानविनुसेइएसुभक्तिचिरचरनसमानिए ॥२७६२॥ जा
कीमतिमोहमईलईअविचलचारुराहसेंरहितसमीचीनशुधमेंहेत ॥ पूछतफिरतपूजनीयसीयरामजससुगुनरहस्यअनलश
संतपासस्वेत ॥ ताहीकोमिलतअनायासअभिलाससबथोरहीदिननबीचमिटतकलंककेत ॥ युगलअनन्यकोनकीजिएवपान
सुखखानसोउहोतजोतजगमगसेंउपेत ॥२७६३॥ अवधविहारीसुखकारीजूकेहनुजोनकियोभोगरोगरूपत्यागकालपायनित
तोनहींउधरवेउभागिनकीचाहचिनधाममेंरहतकबआवेमोहानिशा ॥ परमपरेशधामवासीअविनाशीसमस्वल्पहूंदिवसबास
सजतजहाननित ॥ युगलअनन्यतदेशोशविसुब्रह्मवघअवधअधारजनजीवनअनूपरत ॥२७६४॥ जेतोअर्थपापपरमेशनाम ॥३२५॥
रूपगुनसेवनसंचेतहोयतेतोईगहनयोग ॥ देहनिर्वाहसेंअधिकन्यूनभएपरभजनवियोगरोगवाढतअनंतशोग ॥ सीतारामदिव्य
दिनकीजेउपवासछिनछीनपीनपापतापशापभवभीतिभोग ॥ युगलअनन्यअविलीकव्रतकिएप्रियप्रेमप्रगटतनिवृततेलोललोभ
लोग ॥२७५॥ जानकीपरमप्रियप्रानसुखपानचलईलसनमानसेवासावधानतुलसिका ॥ दिव्यधातधेनुद्विजवैष्णवयथायोगपूजनपुनीत
महापापगननमुलसिका ॥

॥श्रीराम॥

थि ७१२

इष्ट मिष मोह है नवाले आग जगाजी वसे वनीय सनत्त विनोद हिय हुलसिका॥ युगल अनन्य अनुराग वाग वीज वस्तु आहर समेत
सिंधु हेत करि चुलसिका॥ १७६६॥ श्रीप्रमोदवन विहरन सुचि सील सिंधु प्रेम प्रिय वंधु से विमुख जे न जीव जड॥ मनो विषपान गि
रि गिरन सुपोगव रू उचित ज्वलित ज्वाल वास हूं भूमिगड॥ युगल अनन्य कोटि कष्ट हून लेह खेद है जे सो उर वेदना वटत विमुखी
नतड॥ १७६७॥ व्याघ्र व्याल मकरादि मिलन महान मुद मानिए निशंक अंक फेर पामतिलना॥ सीताराम नाम रूप धाम लीलाही नन
रना नाद व हास को कुसंगता में मिलना॥ पाते आन खेद खान दूरो राज हानना हि कीने अनुमान पर त्याग हूं असिलना॥ युगल अन
न्य आस सा जिए स जाती स्वच्छ द स्पर ताप्त सा घसा एहं न झिलना॥ १७६८॥ संप्रदाय पंथ के वदाय वे निमित्त सिष्य करन असो
ग्य अविरहित जन॥ उचित न है तगोप रहस प्रकाश लोक वित्त तुच्छ आस हेत दीजिए विचित्र धन॥ नाना मन बाद संप्रदाय अनु
राग हीन श्रवन मनन न अवलोकबो अनर्थ धन॥ युगल अनन्य आनारंभ हि हमेश हाय लीजिए प्रमोद वीज वासना निकारि मन॥ १७६९॥

कीजिए न निमिष प्रमाद दुखखान संग रंग अविभंग मंग हेतु मानि अड वड॥२

मोजन न छाजन न आए गए हिए हर्ष विषाद आमर्ष न धारे॥ लौकिक वस्तु विनास विचारि के धीरज वुद्धि किए मन मोर॥ जानकी जीवन
नाम स्वरूप अनूपम श्रीगुन नैन न निहारे॥ युगल अनन्य लेह वपु कौ फूल मानस स्याम सनेह संवारे॥ १७७०॥ सियराम सुनाम स्वरूप स
हासु मिरे सव ही विधि लाग लिए॥ अपमानन ही को उद्धव केर निज दुष्ट विभूति विचार किए॥ सपने हूं न ही मद मत्सरता तम शोक समाकुल
भाव हिए॥

॥नामको॥

भनेयुगमअनन्यसुदंपतिरूपअनूपप्रभारसप्रेमपिए॥२७७१॥ जननीजनकादिसमानसुवालकसोसवहीप्रतिपालैं॥ जगजी
वनमेसमतासजिकेमहवागउचारिविनोदभरें॥ सोऽसंतसिरोमनिसंतिसदातिनकेमनदंपतिआविहरे॥ भनेयुगमअनन्यसिया
वरजूउनउपरंगउमंगधरें॥२७७२॥ जानकीजानिसुजानसुसेवननामममहाअपराधविसारे॥ वत्तिसत्योंदसरूपविचारिकेवो
धसमेतविशेषनिसारे॥ पातकिपुंजनकोसिरमोरसुनामंकेआसरेमोजहिमारे॥ युगमअनन्यकिएअपराधअसाधनछूटत
फंदपसारे॥२७७३॥ जानकीरसिकरूप-अनूपमलअनूपमांझभएभावहीनहीनपापपीनमानिए॥ सोउअघरासिनामकेरु
नानिधानआसमसकृतकरतसुकृतशसांचयछानिए॥ नाममहाराजहीनवंधुसिरताजजोनकरैअपमानताकीसुगतिनआनिए॥
युगलअनन्यअघलोकअंतकालगहगवनविशेषसंतसंगसजिजानिए॥२७७४॥ श्रीअवधेशसुप्रानप्रियाधिपप्रेमपगेज
नजीवनजाहिरे॥ श्रोनसुनेसनमानसमेतवुराईविकारसुनिंदनोजाहिर सोउमहाअपराधीसहीसतपंथप्रमोदप्रकाशसें
वाहिरे॥ युगमअनन्यविचारिएवातविचित्रपवित्रसमानजवाहिर॥२७७५॥ कंठमेंमधुरमनमोहनीसुमालयुगजगमगजोत
धनुवानवांहुमूललसा॥ भालछविजालतरतिलकभलकविंदुचंद्रिकासमेतश्रीअजूवपरिपूरसा॥ सीतारामनामअंकमंडि
तसमूहवपुरामरजसहितप्रकाशस्वच्छभानसमसा॥ युगलअनन्यकोटिकोटिखंडअंडपूतकरनसमर्थपावनेसशुभसंतअस ॥७६॥

॥श्रीराम॥

जानकीरमनअभिराममनप्रसादसुचिसुमनफलादिश्रीशधारतसनेहसाथ॥पावतप्रवाहभवपारअनायासरसरासिदृगहरस
परतअनुरागगाथ॥रोगसोकविकलवियोगभोगभानकुलेहातनिरोधानछूनवीचकीचपापपाथ॥युगलअनन्यअनि
वेद्दितअसनवरवसननिधनननेकादिकनेहतहांथ॥२७७७॥नाचिएजानकीजानकेआगे॥पाहीमेहेछमछेमप्रमोदअ
नंतविनोदजोपेचितपागे॥तोडिएलाजकुतागतमोगुनवोडिएकर्मकपानहूंनागे॥परिखएप्रीतिवहारविहारहीदेखिएदृष्टि
उदारिसुभागे॥वांधिकेपायनमेंघुंघुरूनितनाचिएजानकीजानकेआगे॥२७७८॥तालवजायसजायसुभूषननाचिए
नेहसमेतहमेस देहमहीरहमांझनिवासकिएअवधंउजजाहिविशेषे॥जन्मजमातकुवासनाकोटिनेआपहींआपवि
लाहिहिमेंसे॥युगमअनन्यमहामहिमाकिमिगाइएजानिएरीतिरसेस॥२७७९॥एकवारनामसमुच्चारनसमेतकृपा
कलितनिकेतकोप्रनामजोकरतहै॥कोटिकोटिवाजमेधयज्ञनतुलततताहिअनायासभीतिभवसागरतरतहै॥सकृतप्रन
तपनपालकप्रतापपूरपापपरत्यागनहींजननतमरतहै॥युगलअनन्यकर्मकिएनानाभांतितऊशांतिसेरहितजगपंथहीच
रतहै॥२७८०॥जानकीजानसुजानसोहावनवैठिविलोकिउठजननजोहैं॥प्रेमपरत्ववटामभलीविधिनैननन्नेहसमे
तसुजोहै॥कौनकहैंमहिमातिनकीरघुसाथपमाहींपंथसुगोहैं॥युगमअनन्यअपापअतापभएहरिकेसमस्वछंदसुगोहै॥८१॥

॥श्रीराम॥
॥३२७॥

संसृतिपंथकठोरभयानकनीरविहीनमहावनखेरी॥ ताकेनिवारनयोगमहाबलपुंजप्रसंससबैलायककेरी॥ जानकीनायक
तीरथमेंपथजोनचलेहरखायअखेरी॥ प्रेमअनन्यसुमंदिरमांझप्रवेशकियेरतमपातकछेरी॥ १७८२॥ जानकीजीवन
दिव्यमहामनिमंडितमंदिरमांझगएते॥ प्रीतिसमेतसुकेतनिहारतसुंदररूपसुदर्शभएते॥ जातमहाअघराशिविलायत
तच्छनचाहउछाहलएते॥ प्रेमअनन्यनहीजननीजरठरानलदाहहदैहगोनएते॥ १७८३॥ सीतारामसुखदनिवासअ
भिरामअभिलाससेसमेतजोप्रदछिनाफिरतहै॥ होयकेमगनगायगुनरसालचारिवारसुभसारअनायासहीफिरतहै
होतनहीफेरिभवफेरगुनबेरमेरबिनाश्रमभेमोहनिधितुरततिरतहै॥ युगलअनन्यतिनकियोसबलोककमैंतीरथअनंत
परिपाकहूंमिरतहै॥ १७८४॥ जानकीरमनपदपूजियप्रबीननित्यनानाभांतिसौंजसाजसरससजायके॥ भूतसुद्धिना
शमंत्रवेदतंत्रउक्तकरिपरिहरिवासनासुनेवितवजायके॥ स्वर्गअपवर्गसिद्धिसकलसुलोकसुखमूलअर्चनाहिखद ॥३२७॥
कहनकजायके॥ युगलअनन्यअनुरागरागदागहीनमितनाछिएजहानसेनरहिएलजायके॥ १७८५॥ महाराज
मिथिलनरेशसेसहसगुनसेवासावधानसीतारामजूकोकीजिए॥ सुछबिविनिवासछत्रछांहचामरहिंब्यविंजनाविचि
त्रसाजसाजिसुखलीजिए॥ औरहूअनंतवस्तुकेलिकेकरनयोगलायसन्मुखदृगहैरवतेहींजीजिए॥ युगलअनन्यअन
वासनाविलायसबपरमपियूषसुक्खसेवारसपीजिए॥ १७८६॥

॥श्रीराम॥

तैनिजजनधन्यपुन्यरूपजौनपायपलपलकप्रमानवशैसीतारामधाममें॥ वाकीकौनिकथाव्यथाहारिनीवषानकरैंजाकीर
तिमतिलाजिरहीस्यामकाममें॥ सीतापतिसेवाभुक्तिसुरुचिउपजतहोतपातकप्रपंचगोतमिलतननाममें॥ युगलअनन्यपर
धामबीचवासताकोहोतहरनमवातविहितनामामेमें॥१७२७॥ सीतापतिरसिकसिरोमनिसमीपगीतगावतप्रदीपप्रीतिपरम
प्रमोदयुत॥ वामविधिभालसालसमनसम[illegible]सच्छसुहृदसमाजपूजनीयतौनहींतउत॥ सीतारामसरसमुलोकसोविसेषिजानि
छोडिउतपातघातछरमविकाररत॥ युगलअनन्यअनुरागीबडभागीगानमधुरसुगुनसाथसजतफलामृत॥१७२८॥ सीताराम
परमपरात्परनामसुखसारसद्धामजौनजीहजकलायजप॥ कारकहेमश्रमभववारकेवसेभातताकोअनायासकटतकलेशरोगशो
गतप॥ जानकीविहारीछविकारीजूकोप्रानप्रियहोतसोसदैवसानकूलछलछाडिछप युगलअनन्यनामकीर्त्तनआठौजामउ
चितविहायवदवादअपवादद्प॥१७२९॥ जानकीजानप्रधानप्रकाशकलीलासुनेहियहायरहेना॥ दुर्गदुरंतदुरेछनमेमन ॥नामने॥
मोहमहोदधिमांभवेहेना॥ सीमसुधाघनसारसुसागरश्रीसियरामसुलीलाकहेना॥ युगमअनन्यहोउदिसिसासठसंकटकोटि
कवारसहेना॥१७३०॥ योगजपतपतरतीरथसुवेदपाठश्रवनसुध्याननमानपरिपाकभल॥ एकरसअरसमनसगुनेश
सीतारामगुननगुननअखंडवहवायमल॥ पाचहूंउपायअनायासनाहिकरतलहोतअयतनगुनगावतप्रकाशपल॥ युगलअनन्य

॥श्रीराम॥
॥३९८॥

आसहूसरोविकाररूपवहतमुनीशप्रेत्रासज्ञानसुवाककल॥१७२१॥मंत्रमहाराजछविछाजततारकेशजपकीजिएमधुरस्व
रसुधिरसुधारिके॥आनकानपरननपाँवअधिकारविनछिनछिनप्रीतिपरतीतिहींप्रचारिके॥मुक्तिमुक्तिभक्तिसिद्धिसक
लसमाजशुभआगरहेखेडताकेशतनसवारिके॥युगलअनन्यअनलशपाँमेंहोयभलऔसरविचारिएप्रपंचनाप्रजारिके
१७२२॥कोशलराजकिशोरकृपाकरकामहकामनिकेंहनआगे॥कीजिएअरजेअगरजेजहाननसेंहोयमिटमनमर्जेअभागे॥
श्रीरघुवीरशिरोमनिपावनवैनविनेसुनिपातकभागे॥युगमअनन्यप्रासविनानिजधामकपाटखुलेलयलागे॥१७२३
जैसेनागरीनवीननागरपरस्परसजततसनेहदेहगेहनेहतोडिके॥औसोमनमेरोमुहमोहनिधिनामरूपललितसुमांझक
वलागेछलछोडिके॥रैनअैनचाहचितरहतकरतहायहिरसहरामवीचडारतनिचोडिके॥युगलअनन्यअपराधव्या
धवारिनिधितीनिलोकहूंनमेरेसमजीवजोडिके॥१७२४॥दीनताअनंतभातिशांतिक्षांतिहीनहोयकीजिएनिवहरोह
खोकतनत्यागिके॥ज्ञानध्यानधारनासमाधिनेकहूंनमोहिमोह्योमनविषमविकारवनवागिके॥आरतहरनशरनेश
सर्वेशप्रभुपतितपुनीतप्रेमपालकसुरागिके॥युगलअनन्यलाजलागतवहतवैनऔनअघरूपकहींकोनमुखलायके॥१७२५॥
हैअभिलाषहिएनितहींनिजजानकीजीवनजाननिहोर॥स्वामिनीसीयसमेतसुधानिधिहेरिहैंमेरउओरपिआरे॥

॥३९८॥

॥श्रीराम॥

महसमान गंभीर गिरा पुत आवइहां कुरकाज सकारे॥ युगम अनन्य सुहृद पति पान हीं हौं दृग लाइहौं चाह अपारे॥ १७९६॥ श्रीसर
जूतट तीर सोहावन पावन बालका बीच विलोकी॥ हेरि रहिहौं निज नाम मनोहर जानकीनाह अलापि अलोकी॥ नाचिहौं नेमन नी
रव हावरत गाइहौं गीत विलास विशोकी॥ युगम अनन्य अहो विधिना दिन ऐसेहु होइहै मौज अरोकी॥ १७९७॥ जाकी जीह निरस निरी
ह नाम रूप गुन कीरतन करत वितावै नित्त रात्ति दिन॥ ताकी पद रेनु भाल भूषन सकृत है व महामुनीराजसि छ छोड़त नए
क छिन॥ आरवा वव कत विनाइए नजन्म जाय मानुष वपुष सुख साधि एउपाधि विन॥ युगल अनन्य अनमोल विनय जा
न कीश करत अडोल वह वायहे तती नरिन॥ १७९८॥ जो जन जीवन जान सुजानकी जानि प्रसाद पुनीत हमेसो॥ पावत प्री
ति वराय प्रतीति समेत कुलादिक खोय विशेषो॥ सो वडभागी लहै सुखसागर नागरी नागर श्रीदुति देषो॥ युगम अनन्य अमो
ल महागुन आप हिए रस एक सुवेषो॥ १७९९॥ श्रीतुलसी हुलसी हरसाय तपात की पातक पुंज परावन॥ कारन साध्य सि
पार रघुनाथ पपछालन पाव पुनीत भरावन॥ पीजिए प्रीति लगाय सुलोयन कोपन बीच विकार बरावन॥ युगम अनन्य अयोग
गन को विन साधन हीं जग जाल जरावन॥ १८००॥ जानकी जीवन नेह नहह प्रहर सोरभ सुं हर जो जन दैवै॥ नासुकनासि
का ध्यान कराय प्रसादहि सो आपुहं मो हसो लेवै॥ काल कराल क व्याल कहौं विष वात हीं बीच विलाय अछेवै॥ युगम अनन्

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥
॥३१८॥

नहि निरयादिक भीति भयानक धूपके सेवे ॥ १२०१ ॥ स्याम सुखधाम गौर वरन हरन मन अमन करन माल मोहनी सुमौजहार ॥
नाना भाँति जाति कर रचना रचाय चारु पहिरिसे प्रेम प्यार लीजिए सुगंधसार ॥ जाहि रजहानहु वोय खोय धोय धीय धारिए
धवल खुशबोय दाम रंगधार ॥ युगल अनन्य अविलोल चोल चामीकर सहस समान रसखान शोक हेतपार ॥ १२०२ ॥ सा
नकूल भूल सूल हूल प्रतिकूल मत अमत अशेष देष हारु नरवा येहेत ॥ ज्ञान ध्यान प्रीति प्रतिभान प्रान प्रीय रूप रंग रसखान सन
मान राखिहे निकेत ॥ आन जान भानहूं खो आवखोल के मिसाल हाल जाल हीन खूब खाहिश उहोत हेत ॥ युगल अनन्य जान
कीशा जू सुयोग जोन धूपमालिका दितोन मोह मगलीक केत ॥ १२०३ ॥ राजिव लोचन मोचन मोह महादिक मोहमई मुह मूरति
जो हिए जीवन जान विचारि के धूम्र ए छैलस जीवनमूरति ॥ होय चहु रूह हरिदु दवानल दाह दुरे हम हींत मनूरति ॥ युगल अ
नन्य सु धन्य सोई सुखसागर डूवि रहे न कदूरति ॥ १२०४ ॥ सीता रामरश्मि क सनेही सुखधाम मुख मधुरमयं कग्रक लंक जो
न जो हई ॥ साजसत सौं जसे समेत आरति कहिव्य दामिनि सुदुति निरखत मति मोह हई ॥ वार वार वारने करत रहे प्रान धन महा मो
द मानि परपलन विछोहई ॥ युगल अनन्य अर्व षर्व जर्व व्याधव धमिरत महाहित मत्र समसं होहई ॥ १२०५ ॥ जानकीव
न विधुवदन चकोर चख चारु रूप सहित सुपथ मांझ हेरिहै ॥ विबुध वेरसार्व दनीय पूजनीय होय यत नविहीन मति मीच मई फेरिहै ॥

॥३१८॥
गी २

॥श्रीराम॥

सेवासानकूलसमरुकआगेपाछेरूपमाधुरीनिहारियोगसुफलसकेरिहैं॥ युगलअनन्यलोकओककेसुपारहोय
अमलअशोकवनजायसुखसेरिहैं॥१८०६॥ सुनिएसुखसागरनामसदागुनचारुचरित्रपवित्रपरायन॥ गुनि
एप्रियप्रानसमानपियूषसुपानकिएजगजालजरायन॥ संतसमागमपायपरारतिआकस्मातउदोतदुरायन॥ युगम
अनन्यअशोकअमोहअमोलअतोलउमंगतुरायन॥१८०७॥ कोमलराजकिशोरकृपाकरकीकरुनाकमनीयपत्र
नोरखी॥ मंगलमोदमईमनमोहनीदेखतहींरहिएचषचोषी॥ आपनोकर्मकियोपरिपाकसोभोगिएमोजसमेतअरोषी
युगमअनन्यनहींतिलहूंशोकपादयप्रीतमीधाममझेरोषी॥१८०८॥ जैसेंहूंकैसेंहूंचित्तसियावररूपगुनादिकजोसुमि
रेगो॥ कोटिनकामकलेशकषायकोकाटिकृतारथहोयतिरेगो॥ दीनदयालप्रसादप्रभाप्रियपायप्रमादहूंसेंनगिरेगो
युगमअनन्यसुनाममलिएवसुजाममहामुदधाममफिरेगो॥१८०९॥ जेपैजोनजीवनेंमजीवनमरनमांझभोरसांझवांझ

॥नामने०॥

वदवादवहवायवलि॥ तपैतोनतीनतापैतपनसपननाहिवमनविकारवारव्याधवाधआधदलि॥ छपैछविछैलभौन
भावनाविलासखासथपैथिरप्रेमप्रीतिपावनीप्रपंचवछलि॥ युगलअनन्यनएनेहमोदमईमहीमानसमिलायमहव
वरवुवीरदलि॥१८१०॥ नित्यनेहनेमनिजनवलनिकाईसाधसाजस्वच्छध्यानरूपदिव्यगुनकेलिको॥ ❀ ॥

सवासानकूलस्यामसज्ञाननरीतिसमकरतभरतमोहमानससहेलिको॥ सीतारामचारुचित्तचोरनचरित्रधीपध्यावतउमंग
रंगकोटिकलवेलिको॥ युगलअनन्यरूपअमलअनूपमहामाधुरीपियूषमा नपीजिएभ्रमेमलिको॥ १८११॥ जानकीपरमप्रान
प्रीतमप्रनीतपनपालकप्रतच्छस्वच्छहासताविचारिए॥ लोकवेदविसदविचारसारप्यारधारिवारिप्रानकर्मतीनभांतिकांति
चारिए॥ शोकसेविहीनपीनभावनातहीयसांचपांचऔचनाचकोनलेसहूंसचारिए॥ युगलअनन्यअनुरागलागलीनकी
नेकोशलेशस्वकरअधीनजीवधारिए॥ १८१२॥ महाराजसुवनभुवनभावनीयनेहनवलअमलकलकमलसुधारिए।
साजिएविसदबोधसोधसतसंगसाधुशोभनसहजविस्वासहीसम्हारिए॥ प्रीतिप्रतिकामकरसुघरसुशोकसीमभीतभा
वविगतविभीतिअनुसारिए॥ युगलअनन्यसखभावनाविभातियुगमेहसमुपेतबुधवृन्दविचारिए॥ १८१३॥ देही
देहगेहनेहजावतमहानलाहहानप्रानमानअपमानभानेहोततर॥ जानिजानकीशजूकोअपुरविवेकवलहीजिएप्रमो
दसैंसमेतवारिछोडिदर॥ लोकपरलोकशोकराखिएनेनकुचित्तकोनधेनुसदशास्वरूपसावधानसर॥ युगलअनन्यनिज
आत्मानिवेदरवेदहीनवेदभेदएतनोईसारभूतपर॥ १८१४॥ जौनजौनचीजतजवीजकेकिएसैंमिषदषलोकवीचचित्त
वहचारुचाहिए॥ तौनतौनगौनेनेहनिदरिनवीनरतिसहितनिवेदिजानकीशखेदटाहिए॥ होतहैअनंततिलतुल्यतापदानप्रिय
पूंछिएसुसंतश्रुतिसंवतसराहिए॥

युगलअनन्यप्रीतिप्रबलप्रतीतिपदपाइएप्रतच्छस्वच्छनेमनिर्वाहिए॥१८१५॥जानकीजानतिहारोइहौंनितशोषअशे
षउपाधिविनाहीं॥तीनहूंभांतिएहीदृढ़तागुरदेवगुरुदेवकृपालहिलाहतिनाहीं॥लौकिकवैदिककहूंकरुनाकरआनकृपा
दिसिचाहहिनाहीं॥युगअनन्यसुधामसोहावनवाससदाअविशंकसनाहीं॥१८१६॥जानकीरशिकप्रानप्रीतमचरित्रचारु
चामीकरचित्रदुतिदेतहामहागदलि॥सोईप्रानशास्त्रनित्तमननश्रवनयोगरोगशोगभोगहरमोहमदमानमलि॥जाके
सुविसदनसमीपदीपसमदिव्यसुगुननिवासभागभाजनभदेसभलि॥युगलअनन्यएकरसअविकारजसपीजिएपियूष
सेंसहसभांतिमानिवलि॥१८१७॥सेइएसनेहसेसहितहितहेरिहीयहिरसहिरापधामस्वच्छश्रीअवधवर॥जेइएजहा
नजालजिकरविहित्तरससरससवाहनामरूपअनुरागसर॥भेइएसुतत्वसानकूलश्रीसरजुकूलकलितललितलाहली
जिएललामलर॥युगलअनन्यआनंदप्रदुखवेगभवभ्रमसमभदेशनामछोडिकेसमानगर॥१८१८॥जानकीजीवन
धामविहायमहींडगआधहूंभूमिधरोगे॥पायसजीवनिमूरिमहारसकोअलौंमउछाहभरोगे॥दारुनदाहदुरायमली
विधिवासनासायनमूढमरोगे॥युगअनन्यसुसांचसहीजगजीवनतारिकेआपतरोगे॥१८१९॥जेतेयत्नयोगरोग
शोगकेदमनदिव्यपूजनप्रकारतामेमुख्यसारसिरताज॥जानकीजीवनपदपंकजप्रवाहप्रेमप्रीतमपुनीतवरनतवेदबुधराज

ताहितेप्रधानमहामोहरसखानिनित्तनेहनिर्वानप्रानसत्वस्वछ्छसेवसान ॥ जुगलअनन्यरामरसिककटाक्षकुलपायरतिरंग
मईमिलतअहेरआज ॥ १८२० ॥ सीताराममललितललामलक्ष्मलागलायधारतश्रुतनमांझजोनअनजौंहरी ॥ भीतारामहोत
तिनहरप्रापरसंध्यानमननकरतअनायासगुनगौंहरी ॥ छोडिएछलीनछापतापतमकायमानिजानिइछरूपसंतसेइएसु
तोहरी ॥ जुगलअनन्यवागविहितविचित्रवेदविरुखवषानेछकिमोजनित्तनैंहरी ॥ १८२१ ॥ सीतारामरंगधाममांझ
जोनयोगजनमहामोहमानिउत्साहसारचतहैं ॥ विविधिवितानतोरनाहिमंगलीकगानसंतसनमानदानदामषर्चतहैं
लोकशोकओकथोकभारमेजलायतैनतुरितपरेशाकेतपायपरचतहैं ॥ जुगलअनन्यइछसुदिनसुमांहिगएहोतहैउछा
हनित्यमुक्तअरचतहैं ॥ १८२२ ॥ जानकीसनेहसरमधुरमरालबाल ललितरसालनेहनवलनिकेतमास ॥ कान्तिकक
लितकपायकामकोहकलिकहनकरनकोकृपानकमनीयकास ॥ देतभुक्तिमुक्तिभक्तिशक्तिसावकाशसुखकोशला
समीपमेविशोषगुप्रहरीपास ॥ जुगलअनन्यवृतधारिएधुरीनधर्मसहितसुनीरमेनहायवहवायवास ॥ १८२३ ॥ जौनहित
दिव्यभव्यकोशलकुमारमारमोहनप्रगटगुनअवधवनिपटसुख ॥ तीनवरवासरविचारिएविहायसमकीजिएउछाहचारु
सहितदुरायदुख ॥ नानाभांतिरागसाजिएसमाजसाजिहीजिएलुटायचित्तवित्तहित्तमित्तमुख ॥ जुगलअनन्यमोहमानिए
अनंतसुतप्रथमप्रसूतसमत्यागिकेतकननुपैं ॥ १८२४ ॥
रंग

अवधविहारीसुखकारीछबिदिव्याधारीमूरतिसवाँरीसबछबिसेवानामलीजिए॥होयकेमगनमनमोहनीसुक्तिबीचमीचमुहर
महोषमुखमसीहोहिजिए॥पराप्रीतिप्रबलप्रतीतिसुपुनीतपुंजनामप्रियपरमपियूषप्यारपीजिए॥युगलअनन्यभक्तिभावना
आगमरससुगमसुपायपतिपासपायजीजिए॥१८२५॥नामपेरशासुधामसुखावधिसेइएनामुहेशोकसजाई॥आमनिवा
ससुपासमलीविधिछोडिएजोडिएस्यामसगाई॥कामकषायकपासकलाकटुकाटिएकंजखिलायललाई॥युगमअनन
सियावरकेढिगजाइएबगिनिसानबजाई॥१८२६॥श्रीसरजूतरतीरसुकुंजनवाससनेहसजायसोहावन॥कीरतिकांति
मतीकूमनीरमनीमतिमांझविचारिएपावन॥श्रीरहसाधारतिरागरसारसराहतसौंपिविकारनसावन॥युगमअनन्यसुधीसमु
झेंसुखसारसमूहसुधासकुचावन॥१८२७॥जानकीविहारीसुखिसुजससरसरूपशोकसेसुजानसदपीवतअनंतवार
आपापरसुरतिसुधारेतेनेनकुनिजनाहगुनगायछकिथकिरहेकंतद्वार॥बोलतविचित्रगुनखोलतसुचारुचखडोलतउ
मंगरंगविवससुमतप्यार॥युगलअनन्यअलबेलेरशिकेशरागरमितरमाएजीवजालजसस्वादुसार॥१८२८॥श्रीसिय ॥नामने॰॥
राममहामुस्यामसुकीरतिगायउछाहहजारों॥भूलतमानमपानजहानकोभूलतआनंदडोलविहारो॥भूषपिपासलगे
नतिन्हेंकछुप्रेमपियूषपिएमतवारो॥युगमअनन्यकुसंगविहायजमोजसमंदिरमांझसवारो॥१८२९॥ ॥श्री॥ ० ॥॥

सेवोसंतसरससजातीरसवंतस्यामसजगसकारप्रीतिप्यारअविकारकरि॥ देवोहियहानुतनमनजनप्रानपनप्रबलसजायजीयभ
लीभांतिहीयडरि॥ लेवोअनायाससुखललित~~विविध~~विहारवासआसअभिलाससैंसमेतचावभावभरि॥ युगलअनन्यमुक्ति
पांचहूंपरत्वपारपीजियपियूखभूखभावनासुधीयधरि॥१८३०॥ जोनसुखसुलभसजातीसतसंगसाथतौनरघुनाथपासपा
एहूंअगमहै॥ याहीहेतरहसनिकेतनाहनेहीनितसीयवरहूंसेसांचेसुवरनसमहै॥ मिलेमहबूबमनमोहनमिलापीजवललित
अलापीमौजमाधुरीसरमहै॥ युगलअनन्यधामधवलअमलवीचलागवसवाससजेसंतहूंसुगमहै॥१८३१॥ जानकी
रमननामकीरतनहीरतनयतनयोगायजौनजननेमसैंकरे॥ सीतारामसुंदरस्वरूपसुअनूपगहचारोदिसिफिरतसुनामरग
मेभरे॥ गायसुखपायतालविसदवजायमुलवायमानेदेहगेहनेहसिंधुमेपरे॥ युगलअनन्यकियोकोटिनकलपकृतकामु
कधरपरिपाकनामसोफरे॥१८३२॥ चिंतामनिचेतनचरित्रन्यारचामीकरचमकतचारुचितचाहिएसुनैननेस॥ थिरचर ॥३३१॥
जीवजगजेतेतेनामवलजीवतहैमश्रासाधिलीजेवहवैनसैं॥ नामीअगअंगमसुपूरिरह्योनामनितहेरिएहिरायममभाव
नासुचैनसैं॥ युगलअनन्यनित्यमुक्तहूंउचारैंरागरंगरसधारेरूपमाधुरीसुरैनसैं॥१८३३॥ सततचित्तमोरवनअतन
यतनतनतनतीनहूंनिहानधामकोप्रालप्रमानिए॥ जेतेलोकश्रोकविनवेदविज्ञवागवीचविहितविशेषतेतेविमलांसजानिए॥ ॥०॥

परत्तेपरात्परसीतारामनित्यनेहनवलनिकेतचित्तचेतसोंचमानिए॥ जुगलअनन्यएकरसहढपनधारिधाममेनिवासस
॥ श्रीराम ॥ जिस्यामसुषसानिए॥ १८३४॥ संतसतगुरुसुषरूपसीयवरभक्तिविमलविचित्रअंगसाठचारिहूंकह्यो॥ एकनसेएकनेकुन
जरनिहारनीचजीवहूंनिहालकेकरनहारहौलह्यो॥ ताहमांहिपांचअांचहमनप्रकारप्रहपेपांचिएप्रत्तछछस्वच्छसारेहेषट
रह्यो॥ जुगलअनन्यमतिभरीमहामोहमईभक्तिमहारानीकीकृपासेसुज्ञताग ह्यो॥ १८३५॥ जानकीसनेहसिंधुलीनप्रेमपी
नपमनामसुषधामधामअचलसुवासनित्त॥ अंगअंगमाधुरीमनोजमोहनीस्वरूपसेवासानकूलचाहचाषिचित्त॥ सुधा सोहनीसु ५
सुखसारचारुचरितश्रवनपुनिपठनविचारअविकारभाववारहित॥ जुगलअनन्यसंगसरससजातीस्याहगहनविवाद
सविहीनअविलोलरित॥ १८३६॥ जानकीनायकनेहनिकेतसुभक्तिमेकर्मकोअंगनलायक॥ साधनसिद्धस्वरूपसाईसुचित्तसे
तसुधीश्रुतिसंमतन्यायक॥ कैकोउअंगनकोफलहूंलहुकोनिहठौरनभाविकभायक॥ जुगमअनन्यअरागिनिकेहितवेदपुरा
नेमवागविधायक॥ १८३७॥ कर्मकहूंवकरेतवहींलगिलागलिएश्रुतिसंवतसांचो॥ जोलौविरागअरागनहींसुचिराग ॥ नाभेने० ॥
हिमागसमेतनपांचो॥ जानकीजीवनकेगुनमेंमनमोहलच्योगफिरिभलिनराचो॥ जुगमअनन्यअमोलमहामनिपायकेचाह
तहेकोउकांचो॥ १८३८॥ ज्ञाननिर्वेदरखेदकरनप्रवेशहितप्रथमसुभक्तिमहारानीमध्यमानिए॥ ताहवीचअलपकथनमात्र

गी कु ५२

काहूभांतिशांतिसेंसहितअवलोकिचित्तछानिए ॥ अधिकैकठोरह्योरहोउतातेंअंगयोगवनतननेकुसुविवेकदृढ़ठानिए
युगलअनन्यसुकुमारसुसीमभलभजनलछनलीहिलच्छितप्रमानिए ॥ ३८३९ ॥ ज्ञानकीपरमप्रानप्रीतमप्रेममईम
हामधुराईभक्तिउदधिसुभक्तिगुन ॥ गाइएगुनेप्रागीवीनवंदनीपगतिअगतिप्रदानप्रदसंतप्रातवागमगुन ॥ ज्ञानयोग
प्रमुखसुसाधनसमहसुखसाधकअंशकसमसहसमेतधुनयुगलअनन्यअनपायनीसुटेकदृढ़धारिएसुचित्तचाव
चैगुनचढ़ायचुन ॥ ३८४० ॥ जौनसुखसरससुफलबोधयोगयागद्दानतपधर्मवरविरतिविचारतें ॥ तेसहींअनंतस्नेयसाध
नसजाएतौनसहजसुगमभक्तियोगसुखसारतें ॥ स्वर्गअपवर्गपरधामजेतेदिव्यलोकशोकसेविहीनतेतेपाइएप्रचार
तें ॥ युगलअनन्यअविलंबवीजचारचीजसमुदितहोतजोतजडितसुप्यारतें ॥ ३८४१ ॥ सीतारामलोकअभिरामनाम
रूपगुनभजनकरनचाहचितनवीचआइहै ॥ जौनछनसुछमनिवासतौनवेदूहररहितकषायकोटिकतलकंपाइहै ॥
चाहविषयपांचहूंमेरागआगतागतउतेरनहींतूटतप्रभावभक्तिभाइहै ॥ युगलअनन्यअभिलाषसेंविहीनविश्वकारज
करतईशासाधस्वादुछाइहै ॥ ३८४२ ॥ ज्ञानकीजीवनहेतसमेतकरैक्रांतजौनआहोयामसहाहै ॥ भांतिअनेकरचेउत्सवपि
तलायपलगांवरायमुद्दाहै ॥ तासुकोत्यागअयोगभनेबुधतुच्छविरागसुतुच्छजुदाहै ॥ युग्मअनन्यसहीसवींपरदृष्टसनेह
सुन्योसुखदाहै ॥ ३८४३ ॥

प

॥श्रीराम॥

जाकेजीयजीवनअधारसुमिरनस्वच्छछायपरह्योएकरसअरसविहायके॥ ताकेहीयहिरसहिरायनिपरायभिन्न॥ नानागुन
हिव्यसतसेवितसुभायके॥ सत्यसोचछमासांतिधीरजउदारदयासहजसुतोषवैरागविरतिवनायके॥ प्रगटअनन्यहायजोरर
हेआगसवस्यामछविरागपागप्रीतिनेहन्हायके॥२८४४॥ होतनहीकरिवेकोकछुश्रमसाधनकेसहूंभक्तिहृयाते॥ आपहीआ
पवसेहियेरहियेरहुतिहिवविचारिजपाते॥ जौनपहारयपांवनहीहिनपोरहींमांझमिलेअभयाते॥ प्रगटअनन्यअडोल
वहीजेहिकेरतितिसांचीविहीनहपाते॥२८४५॥ सीतारामभक्तिमहारानीरससंगखानीमांझभांतिछिविधविचारिएविवेकयु
त॥ एकअंगनिरतसुजनकोउसर्वअंगवासनानुकूलमूलरहितउमंगउत॥ एकअंगसुरतिसमेतरसवंतसंतजोनतौनश्र
वनसुकीजिएप्रमानरत॥ प्रगटअनन्यजाकेसुनतसोहागरागअमलहिमागभागसमुहितहोतवुत॥२८४६॥ श्रवनसुभक्ति
लवकुशवाल्मीकिगुनकीर्त्तनकुंभभवसुमिरनसारतय॥ परमपुनीतपदपूजनप्रवीनभरतभरतसुसेवरीसनेहसेवाप्यारपर
लंकपतिविमलविभीषनसुप्रेमरूचिवंदनविचित्रसख्यसुछुकंठपाठकर॥ प्रगटअनन्यदास्यअद्भुतहिव्यहुतिमारुतसु ॥नामने॥
वनआत्मार्पनगीधवर॥२८४७॥ कोमलाकलितकृपालकालजालहरनवधाअधिकारीकह्योकेवलललामलर॥ प्रग
टपरीछितसुव्यासश्रुतुप्रल्हादकमलान्पैपापपुजानिएउमंगउर॥ अकुरूरवंदनसुदास्यकपिराजसख्यवीचअरजुनवलि
आत्मानिवेदकर॥

युगल अनन्य मिलीकी नीमैं निरूप गोपरहसन जानि वेके जोग मुख्य मोर ह्वै अंग ॥१८४८॥ सीताराम जूके अनुरागी अंवरीष नृप
अमल अनन्य भक्ति कियो है समाज संग ॥ प्रगट पुरान मे विराजमान गाथ वर सुनत श्रवन उपजावत उछाह रंग ॥ चित्त मन मति अ
भिमान करनाहि कुल कापिक केलेशमें मिलायो जीव ज्ञानषंग ॥ युगल अनन्य कहा कीजिए वषान वलि जाइए विशेष हीं वि
हाय केजहान जंग ॥१८४९॥ संतरसवंत मन मांहि मुख्य मोह ह्वै न सोई सब तौर गौर किए चित्त न शांति सें ॥ जोन मैं मोन होय धोय वास
नाविकार स्वरह वोय खोय परवाहि सम नेहीरूप कांति सें ॥ सीताराम गुन नाम सुरुचि वषाने मित्त विशद सुवाग सोई विरहित भ्रांति सें
युगल अनन्य याही भांति करु पाइ प्रिय पावन करनतो नजाकी रति ह्यां तिसें ॥१८५०॥ जानकी रसिक सुचि सेवा सानकूल सबकी
जिए करन ज्ञान कर्म निर्द्धारिके ॥ और ठौर हेरि नेन दीजिए रवाय द्रुत राग हिलहूरि करि वासना वोहारिके ॥ याही रीति प्रीति नि
त सजत सनेम भाव चाव चित्त धारे है सुछैल सरकारिके ॥ युगल अनन्य वेरभीति हू विहीन होय जात राग रूप भक्ति भावना विहारिके ॥
स १८५१॥ वैधी रागानुगा हीं को कहत सुसंत एक मारग सुपुष्टि पथ्य पायमे रहे है सही ॥ दूजे रस वंत सीय कंत के सनेही कहें याही को
उपाँना सुश्रुद्धा मोह मय महि ॥ नाना भांति कांति निधि भक्ति महारानी जूको गुन अनुपम वरनत लाल हीं लही ॥ युगल अन
नाअन्य साधन विहाय प्रेम वाधन विचारि नेह नाधन सुयावही ॥१८५२॥ इति वैधी भक्ति पूर्ण ॥ अथ रागानुगा विचार प्रारंभ ॥ ॥०॥

॥श्रीराम॥

सीताराम सहित सुराग अनुकूल जो नतता के अनुगमन करन हारी जानिए ॥ रागानुगा नाम महामोदकारं इहा निहिं व्य[illegible]दृति
पानि भली भांति मन मानिए ॥ इष्ट महामिष्ट मों भ्रमरस सनेह स्वच्छ सोई शुभ राग आगम न प्रमानिए ॥ युगल अनन्य एकरस
तन्मयी भक्ति अशल्ल सशक्ति कृपाकोर इछ किछा निए ॥ १८५३ ॥ है युगभांति सुराग सही समुझे सुधी शोक समेत सहाई ॥ काम स
नात विचारिए बोधसें सोधि के रीति प्रतीति सजाई कैसेहूं जानकी कान्त स्वरूप मे होय प्रवेश विशेष बसचाई ॥ युगम अनन्यक्ष
तारय सो सुचि स्वारथ यहं परमो पपाई ॥ १८५४ ॥ काम है द्वेष भीति नेह सहित सुभक्ति चित्त दीजिए लगाय लाल ललितल
लाम मे ॥ हूजिए सुवेगि विषवार नी विहाय सार पीजिए पियूष प्रेम माधुरी सुधा ममे ॥ द्वेष भीति युक्त रूच्छ मुक्त मे अभेद वे द
वदत सुभेद खेद रहित कलाम मैं ॥ युगल अनन्य ज्ञान सुजन प्रमान तौन जो न राम रूप रति ज्ञाप कसु नाम मैं ॥ १८५५ ॥ जान
की जीवन योग सुकाम प्रतत्त्व प्रकासित प्रेम सोहावन ॥ कोशलखंड सें आदि सुग्रंथ मे है प्रतिपादित चौपचषावन ॥ नातो ॥नामने०॥
निहारिए श्रीदमास्पेदन तो युगभांति सों और हू पावन ॥ युगम अनन्य कहा कहिए लहिए सत संग सभावनाभावन ॥ १८५६ ॥
प्रेम प्रकाशान हेतु सुनेसद राग अहा गसुगा परसीली ॥ जानकीनाथ के नेहिन सेहित मल मिलाप रहत जिरीली ॥ वेदपुरा
नन चाहिए नेक हू केवल चाह अचाह रंगीली ॥ युगम अनन्य सिखावन स्वच्छ सु धारिए आपने ही पय असीली ॥ १८५७ ॥

सीतारामएकअभिरामहीकोमानेभुतनातमीतसुहृदसुभ्रातपतिप्यारसैं॥ औरहूंजितकजगनातहरसातसवस्यामसाथसाजेसन्वं
धएकतारसैं॥ कालव्यालजालवीचभूलिहूंवेधातनाहिमहामोहमाहिमातिरह्योसोकसारसैं॥ युगलअनन्यजानकीशकल
कृपानेहनिरतसुपायलहेलागरसधारसैं॥ १८५८॥ रागअनूपममेंभमलीविधिताहीकोहैअधिकारविचारत॥ जोनकीप्रीतिसु
नौधाविषैसवभांतिसेंवैधीस्वरूपसुधारत॥ इष्टअनिष्ठनिवारनधाममेंवाससजेसतसाजेसवारत॥ युग्मअनन्यप्रपंचपलायके
संतसजातिनसंगसह्यारत॥ १८५९॥ काहूकिवातनकानकरैकछुआपनेरंगहींमेंछकिष्याके॥ कोटिनज्ञानविधानसुनेपर
दूसरीआशानहीतिलताके॥ ताहिकोलाहप्रवाहउछाहहमेंशासनेहसदेहसमाके॥ युग्मअनन्यउभयगतिभक्तिकीरवहविही
नमिलेविनपाके॥ १८६०॥ जानकीनायककीमडुमाधुरीनैननिहारिमहामुनिमोहे॥ भामिनीहोयगएततकालहीपायप्र
सादसुकौनसोहे॥ फरिसमैंसुचिरासविलासकोजायकेमोजलिएजियजोहे॥ युग्मअनन्यनदूसरीवातविचारिएकैसेहूंहे
घसजोहे॥ १८६१॥ जानकीरशिकरूपअमलअनूपगुनमाधुरीसमानकोनईशअवतारहै॥ कोटिनकलानअंशहूंमेंएकअ
शनाहिहेरिएसुरेवालिहूगग्रंथसतसारहै॥ पांचविधिजोनजगहैप्रतीतोनकोप्रलेशविमलविभूतिशंकलेशहूनयारहै
युगलअनन्यरागकीजिएसुचारूपहृदपदुमहमेशाछोडिविषमविचारहै॥ १८६२॥ इतिसंछेपरागानुगा॥ अथभाव॥ ✣ ॥

जानकीरमनमोदचमनचरित्रवारन्मानधामज्ञवलनिवासलोककाइंना ५

२१ प्रेमकीआदिअवस्थासोईसतभाषतभावसद्यावनिशंकी॥सात्विकस्वरूपवसेतिनमैंमतिमोहमईनिजरीतिअरंकी॥को
॥श्रीराम॥ उविवेकीविचारसजेनिपछोडिछलीनकुपंथसपंकी॥युग्मअनन्यअनूपप्रेमप्रयअनुभावसुखंडलसेअवितंकी॥१८६३॥
क्षांतिव्यर्थकालविनविमलविरागमानहीनताप्रवीनबुद्धिआसरवासधारना॥एकरसप्रेमलहमथाउत्कंठउरहिरसहित
रनामगानप्रीतिपारना॥युगलअनन्यभावभूमिरूहसेमवनहोतहैप्रतछ्छअनुभावसुखसारना॥१८६४॥श्रीगुरुदेव
समीपप्रदीपसुप्रश्नकियसहरूपप्रकाश॥आकस्मातउद्योतनहरूपहरसायतहर्षहजारविभासे॥लौकिककाजकरेन
कहूंनिसिवासररंगउमंगविलासे॥युग्मअनन्यप्रपन्नप्रसन्नवसेसरजूतटतीररसासे॥१८६५॥भक्तिमहारानीरतिरू
पिनीअनंतमुनिनायकविकारहीनदरतनपावहीं॥मुक्तिमुक्तियुक्तिसुक्तिनानाअभिलाषयुक्तजेनताकेजीयलेशआ
केशहूंनआवही॥जानकीरमनभोगसागरश्यामनआपराखहींजोगायगोपचोपसरसावही॥युगलअनन्यजनभजनक ॥नामने०॥
रनमोंभपावेकोउकोटिनमेएककछविछावही॥१८६६॥होतनाप्रतछ्छभक्तिमहारानीभावरूपअतिहीअगमकृपासु
गमसुधारिए॥होतहैनकलकहूंवालकानवांछहितचिन्हचाररवटकचमत्कारभारिए॥जाननसुजानरसखानरत्पाभास
तौनअज्ञनकेवूभमेंनआवतविचारिए॥युगलअनन्ययुगभांतिप्रतिविंवछायामायाविरहितसंतछानतनिहारिए॥१८६७॥

॥श्रीराम॥

॥३३६॥

है प्रतिविंव वृहीन रतीश के जौन में अंग रती लखि आवै॥ मैननते जलधार वहै मनमाहिं गहै गुन आनन भावै॥ भोगकुरोगकु
योगतथा अपवर्गसुखादिक होत अभावै॥ युग्म अनन्य तऊ तेहि को अभिलाष अनेकन भांति पुरावै॥ १८६८॥ खेद विनामनवां
छित हेत न हेरलगे रति कीरति ऐसी॥ प्रीतम प्रेम निकेत स्वरूप उमंग सुरंग विहीन अनैसी॥ संत समागम स्वच्छ सुकीरति मं
त समुज्वल चित्त अमैसी॥ युग्म अनन्य सु चाह हिए वरभाव विधं प्रतिविंव सहै सी॥ १८६९॥ तुच्छ विस्ववासना कुतरह लस
मत जो न वंचला हरि दुःखहारिनी विमाषहै॥ महारानी भक्ति रति छाया कांति नेकु छवि मलकहै खाप दगरे तमानो वषहै

कल्प ६

नाम मात्र सहश सुकांति को करन परवस्तुत स्तु अलौं हीनता समषहै॥ युगल अनन्य संग सरस सुसंतरं च पाय अन्तमा भ
प्रगटात गते हवषहै॥ १८७०॥ भाग्य विना न लहे रति छाय पहू को निके सा करे पछितावै॥ भक्ति महान्न परानी प्रभाव कहां के
हिं भांति मने मन भावै॥ लेष अभासहु वे हिय मे सुख संपति मोक्ष प्रयंत सजावै॥ युग्म अनन्य अनेकन पंथ विहाय सुभक्ति
हीं के गुन गावै॥ १८७१॥ श्रीसियराम उपासक भक्त सहा अनुरक्तन को पद पाई॥ भार अभासहूं भाव यथा चित होत नहीं

॥३३६॥

पलमात्र कहाई॥ संत सुधी अपराध किए निर्मल नहीं भाकां गगहु हाई॥ युग्म अनन्य सियावर प्रेम निकेत भजो न जिमान
वडाई॥ १८७२॥ भाव अभाव सचाव अचाव सुवेग हीं संतन के दुखवावत॥ फेरि सहाय न कोउ के रसिय रामत जे तिन को
विन भावत॥

छायहुंभावविचित्रदृश्याशकहीनहींहोतमहाछविछावत॥दुगमअनन्यविवेकवरिष्ठमनोहरसंतसुमिष्ठसुभावत॥२८७३॥
आरतअसंगसजायमुमुक्षुनमांझसुभक्तिअभासनिहारो॥ज्ञानीस्वरूपसुमानीहिएकतहूंप्रगटैरतिछायविचारो॥भक्तअन
न्यनवीचवयथारथभावप्रमोदनिवाससवारो॥दुगमअनन्याअपक्षप्रत्तछविवितर्कनहींकवहींधियधारो॥७४॥संतनकी
करुनासरिपूरनकामसुभावसहीहिप्रभासे॥साधनअआसउदासकरेफलप्रीतमरंगउमंगविगासे॥रमनमरदनिगूढनिशासत
संगविहीनकहाकितवासे॥दुगमअनन्यसियावरवैनसुचैनप्रहायकेहारिएआसे॥२८७५॥संतनकोअपराधप्रमादसेंकै
सेंहूंकौनिहूंकालनकीजे॥हानिहुंऔअनहोनीसमानसुदेखिएदृष्टिउघारिपतीजे॥कायिकवाचिकमानसहूंनदुखा
इएसंतसुधारसपीजे॥दुगमअनन्यसुभावसदाथिरचित्तरहेकवहूंनहिछीजे॥२८७६॥साधनाविहीनसिद्धरूपसुस्वभाव
प्रियपरमअनन्यजोनठांवप्रगटतहै॥लोकविरहितअद्भुतगुनचारुचमत्कारकृतकारकप्रतक्षसुघटतहै॥ऐसोसानकूल
शूलभूलप्रतिकूलकूलकरनकेहनरतिअकपअटतहै॥दुगलअनन्यसीतारामअभिरामकृपाकलितजनितसंतसतत
रटतहै॥२८७७॥सीतारामपरमप्रमोदधामदिव्यदपाजनिंसुरतिपायजोनजनजोहिए॥काहूभांतिलोकदृगगो
चरमलीनतनवचनविलोकिमनममानिएनमोहिए॥जैसेशशिसहितसुधांशुप्रतिकाशाकरहोतनामलीनतमत्रसितसु
होहिए॥

ही ४

युगलअनन्यकृपापात्रसुभस्वछ्छजसगाइएहमेघपानीच्चवासनाविछ्छोहिए॥१८७८॥जानकीरमनरतिसहितसुसंतततनआव
रनैकेसहँनिहारिएनभूलिके॥खानपानविविधिविधानस्नानध्यानहरानेमानसनमानसजेसदाप्रेमफूलिके॥मानिएमिहेश्रा
वेशभीशावीशविस्वधारिकठिनकुसंगरंगकोजदूरिहूलिके॥युगलअनन्यअविचिंतिपचारचाहचित्तरशिकअनन्यकोन
जानेगतितिलिके॥१८७९॥भावेंसभावनिधिजानकीरशिकप्रानप्रीयतमहोतसानकूलहेरफेरविन॥जेतसुखसारसरकार
अविकारतेतेभावहीतेमिलतविशेषअनायासहिन॥वारवारकीजिएसुचाहदाहहीनभावविविधिकुचावबढ़वाइएसुमा
निछिन॥युगलअनन्यधन्यमाननीयमोदयलअमलसुसंतभावभीनेमुक्तिमुक्तिहिन॥१८८०॥इतिभावरूपसंक्षेप॥
म भावसोहावनहोतसप्रेममहाममतामनकोमलपाई॥चिनसदारससरूपरहततजिलोकिकवैदिकवीजवडाई॥चाहकरंव
विराजहंनितमोजआराममसनेहसगाई॥युगलअनन्यप्रतछ्छप्रभाप्रियप्रेमपरेशस्वरूपसहाई॥१८८१॥प्रेमपुनीत
प्रकारउभैविधिवभक्तविरक्तविवेकविहारी॥भावप्रसारसमुत्थमहामुदहायकदिव्यस्वरूपसुधारी॥भावहमेविविभां
तिसुमारगपुष्टिसेमतप्रपंचप्रहारी॥युगलअनन्यसियावरकीकरनातेउहोतअखेदवहारी॥१८८२॥जानकीजानिसु
नामउचारतहोतहिएउत्साहहजारों॥रोवतगायहँसेउठिकेपुनिनाचतराचतरंगसंवारो॥होतकहूंअनयासउदय
सतसंगप्रसादउमंगअपारो॥

॥श्रीराम॥

युग्मअनन्यपरारतिपायभुलायरहेफिरिम्हारोनपारो॥१८८३॥ जानकीसनेहसुखसागरसुलीनलालललितललामरु
परशिकसुप्रेमपर॥ देहगेहखेहसममानतविदेहदसाडोलतउमंगवसमहाउन्मत्तसर॥ काहूकीनसुनेकहेआपनीननेक
वानलोककेवेदनातकोविहायदेहभावधर॥ युगलअनन्यदूजीजिकरजलायजमजहरज्वलीनजानित्यागप्रीतिप्यारडर
१८८४॥ खेहअखेहसमानगनेमनैवावरीसीकहूँवानीअलौकिक॥ भेदअभेदनवादसुनेसनेसाजनशोकसुजैनअलौ
किक॥ माहसोपदविकौखनेछविमाधुरीलीनअधीनसुचैकिक॥ युग्मअनन्यसुप्रेमदशानिजनैननिशानिशिवासर
होकिक॥१८८५॥ लोकसमूहसशोकसहासमुझेसियरामसुप्रेमप्रचारी॥ जानकीजानिप्रधानसुभावसमुस्यप्रशाद
समेतसुधारी॥ दोउदयादगरेखविनाकोउकाललहैनसहैश्रमभारी॥ युग्मअनन्यसुप्रेमवितानप्रमानसैंबाहिरशो
कसंवारी॥१८८६॥ वैधीभावविमलसमेतसंभवतप्रेमछमछमेहतुअंकेहरिएसुनैननसैं रोमरोमपुलकप्रवाहदृ ॥नामने.॥
गरेहसुधिविगतप्रलापलोकरहितसुवैनसैं॥ गावैगीतसरससकोचकोबहायदूरिपूरिरह्योअंगअंगनूरचित्तचैनसैं
युगलअनन्यलोकशोकसैंनकाजकछुपायोप्रतिकासस्यामरूपमोदअैनसैं॥१८८७॥ सीतारामलोकअभिराममोदमई
दिव्यमूरतिसुधापगापगीतरसरीतिहीं॥ होशअफसोससपांचकोशहैविसारिवारिडारयोजालनिखिलनिहारिनिजमीतहीं॥

॥श्रीराम॥

॥३३७॥

नैनबैनचित्तचारुअवितछवितछुतिछुनउमंगअंगअंगप्रेमप्रीतहीं॥युगलअनन्यरागअनुरागसुभावगुनअमलअदाग
अंककीजिएप्रतीतहीं॥१८८७॥वेदपुरानश्रुतीरथदानदयादमनेनकीर्तिपनाहीं॥योगविरागनज्ञानरतीकहुँपाइए
खोजेहूँपैतिनपाँहीं॥ऐसेहूँजीवसुपीवपरारतिपायप्रसादपगेछविमाँहीं॥युग्मअनन्यसियावरकीकरनाकलपायप्रेमो
दउछाहीं॥१८८९॥प्रेमप्रकारविचारकिएपरहैजसजानिएवैदविवेकी॥इष्टस्वरूपमहत्वसुज्ञानसमेतसजेदृढ़ता
अतिटेकी॥दूसरोचित्तविक्षेपविहीननिरंतरलीनरहैछलछेकी॥युग्मअनन्यस्वतंत्रसनेहउपायकहेंवसमुंदमेंपैकी॥
१८९०॥वैधीभक्तिबीचज्ञानचाहिएमहत्वसत्वसाधनविशेषबेरैंपैखाँचिकैवदंतबुध॥रागानुगामांभभोरसांभएकर
सशोकचाहिएविचित्रवहवायकेसमहसुध॥सीतारामसंतसतगुरुपदकंजमंजुसेवीजनपावैंप्रेमअचलविहायजुध
युगलअनन्यनामरूपविरहितसबसाधनासुसिद्धबिरसहनछलीनछुध॥१८९१॥सीतारामरसिकपरेशानिहेतुक
पापायकमनीयसुद्धअधाहीसुपाइए॥दूजेसतसंगरसरहसनिधानतीजेभजनसुरीतिप्रेमप्रीतिपरसाइए॥चौथेअन ॥३३८॥
रथवीजसमनसुमननिछावरचित्रअनूपरूपछवोहरसाइए॥युगलअनन्यसुचिसातवोंअशेषविधिमानिएसुशाक्त
भाववससरसाइए॥१८९२॥भावभएपरप्रेमप्रभापगटातप्रवीनसुनैननिहारे॥यौंक्रमसेंशुभसच्छसनेहसनेहिनकेहिय
आयविहारे॥

॥श्रीराम॥

पाविनआनउपायकहूंवकिएयुगजाहिनसोजवहारैं॥ युगमअनन्यसियासुखदायकनामसुधासरमेसुढधारे॥१८८३॥
धमामानमनन्यगुनगन्यजौनचित्तवीचवसौमहामोहनिधिप्रेमआयआयके॥ मानिएकठिनकरतूतिमनवागपरअमल
अहागअनुरागरूपध्यायके॥ वेदविदविमलविवेकीव्यवहारविनाउमतसुवैनचैनअैनसरसायके॥ युगलअनन्यसंत
संगससुलभसववातउत्पातविरहितहरसायके॥१८८४॥ भावसुभावविभौउन्मत्तभएजनजौनप्रधानप्रकाशी॥ जानकीजी
वनमोदविनोदसवोहसुधाहिनरैननिवासी॥ मुक्तिसुमुक्तिदुरुक्तिसमानगनैसियस्यामसुनेहहुलासी॥ युगमअनन्य
सियावरकेकरनित्यविकायरहेरसरासी॥१८८५॥ प्रेमसुछेमनिवासविलाससुनेहसवाहअनेकप्रभासी॥ जानिहैंला
गलगेपियमाधुरीरूपपगेरसप्रीतमपांती॥ वातनहींकहिवेकीकछूनिजप्रीतिकथासुनिएछकिछाकी॥ युगमअनन्यस
वाहसजीमतिशापशिवादिककीसकुचाती॥१८८६॥ प्रीतिप्रतीतिप्रकाशकरेकहुकोनयथारथबुद्धिविलासी॥ स्वच्छ
सहस्रसुधाकरसेंसवभांतिअथाहनिगाहनिराशी॥ केवलकोशलराजकिशोरकृपाकिलकिंचितपायसुवाशी॥ युगमअ
नन्यविवेकिविचित्रविचारिवहैकछुरीतिसुभाषी॥१८८७॥ जानकीजीवनजाननिरावनही। जिएहानरुयाकरि
एही॥ कोनिहठौरमेंदेहधरैंतितसंगसहायमिलेनिजमही॥ रागविरागविभागनहींजिनकेउरमेंअनुरागविदेहीं॥ युगमअनन्य

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥

॥३३२॥

सुभायसुभावसहासरसोसवैपमुदमही॥१२९८॥इतिप्रेमाभक्तिसंक्षेपपूर्णी॥जानकीरमनरतिसुमतिप्रकाशाकरिकैंहरस
रूपभक्तिसाजसतसरसाय॥प्रथमविभावअनुभावविवितीजोशुभसात्विकसंचारीचौथेप्रेमपटपेरसाय॥चारिहुंसमेतनै
हनवूलनिकेतरतिरसिकनहीयवीचेरतमोरररसाय॥युगलअनन्यथिरथाईभावहोतरससरससमाजसुचिपायहींहु
रसाय॥१२९९॥पूरवजन्मकिधौंअबकीवरवासनाभक्तिसहीजियजाके होतउहैरतिस्वच्छसवादविवादविहीनस
हीउरवाके सांचेसनेहिनसंगसजेजनउज्वलचित्तलहेछविषाके॥युगमअनन्यअनेकनसाधनसाधेनहीमिलिहैतम
ताके॥१२००॥जानिहैजाहिरवाहिविभावरंगीरतिस्वादकोहेतुजोसोहत॥हैयुगभांतिसुकांतिआलंबनऔरउद्दीपन
जोकसेंजोहत॥तोंहीअलंबनहूंविविधिव्यविधेतिमिक्राश्रयचित्तकोमोहत॥युगमअनन्यउद्दीपनहूंतेहितौंउ
मयविधिवेदविपोहत॥१२०१॥जानकीनाहउछाहमहानिधिनायकश्रीशमुनीशविमोहन॥सोईसरैवविषयअवलं
वनदूसरोकेसहूंहोतनसोहन॥प्रेमपरागपगेरसभाजनजानुअधारअलंवनछोहन॥युगमअनन्यसिपावरकेगुनभू
षनआदिउदीपनजोहन॥१२०२॥हैअनुभावविप्राषरसोचितरीतिप्रतच्छलषावनहारे॥सात्विकहूंवसुभांतिविराजत
हेतमहामुदसेवनहारे॥तेतिसभांतिसुगौरकिएव्यभिचारीवयानविचित्रविहारें॥युगमअनन्यसमासकथोकहिहौंपुनिव्यास
सनेहसहारे॥२०३॥

॥३३२॥

युगलअनन्यकोशलेशसर्वेशदेशअवधअनन्यमानौलक हाजानि है अब को घत्राज ८

कोटि कोटि ईश अवतार अवतारी जो न तौ न रूष अंश समवरत विशेषलाज॥ जानकी रसिक सिरताज महाराज गुन अगुन अधा

र सुख सार सम सहित समाज॥ ऐसो कौन अंध मत्त योग रोग लीन नर कहै आन तौ तारगौ रर हित करै अकाज॥ १२०४॥ श्रीसियराम

॥श्रीराम॥ मनोहर मोहन है गुन दिव्य कदंब प्रभाकर॥ हरि एहायहि राय मली विधि गरिए ज्ञान गुमान दुराकर॥ भावनाई करै अनंत पर श्री

४ ख पार एसौ जक हां सुभाकर॥ युगम अनन्य सियावर की दुति देखि कै मोह महामुनि आकर॥ १२०५॥ जानकीरमन जू के नखचंप्र

काश पर वारिए अनंत अवतार विष्णु भगवान॥ महँ विष्णु दिव्य गुन अमल रती क अंश वेद बुध विमल प्रशंसा जाहि री जहान

अद्वितीय व्यापक अखंड ब्रह्मांत जकछु कलित पदार्थहैं तेय जोन ज्ञानवान॥ युगल अनन्य अज्ञ जानै कहा राम रूप अमल अ

चिंत्य एकरस रंग रस खान॥ १२०६॥ जानकीनाह निवाह करै कलने ह अनूप महीप मैं हेरो॥ और मो काम मैं मैं गोर किए पर पैं रए

रंच कहूं उर भेरो॥ पोथिन की कथनी सुनि के मन आनिए भूलिहूं नाहि अधेरो॥ युगम अनन्य संमत्त वेद पुरान वेद वहु वाद व ॥नाममे॰॥

खेरो॥ १२०७॥ श्रीअवधेश किशोर स्वरूप अलौकिक मांहि सुदिव्यक सजावो॥ होयहमेशरहामुशताक उपासना वासना आनत जा

वो॥ केवल जानकीकांत को दृग लाय कै सुस्थिर भाव मैं जावो॥ युगम अनन्य अहागम हार समार सोहाग सुभाग पजावो॥ १२०८॥

जानकीजीवन नायक श्रीशसिरोमनि के गुन दिव्य विचारत॥ होत महामुद मोद हिए जगजाल जवाल जरै अति आरत॥ शेशमहेश

इति तकिशोरावत चोरस करस वधु देहीं दहमि ल्लातार हित ग्रवि कार है ॥ २

नपारलहे वरनेक विमंद कहो किमि भारत ॥ युगल अनन्य तउ करुनाकर कोशलराज हृदै दृढ धारत ॥ १२०९ ॥ शुभ गरसीले अंग
अमित अनंग मान भंग के करन कौन कहै मन पार है ॥ सुंदर स्वभाव सिंधु सरस सुलक्ष्म धाम रुचिर अनंत तेज पुंज बल सार है ॥
युगल अनन्य नानादिशा जीव भाषा विद सुरित्त सुवाग राग अमल अगार है ॥ १२१० ॥ प्रियंवद वावदूक पंडित सुबुद्धिमा
न प्रतिभानवान दक्ष चतुर विदग्ध वर ॥ दृढव्रत कलित कृतज्ञ देश काल पात्र ज्ञाता भली भांति शास्त्र वक्ता सुशुचि वशी तर
धीर दांत क्षमाशील धैर्यमान धार्मिक शूर गुन गहन गंभीर हीर गीरसर ॥ युगल अनन्य जानकीश के समान आन दूसरो
वदान्य को उदैश्यान मैं नाहि पर ॥ १२११ ॥ मान्य मान्यकर जानिकेत विनई विचित्र दक्षिनानुकूल शरनागत सुपाल नित
लाज सैं सहित भक्ति सुहित सुप्रेम वश्य सुखी कृतिमान रक लोक शोक ओक हर्त्त ॥ सर्व सुखकारी त्यों प्रतापी तापहारी
साधु संत आश्रित चैन दैन लोकनाथ वित ॥ युगल अनन्य नारी गन मन हारी वरिपानर स्वैरशा सुखकारी जीव जाल हित ॥
१२१२ ॥ सत्य शौच दया शांति त्याग शम दम तप आर्जव तोष जानु विमल विराग वर ॥ सौर्य्य शील सहन सहज श्रुत सानु
कूल शूल विरहित भूति दायक उमंग उर ॥ शांत तत स्वतंत्र कल कुशल सुधाम कांति धीरज अडोल महताई सें विचित्र तर ॥
युगल अनन्य ओज सब लसु कीर्तिमान महामोद रंग रसखान प्रानदा हुहर ॥ १२१३ ॥ श्रीसियराम स्वरूप सुधाकर चाकर की
समता न लहेग ॥

ईशान तयां अवतार अनेकन औरन की गनती न गहेंगे ॥ एक से एक अजायब दिव्य महागुन ज्ञान निधान चहेंगे ॥ उपम अनम्य

॥श्रीराम॥ अभाग दहे हिल्ल कोटिनेक लाज हानव हेंगे ॥१२-१४॥ हे गुन पांच अनाच विलक्षन सो सियराम सदंशन माहीं ॥ श्री गिरिजा

पति आदि विरंचि हू मे हर से हु तिहि ख्याता छांहीं ॥ सुद्ध स्वरूप सुप्राप्त सहा सिधि से विनतो सर्वज्ञ सुचाहीं ॥ उपम अनन्य

सुसज्ञित आनंद नूतन नित अमितता नाहीं ॥१२-१५॥ पांच गुन और गौर कीजे सब तौर वोर कुमति कलान को कदाय भ

ली भांति हीं अविचिंत्य शक्ति अवतारन अनंत वीज है नो गति स्वच्छ शत्रु व्याप्त वपु कांति हीं ॥ आत्मा सुराम मनिरखो चनो

लखाय गुन परम पियूष को मिटाप मरम्यो तिहीं ॥ पुगल अनन्य पर व्योमना पमध्य रहरहत हमेशा कोश लेश कृपा प्रांत हीं ॥

१२-१६॥ जानकी नायक की करुना कमनीय सुलेश विभव अभिअंतर ॥ औरन के हित ईश अखंडित वेद पुरान प्रमान

स्वतंतर ॥ वारहिं वार विचार किए पर सेवक सेव्य सुभाय निरंतर ॥ उपम अनन्य सियावर नाम विभूति अनूपम टार ए यंतर ॥ ॥नामने॰॥

१२-१७॥ जानकी जीवन जू में पधार थपार ए श्री गुनन व्य अनूपम ॥ है कछु और हू ठोर सही सो सियावर अंश प्रशंसा निरूपम

जोगन २ श्री अवधेश परेश विशेष असाधारने दिव्य स्वरूप म ॥ उपम अनन्य वखाने वने न हि जानिहै भेद अखेद मिटे तम ॥१२-१८॥ मोह

मुनिनायक सुजान ध्यान ज्ञान लीन वामा रूप हाय रमे लाज हूं विहंयके ॥ ईसे सी महानरिपु लोभे रूप सार लषि महा अद्भुत बात सुनो गु

नगाय के ॥

नानारागरंगकेनिकेतनँयिकानवंदनायकअनूपएकरसछविछायके॥ जुगलअनन्यरिपुपरमसुसीषपुनिदेनोमुनिभीषमक्तिधामहूंअछायके॥ १२२१९॥ परमउदारपारावारपरधामत्यागिआएभूमिमाँझहीनदीननिमित्तहीं॥ सहजसुभायतारिहिएहैअनंतजीवेवेदमर्य्यादाहूंविलोपिकेअचिंतहीं॥ ऐसेगुनअननतनकैसेहूंमिलेगोखोजकीजेतनछीजेवातसांचनिजनित्तहीं॥ जुगलअनन्यअसाधारनसमूहगुनधोषेकेसमानआनठांवभाननित्तहीं॥ १२२२०॥ स्वामिनीसीयसनेहसदासुचिपायप्रसन्नप्रपन्नरहावै॥ भानुप्रभासमबेदवदैवरवागअदागसुभागसोहावै॥ आधनिमेषनहींविछुरैंकहिआनकथातितहेतुथहावै॥ जुगमअनन्यप्रकासाकहैंनिजसहचरीकिंकरीसाथचहावै॥ १२२२१॥ हैअनकूलसदासियकेपियअंतरदूसरीवातनभावै॥ लाडसनेहसुप्यारस्वेछनहीछनमोदसमुंदसमावै॥ ऐसेनहींकतहूंअनकूलसुदृस्तिनतापुटुवेदवतावै॥ जुगमअनन्यसियावरकीसमताकहनोअछपुंजगनावै॥ १२२२२॥ वेनुवीनसरससितारवरवाद्यमृदुमधुरमनोर्थमुददायकविचित्रहै॥ वारकअरवनजनसुनततसुलीनहोतजोतजगमगतपरमानिकपवित्रहै॥ रोमरोमसोमसमसीतलसुसीरस्वच्छपरमप्रतछप्रेमसवलसचित्रहै॥ जुगलअनन्यसीतानाहगुनथाहविनुअकथअनूपऐदवारिधिवहित्रहै॥ १२२२३॥ जानकीजीवनजूकीमहामधुराईसुधामसरसाईसोहाई॥ अंगउपांगसुसौंजसभीसुखमायनवेदविचित्रवडाई॥

॥श्रीराम॥

श्री सिय राम चरित्र पवित्र विलोकिए व गति विशेष गड़ाई ॥ प्रेम अनन्य न दूसरो फेर रुचे चित चाव प्रभाव बसाई ॥ १२२४ ॥
औरहुँ ध्यान व पान करैं कछु सो सब पक्ष सनेह विचारो ॥ जानकी नाथ कहि व्यगुना कर रूप रहस्य दुरूह निहारो ॥ कोटिन सि
द्ध सिरोमनि माहिं कृपा बल ते कोउ एक सम्हारो ॥ प्रेम अनन्य सियावर की छवि है हिरदे जारन ईश ता तावारो ॥ १२२५ ॥ श्री सिय
राम सुधाम निहारिए नैन अनैन कुसंग विहाए ॥ माधुरता बहु भांति रहै तेथ लहै दूसरो बीच न रंच कहूं पाए ॥ श्री गिरिजापति ध्यान तन
य सुचि सेवक जौन के ईश सोहाए ॥ प्रेम अनन्य कुतर्क कलान को वेगि वहाय सजो सब भाए ॥ १२२६ ॥ जानकी जीवन प्रीतम
की प्रति भा प्रति बिंब जो आय बसेगी ॥ तौन की गाथ अनाथन को शुचि साथ सनाथ करी विगसेगी ॥ कोटिन नाथ पिका मेह नहीं तन प्रा
न हूं वारि हिए सरसेगी ॥ प्रेम अनन्य न आन फवे छवि माधुरी चातुरी पास रसेगी ॥ १२२७ ॥ और न ईशन के पद में निज चो विश्व
लोक सुमन्त्र अंक गनाए ॥ तासु में नित्य ता है दसापांचहीं वेद पुरान प्रसिद्ध जनाए ॥ चालिस आठ कपाट उघार न लक्षन श्री पद
कंज लखनाए ॥ प्रेम अनन्य कथा व कैते वद वाद विचार विहीन धुनाए ॥ १२२८ ॥ पक्ष परोक्ष लिए लिखते सब आपने इष्टन की
प्रभुताई ॥ वास्तव खोज किए न मिले कहुं वा मनन सें उतपात बनाई ॥ श्री अवधेश परेश परात्पर स्वामिनी में अपरोक्ष जनाई ॥
प्रेम अनन्य अनेक कुमारग भावना भूलि गए रस पाई ॥ १२२९ ॥ चारि भांति कांति निधि ईश के स्वरूप मांझ रमसुधाम निकेत पाहि चानिए ॥

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥

॥३६४१॥

पूरनसुपूर्णापूर्णांतरपूर्णांतमपुनिविष्णुभगवानपरव्योमनाथजानिए॥ तीजोपरह्नअसहदमनवृत्तिसुद्धकसचंद्रमेंविवेकसें
समेतअनुमानिए॥ युगलअनन्यसीतानाहपरमेशापरिपूरनसुचोथपूर्णतैप्रमठानिए॥ १२३०॥ ईशाजितेकहलावतहैंतिनमें
सियरामहींकीप्रभुताई॥ व्यापिरहीनऐतेसिखलोवड़ौरपरानप्रमानसोहाई॥ श्रीपरसाधरगीतपपादहगरबोलिकेहेरिएचित्र
चढाई॥ युगमअनन्यमहामतिमंदनमोलिकहेकिमिवातवनाई॥ १२३१॥ चारिभांतिनायकस्वरूपभेदभावमएसमयअनुसा
रपायोजाननजनंदमें॥ धीरोदात्तधीरयुतललितसुधीरशांतधीरोद्धतअर्थयाकोसुनोगुनोपंदमें॥ गहरगंभीरक्षांतविनयीक
रुनगर्वगूढअकथनरससुजसअर्फंदमें॥ युगलअनन्यदृढसुव्रतसुधीरोदात्तकेवलकृपालकोशलेशहींअवंदमें॥ १२३२॥
प्रेमपरिहांसमेंविसारदविदग्धनवनानुकअजूवतरुनाईछविरासहै॥ सहांसवरीतिसेंनिचिंतचिंतनाहिहरधीरसुवि
ललितसमर्पअर्पखासहै॥ नानाभांतिनीतिरीतिसाधुतासुधर्मधामजानिएविशेषधीरशांतभिन्नआसहै॥ युगलअ
नन्यधीरोद्धतताअयोगतउकेलिमेलिमांझयोगताईअनायासहै॥ १२३३॥ मायावीसमात्सर्यसहितवखानेगुनआ
पनोचपलरोषअहंकारजानिए॥ कोशलेशमध्यचारोभांतिसुहेतगुनयदिविरोधवोधसहितविहानिए॥ चाहेजोनक
रईशताईमेंसुलीनपुनिताहमांझलीलाअनुकूलहींप्रमानिए॥ युगलअनन्यसीतानाहसेविभिन्नमीतकोउगुनकतहूंकदापि
नप्रमानिए॥ १२३४

॥३६४१॥

॥श्रीराम॥

जानकीजीवननायकभूपसिरोमनिमध्यसभीगुनजानो॥ वेदपुरानप्रमानपदूसियरामचरित्रअनंतसुमानो॥ रामविलासविह
रविभवबहुभांतिसुधीरसिकेसापछानो॥ युगमअनन्यकहैवकषायविहीनहिएअनुरागसमानो॥ १८३५॥ दशआठऔगुन
विहीनजानकीशवपुसदाशांतचितघनआनंदनिवासहै॥ मोहमात्सर्यखेदचाहभ्रमकामनीचपरिश्रमहिंसामदलोलु
पताव्हासहै॥ वैसहीं असत्यविस्वविभ्रमविषमओरचाहनोसहायतंद्राभीतिभावभासहै॥ युगलअनन्यदच्छतानअंग
मामकहूंसुदच्छतासुधामरूपसहितहुलासहै॥ १८३६॥ श्रीअवधेशकिशोरमनोहरमांहिसुधासमहैगुनओरो॥ शोभावि
लाससुमाधुरतानिमिमंगलधीरसुभावअचोरो॥ तेजविचित्रपवित्रसुलालितआठहुजामउदारसुगोरो॥ युगमअन
न्यविवेककिएपरहैरतहींनकहूंतिलछोरो॥ १८३७॥ सत्यशौचसरलताअनूपउत्साहदयापावनहूपैएकरससोभास्व
च्छहै॥ मंदमुशक्यानसैंसमेतवरवागधीरमधुरमरालचालदृशरासुलच्छहै॥ अंगअंगरंगरससिंधुमनमोललेतर
तमोहमाधुरस्वरूपपरतच्छहै॥ युगलअनन्यविस्वास्पदविस्वजनमंगलप्रदानदैनमंगलेशापच्छहै॥ १८३८॥ धीरगं
भीरवहासहहींतिलपावहलेनचलेहुखपाईं॥ विघ्नअनंतअसंतनसैंनहिंआकुलताकतहूंहरसाईं॥ हेतरतेजसोईसव
कोचितमेंप्रतिकाशाकेरछविछाई॥ युगमअनन्यविदेहपुरीविचजानिएतौनविचारिवताई॥ १८३९॥ श्रीरसराज सुराज

॥नामने०॥

सुराजसमाजसहा विलसेसरसेललिताई ॥ लाडिलीरूप पियूषनिरंतरपानतहांननभानमुलाई ॥ केलिकरंवप्रकाशहा
अभिलाश गुने भगुमानगंवाई ॥ प्रेमअनन्यउहारतासोवपुस्यौनिजसंपतिदानसोहाई ॥ १२४० ॥ जानकीरसिकविन
सरोउहारकौनभालुकपिरेनचरजायकेनेवाजेहै ॥ सवरीसें आहितुछपासमैंपयानकरिइवानव्यभवारूपआपनोसुछा
जेहै ॥ एकइलनुलसिकासुनीरहं चटाएशीसकेरवकशीपालनरिनीसिरनाजेहै ॥ प्रगलअनन्यऔरहैास्यैसाकहांमित्र
चित्रमेउहारतासुगायविस्वभ्राजेहै ॥ १२४१ ॥ हैंगुननायकमौलिमहामनिमध्यअनेककहाकहेकोई ॥ चित्तचोरावनवा
रसवीतसवीरहंइतजिन्हायनकोई ॥ जानिहैंकोइनिमेंकोउएकविवेकविनोदविचित्रसमोई ॥ प्रेमअनन्यअमोलअतोल
सुकीरतिगायउछाहसंचोई ॥ १२४२ ॥ जानकीजीवनकीछविमाधुरीमांझलुभायविनानकहूंसुख ॥ सांचेहींवैनसचैनकहें
मनमानिकेछोडिएभ्रममहादुख ॥ हेमतवादविवादभरेसवनाहकछ्रअन्नलिएहनिएतुष ॥ प्रेमअनन्यसुभागसोहावन
भाजन~~भाजन~~सोजिनकेजसहेमुख ॥ १२४३ ॥ जानकीजीवनभक्तिरसारतिलीनप्रवीनैंहीसवैंभांती ॥ जानकीनाहअपारहसु
चाहसुभावसमेतरहैंदिनराती ॥ श्रीरघुवीरसुधीरजितेगुनसत्यसोहावनवागविभाती ॥ प्रेमअनन्यलखेतिनमेंसवभ
क्तिप्रभावअनूपमकांती ॥ १२४४ ॥ साधकसिद्धउभयविधिसोंश्रुतिसंमतज्ञानमेइम्प्रेखहृवखाने ॥ साधकस्वच्छसोईजिनकेरति
हायप्रेमविशुद्धविहीनप्रमाने ॥

॥श्रीराम॥

श्रीअवधेशकिशोरप्रतच्छतायोग्यसुसाधनसिंधुसमाने॥युगमअनन्यनिसानवजायकेपारहैप्रीतमरूपसयाने॥१२४५
वांध्योकरिकेहरकलानकतलामकरिकायकृतकलिलकलेशहूंवहाएहै॥ आठजामहोयरोमरोममेंमिलायचाहजायनिज
नाहनामसुधासुभाएहै॥रोवैंवारवारगुनगावैंगौरस्यामहोरहामिनीदुरायलोकवासनानसाएहैं॥युगलअनन्यसोईसा
धकसुमेलमनिवडेभागभक्तिकृपापायसरसाएहैं॥ १२४६॥जानेनजहानहानभानखानपानमानपागरसखानप्रभुस्वाद
मेंशाहीं॥ जानकीरमनजूकेआश्रितकरमकुलशून्यअभिमानछकेरूपपरमेमाहीं॥ सिद्धभक्तितीनभाँतिनामेयुगजानिएजूप्र
प्रसिद्धनित्यसिद्धशुद्धसुखहैमाहीं॥ युगलअनन्यआदिवीचसतसंगरंगनेहएकरसऽछसुजससविशेषाहीं॥ १२४७॥गा
वतश्रीरघुनाथकेकेगुननैनननीरमनोपिचकारी॥ आठहूंसात्विकप्रीतिउद्योतनज्ञानगुमानविधाननिकारी॥प्रीतमेंस्वरूपसु
वारककानसुनेउत्साहअपारी॥युगमअनन्यसुसाधनसिद्धमनोहररीतिविचारिएवारी॥१२४८॥साधनसिद्धसुबीच
द्विधागतिसाधनऔरकृपासियस्वामी॥ आपुसमेंमिलिकेगुनगानप्रधानकरेंनित्तनेहअरामी॥ केवलकांतकृपाकम
नीलखिदृमेरोहोतउमंगमोदामी॥युगमअनन्यअजूउभैप्रभुताप्रतिहेतुविचित्रसुधामी॥१२४९॥योगयज्ञप्रमुखउपाय
करिभेंटस्यामरामअभिरामतीनजानासिद्धसाधना॥ किएविनाखेदश्रमपावनोपरेशापरअसहअतीतहोयकृपासिद्धआधना॥

नाम

नित्यसिद्ध सोई जाके कैसें हूं विछोह नाहिं सदा सावधान से वास जग आराधना॥ पुग्गल अनन्य नित्यमुक्त भक्त भाव वपु सुमन नि
वास रवास हूं सरी उपाधना॥ २८५०॥ आवें संग स्यामलोक ललित विचित्र धाम हरि संचारु चरित वरायचित्त चौगुनो॥ नाना
भांति शांति कांति कलित सुवेन चैन हैं न हीं उचारि शौक साजें सार सौगुनो॥ कर्म ईश के समान आवरन हीन हीन छीन भावना वि
हाय मो जगन्मनो गुनो॥ पुग्गल अनन्य ऐसी भांति सिद्धरूप नित्य अधिक अनूप रूप पार स्पोन मौ गुनो॥ २८५१॥ केवल कोशलपाल
कृपाल कीने कनिगाह हूं मैं थाही चाहिए॥ जेवल आपनो खेवा पर हेत तत काल मिले महवूव उमाहिए॥ मूरिसजीवन खोजि के दूरि धरे
विषतीषन नाहि विगाहिए॥ पुग्गल अनन्य अनेक नत कैं विहाय के नेह निशातनि वाहिए॥ २८५२॥ पांच प्रकार विहार विमल मल
भाजन भक्ति सुवेद वखाने॥ शांत सुदास्य सखा गुरुता युत प्रेयसी भाव प्रभाव प्रमाने॥ आठहूं जाम विराम न हीं अभिराम सु
सेवन सिंधु समाने॥ पुग्गल अनन्य अनूपम प्रेम पै लाडिली लाल ललाम लोभाने॥ २८५३॥ है रस पांच हूं दिव्य द्विधा रत उज्व
ल धाम परे यासु मांही॥ साधन सिद्ध सुभेद ललेस परे हैं जग एक सु संत सराही॥ जो न सुभाव में चाव च दे चित तो न हीं धारिए
आपने पाहीं॥ पुग्गल अनन्य अनेक उपाय विचारिए यार सकी परिछांहीं॥ २८५४॥ नाना सैं समेत भाव केवल प्रधान प्रेम मद्धे
महा उ भांति कांति रस अनुकूल है॥ पक्षपात वात कुराफात पांच सात छिन है रिव ए विचारि फेरि वाद प्रतिकूल है॥ ॥

॥श्रीराम॥

महामोदमधुरसुगंधपरिपूरितथोकथोनहींजातमानोमंजुकंजफूलहै ॥ युगलअनन्यअनमोलरसरागहीनवारवारसनेहसो
कजन्ममीचशूलहैं ॥ १२५५ ॥ भावभलीभांतिहीं उद्दीपनकरतजेनतेनहीकोकहतउद्दीपनरशिकजन ॥ जानकीरसिकज
नकोदिव्यभवनवागुनभूषनवसनआदिधारिएस्वरूपधन ॥ सरससुगंधसुशाकपानमंदमंदचंदकरनघँथानमहामोदहैनव
न ॥ युगलअनन्यवीननूपुरसुकंजकरकंकनकलितकिंकिनीहूंशोकसारसन ॥ १२५६ ॥ श्रीतुलसीपदचंद्रकअनूपमजानकी
रामसुवासरसोहन ॥ श्रीसरयूनवनीरमनोहरवेनुसुधामलतामनमोहन ॥ जानकीजीवनरूपसुधारससिंधुसखीहद्य
नाहिकजोहन ॥ युग्मअनन्यस्वरूपसुमाधुरीजानिएभावउद्दीपनगोहन ॥ १२५७ ॥ कायिकवाचिकमानसहैंगुनश्रीरघु
वीरतघातमजानो ॥ होतउद्दीपनहूंकबहूंवरभेदउपासकराजप्रमानो ॥ औरहूंवस्तुविचित्रमनोहरइष्टउद्दीपनयोग्यसुजा
नो ॥ युग्मअनन्यसनेहीनकेहियआकस्मातछटाछविछानो ॥ १२५८ ॥ जानकीजीवनरूपपियूषसवादसुसंतस
हसरसाए ॥ अर्थअनेकनभांतिउद्दीपनप्रेमउछाहसमेतसजाए ॥ नामहींमात्रसुनायकहींअभि~~अभि~~अंतरअर्थसम
र्थसहाए ॥ युग्मअनन्यपगेरहिएहरसायतमाधुरीमांझनहाए ॥ १२५९ ॥ पांचहूंकारनलोभनिवारनजागहृषीकवि
षैमनसंगी ॥ वस्तुचराचररूपउद्दीपनबोधविसुद्धभएरसरंगी ॥ दिव्यसनेहउदीतभएपरहोतहैएकहींअंगहूंअंगी ॥ युग्म

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥

॥३४५॥

अनन्यअजुवरसारसएकरहेनकहाचितभंगी॥१२६०॥इतिउद्दीपनभाव॥अथअनुभाव॥हैअनुभावप्रभावएहीचितभावप्रबोधविशेषकरावै॥वाहरगोचररहैकरवापसनेहिनकेमनमोदभरावै॥हैरसनायकमोंहियथायथदूसरीठौरमेंरंचटरावै॥पुगमअनन्यसमासमुलच्छननामसमेतबतायतरावै॥१२६१॥नत्यविलुंठितगीततथाकरकोमननमोदनहोयविचारो॥हेहुंकारसुजंभनस्वासविमोचजहानसेभिन्ननिहारो॥लालरलारअंगेमुखसेंअटहाससुघूरनितनेनविचारो॥पुगमअनन्यवैदेहिवकौकहिजातिनप्रीतिकीरीतिसुधारो॥१२६२॥शीतलछेपनभाँतिद्विधासुचिसंतसनेहसनेनिरधारत॥सीतसुगीतविजंभनआदिकतेसहीनत्यसुछेपसवांरत॥होउमेंमेहअखेहलसेनत्यादिकरीतविनीतविचारत॥पुगमअनन्यरहस्यरसामननमोंमविचारतप्रेमप्रचारत॥१२६३॥जानकीजीवनबीननवीनबजायप्रवीनमनोहरप्यारो॥मोहिलिएललनागनधावेंजगमहंकीदशाजगन्यारो॥काहूकेहोशहवासरह्योनहिनाचिवोनैननिहारिविहारो॥पुगमअनन्यकरोरनकौतुककेलिकलापलपावपसारो॥१२६४॥नाजनीनायकानेहनिरंतरभीनीनआपकोवामविरैं॥नायकमौलिमनीसमनोहरनाचनोनीरनिवारिनिहारें॥बाजनवीनविहारविभासाविलासवजायतनोमनवारें॥पुगमअनन्यअगोचरगीतपुनीतकथाकमनीयकतारे॥१२६५॥श्रीसियराममनोजविनिंदिकअंककअंपकसपंकनिहारी॥लोटतभक्तिविरक्तसुरक्तउपाधिअनेकनकेसुविसारी॥

॥३४५॥

चा

आ म र न न प त नि चो ल मो ल ती ल वि ना अं ग अं ग द म न अ नं ठ या ह घि त व र

१४

॥श्रीराम॥

५ चोरत

जानकीजीवनकेगुनकोगनिगावनपावतप्रीतिपसारी॥युग्मअनन्यअलोकिकरीतिहमेमग्नाहींहीयमेभोकसुधारी॥१२६६
श्रीसियजीवनकीरतिकोटिकलानितउच्चलजोनविरोधी॥तौनहींकोखलदुष्टनिशाचरजानिएमानिएभावविरोधी
श्रीरघुनायककेकरकंजसेंहोतसोईवधकामुकक्रोधी॥युग्मअनन्यसुनेहरखैरससागरमीनप्रवीननिरोधी॥१२६७॥
माईसुमसाधनसुफूलफलस्वच्छरससमुझिएँतनप्रसाधनविचित्रवर॥भालबीचतिलकचिलककलकामीरहीन्हेचा
रुचंदनअनूपउपमानवर॥युगलअनन्यचित्तैंसुपीतपटकंचुकचमत्कारकोटिभानुभानुहर॥१२६८॥काहूसमेअरुन
सुवाससुरभितवासहरितविचित्ररंगकिंशुकसोहावनो॥महामोदमेंहिरनेपशाप्रियप्रानसमवसनगुलाबआवधारेअं
गभावनो॥कोटिकमनीयरमनीयपगरागगुनैकपअनूवचहैंओरछविछावनो॥युगलअनन्यकेशकलितसुवेश
हेमांछितबीरीवदनसुकांतिचित्तचावनो॥१२६९॥सोहतश्रीसियजीवनकीजुल्फेमनमोहनजीवमगांधे॥रंगअनूवन
केकलकिंशुकस्याममिलेहुतिसोगुनसाथे॥वारकनापनिगाहपरेचितचाहचरेनेवछावरमाथे॥युग्मअनन्यअनन्यउ
पासकआलिनकीजनुजीवनपाथे॥१२७०॥मालात्रिधाचितचोरनहीयेममोदप्रमोदविनोदवदाती॥श्रीवनमालम
हामनिमालरसालवैजंतीउमंगगदाती॥पावलेगमनिजानुप्रयंतसुपामलोहूसरीचैनचदाती॥युग्मअनन्यसुहीप

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥

॥३४६॥

लघोरननाधिपहासमसुकांतिकदाती॥१२७१॥श्रीसियरूपाममुखांबुजमांहि मनोजविमोहनचित्रविराजत॥भांतिअने
कनकीरचनारंगकीनकहोंछनहींछनछाजत॥त्योंनखसेंसिरएलोकवहूंहरिचंदनचारुछटाभलिभ्राजत॥ग्रमअनन्य
सुकेशरलेपललामकिएसुखमाशतसाजत॥१२७२॥नूपुरपायनमेंपहिरेकलकुंडलकानजगामगजोती॥चित्तचोरन
चूडकिरीटललस्मुक्ताफलनाशिकामछविहोती॥किंकिनिकंकनहारहमेलअनूपमअंगहवांकुसंजोती॥ग्रमअनन्य
निरुपिसकेद्युतिमैंतसुकल्पकहांमतिओती॥१२७३॥श्रीमुखमोहनकोमुशकौंनबखानकहेंकविकोनतिलोकी॥पूरनप्रेम
प्रभापरमानंदपूरिरहीछकिजेनविलोकी॥प्रीतिपियूषप्रवाहकिधौंसुखमानिधिउज्वलताअवलोकी॥ग्रमअन
न्यअनेकनतापविलापकलापहरेतनशोकी॥१२७४॥श्रीसियजीवननूपुरकीधुनिमोहनजोनसुनीसखियांकी॥
होयगईगतिओरहीभांतिकहाकहिएरहिएतननाकी॥चित्रहैकीसमतानसजेतहप्रीतिमनोहरअंगनछाकी॥ग्रमअ
नन्यसुलाजगईकहुंवारनेहोयगईसुअहाकी॥१२७५॥ज्ञानकीजीवनपायनमेंनवनूपुरनेहनवीननिहारो॥प्रेमभरेअ
नुरागिनकीउपमाविषतुच्छताचित्तविचारो॥कानबराटिकाकेसमनाहइशोतहिकेनिजपाससुधारो॥ग्रमअनन्यक
हांसमताबुनिनूपुरकीगतिलोकसन्यारो॥१२७६॥श्रीसियप्रीतमभोरमहामुदमेंहिरपायपुनीतसुलच्छन॥ ⁜ ॥

॥३४६॥

हम २

॥श्रीराम॥

चालिशआठलसेरसप्रेमकेमाठमनोहरहेहरिएअच्छन॥देखतहींदृगनीरसुधावपुवीचवदेपुलकावलीतच्छन॥जुगमअ
नन्यभुलाय़विशेषहींजाततहांतजिमानविचच्छन॥१९७७॥हेअनुरागसुरंगरसायनअंकअसंककरेपलअंतर॥मोंहातम
तोमनसेशःकसर्वसुजापिरचिन्हकोमंतर॥चलताचित्तनेकनपेखिपरेहियेरमधिअंकजसोजनुयंतर॥जुगमअनन्यकृता
र्थकोटिनजीव़केरसबभांतिसोंतंतर॥१९७८॥चिन्हकोचाराँवैचारुचरनपुनीतअंककंजकमनीयध्वजकुलिसमयंक
जव़॥कामधेनुपुरुषप्रसिद्धवीनवंसीवरनैननजाअनूपऊर्द्धरेखारथनित्यनव़॥महामूलमायाजीवबिंदुअर्द्धइंदुकलक
लशपिय़षटवंअमरसुधेनुधव़॥जुगलअनन्यमनमोहनमुकुटहरिआसनअन्नवरखवचंद्रिकादुरावैदव़॥१९७९॥
श्रीसियराममहामुदधाममनोहरअंकहिएनितध्यावो॥लोकअशोकसमेतसोहावनरूपतुरीयकृपापथपावो॥चाहमनेन
करहेचित्तमेसुखसागरवीचविशेषसमावो॥जुगमअनन्यकेराननकलाकोकीचकलेशकलंकनशावो॥१९८०॥श्री
अवधेशकिशोरअनूपमकेलिनिकेतरसाद्रुतिदेखो॥छायरहीचहुंघाछविछावनीसावनीप्रीतिसमायपरेखो॥जानकी
जीवनरूपयुनाहिंकआपहींआपउदैउरपेखो॥जुगमसुधामवसोरससागरसोफलजीवनलेखो॥१९८१॥धामसुनामम
हाअभिरामजपोवसुजामउपाधिविसारी॥आमकलामगुलामकुसंगविशेषविहाइएभावविचारी॥श्रीसरजूतटतीर

अनन्य२

॥नामने०॥

हेउ वन वाग विलोकि भरो मुद भारी॥ प्रेम अनन्य अभाव तिहूं पुर की जिए श्री विमला रुचि धारी॥१२२२॥ श्रीतुलसी विलसीं छ-
वि पुंज भरी प्रिय भाल विराजी॥ अंग ही अंग मे छाय रही दुति स्याम स्वरूप सजाय सुराजी॥ हे जिए जानकी जानि मिलाय चहे हिय चित
मे अभिलास समाजी॥ प्रेम अनन्य नचाय रती कुछ औरक हैं सच वात सुछाजी॥१२२३॥ श्रीसुख सागर राम कृपानिधि
नाम स्वरूप सनेह समाए॥ संत अनंत गुने सगुना कर पूजिए प्रेम सनेम सुभाए॥ जानकी जान सुधारस पान विना भव भान
म पान भुलाए प्रेम अनन्य सहाउ ने के पद पंकज सेइए सोक सुलाए॥१२२४॥ जानकी जीवन जू को मनोहर वास रचे
समेत सोहाए॥ वर्षेउ छाह अनेकन भांति सकों तिगनो किमि जाय छोहाए॥ श्री मुद मोद मयी नोमी तिथि की महिमा श्रुति
अंतर छाए॥ प्रेम अनन्य हियो हुलसे [illegible]रवाइए आज सभी मन [illegible] भाए॥१२२५॥ वार ही वार धिकार ति ने ग्रह संपति

लुँ

हूं पर चाह न धारे॥ आपने काय निमित्त रचे रचना सुततीय कुकाय सवारे॥ को दिन कलान लोअध माधम पाइहैं रव
रन ही छुटकारे॥ प्रेम अनन्य न आप कहे इह वात को व्यास विरंचि पुकारे॥१२२६॥ सीय राम सनेह सजावो सहद सही
विचैहे कुशला न तिहारे॥ वार ही वार सिखाइए चित्त को भक्ति विचित्र रहस्य सवारे॥ आन उपाय निरास करो रस सागर माझ
परो मुद धारे॥ प्रेम अनन्य प्रकाश परावर नाथ हिए अनपास सुधारे॥१२२७॥ श्री विमला वरवास किए अमला मति
हो पहरी सच जानो॥

॥श्रीराम॥

कामना न करे है न कहीं सियस्याम से सामना होय प्रमानो॥ आमना सार सुवागर है है द्रढ भाव प्रतीति भक्ति सजो सरसानो॥ युगम अनन्य
नेकमता न कोवशि करे कतलाम सयानो॥ १०२८८॥ इति विभावप्रमोद॥ अथानुभाव॥ चित्त भाव बोधन करन अनुभाव तो न बाहर वि
शेष हैं सायह उतिरतैहै॥ प्रायप्छाय जात वर वपुष अंग कुनरमत तरसे स्रास सब भांति प्रम केतहै॥ और मेल खात रस जाहिर उद्दीप सम आ
पमा कू स्वच्छ अनुभाव भाव केतहै॥ युगल अनन्य भक्तिनी सुमति विचार योगप रोग भोग शमन सहाय प्रम हेतहै॥ १०२८९॥ नवल नव
नवर वोधिर विलुंठि गीत क्रोसन सुकंप पटु मोटन विचारिए॥ हरित हुंकार प्यार जंभन विचित्र स्वास सविपुल सुलोक चाह हीनता नि
हारिए॥ श्रवन सुलार अट्टहास सूर नित अंग हीचकी अजृ वैसें सहित अर धारिए॥ युगल अनन्य भांति युगल प्रतच्छ नाम सु
भग सुश्री शुंद्धि पन हू निरधारिए॥ १०२९०॥ गीत जंभ नाद्दि सीत हेरिए हमेशा हीं पन तपसे प्रमुख सुख स्वच्छ छपना सु जानिए
पामनाना भेद खर रहित विराजमान जानिहै जहान हानकारक प्रमानिए॥ महामोर स्रोग युगरे हत लेत चित्त मोल रशिक सुजान
प्रान सह दशा सुमानिए॥ युगल अनन्य आस अखिल निरास करि सीताराम भक्ति हीं सो प्रीति नित ठानिए॥ १०२९१॥ श्रीसियलाल
रसाल मनोहर वीन सुरास सम सुखदाई॥ रागिनी राग भरी सुखमा सरसायर ईधुनि श्राम बसाई॥ वेगि विचित्र विमोहन नाद अ
वाह उछाह सुनोहर रवाई॥ युगम अनन्य सुनाचि उठै गुन गाय सदाशिव वाघव जाई॥ १०२९२॥ राससमाज सोहावन वीच विराजत हैं हर पार्वतीपति॥

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥

॥३४८॥

आलिनरूपसमानमनोहरवामासमेतसजापसुधारति॥तांउवनाचअनूपसजेसिवभीजिरह्योरसरागमहामति॥युगमअनन्य
सियावरकीमृदुमाधुरीमैंरसमायरहेअति॥१२२३॥श्रीअवधेशकिसोरसुधानिधिपावनपावनअंकनिहारी॥मंगलमोर
मनायमहामुनिभूपसुतीक्षणभावविहारी॥औरहूंरागसुरंगरंगेपथवीचहींलोटिगएश्रुतिधारी॥युगमअनन्यअनूपमचिन्हच
रित्रकहैंकिमिगायगवारी॥१२२४॥श्रीसियस्याममहामृदधामहरयवनधामसुगंधसोहावन॥संबुधिसनेहसमेतसखीक
हुंलोटिगईकुलकानिनसावन॥होशहिरायअनेकनआपसहीहियहायननेकसतावन युगमअनन्यसनेससजीसजनीछविम
लउछाहसमावन॥१२२५॥होतलोटपोटओरजगतविहायजनजानकीरमनगुननामसुनेकानकल॥मोतसैंसेवायहाय
हीयसरसाततउरंचनासकातशोकछायोअंगअंगम्ल॥जैतवानश्रौननौंमतउपयानभानिएकहैंनताहिजाहिलागतसुलाग
गल॥युगलअनन्यसीतानाहकेजिवाएजानआरततसरीरधीरधारतसम्हारिवल॥१२२६॥जानकीरशिकगुननवल
उमंगयुतगावतीअनेकरागरागिनीजमायके॥महाराजतीरकुतभूपपुरप्रेमधामनायिकानवीनीभावभीनीसुखपायके॥
मोहमहामुनिर्दशासरससमाधिमानपाहनसमानतीरभएपिवलायके॥युगलअनन्यस्यामसुंदरस्वरूपगुनमहिमाअ
मोलगाकैमित्तचित्तलायके॥१२२७॥कोशलेशनंदनचरित्रचारुचंदनविचित्रविस्ववंदनसुगावतमुनीशएक॥०॥०॥

॥३४८॥

॥श्रीराम॥

छायोरोमरोममांझपुलकप्रवाहनीरनैननअवैनचित्तलेशानारह्योसुटेक॥हाहाकारसहितपुकारसोजानकीशनाम
महामोहध्वामछायोभ्रमछाडिकेनज्ञाविवेक॥प्रगलअनमोहवहानवसभीतहतुहेरिनारनीहूंरहेसपनेनिकेतनेक॥२९९८॥
सुनिकेचित्तचोरनवीनसखीरसलीनपुकारनप्रेमसेलागी॥होशाननेनकरहीउरमेंपुरमेछुतछायपरहीरसरागी॥जानकीजीवन
कीवरवासुरीकानसुनेकुलकानहींत्यागी॥प्रेमअनन्यअनेकनभांतिसुकोसककेरसजनीछविपागी॥२९९९॥श्रीअवधे
शकिशोरमनोहरनाममहामुदरामसुनेसें॥अर्थविचित्रविहारविभवसवभांतिअनूपमहीयगुनेसें॥श्रीमुनिराजसुसूरस
मानसरीरविमोचनशीशधुनेसें॥प्रेमअनन्यसुतोडिहियोमखलागसुरागसुप्रेमहुनेसें॥३०००॥श्रीअवधेशकिशोरसुधानि
धिवांसुरीकीधुनिरिव्यसोहाई॥सोसुनिकेगिरिजापतिकीमतिघूमिगईअनुरागसजाई॥नाकमझारसुव्यापिरहीरवहुंक्षोनि
हारनवंशाकपाई॥प्रेमअनन्यमएसुखियाप्रभुचित्तशब्दसुकानसुनेहरषाई॥३००१॥श्रीसियरामकलाकरपूरनकीसुधिला
यहहैअकुलावत॥जोहेविनादृगहाहुवदेसखिकौनउपायहिएवहलावत॥भागसोहागसुपायकहूंछविआकस्मातहिएअ ॥नामने०॥
लसावत॥प्रेमअनन्यकहाकहिएसवहीविधिचित्रचरित्र~~चरित्र~~देखावत॥३००२॥श्रीसुखमाशांतसिंधुस्वरूपविलोकिकेनेह
मनोहरछाए॥स्वांससउसांसवढेअधिकीछविहेरतस्यामसुकामलजाए॥तापकलापउठेउरमेंपियकेविनभूषनभानभजाए॥

॥श्रीराम॥
॥३५८॥

पुगम अनन्य सियावर की दुति हेरि विहौं लोक करंवत जाए ॥३००३॥ श्री सियाराम सनेह सनी पुरनायिका लोकिक लाज विसारी
वाहर आय सनाय महामुद हेरखती रूप सुधा छवि वारी ॥ सुंदर स्याम स्वरूप महा मद पीके छकी सवहीं सुधि डारी ॥ पुगम अनन्य
जहान मकान जलाय विषाद विकार विहारी ॥३००४॥ चाहे कोउ निंदो चाहे वंदो होउ रोष हाम जानि के विचारवती वाम स्याम
सौंरची ॥ अहो अनुराग राग अकथ अहा गगुन ने कहूं न जामें धुन महा मोर में मची ॥ हाय हिए वीच ऐसी प्रीति फिर मीच कहों
जानि एसु जान मोक साहिवी सही सची ॥ पुगल अनन्य लोक मध्य परिवार आदि सहस समान चित्त लायके वही वची ॥३००५॥
श्री रघुलाल रसाल सुध्यान में मगन मुनीश सरीर सम्हारना ॥ लाल श्रवे मुख मे झरना सम नेकहूं नैनसु कोर उघारना ॥ मानहूं
प्रेम भुजंग महा विषहा मडस्यो थिर चित्त विकारना ॥ पुगम अनन्य सनेह हशान जरी कनि शासवतुच्छसु मारना ॥३००६
जानकीजीवनजू को किंकर कलेश पार पर्यो प्रेम प्यार भार शीशते उतारि सव ॥ चारु चित्त सरित सुतीर भक्ति लता मानो फ
लीसव भांति अनकूली नाशरै नीरव ॥ ताही को कुसुम मंजु पुंज मुख अवभास अट्टहास व्याज हीसें विहसित रषातनव ॥ पु
गल अनन्य हांस रहित विचार युत जानिए स्वरूप अट्टहास उद्दाम व ॥३००७॥ जानकीजीवनजू की सुकीरति दिव्य विचित्र
सुने मुनिनायक ॥ मानस वीच विचार किए अंग अंग में होत निसा दुति दायक ॥ अंवुज से दृग भ्रमि रहे न कहे कछु वाग विलास सहायक

॥३५१॥

॥श्रीराम॥

प्रेमअनन्यसिंगारविहारमेंभीजिरहीमतिछांडिविनायक ॥ ३००८ ॥ हेसजनीरजनीसुचिसुंदरस्याममनोहरनामपुकारत
सीतसमेतहिएंहिचकीकलकंठअनूपममांहिसचारत ॥ भामिनीआंचधचोरलोगकिमिजाहिरजीवनजानसम्हारत ॥ प्रेम
अनन्यप्रनपाविरहाकुलहोतहशानवैननिहारत ॥ ३००९ ॥ सीताराममहामोदधामअभिराममक्तभावनानुकूलअनु
भावनानाभांतिको ॥ कहोंकछुकलितकषायकेकहनहितचित्तसहकीजिएमननकलकांतिको ॥ औरहूंसुभदगौरकि
एयाहिठौरवूझेसंतसिरमोरपीछिहिएभवभ्रांतिको ॥ प्रगलअनन्यभक्तिभाववावगांवबीचउचितसुवासखासहासचित
शांतिको ॥ ३०१० ॥ इतिअनुभावप्रमोदद्वितीयः ॥ अथसात्विकाः ॥ सीतारामसरससनेहसवलितभावस्वल्पआवरनविनाजोन
चित्तमेंवसे सोईसत्वसुवुधवषानेंहैं व्यभावकरितातैसुभवित्तस्वैसात्विकसदालेस ॥ रूच्छसुस्निग्धघाढगधतीनभांतिभेदता
मजानिएसुजाननामरूपरंगमैंरसे ॥ प्रगलअनन्यसुस्निग्धमुख्यगौनप्रगयाहीहैतुउचितहैमरसकोदीहींकसे ॥ ३०११ ॥ मुख्य
मनोहरमोदमईदशतिप्रकृतसुसात्विकस्वच्छसिरोमनि ॥ श्रीसिएरामसोहावनदिव्यपरोक्षविनासनवंधसुधासनि ॥ गूपतदा
मसुकुंदसखीकलकुंदनकुंदस्वरूपउछाहनि ॥ प्रेमअनन्यसिपावरवीनसुशब्दसुनेभरुसून्यहवाहनि ॥ ३०१२ ॥ जान
कीजीवनजूकेमिमित्तनिरंतरनेहनहीवरवामा ॥ मालरसालसुगुप तीथीसुनिशब्दसोहावनगाननिकामा ॥ ः

॥नामनेः॥

॥श्रीराम॥
॥३५०॥

गई

भूलिँगतिरहहूगेहकीशून्यसमानभईअभिरामा॥ प्रेमअनन्यदशादृगरेखिविहंगसुरंगनहोशकलामा॥३०७३॥ मुख्यसुसात्वि
कसारविचारिएधारिएधीयसुथंभमिहायत॥ नैननिनीरपसेवसेअरिरिलसेरहभांतिसेनेहसमायत॥ श्रीघनस्यामसुगौनरती
पुतसात्विकन्यनलिएपरआयत॥ प्रेमअनन्यसनेहउरैचितस्यारनैरतकभीतरतायत॥३०७४॥ श्रीरघुनंदनमोहनीमूर
तिमेहमचातकसादृगकीने॥ आकस्मातलषीसजनीरजनीसमवामविरूपतालीने॥ मोहप्रमादसुकोहसमेतभईरंगओरही
वागपसीने॥ प्रेमअनन्यपुकारकरीहरिएहियतापअतापप्रवीने॥३०७५॥ द्रिगधस्यरूपसुनोमनलायविकायरहेरघुवीरसुहं
थे॥ प्रेममयीरतिप्रेमविहीनसकोहसुसात्विकद्दिव्यसनाथे॥ लालनलाडलडावतीश्रीमहरानीलखीलघुभीतिसुमाथे॥ वा
रहींवारसुकंपितगातसमाननकोपकहूंउरगाथे॥३०७६॥ प्रीतिपरारुचिरागविहीनहरैमुरस्यामसुकीर्तिसुनेसें॥ श्रीसिय
प्रीतमकीकिलपावनीलीलालखामविचित्रगुनेसें शांतसुभावसजेजनकोउउस्रावपुरोमसुभालघुनेसें प्रेमअनन्यसने
हसुधारतिशून्यसुसात्विककररूपुनेसें॥३०७७॥ सात्विकआठप्रकारसुनोमनमाहगुनाउत्साहविधाई॥ स्तंभपसेववरामांच
तथास्वरभेदहूकंपविचारिएभाई॥ रंगमुखादिककोविपरीतसुनैननमीरगिरेभरलाई॥ प्रेमअनन्यप्रलयअठवांवसुसात्विक
भेदवेदमुनिराई॥३०७८॥ छितिआदिसुचारिसंचारकरेकहूंप्रानसदागतिआठविचारो॥ कवहूंउहआदप्रधानभयोविचरेवपुवीचहींतोन
निहारो॥

॥३५०॥

॥श्रीराम॥

लो२

अवनीगतिप्रेमसुनीरमिलेदृगअंबुप्रसेदविवर्नविकारो॥ होतहैतेजसेव्योममिलापतहासुप्रलयजियेमेंअवधारो॥३०१९॥
आपमेंपौनचलैगतिमंदसुमध्यमतीव्रसजायविभेद॥ तौनसेमेंपुलकावलीकंपतथासुरभंगलगतखेद॥ बाहरभीतरसात्विक
भावविचारिएसोचहींस्वांतसपेद॥ युगमअनमारहसअथाहललेखकिमिमूरछेजेछलेछद॥३०२०॥ हरषविषादनीनिको
परागहीनभवबूझिएसुप्रेमसून्यताहिकप्रसंगमें॥ सरससनेहसेंविहीनवान्यप्रेमयुतकायमानसहूंमांझपेमभावरंगमें॥ जान
कीरमनश्रुभसुजसअजवबीचबूझिएविचित्रउदाहरनअभंगमें॥ युगलअनन्यरीतिहरिरसमासमांहिवेदवैनव्यासग्रंथवा
टततरंगमें॥३०२१॥ मोहभीतिकोहसंभवितस्वरह्वैहवपुओरहूप्रकारउभैततताविशेषहै॥ वपुषरोमांचभीतिहर्षउत्साहआति
आश्चरजप्रमुषसुजातअनिमेषहै॥ याहीभांतिस्वरभंगजानिएविषादमोदआश्चरजभीतिकोपजनितअंसुवैहै॥ युगलअन
न्यक्रोधमोहतीव्रत्रासआदिप्रगटतकंपकायभीतरहूरेखहै॥३०२२॥ कोपडरविषमविखादआदिजन्मजीयजानिएविवर्न
रंगहोयओरहींप्रकार॥ हरषसुखेदरोषप्रमुषसुअश्रुपातहोतसंभवितउष्मशीतमोहदुःखधार॥ मोहमोहजनितविचारिए
प्रलयअजवज्ञानमानरहितअनीहताविकल्पहार॥ युगलअनन्यध्येयलीनप्रेमपीनपायमानहूंसमाधिअविकल्पहूंकोसंसार
३०२३॥ याहीविधिआठभावसात्विकवखानकियेयामेंनानाभांतिगुनकांतिअवधारिए॥ याकेअधिकारीजनकोतिनमझारीकोउ

॥नामनेम॥

ला२

॥श्रीराम॥

॥३५१॥

॥वाहीभांतिसात्विककछुभेदहैदरसिलखुसतसंग
जकेसंगपायकेपछानिये॥ ६

एकधनुधारीतिन्हरसिकनिहारिए॥ चारिभांतिहोतपुनिप्रबलसनेहमिलिजांकिभएमहामोहमंहियसंचारिए॥ युगलअन
न्यभावअकथकथानवागगोचरसुब्रह्मरूपसोंचहींसम्हारिए॥ ३०२४॥ स्वच्छमेकेवलधूमनमईहगमरत्तआपहींसेंअकु
लाई॥ स्निग्धमेचारिप्रकारलसेसबभांतिकृपाकरुनाबलपाई॥ जानुधूमायितात्योंज्वलितापुनिदीप्तताअरुउदीपनताछाई
युग्मअननन्यसुनोचितहैअबलच्छनचारिहूंकोमुदहाई॥ ३०२५॥ एकद्वैतभएधूमआयितविचारुजीयतीनचारिएकका
लभएदूजोजानिए॥ चारिपांचभएजैसेतीसरोविचारोहद पांचषषएककालतुरीमनमानिए॥ युगलअनन्यभएआठहूंसु
दीप्ततयासमुझिसुदीप्तयुगपतभावठानिए॥ ३०२६॥ महाभावभएपरहोतहैउदीप्तसुभसरसँदीप्तहिव्यसात्विकसमेतहीं
चारिभांतिसात्विकविभेदहैरवेहहीनहियजानिहैंनिष्प्रांकअककालिमात्रेपतहीं॥ एकरत्याभासपुनिसत्वाभाससत्वविनजा
निएप्रतीपकोतुरीयदुरवहेतहीं॥ युगलअनन्यचेहूंभांतिप्रतिलोमअस्रषकहेंकषअर्थब्यर्थभावनाविपतहीं॥ ३०२७॥
वोधअविरोधचित्तचपलनिरोधनिजआत्मासनेहमोक्षचाहस्वांतशांतहै॥ ऐसेहींकोहोतरत्याभासरतिनाममात्रपलके
प्रसेहगुनगावतएकांतहै॥ बध्दकर्मकांडसेसमतसीतारामगुनआचरजसुनतप्रवाहनेनकांतहै॥ युगलअनन्यसत्वाभास
छनभंगजियजानिएहमेसापामेरवकनभ्रांतहै॥ ३०२८॥ भलीभांतिसहजसुभावसेसनेहसत्वहीनजाकेजीयवीचपुलकादि
देखिए॥

॥३५१॥

॥श्रीराम॥

सत्वाभास विगत निसत्वरूपे पषिए जु समुझि अवस्य अपरो सहृद गले लषिए ॥ कुप्लकुरोध वोध विगत विषादहु ष्य असुर प्रतीप
राव नाहिं कउ लेषिए ॥ दुगल अनन्य याही भांति व्यभिचारि सत्व शुभ सहित विचारिए विकार अवरोषिए ॥ ३०१९ ॥ इति भक्तिरससा
मानन्यपूर्ण ॥ शौक समेत सु नो व्यभिचारि सुतें तिसतीन विहारविनोदी ॥ हे निर्वेद विषाद सु है न्यता ग्लानि अमोह विचारिए
वोही ॥ गर्व सु शंकत थामह त्रास हू वेगि लखा उन्माद अमोही ॥ दुगम अनन्य अपस्मृति व्याध प्रमोह समीच हीं आलस रोही ॥ ३०२०
लाजध्यषि जाड्य उत्सुकता सु उग्रतिमि वृझिए वहित्या संस्मृति विचारसें ॥ अधिक अमर्ष नींद चापलता सुप्रिवोधतें सहीं अ
सूयाहू विचार निरधारसे ॥ तीसतीन प्रम पीन हेतु व्यभिचारी भाव कह्यौं नाम मात्र पात्र जानि हैं सु प्यारसें ॥ दुगल अनन्य अर्थ वह
त विवेक करि समुझि सुजान स्याद् व्यालिए आमारसें ॥ ३०२१ ॥ आरत ईरषादि व्य विवेक वियोग तथा अपमान भएते ॥ होत है दैनि
वेद सखेद सुनो तहि अंक हीदृष्टि दिए ते ॥ नैनन नीर प्रवाह वेह पुनि होत विवर्न सुहीन रए ते ॥ दुगम अनन्य चवेद चित्त चिंतनालि
तउसास कुलामाह एते ॥ ३०२२ ॥ इष्ट सुप्राप्ति विना उर वीच विषाद विपत्ति तथा अवराधते ॥ दैवकु यौंस काज असिद्ध सो उ
अनुताप निदान अवाधते ॥ पाकै निवारिवे हेतु उपाय सहायस लाह सुनेह अगाधते ॥ दुगम अनन्य विलाप सु अश्रु विवर्न
विचिंत पसु लषनो अवाधतें ॥ ३०२३ ॥ दीनता दरसिए दृग्षि पसारि सुसंभव होत हैं जौन के योगसे ॥ त्रास तथा दुखहू अपराध सें मान नो
आप कों नीच कु भोगसे ॥

॥नामने॰॥

ग

पाके भए जडिमा असमर्थता मान समंहता चिंतना शोग सें॥ युगम अनन्य अधीरता वनि की असहीं औरहूं जानु सु लोगसें॥ ३०३४
ओज सोम रूप बल पोषन करत तन भए ताकै छीन ग्लानि मैथुन विशेषसें॥ याही भांति की न्हेश्रम विपुल उपाधि बढ़ होत प्रान ही
न सम काय हूं पेरखसें॥ कंपता विवर्न नैन भ्रमन समान जड नाना भांति होत रहै दशा ग्लानि विषमें॥ युगल अनन्य जान की श्रा
के मनेही जन जानि हैं विभ्रूह जो न हीन रागद्वेषसें॥ ३०३५॥ मद्युग भांति मद पान काम वेग करि होत है प्रतच्छ सो विवेक मु
ह नाशई॥ अंग गति वानी गमग नैन घूमनोई लालिमा विशेष लोक लाज नो प्रकाशई॥ जान की रमन गुन परम पियूष पा
न महा मोद हानि सिंधु सरस विलाशई॥ युगल अनन्य याही पी जिए सु प्रेम पागि विमल विहार बुद्धि बढ्ता विभासई॥ ३०३६॥
गर्व सर्व अंक सु नो सु जन सनेह वंत पाए प्रान प्रीतम न काहू को गनत है॥ सरस सोहाग रूप सु गुन तरुनताई लाहि रुष लाह आन
मान हींह नतहिं॥ गहगह वाग लाल लोयननि लाल है तउ तर न काहू वैन नेक हूं सुनत है॥ युगल अनन्य अंग आपनो सु गोप
करे गर्व अनुभाव संत रसिक भनत है॥ ३०३७॥ चोरी अपराध अन्य क्रूरता कैलेश भीरुताई से विशेष उर शंकित विचारिए
नित्त विवरन विधु वदन सु सोष दृष्टि देखनो न ऊंच वैन मान सँचारिए॥ याही भांति शंका करि प्रगटत अनुभाव सीता
पति चरित प्रकाश में निहारिए॥ युगल अनन्य रस रहस सु रीति अति अगम अपार गिरा कथन न पारिए॥ ३०३८॥ ॥

॥श्रीराम॥

त्रासस्वरूपसुनोमनलायकेछोभहिएणपविश्राब्हसेप्यारो॥ घोरकुसत्यगराजसुनेनिहितहापहुनेसुधित्यागिअगारो॥ हेअनुभा
वपहीअंगरामउठत्तनकंपसुथंभभ्रमारो॥ युगमअनन्यसमीपसनेनहीसुकंधकेआश्रेरसस्पत्ताधारो॥ ३०३९॥ वेगस्वरूपल
शउद्वेगसुआठप्रकारसेसंभवमानो॥ वातकृसानसुवर्षमहाउत्पातगजारिप्रियापियपनानो॥ आठहूंकोअनुभावसुचावसु
नोमनमंभउगुनेसरसानो॥ युगमअनन्यसिपावरप्रीतिहंभमासजाएवासनाभानो॥ ३०४०॥ वेगिद्विधागुनिएमनमां
हिअलौकिकलौकिकवस्तुविचारे॥ स्वामिसनेहसुवीचपरेअतिवेगसुतेगसमाननिहारे॥ मापिकवस्तुवियोगहुंपरवंध
नकेउरवेगसंचारे॥ युगमअनन्यसिपावरकीकरुनाहितहोतरहस्यविहारे॥ ३०४१॥ श्रीसियरामकृपा निर्हेतुकआविभी
वभएविननाहिन॥ होतकहाँपिसनेहसोहावनसंततसुचैनसहीचितचाहिन॥ धामसुनामप्रतीतिसजायकेपाइएप्रेमप्रकाश
नहाहिन॥ युगमअनन्यरूपानिधिआसरेमोजअथाहहमेमगाउछाहिन॥ ३०४२॥ प्रीतमप्रीतिसमुस्यविलच्छननवेगसेंअंग
नमपुलकावलि॥ चंचलताउतहोशहिरापकेहोरनोसंगविहायवेआकुलि॥ यौंछितिपातविकोशम्नमाहिकजालअनि
छसमुत्स्यव्यथाकिल॥ युगमअनन्यकृसानुजवेगमहोतविनत्तसरीरकृपाहिल॥ ३०४३॥ वातवेगपायशीघ्रजायगतिछी
नैनैनवारवारमारजनवदनदुरायवो॥ वारिदविशेषिवेंदजनितसुवेगिवीचछत्रगतितीव्रअंगअतीसकुचायवो॥ भएउतातगम्ह

॥नामने.॥

संभ्र वित्त कंपन्न नहोत आचरज अंग गात उलटायवो॥ युगल अनन्य मत वारोग जेवग भव मांभ त्रास कंप वच्छेरोहन भगा
इवो॥३०४४॥ सत्रु भीति जनित उद्वेग वीच कर्म भ्रम स्त्रधार नो सुगेह सें वहिर पग धारिवो॥ प्राहीरी त्ति माहि आठ बूझि एसु वणि
भेद रस्मिक अनन्य गंध अंतर निहारिवो॥ जानकी रमन केलि कौतुक रहस्य मांहि नाना रस भेद दृग हर स विचारिवो॥ युगल
अनन्य लोक लाल च्चलवार पन अरस निकृष्ट लखिहि पुसे विसारिवो॥३०४५॥ उन्माद स्वरूप सुनो चित्त दैदिल अंग दरभ्रम
विशेष प्रमोद सें॥ त्यों विरहादि कहोत सही अनुभाव विचारिए स्वच्छ सुखोद सें॥ नृत्य प्रलाप सुगीत प्रकार नो धावनो त्यों अ
टहास अतोद सें॥ युगम अनन्य वधात नचेष्ट क्रिया विपरीत उमंग विनोद सें॥३०४६॥ व्याधि विष उन्माद के त्यों तें हित दह भिन्न
वियोग भए पर॥ होत दशा अधिक सु मोहन त्यों महाभाव में और हीं सोवर॥ पाय पराद त्रियोगा सोई उन्माद दिवाकर दिव व्यथाकर
युगम अनन्य अलौकिक रीति सनेह से सभ्रमि है संत सुभाकर॥३०४७॥ दुःधातु विषम सुखेद है भए सम मिलन तन विभर्म अतिहे
रिवो उछाह विन॥ कांपनो सरीर फनु निस्सरन वांछ यरहन समेत उच्चे टरिवो समान किन॥ वियुल वियोग संभ्रम वित्त दोष हीन
ताप प्रमुख कलाप गर व्याधि सो निहारु दिन॥ युगल अनन्य व्याधि भए विना राम घनस्याम वे द्युभूप सें मिलाप नात्रिका लछिन
३०४८॥ सिथिल सरीर ग्लानि ताप उर्द्ध सांस वेग सोई स्तंभ भाव जिय जानिए विसेषिए॥ मोह मन मूर्छता निहारिए वियोग हर्ष भीति
संभ्रम चित्त वीच अववेरिए॥

॥श्रीराम॥

विषम विषाद अरु आदि मरणै रूपात भ्रमि व्यामस समकरन भ्रम मनमित्रे पोषिए॥ युगल अनन्यरस बहूदाहूं न रहे शोष याही भांति अन्य
अनुभावहूं सुरेखिए॥३०४९॥ विपुल विषाद व्याधि अधिक सुत्रास संप्रहार ग्लानि जनि मीच प्रगट पेखानिए॥ तामे अनुभाव
व्यक्त वरन विहीन वचकाय विवरन स्वांस कूअ आदि जानिए॥ सहित समर्थ तन कारज करन दीलत्व श्रम संभवित अवस प्रधा
निए॥ नींद सेज प्रीयतं दुनैन मई नाहि जंभ आलस मभार कृपा याही विधि मानिए॥३०५०॥ मोह आदि अंत मे अवस्था साई जा
उपजानु धिगत विचार भलो बुरो अव नाहिसें॥ तेसे हीं वियोग दुःख जनित सु होत है अनमिष नैन मौन फूल चंदनाहिसें॥ व्रीडा
लाज लोक परलोक को कहत संतता को संभ्रत जीय जो हिए अनाहिसें॥ युगल अनन्य संग नृतन अयोग्य कं तआपनी प्रसंसा अ
पमान व्यर्थ वाहिसे॥३०५१॥ तामे अनुभाव मौन नीचो मुख भूमि लेख चिंतन सकोच आदि हिसं तन प्रास्लगान है॥ अविहि त्याग अ
धिक अकार को करन गोप आन सेस युक्ति नैन आदि जे प्रधान है॥ याम भली भांति वा ग विस्वरूप व्यर्थ चेष्टा देखनो अनत अनु ॥नामने॥
भाव गोप मान है॥ युगल अनन्य जे नेकन रीति प्रेम रंग लाल सं मिलन को छपाव नो सुध्यान है॥३०५२॥ गौरव लाज सुचानुरता सुम
सज्जनता कुटिलाई विशेषसें॥ आपनी प्रीति सुनायक संग छपाव नो कैसहं राग हं देषसें॥ जो प्रथम अनभूत पदारथ तासम आ
नि निहारि सुवेषसें॥ युगम अनन्य तपात्रति प्रौद अभ्यास सें सुस्मित सच्छ निमेषसें॥३०५३॥ शीघ्रा कंप मोह छपना हि याकी कृपा जानु

॥श्रीराम॥

॥२५६॥

मानुमनमांहिंसुवितर्कभावरीतिसें॥ सहितसंदेहकेविचारनानाऊहतामेभालभौंहअंगअतिसंचलनप्रीतिसें॥ इष्टअनु
प्राप्तिध्यानचिंताविपरीतिवीचतामेंस्वासअर्द्धमुखभूमिरहभांतिसें॥ युगलअनन्यविवरनत्यौंविलापकृशरैन्यताहिस्व
रभंगपामेअतितीतसें॥ २०५४॥ शास्त्रसंहिताहिस्वच्छस्त्रवनमननजन्यवास्तवअर्थनिरधारनोसुमतिहै॥ सीतारामना
मग्नमनवलसनेहप्रेमरूपकर्त्तव्यकोकरनअनभितिहै॥ सदगंथसंमतसुतर्कनानाभांतिसिक्षासासनअनूपक्रमशंसपा
हिछतिहै॥ युगलअनन्यऐसीमहामोहमईमतिअगतिनगतिकरनाहींसेसुरतिहै॥ २०५५॥ पूर्णज्ञानखरमानविग
तसुउत्तमांशसंभवितधैर्यदरहितप्रमादसें॥ परप्रेमआसादइष्टसंमिलनलाहललितसुपापहर्षमानसाहिनादसें॥
स्विदअश्रुअंगपुलकावलीप्रफुल्लमुखजडतातथैवउन्मादवेगपादसें॥ युगलअनन्यमोहआदिककृपाकलापप्रगटअ
सन्नताअशेषमेअवादसें॥ २०५६॥ जानकीरमनमुखचंद्रअवलोकिचकोअमलअथाहचाहऔत्सुक्यसारहै॥
वारवारउरउत्कंठानामरूपगुनधामरयकरसागतवासनाविकारहै॥ प्राप्तेआसप्रसोषणीक्षुतताईचिंताधीरविनहोतअनुभा
वचारहायकउद्धारहै॥ युगलअनन्यप्रियप्रीतममिलापमद्धिमलीभांतिप्रवलसुसाधनअधारहै॥ २०५७॥ औग्रयस्वरू
पसुनोमनलायकेहोतप्रकाशजहांतविशेषी॥ गालिकाऔअपराधसेकोपअधीकअलीकयथाजगद्वेषी॥ ✢॥ ॥

॥२५६॥

॥श्रीराम॥

सिरकंपमुवंधनभर्त्सनसंगसुताडनहूं वधपाहिमें लेखी ॥ प्रथम अनन्यएही अनुभाव विचारिए वेदनाहाप्रअप्रोखी ॥ ३०५८ ॥ किए
अपमाननतानहिंए असहनतापसोई अमरखभाव जानो निजजीयमें ॥ स्वेदशोषकंपविवरनकोपनानाभांति चिंतनविमुखताउनादि
कअतीरवमें ॥ औरउहै वीचहेखधारनो असूयासोई तेमें अनुभाव दरखाहि कअसीवमें ॥ प्रगलअननमाहिव्यगुनहूंमेंद्वपुनिआदर
विहारयो अछेपध्यानधीपमें ॥ ३०५९ ॥ रागद्वेषप्रमुखवितर्ककरिचिन्तवीचलावनताप्रगटचपलभावभाइए ॥ पौरुषविचाररूञा
वारव्यवहारआदिप्रामेअनुभावअन्यरीतिनामिलाइए ॥ सहजसुभाव चिंताआलसश्रमादिभीतिमोहचिंतामरनादियाकीकृपा
पाइए ॥ प्रगलअननमअंगभंगजाउनेनवंदजंभनप्रधानअनुभावमननमानिए ॥ ३०६० ॥ नींदविशेषदशासोईसुप्तिअनेकनअ
र्थप्रतछोपरखावत ॥ होतहृषीकविलीनकहूंसुचिस्वांसहूंअकसुमूहनोभावत ॥ वोधस्वरूपअरूपमदेपसुमोहअविघकमीरव
हावत ॥ प्रगमअनन्यस्पिपावरागअज्ञागवरेवरविज्ञतागावत ॥ ३०६१ ॥ मोहछीनभएशाक्लप्रमुखादिपांचअंचमापासेंविहीन
पीनप्रेमजानकीशकी ॥ अनुछनविपुलउछाहहाहआहविनप्रमुदकलापव्यापजातहेपछीसको ॥ देहिजहूंमीरहानिभएस्व
प्रभावहूंसेंसंभविनवोधरोधकारनअनीशको ॥ प्रगलअननतीसतीनव्यभिचारीभावकह्योंपथामतिप्रीतिहेतुजगदीशको ॥
३०६२ ॥ मात्सर्यरंभउद्वेगरखाविवेकस्मीरताकुतुकनानाभांतिजीयजानिए ॥ हिएउत्कंठविनपंथसत्तासुसंशपादिभाव

॥नामने०॥

हे

संचरनशीलएहू पहिचानिए॥ विप्राद विचार संत शास्त्र गुरु मत सार अकथ अपार ह्वै काल मध्य छानिए॥ युगल अनन्य
उत्तमादि तीन पात्र याके तीस तीन मध्य भानु भाव अनुमानिए॥ ३०६३॥ जानिए संचारी भाव द्विविध स्वतंत्र परमंत्र संकलित भा
वग्रंथनि विचारि के॥ तामे पराधीन वीच बराबर भांति युग फेरि उभय भांति परतन्त्र भेद धारि के॥ मुख्य आरति पोषन करन अपरे
स्वगोन रति पुष्ट हेतु व्यवहित अवधारिए॥ युगल अनन्य सूक्ष्म विविधि प्रकार भाव भेद मति मेशीके हेकहा निरधारि के॥ ३०६४॥
साई गोन भाव रति जामे पांच चाह रस हाय सम्पूर सब्य वहित ताही योग सें॥ जहां तहां सुजस सकीरति में राज मानस मुझि हैं सुजान शो
कुसे संप्रयोग सें॥ भाव चाव चह लपह लमनि महलनमए विना प्रीति रीति जानें अशोग सें॥ युगल अनन्य भक्ति रुस अनंत भेद खेद
विसराय कोउ बूझि है अरोग सें॥ ३०६५॥ अवर स्वरूप सोई जामे युगरस गोन अंग वीच की वसम मानस समोई ए॥ होत कहुं गो
न पराधीन हूं स्वतंत्र करयन हन निमित राज सेवक सुजोई ए॥ तामे तीन भांति रति सुन्यर ति अनुसार्श तेम रति गंध हू विचारि मान
भोई ए॥ युगल अनन्य भक्ति भाव नासमेत मन कि एकाज को त्रिअन्य रीति युत रोइए॥ ३०६६॥ आपर ति गंध सें विहीन पर संग पा
यफेरि रति सुपद परस अनुस्पर्श सों॥ होत है अभास अनुचित प्रतिकूल वीच ति भीच्च रस छरीति मानि नेम हर्ष सों॥ तीस तीन भा
वजहां मिलि परस्पर ह्वै प्रोक द्वन्द नाना भांति ररत मर्स सो॥ युगल अनन्य अति प्रसम विचार रस मेरी मति कोनि भांतिन अविमर्श सो॥
||३०६७||

त

कै२१

॥श्रीराम॥

तैंतिस भाव संचारी यथा न पैं शांत समेत सु आठ विचारो ॥ सात हैं गौन सुमुख्य ता पांच की शांति मैं भेद त्रिधा अवधारो ॥ भक्त
नके हिए साथ मिलें रति रूप हूं होत अनेक निहारो ॥ प्रेम अनन्य सुफूलन को रंग स्वच्छ मनौ यामैं होत न्यारो ॥ ३०६८ ॥ को
उ भाव आवत कहा चित सु जात पुनि कोउ एक रस बनो रहत सुभाव सें ॥ व्यापक सु व्याप्य यामैं जानिए मरम मीत तीतर चित्त पागि
पागि रहो भक्ति भाव सें ॥ कहूं एक भाव कहूं युगल त्रिधा हूं कहूं नाना भांति होत अनुकूल चित्त चाव सें ॥ युगल अनन्य भक्ति
भव्य भेद भाव सुनि मेरो मन सु हित विशेष करै कराव सें ॥ ३०६९ ॥ इति श्री भक्तिरस सें मान्य निरूपनो विभिचारी भाव निरूपनं ना
म चतुर्थो विलासः ॥ ४ ॥ ❀ ॥ सीताराम करुनाकटाक्ष सें वखानो अब अमल अनूप रस भाव भेद जानिए ॥ अविरुद्ध हांस्य
आदि अ विरुद्ध भयान कोह दोउ वसकरन सु पाई पहिचानिए ॥ जानकीरमन मध्य सुरति स्वरूपता को भेद मुख्य गौन यामे
युगल प्रमानिए ॥ युगल अनन्य रस विशद सुदेश विज्ञ वरनत कथा या विनायांत प्रीति ठानिए ॥ ३०७० ॥ शुद्ध सत्व सरस विशेष
रूप मुख्य रति सोउ युग भांति स्वार्थ रूपता हि देखिए ॥ वलित विरोध वीच ग्लानि दुख शंका तिमि युगल अनन्य स्वार्थ रति
हि पे लेखिए ॥ दोउ भांति मांझ संकुचित भाव हि त्याग हि सोई है परा पैरति महा मोद देखिए ॥ ३०७१ ॥ मुख्य प्रीति सख्य वात्स
ल्य प्रीयता प्रगट पंच भेद मुख्य रति मध्य हीं विचारिए ॥ यथा योग भाजन विशेष अधिकार पाय न्यूनाधिक रती हूं लखात अवधारिए ॥

विगत विरुद्ध मति मगन स्वभाव करि पोषै निज अंग आत्मस्वाद हर्ष रति हिय लेखिए ॥ ३

श्री पार्थ

॥नामेने०॥

जैसेफटिकादिमसिमाँहिभानुआभासस्वच्छमलिनसमाननिजैनैननिहारिए॥युगलअनन्यसर्वशास्त्रसहसारमतपात्र
अनरूपभावभजनसुधारिए॥ ३०७२॥मुद्रावीचतीनभेदप्रथमसामान्यापुनिस्वच्छाशांतितीसरीविशेषअविकारहै॥या
मेंनैननमीलनोन्मीलनसुअंगकंपआदिहोतअवससुरासकविचारहै॥दिखतननेकहूंविशेषसमुदायजनबीचप्रगटतसोसा
मान्यारतिप्यारहै॥युगलअनन्यअवधेन्दुवाँकादिलीलारुचिरस्वरूपमध्यमानससंचारहै॥ ३०७३॥सोईस्वच्छारतिजा
मेंहैसोअनुरागनाममेंतैसोईप्रकाशभाववावचवर्ततहै॥जैसेमध्यफटिकसुनानारंगयोगपाययाहीविधिस्वच्छारतिरीतिसर
सतहै॥कहूँप्रभुभावकहूँमित्रपुत्रकांतकहूँभ्रातमअनूपनिजजानिहरशातहै॥युगलअनन्यनानाभांतिस्वच्छाभक्तिबीच
ताकेजीपजागेताकेखेरभरसतहै॥ ३०७४॥चित्तनिर्विकारकुलकल्पनाअतीतनिजमोरअविगीतमामलीनताहिसमहै ल ४
प्रासोसंवलितसीतारामप्रीतिममताहिरहितपरात्मसतिशांतिहीनगमहै॥सनतकुमारसेंप्रमुखविज्ञवृंलीनप्रेमपलकततकहूंसुने ॥३५६॥
गुनरसमहैं॥युगलअनन्यभांतिरसलाललीलास्वादुविरहित्तप्रीतिपामसुरुचिहूंकमहै॥ ३०७५॥जानकीरमनपदपंकजपरागस्व
च्छसेवाअनुरक्तभक्तसेएमोक्षमोदहूं॥भलीभांति~~भांति~~करिकेतिरस्कारप्यारवृंदवरषतसीलछनसामअविनोदहूं॥मेरामन
नअमलअनूपअभिलाषपायपरब्रह्मस्वादअनुभवतअमोदहूं॥युगलअनन्यप्रीतिप्रमुखप्रकाशयामेहोतनतातेसुधारतिजानिएअमोदहूं॥
७६॥

॥श्रीराम॥

म
गाढ अनकूलता तें सँ चित मोह मई ममता विशेष संकलित तीन भाव है ॥ ताके अधिकारी भक्त करुनाकर दास पात्र सखा पूज्य जानि
एन ले ग्राह्यांक ह्वावै है ॥ यामें नैन विमल विकारा जे में नाहि छू नेह ते अपरोक्ष जानि लीजे अनुभव है ॥ युगल अनन्य कल केवलात
श्याहि रति संकुलासु मेद पुग यामें सरसावै है ॥ ३०७७ ॥ केवलाता हि विचारिए चित्तमें जामें न और रती खुशावाय है ॥ एक ही भाव मेली
न सरहार सवासना दूसरी नीकि के धोय है ॥ संकुलाख्यामें द्रवातमली विधि द्वैत हूं तीन समें सैं होय है ॥ युग्म अनन्य प्रियपेहि कतीनिकी
रीति समास कही न हि जाय है ॥ ३०७८ ॥ श्यामासंमत सुनो रति तीनहूं आदि सुप्रीति रहस्य सुनीजे ॥ श्री अवधेश सें न्यून वयादिक सो
अनुग्राह्य सुहाय गुनीजे ॥ राम महामुद धाम सु सेवन रूप रती प्रभु प्रीति भनीजे ॥ युग्म अनन्य विशेष हैं दूसरी प्रीति निहार रती आ
पनी छीजे ॥ ३०७९ ॥ श्री विलभ्रा समान वयादि श्यापा कमनीयहि एअवलोको ॥ हे विस्वासविशेष रती रत जानिए मोद अनूपको
चोको ॥ प्रेम पगी परिहास सुहास समागम वाग विहार अरोको ॥ युग्म अनन्य सुमित्र स्वरूप गुनादि सुयोगसे होत विशोको ॥ ३०८० ॥
श्री रघुराजानन सें आदि बडे अति पूज्य कृपा करुनार समीनी ॥ जानात हां रति वत्सलता परमश्रम प्रीम ममता अति छीनी ॥ लाल
न पालन पालन आसिष चार चिबूक मुखांबुज परसन वानी ॥ युग्म अनन्य सुभाइ कहा रस तीनहुं जानि है मेधा प्रवीनी ॥ ३०८१
ललीला लाल ललित विशाल संमिलत स्वच्छ अवल अनूप आदिकारन सिंगार है युगलकिशोर चित्तचोर परस्पर आठ भांति के संयोग को
ली
नि धान सुख सार है ॥

॥नाम ने०॥

॥श्रीराम॥

॥३५७॥

उज्वलमधुररसराजप्यीयतासुआसुअसुवारिराहिसंरएसुप्यारहै॥ जुगलअनन्यबागरसलसप्रीयमहमोहसुशकपान
आहित्र्यकेअविकारहै॥ ३०८२॥ भामिनीभावप्रधानरती प्रियतासोरस्वच्छनआनकहाचित॥ श्रीपरमेशसनेहसुप्रीतिउदीप
नभावविचारिएसंचित॥ आठहूंभोगविनारसभएअनूपमसिद्धनहोतसुवांचित॥ जुग्मअनन्यसिंगारसहायनीसमुझिएआ
लिकाभावअपारचित॥ ३०८३॥ शांतिसैंआहिएपांचसिंगाररसोजानिएस्वादविशेषसुआगे॥ वानीवकेनछकेसुरस्या
दप्रवेशसैंसमुझिहैविज्ञसुभागे॥ शांतिसेंदास्पविशेषलखोपुनिसरसोहावनवत्सलरागे॥ जुग्मअनन्यअनूपसिरोमनि
हैरसराजअनन्यअहागे॥ ३०८४॥ पांचरससुख्यरतिअमलप्रकाशयुक्तसरससहक्तसातगौनअनुमानिए॥ हांसउत्सा
हशोककोहअद्भुतभीतिसातरोजुगुप्सअतिनिहितप्रमानिए॥ विसदविभावसंभवितजानकीप्रायोगबहांसप्रमुख
विशेषपहिचानिए॥ जुगलअनन्यपांच~~पांच~~साथगौनजानिएजूशांततसकोवरतिरूपमनमानिए॥ ३०८५॥ हांसअ
दिअंतजैनचित्तचमत्कारस्वादसोईरतिहांसपतेप्रमुखबुधब्यानहै॥ जानकीरमनशोकशमनसुभक्तपासहोत~~होत~~हैक
हापिगौनअनितविधानहै॥ अमैंअविंतसुअतंतभक्तिवीवरतिऔरदौरसन्वरतिसातहूंमलानहै॥ जुगलअनन्यजान
कीशमभक्तयोगपायशांतहूंअपाहगुनसहितप्रधानहै॥ ३०८६॥ जानकीजीवनहूंप्रविलासशस्यरसंप्रकाशसुहाना॥॥

योगसु

प

॥३५७॥

॥श्रीराम॥

होनहि एहरसापत हाय हजारन सो पनहार विधाता॥ औधविहारी सनेह समेत सेवे रस स्वच्छ विचित्र विभाता॥ युग्मअनन्य
सप्रेम सुनेम मन मांभ गुनो कलकीरति धाता॥ ३०८७॥ सुनो समुझित मन लाय अद्भुत रस थाई भाव या को संतत सुकवि बषानहीं
लोकसैं अनूप आचरज दरसन अद्भुत नाहि क किए सो चित्त विस्मित प्रमानहीं॥ नैन सं चैन साधु वचन कथन तन पुलक करद
नजीह मलनाहि हानहीं॥ युगल अनन्य रति वीस्मय विचार चित्त हित हरसाय तिसु नाम धाम आनहीं॥ ३०८८॥ सीता
राम लोक अभिराम छवि नस्याम हाम कोटिन सुकांति अद लोकि वन वासिनी॥ भूलि गई आपको न जानती भई जहां न आ
चरज रूप मे समाय गई भामिनी॥ अंग अंग अमित अनंग रंग होत छिन छिन मे विकाय जात देखि अभिरामनी॥ युग
ल अनन्य अद्भुत सुख स्वाद पाय सात्विक अनूप रसावतीसु कामिनी॥ ३०८९॥ कीट पतंग कुरंग [illegible] भुजंग चको
र मयूर विलोकत॥ भूलि गए मृग सिंह सवी इह को न अजाय व चित्त ही रोकत॥ दृष्टि सें दृष्टि मिलाय परे हे अनिमेख सुवे
षक लो अवलोकत॥ युग्म अनन्य सिया वर रूप निहारि विषय भव भार मे झोकत॥ ३०९०॥ हे उत्साह रती वरवीर प्र
संसत सज्जन काव्यरसीलो॥ युद्ध सुदान दयादृढ धर्म समेत सो हाव नभाव स जीलो॥ सत्वर मान सशक्ति सो रे
उत्साह अनूप हुरंग रंगीलो॥ युग्म अनन्य सिया वर वीच विराजत पूरन स्वच्छ प्रभा सीलो॥ ३०९१॥ काल विचार विसार

मतंग

॥नामने०॥

भली विधि उद्यम चारु करे उत्साहित ॥ धीर जु धारि रहे रनके विच वंच लतान करे हिलदाहित ॥ दानप्रदानकैं सवहीं जन
हित ब्रह्म साधि पधारि सुचाहित ॥ युग्म अनन्य न ओरक हे रसवीरता श्रीरघुवीर विनामित ॥ ३०२२ ॥ मंगल मोद प्रमोद वढे
कुलकाल कराल कुशाल कटे सव ॥ श्रीरघुनायक की वरवीरता चित्त विचारत शोग नसे द्रव ॥ खोफ रहे नहिं केकाहू की
आकस्मात उजास लहे अव ॥ युग्म अनन्य सियावर की कल कीरति गाई एमो जसु खुसी छव ॥ ३०२३ ॥ शोक रति थाई भाव
करुनासु मध्य मीत लक्षन विवछन निरूपत निहारिए ॥ प्रापत म वस्तु को वियोग हु सहन षेद दाहन दहन हाय हाय सो वि
चारिए ॥ विपुल विलाप मुख सोख न अन्न माहि तिति मि वार वार उर्द्ध स्वास सुधीन सम्हारिए ॥ युगल अनन्य वन कांड की कथा
कठोर व्यथा वर घनि सु निधु निशीशारारिए ॥ ३०२४ ॥ को हरति विपति विशेष पिवितरन प्रातिकूल आदि योग चित्त ज्व
लन अतोल तर ॥ पौरुष वचन नेत्र भ्रू कुटी कुटिल लाल वपु खवि हूति स्वांत शांत सुख लोल कर ॥ यों मे भांति युगल
विचारो रघुवीर धीर तरफ विरोधी समुझिए अविलोल नर ॥ युगल अनन्य काम कोह को कहन क्रोध प्रद्ध व्यसु मिरत शक
ले आहन वोल वर ॥ ३०२५ ॥ जानिए सुभीति रति चित्त चंचल तिती व्रमंतु घोर नयन न निहारि वो समय सही ॥ मन तन व
चन सु सोषन पराइ न हैं गोपन एकांत थल सुधि वुधि हें न ही ॥ पूर्व उक्त रीति से समत रति रूप रह यों भांति द्विधा क्रोध सद्द स सुधी कही ॥

॥श्रीराम॥

युगलअनन्यरामरघुवीरभीतिगुननाम्नमाधुरजबीचअनन्तनसोकहीं॥ ३०९६॥ निरगुनविभीत्सकोयोगुत्सास्वरूपरति
अतिहींमलीननेत्रमूंदनोजहांवने॥ आस्यसंकुचनत्योंहींथूकनोगलानिबहुकरनविधानभानमूलनजहांतने॥ जानकी
रसिकरतिसरसम्कृपाजन्यजानिएविभत्सरतिविस्वतुच्छजाननें॥ युगलअनन्यभक्तभक्तवपुवीचवरहोतहैसुचिन्हक
विवरनतहैघ्रने॥ ३०९७॥ शांतिरतिशांतिमुद्धमानसवचनवपुहरषविषादकोनलेशजहांजोहिए॥ नैनैवनवीचवृस्न
पूरनप्रकाशअन्यआसअभिलासकोऽवकाशनाहिटोहिए॥ हास्यसख्यवात्सल्यसरससिंगाररतिअतिअनमोलपूर्वउक्ति
सुविसेसहिए॥ युगलअनन्यभावअमलअचिंत्यतामितरकननेकसंभवतस्वादमोहिए॥ ३०९८॥ सातरसगौनपंचर
ससोंअनूपमुख्यताहीकेसुसाथगौनरतिअनुमानिए॥ जानकीरसिकपदपंकजपरागप्रेमपावनेसाध्यापरसद्वादससुजा ॥नामने०॥
निए॥ सोईधन्यधन्यबड़भागीजाकीरतिनितरसनसमेतिजानकीशांमप्रधानिए॥ युगलअनन्यऔरआसकोविनाशक
रिकीजिएहमेशसंगरसिकप्रमानिए॥ ३०९९॥ जानकीजीवनरूपअनूपपियूषपरारतिस्वादसुजाना॥ ज्ञानविराग
उपायनिकायसुभक्तिविनातिलनाहिप्रमानो॥ वासनारुच्छसुलायमलीविधिभावनास्वादसुहीयसोहानो॥ युगमअनन्य
कृपासियस्वामिनीदैशरहस्यविनारपछानो॥ ३१००॥ हास्यअद्भुतवीरकरुनासुरुद्रतिभिजानिएभयानकविभत्सरसमप्रधा॥

स्यत चित्र अरुन सु सेत न स्याम पांडर हूं पिंगल सहित रंग जो हिए अनूवधा॥ शांत हास्य सख्य वात्सल्य औ सिंगार रस पांच हूं
सुरंग अरु धारिए अनेकधा॥ युगल अनन्य गौर धूम्र सु रक्त काल नीलता अनूप सुख सौंपन विचित्रधा॥ ३१०१॥ जानकी जी
वन अवतार कपिलादि सब रसन को देवता विचारिए सुबुद्धि से॥ उज्वल मधुर रस स्वाद वरधनै भोगता सुदेव एक सीप्रव
र बुद्धि से॥ सीताराम वैभव विलास संभवित रस सकल न ओछोर शोभित सु सिद्धि सें॥ युगल अनन्य रस सागर अपार मार
मोहन स्वरूप अवलोकिए सु निष्ठि सें॥ ३१०२॥ पूरति विकाश विस्तार सु विछेप छोभ सहित सुरस धाद सहस्यादि देते है॥ शां
ति बीच पूरति विकाश उज्वलादि पांचवीस अद्भुत विस्तार ही समेत है॥ कहूं कहूं वलित विछेप छोभ करुनादि हरषह जारन
सुगमन उपेत है॥ युगल अनन्य रस अगम अथाह गाय सीय नाथ कृपाहीं ते मानस निकेत है॥ ३१०३॥ स्वच्छ ज्ञान विरति सहि
त जन जो न कर्म ग्राह से ग्रसित तिन्है भक्ति मैं न अधिकार॥ जान कहा बावरे उतावरे रहस स्वाद माति रही मति मत्सर न सुसी
समार॥ सीताराम सुरसर तीन को विचार दिव्य निर्हेतु करुनोत जी पअजगमग प्यार॥ युगल अनन्य धाम परस सुवास सजि पाइए प्रती
ति प्रीति सुधन सुखद सार॥ ३१०४॥ स्थाई भाव लहरि निरूपन समान रीति कियो लियो मोद मन अमन सहस भांति॥ श्रवन मनन न
ित न कीजिए वदाय चाव पाय सुप्रतच्छ जानकीशोका अनूप कांति॥ मेरी मति समल न जानि शके भाव रस भेद कछु कह्यौ भक्त भाविक नेवठि
पांति॥

॥श्रीराम॥

पुगलअनन्यअनगन्यमानमन्यसंतपान जिन कियो भक्तिसुरस विहाय भ्रांति॥ उ१०५॥ इति श्री स्थाई भावसामान्यरीति निरूप
नं नाम पंचम लहरी समाप्त॥ शांतरसरूप अति अमल अनूप सुनो सावधान चित्तवृत्ति आपनी लगायके॥ सहित विभाव आदि
स्वाद सुखदै तिहिल स्थाई शांति रति मति धीर कै लगायके॥ प्राय मुहु आपनो परेखो कोऊ कहा पि कहूं योगी जनन याके अधिकारी शांत
पायके॥ पुगलअनन्य जान की ध्यासुखरागर चित्त अधिक विचार मन मां भर ह्यो छायके॥ उ१०६॥ शांतरस भक्त सु अलंबन विभाव
सीयवल्लभ स्वरूप वीच रुच्छता विचारनो॥ चारि भुज स्याम घन शांत अरिविलेश स्वच्छ महामुनि चित्तहूं को चोरन निहारनो॥
सतचित आनंद स्वरूप परसंस ध्येय जेय परब्रह्म शांत प्रकसु धारनो॥ पुगलअनन्य विभु प्रभु ख गुन प्रा अजजगम गजाति जस
जाहिर प्रचारनो॥ उ१०७॥ आत्माराम सदागत काम सुवालक व पसन कादिक जैसे॥ है जिन के स्वप्न हूं तिल राग रु द्वेष ववचे भवने
से॥ भोजन मान नहीं तन को दुख द्वंद्व द्वंज दूरि किए प्रभु लैसे॥ पुगलअनन्य सु शांत सनेह को भाजन से सासवही विधि ऐसे॥ उ१०८
दूजो अधिकारी शुचि तापस सनेहवंत भुक्ति समुक्ति हूं से कियो निर्वेद जिन॥ गिरिगुहा वास सुख रास छवि ध्यान कलित को
पीन उत्कंठ ताहि मसानि न॥ ध्याय ध्याय परम र म प्रधान पुरुष शांत तितीन लोकन न तूल हूं ते तुच्छ जान्यो हिन॥ पुगलअनन्य अ
सीसु दृशा समतपद पागि रहे प्रीतम में सन्यारे नहीं एक छिन॥ उ१०९॥ शांतरभ क्त को उद्दीपन विभाव उपनिषत रहस्य थलवास जग आस
स

नही ६

॥नामभे॰॥

तजि॥

॥श्रीराम॥
॥३६०॥

तत्व वर विशद विचार अंतरंग व्रति उल्लस वाढिवा ह्येमें नर विज्ञान भान भजि॥ विस्वरूप ईश को विलोकिवो विसारि स्वमनाना
अभिलाष के निवारिवो सुवोधस जि॥ डगाल अनन्य ज्ञानी भक्तन को संग सहारु वेचार चित्त वीच विस्व वासना विलजि
३ ११०॥ दिव्य उपनिषत विचार तपुलक वपु नैन नैं मैं नीर वेहे प्रवल प्रवाह सम॥ रामराय सुपद प्रसाद तुलसी सुगंध सैं व
त उछाह हिय वाटत विसारि गाम॥ पुन्य सैल सरित सु शरन्य पलवास लोक रंजना निरास चित्त छाया परह्यो स्वादु सम॥ डगाल
अनन्य रीति आदि क सामान्य रीति जानिए उद्दीपन विभाव वर देशारम॥ ३ १११॥ शांत रस सुभ अनुभाव चाव लाय सनु
गुनु उर अंतर विहाय विसय वासना॥ ध्यान नासिकाग्र अरु धूत चारु चेष्ट वपु पुस्त हस्त रे सिप गाधारन सुगासना॥ मुद्रा
ज्ञानमयी दृढ धारना अखंडानंद परम परेश प्रीति अचल उपासना॥ डगाल अनन्य तिन ऊपर कदापि को उकाल मैं न काहू
भांति वेद कृत सासना॥ ३ ११२॥ सीप वर भक्त औ विमुख उदासीन वीच सम तान भेद दृष्टि नीरस स्वभाव शुचि॥ सांची ॥३६०॥
सिद्धताई तथा जीवन मुकुति चाह दाह विरहित हिय पग रंग मैन रुचि॥ सात्विक रोमांच स्वेद कंपना दि सम एक प्रवल पहो वि
सारि वीज वासना विशेष नुचि॥ डगाल अनन्य उपदेश भक्ति ज्ञान ध्यान योग भोग खंडन विशेष विस्वे सम क्रुचि॥ ३ ११३॥
देह अभिमान विगलित ज्ञानी योगी जन सात्विक विशेष प्रज्वलित ताहि अवधारिए॥ जानकी रमन शोक सम मन छवी न छुनि
छुमि मनन मगन समाधि सुख टारिए॥

विभिचारी भाव निर्वेद धी ध्र्व हरख मति सुस्थ ति ग्र वरख उ चिंता निर धारि ए

॥श्रीराम॥

जुगलअनन्यरूपमाधुरीविलोकिउरब्रह्मानंदहूंसेंनिर्वेदतानिहारिए॥३११४॥शांतिरतिशांतरसथाईभावजानोजीपता
मेंद्वैधाभावसमासान्ताअनुमानिए॥प्रथमसमाधिआधिव्याधिविरहितविस्वकल्पनाअतीतयोगसिद्धिमनमानिए॥दू
जैज्ञानकीशगुनश्रवनमननस्वादुविरससमाधिकोविचारिवोप्रमानिए॥जुगलअनन्यधन्यविज्ञवरमौलिमनिजाकी
मतिपागगईरूपरसहानिए॥३११५॥केवलशांतमेंरागनद्वेषविमत्सरस्वच्छस्वभावसजाए॥हेसमताजिनकेसबभूतमेंवे
रनहर्षस्वरूपसमाए॥वासनावृंदविलीनकिएपरमातमआतमभेदबहाए॥जुगमअनन्यसुकेवलमोक्षलहेपरमेश
समीपनगाए॥३११६॥शांतरसथाईभावकोउनिर्वेदकहेकाहूमतमांझधृतिशांतिहीविचारिए॥जानकीरसिकछ
विध्यानीकोउविभुरूपस्वच्छज्ञानध्यानमानुभेदननिहारिए॥कहेंकहालगिनानाभांतिअनुभावभावसात्विकसंचारिहूंए
पकअवधारिए॥जुगलअनन्यसीताकांतसनेहसजिपाकसमैआरसुखस्वादनासम्हारिए॥३११७॥गोनवीररसआ
हिसमसोउपांचवीचजहांजहांलसततसुबुद्धितेविवेककरु॥अवधविहारीनामरूपगुनलीलाधामचरितपुनीतगायगा
यहरषाएउर॥काजकछनाहिलौकरजनाकिएसमीतअविहितरीतिकोविसारिप्रभुपासडर॥जुगलअनन्यकालकठि
नकेवालतउनेकहूंनशांकस्वामिसरनसमर्थपर॥३११८॥इतिशांतरसवरननिरूपणोनामरससंपूर्णं॥०॥५॥०

॥नामने०॥

प्रीतिभक्तिरसअतिअमलस्ववसस्यामरामअभिरामकोकरतअविलंबहीं॥ नानाभांतिरंगयांमेंसुअनुगसुरंगसमसमयस
मानप्रगटैंसुखथंबहीं॥ आपनेस्वरूपसमुचितसुविभावआदिसोहतमहिमामुनिमोहतकरंबहीं॥ जुगलअनन्यरसअनुगस
नेहवंतजानुपगयामेंअवलंबनअरंबहीं॥ ३११९॥ अवधकिसोररूपचारचित्तचोरमानमदनमरोरतोरडारतसुनोर
जस॥ द्विभुजअनूपआभरनअंगअंगरंगहायकअजूबउररराजलअपाररस॥ अमितउदंडअंडचंडप्रतिकाशकृपासिं
धुरघुराजसर्वेस्वरसुभक्तवस॥ जुगलअनन्यअवतारअवतारिनसेंसेवितसदैवसानकूलमुदमूललस॥ ३१२०॥ सुंदर
स्वच्छसोहावनदिव्यगुनाकरधामविषयअवलंबन॥ जाकीकथाकमनीयसुनेहियहोतउछाहअथाहसुसंबन॥ वा
रकनामउचारकिएभवसिंधुअगाधतरेंअविलंबन॥ जुगमअनन्यसियावरध्येयपनऔरकहूंकोउप्रीतिसुरंबन॥ ३१२१
चारिविधिदासजगाजननउदासगेहअवधविहारिहींकोआसस्वांसस्वांससेंमें॥ अधिकृतआश्रितसुपारषदद्विततमअ
नुगअनूपअनुरागआसपासमें॥ एकरसप्रीतिसूक्ष्मरीतिसविचारपरकहूंकाहूबीचकछुभेदअवकासमें॥ जुगलअन
न्यधन्यधन्यजेपरिसरामसेवकअखंडभावधारिकेंसुपासमें॥ ३१२२॥ अधिकृतहासब्रह्मसंकरसुरेशरखासमहाराज
आयससुसीसधारिपालहीं॥ काहूसमैकैसेहूंप्रमादकोनपारकरेंभरेंडरशातनसुस्वामिपदमालहीं॥ ॥ ॥ ✤ ॥ ॥

॥श्रीराम॥

लोकपरिस्त्रानवीचहोयअंतरायकहूंवारकपकारकरिपावैमोहमालहीं॥ युगलअनन्यदुष्टदाहनविरोधीभक्तमारेतिन्है
सवलसुवीरताविसालहीं॥ ३ १२३॥ आश्रितभक्तमैंभेदत्रिधासुशरन्यसुत्तानिचरापहिचानो॥ तीसरोसेवासुनिष्ठ
लखोअभिलाषअनेककोजाहिनभानो॥ हैंवडभागीसुरागीसोईजिनकेजियहैस्पताभावथिरानो॥ युगमअनन्यस
भीतिमुमुक्षुतात्यागिकेजन्मसेसेवाप्रमानो॥ ३ १२४॥ जानकीजीवनजूकेसमीपहेमधानभोसरसेसुखपाई॥ श्रीहनुमा
नसंआदिअनंतसुधासुखसिंधुसुप्रानसमाई॥ रूपस्वरूपसमानसुमैंतिकामकरंवनकीछविछाई॥ युगमअनन्यविचित्र
प्रभाकरपारषतभक्तकहोंकिमिगाई॥ ३ १२५॥ प्रेमपयोनिधिमीनसदाविलगाहिंनिमेषनासेवाविसारी॥ अंतरवाहिरहूंअ
धिकारसमपसमसेवहीश्रीधनुधारी॥ वासनावंदविहायपगेपदपंकजमांमरदसात्तिधारी॥ युगमअनन्यसियावरके
सोइसांचेअनन्यपरहस्यसुधारी॥ ३ १२६॥ धूर्पधीरवीरतीनभांतिपारषतआदिमेदवेदविदितसुसंतजनभाषहीं॥ अवध
विहारीप्रानप्रियवर्गवीचचित्तचाहनसमेतदासपनैंसुधूर्पआरखहीं॥ प्रप्रसीसुमीतशीलसहितशरनसेवास्पलहूंकरन
सोईधीररसचाखहीं॥ युगलअनन्यसीतारामजूकीकृपाआससवलसदैववीरआनभीतिनाषही॥ ३ १२७॥ महाकाल
के हूंभीतिधारेंनकदापिचित्तरहैंसीतारामकेभरोसेंतजिलोकलाज॥ तीनलोकसंपदासुजानेशोकथोकरूपअमलअनूपगुनगावैंसजि
शोकसाज॥

॥नामने०॥

नामरूपधामलीलाललितललामस्वादुस्वादहूतहमेमाऔरकाहूसेनकछुकाज॥ युगलअनन्यरघुवीरजूकेबांके
वीरअचलसुधीरमेरेजानेसोईभक्तराज॥ दो० १४८॥ जानकीजीवनहासम्भावउद्दीपनश्रीपदकंजपरागा॥ श्रीअवधे
शअनुग्रहकोवरभाजननछाकिरहेअनुरागा॥ सीयरघूत्तमजूकोप्रसादतथाप्रियभक्तानहंरुचिरागा॥ युगमअनन्यसुहा
समसनेहिनकोसुचिजूठनपायसुभागा॥ दो० १४९॥ सीतारामसेवासानकूलभूलहरप्रेमानंदसागरमेंडूबिरहेनित्तहीं॥ गावें
गुनगीतअविगीतनृत्यभावचावभिन्नतासुसंतसनसाजतसुचित्तहीं॥ रूपगुनमाधुरीसुध्यायकेस्तंभआदिसात्विकवि
शेषैरएअविचलचित्तहीं॥ युगलअनन्यविप्रलंभयोगवीचगतिअतिहींअकथअनुभावहियहिताहीं॥ दो० १५०॥
व्यभिचारीभावहर्षगर्वधैर्यनिर्वेदहैग्लानताविखिन्नतासुचिंताजियजानिए॥ शंकासुस्मृतिऔत्सुक्यजाड्यमोहलाजती
व्रउग्रआहबोधस्वप्नहंप्रमानिए॥ श्रमव्याधिमरनअवधिसोविचारोचित्तहोतस्वच्छभक्तनसुहीयसांचमानिए॥ युगलअ
नन्यऔरआसविस्वासत्यागिजानकीरसिकपदकंजसंबठानिए॥ दो० १५१॥ स्थाईभावसंभ्रमविशेषप्रभुभूतिजानिकंप
कायवीचचित्तसोहरसनेहसे॥ ऐसीभांतिप्रीतिसोईसंभ्रमविचारिएजआगेआगेवढतअपाररुचिगेहसें॥ प्रेमासुसनेह
रागअमलअनुरागवरअवरअसरहरनेष्ठामहमेहसे॥ युगलअनन्यभक्तिरहसगंभीरतरमेरीमतिमूढकहाजानेरंगीहहसे॥ दो० १५२॥

॥श्रीराम॥

वारहैंमुक्तिकीचाहनहींचित्तकौनिकलाकैवल्यकीगावै॥सिद्धिसमूहमहाविषव्यूहलखेपरतूहप्रमाइविहावै॥स्वांतसमु
द्रवरूपरहैदुखमेसुखकोटिनेपागतपावै॥युगमअनन्यसियावरकीरतिरीतिविनावियवातनभावै॥३१३३॥सीतारामनाम
गुनग्रामअभिरामधामधारनाअनूपलीलाअनुछनध्यायध्याय॥नैननसोनीरवपुपुलकप्रवाहउरवासनाविहीननित्य
रामगुनगायगाय॥काहूसेनरागद्वेषलेनदेनभावचावसहजसुभावरषप्रेमछायछाय॥युगलअनन्यधन्यमानमनु
संतसांईजोकहिएराजतसुभक्तिगुनआयआय॥३१३४॥आपुकोहैमहालालमानोसियारामजूकोदासभावरहित
सुपत्रभावपुष्टजाहि॥सीतारामजननीजैकसमपालैंताहिदूसरीनआसमुआलंनविशेषआहि॥महाराजरघुवंशभूष
नसनेहवात्सल्यनिजबीचध्यानआनभाँतिभाननाहि॥युगलअनन्यप्रीतिगौरौविचारुअत्रअधीकअजूवरषरहि
तप्रमोदमाँहि॥३१३५॥श्रीसियस्यामसुवत्सलताहिउद्दीपनभावविचारिएनीके॥नम्रसमेतरहैनितहींअनुभावसा
ईमुद्रदायकठीके॥रीतिबडेनकीधारेसहानईभावनाकल्पनासागिअलीके॥युगमअनन्यसुधन्यसोईजेहिजीयमेंभाव
नभावअधीके॥३१३६॥सात्विकसमूहमूर्छाहिकप्रसिद्धयामेव्यभिचारीभावदशवीसअनुसाररस॥जाकेजियजा
गतसदाइताकोलखैतोनदूसरोबखानैकहाआनप्रीतिरीतिजस॥कोऊकोऊलालसाभावबालेदरसातअवसोऊसोंचेशोकसेंविहीन
चित्तकसमस॥

॥नामने॰॥

जुगल अनन्य सीताराम जू की कृपा बिना भावबर बोध सोध पावत न बात बस ॥ ३९५७ ॥ प्रेम सुसनेह राग श्रेष्ठ उत्तरोत्तर सो जा
नो या को अर्थ मनन मनन सुजान प्रान ॥ रहे उन्मत्त न त्यागन लोक बाह्य ज्ञान अकथ प्रमान ब्यवधान विघ्न कौन भान ॥ सी
ता बर मिलन बियोग जुग संधि बंध बिपुल बिमोचन विकार तम तोम भान ॥ रहे चित्त द्रवित श्रवित नैन नीर नेह कबहूं कठोर ता
को लखान रहे बिधान ॥ जुगल अनन्य राग अमल अदाग जामे विरह हर्ष रुख संमिलित न जहान ध्यान ॥ ३९५८ ॥ हा सार सप्री
ति अति नम्रता बिनीत जा मन बनीत हूं में स्वादु विपुल बिचारिए ॥ नाना भांति भेद या मे ~~समन~~ समन सुखे द्वंद्व विहित अखे
द जन जानत सम्हारिए ॥ बड़े बड़े विज्ञ या की चाह करें चित्त बीच बल भेन हूं नीच की चरन सित निहारिए ॥ जुगल अनन्य सीताराम
नाम सेवा बीच दूसरो बिहार भार खार भार डारिए ॥ ३९५९ ॥ जानकी जीवन के कल किंकर दृष्टि न और लखें कोउ भूलि के
स्वामिनी स्वामी सु नातो प्रधान बिधान न दूसरो सोत है हूलि के ॥ श्री सियराम सदा सुखधाम सुरूप के हैं हमें सार है फूलि के ॥ जुगल
अनन्य सुधन्य सोई जन हा स्यात धारि रहे अनकूलि के ॥ ३९६० ॥ श्री अवधेश किशोर सुमित्र पवित्र गुनाकर भाव विचारो ॥
सख्य सनेह पगे रघुनंद जू जानु आलंबन भाव विहारो ॥ सात्विक औ रसें चारीत या अनुभाव समेत सुपुष्टता धारो ॥ जुगल अनन्य
सुप्रेम रहस्य सराह चखें बिरले अवधारो ॥ ३९६१ ॥ वीर सिरोमनि पंडित विज्ञ बिदग्ध सुबुद्धि बिलास बिहारी ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीराम ॥

कोटिनै देस विलापत वाग विचार न रहस विपक्ष विकारी ॥ प्रीति प्रतीति प्रकाशक स्वच्छ अनीति विहीन सुरीति प्रचारी ॥ युगम
अनन्य अनूप गुनशाल खोर रघुनायक भूप सम्हारी ॥ ३१४२ ॥ ऐसे गुन धाम अभिराम कोटि काम छबि कीरति अनंत लोक शोक
थोक हाक हर ॥ सदा सुखसीम नीम वासना निरास कर आकर प्रकाश अंग आंग न विमोह भर ॥ सरस सनेही प्रीति विवस सवसना
हि अग जग जानत उमानत सुभकडर ॥ युगल अनन्य जानकी शाकी कथा अकथ कहें कौन मुख सेस सुलाजस रसात उर ॥ रूप वेश ४ ३१४३ ॥
वैस गुन सहस समेत तीन सखा राम रसिक उहास अविकार लखु ॥ धारें उर विशाद विभास विस्वास जीय जाग जोक शोक सजवा
य प्रिय प्रेम परखु ॥ कोउ श्री अवधपुर वासी कोउ मिथिलेश नगर सुचित्र कूट घाट बाट मीत अखु ॥ युगल अनन्य सखा भक्ति रस
वारे वहु हैं रसिक मो रघुन गाय सुखस्वाद चखु ॥ ३१४४ ॥ श्री रघुवीर के संग सुभोजन सैर सुसंग अनेक तमासा ॥ भीति न रंच
धरें चित वीच पियरस प्रेम न नेम पिपासा ॥ जानकी जीवन पै नित आपको वारि रहत जि देह विलासा ॥ युगम अनन्य उदास
तीन कुन हीं तिन को सब काल कुलासा ॥ ३१४५ ॥ सुहृद सचेत सखा तैंस प्रियसखान मैं चारि भांति भेद मामि जानि भाव धारि ए ॥ नामने· ॥
वात्सल्य गंध सैंस मत वैशा वीव वड़े कछु कहमे शत्रान धारना निहारिए ॥ सम वैश वारे सखा किंचित कनिष्ठ नर्म प्रीतिरस मुर भि
सहित अवधारिए ॥ युगल अनन्य से वा वा जन समान रितु ओर हूं उचित भावना हीतें विचारिए ॥ ३१४६ ॥ प्रियासखा सरस

सरूपसुनोनुत्यवेशसख्यभावकेवलनआनकथसानेहै॥ पीतवरवसानलसानअंगरागकीटकलितसुपागअनुरागइति
हानहै॥ स्यामअभिरामघनपांतिसकुचातजोहिमोहिरहैंसुरीनागकन्यकाप्रधानहैं॥ युगलअनन्यअवधेशसहचरवंद
सोभाकहैकोनऔसोकविमतिमानहै॥ ३१४७॥ सुनिएसोहावनस्वरूपप्रियनर्मसखासबसेषिरोमनिरहसअधिकारिहै
सीपस्वामिनीकोसंदेशावरवेशगुनमानलालपासकहिरेहिंमुहमारिहै॥ उभैओरंगरसवोरसुकैनप्रियवचनरसाललला
गसुनतसुप्यारिहैं॥ युगलअनन्यधन्यभामिनीसमीपीमित्रसुलपसुवेशवारवारवलिहारिहैं॥ ३१४८॥ कोउगौररंगसु
उमंगधारेअंगनवभूषनअजूवगजवाजिनसवारसंग॥ कोऊस्यामहरितअरुनपीतआचरजरूपगुनधारेआभरनवस
नाथिअंग॥ कोउअंतरंगवहिरंगसेवासावधानकोऊव्यवधानसमैंआपनोरमैसुरंग॥ युगलअनन्यनानाभांतिकम
नीयकलावालेसखिसोहतसमाजसुखसाजरंग॥ ३१४९॥ एकनसैंएकगुनगौरवगरूरवारेरामरसमत्तजसजोंहरज
छएहैं॥ लोकवेदवासनासमूलवहवाएजिनजाहिरजमातसैंसनेहहूंभूछएहैं॥ गावैंगुनपुलकप्रवाहसैंसमेतमित्रआ
पनोरिझावैंआपरीझेउमगएहैं॥ युगलअनन्यनएनएसुपोसाकवपुअमलअजूवएकरससुछएहैं॥ ३१५०॥
कईकोटिसखातामैंमुख्यकईलाखपुनिगीनतीगनावोंकहांलगीनामवेसुमार॥ उज्वलरहसासीलसरससनेहवतफूलेनितविमल
वसंतसमसुकुमार॥

॥श्रीराम॥

अरधकिसोरचित्तचोरकीकहानीनित्तचित्तवीचछापरहीवहीमतिमोहभार॥ युगलअनन्यऐसोसांचेसखाभाववारेकोनि
नेमएकतिनहींपैहौंतोवलिहार॥ ३१५१॥ संभ्रमहीनसदापनपीनसोई विश्वाससुभाईसोहावन॥ सखमहाविस्वासजोगा
टेवटेरतिहोतप्रनयमनभावन॥ प्रेमसनेहसुरागलखोअक्रमतेविधिपांचप्रपंचनसावन॥ युगमअनन्यसुमित्रताभावअनुच्छन
चावप्रभावलसावन॥ ३१५२॥ श्रीअवधेशकिसोरसुवयवररूपमनोहरश्रीधनुसायक॥ वागविहारगनाहिसवारवजार
वहारसिकारसोहायक॥ नर्मविनोदप्रमोदवत्साहिकवयअनरूपअनूपसुभायक॥ युगमअनन्यउदीपनभावअनेकप्रकार
उछाहविधायक॥ ३१५३॥ वालकुमारपोगंडकिसोरसुवयचितचोरमहामुनिमोहन॥ आदिसुमध्यतथापरिपूरनताहूमभेदअ
नूपमसोहन॥ सख्यसुभावपगेअवलोकहींआपनेहींअनरूपनिगोहन॥ युगमअनन्यसुधन्यसोई जोहिचित्तवसपोछविना
हिविछोहन॥ ३१५४॥ सरससनेहसैंसमेतजंगरंगकेलिघूतउत्साहकंदकंदुकविहारवर॥ सरजूसुसरवीचकेलिक
मनीयगानरुचिरमनीयपैंविपरीतज्वर॥ नानाअनुभावकमित्तारिववोसुमित्रस्यामसुंदरसजायजियमोकअनुरागभर॥ ॥नामने ७॥
युगलअनन्यरहुवीरजूकेसख्यास्वच्छरहेंसानकूलसद्दानापिलोकवेदडर॥ ३१५५॥ नानारंगसुमनसुमालगूथिभा
वभरिअवधेसकेलालकंठवीचपहिरावनो॥ हांपनसोहाथकोमिलापवोसनेहसाथवीरीवरवदनसुरंगसरसावनो॥ ॥

समनीय
३

॥श्रीराम॥

॥३६५॥

भूषनवसनअंगलसनसवांरिनखसिषछविप्रेमसैंविलोकिवोसोहावनो॥प्रगलअनन्यभांतिभांतिनविधानसजिआपकुलस
नहियांस्यामकुलसावनो॥३१५६॥सात्विकसुभाववसुमनपसमप्रसोहैंअंगमानप्रापप्रकाशमानमहंताविहीननित॥अश्रुस्वेदकं
पवपुपुलककविवर्नस्वरभेदसुस्तंभकहूंप्रलयहूंविलीनचित॥विरहसुपेमसीचहोतआठभांतिसुविसात्विकसुभावलेखरीआ
कअनन्यचित॥प्रगलअनन्यवैनकहतवनेनकछुजानेसोईजोकजिपजागतविशेषहित॥३१५७॥आदिअपोगमेचाहअज
वकहाचितस्याममेंपोगसजेहों॥होपवियोगमेक्लेशमहासुकह्योनहिजातअवागलजेहों॥होतदशादशप्राप्तसहोकु
शताहिजागर्नअधीर्य्यछजेहों॥प्रेमअनन्यआलंवनसन्यतथाजडतावकुव्याधिमजैहौं॥३१५८॥सातवोंहैउन्मादसुआ
ठवोंहैनवोंमरणीमीचवसनेही॥योगमएसिधिनुषसुपुषसुधीरतामोदविनोदसुमेही॥पांचहूंमेसुवियोगदशादुखतामेवि
शेषतिहूंपलरही॥प्रेमअनन्यकहाकहिएलहिएसुखस्वादमजेगनगेही॥३१५९॥स्वच्छविभावसुआदिकसंपदपु
षसुपाईमयोजवनीके॥हैसोईवत्सलनामसोहावनेप्रेमप्रभावसुचावअधीको॥औरछलालसनेहसेवाललखेअवलं
वनभावअफीको॥प्रेमअनन्यमनोहरमोहनकोमलकंजहूंसेंजियरीको॥३१६०॥मधुरवचनरूचिरचनसचनसुख
सरसकोचसर्वलछनउपेतश्री॥स्यामघनपीतवरवसानलसनतनअंगतनअनंतसमकांतकमनीयश्री॥॥ॐ॥।

॥३६५॥

॥श्रीराम॥

विमलविचित्रभूमिवीचविहरनशीलजननीजनकमोददायकस्वभावश्री ॥ युगलअनन्यविषयआलंवनहियगुनआ
श्रयआलंवनहंराजतसनेहश्री ॥ ३१६१ ॥ वडेगुरुजननजनकाहिकेसुवात्सल्यरससिंधुआपुमानिशीशपालनाकरें ॥ लाल
नाहिकृत्यमाभरहतनपरसदाजोहिकलवालकेलिहिमांहंनहीधरें ॥ महारानीकोसिलासेंआदिहिनरैनचारुचरितसु
गायहुलसायमोहिसभरें ॥ युगलअनन्यअनुभावनानाभांतिसोंउद्दीपनविनोदशिशुताईछाहसेंउरें ॥ ३१६२ ॥ वाल
कुमारपौगंडमधाकलकेलिसोहावनरूपनिहारें ॥ मुक्तमनोहररत्नसुजीवनप्रानपलपलउपरवारें ॥ अंगअंगरूपसंवारि
मलीविधिअंजननैननवीचसुडारें ॥ युगमअनन्यअनेकनभांतिसेंरामललाकहंमातुदुलारे ॥ ३१६३ ॥ सात्विकभावस
मूहहैतेशुसुस्तनकोअवहैअधिकाई ॥ वालविचित्रविनोदलखेललचायसनेहसेहोयाहिराई ॥ वत्सलतारसकीमहिमा
कहिजातिनमोपैपरत्ववडाई ॥ युगमअनन्यमहामुदहिवलहैंजननीजनकाहिसहाई ॥ ३१६४ ॥ वात्सल्यरसवीचविभ्रहस
नेहप्रेमप्रनयसुरागभलीभांतिअवलोकिए ॥ हर्षसेप्रमुखव्यभिचारीभावयथासमयसोहतसुमुनिमनमोहतविलोकि
ए ॥ नैनवैनऐनमोंमेंवालकचरित्रचारुचिंतामनिव्रातसमध्यायचित्तराखिए ॥ युगलअनन्यपूज्यपरमसुवात्सल्यमा
निएविशेषनकीभावनादिमूकिए ॥ ३१६५ ॥ आपनेउचितसुविभावआदिवस्तुनसेंपुष्टतासुपाययरसमधुरविचारिए ॥

॥नामने०॥

मधुरासुरतिअतिरहसविशेषसुचिरमाकअनन्यभेदजानतनिहारिए॥ जानकीविहारीसुखकारीविषयालंबनआश्र
यआलंबनसुनायिकासंभारिए॥ युगलअनन्यगुननायकमुकुटमनिअमितअजवपरसर्वसवारिए॥ ३१६६॥ स्वामिनी
सीयसमाननदूसरीभाग्यवतीसतप्रेमप्रभासी॥ प्रीतमकोअपनेवसकैरसकेलिकेरवसुजामसुधासी॥ उज्वलश्रीरसराजअ
नूपमछाईछटाछविअंगविलासी॥ युगअनन्यमहामतिमंतकहैकिंप्रीतिपरत्वप्रकाशी॥ ३१६७॥ मिथिलेशकिशोरीस
खीसवहीरसराजमहारसकीअधिकारिनी॥ दंपतिप्रेमप्रमोदविनोदसुकेलिहिएअपनेअवधारिनी॥ चाहनहींनिजहर्ष
कैंयुगमोजमेंपागिरहीपियप्यारनी॥ युगअनन्यप्रसन्नतापावनप्रीतिप्रभासनवंधविहारिनी॥ ३१६८॥ जानुउद्दीप
नस्वच्छविभावसुवीनमदंगासमनत्यसोहावन॥ कोकिलकेजकलाविकलाकरभूषनहिव्यसुसौंजमोहावन॥ औरहूंअंग
उमंगउछाहतथारितुराजसुचित्तलोभावन॥ युगअनन्यएलेहगप्रेमतराविभावउद्दीपनभावन॥ ३१६९॥ मंद
मुस्क्यानरसख्यानकलकोरचित्तचोरहावभावचालचमकविचारिए॥ औरहूंअनेकभांतिकोतिरूपअनुभावछा
वतसुछविउमगावनोनिहारिए॥ सात्विकमसहसरसातवरसातसमनैननीरधारपुलकावलीसंचारिए॥ युगलअनन्य
व्यभिचारीसर्वयामेंहीनआलसऔउग्रतादिशेषनिरधारिए॥ ३१७०॥ मधुरारतिजानोसुधाईहिएमिलिकैरसउज्वलपुष्टतालाई॥

॥श्री राम॥

अंगनअंगनमेमहुमाधुरीकेरि<sup></sup>करवेममाधुरताई॥ रूछजाकाहूसेमेनरतीभरिपरसेशाकेमधुराईविहाई॥ धुगमअनन्यकेरासनमेंको
उपावतेहरसउज्वलताई॥ ३१७१॥ हेरसराजमेभेदउभयसुसंयोगवियोगविचारिएधोर॥ पूरवरागसुमानप्रवासतधाविप्रलंभमेभेद
विचारे॥ पूरवरागसमागमपूर्वमेंमानत्रिधासुप्रसिद्धसुधोर॥ धुगमअनन्यविरहआगएपरहोतप्रवासमहादुखभोर॥ ३१७२॥
सीतारामसुजसअपाररसराजेह्याकह्योमेंकछुकसेरमेरूकोविचारिए॥ कोटिनकलपकहिगोपानहोजातरसनायकरहसआति
आगमसमझारिए॥ शांतरसगौनमुख्यसंगीताकोअल्पभेदकहोकछूगाएकुलसायचित्तधारिए॥ धुगलअनन्यजानकीआसंमि
लतगौनपषिएप्रधानभेदरंचकनधारिए॥ ३१७३॥ इतिमुख्यभक्तिरस॥ पांचप्रकारसुभक्तनवीचलसेसुचिसातोसुजीपेमजा
नो॥ एककहूंकतहूंलखुदैतसुतीननत्यासबमीतपछानो॥ आगेविभावकहैंगवनायसुताहीसमपुष्टताहोतप्रमानो॥ धुगमअ
नन्यतहांप्रथमेरससहांस्यसुभक्तिप्रतच्छहींमानो॥ ३१७४॥ श्रीरघुवीरसिरोमनिनित्यांप्रभुयोगसमेतविषयअवलंबन॥ आश्र
यवर्द्धसुवालसेआहिलसेमनमानिएभावनालंबन॥ प्रीतिप्रकाशकहांसजहांतहंभक्तनहेतप्रमोदविलंबन॥ धुगमअ
नन्यसियावरपेखिरतेरससहांस्यअजूवअयंभन॥ ३१७५॥ सीतारामवागवेशचरित्तस्वरूपगुनजानिएउद्दीपनविकारवि
सरायके॥ नासाओंठगंडविस्फुरनअनुभावतैसेओरओरअंगमेविचारिएसचायके॥ हरषसुआलसबहित्थासप्रमुखव्यभिचारीभाव
जानिएसुचित्तसरसायके॥

॥नामने०॥

॥श्रीराम॥

प्रगलअनन्हासरतिसुस्थाईभावचावसेसमेतकीजेमननसमायके॥ ३१७६॥ षटधासुहासरतिसुस्मितहसितहूविहंसि
तअवहंसितहींअनुमानिए॥ अपहंसितातिहंसितहूंपहिचानिजिएउतममधमऔकनिष्ठसुखदानिए॥ क्रमहींतेजानिए
विभावनाहिनानाभांतिसमयअनुसारसुखसाररचिठानिए॥ प्रगलअनन्सवल्लविपुलविभेदपामेकहूंपरिहांसरसगांस
अविधानिए॥ ३१७७॥ आपनेउचितहींविभावआदि [illegible] रीतिपुतअद्भुतरसरतिविस्मयविचारिए॥ सर्वभक्तवीचरह
घटतनमेंहकछुलोकसेविचित्रवस्तुदेखिसुनिधारिए॥ चेष्टाविधिशाखिसोउदीपनविभावअनुभावमेनफैलनसुथंभअ
श्रुगारि॥ प्रगलअनन्सतवसंभवहोचारिजानुअद्भुतरसगतिप्राछाप्राछप्यारिए॥ ३१७८॥ हैउत्साहप्रधानमनोहरथा
रत्नीरसविज्ञवषानत॥ भावविभावसेंमीतमिलेसुषल्याइविशेषहींदेतअमानत॥ प्रडसुदानदयासुछिधर्मसुचारिप्रका
रकोभेदप्रमानत॥ प्रगसअनन्सुभक्तसमूहमेंहेरसवीरउछाहसुठानत॥ ३१७९॥ हेउत्साहअनेकप्रकाररसजसुभेदव
हैंहितहेरत॥ पाँचहूंभक्तनमाझलसेसमयआपनेआपनेदषसुप्रेरत॥ प्रीतिकीरीतिविनाउत्साहनसिद्धिमयपारपवेदहूं
देरत॥ प्रगसअनन्सुवीरसुधारसनीकेविचारतभावनिवेरत॥ ३१८०॥ शोकरतिकरुनासरसकोविचौंजीपअपनेउ
चितसुविभावआदिसंगहै॥ अविछिन्नमहानंदप्रेमसुविशेषशोकाजानिएअनिषदुःखपरमेशअंगहै॥ ॥ ✿ ॥ ॥

दो २

॥ श्रीराम ॥

प्रेमरससरागीवड़भागीउभैभांतिलेहयुक्तअवधेशासुआलंबयुगारंगहै ॥ युगलअनन्यअधिकारीयाकेपांचोनिजनिजरससम
उरउछनउमंगहै ॥ ३१८१ ॥ करुनारसकोकहिएगुनकोनकृपालसियावरवेगिद्रवैं ॥ वपुमेंपुलकावलीछायरहेदृगमेंअनु
रागसुनीरस्रवै ॥ ऐसोदिव्यमहारसहैउद्दिप्ताद्युतिहेतविलच्छनप्रीतिगवैं ॥ भनेयुग्मअनन्यविवेकसुभक्तिविनाकरुनासुखना
हींफवे ॥ ३१८२ ॥ रौद्रभक्तिरसमाझक्रोधरतिजानोजियहेतपुष्टआपनेयथोचितविभावआदि ॥ पांचोभक्तिवालनकेहोयेम
समैनुसारबूझोअधिकारीप्रतिष्ठादिकेविकारवाधि ॥ अवधेशाप्रवरपेरशान्तथाशात्रुमाहिहोतहैविहितभावपोषिएनहींवि
याहि ॥ युगलअनन्यसूक्ष्मबुद्धिसरहसरसछानिकेविप्रोषवादैअघजामशर्मभाहि ॥ ३१८३ ॥ कोपतीनभांतिभातिको
धमनत्रोषशात्रुवंधुपूज्यवीचरीतिसोविचारिएविहायभ्रम ॥ तामेरोषपरमपियारिनसुमांझलखोचखोरतिभावशौ[illegible]पा स्याद
गिकेतपाहिभ्रम ॥ इष्टप्रेमपंथपरखिचिमिरलसुभक्तमध्यसोहतसनेहगुनअगमविचारक्रम ॥ युगलअनन्यविस्ववासनाकु
वीजदाहकीजिएहमेप्राकुखलीजिएनवेमानमें ॥ ३१८४ ॥ भावविभावसेआदिसहायकपायअनुपानकेहूंरतिपोषन ॥ वि ॥ नामेन ॥
त्तवर्षनिकहेंसुनिएरसभीतिसभक्तनकोदुखसोषन ॥ ज्ञानकीनायकहैंसुआलंबनआश्रयदीननकोपरितोषन ॥ युग्म
अनन्यविषयआवलंबनभक्तसनेहीसुवंधुअँरोषन ॥ ३१८५ ॥ अनुकंपमांहिभीतिचिन्हकंपकंठसुष्कवदनमलीनअवलोकि
दीनवंधुमीत ॥

वारवार बोधन करनै धैर्य्य हीनताहि मुंचिए विभीति मोहि निकट निहारि हीत॥ प्यारे मन बंधिन सुशंका लखि हाहाकार वचन उच्चारन दयानिधान हिय प्रीत॥ कहा करो कोन विधि दुरे दुख दाह हह्वै भावना सु हीयं मे कृपाल के रहत नीत॥ ३१८६॥ अरे नर हौं रसे हेत भीत चित्त बीच अवध किशोर की कृपालता विशेषते॥ भावी भीति भक्तजन न चित्त बीच सुमिरत करत न होश आपि रताप अनिमेषते॥ ऐसे हू दयाल से मन लाग्यो जाको जो रहितौ न महामति मंद ख्वै दपाइहैं अशेषते॥ युगल अनन्य हो उच्चार मुख कंठ ओंठ सूखेनो उसांस अनुभाव दीप लखते॥ ३१८७॥ आंसू विहीन लसे सब सात्विक मोह महा ज्वर कंपनो चंचल॥ को भानस्य दसुशंक सै आहि संचारि न छोडि थाके तेहि अंचल॥ जानु भयानक हीं रति हीय मे होत है पुष्ट मिले सब मंचल॥ युग्म अनन्य लसे अपराधि हू मोह विभीति विचार हि मांचे ल॥ ३१८८॥ जानिए भीत भयानक की गति इष्ट सुभक्तन बीच बसे हैं॥ हे हा उच्चार उभै अवलोकन यो भरती शकना हि लसे है॥ यद्यपि गोन तऊ प्रभु के शुचि संगम पाय प्रधान है से हैं॥ युग्म अनन्य सनेहिन भीति विचारि विलोकि परे शफ से हैं॥ ३१८९॥ आपने विभाव आहि सरस सहाय पाय पुष्टिता लहत सो विभत्सरस जानिए॥ सीता वर विशद पदारविंद विना वस्तु विविधि निरखि घिना भली भांति मानिए॥ वार वार थूकिए च दायनासिका विशेष देखिए न दृष्टि सापनी च ता प्रमानिए॥ युगल अनन्य अनुरागी रस शांत पर वृभत्स अवलोकन न मेह रंच आनिए॥ ३१९०॥ धावन पुलक कंप स्वेद

॥श्रीराम॥

इहद्यानि भांति ग्लानि श्रम मोह उन्माद दीनत्त विचार बार ॥ चापलता विगजा उग्रता नु निर्वेद तिं म कल संचारी भाव चि
न्तवीचव निर्धार ॥ ॥ विमल विवेक जा विभत्स रस होत तनु तीनहूं मलीन जिय जानत महात्र्र सार ॥ पगलत्र्रन मद्द जी भांति
लौकिक हो रहे पिहे गलानि उर विपुल उहाश धार ॥ ३१२१ ॥ सात गो नर सको निरु पिक ह्योंपर्यंम ति त्र्रति हीं समास व्यास
बुद्धि सविचारवी ॥ सीतापति सरस सुप्रेगपाय गो न रस होत है प्रधान त्र्रोर साधन सें धारवी ॥ सावधान शांत आदि रस को सु
मित्र भाव शत्रु तात रस्यगहो चित्तवी चपारवी ॥ पगलत्र्रनन्पम क्षिमहारानी हिव्यगु न गायके कहमेशाजी व कोटिन कौतार
वी ॥ ३१२२ ॥ इति गौन सप्त रस संपूर्णं ॥ शांत सनेही सुमीत लखे रस हास्य विभत्स सु वीरता धर्म मे ॥ त्यों अद्भुत सु हद्य चस ही
रिपु श्रीरस राज सु रौद्र त्र्रम मैंमे ॥ प धर्मवीर भयानक हूं प्रतिपक्ष मलीविधि पेखिए मर्म मे ॥ पगमत्र्रन नास म्हारि करौ सत सं
गसुरंग वरस सुठिआ मैंमे ॥ ३१२३ ॥ हास्य सुधारस मित्र मनोहर श्रीरसभूप रहत्त म संगी ॥ हांस्य तथा युधवीर विचारिए सत्रु वि
भत्स रौद्र कुरंगी ॥ वत्सल भी ष्मत्त थालरिवए तजिए तिन साध्य उपाधि दुरंगी ॥ पगमत्र्रनन्मास जाति न संग सजाइए पाइए०
प्रीति अभंगी ॥ ३१२४ ॥ वत्सलता रस नेही सु हास्य तथा करुना हिय भीति विचारिए ॥ शत्रु सिंगार सुवीरता युद्ध सु हास्य
तारौद्र विभाषन हारिए ॥ श्रीरसराज सु मित्र लखौ रस सख्य सु हांस विरोध सम्हारिए ॥ वत्सल शांत सु रौद्र भयानक तौ हिं विभत्स सु
जानि निस्तारिए ॥ ३१२५ ॥

॥नामने॰॥

॥श्रीराम॥
॥३६८॥

हास्यकोमित्रविभत्ससुवत्सलसख्यसिंगारविचारहि ऐसें॥ सत्रुलखोकरुनारसहास्यभयानकचित्तएकाग्रहि ऐसें॥ हैरस
अद्भुतकोरसपांचहुमुख्यसुमित्रसुवीरजि ऐसें॥ ङगमअनन्यविरोधीविभत्सभयानकबूझिएछानकिऐसें॥ ३१९६॥
वीरकोमित्रलखोरसअद्भुतहांस्यसुसख्यताहास्यविचारो॥ भीतिविपच्छसुशांतकहीहयवीचभलीविधिसनिरधा
रो हैकरुनारसनेहीसुवत्सलरौद्रविरोधीसिंगारसुधारो॥ ङगमअनन्यविलोकिएहांस्यहुवैरी[illegible]हीशाकरंचकेधारो
रौद्रकोमित्तलसेकरुनारसवीरसुयुद्धविचारिएनीके॥ शत्रुसिंगारसुहांस्यभयानकभेदभलीविधिहैसुनुठीके॥ भीतिकोमि
त्रविभत्सतथाकरुनारसवैरीरशेसत्राफीके॥ ङगमअनन्यसुहास्यहुरौद्रअमित्रनिहारिएवैनअलीके॥ ३१९८॥ जानुत
रस्यविपच्छहितूविनबुद्धिविचारविकारविहीनो॥ द्वादशबीचलखेसअंगअंगिसुभेदलखेमतिसाम्प्रवीनो॥ मुख्यसुपांच
समप्रकरुपाएकेहोतहेगोनकोअंगछवीनो॥ ङगमअनन्यअतर्ककथारसकीकिमिगाइएचित्तमलीनो॥ ३१९९॥ द्वादशभावी
वअनेकरहस्यविचित्रसुबुद्धिवदायविचारे॥ मुख्यहुगोनकेहूपुनिमोनतोहैपरसिद्धहीअंगपिपारे॥ भावविशेषविबुद्ध
भएद्दरसातसभीरसखाद्दअपारे॥ ङगमअनन्यसिपावरकीकलकीरतिगाईसोमसकोरे॥ ३२००॥ ग्राउसमांहिमिलेस
वहीरसपैप्रगटातसमैनिजपाई॥ वैरविरोधप्रधानमैंगोनसुमुख्यकिएबुधिगोचरताई॥ एकप्रधानमेअंगतायाविकेऔरवेसराकेलेश
नगाई

२७
॥श्रीराम॥
॥३६८॥

॥श्रीराम॥

उगमअनन्यसुभक्तिनीविशेषमेंहैरसकीकहनीछविछाई॥ ३२०१॥ याहीतेश्रीसियरामरसअरंगीललनकोसुचिसंगसोहावन
शोकसेमततसहाकरिएतारिएभवसागरमोहभयावन॥ दंभमहाहिमलीनस्वभावविहायकेछाइएस्वादसुपावन॥ उगमअन
न्यसियावरकीरतिगाइएनितयाहियोहुलसावन॥ ३२०२॥ वोलिएवातविचारविनासपनेहूनहींअनुरागविहाए॥ जानकीजी
वनप्रेमपियूषछकेरहिएअपनेमनभाये॥ श्रीरघुनायकधामसुधाकरवीचवसेरहिएछविछाए॥ उगमअनन्यसहायक
श्रीधनुशायकश्रीअपैप्रेमसजाए॥ ३२०३॥ इतिश्रीरससमूहवैरीमित्रनिरूपनसंपूर्णं॥ रसाभाससोईजामैंहीनअनुभावआ
दिपूर्वगुनउत्कृग्नरससहृश्राहृत्यातहै॥ तामेंतीनभांतिमतिकोतिसुविचारिकैंहैं उपरसअनुरसअपरसजातहैं॥ पांचहूं
मैंन्यूनताविचारीउपरसतीनअनुरससातअन्यजोगमिलपातहैं॥ पुनिअनन्यअवधेशआतुवीचगोनरससोईअपर
सहृसरीनवातहै॥ ३२०४॥ उपरसउत्तममध्यमविचारुअनरसअपरसकोनिकृष्टजियजानिए॥ शांतउपरससीताप ॥नामने०॥
तिपरंब्रह्ममांहिब्रह्मभावनाविशेषद्वैतविनाविनाठानिए॥ जागिकेसमाधिसुखसहससअनूपरूपपेखिकेप्रतक्षसोवि
सिष्टमनमानिए॥ यातेन्यूनसर्वमांहिभावनाअकाशसम सांतउपरससोनउत्तमप्रमानिए॥ ३२०५॥ हास्यउपरससीता
रामआगेढीठपनजानकीरमनभक्तहैंकोअपमानहांस॥ औरहेवतानहैंसखाहनोअभिष्टउत्कर्षनाविचारिकेविसारिहष्टउपहास॥

॥श्रीराम॥

॥३७०॥

क

छोडि भय्यो हास्य सार स उपरस होत जो तजगम गतन मलिन उछाह ख्वास॥ युगल अनन्य सावधानता विहीन रस अनुग विशे
ष उपरस रसाभास हास॥ ३२०६॥ सख्य रस सोई उपरस रसाभास जामें एक ही कि प्रीति दूसरे को न सनेह गुन॥ खान पान मा
ने प्रेम सम रस पान बीच होय वावधान एक ओर को उछाह धुन॥ दोउ दिसि जहां न समत्व सख्य भाव तौन रसाभास रूप वर
नत विज्ञ मोह हुन॥ युगल अनन्य वात्सल्य उपरस रसाभास जो महाय ईशताई को सुभान सुन॥ ३२०७॥ सुकुमारता स्वा
द सनेह जहां कुछ बीच परे उत्कर्ष विचारी॥ प्यार दुलार उदार रहे नहि नीरसता गति होत विकारी॥ हे अतिशय रस वत्सल
ता महु थोरे हि मकछु और प्रकारी॥ युगम अनन्य सुनो रसराज को होत जथा रसाभास विमारी॥ ३२०८॥ जामें रसराज उप
रस रसाभास जामें होय ऐंवो रहौं कि रति सु सहाय विन॥ होय आन ठौर हू में प्रीति त्यों अनीति अति जानकी रमन पद पंकज विह
य छिन॥ भाव अनुभाव त्यों विभाव आदि संगी सब होहि जामें आपनो स्वरूप को विसारि हिन॥ श्री युगल अनन्य परिपूरन
रसेस सीताराम परिकर को विहार सुखसार हिन॥ ३२०९॥ याही भांति नाना विधि स्वाद है है नहार रस भक्ति मति सदृश नि
रूपि के त्यों प्रेमसें॥ वार वार सुरुचि समेत पाठ किए सुने रीझिहैं कृपाल भक्त वत्सल सुनेम सें॥ अधिक कराल कलीकाल में न
आन गति केर लक्ष आधार प्रभु भजन सु छेम सें॥ युगल अनन्य राम रसिक सनेहि साथ कीजिए हेम शापी ठि देय वाम हे मसें॥ ३२१०॥

५७

॥३७०॥

मे २

॥श्रीराम॥

प्रथमसमान्यभक्तिहैजोवैधीभक्तिपुनितीसरीसुभावभक्तिचौथीप्रेमरूपिनी॥ पांचवीविभावअनुभावरूपछठीभक्तिरसव
रननसुसामान्यसात्विकीठनी॥ सातवींव्यभिचारीलहरीविराजमानआठवींसुथाईभावरहसनिरूपनी॥ युगलअनन्य
शांतप्रमुखसुपांचमुख्यरसकोकथनपुनत्रयोदशारूपिनी॥ ३२११॥ चित्तमेंकहासुजानभलीविधिगौनहूंशांततरंग
रसीली॥ हांसमेआदिकलैसमसवहीमिलिकेभरवीभसुवीचीरंगीली॥ पूरवउत्तरयुग्मविभागमेंभक्तिरहस्यसनेहसजी
ली॥ युग्मअनन्यअनूपमभक्तिकथाकमनीयअजूवछवीली॥ ३२१२॥ जानकीरमनश्लोकसमनसुभक्तिगुनश्रवनमन
ननिहिध्यानसचेतकरि॥ पाइएपरशाअवधेशपरानंदद्वंद्वहरनहरनअपराधपुंजभावभरि॥ लोकपरलोकमान
विपुलविकारमानिभजनरहस्यपहिचानिएसनेहटरि॥ युगलअनन्यभक्तिमहारानीहिव्यहैशाहेरविएदुरूहसव
साधनसमुद्रतरि॥ ३२१३॥ भक्तिसुधारसजोनपियोलियोलाहसुदेहनहीशाकपामै॥ जानकीनाहउछाहसमेनतभ
एवसतोनहींकेवसुजामें॥ पांचहूंमुक्तिमहासिधितातनतूलसमानलगेपगिश्पामें॥ युग्मअनन्यसुभक्तिप्रभा
सुखस्वादसमाजहिहीयललामें॥ ३२१४॥ इतिश्रीभक्तिरसरहस्यसिंधुनानारीतिनिरूपनसीतारामप्रसन्नकरनसंपूरन
शुभमस्तु॥ अथशरनागतस्तोत्र॥ उज्वलवेशबनायपरस्परवैस्मरहैव्यसुमध्यअनूपम॥ कोशलराजकिशोरकेआयुध
धारेयथाविधिवेदनिरूपम॥

॥नामेने॰॥

॥श्रीराम॥

॥३७१॥

नाताजहानसेंआपनेतोडिकेछोडिकेमोहममोनविरूपम॥ युगमअनन्यगहेसियरामकोकेवलआसविहायविषय
तम॥ ३११५॥ चित्तसरसहेरवकैरचित्तनअचलनित्यसीतारामपरमपरेमाहिशरनमम॥ लोकपरलोकमेविश्राकतेनहे
पधोपवासनासमूहसुखसाजराजएकसम॥ अपनोस्वरूपचिद्रूपपराधीनजानिनीकेपीकेरसरहसनरहेफेरिज्ञानगम॥ यु
गलअनन्यसहाशरनसम्होरउरअफुरअशेषसबसाधनअसीमसम॥ ३११६॥ सहजस्वतंत्रदेहहियवसतचितमाह
अनन्यसिखछविउठततरंगहै॥ आत्माअधारशक्तिअखिलउदारगुनसहितअगुनगुनअंगीसुखसंगहै॥ नित्यमु
क्तआतमसरूपनेहकेलिकलविविधिविहारकहूंपरतनभंगहै॥ युगलअनन्यऐसेकोशीलशारूपरामजानकीरमनमे
रोशरनसुरंगहै॥ ३११७॥ नामरूपगुनधामअरूपअनूपतामेसीतारामजूकोबहुवदतअगुनहै॥ वानीमनपारसुख
सारहेविहारसोतातेनिराकारश्रुतिसंवतसुगुनहै॥ सहाशिवशेशशारदागनेशगावैंगुनपावैनहीपारभीजेप्रेमपुनपुन
है॥ युगलअनन्यश्रीअवैचारवेहजसविशदविलेहसोईअरैंहगुनहै॥ ३११८॥ करताभरताहरतासबकोजरतांतवि
हीनकिशोरसोहावन॥ व्यूहविभवअर्चापरहूंपरकारनेशासमूहमोहावन॥ सेव्यसदाशुचिवालविलसननकेसहूंकान
सुन्योनकोहावन॥ युगमअनन्यसोईशरनागतपालकोवानिसुचित्तचोरावन॥ ३११९॥ नित्यमुक्तजनहियमतनसततचितछ

४ ब

३ ध

॥३७१॥

६२

॥श्रीराम॥

सेवितसदैवसवनीयपदकंजवर ॥ भक्तअनुरक्तमुक्तविमलविरक्तविश्ववासनाअशक्तभेजेहायकेअमानतर ॥ औरजेते ॥नामने०॥
ईशमुनिनायकमहीभासुरअसुरनिकरगुनगनगावैंप्रेमभर ॥ युगलअनन्यसीतारामकीशरनजौनआरतहरनमहक
रनप्रकाशपर ॥ ३२२० ॥ महदादिकरूपसेप्राकृतहूंपदमेंथितिनित्यअनंतविराजत ॥ तेमेंहींब्रह्मसदाशिवविष्णुस्वरूपमें
सृष्टिउत्पत्तिकोसाजत ॥ जानकीनाथहीकीकरतूतिकलासभीकुछभिन्नभ्राजत ॥ युगलअनन्यसोईकरुनाकरकेश
रनागतसेछविछाजत ॥ ३२२१ ॥ मनूमहाराजआदिस्वबुधस्वरूपसजिपालतसुसंतसुखहेतुजगजालजन ॥ नाना सत७
पंथसंतपथप्रगटायदेहअर्थसुविमलसमदपैउपदहैंनपवित्रपन ॥ औरहूंअनेकरीतिप्रीतिहरसायतमतारिपरपद २मोह७
प्रदआपनोउदारगुन ॥ युगलअनन्यअवधेशहीशरनममअसमरहितहितैंचितैंघन ॥ ३२२२ ॥ जौनदेवदेवपतिअग
तिनगतिप्रदसहमतथापननिमित्तऋषीमुनीतन ॥ धारियुगयुगप्रतिकरुनानिधानअभिमानसेरहितमानप्रदजनछ
नछन ॥ जेतेअगजगजीवतिनहूंकेमध्यसुद्धसाक्षीसर्वज्ञतज्ञसेवितसुपदधन ॥ युगलअनन्यसोईसीतारामअभि
रामशरनसदैवसुखधाममममतनमन ॥ ३२२३ ॥ सर्वरूपसर्वतनसर्वचितघनअघटितघटनसमर्थसहायकेसम ॥ भो
गीसबभोगमयअभोगीअलिपितशुद्धदीनजनपालकक्रपालरासरंगरम ॥ जौनदीनबंधुसुखसिंधुअर्चादिरूपधारिकिए

सत२

॥श्रीराम॥

॥३७१॥

पारवरुपानकीविलीनसम॥ कृपालअनन्यमेरोमालिकधारनभूमिअवधेशसहीओरनहीतभुवनमम॥ ३११४॥॥
नानाअवतारसुखसार धारि धारि धेनु विप्र सुरत्रानकिए करुनानिधानहे॥ हरसायरूपपरलायवपुहीनजनअमितउ
धार केरेभरेभावभानहे॥ कोटिनसरितपतिहूंतेजोगंभीरगुनकलितसहितसर्वोपरप्रधानहे॥ कृपालअनन्यसोईको
शलेशमेरोरषवारनसहांईसुखदाईजीवत्रानहे॥ ३११५॥ महारानीकौंशिलासुकोषस्वच्छशुक्तिसमसरसस्वै
वतानेउदितअनूपतर॥ महाराजजनकजनेशानंदिनीकेकंठआभरनरूपअनुरागजोसोहागवर॥ ऐसोअनमोल
मुक्तमुनिमनसुचारुचित्तचोरनअरविंदअमलअमंदपर॥ कृपालअनन्यअद्भुतसुखप्रदपदशरनसहांयसोई
मेरोकोटिपंकहर॥ ३११६॥ कौशिकसुवनदुखदवनदमनमखपावकप्रबलबलअबलसबलकर॥ महामुनिगौतमकी
वामवहनामताकोदियोसुखधामअभिरामधवसामसर॥ ताडिकासीपापिनीकलंकिनीकोदईगतिसुमतिप्रशंसकेरेभरेभा
वप्रेमभर॥ कृपालअनन्यकोईकोशलेशसनुरामेमेरेहूंशरनसबभांतिसिसनलेशउर॥ ३११७॥ ताकोअतिप्रबलपिना
कीकोपिनाकजिननाकविनकिएभपअमितअपाकपन॥ बालोछमासिंधुरोषदोषभृगुनाथकोटिनअनाथकोसनाथकि
एसुपतन॥ मिथिलेसनंदिनीसनेहसुखस्वादरसपूसोमोरमानसससमायसतचितघन॥ कृपालअनन्यमेरोतारकशरन

धी ष

॥३७१॥

॥श्रीराम॥

५ लाल

सहसोई सर्वग्यान्य विधेशासुत प्यारो जन ॥ ३११८ ॥ राज्य अभिखेक उत्साह मे सुहाह चाह आपने समेत देव पालने के
हेतहीं ॥ जननी जनक को निदेश सुखदे सा पाय परम परेश गए विपिन निसंचे तहीं ॥ धारि मुनि भेष वेष राग द्वेष हीन मन
चित्रकूट वसे सिय लखन समेत हीं ॥ युगल अनन्य सोई आरत हरन मेरो शरन सदैव जो न करुनानिकेत हीं ॥
३११९ ॥ जहां पंचवटी तहां नाचि मुक्ति मुक्ति नटी जाहिर प्रमोद आभरन अनमोल नित ॥ ताहि पल अमल अ
नूप लीला लली कोटि न विधान जो चरावे मुनिराज चित ॥ दंडक अपूत वन पावन करन पद धारै तपी जपी योगीजी ३०॥
वन को किए हित ॥ युगल अनन्य करुने भा सर्व ससोई मेरो स्वच्छ शरन भरन माया चाव चित ॥ खरदूषन दूषन हास स
मेत सुसेन विशेष निपात किए ॥ करुना करि के करुनानिधि नु अति नीचेऊ को स्वधाम दिए ॥ तिमि सूपनखा कौ दुख ता
डिप कटाख हि सो श्रुति नाक छिए ॥ शरनागत पाल कृपाल सोई मोहि पालिए युगम अनन्य जिए ॥ ३१२१ ॥ मायामृग
मारि के सनेह सूचना पासिय विरह व्यथा नेत व्यापित भए त्यागि सुधि ॥ क्रीडा कमनीय लखि विमल विवेकवान जा
ने ना अजान जात उर भी विकार वुधि ॥ प्यारे वंधु संग धरे धनुष निषंग वान वडे वलवान जीते पल वीच कोटि यु
धि ॥ युगल अनन्य जन आरत शमन सोई दायक शरन मेरो सहा सर्वज्ञ सिधि ॥ ३१२२ ॥ प्रानप्रिया ही को ढूढत कानन

॥भामने॰॥

॥श्रीराम॥

॥३७३॥

मंहिरहस्यारसेरसनायक॥जायविलोकेविचित्रसरोवरपंपासुनामसोहावनभायक॥नारदनेहनिहारिकहीकु
छवैनसचैनसुनैनप्रदायक॥जुग्मअनन्यसहातिनहीकोभरोसलियोसोसमेरोसहायक॥३२३३॥गीधराजने
होसिरताजकोनिवाजिपुनिदईहेकरधामतिकरुनानिधानजू॥वीरहनुमानगुनवानसेमिलायकरिसु
कंठमित्रतासजायकेसुजानजू॥महाबलवानबालिएकबाननहींसेवधिकिएहिएरामकलकंठजीवजानजू॥जुग ३४॥
लअनन्यहीनपालनोईप्रेमजिन्हैतिनहीकेसरनमेमेरेहूंप्रमानजू॥अंगदहितोषकरिकरुनासमुद्रमेंसु
र हूंकृपालरघुलालजीवजालहर॥मिथिलेसनंदिनीकेहेरिवेनिमित्तपठवायचहूंपासकीसभालमुखवायउर॥
प्रानप्रियहेतुममिमुद्रिकासुवातसुतहिएकिएविरहामारमानिकेविसेषउर॥जुगलअनन्यसोईजानकीजी
वनमेरोदायकशरनसहसावधानएकसर॥३२३५॥श्रीहनुमानमहाबलवानहींपारपयोनिधिजोनक ॥३७३॥
रायो॥कौतुकसाथअरासविनाश्रमराक्षससेनसमूहसिरायो॥रावनसोबलवंतकीपालितालंकाकंगूरअ
गारजरायो॥जुग्मअनन्यसोईप्रनतारतमोचनकेपदशीशधरायो॥३२३६॥रोषसमेतअपारपयोनिधिवीच
सुसेतनिकेतसंवारयो॥कौनकहेकपिकरतूतिकलाकरनीरकेमाहिपखानहितासो॥देखिलियोगढरावनकोपुनि

॥श्रीराम॥

न ३

सेनसमेत हीं ताहि संघारो॥ युगम अनन्य भये शरनागत दूसरो आस भरोस विसासो॥ ३१३७॥ प्रानप्रिया प्रिय प्रान
प्रनए पन प्रीनन नेह निकेत किए पुनि॥ प्यारो विभीषन भक्त को राज सु संपति सौंपि समेसु खमा धुनि॥ पुष्पकारूढ
सनेहिन के युत होय सुधाम पयों हिए गुनि॥ युगम अनन्य उमंग वल्यो रघुवीर विजय जनन आन कथा सुनि॥ ३१३८॥
आय के धाम मिले गुनग्राम सु बंधु सनेहिन साय सनेरुष॥ वैठि के राज सिंहासन पे जननी पुरवासि वियोग दहे है
दुख॥ नाम सु कीरति द्वारे अस रख्यो अधीनन को तारे प्रजान हूं के पुष॥ युगम अनन्य गह्यो पद पंकज आस निहारिए
नैनह से मुख॥ ३१३९॥ पतन्न अपार किए वहु हानहि जे भ्रासु रे भ्रान हूं हिए॥ युनि आप परे भासु धर्म को पंथ संवारि
अहान के मोह लिए॥ गति गुह्य सु धाम पधारे प्रजागन सो पक्र पाप रिपूरि रहिए॥ भने युगम अनन्य उपाय विहीन
सहास रनागत आस लिए॥ ३१४०॥ श्री रघुवंस विभूषन के गुन दूषन हीन सुपूषन के सम॥ नेह समेत सुने जो
सहात हि को कवहू कुछ चीजन हाकम॥ छोडि के और उपाय को आसरो होय प्रसन्न रहे नित वे गम॥ युगम अन
न्य अवसो लहे परधाम सु अंत समे सुरपमारम॥ ३१४१॥ श्री रघुवीर कृपाल सदा शरनागत पाल कुपाल विना
शक॥ है जिएरम नत्याग दुरास कुवास सुहास सनेह प्रकासक॥ है कित हूं नहि मोज प्रमोद सु सौंज उपाधि विहीन अप्रासक॥

॥नामने॰॥

को ६

युग्म अनन्य सिया वर जू के कृपा ही सो रंग उमंग विलाशक ॥ ३२४२ ॥ शरनागत प्रीति परत्व प्रकाशक बीस
औ आठ कवित्त सवैया ॥ छंद मनोहर संगस वीसुखदायक गायक कामद गेआ ॥ जो रुचि सापसु पाठक
रैतो हि जीव पैरी भै सिया रघुरेआ ॥ युग्म अनन्य औ सोच भये आव बाजै न लागी विनोद बधैआ ॥ ३२४३ ॥
॥ इति श्री शरनागत अस्तोत्र संपूर्णं ॥ ० अथ ग्रंथ नाम पाठ परत्व निरूपनं ॥ सीताराम नाम नेह वाटिका विचित्र चारु वा
मी कर चाक कुसुम नाम रंग रंग ॥ जानकी जीवन प्रेम प्रापक परन मुनि मन आभरन सुभ साधन अभंग
अंग ॥ अवध विहारी अनुपम अनुराग फल अमल रुख सारस पूरन उमंग रंग ॥ युगल अनन्य नाम रसिक के
सराही स्वच्छ सोई वर वाग बीच विहंग सुरंग अंग ॥ ३२४४ ॥ सीतारां नाम नेह वाटिका प्रताप गुन कांति
अनुपम छाया तीव्र ताप नासिनी ॥ आदि मध्य अंत रसवंत संत वास वर विशाद विहार पेग जो हिए प्रकाशिनी
नाना भांति रहस रंगीन सुप्रवीन दिव्य दिषिए प्रतच्छ प्रीति रीति अनुभावनी ॥ युगल अनन्य चित्त चाहि के
॥ ५ हमेश याहि हेरि ए हि राय पै हो शाहि रस आपावनी ॥ संवत उनीशसत एकवीस माघ मास सुकुल सोहावन सु
द्वादसी छितिजवार ॥ सीताराम जू के प्रानप्यारे श्री लषन नतिन नामे स सहित कोटसर जू समीप धार ॥ + ॥ ॥

ऐसो सोभनीक समय माझ प्रातहीं पुनीत मयो श्री कवित्त ग्रंथ पूरन परेस प्यार ॥ युगल अनन्य नाम सी-
ताराम नाम नेह वाटिका विचित्र जामें रंग रंग की वहार ॥ ३१४६ ॥ श्री गुरु संतन की करुना वरुनाल-
य को दिन हूं से विशेषी ॥ पाए सोई अवलंब महामति मंद हूं होत सुजान परेषी ॥ श्री सियराम सने-
हैं धाम में वास मिल्यो सु कृपा शुचि शेषी ॥ युगल अनन्य सुनाम गुनाकर आस है मम आत्र रागअदेषी ॥
॥ ३१४७ ॥ दोहा ॥ श्री सीतावर संत गुरु सरजू अवध सुनाम ॥ आस खास मो मन वसे तजि माया म-
र काम ॥ ३१४८ ॥ इति श्री श्री सद्गुरु सुपद सरोजाश्रित श्री श्री श्री श्री श्री श्री मान्महाराजधीराज रसराज-
रसिकाधिपेश परम धन्यातिधन्य सद्गुरोगमागम सर्व चित प्रसन्न कृपाद्याविर्भूत श्री श्री स्वामीमद्युगलानन्यश-
रन विरचित श्री सीताराम नाम नेह वाटिका समाप्ता शुभं भवतु ॥०॥ दोहा ॥ संवत सत उन्नीस अरु वीस अष्ट के मांहि
स्वकर लिखित महराज की प्रेम प्रति जो आहि ॥ तांतें इह प्रति उनि लिखित रामवल्लभाशरन ॥ मास अश्वनी पक्ष सित मचौ दृषि
तिथि शुभ केरन ॥२॥

संवत
१९२८

ग्रं० सं० ~~३०~~ १२० पं० ~~६६~~ ४३

॥ग्रंथसरकारी॥ अथश्री
सीताराम नाम नेहवाटि
कापत्रा ग्रंथ का॥